वाचकवर–भगवदार्यश्यामाचार्यविरचित

प्रज्ञापना सूत्र

द्वितीय भाग पद ६–२०

मूल तथा

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित

टीकाना अनुवाद सहित

अनुवादक अने संशोधक—पंडित भगवानदास हर्षचंद्र

संवत् १९९१ मूल्य ५–८–० प्रत ५००

इदं पुस्तकं अमदावाद जैनगोराशेरीस्थितश्रीशारदामुद्रणालये तद-
धिपतिना सुश्रावक-हर्षचन्द्रात्मजेन पं. भगवानदासेन मुद्रितम्।

प्रज्ञापनासूत्र द्वितीय भाग-अनुक्रमणिका

१२ शरीरपद ८३१-८६४

१५ इन्द्रिय पद-द्वितीय उद्देशक ९३५-९३७.

१८ कायस्थिति पद ११२९–११८३

१९ सम्यक्त्व पद ११८४-११८५

२० अन्तक्रिया पद ११८६-१२१८

अनुरकुमार असुरकुमारथी नीकळीने क्यां जाय अने केवलज्ञानीए कहेला धर्मनुं श्रवण करे, इत्यादि यावत् वैमानिक सबन्धे प्रश्न अने उत्तर ११९७-०२

रत्नप्रभापृथिवीनो नैरयिक त्यांथी नीकळी तीर्थंकरपणुं पामे के यावत् सप्तम पृथिवीनो नैरयिक तीर्थंकरपणुं पामे ? ए प्रमाणे असुरकुमार यावत् सर्वार्थसिद्धदेव संबन्धे प्रश्न अने उत्तर १२०३-०६

रत्नप्रभा पृथिवी वगेरेनो नैरयिक त्यांथी नीकळी पछीना भवमां चक्रवर्तीपणुं वगेरे पामे ? ए संबन्धे प्रश्न अने उत्तर १२०७-०९

असंयत भव्य द्रव्य देवो, जेणे संयमनी विराधना करी नथी एवा, जेणे संयमनी विराधना करी छे एवा, जेणे देशविरतिनी विराधना करी नथी एवा, जेणे देशविरतिनी विराधना करी छे एवा, असंज्ञी, तापस, कांदर्पिक, चरक परिव्राजक, किल्बिषिक, तिर्यंचो, आजीवको, आभियोगिको सम्यग्दर्शनरहित स्वलिंगी ए बधानी उत्पत्ति संबन्धे प्रश्न अने उत्तर १२०९-१६

असंज्ञी आयुषना प्रकार, तेओनी स्थिति अने तेओनुं अल्पबहुत्व १२१७-१८

छट्ठं वक्कंतीपयं ।

१. बारस चउवीसाइं सअंतरं एगसमय कत्तो य । उव्वट्टण परभवियाउयं च अट्ठेव आगरिसा ॥१॥

छट्ठु व्युत्कान्ति पद.

१ बार मुहूर्त अने २ चोवीश मुहूर्तनो उपपात अने उद्वर्तना-मरणने आश्रयी विरहकाळ, ३ सान्तर-सान्तर उत्पन्न थाय के निरंतर उत्पन्न थाय ? ४ एक समय-एक समयमां केटला उपजे अने मरण पामे, ५ क्यांथी आवीने उपजे ? ६ उद्वर्तना-मरण-पामीने क्यां उत्पन्न थाय ? ७ परभविकायुष-परभवनुं आयुष क्यारे बंधाय ? ८ अने आयुषना बंध संबंधे आठ आकर्षो-ए आठ द्वार आ छठ्ठा पदमां कहेवाना छे.

१ पांचमा पदनी व्याख्या करी, हवे छठ्ठा पदनो आरंभ थाय छे. तेनो आ प्रमाणे संबन्ध छे-पूर्वेना पदमां औदयिक, क्षायोपशमिक अने क्षायिक भावने आश्रयी पर्यायोना परिमाणनो निर्णय कर्यो, अने आ पदमां औदयिक अने क्षायोपशमिक भाव संबन्धी प्राणीओना उपपातविरहादिनो विचार कराय छे. तेमां आरंभमां आ अधिकारोना संग्रहरूप आ द्वारगाथा छे—'बारस चउवीसाइं' इत्यादि प्रथम प्रत्येक गतिओमां सामान्यतः उपपातविरह अने उद्वर्तनाविरहनो काळ बार मुहूर्त प्रमाण कहेवानो छे. २ त्यार पछी गतिओमां विशेषतः नैरयिकादि प्रत्येक भेदोने आश्रयी आरंभमां उपपातविरह अने उद्वर्तनाविरहनो काळ चोवीश मुहूर्त प्रमाण कहेवानो छे ३ ते पछी नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे-ए कहेवानुं छे ४ त्यार बाद एक समये नैरयिकादि प्रत्येक केटला उत्पन्न थाय छे अने केटला मरण पामे छे ते विचारवानुं छे. ५ पछी नारकादि क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय छे-एनो विचार करवानो छे ६ पछी नैरयिकादि मरण पामी क्यां उत्पन्न थाय छे ए कहेवानुं छे ७ त्यार बाद अनुभवाता वर्तमान

१. निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । तिरियगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । मणुयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । देवगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । सिद्धिगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणाए

प्रथम द्वार.

१. हे भगवन् ! नरकगति केटला काळ सुधी नारक जीवोनी उत्पत्ति रहित कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट बार मुहूर्त कही छे. हे भगवन् ! तिर्यंचगति केटला काळ सुधी जीवोनी उत्पत्ति रहित कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी बार मुहूर्त कही छे. हे भगवन् ! मनुष्यगति केटला काळ सुधी जीवोनी उत्पत्ति रहित छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त छे. देवगति केटला काळ सुधी जीवोनी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्यथी

भवना आयुषनो केटलामो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे ए कहेवानुं छे अने ८ उत्कर्षथी केटला आकर्षो वडे आयुषनो बन्ध करे छे ए विचारमां आठ आकर्ष कहेवाना छे. ए संग्रहणीगाथानो संक्षेपार्थ जाणवो.

१-२. ए पूर्वोक्त द्वारोनुं अनुक्रमे विवरण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम गतिसंबन्धे कहे छे-'निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं उववाएणं विरहिया पन्नत्ता' इत्यादि. हे भदन्त-भगवन् ! नरकगति केटला काळ सुधी उपपात-उत्पत्ति वडे रहित होय छे?

पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेण छम्मासा ।

२. निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । तिरियगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता । मणुयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं

एक समय अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त होय छे. हे भगवन् ! सिद्धिगति केटला काळ सुधी जीवोनी सिद्धि वडे रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी छ मास होय छे.

२. हे भगवन् ! नरकगति केटला काळसुधी उद्वर्तना-मरण वडे रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त सुधी होय छे. हे भगवन् ! तिर्यंचगति केटला काळ सुधी मरण वडे रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त होय छे. हे भगवन् ! मनुष्यगति केटला काळ सुधी उद्वर्तना रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य

नरकगति ए नरकगतिनामकर्मना उदयथी उत्पन्न थयेलो जीवनो औदयिक भाव छे अने ते एक भाव साते नरक पृथिवीव्यापी छे, तेथी एकवचन छे अने साते नरकपृथिवीओने ग्रहण करवानी छे 'भदन्त' ए परमगुरुनुं संबोधन छे, एटले परमकल्याणना योगवाळा हे प्रभो ! नरकगति केटला काळ सुधी अन्यगतिना जीवोना नारकपणे उत्पन्न थवारूप उपपात वडे शून्य-रहित आपे तथा अन्य ऋषभादि तीर्थंकरोए कहेली छे ? एटले नरकगतिमां नारकपणे केटला काळसुधी उत्पन्न न थाय ? एम गौतमस्वामीए प्रश्न कर्यो एटले भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त सुधी नरकगति उपपातशून्य

एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । देवगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । १ दारं ।

एक समय अने उत्कृष्ट बार मुहूर्त सुधी होय छे. हे भगवन् ! देवगति केटला काळ सुधी उद्वर्तना-मरण रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट बार मुहूर्त सुधी होय छे.

कहेली छे. अहीं मूढ पूर्वपक्षी शंका करे छे—आगळ एक पण नरकपृथिवीमां उपपातविरह काळ बार मुहूर्तनो कहेवानो नथी, अने चोवीश मुहूर्तादि प्रमाण काळ तो आगळ कहेवानो छे, तो बधी पृथिवीना समुदायने विषे बार मुहूर्त प्रमाण काळ केम घटे ? कारण के 'प्रत्येकनी अंदर न होय तो समुदायनी अंदर पण न होय'-एवो न्याय छे. ते अयुक्त छे. कारण के अहीं वस्तुतत्त्वनुं अज्ञान छे. जो के रत्नप्रभादि एक एक पृथिवीना नामनो निर्देश करी चोवीश मुहूर्तादिप्रमाण उपपातविरह कहेवानो छे, तो पण ज्यारे बधी साते पृथिवीओनी अपेक्षाए उपपातविरह काळनो विचार थाय त्यारे तो बार मुहूर्तनोज उपपातविरह काळ होय छे. बार मुहूर्त पछी कोइ पण एक पृथिवीमां अवश्य उत्पन्न थाय छे, कारण के केवलज्ञानीए ते प्रमाणे जाणेलुं छे. 'जे प्रत्येकमां न होय ते समुदायमां पण न होय, ते न्याय कारणकार्यना धर्मना विचारमां घटे छे, बीजे घटतो नथी, माटे अहीं दोष नथी. जेम नरकगति उत्कर्षथी बार मुहूर्त सुधी उपपात वडे रहित छे एम तिर्यंच, मनुष्य अने देवगति जाणवी. सिद्धिगति उत्कर्षथी छ मास सुधी उपपातरहित होय छे. ए प्रमाणे उद्वर्तना पण जाणवी. परन्तु सिद्धो मरण पामता नथी, कारण के तेओ शाश्वत होवाथी सादि अनन्त काळ सुधी सिद्धि उद्वर्तनारहित होय छे.

३. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता। सक्करप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं सत्तराइंदियाणि। वालुयप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अद्धमासं। पंकप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मासं। धूमप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं दो मासा।

द्वितीय द्वार.

३. हे भगवन्! रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश मुहूर्त सुधी होय छे. हे भगवन्! शर्कराप्रभापृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी सात रात्रिदिवस. हे भगवन्! वालुकाप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे? हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अर्ध मास. हे भगवन्! पंकप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक मास. हे भगवन्! धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काळ

३—११ हवे चोवीश मुहूर्त सबन्धे बीजुं द्वार कहे छे—'रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता'? रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उपपात शून्य होय छे-इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे, परन्तु अहीं उत्कृष्ट

तमापुढविनेइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चत्तारि मासा । अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ।

४. असुरकुमारा णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । नागकुमारा णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं

सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी त्रे मास. हे भगवन् ! तमःप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चार मास. हे भगवन् ! अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी छ मास.

४. हे भगवन् ! असुरकुमारो केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश मुहूर्त. हे भगवन् ! नागकुमारो केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त.

उपपातविरहकाळ संबन्धे संग्रहणी गाथाओ छे, तेनो अर्थ आ प्रमाणे छे—१ चोवीश मुहूर्त, २ सात दिवस, ३ पक्ष, ४ एक मास, ५ त्रे मास; ६ चार मास अने ७ छ मास, एम सात नरकपृथिवीमां अनुक्रमे उपपात विरहकाळ छे. असुरकुमारादि भवनपतिमां अनुक्रमे उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्तनो उपपातविरहकाळ छे. पृथिवीकायिकादिमां उपपातविरहकाळ नथी. विकलेन्द्रियोमां अन्तर्मुहूर्तनो उपपातविरहकाळ होय छे. संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रियनो पण एज प्रमाणे अन्तर्मुहूर्तनो उपपानविरहकाळ छे, अने गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियनो उपपातविरहकाळ बार

समयं; उक्कोसेणं चउव्वीस मुहुत्ता। एवं सुवन्नकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं दीवकुमाराणं दिसिकुमाराणं उदहिकुमाराण वाउकुमाराणं थणियकुमाराण य पत्तेयं जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता।

५. पुढविकाइया णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! अणुसमयमविरहिय उववाएण पन्नत्ता। एवं आउकाइयाणवि तेउकाइयाणवि वाउकाइयाणवि वणस्सइकाइयाणवि अणुसमय अविरहिया उववाएणं पन्नत्ता।

ए प्रमाणे सुवर्णकुमारो, विद्युत्कुमारो, अग्निकुमारो, द्वीपकुमारो, दिक्कुमारो, उदधिकुमारो, वायुकुमारो अने स्तनितकुमारो प्रत्येक जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त सुधी उत्पत्ति रहित होय छे.

५. हे भगवन्! पृथिवीकायिको केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे? हे गौतम! प्रतिसमय उत्पत्तिथी अविरहित छे, एटले प्रतिसमय निरंतर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे अप्कायिको, तेजस्कायिको, वायुकायिको अने वनस्पतिकायिको पण प्रतिसमय निरंतर उत्पन्न थाय छे.

मुहूर्तनो छे. सम्मूर्छिम मनुष्यो अने गर्भज मनुष्योनो अनुक्रमे चोवीश अने बार मुहूर्तनो छे एटले सम्मूर्छिम मनुष्योनो चोवीश मुहूर्तनो अने गर्भज मनुष्योनो बार मुहूर्तनो छे. व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान कल्पमा प्रत्येकने चोवीश मुहूर्तो, सनत्कुमार कल्पमां नव दिवस अने वीश मुहूर्त, माहेन्द्रमां बार दिवस अने दस मुहूर्त, ब्रह्मलोकमा साडी बावीश दिवस, लान्तकमा पीसताळीश दिवस,

६. बेइंदिया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं तेइंदियचउरिंदिया ।

७. समुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ।

८. संमुच्छिममणुस्सा णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं,

---

६. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा.

७. हे भगवन् ! संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रियो केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी बार मुहूर्त.

८. हे भगवन् ! संमूर्छिम मनुष्यो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी

महाशुक्रमां एंशी दिवस, सहस्रारमां सो दिवस, त्यार पछी आनत अने प्राणत ए बे देवलोकमां संख्याता मास अने आरण अच्युत ए उपरना बे देवलोकमां संख्याता वरस. नीचेना त्रण, मध्यम त्रण अने उपरना त्रण ग्रैवेयकमां अनुक्रमे संख्याता सैंकडो, संख्याता

उक्कोसेण चउव्वीसं मुहुत्ता । गब्भवक्कंतियमणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ।

९. वाणमंतराणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एग समयं, उक्कोसेणं चउव्वीस मुहुत्ता । जोइसियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । सोहम्मे कप्पे देवा णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएण पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । सणंकुमारे कप्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण

चोवीश मुहूर्त. हे भगवन् ! गर्भज मनुष्यो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट बार मुहूर्त.

९. व्यन्तरो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश मुहूर्त. ज्योतिषिक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश मुहूर्त. हे भगवन् ! सौधर्म कल्पमां देवो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश मुहूर्त. ईशान कल्पमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त. सनत्कुमार कल्पमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट नव रात्रिदिवस अने वीश मुहूर्त. माहेन्द्र कल्पमां देवो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट बार रात्रिदिवस अने दस मुहूर्त.

हजार अने संख्याता लाख वर्षनो उत्कृष्ट विरहकाळ जाणवो विजयादि चार अनुत्तरमां असंख्य काळ तथा सर्वार्थ सिद्धमां पल्योपमनो संख्यातमो भाग उपपातविरह जाणवो बीजु पद समाप्त

एगं समयं, उक्कोसेणं णव राइंदियाइं वीसाइ मुहुत्ताइं। माहिंदे कप्पे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस राइंदियाइं दस मुहुत्ताइं। बंभलोए देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अद्धतेवीसं राइंदियाइं। लंतगदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पणतालीसं राइंदियाइं। महासुक्कदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असीई राइंदियाइं। सहस्सारे देवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं राइंदियसयं। आणयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा। पाणयदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं,उक्कोसेणं संखेज्जा मासा। आरणदेवाणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं,उक्कोसेणं संखिज्जा वासा। अच्चुयदेवाणं पुच्छा। गोयमा!

ब्रह्मलोकमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट साडीबावीश रात्रिदिवस. लांतकमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पीसताळीश रात्रिदिवस. महाशुक्रमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक दिवस अने उत्कृष्ट एंशी रात्रिदिवस. महस्रारमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट सो रात्रिदिवस. आनत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता मास. प्राणत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता मास. आरण देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता वरस. अच्युत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता वरस. नीचेना ग्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता सेंकडो वरस. मध्यम ग्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य एक

जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जा वासा । हिट्ठिमगेविज्जाणं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं,उक्कोसेणं संखिज्जाइं वाससयाइं । मज्झिमगेविज्जाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जाइं वाससहस्साइं । उवरिमगेविज्जाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जाइं वाससयसहस्साइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। सव्वट्ठसिद्धगदेवाण भंते ! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स संखिज्जइभागं ।

१० सिद्धा णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

समय अने उत्कृष्ट संख्याता हजार वरस. उपरना ग्रैवेयक देवो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता लाख वर्ष. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट असंख्यात काळ. सर्वार्थसिद्ध देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पल्योपमनो संख्यातमो भाग.

१०. हे भगवन् ! सिद्धो केटला काळ सुधी सिद्धि वडे विरहित छे—केटला काळ सुधी सिद्ध थता नथी ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ मास.

११. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । एवं सिद्धवज्जा उव्वट्टणावि भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवरं जोइसियवेमाणिएसु 'चयणं'ति अहिलावो कायव्वो ॥ २ दारं ॥

१२. नेरइया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति । तिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उवव-

---

११. रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काळ सुधी उद्वर्तना–मरण रहित होय छे? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चोवीश मुहूर्त. ए प्रमाणे सिद्ध सिवाय बाकीना जीवोनी उद्वर्तना पण यावत् अनुत्तरौपपातिक सुधी कहेवी. यावत्–ज्योतिषिक अने वैमानिकोने उद्वर्तनाना बदले च्यवन संबन्धे पाठ कहेवो.

तृतीय द्वार.

१२. हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर (अन्तर सहित) उत्पन्न थाय छे के निरंतर (अन्तर रहित) उत्पन्न थाय छे? हे गौतम ! सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिको सान्तर उपजे छे के निरन्तर उपजे छे? हे गौतम ! सान्तर पण उपजे छे अने निरन्तर पण उपजे छे. हे भगवन् ! मनुष्यो सान्तर उपजे छे के निरन्तर उपजे छे ? हे गौतम ! सान्तर

१२—१८. हवे त्रीजुं द्वार कहे छे— हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे–इत्यादि सूत्र पूर्वोक्त सूत्रार्थना अनुसारे भावार्थ प्रसिद्ध होवाथी पाठसिद्ध जाणवुं. त्रीजुं द्वार समाप्त.

ज्जंति, निरंतरपि उववज्जंति। मणुस्सा णं भंते! किं संतरं उववज्जंति, निरतर उववज्जंति? गोयमा! संतरपि उववज्जंति निरतरपि उववज्जंति। देवा णं भंते! किं संतर उववज्जंति, निरतर उववज्जंति? गोयमा! संतरंपि उववज्जंति, निरतरपि उववज्जंति।

१३. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते! किं संतर उववज्जंति, निरतरं उववज्जंति? गोयमा! संतरपि उववज्जंति, निरतरपि उववज्जंति। एवं जाव अहेसत्तमाए संतरपि उववज्जंति, निरंतरपि उववज्जंति।

१४. असुरकुमारा णं देवा णं भंते! किं संतर उववज्जंति, निरतर उववज्जंति? गोयमा! संतरपि उववज्जंति, निरतरंपि उववज्जंति। एवं जाव थणियकुमारा संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति।

पण उपजे छे अने निरंतर पण उपजे छे. हे भगवन्! देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे? हे गौतम! देवो सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे.

१३. हे भगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे? हे गौतम! सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् अधःसप्तम पृथिवी सुधी जाणवुं.

१४. हे भगवन्! असुरकुमार देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे? हे गौतम! सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो पण सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे.

१५. पुढविकाइया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! नो संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति । वेइंदिया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति । एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।

१६. मणुस्सा णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति । एवं वाणमंतरा जोइसिया सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोयलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणच्चुयहिट्ठिमगेविज्जगमज्झिमगेविज्जगउवरिमगेविज्जगविजयवेजयंतजयंतअपराजितसव्वट्ठसिद्धदेवा

---

१५. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! सान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत्–वनस्पतिकायिको सान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थाय छे. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत्–पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको सुधी जाणवुं.

१६. हे भगवन् ! मनुष्यो सान्तर उत्पन्न थाय के निरंतर उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! सान्तर पण उत्पन्न थाय अने निरंतर पण उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, नीचेना त्रण ग्रैवेयक, मध्यम त्रण ग्रैवेयक, उपरना त्रण ग्रैवेयक, विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित अने सर्वा-

य संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति।

१७. सिद्धा णं भंते! किं संतरं सिज्झंति, निरंतरं सिज्झंति? गोयमा! संतरंपि सिज्झंति, निरंतरंपि सिज्झंति।

१८. नेरइया णं भंते! किं संतरं उव्वट्टंति निरंतरं उव्वट्टंति? गोयमा! संतरंपि उव्वट्टंति, निरंतरंपि उव्वट्टंति। एवं जहा उववाओ भणिओ तहा उव्वट्टणावि सिद्धवज्जा भाणियव्वा जाव वेमाणिया, नवरं जोइसियवेमाणियेसु 'चयण'त्ति अहिलाओ कायव्वो॥ ३ दारं॥

१९. नेरइया णं भंते! एगसमएणं केवइया उववज्जंति? गोयमा! जहन्नेणं एक्को वा दो वा, उक्कोसेण

थंसिद्ध देवो सान्तर पण उपजे अने निरंतर पण उपजे.

१७. हे भगवन् सिद्धो सान्तर सिद्ध थाय छे के निरंतर सिद्ध थाय छे? हे गौतम! सान्तर पण सिद्ध थाय छे अने निरंतर पण सिद्ध थाय छे.

१८ हे भगवन्! नैरयिको सान्तर उद्वर्ते छे—मरण पामे छे के निरंतर उद्वर्ते छे? हे गौतम! सान्तर पण उद्वर्ते छे अने निरंतर पण उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे जेम उपपात कह्यो तेम उद्वर्तना पण सिद्ध सिवाय यावत् वैमानिको सुधी कहेवी. परन्तु ज्योतिषिक अने वैमानिकोने विषे च्यवन संबन्धे पाठ कहेवो.

चतुर्थ द्वार.

१९. हे भगवन्! नैरयिको एक समयमां केटला उत्पन्न थाय? हे गौतम! जघन्यथी एक बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता

संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, एवं जाव अहेसत्तमाए ।

२०. असुरकुमारा णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा । एवं नागकुमारा जाव थणियकुमाराविं भाणियव्वा ।

२१. पुढविकाइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति, एवं जाव वाउकाइया । वणस्सइकाइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! सट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहिया अणंता उववज्जंति, परट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति । बेइंदिया णं भंते ! केवया एगसमएणं उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगो वा दो वा

के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् अधःसप्तम पृथिवी सुधी जाणवुं.

२०. हे भगवन् ! असुरकुमारो एक समयमां केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे नागकुमारो यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

२१. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको एक समये केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! प्रतिसमय अविरहितपणे असंख्याता उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् वायुकायिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको एक समये केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! स्वस्थान संबंधी उपपातने आश्रयी प्रतिसमय निरंतर अनन्ता उत्पन्न थाय छे अने परस्थान संबंधी उपपातने आश्रयी निरन्तर असंख्याता

१९—२३. हवे चोथुं द्वार कहे छे—हे भगवन् ! नैरयिको एक समये केटला उत्पन्न थाय छे-इत्यादि सूत्रपाठमात्रथी सिद्ध छे,

तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा । एवं तेइंदिया चउरिंदिया । संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिया संमुच्छिममणुस्सा वाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोयलंतगमहासुक्कसहस्सारकप्पदेवा एते जहा नेरइया । गब्भवक्कंतियमणूसआणयपाणयआरणयच्चुअगेवेज्जगअणुत्तरोववाइया य एते जहन्नेणं इक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखिज्जा उववज्जंति, न असंखेज्जा उववज्जंति ।

२२. सिद्धा णं भंते ! एगसमएणं केवइया सिज्झंति ?, गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं ।

उत्पन्न थाय छे. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो एक समये केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय संबंधे जाणवुं. संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संमूर्छिम मनुष्यो, व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लांतक, महाशुक्र अने सहस्रार कल्पना देवो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. गर्भज मनुष्यो, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, ग्रैवेयक, अने अने अनुत्तरौपपातिक देवो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता उत्पन्न थाय छे, पण असंख्याता उत्पन्न नथी.'

२२. हे भगवन् ! सिद्धो एक समये केटला सिद्ध थाय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी एकसो आठ सिद्ध थाय छे.

परन्तु वनस्पतिसूत्रमां 'सट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयमविरहिया अणंता'–स्वस्थान संबन्धी उपपातने आश्रयी प्रतिसमय निरंतर अनन्ता

२३. नेरइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति, एवं जहा उववाओ भणिओ तहा उव्वट्टणावि सिद्धवज्जा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइया, णवरं जोइसियवेमाणियाणं चयणेणं अहिलावो कायव्वो । ४ दारं ।

२३. हे भगवन् ! नैरयिको एक समये केटला उद्वर्ते छे–मरण पामे छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता के असंख्याता मरण पामे छे. ए प्रमाणे जेम उपपात कह्यो तेम उद्वर्तना पण सिद्ध सिवाय यावत्–अनुत्तरौपपातिक सुधी कहेवी. परन्तु ज्योतिषिक अने वैमानिकोने च्यवन वडे पाठ कहेवो.

उत्पन्न थाय छे. सजातीय पोताना पूर्वना वनस्पतिरूप भवथी नीकळी वनस्पतिमां उत्पन्न थाय ते स्वस्थान संबन्धी उपपात कहेवाय छे. तेने आश्रयी प्रतिसमय अविरहितपणे सर्वदा अनन्ता उत्पन्न थाय छे, कारण के दरेक निगोदनो असंख्यातमो भाग निरंतर उत्पन्न थाय छे, अने मरण पामे छे. 'परट्ठाणुववाइयं पडुच्च अणुसमयमविरहिया असंखेज्जा'–परस्थान संबन्धी उपपातने आश्रयी प्रतिसमय निरन्तर असंख्याता उपजे छे. विजातीय पृथिव्यादि परभवथी आवी वनस्पतिमां उत्पन्न थाय ते परस्थान संबन्धी उपपात कहेवाय छे, तेने आश्रयी प्रतिसमय असंख्याता जीवो निरन्तर उत्पन्न थाय छे. गर्भज मनुष्यो उत्कृष्टपणे पण संख्याता ज होय छे पण असंख्याता नथी होता. तेथी तेना सूत्रमां उत्कर्षथी संख्याता उत्पन्न थाय छे तेम कहेवुं. आनतादि देवलोकमां मनुष्यो ज उत्पन्न थाय छे, पण तिर्यंचो उत्पन्न थता नथी, अने मनुष्यो संख्याता ज छे माटे आनतादि देव संबन्धी सूत्रोमां संख्याता ज उत्पन्न थाय छे, पण असंख्याता उत्पन्न थता नथी. सिद्धिगतिमां उत्कर्षथी एक समये एकसो आठ सिद्ध थाय छे. ए प्रमाणे उद्वर्तना सूत्र पण जाणवुं. परन्तु ज्योतिषिक अने वैमानिकने च्यवननो पाठ कहेवो, कारण के ज्योतिषिक अने वैमानिकोना स्वभवथी थतां

२४. नेरइया णं भंते! कतोहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति। जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, तेइंदियतिरिक्खजोणिए-

पांचमुं द्वार.

२४. हे भगवन्! नैरयिको क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय छे? शुं नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय, तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय के देवोथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे, मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे, देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी. जो तिर्यंचयोनिकोथी

उद्वर्तन-मरणने च्यवन कहेवाय छे कारण के तेवा प्रकारनी अनादि काळनी प्रसिद्धि छे तेथी तेना सूत्रमां च्यवननो पाठ कहेवो ते आ प्रमाणे—'जोइसिया णं भंते! एगसमये णं केवइया चयंति? गोयमा! जहन्नेणं एगो वा दो वा'-इत्यादि हे भगवन्! ज्योतिषिको एक समये केटला च्यवे? हे गौतम! जघन्यथी एक बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता के असंख्याता च्यवे छे

२४—३०. चतुर्थ द्वार समाप्त थयु, हवे पांचमा द्वार संबन्धे कहे छे—'नेरइया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति'-हे भगवन्! नैरयिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे पण तेनो संक्षेपथी आ अर्थ छे-सामान्य रीते नैरयिकोनी उत्पत्तिना विचारमां अने रत्नप्रभा नरकना नैरयिकोनी उत्पत्तिना विचारमां देव, नारक, पृथिव्यादि पांच स्थावर विकलेन्द्रियत्रिक अने असंख्य वरसना आयुषवाळा चतुष्पद अने खेचरोनो, अने बीजा पण अपर्याप्त तिर्यंच पंचेन्द्रियो, संमूर्छिम मनुष्यो, गर्भज छता पण अकर्मभूमिना,

हिंतो उववज्जंति, चउरिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो एगिंदिय०, नो बेइंदिय०, नो तेइंदिय०, नो चउरिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति । जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, बेइन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, तेइन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, चउरिन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय के पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं जलचर पंचेन्द्रिय तियचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय के खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जलचर, स्थलचर अने खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय.

अन्तरद्वीपना, कर्मभूमिना छतां असंख्याता वरसना आयुषवाळा, अने संख्याता वरसना आयुषवाळा छतां अपर्याप्ताओनो प्रतिषेध समजवो अने बाकीनानुं विधान जाणवुं. एटले बाकीना बधा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय छे. शर्कराप्रभामां संमूर्छिमोनो पण प्रतिषेध जाणवो.

२५. जइ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति । जइ संमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति किं पज्जत्तयसंमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति, अपज्जत्तसंमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तयसंमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तगसंमुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजो-

२५. जो जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं समूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संमूर्च्छिम अने गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय. जो संमूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्त संमूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्त समूर्च्छिम जलचरथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचरथी आवी न उत्पन्न थाय. जो गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्त गर्भज जलचरथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्त गर्भज जलचरथी आवी उत्पन्न थाय ?

पछळे समूर्छिम मनुष्य अने तिर्यंचो शर्कराप्रभामां उत्पन्न थता नथी वालुकाप्रभामां भुजपरिसर्पोनो, पंकप्रभामां खेचरोनो, धूमप्रभामां चतुष्पदोनो, तमःप्रभामां उरःपरिसर्पोनो अने सातमी नरक पृथिवीमां स्त्रीओनो पण प्रतिषेध समजवो

णिएहिंतो उववज्जंति। जइ गब्भवक्कंतिगजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।

२६. जइ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति । जइ चउप्पयथलयर-

हे गौतम ! पर्याप्त गर्भज जलचरथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्त गर्भज जलचरथी आवी न उत्पन्न थाय.

२६. जो स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय के परिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय अने परिसर्प स्थलचरथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संमूर्छिमथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भजथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचरथी पण आवी उत्पन्न थाय अने गर्भज चतुष्पद स्थलचरथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्त संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्त संमूर्छिम चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न न थाय. जो

पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संमुच्छिमेहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा !
संमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति, गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियति-
रिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति। जइ संमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्ज-
त्तगसंमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्तगसंमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिं-
दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा ! पज्जत्तसंमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो
उववज्जंति, नो अपज्जत्तगसंमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति। जइ गब्भवक्कंतियच-
उप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति किं संखेज्जवासाउअगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिं-

---

गर्भज चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचथी आवी उत्पन्न थाय तो संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय के
असंख्यात वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्य
वरसना आयुषवाळाथी आवी न उत्पन्न थाय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज चतुष्पद तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न
थाय तो पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी
आवी न उत्पन्न थाय. जो परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं उरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न
थाय के भुजपरिसर्पथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो उरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय
तो शुं समूर्छिम उरपरिसर्पथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज उरपरिसर्पथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! समूर्छिम अने गर्भज

दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति,असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जन्ति,नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जन्ति। जइ संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति, अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तेहिंतो उववज्जन्ति,नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जन्ति। जइ परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जन्ति। जइ उरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं संमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संमुच्छिमेहिंतो उववज्जन्ति,गब्भवक्कंतिएहिंतोवि उवव-

---

वन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो संमूर्छिम उरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ता के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ता संमूर्छिम उरपरिसर्पथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ता संमूर्छिम उपरिसर्पथी आवी न उत्पन्न थाय. जो गर्भजउरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय. जो भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्य-

ज्जन्ति । जइ संमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तगसंमुच्छिमेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तगसंमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति । जइ गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तगगब्भवक्कंतिएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ भुयपरिसप्पथलयरपन्चिदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं संमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! दोहिन्तोवि उववज्जन्ति । जइ संमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तयसमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तयसंमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिन्दियतिरि-

---

चोथी आवी उत्पन्न थाय तो समूर्छिमथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भजथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो संमूर्छिम भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय. जो गर्भज भुज-

क्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा । पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ।

२७. जइ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संमुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, गब्भवक्कंतियखहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिन्तोवि उववज्जन्ति । जइ संमुच्छिमखहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जंति? गोयमा! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति। जइ पज्जत्तगगब्भवक्कंतियखहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जंति, असंखेज्जवा-

---

परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय.

२७. जो खेचर पंचेन्द्रिय तियंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संमूर्छिम के गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो संमूर्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय पण अपर्याप्ताथी आवी न उत्पन्न थाय. जो पर्याप्ता गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय के असंख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय, पण असं-

साउएहिन्तो उववज्जंति? गोयमा! संखिज्जवासाउएहिन्तो उववज्जंति, नो असंखिज्जवासाउएहिन्तो उववज्जंति। जइ संखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति? गोयमा! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति।

२८. जइ मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं संमुच्छिममणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, गब्भवक्कन्तियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति? गोयमा! नो समुच्छिममणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति। जइ गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति अकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति? गोयमा! कम्म-

---

ख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी न उत्पन्न थाय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय.

२८. जो मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शु संमूर्छिम मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! संमूर्छिम मनुष्योथी आवी न उत्पन्न थाय, पण गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय. जो गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कर्मभूमिना, अकर्मभूमिना के अंतरद्वीपना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण अकर्मभूमिना के अंतरद्वीपना गर्भज मनुष्योथी आवी न उत्पन्न थाय. जो कर्मभूमिना गर्भज

भूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति । जइ कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति,असंखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कन्तियमणूसेहिन्तो उववज्जन्ति, नो असंखिज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति । जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तेहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । एवं जहा ओहिया उववाइया तहा रयणप्पभापुढविनेरइयावि उववाएयव्वा ।

२९. सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! एतेवि जहा ओहिया तहेवोववाएयव्वा, नवरं संमुच्छि-

---

मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळा के असंख्याता वरसना आयुषवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी न उत्पन्न थाय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय. ए प्रमाणे जेम सामान्य नैरयिकोनो उपपात कह्यो तेम रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकोनो पण उपपात कहेवो.

२९. शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जेम सामान्य नैरयिकोनो उपपात कह्यो तेम उपपात कहेवो. परंतु

मेहिन्तो पडिसेहो कायव्वो । वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जहा सक्करप्पभापुढविनेरइया, नवरं भुयपरिसप्पेहिन्तो पडिसेहो कायव्वो । पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा वालुयप्पभापुढविनेरइया, नवरं खयरेहिन्तो पडिसेहो कायव्वो । धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा पंकप्पभापुढविनेरइया, नवरं चउप्पएहिन्तोवि पडिसेहो कायव्वो । तमापुढविनेरइया णं भंते ! कओहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढविनेरइया, नवरं थलयरेहिन्तोवि पडिसेहो कायव्वो । इमेणं अभिलावेणं जइ पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, किं जलयरपंचिंदिएहिन्तो उववज्जन्ति, थलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति, खहयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जलयरपंचिन्दिएहिन्तो उववज्जन्ति,

---

संमूर्छिमनो निषेध करवो. एटले के समूर्छिममांथी आवी उत्पन्न थता नथी. हे भगवन् ! वालुकाप्रभा पृथिवीना नैरयिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! जेम शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिको कह्या तेम कहेवा. परंतु भुजपरिसर्पोनो प्रतिषेध करवो अर्थात् भुजपरिसर्पोथी आवी अहीं उपजता नथी. पंकप्रभापृथिवीना नैरयिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! वालुकाप्रभापृथिवीना नैरयिको पेठे जाणवा. परंतु खेचरोथी आवी उत्पन्न थता नथी. धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! पंकप्रभापृथिवीना नैरयिको संबंधे कह्युं तेम कहेवु, परंतु चतुष्पदोनो प्रतिषेध करवो, एटले त्यांथी आवी उत्पन्न थता नथी हे भगवन् ! तमापृथिवीना नैरयिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जेम धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको कह्या तेम कहेवा. परंतु स्थलचरोथी आवी उत्पन्न थता नथी. तेम आ अभिलाप वडे प्रतिषेध करवो—"जो पंचेन्द्रियतिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं जलचर पचेन्द्रियोथी, स्थ-

नो थलयरेहिन्तो, नो खयरेहिन्तो उववज्जन्ति ।

३०. जइ मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अंतरदीवएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अंतरदीवएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति कि संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, असंखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, नो असंखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ पज्जत्त-

---

लचर पंचेन्द्रियोथी के खेचर पंचेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जलचर अने खेचर पंचेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थता नथी.

३०. जो मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कर्मभूमिना, अकर्मभूमिना के अन्तरद्वीपना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण अकर्मभूमिना के अन्तरद्वीपना मनुष्योथी आवी न उत्पन्न थाय. जो कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय के असंख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी न उत्पन्न थाय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी न उत्पन्न थाय. जो पर्याप्ता संख्याता

गसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति किं इत्थिएहिन्तो उववज्जन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्जन्ति, नपुंसएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! इत्थीहिन्तो उववज्जन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्जन्ति, नपुंसएहिन्तोवि उववज्जन्ति । अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! एवं चेव, नवरं इत्थीहिन्तो पडिसेहो कायव्वो ।"अस्सन्नी खलु पढमं दोचंपि सिरीसवा तइय पक्खी। सीहा जन्ति चउत्थिं उरगा पुण पंचमिं पुढविं । छट्ठिं च इत्थियाओ मच्छा मणुया य सत्तमिं पुढविं । एसो परमोवाओ बोद्धव्वो नरगपुढवीणं" ॥

३१. असुरकुमारा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणि-

---

वरसना आयुष्यवाळा कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं स्त्रीओ, पुरुषो के नपुंसकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! स्त्रीओ, पुरुषो के नपुंसकोथी पण आवी उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! अधःसप्तमी नरकपृथिवीना नैरयिकोमां क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एमज जाणवुं. परन्तु स्त्रीनो प्रतिषेध करवो. एटले स्त्रीथी आवी उत्पन्न थता नथी. असंज्ञी प्रथम नरक पर्यंत, सरीसृपो—भुजपरिसर्प बीजी सुधी, पक्षीओ त्रीजी नरक सुधी, सिंहो चोथी नरक सुधी, उरःपरिसर्पो पांचमी नरक सुधी, स्त्रीओ छट्ठी नरक सुधी अने मत्स्यो तथा मनुष्यो सातमी नरक सुधी जाय छे. आ नरकपृथिवीओनो उत्कृष्ट उपपात जाणवो."

३१. हे भगवन् ! असुरकुमारो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, तिर्यंचो

३१—४० भवनवासी देवोना उपपातना विचारमां देवो, नारको, पृथिव्यादि पांच स्थावर, विकलेन्द्रियत्रिक, अपर्याप्त तिर्यंच पचेन्द्रिय, समूर्छिम अने अपर्याप्त गर्भज मनुष्योनो प्रतिषेध जाणवो बाकीनानुं विधान समजवुं. पृथिवी, अप् अने वनस्पतिने विषे सकल नैरयिको

एहिंतो उववज्जन्ति, मणुस्सेहिंतो उववज्जन्ति, नो देवेहिंतो उववज्जन्ति । एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाओ तेहिंतो असुरकुमाराणवि भाणियव्वो, नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगमणुस्सतिरिक्खजोणिएहिन्तोवि उववज्जन्ति, सेसं तं चेव । एवं जाव थणियकुमारा भाणियव्वा ।

३२. पुढविकाइया णं भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? किं नेरइएहिन्तो जाव देवेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएहिन्तो उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, देवेहिन्तोवि उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं एगिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, जाव पंचिन्दि-

---

अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे ज्यांथी आवी नैरयिकोनो उपपात थाय छे त्यांथी आवी असुरकुमारोनो पण उपपात कहेवो. परंतु असंख्यात वरसना आयुषवाळा अकर्मभूमिना के अन्तरद्वीपना मनुष्यो अने तिर्यंचोथी पण आवी उत्पन्न थाय छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमार सुधी कहेवुं.

३२. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी न उत्पन्न थाय, पण तिर्यंचो, मनुष्यो के देवोथी आवी उत्पन्न थाय. जो तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय ?

अने सनत्कुमारादि देवोनो, तेजस्, वायु, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां सर्व नारको अने सर्वदेवोनो, तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां आनत देवोनो, मनुष्योमां सातमी नरकपृथिवीना नारक, तेजस् अने वायुनो, व्यन्तरोमां देव, नारक, पृथिव्यादि पांच, विकलेन्द्रियत्रिक,

किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति? गोयमा। दोहिन्तोवि उववज्जन्ति, एवं जाव वणस्सकाइया चउक्कएणं भेदेण उववाएव्वा।

३३. जइ बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तबेइंदिएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तयबेइंदिएहिन्तो उववज्जन्ति? गोयमा! दोहिन्तोवि उववज्जन्ति। एवं तेइंदियचउरिन्दिएहिन्तोवि उववज्जन्ति। जइ पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं जलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, एवं जेहिन्तो नेरइयाणं उववाओ भणिओ तेहिन्तो एतेसिंपि भाणियव्वो, नवरं पज्जत्तगअपज्जत्तगेहिन्तोवि उववज्जन्ति, सेसं तं चेव।

शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे यावत्–वनस्पतिकायिको सुधी (सूक्ष्म, बादर, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता ए) चार भेदो वडे उपपात कहेवो.

३३. जो बेइन्द्रिय तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्त बेइन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्त बेइन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय?—इत्यादि जेओथी नैरयिकोनो उपपात कह्यो छे तेओथी ए पृथिवीकायिकोनो पण उपपात कहेवो. परंतु एटली विशेषता छे के पर्याप्ता अने अपर्याप्ता बन्नेथी आवी

सनत्कुमारथी मांडी सहस्रार देवलोक सुधी अकर्मभूमिजोनो पण प्रतिषेध जाणवो. आनतादिने विषे तिर्यंच पंचेन्द्रियोनो अने विजयादिने विषे मिथ्यादृष्टि मनुष्योनो पण प्रतिषेध जाणवो. पंचमद्वार समाप्त.

३४ जइ मणुस्सेहिन्तो उववज्जंति किं संमुच्छिममणुस्सेहिन्तो उववज्जंति, गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जंति? गोयमा! दोहिन्तोवि उववज्जंति। जइ गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जंति किं कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जंति, अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जंति? सेसं जहा नेरइयाणं, नवरं अपज्जत्तएहिंतोवि उववज्जंति।

३५. जइ देवेहिन्तो वि उववज्जंति किं भवणवासिवाणमंतरजोइसवेमाणिएहिन्तो उववज्जंति? गोयमा! भवणवासिदेवेहिन्तोवि उववज्जंति, जाव वेमाणियदेवेहिन्तोवि उववज्जंति। जइ भवणवासिदेवेहिन्तो उववज्जंति किं असुरकुमारदेवेहिंतो, जाव थणियकुमारेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! असुरकुमारदेवेहिंतोवि उ-

---

उत्पन्न थाय छे. बाकी बधु तेमज जाणवु.

३४. जो मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं सम्मूर्च्छिम मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शु कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय के अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि बाकी बधुं नैरयिको संबन्धे कह्युं तेम कहेवुं. परन्तु अपर्याप्ताथी पण उत्पन्न थाय छे.

३५. जो देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषिक, के वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय? हे गौतम! भवनवासी देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्–वैमानिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो भवनवासी देवोथी आवी

वज्जंति, जाव थणियकुमारदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जइ वाणमंतरदेवेहिन्तो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि, जाव गंधव्वेहिंतो वि उववज्जंति । जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाणेहिंतो उववज्जंति, जाव ताराविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतोवि जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति, कप्पातीतवेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति, नो कप्पातीतवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति । जइ कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो, जाव अच्चुएहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! सोहम्मीसाणेहिं-

---

उत्पन्न थाय तो शुं असुरकुमारोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्–स्तनितकुमारोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! असुरकुमार देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्–स्तनितकुमार देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो व्यन्तर देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पिशाचोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्–गांधर्वोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पिशाचोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्–गांधर्वोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो ज्योतिपिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं चन्द्रविमानना देवोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्–ताराविमानना देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! चन्द्रविमानना ज्योतिपिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्–ताराविमानना ज्योतिपिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय के कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कल्पोप-

तो उववज्जंति, नो सणंकुमार जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति। एवं आउकाइयावि। एवं तेउवाउकाइयावि, नवरं देववज्जेहिंतो उववज्जंति। वणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया। बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया एते जहा तेउवाऊ देववज्जेहिंतो भाणियव्वा।

३६. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव, देवेहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नेरइएहिंतोवि, तिरिक्खजोणिएहिंतोवि, मणुस्सेहिंतोवि, देवेहिंतोवि उववज्जन्ति। जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा !

पन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय, पण कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न न थाय. जो कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं सौधर्मथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्–अच्युतथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! सौधर्म अने ईशानथी आवी उत्पन्न थाय, पण सनत्कुमार, यावत्–अच्युतथी आवी उत्पन्न न थाय. ए प्रमाणे अप्कायिको पण जाणवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिको पण एमज जाणवा. परन्तु तेओ देव सिवाय बाकीना जीवोथी आवी उत्पन्न थाय छे. वनस्पतिकायिको पृथिवीकायिकोनी पेठे जाणवा. बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो तेजस्काय अने वायुकायनी पेठे देव सिवायना जीवोथी आवी उत्पन्न थाय छे एम कहेवुं.

३६. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो क्याथी आवी उत्पन्न थाय छे ? शुं नैरयिकोथी यावत्–देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोथी, तिर्यंचोथी, मनुष्योथी अने देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय छे. जो नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं

रयणप्पभापुढविनेरएहिंतोवि उववज्जंति, जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतोवि उववज्जंति। जइ तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जंति किं एगिंदिएहिंतो उववज्जंति, जाव पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएहिंतोवि उववज्जन्ति, जाव पंचिंदिएहिंतोवि उववज्जंति। जइ एगिंदिएहिंतो उववज्जंति किं पुढविकाइएहिंतो उववज्जन्ति–एवं जहा पुढविकाइयाणं उववाओ भणिओ तहेव एएसिंपि भाणियव्वो, नवरं देवेहिंतो जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जंति, नो आणयकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुएहिंतोवि उववज्जंति।

३७. मणुस्सा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गो-

---

रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी यावत्–अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी, यावत्–अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्–पंचेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्–पंचेन्द्रियोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो एकेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पृथिवीकायिकोथी आवी उत्पन्न थाय–इत्यादि जेम पृथिवीकायिकोनो उपपात कह्यो तेम ए पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो पण कहेवो, परन्तु विशेष ए छे के तेमां देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे, यावत् सहस्रार कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे, पण आनत कल्पोपपन्न देवोथी यावत् अच्युत कल्पोपपन्न देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी.

३७. हे भगवन् ! मनुष्यो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी, यावत् देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !

यमा ! नेरइएहिंतोवि उववज्जंति, जाव देवेहिंतोवि उववज्जंति । जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापु-
ढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, किं सक्करप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, किं वालुयप्पभापुढविनेरइएहिंतो०,
किं पंकप्पभानेरइएहिंतो०, किं धूमप्पभानेरइएहिंतो०, किं तमप्पभानेरइएहिंतो०, किं अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो
उववज्जति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतोवि, जाव तमापुढविनेरइएहिंतोवि उववज्जंति, नो अहेसत्त-
मापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति । जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उ-
ववज्जंति-एवं जेहिंतो पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो मणुस्साणवि निरवसेसो भाणि-
यव्वो, नवरं अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो तेउवाउकाइएहिंतो ण उववज्जंति। सव्वदेवेहिंतो य उववाओ कायव्वो

नैरयिकोथी, यावत् देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय छे. जो नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु रत्नप्रभा पृथि-
वीना नैरयिकोथी, शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी यावत् अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी, यावत् तमापृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे. परन्तु अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिकोथी
आवी उत्पन्न थता नथी. जो तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु एकेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम जे जीवोथी
आवी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो उपपात कह्यो छे तेम ते जीवोथी आवी मनुष्योनो पण सर्व प्रकारे उपपात कहेवो. परन्तु अधःसप्तम
नरकपृथिवीना नैरयिकोथी तथा तेजस्काय अने वायुकायथी आवी मनुष्यो उत्पन्न थता नथी. तथा सर्व देवोथी उपपात कहेवो,
यावत्-कल्पातीत वैमानिक सर्वार्थसिद्ध देवोथी पण उपपात कहेवो.

जाव कप्पातीतवेमाणियसव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतोवि उववज्जावेयव्वा ।

३८. वाणमंतरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! जेहिन्तो असुरकुमारा उववज्जन्ति तेहिन्तो वाणमन्तरा उववज्जाएयव्वा ।

३९. जोइसिया देवा णं भंते! कओहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! एवं चेव, नवरं संमुच्छिमअसंखिज्जवासाउयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियवज्जेहिंतो अंतरदीवमणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयव्वा ।

४०. वेमाणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति? किं नेरइएहिंतो, किं तिरिक्खजोणिएहिंतो, किं मणुस्सेहिंतो किं देवेहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति,

---

३८. हे भगवन् ! व्यन्तर देवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिको, तिर्यंचो, मनुष्यो के देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ज्यांथी आवी असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे त्यांथी आवी व्यन्तरो उत्पन्न थाय छे एम कहेवुं.

३९. हे भगवन् ! ज्योतिषिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! एमज जाणवुं. परन्तु संमूर्छिम (तिर्यंच पंचेन्द्रिय) अने असंख्याता वरसना आयुषवाळा खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो तथा अन्तर द्वीपना मनुष्यो सिवाय बीजा जीवोथी आवी उत्पन्न थाय छे एम कहेवुं.

४०. हे भगवन् ! वैमानिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे? शुं नैरयिको, तिर्यंचो, मनुष्यो अने देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. देवोथी आवी उत्पन्न

मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो देवेहिंतो उववज्जंति । एवं सोहम्मीसाणगदेवा वि भाणियव्वा । एवं सणंकुमार देवावि भाणियव्वा, नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगवज्जेहिंतो उववज्जंति । एवं जाव सहस्सारकप्पोवग-वेमाणियदेवा भाणियव्वा । आणयदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो, किं पंचिंदियतिरि-क्खजोणियेहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणि-एहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, णो देवेहिंतो उववज्जंति । जइ मणुस्सेहिन्तो उववज्जंति किं सं-मुच्छिममणुस्सेहिंतो, गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो, नो समु-च्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति । जइ गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमिगेहिंतो, अकम्मभू-

थता नथी. ए प्रमाणे सौधर्म अने ईशान देवो पण कहेवा. सनत्कुमार देवो संबंधे पण एमज कहेवुं, परन्तु असंख्यात वरसना आयुषवाळा अकर्मभूमि सिवायना बीजा (पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्योथी) आवी उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत्—सहस्रार कल्पोपपन्न वैमानिक देवो सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! आनत देवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? शुं नैरयिकोथी, पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोथी, तिर्यंचोथी के देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संमूर्छिम मनुष्योथी के गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! संमूर्छिम मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण गर्भज मनुष्यथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कर्मभूमिना, अकर्मभूमिना के अंतरद्वीपना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !

मिगेहिंतो, अंतरदीवगेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो अकम्मभूमिगेहिंतो, णो अंतरदीवगेहिंतो उववज्जंति, कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति । जइ कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिंतो, असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो, नो असंखिज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति । जइ संखिज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जंति । जइ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जन्ति किं सम्मादिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगेहिन्तो उववज्जन्ति, मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगेहिंतो उववज्जन्ति, सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगेहिंतो उववज्जन्ति ?

अकर्मभूमिना के अतरद्वीपना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुपवाळा के असंख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे, पण असंख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी. जो संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय. जो पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं सम्यग्दृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय, सम्यग्मिथ्यादृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय के मिथ्यादृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! सम्यग्दृष्टिथी के मिथ्यादृष्टिथी

गोयमा ! सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसेहिंतो उववज्जन्ति, मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति, णो सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति। जइ सम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसेहिन्तो उववज्जंति किं संजतसम्मदिट्ठीहिन्तो, असंजतसम्मदिट्ठीपज्जत्तएहिन्तो, संजयासंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! तीहिंतोवि उववज्जंति। एवं जाव अच्चुगो कप्पो। एवं चेव गेविज्जगदेवावि, णवर असंजतसंजतासंजता एते पडिसेहेयव्वा। एवं जहेव गेविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइयावि, णवर इमं णाणत्तं संजया चेव। जइ सम्मदिट्ठीसंजतपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसेहिन्तो उववज्जंति किं पमत्तसंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तएहिन्तो, अपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्त-

आवी उत्पन्न थाय, पण सम्यग्मिथ्यादृष्टिथी आवी उत्पन्न न थाय. जो सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यातवरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संयत सम्यग्दृष्टिथी, असंयत सम्यग्दृष्टिथी के संयतासंयत सम्यग्दृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! त्रणेथी आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे अच्युत कल्प सुधी जाणवु. ग्रैवेयक देवो पण एमज जाणवा. परंतु सम्यग्दृष्टि असंयत अने संयतासंयतनो [1]प्रतिषेध करवो. जेम ग्रैवेयक देवो कह्या तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण समजवा. परंतु

[1] ग्रैवेयकमां सम्यग्दृष्टि असंयत–अविरति अने संयतासंयत–देशविरतिनो प्रतिषेध कर्यो, परंतु तेमां मिथ्यादृष्टि द्रव्यसंयत अने सम्यग्दृष्टि संयत आवीने उपजे छे, अने अनुत्तरौपपातिकमां केवळ संयत ज उत्पन्न थाय छे, त्यां मिथ्यादृष्टि द्रव्यसंयत उत्पन्न थता नथी, पण केवळ अप्रमत्त भावसंयत आवीने उत्पन्न थाय छे

एहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! अपमत्तसंजयपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो पमत्तसंजयपज्जत्तएहिन्तो उववज्जंति। जइ अपमत्तसंजएहिन्तो उववज्जन्ति किं इड्ढिपत्तअपमत्तसंजएहिन्तो, अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजएहिन्तो०? गोयमा ! दोहिन्तो उववज्जन्ति । ५ दारं ।

४१. नेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छन्ति, कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, देवेसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जन्ति,

एटलो विशेष छे के अहीं संयतो ज आवी उपजे छे. जो सम्यग्दृष्टि संयत पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं प्रमत्त संयतथी के अप्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! अप्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न थाय, परंतु प्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न न थाय. जो अप्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं ऋद्धिप्राप्त (लब्धिप्राप्त) संयतथी आवी उत्पन्न थाय के ऋद्धि अप्राप्त (लब्धिने नहि प्राप्त थयेला) संयतथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. पंचम द्वार समाप्त.

षष्ठ द्वार.

४१. हे भगवन् ! नैरयिको उद्वर्तना करी-मरण पामी तुरत क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां, तिर्यंचोमां,

४१-४४. 'हे भगवन् ! नैरयिको उद्वर्तना-मरण पामी क्यां जाय छे, क्यां उत्पन्न थाय छे'-इत्यादि पाठसिद्ध छे. परंतु अहीं पण संक्षेपमां आ अर्थ कहेवानो छे—नैरयिको स्वभवथी मरण पामी संख्याता वरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने

तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, नो देवेसु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति किं एगिंदिएसु उववज्जन्ति, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! णो एगिंदिएसु, जाव नो चउरिंदिएसु उववज्जन्ति,एव जेहिन्तो उववाओ भणिओ तेसु उव्वट्टणावि भाणियव्वा, नवरं समुच्छिमेसु न उववज्जन्ति । एवं सव्वपुढवीसु भाणियव्वं, नवर अहेसत्तमाओ मणुस्सेसु ण उववज्जन्ति ॥

४२. असुरकुमारा ण भंते ! अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छन्ति, कहिं उववज्जन्ति ? किं नेरइएसु, जाव देवेसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, णो

मनुष्योमां के देवोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोमां न उत्पन्न थाय, तिर्यंचोमां अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय अने देवोमां न उत्पन्न थाय. जो तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय के यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोमा न उत्पन्न थाय, यावत्–चउरिन्द्रियोमां न उत्पन्न थाय–इत्यादि ज्यांथी आवी नारकोनो उपपात कह्यो छे तेने विषे उद्वर्तना पण कहेवी. परन्तु संमूर्छिमोमां उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे सर्व नरकपृथिवीओमां कहेवुं. पण सातमी नरकपृथिवीथी नीकळी मनुष्योमां उत्पन्न थता नथी.

४२. हे भगवन् ! असुरकुमारो उद्वर्तना करी क्यां जाय क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां, यावत् देवोमां उत्पन्न थाय ?

मनुष्योमा उत्पन्न थाय छे परन्तु सातमी नरक पृथिवीना नारको संख्याता वरसना आयुष्यवाळा गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रियोमा ज उपजे छे असुरकुमारादि भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान देवो बादर पर्याप्त पृथिवी, अप्, प्रत्येक वनस्पति, गर्भज संख्याता

देवेसु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति किं एगिन्दिएसु उववज्जंति, जाव पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! एगिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, नो बेइंदिएसु, जाव नो चउरिंदिएसु उववज्जन्ति, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति। जइ एगिन्दिएसु उववज्जन्ति किं पुढविकाइयएगिन्दिएसु, जाव वणस्सइकाइयएगिन्दिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! पुढविकाइयएगिन्दिएसुवि, आउकाइयएगिन्दिएसुवि उववज्जन्ति, नो तेउकाइएसु, नो वाउकाइएसु उववज्जन्ति, वणस्सइकाइएसु उववज्जन्ति । जइ पुढविकाइएसु उववज्जन्ति किं सुहुमपुढविकाइएसु उववज्जन्ति, बायरपुढविकाइएसु उववज्जंति ? गोयमा ! बायरपुढविकाइएसु

हे गौतम ! नैरयिकोमां उपजता नथी, तिर्यंचो अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. अने देवोमां उत्पन्न थता नथी. जो तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय के यावत्–पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय छे, परन्तु बेइन्द्रियो, यावत्–चउरिन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी,अने पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय छे. जो एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय तो शुं पृथिवीकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय के यावत्–वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पृथिवीकायिक एकेन्द्रियोमां अने अप्कायिक एकेन्द्रियोमां पण उत्पन्न थाय छे, पण तेजस्कायिक अने वायुकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी. अने वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय छे. जो पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो शुं सूक्ष्म पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय के

वरसना आयुपवाळा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. पृथिवी, अप्, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो तिर्यञ्चगति अने मनुष्यगतिमां तथा तेजस् ने वायु तिर्यञ्च गतिमां उपजे छे. तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य अने देवगतिमां

उववज्जंति, नो सुहुमपुढविकाइएसु उववज्जंति। जइ बायरपुढविकाइएसु उववज्जंति किं पज्जत्तगबायरपुढविकाइएसु उववज्जंति, अपज्जत्तबायरपुढविकाइएसु उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएसु उववज्जंति, नो अपज्जत्तएसु उववज्जंति। एव आउवणस्सइसुवि भाणियव्वं। पंचिन्दियतिरिक्खजोणियमणूसेसु य जहा नेरइयाणं उव्वट्टणा समुच्छिमवज्जा तहा भाणियव्वा। एवं जाव थणियकुमारा ॥

४१ पुढविकाइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु जाव देवेसु० ? गोयमा ! नो नेरइएसु, तिरिक्खजोणियमणूसेसु उववज्जंति, नो देवेसु उववज्जंति, एवं जहा एतेसिं चेव उववाओ

बादर पृथ्वीकायिकमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बादर पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय, पण सूक्ष्म पृथिवीकायिकमां न उत्पन्न थाय. जो बादर पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय के अपर्याप्ता बादर पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्तामां उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्तामां न उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकने पण कहेवु. पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्योने विषे जेम नैरयिकोनी संमूर्छिम सिवाय अन्यमां उद्वर्तना कही तेम असुरकुमारोनी पण कहेवी. ए प्रमाणे स्तनितकुमार सुधी जाणवु.

४१. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको उद्वर्तना करी–मरण पामी तुरत क्यां जाय–क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां के यावत् देवोमां उत्पन्न

उत्पन्न थाय छे, परंतु तेओ वैमानिकमां सहस्रार पर्यंत उत्पन्न थाय छे. मनुष्योनो सर्व स्थानोमां, सनत्कुमारथी मांडी सहस्रार सुधीना देवोनो संख्याता वर्षना आयुष्यवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योमां उत्पाद थाय छे तथा आनतादि देवोनो

तहा उव्वट्टणावि देववज्जा भाणियव्वा। एवं आउवणस्सइबेइंदियतेइंदियचउरिन्दियावि। एवं तेउ० वाउ०, नवरं मणुस्सवज्जेसु उववज्जन्ति। पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया णं भंते। अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जन्ति? गोयमा! नेरइएसु जाव देवेसु उववज्जन्ति। जइ नेरइएसु उववज्जन्ति किं रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति, जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति? गोयमा! रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति, जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति। जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति किं एगिन्दिएसु, जाव पंचिन्दिएसु उववज्जन्ति? गोयमा! एगिन्दिएसु, जाव पंचिन्दिएसु उववज्जन्ति। एवं जहा एतेसिं चेव उववाओ उव्वट्टणावि तहेव भाणियव्वा, नवरं असंखेज्जवासाउएसुवि एते उववज्जंति। जइ मणुस्सेसु उववज्जन्ति किं संमुच्छिममणु-

---

थाय? हे गौतम! नैरयिकोमां न उत्पन्न थाय, तिर्यंचयोनिक अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय, अने देवोमां न उत्पन्न थाय. जेम पृथिवीकायिकोनो उपपात कह्यो छे तेम उद्वर्तना पण देवसिवाय कहेवी. ए प्रमाणे अप्काय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो पण कहेवा. तेजस्काय अने वायुकाय माटे एमज जाणवुं. परन्तु मनुष्य सिवाय बीजाने विशे उत्पन्न थाय. हे भगवन्! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो मरीने तुरत क्यां जाय—क्यां उत्पन्न थाय? हे गौतम! नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, यावत् देवोमां उत्पन्न थाय. जो नैरयिकोमां उत्पन्न थाय तो शुं रत्नप्रभामां उत्पन्न थाय के यावत् सातमी नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय? हे गौतम! रत्नप्रभामां पण उत्पन्न थाय, यावत् सातमी नरकपृथिवीमां पण उत्पन्न थाय. जो तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रियोमां के यावत्-पंचे-

---

गर्भज संख्याता वरसना आयुष्यवाळा मनुष्योमां ज उपपात थाय छे. षष्ठ द्वार समाप्त.

स्सेसु उववज्जन्ति, गब्भवक्कंतियमणूसेसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! दोसुवि । एवं जहा उववाओ तहेव उव्वट्टणावि भाणियव्वा, नवरं अकम्मभूमग-अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणूसेसु असंखेज्जवासाउएसुवि एते उववज्जंति त्ति भाणियव्वं । जइ देवेसु उववज्जन्ति किं भवणवईसु उववज्जन्ति, जाव किं वेमाणिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! सव्वेसु चेव उववज्जंति । जइ भवणवईसु किं असुरकुमारेसु उववज्जन्ति जाव थणियकुमारेसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! सव्वेसु चेव उववज्जन्ति । एवं वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु निरंतरं उववज्जन्ति जाव सहस्सारो कप्पो त्ति ॥

५४. मणुस्सा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंन्ति ? किं नेरइएसु उववज्जंन्ति जाव

न्द्रियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय, यावत्–पंचेन्द्रियोमां पण उत्पन्न थाय–इत्यादि जेम एओनो उपपात कह्यो छे तेम उद्वर्तना पण कहेवी. परन्तु एओ असंख्यात वरसना आयुषवाळा तिर्यंचोमां पण उत्पन्न थाय छे. जो मनुष्योमां उत्पन्न थाय तो शुं संमूर्छिम मनुष्योमां उत्पन्न थाय के गर्भज मनुष्योमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे जेम उपपात कह्यो छे तेम उद्वर्तना पण कहेवी. परन्तु अकर्मभूमिना अने अन्तर द्वीपना असंख्यात वरसना आयुवाळा मनुष्योमां पण उत्पन्न थाय छे एम कहेवुं. जो देवोमां उत्पन्न थाय तो शुं भवनपतिमां उत्पन्न थाय के यावत् वैमानिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बधामां उत्पन्न थाय. जो भवनपतिमां उत्पन्न थाय तो शुं असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय के, यावत्–स्तनितकुमारोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बधामां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां सहस्रारकल्प सुधी निरंतर उत्पन्न थाय छे.

५४ हे भगवन् ! मनुष्यो मरण पामी तुरत क्यां जाय, क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, यावत् देवोमां

देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जन्ति, जाव देवेसुवि उववज्जंति । एवं निरंतरं सव्वेसु ठाणेसु पुच्छा । गोयमा ! सव्वेसु ठाणेसु उववज्जन्ति, न कहिं च पडिसेहो कायव्वो, जाव सव्वट्ठसिद्धदेवेसुवि उववज्जन्ति, अत्थेगतिया सिज्झंति, बुज्झंति, मुचंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति । वाणमंतरजोइसियवेमाणियसोहम्मीसाणा य जहा असुरकुमारा, नवरं जोइसियाण य वेमाणियाण य चयंतीति अभिलावो कायव्वो। सणंकुमारदेवाणं पुच्छा । गोयमा! जहा असुरकुमारा, नवरं एगिंदिएसु ण उववज्जंति । एवं जाव सहस्सारगदेवा। आणय-जाव अणुत्तरोववाइया देवा एवं चेव, नवरं नो तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणूसेसु उववज्जन्ति । ९ दारं ।

उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नेरयिकोमां पण उत्पन्न थाय, यावत् देवोमां पण उत्पन्न थाय. एम निरंतर बधा स्थानको संबन्धे पृच्छा करवी. हे गौतम ! बधा स्थानकोमां उत्पन्न थाय छे. कोइ पण स्थानको प्रतिषेध न करवो. यावत्–सर्वार्थसिद्ध देवोमां पण उत्पन्न थाय छे. कोइक तो सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त थाय छे, निर्वाण पामे छे अने सर्व दुःखोनो अन्त करे छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क, वैमानिक सौधर्म अने ईशान देवो जेम असुरकुमारो कह्या तेम कहेवा. परंतु ज्योतिष्क अने वैमानिको 'च्यवे छे' एवो पाठ कहेवो. सनत्कुमार देवो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जेम असुरकुमारो कह्या तेम कहेवा, परंतु एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे सहस्रार देवो सुधी जाणवा. आनत, यावत् अनुत्तरौपपातिक देवो संबंधे एमज जाणवुं, परंतु तेओ तिर्यंचोमां उत्पन्न थता नथी. मनुष्योमां पण पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुषवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. ९मुं द्वार समाप्त.

४५. नेरइया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति? गोयमा ! नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं । एवं असुरकुमारा वि, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य । तत्थ णं जे ते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति । तत्थ णं जे ते सोवक्कमाउया ते सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति । आउतेउवाउवणप्फइकाइ-

सातमुं द्वार.

४५. हे भगवन् ! नैरयिको आयुषनो केटलो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे ? हे गौतम ! छ मास आयुष बाकी होय त्यारे अवश्य परभवनुं आयुष बांधे छे. ए प्रमाणे असुरकुमारो, यावत् स्तनितकुमारो जाणवा. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको आयुषनो केटलो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे ? हे गौतम ! पृथिवीकायिको बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—सोपक्रमआयुषवाळा अने निरुपक्रमआयुषवाळा. तेमां जे निरुपक्रमआयुषवाळा छे तेओ अवश्य वर्तमान आयुषनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनु आयुष बांधे छे. तेमां जे सोपक्रमआयुषवाळा छे तेओ कदाच आयुषनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनु

४५-४६ हवे सातमु द्वार कहे छे. तेनो पूर्वना द्वारनी साथे आ संबन्ध छे-जे जीवोनो नारकादि गतिओमां विविध प्रकारनो उपपात कह्यो छे, ते जीवोए पूर्व भवे आयुष बांधेलु छे अने पछीथी तेनो उपपात थयेलो छे, कारण के आयुषनो बंध थया सिवाय

याणं वेइंदियतेइंदियचउरिन्दियाणवि एवं चेव ।

४६. पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा! पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संखेज्जवासाउया य असंखेज्जवासाउया य । तत्थ णं जे ते असंखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। तत्थ णं जे ते संखिज्जवासाउया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य । तत्थ णं जे ते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति । तत्थ णं जे ते सोवक्कमाउया ते णं सिय तिभागे परभवियाउयं पकरेंति,

---

आयुष बांधे छे. कदाच आयुषना त्रीजा भागनो त्रीजो भाग (नवमो भाग) वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे. कदाच आयुषना त्रीजा भागना त्रीजा भागनो त्रीजो भाग (सत्यावीशमो भाग) बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे. अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने पण एमज जाणवुं.

४६. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो आयुषनो केटलो भाग वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे ? हे गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—संख्याता वरसना आयुषवाळा अने असंख्याता वरसना आयुषवाळा, तेमां जे असंख्यात

उपपात थतो नथी. तेमां 'केटलुं पूर्व भवनुं आयुष वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे' ए प्रमाणे संशयने प्राप्त थयेला भगवान् गौतम पूछे छे—"हे भगवन्! नैरयिको आयुषनो केटलो भाग वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे'? इत्यादि पाठसिद्ध छे. सातमुं द्वार समाप्त.

सिय तिभागतिभागे परभवियाउयं पकरेंति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउय पकरेंति। एवं मणूसा वि। वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया। ६ दार।

४७. कइविहे णं भंते! आउयबंधे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे आउयबंधे पन्नत्ते, तंजहा—१ जातिनामनिहत्ताउए, २ गतिनामनिहत्ताउए, ३ ठितीणामनिहत्ताउए, ४ ओगाहणनामनिहत्ताउए, ५ पएसनामनिहत्ताउए,

वरसना आयुषवाळा छे ते पोतानुं छमासनुं आयुष बाकी होय त्यारे अवश्य परभवनुं आयुष बांधे छे. अने जे सख्याता वरसना आयुषवाळा छे ते बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-सोपक्रमआयुषवाळा अने निरुपक्रमआयुषवाळा. तेमां जे निरुपक्रमआयुषवाळा छे ते पोताना आयुषनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे अवश्य परभवनुं आयुष बांधे छे. अने जे सोपक्रमआयुषवाळा छे, तेओ कदाच त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे, कदाच त्रीजा भागनो त्रीजो भाग (नवमो भाग) बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे, अने कदाच त्रीजा भागना त्रीजा भागनो त्रीजो भाग (सत्यावीशमो भाग) बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे. ए प्रमाणे मनुष्यो पण जाणवा. व्यन्तरो, ज्योतिष्को अने वैमानिको नैरयिको प्रमाणे जाणवा. सातमुं द्वार समाप्त

आठमुं द्वार.

४७. हे भगवन्! आयुषनो बंध केटला प्रकारनो कह्यो छे? हे गौतम! छ प्रकारनो आयुषनो बंध कहेलो छे. ते आ प्रमाणे—

४७ ए प्रमाणे वर्तमान भवना आयुषनो केटलामो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे तेनुं प्रतिपादन कर्युं, हवे जे प्रकारे आयुषनो बंध करे ते प्रकार नैरयिकादि दंडकना क्रमथी प्रतिपादन करे छे-'नेरइयाणं भंते! कइविहे आउयबंधे पन्नत्ते'? हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारनो आयुषनो बंध कहेलो छे-इत्यादि 'जातिनामनिहत्ताउए' १ जातिनामनिधत्तायुष, जाति

६ अणुभावनामनिहत्ताउए। नेरइयाणं भंते! कइविहे आउयबंधे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे आउयबंधे पन्नत्ते, तंजहा-जातिनामनिहत्ताउए, गतिणामनिहत्ताउए, ठितीणामनिहत्ताउए, ओगाहणणामनिहत्ताउए, पदेसणामनिहत्ताउए, अणुभावणामनिहत्ताउए, एवं जाव वेमाणियाणं।

१ जातिनामनिधत्तायुष, २ गतिनामनिधत्तायुष, ३ स्थितिनामनिधत्तायुष, ४ अवगाहनानामनिधत्तायुष, ५ प्रदेशनामनिधत्तायुष अने ६ अनुभावनामनिधत्तायुष. हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारनो आयुषबंध कह्यो छे? हे गौतम! छ प्रकारनो आयुषबंध कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-१ जातिनामनिधत्तायुष, यावत् ६ अनुभावनामनिधत्तायुष. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

एकेन्द्रियजात्यादि, तेना पांच प्रकार छे, अने ते ज नाम-नामकर्मनी उत्तरप्रकृतिविशेषरूप .ते जातिनाम, तेनी साथे निधत्त-निषेकने प्राप्त थयेल जे आयुष-एटले जातिनामकर्म विशिष्ट आयुषनो बन्ध ते जातिनामनिधत्तायुष, निषेक-कर्मपुद्गलोने भोगववा माटे रचना, ते आ प्रकारे छे—

"मोत्तूण सगमबाहं पढमाए ठिईए बहुतरं दव्वं। सेसे विसेसहीणं जावुक्कोसं ति सव्वेसिं॥" (कर्मप्रकृतिप्रदेशबन्ध गा. ८२)

"पोतानो अबाधाकाळ छोडीने प्रथम स्थितिमां घणां पुद्गलद्रव्यो होय छे, अने पछीनी स्थितिमां विशेष न्यून न्यून पुद्गलो होय छे, यावत् उत्कृष्ट स्थितिमां-छेल्ला समयनी स्थितिमां सौथी न्यून पुद्गलो होय छे." तात्पर्य ए छे के बधा य कर्म बंधाता होय छे त्यारे पोतपोतानो अबाधाकाळ छोडीने बाकीना स्थितिकाळमां निषेक-दलिकरचना थाय छे, तेमां प्रथम समये एटले अबाधाकाळ पछीना प्रथम समयमां घणा दलिको होय छे, बीजा समये विशेषहीन दलिको होय छे, तेथी त्रीजा समये विशेषहीन दलिको होय छे, तेथी चोथा समये विशेषहीन दलिको होय छे. एम अनुक्रमे विशेषहीन विशेषहीन त्यां सुधी कहेवुं यावत् उत्कृष्ट स्थिति-छेल्ला समयनी स्थितिमां

४८. जीवा णं भंते! जातिनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पगरेंति? गोयमा! जहन्नेण एक्केण वा दोहिं

४८. हे भगवन्! जीवो जातिनामनिधत्तायुष केटला आकर्षे बांधे? हे गौतम! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कर्षथी

विशेषहीन दलिको होय छे २ 'गतिनामनिधत्तायुष' नरकगत्यादिना भेदथी गति चार प्रकारे छे, ते गतिनामनी साथे निधत्त-निषेक-दलिकरचनाने प्राप्त थयेलु आयुष ते गतिनामनिधत्तायुष, ३ स्थिति-ते भवमा स्थिति थवी-उदयमां आववु, एटले जे नाम कर्म जे भवमा उदयमां आवे ते गति, जाति अने पांच शरीरादि सिवाय स्थितिनाम कर्म जाणवु गत्यादिने पर्यंत करवानु कारण ए छे के तेओनु 'गतिनामनिधत्तायुष' इत्यादि स्वपदोवडे ग्रहण करेलु छे ते स्थितिनामनी साथे निधत्त-निषेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते स्थितिनामनिधत्तायुष ४ 'अवगाहते यस्यां' जेने विषे जीव रहे ते अवगाहना-औदारिकादि शरीर जाणवा, तेनु कारणभूत जे औदारिकादिशरीरनामकर्म ते अवगाहनानाम, तेनी साथे निषेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते अवगाहनानामनिधत्तायुष ५ 'प्रदेशनामनिधत्तायुष' प्रदेश-कर्मपरमाणुओ, ते प्रदेशो स्तिबुक संक्रमथी पण अनुभवाता होय ते ग्रहण करवा, ते प्रधान जेमा छे एवु नामकर्म ते प्रदेशनाम तात्पर्य ए छे के जे, भवमा जे प्रदेशथी भोगवाय ते प्रदेशनाम आथी विपाकोदयने नहि प्राप्त थयेलु पण नामकर्म ग्रहण करवु ते प्रदेशनामनी साथे निषेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते प्रदेशनामनिधत्तायुष 'अनुभावनामनिधत्तायुष' जे भवमां जे तीव्र विपाकवाळु नामकर्म वेदाय, जेमके नारकायुषना उदयमा अशुभ वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, उपघात, अनादेय, दुःस्वर, अयशःकीर्ति वगेरे नामकर्म, तेनी साथे जे निषेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते अनुभावनामनिधत्तायुष (प्र०)—आ माटे जात्यादिनामकर्म आयुषना विशेषण तरीके आपवामा आवेलां छे? (उ०)-आयुषकर्मनी प्रधानता बताववा माटे छे ते आ प्रमाणे-नारकादिना आयुषनो उदय थया पछी जात्यादि नामकर्मनो उदय थाय छे, ते सिवाय थतो नथी, माटे आयुषनी प्रधानता छे

४८-४९. हवे जात्यादिनामकर्मविशिष्ट आयुष केटला आकर्षो वडे बांधे [illegible] ए प्रमाणे जिज्ञासु शिष्य पूछे छे—"जीवाण भंते!

वा तीर्हिं वा उक्कोसेणं अट्ठर्हिं । नेरइया णं भंते ! जातिनामनिहत्ताउयं कतिर्हिं आगरिसेर्हिं पगरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्केण वा दोर्हिं वा तीर्हिं वा, उक्कोसेणं अट्ठर्हिं । एवं जाव वेमाणिया । एवं गतिनामनिहत्ताउएवि, ठितीणामनिहत्ताउएवि, ओगाहणानामनिहत्ताउएवि, पदेसनामनिहत्ताउएवि, अणुभावनामनिहत्ताउएवि ।

४९. एतेसि णं भंते ! जीवाणं जातिनामनिहत्ताउयं जहन्नेणं एक्केण वा दोर्हिं वा तीर्हिं वा उक्कोसेणं अट्ठर्हिं

आठ आकर्षवडे बांधे. ए प्रमाणे यावत्–वैमानिक सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे गतिनामनिधत्तायुष, स्थितिनामनिधत्तायुष, अवगाहनानामनिधत्तायुष, प्रदेशनामनिधत्तायुष अने अनुभावनामनिधत्तायुष संबंधे पण जाणवुं. हे भगवत् ! नैरयिको जातिनामनिधत्तायुषने केटला आकर्ष वडे बांधे ? हे गौतम ! जघन्य एक, बे के त्रण आकर्ष वडे अने उत्कृष्ट आठ आकर्ष वडे बांधे छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. एम गतिनामनिधत्तायुष, स्थितिनामनिधत्तायुष, अवगाहनानामनिधत्तायुष, प्रदेशनामनिधत्तायुष अने अनुभावनामनिधत्तायुष संबंधे पण जाणवुं.

४९. हे भगवन् ! जातिनामनिधत्तायुषने जघन्यथी एक, बे के त्रण आकर्ष वडे अने उत्कर्षथी आठ आकर्ष वडे बांधता ए

जातिनामनिहत्ताउयं कइर्हिं आगरिसेर्हिं पगरेंति" ? 'हे भगवन् ! जीवो केटला आकर्ष वडे जातिनामनिधत्तायुष बांधे–इत्यादि. 'आकर्ष एटले तेवा प्रकारना प्रयत्नथी कर्मपुद्गलोनुं ग्रहण करवुं. जेम गाय पाणी पीती भयवडे वारंवार आडुंअवळुं जोती पाणी

---

१. कर्मबंधने योग्य प्रयत्नविशेषरूप अध्यवसायनी धाराने आकर्ष कहे छे, ज्यारे आयुषकर्मना बंधने योग्य अध्यवसायनी धारा तीव्र होय छे त्यारे ते एक धारा वडे अन्तर्मुहूर्त पर्यंत आयुषनो बंध थाय छे. ज्यारे मन्द धारा होय छे त्यारे वच्चे अन्तर पडी जाय छे एटले

आगरिसेहिं पकरेमाणाणं कतरे पगरेहिन्तो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा जातिणामनिहत्ताउयं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा, सत्तहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा, छहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा, एवं पचहिं संखिज्जगुणा, चउहिं संखिज्जगुणा, तीहिं संखिज्जगुणा, दोहिं संखिज्जगुणा, एगेणं आगरिसेणं पगरेमाणा संखेज्जगुणा । एवं एतेण अभिलावेणं जाव अणुभागनामनि-

जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! जातिनामनिधत्तायुषने आठ आकर्ष वडे बांधता जीवो सौथी थोडा छे, तेथी सात आकर्ष वडे बांधता जीवो संख्यातगुणा छे. तेथी छ आकर्षवडे बांधता जीवो संख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे पांच आकर्ष वडे बांधता संख्यातगुणा, तेथी चार आकर्ष वडे बांधता संख्यातगुणा, तेनाथी त्रण आकर्ष वडे बांधता संख्यातगुणा, तेथी बे आकर्ष वडे बांधता संख्यातगुणा अने तेथी एक आकर्ष वडे बांधता संख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे आ अभिलाप-पाठ वडे

तीव्र छे ए प्रमाणे जीव पण ज्यारे तीव्र आयुषबन्धना अध्यवसाय वडे जातिनामविशिष्ट आयुष के बीजु गत्यादिविशिष्ट आयुष बांधे छे त्यारे एक आकर्ष वडे, मन्द होय तो बे के त्रण आकर्ष वडे मन्दतर होय तो चार के पांच आकर्षवडे अने मन्दतम होय

अन्तर्मुहूर्तनी बन्धना काळमां आयुषनो बन्ध थतो अटकी जाय छे, एटले वच्चे सांचो पडी जाय छे त्यारे बे आकर्ष वडे आयुषनो बन्ध थाय छे ज्यारे तेथी पण अध्यवसायनी मन्द धारा होय छे, त्यारे वच्चे वच्चे बे वार आयुषनो बन्ध थतो नथी एटले त्रण आकर्ष वडे आयुषनो बन्ध थाय छे, जेम जेम अध्यवसायधारानी मन्दता तेम तेम वधारे आकर्ष करवा पडे छे एम वधारेमां वधारे आठ आकर्ष वडे आयुषनो बन्ध थाय छे. जेम गाय पाणी पीती होय त्यारे पाणी पीतां पीतां वच्चे भयथी थाकुं अवळुं जोतो पाणी पीतो बंध पडी जाय छे तेम

हत्ताउयं, एवं एते छप्पिय अप्पाबहुदंडगा जीवादीया भाणियव्वा ।

इति पन्नवणाए भगवईए वक्कंतियपयं छट्ठं समत्तं ६ ॥

यावत्-अनुभागनामनिधत्तायुप जाणवुं. ए प्रमाणे जीवादि छ अल्पबहुत्वना दंडको कहेवा.

प्रज्ञापना सूत्रमां पष्ठ व्युत्क्रान्ति पद समाप्त.

...जी महाराज

तो छ, सात के आठ आकर्षवडे बांधे छे. अहीं जात्यादि कर्मना आकर्षनो नियम आयुपनी साथे बंधातां होय त्यारे समजवो. बाकीना काळने विशे नियम नथी. कारण के केटलीक प्रकृतिओ ध्रुवबन्धिनी होवाथी अने बीजी प्रकृतिओ परावर्तमान (विरोधिनी) होवाथी घणा काळ सुधी बन्धनो संभव होवाने लीधे तेमां आकर्षनुं नियतपणुं होतुं नथी.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां छट्ठुं व्युत्क्रान्ति पद समाप्त.

आयुपकर्मनो बन्ध वच्चे अटकी जाय छे अने त्यारे आकर्ष वडे पुनः आयुपनो बन्ध थाय छे. आ आकर्षनो नियम आयुषकर्ममा अने आयुपकर्मनी साथे बंधातां जात्यादि नामने लागु पडे छे. जे प्रकृतिओ ध्रुवबन्धिनी छे तेथी अथवा तो परावर्तमान प्रकृतिओ होय छे के जेनो बन्ध लांबा काळ सुधी चालु छे, जेमके ज्ञानावरणीयादि ध्रुवबन्धीनी प्रकृतिओ छे, अथवा तो देवगत्यादि परावर्तमान प्रकृतिओ छे अने तेनो घणा काळ सुधी बन्ध थया करे छे, त्यां आकर्षनो नियम नथी.

सत्तमं ऊसासपयं ।

१ नेरइया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! सततं

सातमुं उच्छ्वास पद.

१. हे भगवन् ! नैरयिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! सतत अने निरंतर उच्छ्वास ले अने मूके.

१ छट्ठा पदनी व्याख्या करी, हवे सातमा पदनो आरंभ कराय छे तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—अहीं पूर्वना पदमां जीवोना उपपातविरहादि कह्या अने आ पदमां नारकादिपणे उत्पन्न थयेला अने श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति वडे पर्याप्त नारकादि जीवोना यथासंभव उच्छ्वास-निःश्वास क्रियाना विरहकाळ अने अविरहकाळनुं परिमाण कहेवानुं छे, आ संबन्ध वडे प्राप्त थयेला आ पदनुं आ प्रथम सूत्र छे—'नेरइयाणं भंते' ! इत्यादि हे भगवन् ! नारको 'केवइय कालस्स' कियत्कालेन-केटला काळे अहीं 'ण' वाक्यालङ्कारमा वपराय छे प्राकृत शैलीथी पञ्चमी अथवा तृतीया विभक्तिना अर्थमा छट्ठी विभक्ति छे तेथी 'केटला काळ पछी अथवा केटला काळे 'आणमति' आनन्ति-श्वास ले छे, तेमा 'अन्' धातु प्राणन-श्वास लेवाना अर्थमा छे अने मकार अलाक्षणिक-नियम विरुद्ध आवेलो छे, ए प्रमाणे बीजे स्थळे पण यथासंभव जाणी लेवुं तेवी रीते 'पाणमति वा' प्राणन्ति वा-अहीं वा शब्द समुच्चयार्थक छे ए बन्ने पदोना अर्थ अनुक्रमे स्पष्ट करे छे 'ऊससति वा नीससंति वा' 'आणमति' आनन्ति एटले 'ऊससंति' उच्छ्वसन्ति श्वास ले छे अने 'पाणमति' प्राणन्ति एटले 'निससति' नीश्वसन्ति-श्वास मूके छे अथवा 'आनमन्ति प्राणमन्ति' अहीं नम् धातु नमवाना अर्थमा छे, अने धातुना अनेक अर्थो थता होवाथी तेनो श्वसन क्रिया रूप अर्थ थवामा विरोध नथी. बीजा आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे—"आणमति पाणमति" ए वडे आन्तर उच्छ्वास अने निःश्वास क्रिया ग्रहण करवी अने 'ऊससति नीससति'

संतयामेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

२. असुरकुमारा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं,सत्तण्हं थोवाणं उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा॥ नागकुमारा णं भंते !

---

२. हे भगवन् ! असुरकुमारो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य सात स्तोके अने उत्कर्षथी कंइक अधिक पखवाडीए उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन्! नागकुमारो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी सात

ए वडे बाह्य उच्छ्वास अने निःश्वास क्रिया ग्रहण करवी. ए प्रमाणे गौतम स्वामीए प्रश्न कर्यो एटले भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! नैरयिको 'सततं संतयामेव आणमंति वा' सतत-निरंतर श्वास ले छे अने मूके छे. कारण के नैरयिको अत्यन्त दुःखी होय छे अने दुःखीने निरंतर उच्छ्वास-निःश्वास होय छे. ए प्रमाणे लोकमां देखाय छे. ते सततपणुं प्रायः-घणा अंशे पण होय ए माटे बीजुं विशेषण आपे छे-'संतयामेव'-सततमेव-निरंतर ज ले अने मूके छे, एक पण समयनुं अन्तर पडतुं नथी. अहीं दीर्घपणुं प्राकृत होवाथी थयेल छे. उत्तर आपवामां 'आणमंति' इत्यादिनुं पुनः उच्चारण शिष्यना वचननो आदर बताववा माटे छे, कारण के गुरुओ जो शिष्यना वचननो आदर करे तो तेओ संतुष्ट थाय छे, अने वारंवार प्रश्न, श्रवण अने अर्थना निर्णयादिमां प्रयत्नशील थाय छे. अने तेओनुं वचन लोकमां मान्य थाय छे. ए प्रमाणे घणा भव्य जीवोनो उपकार अने तीर्थनी अभिवृद्धि थाय छे.

२. असुरकुमारना सूत्रमां उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्खस्स' उत्कृष्टथी उच्छ्वास-निःश्वास कंइक अधिक एक पखवाडीए होय छे एम कह्युं छे. अहीं देवोमां जेओनी जेटला सागरोपमनी स्थिति होय तेओने तेटला पखवाडीआ जेटलो उच्छ्वास-निःश्वास क्रियानो विरहकाळ होय छे. असुरकुमारोनी उत्कृष्ट स्थिति कंइक अधिक एक सागरोपमनी छे. कारण के 'चमर-बलिसारमहियं'

केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा जहन्नेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

३. पुढविकाइयाणं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! वेमायाए आणमंति वा जाव नीससंति वा । एवं जाव मणूसा । वाणमंतरा जहा नागकुमारा ॥

स्तोके अने अने उत्कर्षथी मुहूर्तपृथक्त्वे-बेथी नव मुहूर्ते उच्छ्वास ले अने मूके. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

३. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! अनियतपणे उच्छ्वास ले अने मूके. ए प्रमाणे यावत्-मनुष्यो सुधी जाणवुं. व्यन्तरो नागकुमारोनी पेठे जाणवा.

चमरनी एक सागरोपम अने बलीन्द्रनी कइक अधिक एक सागरोपमनी स्थिति छे-एवुं शास्त्रनुं वचन छे माटे तेओ कइक अधिक एक पखवाडीआ पछी श्वास ले छे अने मूके छे

१. पृथिवीकायिकना सूत्रमां तेओ 'वेमायाए' विमात्रया-विषमपणे अनियमितपणे उच्छ्वास-निःश्वास ले छे अर्थात् तेओनी उच्छ्वास-निःश्वास क्रियानो विरहकाळ अनियत होय छे देवोमां जे जेटला मोटा आयुष्यवाळा होय छे ते तेटला सुखी होय छे, अने सुखीने उत्तरोत्तर उच्छ्वास-निःश्वास क्रियानो घणो विरहकाळ होय छे, कारण के उच्छ्वास-निःश्वासक्रिया दुःखरूप छे ते माटे जेम जेम आयुष्यमां सागरोपमनी वृद्धि थाय तेम तेम उच्छ्वास-निःश्वास क्रियाना विरहकाळना प्रमाणमां पण पखवाडीआनी वृद्धि थाय छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सातमुं उच्छ्वासपद समाप्त

३. जोइसियाणं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा? गोयमा ! जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स जाव नीससंति वा ॥

५. वेमाणिया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ॥

६. सोहम्मदेवा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । ईसाणगदेवा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सातिरेगस्स मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं सातिरेगाणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीस-

---

४. हे भगवन् ! ज्योतिषिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी मुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी पण मुहूर्तपृथक्त्वे यावत्–उच्छ्वास ले अने मूके.

५. हे भगवन् ! वैमानिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी मुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी तेत्रीश पखवाडीए यावत्–उच्छ्वास मूके.

६. हे भगवन् ! सौधर्म देवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी मुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी बे पखवाडीए यावत्–उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! ईशानदेवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी कंइक अधिक मुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी कंइक अधिक बे पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! सनत्कुमार देवो केटला काळे

संति वा। सणंकुमारदेवा णं भंते! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं दोण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा। माहिंदगदेवा णं भंते! केवतिकालस्स आणमंति,वा जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेण साइरेगं दोण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं साइरेगं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा। बंभलोगदेवा णं भंते! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं सत्तण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा। लंतगदेवा णं भंते! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं दसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं चउदसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा। महासुक्कदेवा णं भंते! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं चउदसण्हं पक्खाणं, उ-

---

उच्छ्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी बे पखवाडीए अने उत्कर्षथी सात पखवाडीए यावत् उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन्! माहेन्द्र देवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी कइक अधिक बे पखवाडीए अने उत्कर्षथी कइक अधिक सात पखवाडीए उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन्! ब्रह्मलोकदेवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके. हे गौतम! जघन्यथी सात पखवाडीए अने उत्कर्षथी दस पखवाडीए उच्छ्वास ले अने मूके हे भगवन्! लांतक देवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी दस पखवाडीए अने उत्कर्षथी चउद पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! महाशुक्रदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी चौद पखवाडीए अने उत्कर्षथी सत्तर पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! सहस्रारकल्पना देवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी सत्तर पखवाडीए अने उत्कर्षथी अढार

क्कोसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा। सहस्सारगदेवा णं भंते! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा। आणयदेवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं एगूणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। पाणयदेवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं एगूणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। आरणदेवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एगवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। अच्चुयदेवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं एगवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं बावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा।

७. हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगदेवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं बावीसाए

पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! आनतदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी अढार पखवाडीए अने उत्कर्षथी ओगणीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! प्राणतदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी ओगणीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी वीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! आरणदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी वीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी एकवीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! अच्युत देवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी एकवीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी बावीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके.

पक्खाणं, उक्कोसेणं तेवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगदेवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं तेवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं चउवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। हिट्ठिमउवरिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं चउवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं पणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। मज्झिमहिट्ठिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवइकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं पणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं छब्बीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। मज्झिममज्झिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवइकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जह-

७. हे भगवन्! नीचेनी त्रिकना नीचेना ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी बावीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी तेवीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! नीचेनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयकदेवो केटला पखवाडीए श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी तेवीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी चोवीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन्! नीचेनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयकदेवो केटला पखवाडीए श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्यथी चोवीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी पचीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. मध्यम त्रिकनी नीचेना ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य पचीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट छवीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. मध्यम त्रिकनी मध्यना ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य छवीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट सत्यावीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. मध्यम त्रिकनी उपरना ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य सत्यावीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट अठ्यावीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. उपरनी त्रिकनी

न्नेणं छव्वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। मज्झिमउवरिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवइकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं सत्तावीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं अट्ठावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। उवरिमहेट्ठिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवइकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं अट्ठावीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एगूणतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। उवरिममज्झिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवइकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं एगूणतीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। उवरिमउवरिमगेविज्जगा णं देवा णं भंते! केवइकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा! जहन्नेणं तीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एक्कतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा।

८. विजयविजयंतजयंतअपराजितविमाणेसु णं देवा णं भंते! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा? गोयमा?

नीचेना ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य अठ्यावीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट ओगणत्रीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. उपरनी त्रिकना मध्यम ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य ओगत्रीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट त्रीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. उपरनी त्रिकना उपरना ग्रैवेयकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य त्रीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट एकत्रीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके.

८. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित विमानोमां देवो केटला काळे श्वाळ ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य एकत्रीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट तेत्रीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके. सर्वार्थसिद्ध देवो केटला काळे श्वास ले अने मूके? हे गौतम! जघन्य

जहन्नेणं एक्कतीसाए पक्खाण, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा। सव्वट्ठगसिद्धदेवा णं भंते! केयतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति था।

॥ इति पन्नवणाए भगवईए सत्तमं ऊसासपयं समत्तं ७ ॥

अने उत्कृष्ट सिवाय तेत्रीश पखवाडीए श्वास ले अने मूके.

प्रज्ञापना भगवतीमां सातमुं उच्छ्वास पद समाप्त।

अट्ठमं सन्नापयं।

१. कइ णं भंते ! सन्नाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-आहारसन्ना, भयसन्ना, मेहुणसन्ना, परिग्गहसन्ना, कोहसन्ना, माणसन्ना, मायासन्ना, लोहसन्ना, लोयसन्ना, ओघसन्ना।

आठमुं संज्ञा पद.

१. हे भगवन् ! केटली संज्ञाओ कही छे ? हे गौतम ! दस संज्ञाओ कही छे, ते आ प्रमाणे—१ आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३ मैथुनसंज्ञा, ४ परिग्रहसंज्ञा, ५ क्रोधसंज्ञा, ६ मानसंज्ञा, ७ मायासंज्ञा ८ लोभसंज्ञा, ९ लोकसंज्ञा अने १० ओघसंज्ञा.

---

१. ए प्रमाणे सातमा पदनी व्याख्या करी, हवे आठमा पदनो प्रारंभ कराय छे, तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—पूर्वना पदमां जीवोनी उच्छ्वासपर्याप्तिनामकर्म अने योगने आश्रित उच्छ्वासक्रिया तेना विरहकाळ अने अविरहकाळना प्रमाण वडे कही, हवे वेदनीय अने मोहनीयना उदयने आश्रित तथा ज्ञानावरण अने दर्शनावरणना क्षयोपशमजन्य आत्मपरिणामने आश्रयी प्रश्नसूत्र कहे छे—'कई णं भंते ! सन्नाओ पन्नत्ताओ' ?-हे भगवन् ! केटली संज्ञाओ कही छे ? संज्ञानं संज्ञा, एटले आभोग, उपयोग, अथवा 'संज्ञायते अनया' जे वडे 'आ जीव छे' एम ओळखाय ते संज्ञा. आ बन्ने व्युत्पत्तिमां वेदनीय अने मोहनीयना उदयने आश्रित अने ज्ञानावरण अने दर्शनावरण कर्मना क्षयोपशमने आश्रित विचित्र आहारादि प्राप्त करवानी क्रिया ते संज्ञा कहेवाय छे. ते संज्ञा उपाधिना (विशेषणना) भेदथी दस प्रकारनी छे, ते प्रकारे भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! संज्ञा दस प्रकारनी कही छे.' तेना दस प्रकार नामना उच्चारपूर्वक जणावे छे-'आहारसन्ना' इत्यादि. तेमां १ क्षुधा वेदनीयना उदयथी जे कवलादि आहारने माटे तेवा प्रकारना पुद्गलोने ग्रहण करवानी क्रिया ते आहारसंज्ञा, कारण के ते आहारसंज्ञा इच्छारूप होवाथी आभोग-उपयोगरूप छे. अथवा

२. नेरइयाणं भंते ! कति सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–आहारसन्ना, जाव ओघसन्ना । असुरकुमाराणं भंते ! कइ सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–

२. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली संज्ञाओ कही छे ? हे गौतम ! दस संज्ञाओ कही छे, ते आ प्रमाणे—आहारसंज्ञा, यावत्–ओघसंज्ञा हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटली संज्ञाओ कही छे ? हे गौतम ! दस संज्ञाओ कही छे. ते आ प्रमाणे–आहारसंज्ञा,

'संज्ञायतेऽनया' जे वडे जीव ओळखाय, आहार ग्रहण करवानी क्रिया वडे जीव ओळखाय छे माटे ते संज्ञा कहेवाय छे आ प्रमाणे बधे स्थळे विचार करवो २ भयमोहनीयना उदयथी भयभीत थयेला प्राणीनी दृष्टि अने मुखना विकार, तथा रोमांच थवारूप जे क्रिया ते भयसंज्ञा ३ पुरुषवेदना उदयथी मैथुनने माटे स्त्रीदर्शन, वदननी प्रसन्नता, साथळनुं स्तंभन अने कंप प्रमुख जे क्रिया ते मैथुनसंज्ञा ४ लोभना उदयथी संसारना प्रधान कारणभूत रागपूर्वक सचेतन अने अचेतन द्रव्यने ग्रहण करवानी क्रिया ते परिग्रहसंज्ञा ५ क्रोधवेदनीयना उदयथी क्रोधना आवेशगर्भित पुरुषना मुख, नेत्र, अने होठना स्फुरण–कंप वगेरेनी क्रिया ते क्रोधसंज्ञा ६ मानना उदयथी अहंकाररूप गर्वादिनो परिणाम ते मानसंज्ञा ७ मायावेदनीय वडे अशुभ संक्लेशथी असत्य भाषणादिरूप क्रिया ते मायासंज्ञा लोभवेदनीयना उदयथी लालसावडे सचेतन अने अचेतन द्रव्यनी इच्छा ते लोभसंज्ञा ९ मतिज्ञानावरण कर्मना क्षयोपशमथी शब्द–रूपादि अर्थविषयक सामान्य अवबोधनी क्रिया ते ओघसंज्ञा १० अने तेना विशेष अवबोधनी क्रिया ते लोकसंज्ञा ए रीते दर्शनोपयोग ए ओघसंज्ञा अने ज्ञानोपयोग ए लोकसंज्ञा कहेवाय छे आ संबन्धे बीजा आचार्यो कहे छे के–"सामान्य प्रवृत्ति ते ओघसंज्ञा जेम वेलनुं वाड उपर चढवुं वगेरे. लोकनी जे त्याज्य प्रवृत्ति ते लोकसंज्ञा" ए प्रमाणे आ संज्ञाओनो स्पष्टरूपे सुगमपूर्वक बोध थवाने माटे पंचेन्द्रियोने आश्रयी व्याख्या करी एकेन्द्रियोने आ संज्ञाओ अव्यक्तरूपे जाणवी ,

आहारसन्ना, जाव ओघसन्ना, एवं जाव थणियकुमाराणं। एवं पुढविकाइयाणं जाव वेमाणियावसाणाणं नेतव्वं।

३. नेरइयाणं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिग्गहसन्नोवउत्ता? गोयमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च भयसन्नोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिग्गहसन्नोवउ-

---

यावत्–ओघसंज्ञा. ए रीते स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. एम पृथिवीकायिकोथी आरंभी वैमानिको पर्यन्त जाणवुं.

३. हे भगवन् ! नैरयिको आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, भयसंज्ञाना उपयोगवाळा, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा के परीग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय ? गौतम ! वाह्य कारणने आश्रयी वहुधा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा अने संततिभाव–आंतरिक अनुभवने आश्रयी

---

३. नैरयिकना सूत्रमां 'ओसन्नं कारणं पडुच्च भयसन्नोवउत्ता' तेमां ओसन्नशब्द बाहुल्यवाची छे. कारणशब्द वडे बाह्य कारण लेवुं. तेथी तेनो आ प्रमाणे अर्थ थाय छे–बाह्य कारणने आश्रयी नैरयिको वहुधा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. ते आ प्रमाणे–तेओनी चोंतरफ घणा भयने उत्पन्न करनारा परमाधार्मिक, लोहनी कचल्ली (शस्त्रविशेष), शक्ति, भाला वगेरे होय छे. 'संतइभावं पडुच्च' अहीं आन्तर अनुभवभावने संततिभाव कहेवामां आवे छे. तात्पर्य ए छे के जे बाह्य कारण सापेक्ष न होय, पण आन्तरिक अनुभव सापेक्ष होय ते सततपणे होवाथी संततिभावने आश्रयी कहेवाय छे. तेथी आन्तरिक अनुभवनी अपेक्षाए नैरयिको आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावद् परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे. अल्पवहुत्वना विचारमां सौथी थोडा नैरयिको मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. कारण के तेओ चक्षुना निमिषमात्र काळ पण सुखी नथी, परंतु निरंतर अतिप्रबल दुःखाग्निथी संतप्त शरीरवाळा होय छे. कह्युं छे के—

"अच्छिनिमीलणमेत्तं नत्थि सुहं दुक्खमेव पडिबद्धं । नरए नेरइयाणं अहोनिसं पचमाणाणं" ॥

त्तावि । एएसि णं भंते! नेरइयाणं आहारसन्नोवउत्ताणं भयसन्नोवउत्ताणं मेहुणसन्नोवउत्ताणं परिग्गहसन्नो-
वउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मे-
हुणसन्नोवउत्ता, आहारसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, परिग्गहसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, भयसन्नोवउत्ता
संखिज्जगुणा ।

आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. हे भगवन् ! आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, भयसंज्ञाना उप-
योगवाळा, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा अने परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा ए नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषा-
धिक होय ? हे गौतम ! सौथी थोडा नैरयिको मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. तेथी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा
छे, तेथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, अने तेथी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे.

"नरकमां रात्रिदिवस पच्यमान-दुःख पामता नैरयिकोने अक्षिनु निमीलन थाय तेटलो काळ पण सुख नथी मात्र दुःख ज
प्रतिबद्ध-लागेलु छे' माटे मैथुननी इच्छा तेओने होती नथी पण जो कोइ काळे कोइने थाय तोपण ते थोडा काळनी होय छे माटे
प्रश्न समये मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा थोडा होय छे तेथी संख्यातगुणा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के घणा
दुःखी प्राणीओने घणा काळ सुधी आहारनी इच्छा थती होवाथी प्रश्न समये अत्यन्त घणा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळानो सम्भव
छे तेथी संख्यातगुणा परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे आहारनी इच्छा शरीरने माटे होय छे अने परिग्रहनी इच्छा तो शरीर अने
ते सिवाय बीजी शस्त्रादि वस्तुने विषे होय छे, अने घणा काळ सुधी अवस्थित होय छे, ते माटे प्रश्न समये अत्यन्त घणा परिग्रह
संज्ञाना उपयोगवाळा प्राप्त थाय छे माटे पूर्व करता संख्यातगुणा छे तेथी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के

४. तिरिक्खजोणियाणं भंते! किं आहारसन्नोवउत्ता, जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता? गोयमा! ओसन्नं कारणं पडुच्च आहारसन्नोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि। एएसि णं भंते! तिरिक्खजोणियाणं आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया परिग्गहसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, भयसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, आहारसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा।

---

४. हे भगवन्! तिर्यचयोनिको शुं आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे? हे गौतम! बाह्य कारणने आश्रयी प्राय: आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे अने संततिभाव–आंतरिक अनुभवने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. हे भगवन्! आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा ए तिर्यचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे? हे गौतम! तिर्यंचो सौथी थोडा परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे अने तेथी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे.

नरकमां नैरयिकोने चारे तरफ मरणान्त भय होय छे. माटे प्रश्न समये अत्यन्त घणा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे.

४. तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो पण बाह्य पदार्थने जोवा वगेरे बाह्य कारणने आश्रयी बहुधा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, पण बाकीनी संज्ञाना उपयोगवाळा नथी. कारण के आ बाबत प्रत्यक्षथी ज जणाय छे. अन्तरना अनुभवरूप संततिभावने आश्रयी

५. मणुस्सा णं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता, जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च मेहुणसन्नोवउत्ता, संततिभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि। एएसि णं भंते! मणुस्साणं आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा

५ हे भगवन् ! मनुष्यो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे के यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे ? हे गौतम ! बाह्य कारणने आश्रयी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे अने संततिभावने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे. हे भगवन् ! आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा मनुष्योमां

आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अने यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अल्पबहुत्वना विचारमा सौथी थोडा परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे, कारण के परिग्रहसंज्ञानो काळ थोडो होवाथी प्रश्न समये थोडा ज प्राप्त थाय छे तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के मैथुनसंज्ञाना उपयोगनो तेथी घणो काळ छे तेथी पण भयसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के तेने समानजातिवाळा के विजातीय तरफथी भयनो संभव छे अने भयनो उपयोगकाळ घणो वधारे छे, माटे प्रश्न समये भयसंज्ञाना उपयोगवाळा अति घणा होय छे तेथी संख्यातगुणा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के प्रायः घणाने निरंतर आहारनो संभव छे

" मनुष्यो पण बाह्य कारणने आश्रयी बहुधा मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, अने बाकीनी संज्ञाना उपयोगवाळा थोडा होय छे अन्तरना अनुभवमात्ररूप संततिभावने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के थोडा जीवोने अने थोडा काळ सुधी

विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणूसा भयसन्नोवउत्ता, आहारसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, परिग्गहसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, मेहुणसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा ।

६. देवा णं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता,जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च परिग्गहसन्नोवउत्ता, संततिभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि। एएसि णं भंते! देवाणं आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसा-

कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? गौतम ! सौथी थोडा मनुष्यो भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, तेथी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे,अने तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा होय छे.

६. हे भगवन् ! देवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे ? हे गौतम ! प्रायः बाह्य कारणने आश्रयी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे अने संततिभावने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा अने यावत्–परिग्रहसंज्ञाना उपयो-

भयसंज्ञानो सम्भव छे. तेथी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा सङ्ख्यातगुणा होय छे. कारण के आहारसंज्ञानो उपयोग घणा काळ सुधी होय छे. आ ज हेतुथी एटले परिग्रहसंज्ञानो घणो काळ होवाथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा सङ्ख्यातगुणा छे. तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा सङ्ख्यातगुणा छे, कारण के मैथुनसंज्ञा अति घणा काळ सुधी होवाथी प्रश्न समये तेओ अति घणा प्राप्त थाय छे.

६. बाह्य कारणने आश्रयी देवो घणा भागे परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के परिग्रहसंज्ञाना उपयोगमां कारणभूत

हिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, मेहुणसन्नोवउत्ता संखेज्जगुणा ।

इति पन्नवणाए भगवईए अट्ठमं सन्नापदं समत्तं ।

गवाळा पण होय छे. हे भगवन् ! आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्—परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा देवोमां कोण कोनाथी यावत्—अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा देवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. तेथी संख्यातगुणा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा, तेथी संख्यातगुणा मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा अने तेथी संख्यातगुणा परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां आठमुं संज्ञापद समाप्त

हमेशां तेओनी पासे होय छे अने उक्त स्वरूप नवतिमायने आश्रयी तेओ आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा मणि, सुवर्ण अने रत्नादि पण होय छे अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावत्—परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा घणो होवाथी अने आहारसंज्ञानो उपयोगकाळ अत्यन्त थोडो होवाथी भय होय छे कारण के आहारनी इच्छानो विरहकाळ अत्यन्त संख्यातगुणा छे, कारण के भयसंज्ञा घणा जीवोने अने घणा समये तेओ सौथी थोडा प्राप्त थाय छे तेथी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, काळ सुधी होय छे, तेथी पण मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे. जीवोनी अपेक्षाए बहु जीवो कया छे ते कहेवानुं हतुं अने तेओनो ते प्रकारे विचार कर्यो छे

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापनाटीकाना अनुवादमां आठमुं संज्ञापद समाप्त

नवमं जोणिपयं ।

१. कतिविहा णं भंते जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता । तंजहा-सीया जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ।

नवमुं योनिपद.

१. हे भगवान ! योनि केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! योनि त्रण प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-१ शीतयोनि, २ उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि.

२. नेरइयाणं भंते ! किं सिता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीतावि जोणी, उसि-
णावि जोणी, णो सीतोसिणा जोणी। असुरकुमाराणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ?

२. हे भगवन् ! शुं नैरयिकोने शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीतयोनि अने उष्णयोनि
होय छे, पण शीतोष्णयोनि होती नथी. हे भगवन् ! असुरकुमारोने शुं शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम !

शीत अने उष्ण उभय स्पर्शोना परिणामवाळी शीतोष्ण योनि कहेवाय छे तेमां नैरयिकोने बे प्रकारनी योनि होय छे–शीत अने
उष्ण योनि पण तेओने शीतोष्ण योनि होती नथी कइ नरक पृथिवीमां कइ योनि होय छे ? ते कहे छे–रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, अने
वालुकाप्रभामां जे नैरयिकोना उपजवाना क्षेत्रो छे ते बधां शीतस्पर्शोना परिणामवाळा छे, अने उपजवाना क्षेत्र सिवायनु बाकी बधु प
बधे नरकपृथिवीमां उष्णस्पर्शोना परिणामवाळु छे, तेथी त्यांना शीतयोनिवाळा नैरयिको उष्ण वेदना अनुभवे छे पङ्कप्रभामां घणां
उपपात क्षेत्रो शीतस्पर्शोना परिणामवाळा छे अने थोडां उष्णस्पर्शोना परिणामवाळां छे जे प्रस्तडोमां (पाथडामां) अने जे नरकावासोमां
शीतस्पर्शोना परिणामवाळां उपपातक्षेत्रो छे तेमां उपपातक्षेत्र सिवाय बधु उष्णस्पर्शोना परिणामवाळु छे जे प्रस्तडोमां अने जे नरका-

वनो बच्चे लाख, देव नारक अने तिर्यंच पचेन्द्रियनी चार चार लाख अने मनुष्योनी चौद लाख योनि होय छे. सर्व मळीने चोराशी लाख
योनि थाय छे यद्यपि व्यक्तिभेदनी अपेक्षाए अनन्त जीवो होवाथी अनन्त योनि थाय, तो पण समान वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शोवाळी घणी योनि
छतां पण सामान्यपणे जातिरूपे एक योनि तरीके गणाय छे, माटे चोराशी [illegible] ज योनि थाय छे, कह्युं छे के—

" समवण्णाइसमेया बहवोवि हु जोणिमेअलक्खा उ। सामन्ना घेप्पंति हु एक्कजोणीए गहणेणं " ॥

समानवर्णादिसहित घणा लाख योनिना भेदो थाय छे तो पण सामान्यपणे एक योनिना ग्रहण वडे ग्रहण कराय छे

गोयमा ! नो सीता जोणी, नो उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी,सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सितावि जोणी, उसिणावि जोणी, सीतोसिणावि जोणी । एवं आउवाउवणस्सइबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणवि पत्तेयं भाणियव्वं । तेउक्काइयाणं णो

तेओने शीतयोनि के उष्णयोनि नथी, पण शीतोष्णयोनि होय छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने शुं शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि होय छे. ए प्रमाणे अप्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय प्रत्येकने कहेवुं. तेजस्कायिकोने शीत अने शी-

वासोमां उष्णस्पर्शना परिणामवाळां उपपातक्षेत्रो छे तेमां ते सिवाय बधुं शीतस्पर्शना परिणामवाळुं छे, तेथी त्यांना घणा शीतयोनिवाळा नैरयिको उष्ण वेदना अनुभवे छे अने थोडा उष्णयोनिवाळा शीतवेदना अनुभवे छे. धूमप्रभामां घणां उपपात क्षेत्रो उष्णस्पर्शना परिणामवाळां छे अने थोडां शीतस्पर्शना परिणामवाळां छे. जे प्रस्तटोमां अने जे नरकावासोमां उष्णस्पर्शनां परिणामवाळां उपपात क्षेत्रो छे तेओमां ते सिवाय बधुं शीतस्पर्शना परिणामवाळुं छे, जेओमां शीतस्पर्शनां परिणामवाळां उपपातक्षेत्रो छे तेमां बधुं उष्णस्पर्शना परिणामवाळुं छे, तेथी त्यांना घणां उष्णयोनिवाळा नारको शीतवेदना अनुभवे छे, अने थोडा शीतयोनिवाळा नारको उष्ण वेदनानो अनुभव करे छे. तमःप्रभामां अने तमःतमःप्रभामां बधां उपपातक्षेत्रो उष्णस्पर्शना परिणामवाळां छे अने ते सिवाय बाकी बधुं शीतस्पर्शना परिणामवाळुं छे, तेथी त्यांना उष्णयोनिवाळा नारको शीतवेदना अनुभवे छे. भवनवासी, गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च, गर्भज मनुष्यो, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोना उपपातक्षेत्रो शीत अने उष्ण उभय स्पर्शवाळां छे, तेथी तेओनी योनि उभय स्वभाववाळी छे, पण केवळ शीत के उष्ण नथी. अप्कायिक सिवाय बधा एकेन्द्रियो, बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो, चउरिन्द्रियो, संमूर्छिम

सीता, उसिणा, णो सीउसिणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीयावि जोणी, उसिणावि जोणी, सीतोसिणावि जोणी । संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि एवं चेव । गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! णो सीता जोणी, नो उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी । मणुस्साण भंते ! किं सिता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीयावि जोणी, उसिणावि जोणी, सीतोसिणावि जोणी । संमुच्छिममणुस्साणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! तिविहा जोणी ।

तोष्णयोनि नथी, परंतु उष्णयोनि छे. हे भगवन् ! पचेन्द्रियं तिर्यचोने शु शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि छे ? हे गौतम ! शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि छे सम्मूर्च्छिम पचेन्द्रिय तिर्यचोने पण एमज जाणवु. हे भगवन् ! गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यचोने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! शीतयोनि नथी, उष्णयोनि नथी, पण शीतोष्णयोनि होय छे. हे भगवन् ! मनुष्योने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि छे. हे भगवन् ! सम्मूर्च्छिम मनुष्योने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने त्रणे प्रकारनी योनि होय छे. हे भगवन् ! गर्भज मनुष्योने शुं शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीत अने

तिर्यञ्च पचेन्द्रियो अने सम्मूर्छिम मनुष्योना उपपातस्थानो शीतस्पर्शवाळा, उष्णस्पर्शवाळा अने उभयस्पर्शवाळा पण होय छे, माटे तेओनी त्रणे प्रकारनी योनि होय छे, तेजस्कायिको उष्णयोनिवाळा अने अप्कायिको शीतयोनिवाळा प्रत्यक्ष जणाय छे

गब्भवक्कंतियमणुस्साणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! णो सीता, णो उसिणा, सीतोसिणा । वाणमंतरदेवाणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! णो सीता, णो उसिणा, सीतोसिणा जोणी । जोइसियवेमाणियाणवि एवं चेव ।

३. एएसि णं भंते ! सीतजोणियाणं उसिणजोणियाणं सीतोसिणजोणियाणं अजोणियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सीतोसिणजोणिया, उसि-

---

उष्णयोनि नथी पण शीतोष्णयोनि होय छे. हे भगवन्! वानव्यन्तर देवोने शुं शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीत अने उष्णयोनि नथी, पण शीतोष्णयोनि होय छे. ज्योतिषिक अने वैमानिकोने पण एमज जाणवुं.

३. हे भगवन् ! शीतयोनिवाळा, उष्णयोनिवाळा, शीतोष्णयोनिवाळा अने योनिरहित जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो शीतोष्णयोनिवाळा होय छे, तेथी उष्णयोनिवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी

---

३. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा शितोष्णरूप उभययोनिवाळा जीवो होय छे, कारण के भवनवासी, गर्भज तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, गर्भज मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोनी उभयरूप योनि छे. तेथी संख्यातगुणा उष्णयोनिवाळा छे, कारण के सूक्ष्म अने बादर बन्ने प्रकारना तेजस्कायिको, घणा नैरयिको अने केटलाक पृथिवी, पाणी, वायु अने प्रत्येक वनस्पति उष्णयोनिवाळा छे. तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनंत छे. तेथी शीतयोनिवाळा अनंतगुणा छे. कारण के बधा अनंतकायिको शीतयोनिवाळा छे. अने तेओ सिद्धोथी अनंतगुणा छे.

णजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सीतजोणिया अणंतगुणा ।

४. कतिविहा णं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता, तंजहा-सचित्ता, अचित्ता, मीसिया ।

५. नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो सचित्ता जोणी, अ-

---

योनिरहित अनन्तगुणा छे अने तेथी शीतयोनिवाळा अनन्तगुणा छे.

४. हे भगवन् ! योनि केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! योनि त्रण प्रकारे कही छे. ते आ प्रमाणे-सचित्त, अचित्त अने मिश्र योनि.

५. हे भगवन् ! नैरयिकोने शुं सचित्तयोनि, अचित्तयोनि के मिश्रयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने सचित्त अने मिश्रयोनि

---

४. हवे बीजा प्रकारे योनिनुं प्रतिपादन करे छे—'हे भगवन् ! योनि केटला प्रकारनी छे' ? सचित्त-जीवप्रदेशना संबंधवाळी, अचित्त-सर्वथा जीवरहित, अने मिश्र-अंशतः जीवप्रदेशसहित अने अंशतः जीवप्रदेशरहित-एम त्रण प्रकारे छे. तेमां नैरयिकोनुं जे उपपातक्षेत्र छे ते कोइ पण जीवे शरीररूपे ग्रहण करेलुं नथी माटे तेओनी अचित्त योनि छे यद्यपि सूक्ष्म एकेन्द्रियो सकल लोकव्यापी छे तो पण तेना आत्मप्रदेशो साथे उपपातस्थानना पुद्गलो परस्पर अभेदात्मक संबंधवाळा नथी, एटले ते जीवोए उपपातस्थानना पुद्गलो शरीररूपे ग्रहण करेला नथी, माटे तेओनी अचित्त योनि छे. ए प्रमाणे असुरकुमारादि भवनपतिओनी, तथा व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोनी अचित्त योनि जाणवी पृथिवीकायिकथी मांडी संमूर्छिम मनुष्य पर्यन्त जीवोनुं उपपातक्षेत्र अन्य जीवोए ग्रहण करेलुं होय छे अविरुद्ध ग्रहण करेलुं होतुं नथी अने अंशतः ग्रहण करेलुं अने अंशतः नहि ग्रहण करेलुं उभय स्वभाववाळुं पण होय छे माटे तेओनी त्रणे प्रकारनी योनि छे. गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने गर्भज मनुष्योनी ज्यां उत्पत्ति थाय छे त्यां अचेतन पण शुक्र अने शोणितना पुद्गलो होय छे माटे तेओनी मिश्र योनि होय छे

चित्ता जोणी, नो मीसिया जोणी। असुरेकुमाराणं भंते! किं सच्चित्ता जोणी,अच्चित्ता जोणी,मीसिया जोणी? गोयमा! नो सच्चित्ता जोणी, अच्चित्ता जोणी, नो मीसिया जोणी, एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढवीकाइयाणं[3] भंते! किं सच्चित्ता जोणी, अच्चित्ता जोणी, मीसिया जोणी? गोयमा! सच्चित्ता जोणी, अच्चित्ता जोणी, मीसियावि जोणी, एवं जाव चउरिंदियाणं। संमुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य एवं चेव। गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियमणुस्साण य नो सच्चित्ता,नो अच्चित्ता,मीसिया जोणी।

नथी, पण अचित्तयोनि छे. हे भगवन्! असुरकुमारोने शुं सचित्तयोनि अचित्तयोनि के मिश्रयोनि होय छे? हे गौतम! सचित्त अने मिश्रयोनि नथी, पण अचित्तयोनि होय छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन्![3] पृथिवीकायिकोने शुं सचित्त, अचित्त के मिश्रयोनि होय छे? हे गौतम! सचित्त, अचित्त अने मिश्र त्रणे प्रकारे योनि होय छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं. संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने संमूर्च्छिम मनुष्योने एमज जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने गर्भज मनुष्योने सचित्त अने

---

५. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा जीवो मिश्रयोनिवाळा छे, कारण के गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योनीज मिश्र योनि छे. तेथी अचित्तयोनिवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के नारको, देवो अने केटलाक, पृथिवी, अप् तेजस्, वायु, प्रत्येक वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने संमूर्छिम मनुष्योनी अचित्त योनि छे. तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्त छे. तेथी सचित्तयोनिवाळा अनन्तगुणा छे. कारण के निगोदना जीवोनी सचित्त योनि छे अने तेओ सिद्धो करतां पण अनन्तगुणा छे.

वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

६ एतेसि णं भंते ! जीवाणं सचित्तजोणीण अचित्तजोणीणं मीसजोणीणं अजोणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्योवा जीवा मीसजोणिया, अचित्तजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सचित्तजोणिया अणंतगुणा ।

७. कइविहा णं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता ? तंजहा—संवुडा जोणी, वियडा

अचित्त योनि नथी, पण मिश्रयोनि होय छे. वानव्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुरकुमारोनी पेठे जाणवुं.

६. हे भगवन् ! सचित्तयोनिवाळा, अचित्तयोनिवाळा, मिश्रयोनिवाळा अने योनिरहित ए जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो मिश्रयोनिवाळा होय छे, तेथी अचित्तयोनिवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे अने तेथी सचित्तयोनिवाळा अनन्तगुणा छे.

७. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी योनि कही छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी योनि कही छे. ते आ प्रमाणे—संवृतयोनि, विवृत

६-७ हवे फरी पण प्रकारान्तरथी योनिनुं प्रतिपादन करे छे-'हे भगवन् ! केटला प्रकारनी योनि कही छे' ? तेमां नारकोनी संवृत योनि छे, कारण के नारकोनी उत्पत्तिना स्थानरूप नरकनिष्कुटो बंध करेला गवाक्ष जेवा छे, तेमां उत्पन्न थयेला नैरयिको वृद्धि पामता तेओनी अन्दरथी बहार पडे छे शीत उपपातस्थानोथी उष्ण क्षेत्रमां अने उष्ण उपपात स्थानोथी शीत क्षेत्रमां पडे छे भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोनी पण संवृत योनि होय छे, कारण के तेओ देवदूष्य वस्त्रथी ढंकायेल देवशय्यामा

जोणी, संवुडवियडा जोणी।

८. नेरइयाणं भंते! किं संवुडा जोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी? गोयमा! संवुडजोणी, नो वियडजोणी, नो संवुडवियडजोणी। एवं जाव वणस्सइकाइयाणं। बेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! नो संवुडजोणी, वियडजोणी, नो संवुडवियडजोणी। एवं जाव चउरिंदियाणं। संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिम-

योनि अने संवृतविवृतयोनि.

८. हे भगवन्! नैरयिकोने शुं संवृतयोनि, विवृतयोनि के संवृतविवृतयोनि होय छे? हे गौतम! तेओने संवृतयोनि होय छे, पण विवृतयोनि अने संवृतविवृतयोनि होती नथी. ए प्रमाणे यावत्-वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. बेइन्द्रियो संबन्धी पृच्छा. हे गौतम! तेओने संवृत के संवृतविवृतयोनि नथी, पण विवृतयोनि होय छे. एम यावत्-चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने संमूर्छिम मनुष्योने एमज जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने गर्भज मनुष्योने संवृत अने विवृतयोनि

उत्पन्न थाय छे. "देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलासंखेज्जइभागमेत्ताए सरीरोगाहणाए उववज्जइ"। देवदूष्य वस्त्रथी आच्छादित देवशय्यामां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण शरीरनी अवगाहना वडे उत्पन्न थाय छे-एवुं शास्त्र वचन छे. एकेन्द्रियो पण संवृतयोनिवाळा छे, कारण के तेओनी योनि स्पष्ट जणाती नथी. बेइन्द्रियथी आरंभी चउरिन्द्रिय सुधीना जीवो, संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने संमूर्छिम मनुष्योनी विवृत योनि होय छे. कारण के तेओनुं उत्पत्तिस्थान जलाशयादि स्पष्ट जणाय छे. गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने गर्भज मनुष्योनी संवृतविवृत योनि छे. कारण के गर्भ संवृत अने विवृतरूप छे. गर्भ अंदरथी जणातो नथी, अने बहारथी उदरनी वृद्धि थवा वगेरे कारणोथी जणाय छे.

मणुस्साण य एवं चेव। गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियमणुस्साण य नो संवुडा जोणी, नो वियडा जोणी, संवुडवियडा जोणी। वाणमंतरजोइसियवेमाणियाण जहा नेरइयाणं।

९. एतेसि णं भंते! जीवाण संवुडजोणियाणं वियडजोणियाणं संवुडवियडजोणियाणं अजोणियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा संवुडवियडजोणिया, वियडजोणिया असंखिज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, संवुडजोणिया अणंतगुणा।

१० कइविहा णं भंते! जोणी पन्नत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पन्नत्ता, तंजहा—कुम्मुण्णया, संखावत्ता,

---

नथी, पण संवृतविवृतयोनि होय छे. वानव्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरयिको पेठे जाणवुं.

९. हे भगवन्! संवृतयोनिवाळा, विवृतयोनिवाळा, संवृतविवृतयोनिवाळा अने योनिरहित ए जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे भगवन्! सौथी थोडा जीवो संवृतविवृतयोनिवाळा छे, तेथी विवृतयोनिवाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे अने तेथी संवृतयोनिवाळा अनन्तगुणा छे.

---

१. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा संवृतविवृतयोनिवाळा छे, कारण के गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योनी संवृत-विवृतयोनि होय छे तेथी विवृतयोनिवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के बेइन्द्रियथी मांडी चउरिन्द्रिय सुधीना जीवो, संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने संमूर्छिम मनुष्योनी विवृत योनि छे, तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्तगुणा छे तेथी संवृतयोनिवाळा अनन्तगुणा छे, कारण के वनस्पतिनी संवृत योनि छे, अने तेओ सिद्धोथी पण अनन्तगुणा छे।

वंसीपत्ता । कुम्मुण्णया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं । कुम्मुण्णयाए णं जोणीए उत्तमपुरिसा गब्भे वक्कमंति, तंजहा—अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा। संखावत्ता णं जोणी इत्थीरयणस्स, संखावत्ताए जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति, नो चेव णं णिप्फज्जंति। वंसीपत्ता णं जोणी

१०. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी योनि कहेली छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी योनि कहेली छे. ते आ प्रमाणे—कूर्मोन्नता, शंखावर्ता अने वंशीपत्रा, कूर्मोन्नता योनि उत्तम पुरुषोनी होय छे. कूर्मोन्नता योनिना गर्भमां उत्तम पुरुषो उत्पन्न थाय छे. ते आ प्रमाणे—अरिहंतो, चक्रवर्ती, बलदेवो अने वासुदेवो. शंखावर्तायोनि स्त्रीरत्नने होय छे. शंखावर्ता योनिमां घणा जीवो अने पुद्गलो आवे छे अने गर्भरूपे उत्पन्न थाय छे, चय पामे छे अने उपचय पामे छे, परन्तु निष्पन्न थता नथी. वंशीपत्रा योनि सामान्य मनु-

१०. हवे मनुष्ययोनिना विशेष-भेदनुं प्रतिपादन करे छे-'हे भगवन् ! योनि केटला प्रकारनी छे' इत्यादि. काचबानी पीठ जेवी उंची होय ते कूर्मोन्नता, शंखनी पेठे आवर्तवाळी ते शंखावर्ता अने संयुक्त बे वांसना पांदडाना आकारवाळी वंशीपत्रा योनि कहेवाय छे,बाकी बधुं सुगम छे. परन्तु शंखावर्त योनिमां घणा जीवो अने जीवनी साथे संबंधवाळा पुद्गलो आवे छे अने गर्भरूपे उत्पन्न थाय छे, सामान्यतः चय-वृद्धि पामे छे अने विशेषतः उपचयने प्राप्त थाय छे. परन्तु 'अति प्रबल कामाग्निना परितापवडे नाश थवाथी गर्भनी निष्पत्ति थती नथी' एवो वृद्धाचार्योनो प्रवाद छे.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां नवमुं पद समाप्त.

पिहुजणस्स, वंसीपत्ताए णं जोणीए पिहुजणे गब्भे वक्कमंति ।

इति पन्नवणाए भगवईए नवमं जोणीपद समत्तं ९ ।

प्योनी होय छे. वंशीपत्रा योनिमां सामान्य मनुष्यो गर्भमां आवे छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां नवमु योनिपद समाप्त

दसमं चरमाचरमपयं ।

१. कति णं भंते! पुढवीओ पन्नत्ताओ? गोयमा! अट्ठ पुढवीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा, तमतमप्पभा, ईसीपब्भारा ।

२. इमा णं भंते! रयणप्पभा पुढवी किं चरमा, अचरमा, चरमाइं, अचरमाइं, चरमंतपदेसा, अचरमंतपदेसा?

दशमुं चरमाचरम पद.

१. हे भगवन्! केटली पृथिवीओ कही छे? हे गौतम! आठ पृथिवीओ कही छे. ते आ प्रमाणे-१ रत्नप्रभा, २ शर्करा प्रभा, ३ वालुकाप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धूमप्रभा, ६ तमःप्रभा, ७ तमःतमःप्रभा, ८ ईषत्प्राग्भारा.

२. हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवी शुं चरम (पर्यंतवर्ती) छे १, अचरम (मध्यवर्ती) छे २, (बहुवचन विशिष्ट) चरम छे ३,

---

१. ए प्रमाणे नवमा पदनी व्याख्या करी, हवे दसमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—अहीं पूर्वना पदमां प्राणीओनी योनिओनुं प्रतिपादन कर्युं अने आ पदमां प्राणीओना उपपातनुं क्षेत्र रत्नप्रभादि छे, ते चरम अने अचरम विभाग वडे बतावाय छे. तेमां आ आदि सूत्र छे-'कति णं भंते पुढवीओ पन्नत्ताओ'-हे भगवन्! केटली पृथिवीओ कही छे-इत्यादि पाठ सुगम छे. परंतु ईषत्प्राग्भारा ए पीस्तालीश लाख योजन लांबी अने पहोळी शुद्ध स्फटिकना जेवी सिद्धशिला पृथिवी छे.

२. 'इमा णं भंते! रयणप्पभा पुढवी किं चरमा, अचरमा'-हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवी शुं चरम छे के अचरम छे-इत्यादि प्रश्न छे. तेमां चरम अने अचरमनी परिभाषा आ प्रमाणे छे-चरम एटले पर्यंतवर्ती, छेल्ले रहेलुं, ते चरमपणुं बीजानी अपेक्षाए होय

गोयमा ! इमा णं रयणप्पभा पुढवी नो चरमा, नो अचरमा,नो चरमाति, नो अचरमाति, नो चरमंतपदेसा, नो अचरमंतपदेसा, नियमाऽचरमं चरमाणि य,चरमंतपदेसा य अचरमंतपदेसा य, एवं जाव अधेसत्तमा पुढवी, सोहम्माती जाव अणुत्तरविमाणाण एवं चेव, ईसीपब्भाराधि एवं चेव, लोगेवि एवं चेव, एवं अलोगेपि ।

अचरम छे ४, चरमान्तप्रदेशरूप छे ५, के अचरमान्तप्रदेशरूप छे ६ ? हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवी चरम नथी, अचरम नथी, बहुवचनान्त चरम अने अचरम नथी, चरमान्तप्रदेशरूप नथी, तेम अचरमान्तप्रदेशरूप पण नथी,पण अवश्य अचरम, अने बहुवचनान्त चरमरूप छे, तथा चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप छे. ए प्रमाणे यावत् नीचेनी सातमी नरक पृथिवी सुधी जाणवु. सौधर्मथी मांडी यावत्–अनुत्तर विमान सुधी तथा ईषत्प्राग्भारा पृथिवी संबंधे पण ए प्रमाणेज समजवु. अने लोक अने अलोक संबंधे पण एमज जाणवु.

छे तेथी ते सापेक्ष छे जेमके पूर्वना शरीरनी अपेक्षाए चरम शरीर कहेवाय छे चरम–पर्यंतवर्ती न होय, पण मध्यवर्ती होय ते अचरम ते पण चरमनी अपेक्षाए होवाथी सापेक्ष छे. जेमके तेवा प्रकारना अन्य शरीरनी अपेक्षाए मध्यशरीर अचरमशरीर कहेवाय छे ए प्रमाणे चरम अने अचरम सम्बन्धी एकवचनान्त प्रश्न कर्यो, हवे बहुवचनान्त प्रश्न करे छे 'चरमाइं अचरमाइं' पहले बहुवचनान्त चरम छे के अचरम छे ? आ चार प्रश्नसूत्रो तेवा प्रकारना एकत्वपरिणामवाळा द्रव्य सबन्धे कर्या, हवे प्रदेशोने आश्रयी बे प्रश्न करे छे–'चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य'–चरमरूप अने अंते रहेला होवाथी अन्तवर्ती खंडो चरमान्तो कहेवाय छे. तेमां रहेला प्रदेशो ते चरमान्तप्रदेशो कहेवाय छे कोइनी पण अपेक्षाए अन्ते नहि रहेला होवाथी अचरमरूप–मध्यवर्ती खंड अचरमान्त कहेवाय छे. तेमां रहेला प्रदेशो ते अचरमान्तप्रदेशो कहेवाय छे ए प्रमाणे गौतम स्वामीए छ प्रश्नो कर्या हवे

भगवान् तेनो उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! ते रत्नप्रभा पृथिवी चरम नथी, केमके चरमपणुं बीजी वस्तुनी अपेक्षाए छे, अने अहीं अपेक्षा राखवा योग्य अन्य वस्तु नथी, कारण के अहीं मात्र अन्य वस्तुनी अपेक्षा सिवाय केवळ रत्नप्रभानो ज प्रश्न कर्यो छे. आ ज कारणथी अचरम पण नथी. ते आ प्रमाणे-अचरमपणुं पण अन्य वस्तुनी अपेक्षाए छे, अहीं अपेक्षा राखवा योग्य अन्य वस्तु विवक्षित नथी, भावार्थ ए छे के-आ रत्नप्रभा पृथिवी चरम नथी, तेम मध्यवर्ती पण नथी, कारण के चरमपणुं अने अचरमपणुं अन्य वस्तुनी अपेक्षाए होय छे अने अपेक्षा राखवा योग्य अन्यनी विवक्षा करी नथी. आ कारणथी 'चरमाणि'-बहुवचनान्त चरम पण नथी, केमके अपेक्षा राखवा योग्य अन्य वस्तु विवक्षित नहि होवाथी तेवा प्रकारना व्यवहारनो ज असम्भव छे, तेथी बहुवचनान्त चरमपणानो पण असम्भव छे. ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते रत्नप्रभाना चरमपणानो व्यवहार ज उपर कहेली युक्तिथी घटतो नथी त्यारे ते सम्बन्धे बहुवचनान्त चरमपणुं शी रीते घटे ? ए प्रमाणे बहुवचनान्त अचरमभङ्गनो पण प्रतिषेध कर्यो. कारण के उपर कहेली युक्तिथी अचरमपणाना व्यवहारनो पण असम्भव छे. तेमज ते चरमान्तप्रदेशरूप-प्रान्त भागमां रहेला प्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप-मध्यभागमां रहेला प्रदेशरूप पण नथी. कारण के पूर्वोक्त युक्तिवडे चरमपणानो अने अचरमपणानो असम्भव होवाथी तेना प्रदेशनी कल्पनानो पण असम्भव छे. जो एम छे तो ते रत्नप्रभा केवा स्वरूपवाळी छे ? तेना उत्तरमां कहे छे के-ते 'अचरम' अचरमं-एकवचनान्त अचरम अने 'चरमाणि'-बहुवचनान्त चरमरूप छे. तेनो भावार्थ आ छे—जो आ रत्नप्रभाने अखंडरूपे विवक्षा करीने पूछीए तो पूर्वोक्त भङ्गोमांथी एक पण भङ्गवडे तेनो व्यवहार थतो नथी, पण जो ते असङ्ख्यातप्रदेशावगाढ होवाथी अनेक अवयवोना विभागरूपे तेनी विवक्षा करीए तो ते पूर्वे कहेला उत्तरनो विषय थाय छे. ते आ प्रमाणे-रत्नप्रभा पृथिवी आ प्रकारे रहेली छे अने ए प्रमाणे रहेली रत्नप्रभाना प्रान्त भागने विषे रहेला जे लोकान्तनिष्कुटरूप खंडो छे ते प्रत्येक तथाविध विशिष्ट एकरूप परिणाम वडे परिणत छे माटे ते 'चरमाणि' बहुवचनान्त चरमरूप छे. अने जे प्रान्त भागना खंडो सिवायना मध्य भागमां रत्नप्रभानो मोटो खंड छे, ते तथाविध एकरूप परिणामवाळो होवाथी तेनी एकरूपे विवक्षा करी छे, माटे ते 'अचरमं' एकवचनान्त अचरमरूप छे. आ रत्नप्रभा मध्य-

वर्ती खंड अने प्रान्तभागमां रहेला खंडो ए उभयना समुदायरूप छे जो एम न होय तो रत्नप्रभाना अभावनो प्रसंग प्राप्त थाय ए प्रमाणे अवयव अने अवयवीरूपे विचार करता 'अचरमं' एकवचनान्त अचरमरूप अने 'चरमाणि' बहुवचनान्त चरमरूप एम शब्द एक उत्तरना विषयरूपे रत्नप्रभानु प्रतिपादन कर्यु हवे ज्यारे प्रदेशरूपे विचार करीए त्यारे तेनो आ प्रमाणे उत्तर छे-'चरमान्तप्रदेशाश्च अचरमान्तप्रदेशाश्च'-बहुवचनान्त चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप छे ते आ प्रमाणे-लोकान्तनिष्कुटरूप बहारना खंडोमा जे प्रदेशो रहेला छे ते चरमान्तप्रदेशो अने मध्यवर्ती एक खंडमा जे प्रदेशो रहेला छे ते अचरमान्तप्रदेशो छे अन्य आचार्यो आ प्रमाणे व्याख्या करे छे-'चरमाणि' तथाविध प्रविष्ट-अन्दर गयेलाथी इतर-प्रान्त भागना एक प्रदेशनी श्रेणिना समुदायरूप बहुवचन विशिष्ट चरम खंडो अने तेनो मध्यवर्ती भाग ते अचरम खंड कहेवाय छे, ते पण निर्दोष होवाथी योग्य छे यथोक्त स्वरूप प्रान्त भागनी एक श्रेणिना समुदायमां रहेला प्रदेशो 'चरमान्तप्रदेशाः' चरमान्तप्रदेशो अने तेना मध्य भागमा रहेला 'अचरमान्तप्रदेशा' अचरमान्तप्रदेशो कहेवाय छे एकान्त दुर्नयनो निरोध करवामा प्रधान आ उत्तरसूत्र वडे रत्नप्रभादिक वस्तु अवयव अने अवयवीरूप छे, अने ते अवयव अने अवयवीनो कथंचित् भेद अने कथंचित् अभेद छे एम जणाव्यु ते अवयव अने अवयवी स्वरूप वस्तु मानवामा जे प्रकारे बीजाए आपेला दूषणोनो अवकाश नथी ते प्रकारे 'धर्मसंग्रहणीनी टीकामां बाह्य वस्तुनु स्थापन करवाना प्रसंगे प्रतिपादन कर्यु छे, ते त्यांथी जाणी लेवु 'ए प्रमाणे यावत् नीचेनी सातमी नरकपृथिवी सुधी जाणवु' इत्यादि जेम रत्नप्रभा पृथिवीनु स्वरूप प्रश्न अने उत्तर वडे कह्यु तेम शर्कराप्रभादि पृथिवीओ सौधर्मादि अनुत्तर विमान पर्यन्त विमानो, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अने लोक संबंधे जाणवु सूत्रपाठ पण सुगम होवाथी स्वयं विचारी लेवो ते आ प्रमाणे-'हे भगवन्! शर्कराप्रभा पृथिवी शु चरम, अचरम, ब व चरम, ब व अचरम छे'? इत्यादि पाठ कहेवो ए प्रमाणे अलोक संबंधे सूत्रपाठ पण कहेवो ते आ प्रमाणे-' हे भगवन्! अलोक शुं चरम छे के अचरम छे' इत्यादि प्रश्नसूत्र अने तेवी रीते उत्तरसूत्र कहे छे-हे गौतम ! ते अच-

धर्मसंग्रहणीसटीक. आ स गा ६३७ प २३०-२

३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए अचरमस्स य चरमाण य चरमंतपएसाण य अचरमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरमे,चरमाइं असंखिज्जगुणाइं, अचरमं च चरमाणि य दोवि विसेसाहिआ, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चरमन्तपदेसा, अचरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा, चरमंतपदेसा य अचरमंतपदेसा य दोवि विसेसाहिआ, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमं चरमाणि य दोवि विसे-

३. हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडो आ रत्नप्रभा पृथिवीनो द्रव्यार्थपणे एक अचरम खंड छे, तेथी चरमखंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थपणे सौथी थोडा आ रत्नप्रभा पृथिवीना चरमान्तप्रदेशो छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे-सौथी थोडो आ रत्नप्रभा पृथिवीनो द्रव्यार्थरूपे एक अ-

---

रम, ब. व. चरम, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्त प्रदेशरूप छे. तेमां जे खंडो लोकनिष्कुटमां रहेला छे ते ब. व. चरम, बाकीनुं बधुं अचरम जाणवुं. चरमखंडमां रहेला चरमान्त प्रदेशो अने अचरमखंडमां रहेला अचरमान्तप्रदेशो जाणवा.

३. हवे आ रत्नप्रभादि प्रत्येकने विषे चरम अने अचरमादि संबन्धी अल्पबहुत्व कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे-'इमीसेणं

साहिआई, पएसट्ठयाए चरमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरमंतपएसा असंखिज्जगुणा, चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य दोवि विसेसाहिआ । एवं जाव अहेसत्तमाए, सोहम्मस्स जाव लोगस्स एवं चेव ।

चरम खंड छे, तेथी चरमखंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरमखंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी प्रदेशार्थपणे चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे यावत्-नीचेनी सातमी नरकपृथिवी सुधी जाणवु. सौधर्म-यावत्-लोक संबंधे पण एमज समजवुं.

रयणप्पभाए पुढवीए अचरमस्स य चरमाण य'-आ रत्नप्रभा पृथिवीमां अचरम खंड, चरमखंडो-इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे उत्तर सूत्रमां सौथी अल्प द्रव्यार्थरूपे आ रत्नप्रभा पृथिवीनो अचरमखंड छे शाथी ? कारण के ते एक छे. अहीं हेतुना अर्थमां प्रथमा विभक्ति छे "निमित्त कारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शनम्" कारण के निमित्त, कारण अने हेतुमां सर्व विभक्तिओ थाय छे तेथी तेनो आ अर्थ छे-जेथी तथाविध एक स्कन्धना परिणाम वडे परिणत छे माटे ते एक छे अने तेथी सौथी अल्प छे तेथी जे चरम खंडो छे ते असंख्यातगुणा छे कारण के ते असंख्याता छे हवे अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळी चरमखंडोथी तुल्य छे के विशेषाधिक छे? ए शंकाना उत्तरमां कहे छे के अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, कारण के जे अचरमखंड चरम द्रव्योमां नाखीए एटले चरम खंडोथी एक संख्या वडे अधिक थवाथी समुदाय विशेषाधिक थाय छे प्रदेशार्थरूपे विचार करतां सौथी थोडा चरमान्तप्रदेशो छे, कारण के चरमखंडो मध्यम खंडना करतां घणा सूक्ष्म छे, तेथी तेओ असंख्यातगुणा छतां तेओना जे प्रदेशो छे ते मध्य खंडना प्रदेशो करता बहु थोडा छे ते माटे अचरमप्रदेशो असंख्यातगुणा छे कारण के अचरम खण्ड एक छे, तो पण चरम खण्डना समुदायनी अपेक्षाए क्षेत्रथी असंख्यातगुण छे अचरमान्तप्रदेशो करता चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्नेनो समुदाय विशेषाधिक छे कारण के अहीं चरमान्तप्रदेशो अचरमान्तप्रदेशोनी अपेक्षाए असंख्यातमा भागप्रमाण छे तेथी

४. अलोगस्स णं भंते ! अचरमस्य य चरमाण य चरमन्तपदेसाण य अचरमन्तपदेसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे, चरमाइं असंखिज्जगुणाइं, अचरमं चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइं, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अलोगस्स चरमन्तपदेसा, अचरमन्तपएसा अणन्तगुणा, चरमन्तपदेसा य अचरमन्त-

---

४. हे भगवन् ! अलोकना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्य–प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडो अलोकनो द्रव्यार्थपणे एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थपणे–सौथी थोडा अलोकना चरमान्तप्रदेशो छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळीनेविशेषाधिक छे. द्रव्यार्थ–

अचरमान्तप्रदेशोमां चरमान्तप्रदेशोनो प्रक्षेप करीए एटले तेओ अचरमान्तप्रदेशोथी विशेषाधिक ज थाय. द्रव्यार्थप्रदेशार्थना विचारमां 'अचरमं चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइं, चरमन्तपएसा असंखेज्जगुणा' चरमखंडो करतां अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. एटले अचरम खंड अने चरम खंडोना समुदायथी चरमान्त प्रदेशो असंख्यातगुणा छे. कारण के अहीं जे अचरम खंड छे ते असंख्यात प्रदेशावगाढ छतां पण द्रव्यार्थपणे एक छे, चरम खंडोमां तो प्रत्येकना असंख्याता प्रदेशो छे, माटे चरम अने अचरम द्रव्यना समुदायथी चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. तेथी अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी बन्ने चरम अने अचरम खंडना प्रदेशो मळी असंख्यातगुणा छे–इत्यादि बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

४. अलोकसूत्रमां प्रदेशार्थपणे सौथी थोडा अलोकना चरमान्तप्रदेशो छे, कारण के लोकना निष्कुटोने विषे ज तेओनो अन्त

पदेसा य दोवि विसेसाहिया; दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे अलोगस्स एगे अचरमे, चरमाई असंखेज्जगुणाइं, अचरमं य चरमाणि य दोवि विसेसाहियाई, चरमन्तपएसा असंखेज्जगुणा, अचरमन्तपएसा अणन्तगुणा, चरमन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दोवि विसेसाहिया ।

६. लोगालोगस्स णं भंते ! अचरमस्स य चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! स-

---

प्रदेशार्थपणे–सौथी थोडो अलोकनो एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे. तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे.

५ हे भगवन् ! लोक अने अलोकना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थप्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडो लोक अने अलोकनो द्रव्यार्थरूपे एक

होय छे. तेथी अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे कारण के अलोक अनन्त छे तेथी समुदित चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो विशेषाधिक छे कारण के चरमान्तप्रदेशो अचरमान्तप्रदेशोनी अपेक्षाए अनन्तमा भाग जेटला छे तेथी तेओनो अचरमान्तप्रदेशराशिमा प्रक्षेप करीए एटले तेओ अचरमान्त प्रदेशोथी विशेषाधिक ज थाय छे

'६. हवे लोक अने अलोकना समुदाय विषे प्रश्नसूत्र कहे छे—लोगालोगस्स णं भंते ! अचरमस्स य चरमाण य'–हे भगवन् !

व्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरमे, लोगस्स चरमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलोगस्स चरमाइं विसेसाहियाइं, लोगस्स य अलोगस्स य अचरमं चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइं, पएसट्ठयाते सव्वत्थोवा लोगस्स चरमन्तपदेसा, अलोगस्स चरमन्तपदेसा विसेसाहिआ, लोगस्स अचरमन्तपएसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स अचरमन्तपएसा अणन्तगुणा, लोगस्स य अलोगस्स य चरमन्तपदेसा य अचरमन्तपदेसा य दोवि विसेसाहिया। दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरमे, लोगस्स चरमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलो-

एक अचरम खंड छे, तेथी लोकना चरमखंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना चरम खंडो विशेषाधिक छे, तेथी लोकनो अने अलोकनो अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थरूपे सौथी थोडा लोकना चरमान्तप्रदेशो छे, तेथी अलोकना चरमान्तप्रदेशो विशेषाधिक छे, तेथी लोकना अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे, तेथी लोकना अने अलोकना चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. द्रव्यार्थप्रदेशार्थरूपे—सौथी थोडो लोक अने अलोकनो द्रव्यार्थरूपे एक एक अचरम खंड छे, तेथी लोकना चरमखंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना चरम खंडो विशेषाधिक छे, तेथी

लोक अने अलोकना अचरमखंड, चरमखंडो इत्यादि संबंधे प्रश्नसूत्र सुगम छे. हवे तेनो उत्तर आपे छे—'हे गौतम'! इत्यादि. लोकनो अने अलोकनो एक एक अचरम-मध्यवर्ती खंड छे ते एक होवाथी सौथी अल्प छे. तेथी लोकना चरमखंड द्रव्यो असंख्यातगुणा छे. कारण के ते असंख्याता छे. तेथी अलोकना चरमखंडो विशेषाधिक छे. तेनुं कारण ए छे के अहीं यद्यपि लोकना चरमखंडो वास्तविक रीते असंख्याता छे, तो पण पूर्वे बतावेल पृथिवीनो स्थापनानी कल्पनाथी एक एक चार दिशाए अने एक एक चार विदिशामां

गस्स चरमाइं विसेसाहियाइं, लोगस्स य अलोगस्स य अचरमं चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइं, लोगस्स चरमन्तपदेसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स य चरमन्तपएसा विसेसाहिया, लोगस्स अचरमन्तपएसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स अचरमंतपएसा अणंतगुणा, लोगस्स य अलोगस्स य चरमन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दोवि विसेसाहिया, सव्वदव्वा विसेसाहिया, सव्वपएसा अणंतगुणा, सव्वपज्जवा अणंतगुणा।

लोकना अने अलोकना अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी लोकना चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. तेथी अलोकना चरमान्तप्रदेशो विशेषाधिक छे, तेथी लोकना अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे, तेथी लोकना अने अलोकना चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी सर्व द्रव्यो विशेषाधिक छे, तेथी सर्व प्रदेशो अनन्तगुणा छे अने तेथी सर्व पर्यायो अनन्तगुणा छे.

पण आठ कल्पया अलोकना चरमखंडो तेनी स्थापनानी कल्पनाथी एक एक चार दिशाओमां अने बन्ने चार विदिशाओमां एम चार कल्पया चार आठथी बमणा नथी, एम त्रणगुणा नथी, परंतु विशेषाधिक छे ते अलोकना चरमखंडोथी लोक अने अलोकना अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे, ते आ प्रमाणे—लोकना चरमखंडो पूर्वे कहेली कल्पनाथी आठ अने एक अचरमखंड एवे मळी नव थाय छे, अलोकना चरमखंडो चार अने एक अचरमखंड मळीने तेर थाय छे लोक अने अलोक बन्नेना एकठा करवाथी बावीश थाय छे अने ते चारथी बमणा नथी, त्रणगणा नथी, परंतु विशेषाधिक छे माटे अलोकना चरमखंडोथी समुदित लोकालोकना चरमाचरम खंडो विशेषाधिक छे प्रदेशार्थपणाना विचारमां सौथी थोडा लोकना चरमान्तप्रदेशो छे, कारण के आठ खंडना ज प्रदेशो होय छे, तेथी अलोकना चरमान्तप्रदेशो विशेषाधिक छे, तेथी पण लोकना अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, कारण के क्षेत्र अतिशय घणु होवाथी

६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे १, अचरिमे २, अवत्तव्वए ३, चरमाइं ४, अचरमाइं ५, अवत्तव्व-

६. हे भगवन्! परमाणुपुद्गल शुं एक. व. चरम १, ए. व. अचरम २, ए. व. अवक्तव्य ३, व. व. चरम ४, व. व. अचरम ५,

तेना प्रदेशो पण अतिशय घणा छे. तेथी पण अलोकना अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे. कारण के क्षेत्र अनन्तगुण छे. तेथी पण लोकना चरमान्तप्रदेशो, अचरमान्तप्रदेशो, अलोकना चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो मळी विशेषाधिक छे, कारण के अहीं अलोकना अचरमान्तप्रदेशराशिमां लोकना चरमाचरमान्तप्रदेशो अने अलोकना चरमान्तप्रदेशो नांखीए अने तेओ बधा मळीने पण असंख्याता थाय, अने ते अनन्त राशिनी अपेक्षाए अत्यन्त थोडा छे, माटे तेने नांखवा छतां पण अलोकना अचरमान्तप्रदेशोथी विशेषाधिक ज थाय. एने अनुसारे द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थना विचारनुं सूत्र स्वयं विचारवुं. पण लोकालोकना चरमाचरम खंडोथी लोकना चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. कारण के लोकना चरमखंडो आठ कल्पेला छे. अने एक एक खंडमां असंख्याता प्रदेशो छे. लोकालोकना चरमाचरमखंडो मळी बावीश कल्पेला छे, माटे लोकालोकना चरमाचरम खंडोथी लोकना चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. बाकीना पदनी भावना पूर्वनी पेठे जाणवी. तेथी 'सव्वदव्वा विसेसाहिया' सर्व द्रव्यो विशेषाधिक छे. एटले लोकालोकना चरमाचरमान्तप्रदेशो करतां सर्व द्रव्यो विशेषाधिक छे. कारण के अनन्तानन्त जीवो, तथा परमाणुथी मांडी अनन्त परमाणु सुधीना प्रत्येक अनन्त स्कन्धो भिन्न भिन्न द्रव्यरूप छे. तेथी सर्व प्रदेशो अनन्तगुणा छे, अने तेथी सर्व पर्यायो अनन्तगुणा छे. कारण के दरेक प्रदेशे स्वपर्यायो अने परपर्यायो अनन्त छे. ए प्रमाणे चरम अने अचरमना भेदथी रत्नप्रभादिनो विचार कर्यो.

६. हवे परमाणु आदिनो विचार करे छे—'परमाणु पोग्गले ण भंते !'-हे भगवन्! परमाणुपुद्गल-इत्यादि आ प्रश्नसूत्रमां छब्बीश भांगा छे. ते आ प्रमाणे—चरम, अचरम अने अवक्तव्य ए त्रण पदो छे. तेओमां एक एकना संयोगे एकवचनना त्रण भांगा थाय छे. जेमके—१ चरम, २ अचरम, ३ अवक्तव्य. अने बहुवचनना पण त्रण भांगा थाय छे. जेमके—१ व. व. चरम, २ व. व.

याइं ६, उदाहु चरिमे य अचरिमे य ७, उदाहु चरमे य अचरमाइं ८, उदाहु चरमाइं अचरमे य ९, उदाहु चर-
माइं च अचरमाइं च १०, पढमा चउभंगी। उदाहु चरिमे य अवत्तव्वए य ११, उदाहु चरमे य अवत्तव्वयाइं च
१२, उदाहु चरमाइं च अवत्तव्वए य १३, उदाहु चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४, बीया चउभंगी। उदाहु अच-
रिमे य अवत्तव्वए य १५, उदाहु अचरमे य अवत्तव्वयाइं च १६, उदाहु अचरमाइं च अवत्तव्वए य १७, उदाहु
अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, तइया चउभंगी। उदाहु चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, उदाहु चरमे

अने ए. व. अवक्तव्य छे ६ ? अथवा ए. व. चरम अने ए. व. अचरम ७, अथवा ए. व. चरम अने ब. व. अचरम ८, अथवा ब. व. चरम
अने ए. व. अचरम ९, अथवा ब. व. चरम अने ब. व. अचरम छे १० ? प्रथम चार भागा थया. अथवा ए. व. चरम अने ए. व.
अवक्तव्य ११, अथवा ए. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य १२, अथवा ब. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य १३, अथवा ब. व. चरम
अने ब. व. अवक्तव्य १४ छे ? बीजी चतुर्भंगी. अथवा ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य १५, अथवा ए. व. अचरम अने ब. व.
अवक्तव्य १६, अथवा ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य १७, अथवा ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य छे १८ ? त्रीजी चौभंगी

अचरम, ३ ए व अवक्तव्य बधा मळीने एक संयोगना छ भागाओ थया हवे चरम, अचरम अने अवक्तव्य पदना त्रण द्विकसंयोगो
थाय छे जेमके—१ चरम अने अचरम पदनो प्रथम चरम अने अवक्तव्य पदनो बीजो, अचरम अने अवक्तव्य पदनो त्रीजो अने
तेमाना एक एक द्विकसंयोगना चार भागाओ थाय छे तेमां प्रथम द्विकसंयोगना आ प्रमाणे भागाओ थाय छे-१ ए व चरम अने
ए. व अचरम, २ ए व चरम अने ब व अचरम, ३ ब व चरम अने ए व अचरम, ४ ब व चरम अने ब व अचरम

य अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २०, उदाहु चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१, उदाहु चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२, उदाहु चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, उदाहु चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २४, उदाहु चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५, उदाहु चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ । एते छव्वीसं भंगा । गोयमा ! परमाणुपोग्गले नो चरमे, नो अचरमे, नियमा अवत्तव्वए, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ।

अथवा ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य १९, अथवा ए. व. चरम, ए. व. अचरम, अने ब. व. अवक्तव्य २०, अथवा ए. व. चरम, ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य २१, अथवा ए. व. चरम, ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य २२, अथवा ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य २३, अथवा ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य २४, अथवा ब. व. चरम, ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य २५, अथवा ब. व. चरम, ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य छे २६ ? ए छव्वीश भांगा थाय छे. हे गौतम ! परमाणु पुद्गल चरम नथी, अचरम नथी पण अवश्य अवक्तव्य छे. बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो.

ए प्रमाणे चरम अने अवक्तव्य पदना चार भांगा अने अचरम अने अवक्तव्य पदना पण चार भांगा करवा. सर्वे मळी द्विकसंयोगना बार भांगाओ थाय छे. त्रिकसंयोगना एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी आठ भांगाओ थाय छे. सर्वे मळीने छवीश भांगाओ थाय छे. अहीं भगवान् उत्तर आपे छे-'परमाणुपोग्गले नो चरमे, नो अचरमे, नियमा अवत्तव्वए य' इत्यादि. परमाणु-पुद्गल चरम नथी. कारण के चरमपणुं बीजानी अपेक्षाए होय छे, परंतु अपेक्षा राखवा योग्य अन्य पदार्थनी विवक्षा नथी, वळी परमाणु सांश-अवयववाळो

७. दुपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय चरमे, नो अचरमे, सिय अवत्तव्वए । सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ।

७. हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय २, कदाच ए. व. अवक्तव्य होय ३. बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो.

नथी, तेमी अपेक्षाए तेनु अचरमपणु कही शकाय. माटे परमाणु अवयवरहित होवाथी चरम नथी, तेम अचरम पण नथी कारण के ते अवयवरहित होवाथी तेनुं मध्यपणु नथी, परंतु अवक्तव्य छे, कारण के चरम के अचरम व्यपदेशनु कारण नहि होवाथी चरमशब्दथी के अचरमशब्दथी तेनो व्यवहार थवो अशक्य छे जे शब्दवडे कही शकाय ते वक्तव्य, पण जे चरमशब्द के अचरम शब्दवडे बोलवानुं प्रवृत्तिनिमित्त रहित होवाथी कही न शकाय ते अवक्तव्य कहेवाय छे बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो कारण के परमाणुमां तेओनो असंभव छे. ए संबंधे कहेवामां आवशे के 'परमाणुम्मि य तइओ-परमाणुमां त्रीजो भांगो होय छे' एनो अर्थ ए छे के परमाणुना विचारमां त्रीजो भांगो मान्य छे, बाकीना भांगाओ अवयवरहित होवाथी प्रतिषेधयोग्य छे

७ 'दुपएसिए णं भंते'-हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध '-इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् जाणवुं. हवे उत्तर कहे छे-'सिय चरमे, नो अचरमे, सिय अवत्तव्वए' कदाच चरम होय, अचरम न होय, कदाच अवक्तव्य होय-इत्यादि. द्विप्रदेशिक स्कन्ध कदाचित् चरम होय, केवी रीते होय ? उत्तर-ज्यारे द्विप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशोमां रहेलो होय छे, स्थापना—०० त्यारे एक परमाणु बीजा परमाणुनी अपेक्षाए चरम छे, अने बीजो पण बीजा परमाणुनी अपेक्षाए चरम छे, माटे 'कदाचित् चरम होय' अचरम होतो नथी, कारण के सर्व मध्यवर्ती केवल अचरमपणुं होतुं नथी. ज्यारे द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे त्यारे ते तथाविध एकत्व परिणामवडे परिणत थयेलो होवाथी परमाणुनी पेठे चरम अने अचरमना व्यपदेशना कारणनो

८. तिपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! तिपएसिए खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अव्वत्तव्वए ३, नो चरमाइं ४, नो अचरमाइं ५, नो अवत्तव्वयाइं ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरमाइं ८, सिए चरमाइं च अचरमे य ९, नो चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११. सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ।

८. हे भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय २, कदाच ए. व. अवक्तव्य होय ३, ब. व. चरम न होय ४, ब. व. अचरम न होय ५, ब. व. अवक्तव्य न होय ६, ए. व. चरम अने ए. व. अचरम न होय ७, ए. व. चरम अने ब. व. अचरम न होय ८, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ९, ब. व. चरम अने ब. व. अचरम न होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय ११. बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो.

अभाव होवाने लीधे तेनो चरम शब्द वडे के अचरम शब्द वडे व्यवहार करवो अशक्य छे, माटे अवक्तव्य छे. ते सिवाय बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो. ए संबंधे आगळ कहेवामां आवशे के 'पढमो तइओ य होइ दुपएसे'-पहेलो अने त्रीजो भांगो द्विप्रदेशिकमां होय छे.' तेनो अर्थ आ छे—द्विप्रदेशिक स्कन्धमां पहेलो भांगो 'चरम' अने त्रीजो भांगो 'अवक्तव्य' होय छे, अने बाकीना भांगाओ असंभवित होवाथी निषेध करवा योग्य छे, अने तेनो असंभव सुप्रसिद्ध छे.

८. 'तिपएसिए णं भंते'-हे भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी पेठे जाणवुं. उत्तर—'गोयमा ! सिय चरमे'-हे गौतम ! कदाच चरम होय-इत्यादि. त्रिप्रदेशिक स्कन्ध ज्यारे समश्रेणिए रहेला बे आकाश प्रदेशमां अवगाढ-रहेलो होय छे.

स्थापना-०० ० त्यारे ते चरम होय छे तेना चरमपणानो विचार द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे जाणवो अचरमपणानो प्रतिषेध पूर्वनी पेठे जाणवो. 'स्याद् अवक्तव्यः' कदाच अवक्तव्य होय ज्यारे ते त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे त्यारे परमाणुनी पेठे चरम के अचरमना व्यवहारनु कारण नहि होवाथी चरम के अचरम शब्द वडे व्यवहार करवो अशक्य होवाने लीधे अवक्तव्य छे चोथाथी मांडी आठमा सुधीना भांगाओ प्रतिषेध करवा योग्य छे कारण के तेओनो असंभव छे, अने ते असंभव प्रसिद्ध होवाथी स्वयं विचारीने कहेवो नवमो भांगो ग्रहण करवो, ते कहे छे-'सिय चरमाइं अचरमे य' कदाचित् घ घ चरम अने य य अचरम होय प्राकृत भाषामां बे संख्या होय त्यां पण बहुवचन वपराय छे तेथी तेनो आ अर्थ थाय छे-स्यात्-कदाचित् बे चरम होय अने एक अचरम होय ज्यारे त्रिप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिए रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां रहे छे, स्थापना-००० त्यारे आदिनो अने अन्तनो एक एक परमाणु अन्ते होवाथी 'चरमो'-बे परमाणुओ चरम छे, अने मध्येनो परमाणु मध्यमां रहेलो होवाथी अचरम छे दसमो भांगो प्रतिषेध करवा योग्य छे कारण के स्कन्ध त्रिप्रदेशिक होवाथी चरम अने अचरम शब्दना बहुवचनना कारणनो असंभव छे अगियारमो भांगो ग्रहण करवा योग्य छे ते कहे छे-'सिय चरमे य अवत्तव्वए य'—कदाच चरम अने अवक्तव्य पण होय तेमां ज्यारे त्रिप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिए आ प्रमाणे रहेलो होय छे, स्थापना ०० ° त्यारे बे परमाणु समश्रेणिए रहेला होवाथी द्विप्रदेशावगाढ द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरमव्यपदेशनु कारण होवाथी 'चरम' चरम छे अने एक परमाणु विश्रेणिमां रहेलो छे, तेथी तेनो चरम के अचरम शब्द वडे व्यपदेश-व्यवहार करवो अशक्य होवाथी अवक्तव्य छे बाकीना बधा भांगाओनो प्रतिषेध करवो ते संबन्धे हमणा ज कहेवामां आवशे के 'पढमो तइओ नवमो इक्कारसमो य तिपएसे' त्रिप्रदेशिक स्कन्धमां पहेलो, त्रीजो, नवमो अने अगियारमो भांगो होय छे पहेले प्रथम भंग 'चरम' त्रीजो 'अवक्तव्य' नवमो 'चरमौ च अचरमश्च' बे परमाणुओ चरम अने एक अचरम अने अगियारमो 'चरम अने अवक्तव्य' ए भांगाओ घटे छे बाकीना भंगो घटता नथी

९. चउपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! चउपएसिए णं खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए ३, नो चरमाइं ४, नो अचरमाइं ५, नो अवत्तव्वयाइं ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अ-

९. हे भगवन् ! चतुःप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! चतुःप्रदेशिक स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय २, कदाच ए. व. अवक्तव्य होय ३, व. व. चरम न होय ४, व. व. अचरम न होय ५, व. व. अवक्तव्य न होय

९. 'चउपएसिए णं भंते ! खंधे'—हे भगवन् ! चतुःप्रदेशिक स्कन्ध' इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् जाणवुं हवे उत्तर कहे छे-'हे गौतम ! कदाच चरम होय' इत्यादि. अहीं पहेलो, त्रीजो, नवमो, दसमो, अगियारमो, बारमो अने त्रेवीशमो—ए सात भांगा ग्रहण करवा अने बाकीनानो प्रतिषेध करवो. तेमां पहेलो भंग आ छे-'स्याच्चरम' इति-कदाचित् चरम होय. ज्यारे चतुःप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहेलो होय, स्थापना—|०० ००| त्यारे चरम भंग होय छे. अने ते चरमपणानो विचार समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमां अवगाढ द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे जाणवो. त्रीजो भंग-'स्यादवक्तव्यः' इति-कदाचित् अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे तेज चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे, स्थापना—|००००| त्यारे परमाणुनी पेठे अवक्तव्य छे. नवमो भंग-'स्यात् चरमौ चाचरमश्च' बे परमाणुओ चरम अने एक अचरम होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे तेज चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध त्रण आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना—|०|०० |०| त्यारे प्रथम अने अन्तिम प्रदेशमां अवगाढ 'चरमौ' बे परमाणुओ चरम अने मध्य प्रदेशमां अवगाढ परमाणु अचरम होय छे. दसमो भंग-'स्याद् चरमौ च अचरमौ च' बे परमाणुओ चरम होय अने बे अचरम होय. तेमां ज्यारे चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिए रहेला चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे. स्थापना- ० ० ० ० त्यारे आदिना अने अन्तना बे प्रदेशमां रहेला 'चरमौ' बे परमाणुओ चरम अने मध्यना बे आकाश प्रदेशमां रहेला 'अचरमौ' बे परमाणुओ अचरम

चरमाइं च ८, सिय चरमाइं अचरिमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइं च १२, नो चरमाइं च अवत्तव्वए य १३, नो चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४, नो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, नो अचरमे य अवत्तव्वयाइं च १६, नो अचरमाइं च अवत्तव्वए य १७, नो अ-

---

६, ए. व. चरम अने ए. व. अचरम न होय ७, ए. व. चरम अने ब. व. अचरम न होय ८, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ९, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अचरम होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय ११, कदाच ए. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय १२, ब. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १३, ब. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १४, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १५, ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १६, ब. व. अचरम अने ए. व.

होय छे अगियारमो भङ्ग-'स्यात् चरमश्च अवक्तव्यश्च'-कदाचित् चरम अने अवक्तव्य होय ते आ प्रमाणे-ज्यारे चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध त्रण आकाशप्रदेशोमां समश्रेणि अने विश्रेणि वडे आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना-[०००] त्यारे समश्रेणिमां रहेला। बे आकाशप्रदेशमां अवगाढ त्रण परमाणुओ बे आकाशप्रदेशमां रहेला द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरम [०] होय छे, अने एक विश्रेणिमां रहेलो परमाणु चरम अने अचरम शब्द वडे व्यपदेश करवाने अशक्य होवाथी परमाणुनी पेठे अवक्तव्य छे बारमो भङ्ग-'चरमश्च अवक्तव्यौ च' एक चरम अने बे अवक्तव्य होय ते आ प्रमाणे—ज्यारे ते चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाशप्रदेशमां आवी रीते रहे छे-समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, अने विश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, स्थापना—[०००] त्यारे समश्रेणिए रहेला बे परमाणु बे आकाशप्रदेशमां रहेला द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरम छे अने विश्रेणिमां रहेला बे [००] परमाणु केवळ परमाणुनी पेठे चरम अने अचरम शब्द वडे व्यपदेश करवाने अयोग्य होवाथी अवक्तव्य छे तेरमो भङ्ग-'स्यात् चरमौ च

चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, नो चरमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २०, नो चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१, नो चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२, सिय चरमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए य २३। सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा।

१०. पंचपएसिए णं भंते! खंधे पुच्छा। गोयमा! पंचपएसिए खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अव-

---

अवक्तव्य न होय १७, व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय १८, ए. व. चरम, अचरम अने अवक्तव्य न होय १९, ए. व. चरम, अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय २०, ए. व. चरम, व. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय २१, ए. व. चरम, व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय २२, कदाच व. व. चरम, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २३. बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो.

१०. हे भगवन्! पंचप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम! पंचप्रदेशिक स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय

अचरमश्च अवक्तव्यश्च' बे चरम, एक अचरम अने एक अवक्तव्य. केवी रीते छे? आ प्रमाणे छे-ज्यारे चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-समश्रेणि रहेला त्रण आकाशप्रदेशमां त्रण परमाणुओ, अने विश्रेणि रहेला एक आकाशप्रदेशमां एक परमाणु. स्थापना— ○ त्यारे समश्रेणि रहेला त्रण परमाणुमां प्रथम अने अन्तिम परमाणु अन्ते रहेला होवाथी 'चरमो'-बे परमाणुओ चरम, मध्यम ○○○ परमाणु अचरम अने विश्रेणिमां रहेलो एक परमाणु अवक्तव्य होय छे. ए संबन्धे कहेवामां आवशे के-

"पढमो तइओ नवमो दसमो इक्कारसो य बारसमो। भङ्गा चउपएसे तेवीसमो य बोद्धव्वो"

चतुष्प्रदेशिक स्कन्धमां पहेलो त्रीजो, नवमो, दसमो, अगियारमो, बारमो अने त्रेवीसमो-ए सात भंगो जाणवा.

त्तव्वए ३, णो चरमाइं ४, णो अचरमाइं ५, नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अवत्तव्वए य चरमाइं च ८, सिय चरमाइं च अचरमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइं च १२, सिय चरमाइं च अवत्तव्वए य १३, नो चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४,

---

२, कदाच प. स. अवक्तव्य होय ३, ब. स. चरम न होय ४, ब. स. अचरम न होय ५, ब. स. अवक्तव्य न होय ६, कदाच ए. स. चरम अने ए. स. अचरम होय ७, ए स. चरम अने ए. स. अचरम न होय ८, कदाच ब. स. चरम अने ए. स. अचरम होय ९, कदाच ब. स. चरम अने ब. स. अचरम होय १०, कदाच ए. स. चरम अने ए. स. अवक्तव्य होय ११, कदाच ए. स. चरम अने ब. स. अवक्तव्य होय १२,

---

१० 'पंचपएसिए णं भंते'। हे भगवन्! पंचप्रदेशिक स्कन्ध इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् जाणवुं उत्तर कहे छे-हे गौतम! 'सिय चरमे' कदाचित् चरम होय' इत्यादि अहीं पहेलो, बीजो, सातमो, नवमो, दसमो, अगियारमो, बारमो, तेरमो, त्रेवीशमो, चोवीशमो अने पचीशमो—ए अगियार भांगा ग्रहण करवा अने बाकीनानो प्रतिषेध करवो ए संबंधे कहेलुं छे-

"पढमो तइओ सत्तमनवदसएक्कारबारतेरसमो। तेवीसचउव्वीसा पणवीसइमो य पंचमए"

तेमां आ पहेलो भङ्ग छे—'स्यात् चरमः' कदाचित् चरम होय ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमां आ रीते रहे छे-त्रण परमाणुओ एक आकाशप्रदेशमां अने बे परमाणुओ बीजा आकाशप्रदेशमां, स्थापना—[ooo|oo] त्यारे बे प्रदेशमां रहेला द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरम भङ्ग थाय छे बीजो अवक्तव्य भङ्ग छे ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते पंचप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना—[ooooo] त्यारे ते परमाणुनी पेठे अवक्तव्य छे सातमो भङ्ग-'चरमश्च अचरमश्च' चरम अने अचरम होय ते आ प्रमाणे-ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे स्थापना—[o] [o|o|o] [o] त्यारे पर्यन्तवर्ती चार परमाणुओ एक स्कन्ध संबन्धी परिणामवडे परिणत होवाथी अने एक वर्ण, एक गन्ध, एक रस अने एक समान स्पर्शवाळा हो-

नो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, नो अचरमे य अवत्तव्वयाइं च १६, नो अचरमाइं च अवत्तव्वए य १७, नो अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, नो चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २०, नो चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१, नो चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२, सिय

कदाच व.व. चरम अने ए.व. अवक्तव्य होय १३,व.व. चरम अने व.व. अवक्तव्य न होय १४,ए.व. अचरम अने ए.व. अवक्तव्य न होय १५,ए.व.अचरम अने व.व.अवक्तव्य न होय १६,व.व. अचरम अने ए.व. अवक्तव्य न होय १७,व.व. अचरम अने व.व. अवक्तव्य न होय १८,ए.व. चरम ए.व. अचरम अने ए.व. अवक्तव्य न होय १९,ए.व. चरम,ए.व. अचरम अने व.व. अवक्तव्य न होय २०,ए.व. चरम व.

वाथी एकत्वनो व्यवहार थाय छे माटे 'चरम' अने मध्य परमाणु वच्चे रहेलो होवाथी 'अचरम' कहेवाय छे. नवमो भङ्ग-'चरमौ च अचरमश्च'-बे चरम अने एक अचरम. ते आ प्रमाणे—तेमां ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि रहेला त्रण आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-प्रथम आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, अन्तिम आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ अने वच्चे एक परमाणु, स्थापना oo|o|oo त्यारे प्रथम आकाशप्रदेशमां रहेला बे परमाणु चरम अने छेल्ला आकाशप्रदेशमां रहेला बे परमाणुओ चरम एम 'चरमौ' बे चरम अने मध्य परमाणु वच्चे रहेलो होवाथी अचरम कहेवाय छे. दसमो भङ्ग-'चरमौ च अचरमौ च'-बे चरम अने बे अचरम होय. तेमां ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिए रहेला चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-त्रण आकाशप्रदेशमां त्रण परमाणुओ अने एक आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, स्थापना—o|o|o|oo त्यारे प्रथम प्रदेशमां रहेनार परमाणु चरम, अने छेल्ला प्रदेशमां रहेनार बे परमाणुओ चरम एम बे चरम अने बे मध्यमां रहेला होवाथी बे अचरम कहेवाय छे. अगियारमो भङ्ग-'चरमश्च अवक्तव्यश्च'—चरम अने अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे पंचप्रदेशात्मक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणि रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां आ प्रमाणे रहे छे-

चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २४, सिय चरमाइं च अचरमाइं य अवत्तव्वए य २५, नो चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६।

व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय २१, ए. व चरम ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय २२, कदाच ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २३, कदाच ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य होय २४, कदाच ब. व. चरम ब. व. अचरम अने ए व. अवक्तव्य होय २५. ब. व. चरम ब. व. अचरम अने ब व अवक्तव्य न होय २६.

समश्रेणि रहेला बे आकाशप्रदेशमां चार परमाणु अने एक परमाणु विश्रेणिमां होय छे, स्थापना—[oo|oo] त्यारे चार परमाणुओ समश्रेणि रहेला बे आकाशप्रदेशमां रहेला होवाथी बे प्रदेशमां रहेला द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरम अने एक ° विश्रेणिमां रहेलो परमाणु अवक्तव्य होय छे चरमो भङ्ग—चरमाश्च अवक्तव्यो च' चरम अने बे अवक्तव्य होय तेमां ज्यारे ते पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि बे आकाशप्रदेशमां आ रीते रहे छे—समश्रेणि रहेला बे आकाशप्रदेशमां [o] बे परमाणुओ, एक विश्रेणिमां के विश्रेणिमां रहेला चार आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, स्थापना—[o|o] त्यारे समश्रेणिए रहेला बे रहेला आकाशप्रदेशमां, अने विश्रेणिमां रहेला अन्य आकाशप्रदेशमां द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरम [oo] अने विश्रेणिमां रहेला जुदा आकाशप्रदेशमां बे परमाणु बे आकाशप्रदेशमां रहेला बे परमाणुओ 'अवक्तव्यौ च' बन्ने अवक्तव्य छे तेरमो भङ्ग—'चरमौ च अवक्तव्यश्च' बे जुदा एक एक आकाशप्रदेशमां अवगाढ एक अने बे परमाणुओ पञ्चप्रदेशावगाढ पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे—बे परमाणुओ समश्रेणि रहेला, उपरना बे आकाशप्रदेशमां रहेला छे अने ते ज प्रमाणे नीचेना बे आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ छे अने चरम अने एक अवक्तव्य होय तेमां ज्यारे मध्यनी समश्रेणिमां [illegible] छेल्लो परमाणु छे, स्थापना—[o o|o o|o] त्यारे बे उपरना परमाणुओ बे प्रदेशमां रहेला द्विप्रदेशिक स्कन्धनी

११. छप्पएसिए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! छप्पएसिए णं खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्त-

११. हे भगवन् ! छप्रदेशिक स्कंध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! छप्रदेशिक स्कंध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम

पेठे चरम अने नीचेना बे परमाणुओ चरम बन्ने मळी 'चरमौ' बे चरम अने एक केवळ परमाणुनी पेठे अवक्तव्य छे. त्रेवीशमो भङ्ग-चरमौ च अचरमश्च अवक्तव्यश्च'-बे चरम, अचरम अने अवक्तव्य. ते आ प्रमाणे छे. ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिमां रहेला चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-समश्रेणिए रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां प्रथम आकाशप्रदेशने विषे एक परमाणु, मध्य आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, त्रीजा आकाशप्रदेशमां एक परमाणु अने विश्रेणिमां रहेला चोथा आकाशप्रदेशमां एक परमाणु छे, स्थापना— त्यारे त्रण आकाशप्रदेशमाना आदि अने अन्तना आकाशप्रदेशमां रहेला बे परमाणुओ 'चरमौ' बे चरम, मध्यप्रदेशावगाढ बे परमाणुओनो समूह मध्यवर्ती होवाथी अचरम अने विश्रेणिमां रहेलो एक परमाणु अवक्तव्य छे. चोवीशमो भङ्ग—'चरमौ च अचरमश्च अवक्तव्यौ च' बे चरम, एक अचरम अने बे अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे पंचप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिथी रहेला पांच आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-समश्रेणिए रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां त्रण परमाणुओ अने विश्रेणिमां रहेला बे आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, स्थापना— त्यारे त्रण आकाशप्रदेशोमांना प्रथम अने अन्तिम प्रदेशमां रहेनार 'चरमौ'-बे परमाणुओ बन्ने चरम, मध्य अचरम अने विश्रेणिमां रहेला बे परमाणुओ 'अवक्तव्यौ' बन्ने अवक्तव्य होय छे. पचीशमो भङ्ग-'चरमौ च अचरमौ च अवक्तव्यश्च.' बे चरम, बे अचरम अने एक अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे पंचप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिमां रहेला पांच आकाशप्रदेशमां आ रीते रहे छे-समश्रेणिए रहेला चार आकाशप्रदेशोमां चार परमाणुओ अने विश्रेणिमां रहेल एक आकाशप्रदेशमां एक परमाणु, स्थापना— त्यारे चार आकाशप्रदेशोमां आदिना अने अन्तना आकाशप्रदेशमां रहेनार बे परमाणु 'चरमौ' बन्ने चरम, मध्यवर्ती 'अचरमौ' बे अचरम अने विश्रेणिमां रहेल एक अवक्तव्य होय छे.

११. 'छप्पएसिए णं भंते' !—हे भगवन् ! छ प्रदेशिक स्कन्ध-इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् जाणवुं. उत्तर- 'हे गौतम ! 'सिय चरमे'

व्वए ३, नो चरमाइं ४, नो अचरमाइं ५, नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय चरमे य अच-रमाइं च ८, सिय चरमाइं च अचरमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए अ ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइं च १२, सिय चरमाइं च अवत्तव्वए अ १३, सिय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४, नो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, नो अचरमे य अवत्तव्वयाइं च १६, नो अचरमाइं च अवत्तव्वए य १७,

---

न होय २, कदाच ए. व. अवक्तव्य होय ३, ए. व. चरम न होय ४, व. व. अचरम न होय ५, ब. व. अवक्तव्य न होय ६, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ७, कदाच ए. व. चरम अने ब. व. अचरम होय ८, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ९, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अचरम होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय ११, कदाच ए. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय १२, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय १३, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय

कदाचित् चरम होय इत्यादि अहीं बीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पन्नरमो, सोळमो, सत्तरमो, अढारमो, वीशमो, एकवीशमो अने बा-वीशमो एम अगियार भांगा छोडी देवा ए संबंधे कहेवामां आवशे—

बियतइयपचछट्टं पन्नरसोळ सत्तरट्ठारं । वीसेकवीस बावीसगं च वज्जेज्ज छट्ठम्मि ॥"

"बीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पन्नरमो, सोळमो, सत्तरमो, अढारमो, वीशमो एकवीशमो अने बावीशमो ए भागाओ छप्रदेशवाळा स्कन्धमां घटता नथी, अने बाकीना प्रथमादि भागाओ घटता होवाथी ग्रहण करवा तेमां जे रीते बीजा इत्यादि भागाओ घटता नथी, अने प्रथमादि भागाओ घटे छे ते रीते विचार कराय छे अहीं ज्यारे छप्रदेशवाळो स्कन्ध समश्रेणि रहेला बे आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे

नो अचरमाइं य अवत्तव्वयाइं च १८, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरमे य अचरमे य अव-

१४, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १५, ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १६, ब. व. अचरम अने ए. व.

रहे छे—एक आकाशप्रदेशमां त्रण परमाणुओ अने बीजामां त्रण परमाणुओ, स्थापना—|०००|०००| त्यारे बे प्रदेशमां अवगाढ द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे चरम भंग घटे छे, बीजो अचरम भंग घटतो नथी. कारण के बन्ने तरफ चरमरहित केवळने अचरम भंगनो असंभव छे. केमके बन्ने बाजु अन्तना अभावमां मध्य होतुं नथी ए विचारवुं. त्रीजो अवक्तव्य भंग छे—ज्यारे छप्रदेशवाळो स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे. स्थापना—|००००००| त्यारे परमाणुनी पेठे तेनो चरम के अचरम शब्द वडे व्यवहार करवो अशक्य होवाथी अवक्तव्य छे. चोथो भंग 'चरमाणि' बे चरम, पांचमो 'अचरमाणि' बे अचरम, छट्ठो 'अवक्तव्यानि' बे अवक्तव्य, पंदरमो 'अचरमश्च अवक्तव्यश्च' अचरम अने अवक्तव्य, सोळमो 'अचरमश्च अवक्तव्यानि च' एक अचरम अने बे अवक्तव्य, सत्तरमो 'अचरमाणि च अवक्तव्यश्च' बे अचरम अने एक अवक्तव्य अने अढारमो 'अचरमाणि च अवक्तव्यानि च'–बे अचरम अने एक अवक्तव्य–ए सात भांगा सामान्यतः संभवता ज नथी. कारण के तेवा प्रकारना द्रव्योनो असंभव छे. केमके जगतमां एवा प्रकारना केवळ चरमादि द्रव्यो होता नथी. तेओनो असंभव पूर्वे कहेल विचारने अनुसारे सुगम होवाथी स्वयं जाणवो. सातमो भंग–'चरमश्च अचरमश्च' चरम अने अचरम रूप छे, ते आ प्रमाणे—ज्यारे ते छ प्रदेशवाळो स्कन्ध एक आकाशप्रदेशने चोतरफ वींटीने रहेला पांच आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना— |०| बे परमाणुओ मध्यप्रदेशमां अने बाकीना प्रदेशोमां एक एक परमाणु. त्यारे ते चार परमाणुओ एक मध्य आकाशप्रदेशवर्ती परमा- |०|००|०| णुना संबन्धी परिणामवडे परिणत थयेला होवाना लीधे अने एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने एक स्पर्शवाळा होवाथी |०| एकपणानो व्यवहार थाय छे. अने एकपणानो व्यवहार थवाथी 'चरम' कहेवाय छे, जे वच्चे बे परमाणु छे ते एकत्व परिणाम वडे परिणत थयेला होवाथी 'अचरम' कहेवाय छे. आठमो भंग–

'चरमाश्च अचरमौ च' चरम अने बे अचरम होय तेमां ज्यारे तेज छप्रदेशवाळो स्कन्ध एक आकाशप्रदेशने घोतरफ वींटीने रहेला अने एक अधिक एम छ आकाश प्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना— [•] त्यारे अन्ते चोतरफ वींटीने रहेला चार परमाणुओ पूर्वे कहेली युक्तिथी मध्यवर्ती बे परमाणुना संबन्धी परिणाम वडे [••••] परिणत थयेला होवाथी अने एक-समान वर्ण,गंध, रस अने स्पर्शवाळा होवाथी एक चरम अने मध्ये बे आकाशप्रदेशमां रहेला बे [•] परमाणुओ 'अचरमौ' बे अचरमरूप छे अन्य आचार्यो एम कहे छे के पर्यन्तवर्ती चार परमाणुओने बीजा आकाशप्रदेशोनुं अन्तर होवाथी तेमां एकरूपतानो परिणाम थतो नथी अने तेना अभावथी आ भांगो घटी शकतो नथी, तेथी तेनो सूत्रमां प्रतिषेध कर्यो छे, कारण के ए संबन्धे आगळ कहेवामां आवशे के "छि-सत्तय-पढम-छट्ठ" ए प्राकृत शैलीथी 'छट्ठ-मट्ठ' ए बे पदनो निर्देश कर्यो छे तेथी तेनो अर्थ आ प्रमाणे थाय छे—छट्ठो अने आठमो भांगो वीजा भांगा जाणवा जो आवो भंग होय तो आवी रीते जाणवो—एक परमाणुने वींटीने रहेला निरंतर जे चार परमाणुओ छे ते तेवा प्रकारना एकरूप परिणामवडे परिणत थयेला होवाने लीधे चरम छे तेथी अधिक परमाणु छतां पण तेनो समश्रेणिमां ज संबन्ध होवाथी जुदो नथी, माटे ते अधिक परमाणु पण ते ज चरममां गणवो एम एक चरम थाय छे पछी जे अधिकना मध्यमां रहेलो छे ते मध्यवर्ती होवाथी अने अनेकरूपे परिणामी होवाथी वस्तुतः अचरम छतां पण पूर्वोक्त हेतुथी 'अचरमौ' बे अचरम होय-एवो भंग थाय छे अहीं पण कंइ विरोध नथी अहीं तत्त्व केवलज्ञानी गम्य छे. नवमो भंग-'चरमौ च अचरमश्च' बे चरम अने एक अचरम होय ज्यारे तेज छप्रदेशवाळो स्कन्ध समश्रेणिथी रहेला छ आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-एक एक आकाशप्रदेशमां

१ यद्यपि आ समिति तरफथी मुद्रित अने शान्तिसागरना भंडारनी प्रतिमां 'चतुर्णां परमाणूनां क्षेत्रप्रदेशान्तराद्व्यवहितानामेकत्वपरिणामो न भवति'—एवो पाठ मळे छे, परन्तु तेनो अर्थ संगत थतो नथी, जो—'क्षेत्रप्रदेशान्तराव्यवहितत्वादेकत्वपरिणामो न भवति' एवो पाठ होय तो अर्थ संगत थाय छे तेथी ए पाठ मानी उपर प्रमाणे अर्थ कर्यो छे.

वच्चे परमाणुओ, स्थापना—००|००|०० त्यारे आदिना प्रदेशमां रहेला वे परमाणु चरम अने छेल्ला प्रदेशमां रहेला वे परमाणुओ चरम, एम 'चरमौ' वे चरम अने मध्य प्रदेशवर्ती वे परमाणु एक अचरम कहेवाय छे. दसमो भंग-'चरमौ च अचरमौ च'-वे चरम अने वे अचरम. ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते छप्रदेशवाळो स्कन्ध समश्रेणिए रहेला चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-प्रथम प्रदेशमां वे परमाणु, बीजामां वे, त्रीजामां एक अने चोथामां एक, स्थापना—०० ०० ० ० त्यारे प्रथम प्रदेशवर्ती वे परमाणुओ चरम, छेल्ला प्रदेशवर्ती एक परमाणु चरम, एम वे चरम, बीजा प्रदेशमां रहेला वे परमाणु एक अचरम, त्रीजा प्रदेशमां रहेलो एक परमाणु अचरम, एम वे अचरम थाय छे. अगियारमो भंग-'चरमश्च अवक्तव्यश्च'-चरम अने अवक्तव्य. ते आ प्रमाणे-ज्यारे तेज छप्रदेशवाळो स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिए रहेला त्रण आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-प्रथम प्रदेशमां वे, अने तेनी समश्रेणिए रहेला बीजा प्रदेशमां वे अने विश्रेणिमां रहेला त्रीजा प्रदेशमां वे, स्थापना—००|०० त्यारे वे प्रदेशमां रहेला चार परमाणुओ समश्रेणिए रहेला द्विप्रदेशावगाढ द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे एक चरम अने विश्रेणिमां ०० रहेला आकाशप्रदेशमां अवगाढ वे परमाणुओ एक परमाणुनी पेठे अवक्तव्य होय छे. बारमो भंग 'चरमश्च अवक्तव्यौ च'—एक चरम अने वे अवक्तव्य होय. तेमां ज्यारे ते छप्रदेशवाळो स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिथी चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-वे परमाणु प्रथम प्रदेशमां, ० तेनी समश्रेणिए रहेला बीजा प्रदेशमां वे परमाणु, एक तेना उपर त्रीजा प्रदेशमां अने एक नीचे चोथा प्रदेशमां, स्थापना—००|०० त्यारे चार परमाणुओ जे वे प्रदेशमां रहेला छे ते पूर्वेनी पेठे एक 'चरम' अने विश्रेणिमां रहेला वे प्रदेशमां वर्तता वे परमाणुओ ० 'अवक्तव्यौ' वे अवक्तव्य होय छे. तेरमो भंग-'चरमौ च अवक्तव्यश्च'-वे चरम अने एक अवक्तव्य होय. ज्यारे ते ज छप्रदेशवाळो स्कन्ध पांच आकाशप्रदेशमां समश्रेणि अने विश्रेणिथी आ प्रमाणे रहे छे—समश्रेणिए रहेला वे आकाशप्रदेशमां वे परमाणुओ, तेओनी नीचे समश्रेणिथी रहेला

बे आकाश प्रदेशमा बे परमाणुओ, अने बे श्रेणिना मध्य भागनी समश्रेणिमा रहेला एक आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, स्थापना— त्यारे द्विप्रदेशावगाढ बे परमाणुओना स्कन्धनी पेठे उपरना बे प्रदेशमा रहेला बे परमाणुओ चरम, नीचेना बे परमा णुओ चरम, एम बे चरम अने एक प्रदेशमा अवगाढ बे परमाणुओ परमाणुनी पेठे एक अवक्तव्यरूप छे. चौदमो भंग-'चरमौ च अवक्तव्यौ च'-बे चरम अने बे अवक्तव्यरूप होय, तेमा ज्यारे ते छप्रदेशिक स्कन्ध छ आकाशप्रदेशमां समश्रेणि अने विश्रेणिथी आ प्रमाणे रहे छे-समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमां बे परमाणुओ, तेनी नीचे समश्रेणिए रहेला बे आकाशप्रदेशमा बे परमाणुओ, बे श्रेणिना मध्यभागनी समश्रेणिमा आवेला एक प्रदेशमां रहेलो एक परमाणु अने उपरना बे प्रदेशनी विश्रेणिमां रहेल एक परमाणु, स्थापना— त्यारे उपरना बे परमाणुओ एक चरम अने नीचेना बे परमाणुओ पण चरम एम बे चरम अने बे अवक्तव्य. ओगणीशमो भंग-'चरमश्च अचरमश्च अवक्तव्यश्च' चरम, अचरम अने अवक्तव्य ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते छप्रदेशिक स्कन्ध एकने चोतरफ वींटीने रहेला अने विश्रेणिमां रहेला एक अधिक एम छ आकाशप्रदेशमा रहे छे, स्थापना— त्यारे एकने वींटीने रहेनार चार परमाणुओ पूर्वोक्त युक्तिथी (मध्यवर्ती एक परमाणुना संबन्धी होवाथी अने एक वर्ण, गन्ध, रस अने स्पर्शवाळा होवाथी)एक चरम,मध्यमा रहेनारएक अचरम ने विश्रेणिमा रहेनार एक परमाणु अवक्तव्य छे वीशमो भंग 'चरमश्च अचरमश्च अवक्तव्यौ च' एक चरम, एक अचरम अने बे अवक्तव्यरूपछे, स्थापना— ते सातप्रदेशवाळा स्कन्धने ज घटे छे, पण छप्रदेशवाळाने घटतो नथी. एकवीशमो 'चरमश्च अचरमौच अवक्तव्यश्च' एक चरम बे अचरम अने एक अवक्तव्यरूप छे स्थापना— ते [illegible] सात प्रदेशवाळा स्कन्धने ज घटे छे जे पाचीशमो भंग-'चरमश्च अचरमौच अवक्तव्यौच' एक चरम, बे अचरम, अने बे अवक्तव्यरूप छे, स्थापना— ते आठ प्रदेशवाळा स्कन्धने ज घटे छे माटे वीश, एकवीश, अने बावीश ए त्रणे भागानो निषेध कर्यो छे जे त्रेवीशमो भंग-

'चरमौ च अचरमश्च अवक्तव्यश्च' बे चरम, एक अचरम अने एक अवक्तव्यरूप छे, ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते छप्रदेशिक स्कन्ध चार आकाशप्रदेशोमां आवी रीते रहे छे. वच्चे परमाणु बे आकाशप्रदेशमां, एक तेओनी समश्रेणिमां रहेल त्रीजा आकाशप्रदेशमां अने एक विश्रेणि स्थित आकाशप्रदेशमां, स्थापना— त्यारे प्रथम आकाश प्रदेशमां रहेला बे परमाणु चरम, त्रीजा प्रदेशमां अवगाढ एक परमाणु पण चरम एम बे चरम, बीजा प्रदेशमां अवगाढ बे परमाणु अचरम अने विश्रेणि स्थित परमाणु अवक्तव्यरूप होय. चोवीशमो भंग-'चरमौ च अचरमश्च अवक्तव्यौ च'—बे चरम एक अचरम अने बे अवक्तव्य. ज्यारे ते छप्रदेशी स्कन्ध पांच आकाशप्रदेशमां समश्रेणि अने विश्रेणिथी आ प्रमाणे रहे छे-समश्रेणिए रहेला त्रण आकाशप्रदेशमांना प्रथम आकाशप्रदेशमां एक, बीजामां एक, त्रीजामां बे अने विश्रेणि रहेला बे प्रदेशमां एक एक, स्थापना— त्यारे आदि अने अन्तना प्रदेशमां रहेला परमाणुओ बे चरम, मध्यप्रदेशमां रहेल अचरम अने विश्रेणिना बे आकाश प्रदेशमां रहेला बे परमाणुओ बे अवक्तव्यरूप छे. पचीशमो भंग-'चरमौ च अचरमौ च अवक्तव्यश्च' बे चरम बे अचरम अने एक अवक्तव्य. ते आ प्रमाणे--ज्यारे छप्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाशप्रदेशमां समश्रेणि अने विश्रेणिथी आ प्रमाणे रहे छे-समश्रेणिए रहेला चार आकाशप्रदेशमांना प्रथमना त्रण आकाशप्रदेशमां एक एक, चोथामां बे अने विश्रेणि रहेला पांचमा आकाशप्रदेशमां एक परमाणु होय छे, स्थापना— त्यारे प्रथम अने अन्तिम प्रदेशमां रहेनार बे चरम, मध्यना बे प्रदेशमां रहेनार बे अचरम अने विश्रेणि स्थित आकाशप्रदेशमा रहेल एक अवक्तव्य होय छे. छवीशमो भंग-'चरमौ च अचरमौ च अवक्तव्यौ च' बे चरम, बे अचरम अने बे अवक्तव्य. ते आ प्रमाणे-ज्यारे छप्रदेशी स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिए रहेला छ आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना-- त्यारे आदि अने अन्तना बे प्रदेशमां अवगाढ बे परमाणुओ बे चरम, मध्यप्रदेशमां अवगाढ बे परमाणुओ बे अचरम अने विश्रेणि रहेला बे प्रदेशमां अवगाढ बे परमाणुओ बे अवक्तव्य होय छे.

त्तव्वयाइं च २०, नो चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१, नो चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२, सिय चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २४, सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५, सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६।

१२. सत्तपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा। गोयमा ! सत्तपएसिए णं खंधे सिय चरिमे १, णो अचरिमे २, सिय अवत्तव्वए ३, णो चरिमाइं ४, णो अचरिमाइं ५, णो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय

अवक्तव्य न होय १७, ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १८, कदाच ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय १९, ए. व. चरम ए. व अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय २०, ए. व. चरम, ब. व. अचरम अने ए. व अवक्तव्य न होय २१, ए व चरम ब. व. अचरम अने ब. व अवक्तव्य न होय २२, कदाच ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २३, कदाच ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य होय २४, कदाच ब. व. चरम ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २५, कदाच ब. व. चरम ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य होय २६.

१२. हे भगवन् ! सातप्रदेशवाळा स्कंध संबन्धे प्रश्न. हे गौतम ! सातप्रदेशवाळो स्कंध कदाच चरम होय १, अचरम न होय २,

---

१२. 'सत्तपएसिए णं भंते ! खंधे'-हे भगवन् ! सात प्रदेश वाळो स्कन्ध कदाच चरम होय, अचरम न होय-इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्ववत् जाणवुं हवे उत्तर कहे छे-'सत्तपएसिए णं खंधे सिय चरमे, नो अचरमे'-हे गौतम ! सातप्रदेशी स्कन्ध कदाचित् चरम होय, अचरम न होय-इत्यादि अहीं त्रीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पन्दरमो, सोळमो, सत्तरमो, अढारमो अने

चरमे य अचरमाइं च ८, सिय चरमाइं च अचरमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइं च १२, सिय चरमाइं च अवत्तव्वए य १३, सिय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४, णो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, णो अचरमे य अवत्तव्वयाइं च १६, णो अचरमाइं च अवत्तव्वए य १७, णो अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, सिय चरमे

कदाच अवक्तव्य होय ३, ब. व. चरम न होय ४, ब. व. अचरम न होय ५, ब. व. अवक्तव्य न होय ६, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ७, कदाच ए. व. चरम अने ब. व. अचरम होय ८, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ९, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अचरम होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय ११, कदाच ए. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय १२, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय १३, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय १४, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १५, ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १६, ब. व. अचरम

बावीशमो-ए नव भांगा त्याज्य छे अने बाकीना ग्रहण करवा योग्य छे. ए संबन्धे कहेवामां आवशे के 'बिचउत्थपंचछट्ठं पन्नरसोलं च सत्तरट्ठारं । वज्जिय बावीसइमं सेसा भंगा उ सत्तमए ॥' बीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पंदरमो, सोळमो, सत्तरमो, अढारमो अने बावीशमो-ए भांगा वर्जीने बाकीना भांगाओ सातप्रदेशवाळा स्कन्धने विशे जाणवा. तेमां त्रेथी मांडी अढार सुधीना भांगाओना निषेधनुं कारण पूर्वे कहेलुं छे ते जाणवुं, अने ते केवळ आज भांगाओमां नहि पण पछीना बीजा बधा स्कन्धोमां जाणवुं. अने जे बावीशमो भंग छे ते आठ प्रदेशवाळा स्कन्धने विशे ज घटे छे, सातप्रदेशवाळा स्कन्धने विशे घटतो नथी, ए पूर्वे कह्युं छे. तेथी तेनो अहीं प्रतिषेध कर्यो छे. बाकीना प्रथमथी आरंभी छवीश सुधीना सत्तर भांगा छप्रदेशी स्कन्धनी पेठे जाणवा. केवळ शिष्यना

य अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २०, सिय चरमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए अ २१, णो चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं य २२, सिय चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, सिय चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २४, सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५, सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ ।

अने ए. व. अवक्तव्य न होय १७, ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १८, कदाच ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय १९, कदाच ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य होय २०, कदाच ए. व. चरम ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २१, ए. व. चरम ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय २२, कदाच ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २३, कदाच ब. व. चरम ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य होय २४, कदाच ब. व. चरम ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २५, कदाच ब. व. चरम, ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य होय २६.

अनुग्रह माटे स्थापना मात्र पडे नहीं यतावीए छीए प्रथम 'चरम' चरम भग— [diagram] बीजो 'अवक्तव्यः' अवक्तव्य भग— [diagram]

सातमो 'चरमश्चाचरमश्च'-चरम अने अचरम भग— [diagram] आठमो भग 'चरमश्चाचरमौ च' चरम अने बे अचरम— [diagram]

नवमो 'चरमौ चाचरमश्च' बे चरम अने एक अचरम— [diagram] दसमो भग 'चरमौ चाचरमौ च' बे चरम अने बे अचरम— [diagram]

अगियारमो-'चरमश्चावक्तव्यश्च' चरम अने अवक्तव्य— [diagram] बारमो 'चरमश्चावक्तव्यौ च' चरम अने बे अवक्तव्य— [diagram]

तेरमो 'चरमौ चावक्तव्यश्च' बे चरम अने एक अवक्तव्य— चौदमो 'चरमौ चावक्तव्यौ च' बे चरम अने बे अवक्तव्य—

ओगणीशमो–'चरमश्चा चरमश्चावक्तव्यश्च' चरम, अचरम अने अवक्तव्य— वीशमो 'चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यौ च' चरम, अचरम अने बे अवक्तव्य—

एकवीशमो चरमश्चा चरमौ चावक्तव्यश्च एक चरम, बे अचरम अने एक अवक्तव्य— त्रेवीशमो 'चरमौ चाचरमश्चावक्तव्यश्च' बे चरम एक अचरम अने एक अवक्तव्य—

चोवीशमो 'चरमौ चाचरमश्चावक्तव्यौ च'–बे चरम एक अचरम अने बे अवक्तव्य— पचीशमो चरमौ चाचरमौ चावक्तव्यश्च' बे चरम बे अचरम अने एक अवक्तव्य— अने छवीशमो भंग 'चरमौ चाचरमौ चावक्तव्यौ च' बे चरम बे अचरम अने बे अवक्तव्य— कारण के अहीं सातप्रदेशी स्कन्ध एक, बे, त्रण यावत् सात आकाशप्रदेशमां रहे छे माटे ए प्रकारना भांगाओ संभवे छे.

१३. अट्ठपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे सिय चरिमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्तव्वए ३, नो चरमाइं ४, नो अचरमाइं ५, नो अवत्तव्वयाइं ६, सिय चरिमे य अचरिमे य ७, सिय चरिमे य अचरिमाइं च ८, सिय चरिमाइं च अचरिमे य ९, सिय चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११, सिय चरमे य अवत्तव्वयाइं च १२, सिय चरिमाइं च अवत्तव्वए य १३, सिय चरिमाइं च अव-

१३. हे भगवन् ! आठप्रदेशवाळा स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! आठप्रदेशवाळो स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय २, कदाच ए. व. अवक्तव्य होय ३, ब. व. चरम न होय ४, ब. व. अचरम न होय ५, ब. व. अवक्तव्य न होय ६, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ७, कदाच ए. व चरम अने ब. व. अचरम होय ८, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ९, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अचरम होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय ११,

१३. 'अट्ठपएसिए णं भंते ! खंधे'- हे भगवन् ! आठप्रदेशी स्कन्ध-इत्यादि प्रश्नसूत्र पूर्वनी पेठे जाणवु उत्तरसूत्र—'अट्ठपएसिए णं खंधे सिय चरमे'—आठप्रदेशी स्कन्ध कदाच चरम होय इत्यादि अहीं बीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पन्नरमो, सोळमो, सत्तरमो अने अढारमो-ए आठ भंगो त्याग करवा अने बाकीना ग्रहण करवा ए संबन्धे आगळ कहेवामां आवशे के-"बिचउत्थपंचछट्ठं पन्नर सोलं च सत्तरट्ठारं । एए वज्जिय भंगा सेसा सेसेसु खंधेसु"-"बीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पन्नरमो सोळमो, सत्तरमो अने अढारमो ए भांगाओ छोडीने बाकीना स्कन्धोमां बाकीना भांगाओ जाणवा" आ गाथा सुगम छे, 'नवरं सेसा सेसेसु खंधेसु' परन्तु बाकीना भांगाओ सातप्रदेशी स्कन्धथी बीजा आठप्रदेशी वगेरे बधा स्कन्धोमां जाणवा बीजा आचार्यो ए गाथानुं उत्तरार्ध आ प्रमाणे कहे छे-

त्तव्वयाइं च १४, णो अचरिमे य अवत्तव्वए य १५, णो अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च १६, णो अचरिमाइं च अवत्तव्वए य १७, णो अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८, सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९, सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाइं च २०, सिय चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २१, सिय चरिमे य अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२, सिय चरिमाइं च अचरिमे य अवत्तव्वए अ २३, सिय चरिमाइं च अचरिमे

कदाच ए. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय १२, कदाच ब. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय १३, कदाच ब. व. चरम अने ब. व. अवक्तव्य होय १४, ए. व. अरचम अने अवक्तव्य न होय १५, ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १६, ब. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १७, ब. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य न होय १८ कदाच ए. व. चरम, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय १९, कदाच ए. व. चरम, ए. व. अचरम अने ब. व. अवक्तव्य

"एए वज्जिय भंगा तेण परमवट्ठिया सेसा"। ए भांगाओ वर्जीने तेथी आगळना बाकीना भांगा अवस्थित-एक ज प्रकारना जाणवा. प्रथमथी आरंभी छवीश सुधीना अढार भांगाओ विचारणाथी अने स्थापनाथी पूर्वनी पेठे विचारवा. परंतु 'चरमश्च अचरमौ च अवक्तव्यौ च' एक चरम, बे अचरम अने बे अवक्तव्य-ए प्रकारनो बावीशमो भांगो स्थापना वडे आ प्रमाणे छे- (प्र०)—द्विप्रदेशादि स्कन्धमां 'अवक्तव्यौ' बे अवक्तव्यरूप छठ्ठा भांगानो केम निषेध करो छो? कारण के ते युक्तिथी संभवे छे. ते आ प्रमाणे-ज्यारे एक परमाणु एक आकाशप्रदेशमां अने बीजो विश्रेणिमां रहेला बीजा आकाशप्रदेशमां होय, स्थापना— त्यारे एक अवक्तव्य अने बीजो पण अवक्तव्य—एम 'अवक्तव्यौ' बे अवक्तव्यरूप छठ्ठो भंग संभवे छे, त्रिप्रदेशिक स्कन्धना विचारमां एक प्रदेशमां एक परमाणु अने विश्रेणिमां रहेला बीजा प्रदेशमां बे,एम चतुःप्रदेशिक स्कन्धना विचा-

य अवत्तव्वयाइं च २४, सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वए य २५, सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ संखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसिए अणंतपएसिए खंधे जहेव अट्ठपएसिए तहेव पत्तेयं भाणियव्वं ।

परमाणुम्मि य तइओ पढमो तइओ य होंति दुपएसे । पढमो तइओ नवमो एक्कारसमो य तिपएसे ॥१॥
पढमो तइओ नवमो दसमो एक्कारसो य बारसमो । भंगा चउप्पएसे तेवीसइमो य बोद्धव्वो ॥२॥

होय २०, कदाच ए. व. चरम ब. व अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २१, कदाच ए व चरम ब व अचरम अने ब व. अवक्तव्य होय २२, कदाच ब व चरम ए व अचरम अने ए. व अवक्तव्य होय २३, कदाच ब व. चरम ए व अचरम अने ब व अवक्तव्य होय २४, कदाच ब व. चरम ब व अचरम अने ए व. अवक्तव्य होय २५, कदाच ब व चरम ब. व. अचरम अने ब व अवक्तव्य होय २६. जेम आठप्रदेशिक स्कंध सबंधे कह्युं तेम संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनंतप्रदेशिक प्रत्येक स्कंध सबन्धे कहेवुं.

"परमाणुमां त्रीजो, द्विप्रदेशिक स्कंधमां पहेलो अने त्रीजो अने त्रिप्रदेशिक स्कंधमां पहेलो, त्रीजो, नवमो अने अगिआरमो

रमा प्रत्येकमां बब्बे परमाणुओ होय, [° ° | ° °] (उ०)—तारी शङ्का बराबर छे, परंतु ममारमा एवा प्रकारना पुद्गल द्रव्यो नथी (प्र०)—एम शाथी जाणी शकाय ? (उ०)—आ भङ्गोनो प्रतिषेध करवाथी ज जाणी शकाय छे जो तेवा प्रकारना द्रव्यो होत तो आचार्य तेनो निषेध न करत अथवा तेवा प्रकारना द्रव्यनो संभव होय तो भागाओनो जातियाची निर्देश होवाथी तेओनो त्रीजा

पढमो तइओ सत्तमनवदसइक्कारवारतेरसमो । तेवीसचउव्वीसो पणवीसइमो य पंचमए ||३||
बिचउत्थपंचछट्ठं पनरस सोलं च सत्तरट्ठारं । वीसेक्कवीसवावीसगं च वज्जेज्ज छट्ठंमि ||४||
बिचउत्थपंचछट्ठं पण्णर सोलं च सत्तरट्ठारं । बावीसइमविहूणा सत्तपदेसंमि खंधम्मि ||५||
बिचउत्थ पंचछट्ठं पण्णर सोलं च सत्तरट्ठारं । एते वज्जिय भंगा सेसा सेसेसु खंधेसु ।

भंग होय छे. १. चतुःप्रदेशिक स्कंधमां पहेलो, त्रीजो, नवमो, दसमो, अगिआरमो, बारमो अने त्रेवीसमो भंग जाणवो. २. पंचप्रदेशिक स्कंधमां पहेलो, त्रीजो, सातमो, नवमो, दसमो, अगिआरमो, बारमो, तेरमो, तेवीशमो, चोवीशमो अने पचीशमो भंग जाणवो. ३. छप्रदेशिक स्कंधमां बीजो, चोथो, पांचमो, छट्ठो, पंदरमो, सोळमो, सत्तरमो, अढारमो, वीशमो, एकवीशमो अने बावीसमो भंग छोडी देवो. ४. सातप्रदेशवाळा स्कंधमां बीजा, चोथा, पांचमा छठ्ठा, पंदरमा, सोळमा, सत्तरमा, अढारमा, अने बावीशमा भंग सिवाय बाकीना भंगो जाणवा. ५. बाकीना स्कंधोने विषे बीजा, चोथा, पांचमा, छठ्ठा, पंदरमा, सोळमा, सत्तरमा, अने अढारमा भांगाने छोडीने बाकीना भांगाओ जाणवा.

भांगामां ज अन्तर्भाव जाणवो.

जेम आठप्रदेशी स्कन्धना भांगाओनो प्रतिषेध कर्यो अने तेओनुं विधान कर्युं तेम प्रत्येक संख्यातप्रदेशी अने असंख्यातप्रदेशी स्कन्धना भंगो कहेवा. ते आ प्रमाणे कहे छे–'संखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसिए'–संख्यातप्रदेशी अने असंख्यातप्रदेशी–इत्यादि पाठसिद्ध छे. परंतु बधेय स्थळे आ विचार जाणवो–एकादि आकाशप्रदेशमां आठ प्रदेशी वगेरे स्कन्धो रही शके छे. माटे उपर

१४. कइ णं भंते ! संठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच संठाणा पन्नत्ता, तंजहा—परिमंडले, वट्टे, तंसे, चउरंसे,

१४. हे भगवन् ! केटलां संस्थानो कह्यां छे ? हे गौतम ! पांच संस्थानो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—१ परिमंडल, २ वृत्त, ३

कहेला बधाय भागाओ घटे छे (प्र०)—हे भगवन् ! असंख्यातप्रदेशी अने अनन्तप्रदेशी स्कन्धो एक आकाशप्रदेशमां केम रही शके ? (उ०)—तेवा प्रकारनी शक्तिथी रही शके छे आ वात अयुक्त नथी, पण युक्तिथी संभवे छे ते आ प्रमाणे-अनन्तानन्त द्विप्रदेशिक स्कन्धो, यावत्-अनन्तानन्त संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो, अनन्तानन्त असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने अनन्तानन्त अनन्त प्रदेशिक स्कन्धो छे अने लोक बधो मळीने पण असंख्यप्रदेशात्मक छे ते बधा स्कन्धो लोकमां ज रहेला छे, अलोकमां नथी, तेथी निश्चय थाय छे के एक आकाशप्रदेशमां घणा परमाणुओ, घणा द्विप्रदेशिक स्कन्धो, यावत्-घणा अनन्तप्रदेशात्मक स्कन्धो रहेला छे. अहीं पूर्वाचार्यो प्रदीपनुं दृष्टान्त वर्णवे छे—जेमके घरमां सळगावेला एक दीवाना प्रकाशना बधा अणुओ घरमां व्याप्त थाय छे, तेवी रीते हजार प्रदीप कर्यां होय तो ते प्रत्येकना प्रकाशना अणुओ व्याप्त थाय छे, वळी दरेक प्रदीपना प्रकाशना परमाणुओ जुदा नथी एम नथी, पण अवश्य जुदा छे कारण के घरमां रहेला पुरुषने दरेक प्रदीपनी छाया वगेरे देखाय छे माटे जेम स्थूल छतां प्रदीपना प्रकाशना परमाणुओ एक ज आकाशना प्रदेशमां रही शके छे, तेम परमाणु आदि पण रही शके छे तेमां कांइपण दोष नथी कारण के आकाशनो अवकाश आपवानो स्वभाव होवाथी अने वस्तुओनो विचित्र परिणमन स्वभाव होवाथी तेमां विरोध आवतो नथी हवे परमाणु आदिमां जे भागाओ ग्रहण करवा योग्य छे तेने संग्रह करनार संग्रहणी गाथा कहे छे-'परमाणुम्मि तइओ' इत्यादि पाठसिद्ध छे, कारण के तेना अर्थनो पूर्वे विचार कर्यो छे परंतु द्विप्रदेशिक स्कन्धना विचारमां प्रतिषेध करवा योग्य भागाओ होवाथी तेओनोज संग्रह कर्यो छे

१४ 'कइ णं भंते ! संठाणा पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! केटलां संस्थानो कह्यां छे ? इत्यादि पाठ सुगम छे कारण के परि-

आयते य।
१५. परिमंडला णं भंते! संठाणा किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अणंता? गोयमा! नो संखिज्जा, नो असंखेज्जा,

त्र्यस्र, ४ चतुरस्र, अने ५ आयत.
१५. हे भगवन्! परिमंडल संस्थानो शुं संख्याता, असंख्याता के अनन्ता छे? हे गौतम! संख्याता के असंख्याता नथी, पण अनन्ता छे. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थानो सुधी जाणवुं. हे भगवन्! परिमंडल संस्थान शुं संख्यातप्रदेशवाळुं, असंख्यातप्रदेशवाळुं के

मंडलादिक संस्थानोनुं स्वरूप प्रथम पदमां ज सविस्तर निरूपण करेलुं छे. बाकी बधुं पाठसिद्ध छे. परंतु 'परिमंडले णं भंते! संठाणे संखेज्जपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे' इत्यादि. हे भगवन्! संख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं संख्याता प्रदेशोमां रहेलुं छे? इत्यादि प्रश्न. हे गौतम! संख्याता प्रदेशोमां रहेलुं होय छे, परंतु असंख्याता के अनन्ता प्रदेशोमां रहेलुं होतुं नथी. कारण के तेना संख्याता ज प्रदेशो छे, तो असंख्याता के अनन्ता प्रदेशोमां शी रीते रहे? असंख्यातप्रदेशवाळुं के अनन्तप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान संख्याता के असंख्याता प्रदेशोमां रहे छे, कारण के तेमां विरोध नथी, पण अनन्त प्रदेशोमां रहेतुं नथी कारण के असंख्यात प्रदेशवाळा स्कन्धनी अनन्त प्रदेशोने विषे अवगाहनानो विरोध छे. अनन्तप्रदेशवाळानी पण अनन्तप्रदेशने विषे अवगाहनानो विरोध ज छे. कारण के लोक पण असंख्य प्रदेशात्मक ज छे, अने लोक सिवाय बीजे पुद्गलोनी गतिनो असंभव छे. तेथी परिमंडल संस्थान अनन्त प्रदेशवाळुं छतां पण संख्याता के असंख्याता प्रदेशोमां रहे छे पण अनन्ता प्रदेशोमां रहेतुं नथी. ए प्रमाणे वृत्तादि प्रत्येक संस्थाननो विचार करवो. संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक परिमंडलादि संस्थानना चरम अने अचरमादिना विचारमां उत्तरसूत्रो रत्नप्रभानी पेठे जाणवा. अनेक अवयवना अविभागनी विवक्षामां अचरम खंड अने चरमखंडो होय छे अने प्रदेश विवक्षामां चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो होय छे.

अणंता । एवं जाव आयता । परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं संखेज्जपएसिए, असंखेज्जपदेसिए, अणंतपदेसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसिए, सिय असंखेज्जपएसिए, सिय अणंतपदेसिए । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेज्जपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! संखेज्जपएसोगाढे, नो असंखेज्जपएसोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसोगाढे, सिय असंखेज्जपएसोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे अणंतपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसोगाढे, सिय असंखेज्जपए-

---

अनन्तप्रदेशवाळुं छे ? हे गौतम ! कदाचित् संख्यातप्रदेशवाळुं, कदाच असंख्यात प्रदेशवाळु अने कदाचित् अनंत प्रदेशवाळुं होय. एम आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! संख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं संख्यात प्रदेशमां, असंख्यात प्रदेशमां के अनन्त प्रदेशमां अवगाढ-रहेलुं होय ? हे गौतम ! संख्यात प्रदेशमां अवगाढ होय, पण असंख्याता के अनन्त प्रदेशमां अवगाढ न होय. हे भगवन् ! असंख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं संख्यात प्रदेशमां, असंख्यात प्रदेशमां के अनन्त प्रदेशमां रहेलुं होय ? हे गौतम ! कदाचित् संख्याता प्रदेशमां के कदाचित् असंख्याता प्रदेशमां रहेलुं होय, पण अनन्त प्रदेशमां रहेलुं न होय. ए प्रमाणे यावत्-आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! अनन्त प्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं संख्यात प्रदेशमां, असंख्यात प्रदेशमां के अनन्त प्रदेशमां रहेलुं होय ? हे गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेशमां रहेलुं होय, कदाचित् असंख्यात प्रदेशमां रहेलुं होय, परन्तु

सोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे। एवं जाव आयते। परिमंडले णं भंते! संठाणे संखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे किं चरमे, अचरमे, चरमाइं, अचरमाइं, चरमंतपएसा, अचरमंतपएसा? गोयमा! परिमंडले णं संठाणे संखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे नो चरमे, नो अचरमे, नो चरमाइं, नो अचरमाइं, नो चरमंतपएसा, नियमं अचरमं चरमाणि य चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य। एवं जाव आयते। परिमंडले णं भंते! संठाणे असंखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे किं चरमे० पुच्छा। गोयमा! असंखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे जहा संखेज्जपएसिए। एवं जाव आयते। परिमंडले णं भंते! संठाणे असंखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे किं चरमे० पुच्छा। गोयमा! असंखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसोगाढे नो चरमे, जहा संखेज्जपदेसोगाढे, एवं जाव आयते। परिमंडले णं भंते!

अनन्त प्रदेशमां रहेलुं न होय. एम यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन्! संख्याता प्रदेशमां रहेलुं अने संख्याताप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं चरम छे, अचरम छे, ब. व. चरम छे, ब. व. अचरम छे, चरमान्तप्रदेशरूप छे अने अचरमान्त प्रदेशरूप छे? हे गौतम! संख्याता प्रदेशमां रहेलुं अने संख्याताप्रदेशवाळं परिमंडल संस्थान चरम नथी, अचरम नथी, ब. व. चरमरूप नथी, ब. व. अचरमरूप नथी, चरमान्तप्रदेशरूप नथी, अने अचरमान्तप्रदेशरूप नथी, पण अवश्य ए.व. अचरम, ब. व. चरमरूप, चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्त प्रदेशरूप छे. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन्! संख्याता प्रदेशावगाढ अने असंख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं चरम छे—इत्यादि पृच्छा. हे गौतम! संख्याताप्रदेशावगाढ असंख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान संख्याताप्रदेशवाळानी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन्! असंख्यातप्रदेशावगाढ

संठाणे अणंतपएसिए संखिज्जपएसोगाढे किं चरमे० पुच्छा । गोयमा! तहेव जाव आयते । अणंतपएसिए असंखेज्जपएसोगाढे जहा संखेज्जपएसोगाढे, एवं जाव आयते।

१९. परिमंडलस्स णं भंते! संठाणस्स संखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरिमाण य चरमंतपदेसाण य अचरमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया

असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थान शुं चरम छे-इत्यादि प्रश्न. हे गौतम! असंख्यातप्रदेशावगाढ असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थान चरम नथी-इत्यादि संख्यातप्रदेशावगाढनी पेठे जाणवुं. एम यावत् आयत सुधी समजवुं. हे भगवन्! संख्याता प्रदेशमां रहेलु अनंतप्रदेशिक परिमंडल संस्थान शुं चरम छे-इत्यादि प्रश्न. हे गौतम! उपर कह्या प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं. असंख्याता प्रदेशमां रहेलु अनंतप्रदेशिक परिमंडल संस्थान संख्याता प्रदेशमां रहेला परिमंडल संस्थाननी पेठे जाणवु. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी समजवु.

१९. हे भगवन्! संख्याता प्रदेशमां रहेला संख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने

१९ संख्याता प्रदेशनी अवगाहनावाळा संख्यातप्रदेशिक परिमंडलादि संस्थानना चरम अने अचरमादि संबन्धी अल्पबहुत्व कहे छे-'परिमंडलस्स णं भंते'- हे भगवन्! परिमंडल संस्थानना-इत्यादि पाठ सुगम छे. परंतु द्रव्यार्थपणाना विचारमां चरमखंडो संख्यातगुणा छे, कारण के परिमंडल संस्थानना बधा मळीने संख्याता प्रदेशो छे असंख्यात प्रदेशनी अवगाहनावाळा असंख्यात प्रदेशिक परिमंडल संस्थाननु अने असंख्यप्रदेशनी अवगाहनावाळा अनन्तप्रदेशात्मक परिमंडलसंस्थाननु पण अल्पबहुत्व रत्नप्रभानी पेठे

वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगा-
ढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरमं चरमाणि य दोऽवि विसेसाहियाति, पदेसट्ठयाए
सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखिज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स चरमंतपएसा, अचरमन्तपएसा सं-
खेज्जगुणा, चरमन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दोऽवि विसेसाहिया, दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमण्डल-
स्स संठाणस्स संखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं संखेज्जगुणाति, अचरमं

अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थप्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य, के विशेषाधिक छे ? हे
गौतम ! सौथी थोडो संख्याता प्रदेशमां रहेल संख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थाननो द्रव्यार्थपणे एक अचरमखंड छे, तेथी चरम खंडो
संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थपणे संख्याता प्रदेशमां रहेला संख्यातप्र-
देशिक परिमंडल संस्थानना चरमान्त प्रदेशो सौथी थोडा छे. तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने
अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे, द्रव्यार्थप्रदेशार्थपणे संख्यात प्रदेशमां रहेला संख्यात प्रदेशिक परिमंडल संस्थाननो

जाणवुं. 'नवरं संक्रमे अनन्तगुणाः' परंतु "संक्रममां अनन्तगुणा कहेवा" एटले क्षेत्रना विचारथी ज्यारे. द्रव्यना विचारनुं संक्रमण
थाय छे त्यारे चरमखंडो अनन्तगुणा कहेवा. ते आ प्रमाणे—सौथी थोडो एक चरमखंड छे अने तेथी चरमखंडो क्षेत्रथी असंख्यात-
गुणा छे अने द्रव्यथी अनन्तगुणा छे. तेथी अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे संस्थानोनो पण चरम
अने अचरमादिना विभागवडे विचार कर्यो.

य चरमाणि य दोवि विसेसाहियाति, चरमन्तपएसा संखेज्जगुणा, अचरिमन्तपएसा संखेज्जगुणा, चरिमन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दोवि विसेसाहिया । एवं वट्टतंसचउरंसायएसुवि जोएयव्वं ।

१७. परिमण्डलस्स णं भंते ! संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स चरमाण य चरमन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा० ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसिअस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे, चरमाति संखेज्जगुणाति, अचरमं च चरमाणि य दोवि विसेसाहियाति, पदेसट्ठयाते सव्वत्थोवा परिमंडलसंठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स चरमंतपएसा, अचरमंतपएसा संखिज्जगुणा, चरमंतपएसा य

द्रव्यार्थपणे सौथी थोडो एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खंडो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे, तेथी प्रदेशार्थपणे चरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळीने विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे वृत्त, त्र्यस्र, चतुरस्र, अने आयत संस्थानने विषे पण योजना करवी.

१७. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशमां रहेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थप्रदेशार्थ पणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! संख्याता प्रदेशमां रहेल असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थाननो द्रव्यार्थपणे सौथी थोडो एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खंडो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमखंड अने चरमखंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थपणे संख्याता प्रदेशमां रहेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल

अचरमंतपएसा य दोवि विसेसाहिया,दव्वट्ठपएसट्ठयाए–सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरमाति संखेज्जगुणाति, अचरमं च चरमाणि य दोवि विसेसाहियाति, चरमंतपएसा संखेज्जगुणा, अचरमंतपएसा संखेज्जगुणा, चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य दोवि विसेसाहिया। एवं जाव आयते। परिमंडलस्स णं भंते! संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स असंखेज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स चरमाण य चरमंतपएसाण य अचरमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा० ४?गोयमा! जहा रयणप्पभाए अप्पाबहुयं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, एवं जाव आयते।

१८. परिमंडलस्स णं भंते! संठाणस्स अणंतपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरमाण य चरमंतपएसाण य अचरमंतपएसाण य दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा०

संस्थानना चरमान्तप्रदेशो सौथी थोडा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपणे–सौथी थोडो संख्याता प्रदेशमां रहेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थाननो द्रव्यार्थपणे एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खंडो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी प्रदेशार्थपणे चरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्त प्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं.

१८. हे भगवन्! असंख्याता प्रदेशमां रहेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो

४ ? गोयमा ! जहा संखेज्जपएसिअस्स संखेज्जपएसोगाढस्स,नवर संकमेणं अणंतगुणा, एवं जाव आयए । परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स अणंतपएसियस्स असंखेज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स य ४ जहा रयणप्पभाए, नवरं संकमे अणंतगुणा, एव जाव आयते ।

१९ जीवे णं भंते ! गतिचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरइए णं भंते !

अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे, अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम ! जेम रत्नप्रभानु अल्पबहुत्व कहुं तेमज बधु कहेवु. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवु. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशमां रहेला अनन्तप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमा द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम संख्याता प्रदेशमां रहेला संख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थान संबंधे कहुं छे तेम कहेवु. परतु संक्रममां-द्रव्यादिना विचारना संक्रममां अनंतगुणा जाणवा. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! असंख्याता प्रदेशमां रहेला अनन्त प्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड-इत्यादि अल्पबहुत्व जेम रत्नप्रभा संबन्धे कहुं छे तेम कहेवु,परन्तु संक्रम-द्रव्यादिना विचारमां अनन्तगुणा कहेवा. ए प्रमाणे आयत संस्थान सुधी कहेवु.

१९. हे भगवन् ! जीव गतिचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित चरम होय अने कदाचित् अचरम होय.

---

१९ हवे जीवादि दंडकने आश्रयी चरम अने अचरमना विभाग वडे विचार करे छे—'जीवे णं भंते ! गइचरमेणं किं चरमे-हे

गतिचरमेणं किं चरिमे, अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते ! गतिचरमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते ! ठितीचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते ! ठितीचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि, अचरमावि, एवं निरंतरं जाव

हे भगवन् ! नैरयिक शुं गतिचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम होय अने कदाचित् अचरम होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको गतिचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक स्थितिचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम होय अने कदाच अचरम होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको

भगवन् ! जीव गतिचरम वडे शुं चरम छे ?—इत्यादि. गतिपर्यायरूप चरम ते गतिचरम, ते वडे विचार करतां जीव चरम छे के अचरम छे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! कोइक चरम होय अने कोइक अचरम होय. तेमां जे प्रश्नसमये गतिपर्यायमां अर्थात्-मनुष्यगति पर्यायमां वर्ततो पछीथी कोइपण गतिपर्यायने पामशे नहि पण मुक्त थशे ते गतिचरम अने बाकीना अगतिचरम. 'नेरइए णं भंते गइचरमेणं'-हे भगवन् ! नैरयिक गतिचरम वडे चरम होय ? इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिक गतिचरम वडे एटले अर्थात् नरकगतिरूप चरम पर्याय वडे चरम छे के अचरम छे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! कोइक चरम होय अने कोइक अचरम होय. जे नरकगतिरूप पर्यायथी नीकळी फरीवार नरकगतिनो अनुभव नहि करे ते चरम अने बाकीना अचरम. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी

वेमाणिया। नेरइए णं भंते! भवचरमेणं किं चरमे अचरमे? गोयमा! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते! भवचरमेणं किं चरमा अचरमा? गोयमा! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते! भासाचरमेणं किं चरमे अचरमे? गोयमा! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते! भासाचरमेणं किं चरमा अचरमा? गोयमा! चरमावि अचरमावि, एवं जाव एगिंदियवज्जा निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते! आणापाणुचरमेणं किं चरमे अचरमे?

स्थितिचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिक भवचरम वडे चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाचित् चरम पण होय अने कदाचित् अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिको भवचरम वडे चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाचित् चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिक भाषाचरम वडे चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाचित् चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिको भाषाचरम वडे चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाचित् चरम पण होय अने कदाचित् अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर

निरंतर वैमानिक-वैमानिकसूत्र पर्यंत कहेवु. बहुवचनदंडकना सूत्रमां उत्तर-'चरमा वि अचरमा वि'—केटलाक चरम होय छे अने केटलाक अचरम होय छे प्रश्नसमये जे कोइ नैरयिको होय तेओमां केटलाक अवश्य नरकगतिपर्याय वडे चरम होय छे अने बीजा अचरम होय छे, तेथी अहीं एक ज उत्तर होय छे 'चरम पण होय अने अचरम पण होय' एवी रीते ते ते गतिने आश्रयी

गोयमा ! सिय चरमे,सिम्र अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! आणापाणुचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! आहारचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! आहारचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिग्र । नेरइए णं भंते !

यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक श्वासोच्छ्वासचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको श्वासोच्छ्वासचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक आहार चरमवडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिक सुधी समजवुं. हे भगवन् ! नैरयिको आहारचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी समजवुं. हे भगवन् ! नैरयिक भावचरम वडे शुं चरम छे के अच-

वधा स्थानोमां विचार करवो. 'नेरइए णं भंते ! ठिइचरमेणं'-हे भगवन् नैरयिक स्थितिचरमवडे चरम छे' ? इत्यादि. हे भगवन् ! ते ज नरकोमां चरम-छेल्ला समयनी स्थितिरूप चरमपर्याय वडे विचार करतां नैरयिक चरम होय छे के अचरम होय छे ? भगवान् कहे छे— स्याच्चरमः स्यादचरमः'-कोइ चरम होय अने कोइ अचरम होय. तात्पर्य ए छे के जे फरीथी पण नरकमां आवी स्थितिना चरम समयने प्राप्त करशे ते अचरम अने बाकीना चरम. एम निरंतर यावत्-वैमानिक सुधी जाणवुं. बहुवचनना दंडकना विचारमां

भाँवचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे। एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते ! भावचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि। एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते ! वंण्णचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे। एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते ! वण्णचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि। एवं निरंतरं जाव वेमा-

रम छे? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको भावचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी समजवुं. हे भगवन् ! नैरयिक वर्णचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको वर्णचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक गंधचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत्

केटलाक चरम होय अने केटलाक अचरम पण होय. अहीं जेम प्रश्नसमये स्थितिना छेल्ला समये वर्ते छे तेम अहीं विचार छे पण नथी, जो पण होय तो नारकोमां उद्वर्तना-मरणना विरहनो समय होवाथी वळी एकादि जीवोनी पण उद्वर्तना थती होवाथी 'चरमा वि अचरमा वि' केटलाक चरम पण होय छे अने केटलाक अचरम पण होय छे, आ पक्षे स्थळे पण अवश्य बहुवचन वडे आपेलो उत्तर नहि घटी शके, परन्तु प्रश्नसमये जे नारको छे ते अनुक्रमे पोतपोतानी स्थितिना चरम समयने प्राप्त थयेला ते रूपे ते

णिया। नेरइए णं भंते! गंधचरमेणं किं चरमे अचरमे? गोयमा! सिय चरमे, सिय अचरमे। एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते! गंधचरमेणं किं चरमा अचरमा? गोयमा! चरमावि, अचरमावि। एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते! रसचरमेणं किं चरमे अचरमे? गोयमा! सिय चरमे, सिय अचरमे। एवं

वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिको गंधचरमवडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिक रसचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी समजवुं. हे भगवन्! नैरइए णं भंते!

'चरम के अचरम छे-ए विचारवडे उपर कहेलो उत्तर घटी शके छे. भवचरमसूत्र गतिचरमसूत्रनी पेठे जाणवुं.

१. स्थितिचरम संबन्धे बहुवचनना दंडकमां केटला एक स्थितिचरम वडे चरम होय अने केटलाक अचरम होय छे. अहीं जे नैरयिको स्वस्थितिना चरम समयने प्राप्त थयेला होय ते चरम अने बीजा अचरम एम न समजवुं, जो एम मानीए तो उत्तर सूत्रमां 'केटला एक 'चरमाः' चरम होय अने केटला 'अचरमाः' अचरम होय' ए बहुवचन घटी शकशे नहि, कारण के नैरयिकोमां उद्वर्तनाविरहनो उत्कृष्ट काळ बार मुहूर्तनो कह्यो छे, एटले ते दरम्यान कोइ नैरयिक च्यवतो नथी, तेमज कदाचित् एकादि नैरयिकनी पण उद्वर्तना होय छे एटले प्रश्नसमये ज्यारे एक पण नैरयिक स्थितिना चरम समयने न प्राप्त थयेलो होय, अथवा एक के बे नैरयिक प्राप्त थयेला होय त्यारे 'केटलाक चरम होय अने केटलाक अचरम होय' ए उत्तर घटी शके नहि, माटे प्रश्नसमये जे नैरयिको छे तेमां केटलाक चरमस्थितिने प्राप्त थयेला होय के अनुक्रमे थवाना होय, पण फरीथी नरकमां आवी स्थितिना चरम समयनो अनुभव नहि करे ते स्थितिचरम जाणवा अने फरीथी नरकमां आवी स्थितिना चरम समयनो अनुभव करशे ते अचरम जाणवा—अनुवादक.

निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते! रसचरमेणं किं चरमा, अचरमा? गोयमा! चरमावि, अचरमावि। एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइए णं भंते! फासचरमेणं किं चरमे अचरमे? गोयमा! सिय चरमे, सिय अचरमे। एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइया णं भंते! फासचरमेणं किं चरमा अचरमा? गोयमा! चरमावि, अचरमावि। एवं जाव वेमाणिया। संगहणिगाहा—

"गतिठिइभवे य भासा आणापाणुचरमे य बोद्धव्वा। आहारभावचरमे वण्णरसे गंधफासे य" ॥

इति पन्नवणाए भगवईए दसमं चरमपदं समत्तं।

अचरम छे? हे गौतम! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी समजवुं. नैरयिको रसचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिक स्पर्शचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? हे गौतम! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिको स्पर्शचरम वडे शुं चरम छे के

'भासाचरमेणं' इत्यादि 'हे भगवन्! नैरयिक भाषाचरम वडे चरम छे के अचरम छे? भाषाचरम-छेल्ला भाषा, तेथी सूत्रनो आ अर्थ थाय छे-हे भगवन्! नैरयिक चरमभाषा वडे चरम छे के अचरम छे? बाकी बधु सुगम छे. बहुवचनसूत्रमां प्रश्ननो भावार्थ आ प्रमाणे छे-प्रश्नसमये जे नारको छे तेओ काळक्रमे चरमभाषाने प्राप्त थाय छे, तेओ ते चरमभाषा वडे चरम छे के अचरम छे?

संग्रहणी गाथानो अर्थ—

" गति, स्थिति, भव, भाषा, श्वासोच्छ्वास, आहार, भाव, वर्ण, रस, गंध, अने स्पर्श संबन्धे चरमादि जाणवा. "

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां दसमुं चरम पद समाप्त.

तेथी उत्तरसूत्र पण घटे छे, ए प्रमाणे उच्छ्वास अने आहारसूत्रनो पण विचार करवो. भावचरममां औदयिकभाव लेवो. बाकी बधुं सुगम छे.

श्रीमद्आचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां दसमुं चरमपद समाप्त.

एक्कारसं भासापयं ।

१. से णूणं भंते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा?

अगिआरमुं भाषापद

१. हे भगवन् ! हुं एम अवश्य मानुं छु के भाषा अवधारिणी–अर्थनो बोध करनारी छे, हुं एम चिन्तन करुं छुं–विचारुं छुं के भाषा अवधारिणी छे. हुं एम मानु के भाषा अवधारिणी छे ? हु एम चिंतन करुं के भाषा अवधारिणी छे ? हु ते प्रकारे मनन

१ ए प्रमाणे दशमा पदनी व्याख्या करी, हवे अगियारमा पदनो प्रारंभ कराय छे, तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे–अहीं पूर्वना पदमां प्राणीओना जन्ममरणादि उपपातक्षेत्र छे, तेना चरम अने अचरम विभागनु प्रतिपादन कर्युं अहीं भाषापर्याप्तिथी पर्याप्ताओनी सत्यादि भाषाओनो विभाग बताय छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे–'से नूण भंते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा' हे भगवन् ! हु अवश्य मानु छु के भाषा अवधारिणी छे' इत्यादि ते शब्द अथ शब्दना अर्थमां छे अने ते वाक्यना प्रारंभमा वपराय छे 'नूनम्' अव्यय

१ हे भगवन् ! आप निश्चित मानो छो के भाषा अवधारिणी–अर्थनो निश्चय करनारी छे, आप चिंतवो छो के भाषा अवधारिणी छे ? आप जे प्रकारे मानो छो के भाषा अवधारिणी छे, आप जे प्रकारे चिंतवो छो के भाषा अवधारिणी छे ते प्रकारे हुं मानुं के भाषा अवधारिणी छे, ते प्रकारे हुं चिंतवुं के भाषा अवधारिणी छे ? हा, गौतम ! हुं मानुं छुं के भाषा अवधारिणी छे, हुं चिंतवुं छुं के भाषा अवधारिणी छे. हुं जे प्रकारे मानुं छुं के भाषा अवधारिणी छे, हुं जे प्रकारे चिंतवुं छुं के भाषा अवधारिणी छे ते प्रकारे तुं मान के भाषा अवधारिणी छे, ते प्रकारे तुं चिंतव के भाषा अवधारिणी छे अहीं मूळ सूत्रमां 'मन्नामि' एवो पाठ छे, तेथी तेनो प्रसिद्ध अर्थ 'हुं मानुं छुं' एवो थाय छे, परन्तु टीकाकार जणावे छे के "मन्यामि इत्यादीनि क्रियापदानि प्राकृतत्वा

हंता गोयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ।

करुं के भापा अवधारिणी छे ? हुं ते प्रकारे चिन्तन करुं के भापा अवधारिणी छे ? हा गौतम ! तुं एम मान के भापा अवधारिणी छे, तुं एम विचार कर के भापा अवधारिणी छे. तुं ते प्रकारे मनन कर के भापा अवधारिणी छे, तुं ते प्रकारे चिन्तन कर के भापा अवधारिणी छे, ते प्रकारे मनन अथवा चिन्तन कर के भापा अवधारिणी छे.

उपमान, अवधारण, तर्क, प्रश्न अने हेतुना अर्थमां वपराय छे. अहीं अवधारण अर्थमां छे 'भंते' भदन्त ए आमन्त्रण छे. 'मन्ये' मानुं छुं, जाणु छुं के 'इति' ए प्रमाणे 'अवधारिणी'-अवधार्यते अर्थोऽनया-जे वडे अर्थनो निश्चय थाय ते अवधारिणी अर्थात्-अर्थना अवबोधनुं कारणभूत, भाप्यते-बोलाय ते भाषा, एटले भाषाने योग्य होवाथी परिणमन करेला अने छोडी दीधेला भाषावर्गणा द्रव्यनो समुदाय. आ पदनो अर्थ छे. वाक्यनो अर्थ आ प्रमाणे छे-हे भगवन् ! हुं एम मानुं छुं के भापा अवश्य अवधारिणी-अर्थावबोधना

छान्दसत्वाय युष्मदर्थेऽपि प्रयुज्यन्ते." 'मन्नामि' इत्यादि क्रियापदो प्राकृतशैलीथी अने सूत्रनी रचना होवाथी 'युष्मद्' शब्दना अर्थमां पण प्रयोजाय छे. वळी "प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरुत्तम एकवच्च" (१. ४. १०६.) एवुं पाणिनीय सूत्र छे. तेनो अर्थ आवो थाय छे—प्रहास-हास्य गम्यमान होय त्यारे मन् धातु जेनी समीपवर्ती होय एवा धातुथी मध्यम पुरुष अने अने 'मन्' धातुथी उत्तम पुरुषनो प्रत्यय लागे छे, अने ते एकवचनमां मूकवामां आवे छे. जेमके 'एहि मन्ये रथेन यास्यसि, न यास्यसि, यातस्ते पिता'. आव, तुं माने छे के रथमां बेसीने हुं जइश, पण तुं नहि जइ शके, कारण के तारो पिता (रथमां बेसीने) गयो. अहीं 'मन्ये' नो अर्थ 'त्वं मन्यसे' तुं माने छे एवो अर्थ थाय छे. जो के अहीं प्रहास नथी, तोपण मन् धातुथी युष्मद् शब्दना अर्थमां उत्तम पुरुषनो प्रयोग थाय छे एम मानवाने कारण छे, तेथी अहीं से नूण भंते ! 'मन्नामी'ति अथ नूनं भदन्त ! त्वं मन्यसे—हे भगवन् ! तमे मानो छो के 'नूनम्' अवश्य भापा अवधा-

कारणभूत छे, आ विचार्या सिवाय एकधार मानु छु एम नथी, पण 'चिन्तयामि' युक्तिद्वारा चिंतवु छु, विचारु छु के भाषा अवधारिणी छे एम गौतम स्वामी पोतानो अभिप्राय भगवन्तने निवेदन करी प्रस्तुत अर्थना निश्चय निमित्ते आ प्रमाणे भगवन्तने पूछे छे-अह मण्णामीति ओहारिणी भासा'-अथशब्द प्रक्रिया, प्रश्न, आनन्तर्य-पछी, मंगल, उपन्यास-प्रारंभ, प्रतिवचन अने समुच्चयना अर्थमां छे अहीं प्रश्नना अर्थमां छे काकु (प्रश्नार्थक ध्वनि) वडे आ सूत्रनो पाठ करवो. तेथी आ अर्थ थाय छे अथ-हे भगवन् ! हुं एम मानु, मनन करु के भाषा अवधारिणी छे ? बीजा अभिप्रायना निवेदनने आश्रयी प्रश्न करे छे-हु एम चिन्तन करुं के भाषा अवधारिणी छे ? आ मारी मान्यता निर्दोष छे ? हवे प्रश्न समयनी पूर्वे जेम मनन अने चिन्तन कर्यु हतु, तेम अत्यारे प्रश्न समये पण मनन अने चिन्तन करु ? अन्य प्रकारे नहि ! ए प्रमाणे भगवन्तना ज्ञाननी साथे संवाद-मेळ करवानी इच्छावाळा गौतम स्वामी पूछे छे-'तह मन्नामीति ओहारिणी भासा' तह चिन्तेमीति ओहारिणी भासा' तथा शब्द समुच्चय, निर्देश, अवधारण, सादृश्य अने प्रश्नना अर्थमां छे अहीं निर्देश अर्थमां छे काकु-प्रश्नार्थक ध्वनिवडे आ सूत्रनो पण पाठ करवो तेथी प्रश्नार्थनो ख्याल आवे छे हे भगवन् ! जेम पूर्वे मानतो हतो तेम अत्यारे पण हु मानु के 'ए प्रमाणे अवधारिणी भाषा छे' ? ए प्रश्ननो अभिप्राय छे तात्पर्य ए छे के हे भगवन् ! मारा अत्यारना मननमां अने पूर्वना मननमां कशपण विशेष नथी, जेम में पूर्वे चिन्तव्यु हतु तथा-ते प्रकारे अत्यारे चिन्तवु के भाषा अवधारणी छे ? ए बरोबर छे ? ए प्रमाणे गौतम स्वामीए पोताना अभिप्रायना निवेदनरूप प्रश्न कर्यो एटले भगवान् कहे छे-'हन्ता गोयमा ! मन्नामीति ओहारणी भासा' हन्त-संप्रेषण, प्रत्यवधारण-स्वीकार अने विषादना अर्थमां छे अहीं प्रत्यवधारण अर्थमां जाणवो 'मन्नामि' इत्यादि क्रियापदोनो प्राकृत शैलिथी के छान्दस-सूत्रनी रचनाने लीधे युष्मद्-'तमे' ना

रिणी छे ? ए एक प्रश्न छे, अने [illegible] मन्नामीति ओघारिणी भाषा, [illegible] मन्नामीति ओघारिणी भाषा' अहीं 'अह' यथा—जे प्रकारे [illegible] मानो छो के भाषा अवधारिणी छे 'तह' तथा—ते प्रकारे हु मानु ? ए बीजो प्रश्न छे अने ते बन्नेना क्रमश उत्तरो आपवामां आव्या छे. टीकाकारे आ सूत्रनी व्याख्या करी छे तेने अनुसरी उपर मूळना अनुवादनो अर्थ आप्यो छे. ते सिवाय बीजी रीते पण [illegible] सूत्रनो अर्थ थइ शके छे अने ते [illegible] प्रकट होवाथी अहीं आपवामां आव्यो छे

आज्ञा करवी वगेरे जेनो विषय छे एवी भाषा असत्यामृषा कहेवाय छे. कह्युं छे के—

"सच्चा हिया सयामिह सन्तो मुणयो गुणा पयत्था वा। तव्विवरीया मोसा मीसा जा तदुभयसहावा ॥ अणहिगया तीसु वि सद्दो चिय केवलो असच्चमुसा।"

सत् एटले मुनिओ, गुणो, अने पदार्थोः सतने हितकारक ते सत्य. तेथी विपरीत ते मृषा. उभय स्वभाववाळी ते मिश्रित भाषा, त्रणेने विशे जेनो अधिकार नथी अने जे शब्दव्यवहाररूप होय ते असत्यामृषा भाषा कहेवाय छे. हवे भगवान् उत्तर कहे छे—गोयमा ! 'सिय सच्चा' इत्यादि. हे गौतम ! कदाच सत्य पण होय, कदाचित् असत्य होय, कदाचित् सत्यमृषा होय अने कदाचित् असत्यामृषा होय. अहीं आ संबन्धे प्रश्न करे छे—'से केणट्ठेणं भंते !' 'हे भगवन् एम शा हेतुथी कहो छो' ? इत्यादि पाठ सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! 'आराधनी सत्यभाषा छे.' अहीं विवादना विषयमां वस्तुनुं स्थापन करवानी बुद्धिथी जे सर्वज्ञना मतने अनुसरी बोलाय, जेमके आत्मा छे अने ते सत्, असत, नित्य, अनित्य आदि अनेक धर्मयुक्त छे-इत्यादि यथावस्थित वस्तुने कहेवावाळी 'आराध्यते मोक्षमार्गोऽनया' जेनाथी सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्गनुं आराधन थाय एवी आराधनी भाषा कहेवाय छे, अने आराधनी होवाथी ते सत्यभाषा कहेवाय छे. विराधनी-विराध्यते मुक्तिमार्गोऽनया-जे वडे मुक्तिमार्गनी विराधना थाय ते, एटले सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्गने प्रतिकूल होय ते मृषाभाषा कहेवाय छे. विवादना विषयमां वस्तुनुं स्थापन करवाना आशयथी सर्वज्ञना मतथी प्रतिकूलपणे जे बोलाय, जेमके 'आत्मा नथी, अथवा ते एकान्तनित्य छे'—इत्यादि ते असत्य भाषा छे, तथा सत्य छतां बीजाने पीडा उत्पन्न करनारी विपरीत वस्तुना कथनथी, परने पीडानो हेतु होवाथी, के मुक्तिमार्गनी विराधना करनार होवाथी विराधनी अने विराधकभाववाळी होवाथी मृषाभाषा कहेवाय छे. कोइ नगर के पत्तनने उद्देशी पांच बाळकोनो जन्म थयो होय त्यारे एम कहेवाय के अहीं दसनो जन्म थयो छे, ते स्थूलव्यवहारनयना मतथी आराधनी-विराधनी कहेवाय छे, कारण के पांच बाळकोनो जन्म थयो छे तेटले अंशे यथार्थपणानो संभव छे माटे आराधनी, 'दस पूरा नथी' एटला अंशे अयथार्थपणानो संभव होवाथी विराधनी, ए रीते आराधनी विराधनी होवाथी सत्यमृषा कहेवाय छे. जे तेनुं लक्षण नहि होवाथी आराधनी नथी, तेम विपरीत वस्तुना कथनना अभावथी

३ अह भंते! गाओ मिया पसू पक्खी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा? हंता गोयमा! जा य गाओ मिया पसू पक्खी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा।

३. हे भगवन्! गो-बळद, मृगो, पशुओ अने पक्षीओ' ए भाषा प्रज्ञापनी–अर्थनुं प्रतिपादन करनारी छे? आ भाषा मृषा–असत्य नथी? हे गौतम! अवश्य गो, मृगो, पशुओ अने पक्षीओ ए भाषा प्रज्ञापनी छे, आ भाषा असत्य नथी.

अने परपीडानो हेतु नही होवाथी विराधनी पण नथी, तेम अमुक अंशे सद्भाव–यथार्थपणाना अने विसंवाद–अयथार्थपणाना अभावथी आराधनी-विराधनी पण नथी वळी 'हे साधु प्रतिक्रमण करो, स्थंडिलनुं प्रत्युपेक्षण करो' इत्यादि व्यवहारसाधक आमन्त्रणी वगेरे भेदवाळी असत्यमृषा नामे चोथी भाषा छे 'ए हेतुथी हे गौतम! एम कहुं छुं, इत्यादि उपसंहार वाक्य छे

३ अहीं 'यथावस्थित वस्तुतत्त्वनुं प्रतिपादन करनारी भाषा आराधनी होवाथी सत्य छे' एम कह्युं, तेथी संशयने प्राप्त थयेला गौतम स्वामी संशय [illegible] करवा माटे पूछे छे–'अह भंते! गाओ मिया' इत्यादि हे भगवन्! गो-प्रसिद्ध छे, मृगो पण प्रसिद्ध छे, पशुओ-बकराओ, पक्षिओ पण प्रसिद्ध छे, ए भाषा 'प्रज्ञाप्यतेऽर्थोऽनया' इति जे वडे अर्थ जणाय ते प्रज्ञापनी–अर्थने प्रतिपादन करनारी यथार्थ भाषा छे? एटले प्ररूपणा करवा योग्य छे? आ भाषा सत्य छे? आ भाषा मृषा नथी? अहीं प्रश्ननो आ भावार्थ छे—'गो' वगेरे भाषा गोजातिनुं प्रतिपादन करे छे, अने जातिमां त्रणे लिंगवाळा अर्थो अभिधेय–कहेवा योग्य छे कारण के त्रणे लिंगनो जातिमां संभव छे ए प्रमाणे मृग, पशु अने पक्षी संबन्धे पण जाणवुं परन्तु आ शब्दो त्रणे लिंगना वाचक नथी, पण ते शब्दो पुंल्लिंग रूप अर्थना वाचक छे तेथी संशय थाय छे के आ भाषा केमके तेथी तेवा प्रकारनी प्रतीति थती नथी, प्रज्ञापनी–यथावस्थित अर्थनी प्रतिपादन करनारी छे के नहि? भगवान् उत्तर आपे छे–'हन्ता गोयमा'! इत्यादि 'हन्त' शब्द अवधारण अर्थमां छे 'गौतम' ए आमन्त्रण अर्थमां छे एटले हे गौतम! अवश्य 'गो'–इत्यादि भाषा प्रज्ञापनी छे तेना अर्थनुं कथन करवा माटे प्ररू-

४. अह भंते ! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा

४. हे भगवन् ! जे स्त्रीवाक्-स्त्रीलिंगवाची, पुंवाक्-पुरुषलिंगवाची, नपुंसकवाक्-नपुंसकलिंगवाची, ए भाषा प्रज्ञापनी छे?

पणा करवा योग्य छे, कारण के यथावस्थित अर्थनुं प्रतिपादन करनारी होवाथी सत्य छे. तोपण जातिनुं प्रतिपादन करनारी आ भाषा छे, अने जातिनो त्रणे लिंगनी साथे संबन्ध छे, माटे जातिना प्रतिपादन वडे यथासंभव त्रणे लिंगवाळा विशेष अर्थोनुं प्रतिपादन थाय छे. तेथी यथावस्थित अर्थना प्रतिपादनथी आ भाषा प्रज्ञापनी छे. वळी पण जे कहेवामां आव्युं के 'गो' वगेरे शब्दो पुंलिंग विशिष्ट अर्थना वाचक छे. तेना उत्तरमां शब्दमां लिंगनी व्यवस्था व्याकरण शास्त्रने आधीन छे. [1]"स्त्रीपुंनपुंसकसहोक्तौ परं" [2]"ग्राम्याशिशुद्विखुरसंघे स्त्री प्रायः" इत्यादि व्याकरणना नियम छे, तेथी कोइ शब्दमां व्याकरणना नियमथी स्त्रीलिंग, कोइमां पुंलिंग अने कोइमां नपुंसकलिंग थाय छे. वास्तविक रीते तो बधा जातिवाचक शब्द त्रणे लिंगरूप अर्थने ते ते देश, काळ अने प्रस्तावादिना सामर्थ्यथी कहे छे. माटे तेमां कोईपण प्रकारनो दोष नथी. आ भाषा अन्यने पीडा करनार नथी, तेमज छेतरवा वगेरे दुष्ट आशयथी कहेली नथी, माटे असत्य नथी, तेथी प्रज्ञापनी छे.

४. 'अह भंते जा य इत्थिवऊ' इत्यादि. 'अथ' प्रश्नना अर्थमां छे. 'भदन्त' ए संबोधनना अर्थमां छे. हे भगवन् ! स्त्रीवाक्-स्त्रीलिंग प्रतिपादन करनारी भाषा 'खट्वालता'-इत्यादि, पुरुषवाक्-घट, पट-इत्यादि पुंल्लिंगप्रतिपादक भाषा, नपुंसकवाक्-कुडय-भींत, कांड-इत्यादि नपुंसकलिंगनुं प्रतिपादन करनारी भाषा प्रज्ञापनी छे? आ भाषा असत्य नथी ? अहीं संशयनुं कारण ए छे के खट्वा

१. स्त्रीलिंग, पुंलिंग अने नपुंसकलिंगवाळा शब्दोनी सहोक्ति-साथे कथन होय त्यारे पर-नपुंसकलिंगवाची शब्द शेष रहे छे अने बीजानो लोप थाय छे.

२. ग्राम्य अने शिशुभिन्न बे खरीवाळा प्राणीओना समुदायनुं कथन होय त्यां स्त्रीवाची शब्द शेष रहे छे अने बीजानो लोप थाय छे.

मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थीवऊ, जा य पुमवऊ, जा य नपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ।

आ भाषा असत्य नथी ? हे गौतम ! स्त्रीलिंगवाचक, पुरुषलिंगवाचक अने नपुंसकलिंगवाचक आ भाषा प्रज्ञापनी–अर्थनुं प्रतिपादन करनारी छे, आ भाषा असत्य नथी.

पट अने पुरुष वगेरे शब्दो अनुक्रमे स्त्री, पुरुष अने नपुंसक लिंगना वाचक छे स्त्री, पुरुष अने नपुंसकोनुं आ लक्षण छे–'योनि, कोमळता, अस्थिरता, मुग्धपणुं, कायरपणुं, स्तनो अने पुरुषसमागमनी इच्छा, ए सात स्त्रीपणाना चिह्नो छे. पुरुषचिह्न, कठोरपणुं, दृढता, पराक्रम, दाढीमूछ, धृष्टता–निर्लज्जता, अने स्त्रीसमागमनी इच्छा–ए सात चिह्नो पुरुषपणाना छे स्तनादि अने दाढीमूछ–इत्यादि लक्षणनो सद्भाव अने अभाव सहित अने मोहाग्निवडे प्रज्वलित थयाने पंडितो नपुंसक कहे छे". तेमज बीजे स्थळे पण कह्युं छे के 'स्तन अने केशवाळी स्त्रीओ अने लोमश–रोमयुक्त पुरुष कह्यो छे ज्यां बन्ने लक्षणनो अन्तर–अवकाश होय ते नपुंसक कह्यो छे आवां स्त्री–इत्यादिनां लक्षणो घटादिमां जणाता नथी, ते आ प्रमाणे–जो तेना एक एक अवयवने जुदा करी सारी रीते तपास करीए तोपण तेओमां पूर्वोक्त स्त्री वगेरेनां लक्षण जणाता नथी तेथी आ भाषा प्रज्ञापनी छे के नहीं एवो संशय उत्पन्न थाय छे अने तेने दूर करवाने माटे पूछे छे अहीं भगवान् उत्तर आपे छे–'हन्ता गोयमा' ! हे गौतम ! अवश्य' इत्यादि अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो तेनो भावार्थ आ छे–अहीं शब्दनी प्रवृत्तिना विचारमां पूर्वोक्त स्त्री इत्यादिना लक्षणो स्त्रीलिंगादि शब्दनुं वाच्य नथी, परंतु 'इयम्, अयम्, अने इदम्' शब्दनी व्यवस्थाना कारणभूत पदार्थना धर्मो स्त्रीलिंगादि शब्द वाच्य छे अने ते गुरुना उपदेश अने परंपराथी जाणी शकाय छे आ कल्पना मात्र नथी, कारण के वास्तविक रीते ते ते शब्दना अभिधेयरूपे–अर्थरूपे ते अभिधेयधर्मोनुं परिणमन थाय छे अने ते शब्दोना अभिधेय धर्मो परमार्थथी तात्त्विकरूपे छे शाकटायन पण कहे छे–"अयमियमिदमिति

५. अह भंते! जा य इत्थिआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुंसगआणवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थिआणवणी, जा य पुमआणवणी, जा य नपुंसगआणवणी पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा।

५. हे भगवन्! जे स्त्रीआज्ञापनी, पुरुषआज्ञापनी अने नपुंसक आज्ञापनी भाषा ते प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? हा गौतम! जे स्त्रीआज्ञापनी, पुरुषआज्ञापनी अने नपुंसकआज्ञापनी भाषा प्रज्ञापनी छे, अने ए भाषा असत्य नथी.

शब्दव्यवस्थाहेतुरभिधेयधर्म उपदेशगम्यः स्त्रीपुंनपुंसकत्वानि" इति—अयम्, इयम् अने इदम् ए शब्दनी व्यवस्थानुं कारण उपदेशगम्य पदार्थनो धर्म ते स्त्रीलिंग, पुंलिंग अने नपुंसकलिंग छे." आ बाबत सविस्तरपणे स्वोपज्ञ शब्दानुशासनना विवरणमां अमे प्रतिपादन करेली छे. तेथी शाब्दिक व्यवहारनी अपेक्षाए यथावस्थित अर्थनुं प्रतिपादन करवाथी आ भाषा प्रज्ञापनी छे. वळी तेनी उत्पत्ति दुष्ट विवक्षाथी थयेली नहि होवाथी तेमज अन्यनी पीडानुं कारण नहीं होवाथी ते असत्य नथी.

५. 'अह भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! जे स्त्रीआज्ञापनी 'आज्ञाप्यते-आज्ञासंपादने प्रयुज्यते अनया सा आज्ञापनी'-स्त्रीने आज्ञा करनारी, पुमाज्ञापनी—पुरुषने आज्ञा करनारी अने नपुंसकाज्ञापनी—नपुंसकने आज्ञा करनारी आ भाषा प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? अहीं संशयनुं कारण आ छे-प्रज्ञापनी सत्यभाषा छे अने आ भाषा आज्ञा संपादननी क्रियामां युक्त स्त्री वगेरेने कहेनारी छे. आज्ञा करायेल स्त्री वगेरे ते प्रकारे करे अथवा न करे, तेथी संशयने प्राप्त थयेला गौतम स्वामी निश्चयने माटे पूछे छे—अहीं भगवान् उत्तर आपे छे-'हन्ता गोयमा'! हा गौतम इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे—आज्ञापनी भाषा बे प्रकारे छे—एक परलोकनो बाध नहीं करनारी अने बीजी परलोकनो बाध करनारी तेमां स्व अने परना उपर उपकारनी बुद्धिथी कपट सिवाय पारलौकिक फळना साधन माटे स्वीकारेला वैदिक आलंबनना प्रयोजनवाळी, विवक्षित कार्यने सिद्ध करवाना सामर्थ्य

६. अह भंते ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जा य इत्थिपण्णवणी, जा य पुमपण्णवणी, जा य नपुंसगपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।

६. हे भगवन् ! जे स्त्रीप्रज्ञापनी, पुरुषप्रज्ञापनी अने नपुंसकप्रज्ञापनी भाषा ते प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? हा गौतम ! जे स्त्रीप्रज्ञापनी, पुरुषप्रज्ञापनी अने नपुंसकप्रज्ञापनी भाषा छे ते प्रज्ञापनी छे, आ भाषा असत्य नथी.

गुरु विनीत स्त्री वगेरे शिष्य वर्गने प्रेरणा करनारी आज्ञापनी भाषा परलोकनो बाध करनारी होती नथी, माटे भाषा साधुने प्रज्ञापनी-प्रत्यया लायक छे कारण के तेथी परलोकनो बाध थतो नथी बीजी भाषा तेनाथी उलटी छे अने ते स्वपरने सफ्लेश उत्पन्न करनार होवाथी असत्य भाषा छे कह्यु छे के-'अविनीतने आज्ञा करनार क्लेश पामे छे, अने ते मृषा बोले छे कारण के घटना लोकाने जाणीने तेनी कट-सादडी करवामां कोण प्रवृत्ति करे' ! किया द्रव्यने—योग्य वस्तुने संस्कारयुक्त करे छे, पण अद्रव्यने—अयोग्य वस्तुने करती नथी ए अभिप्राय छे

६ 'अह भंते ! जा य इत्थिपण्णवणी' इत्यादि हे भगवन् ! जे 'स्त्रीप्रज्ञापनी' योनि, कोमळता, अस्थिरता, मुग्धता-इत्यादि स्त्रीना लक्षणने जणावनारी छे, जे 'पुरुषप्रज्ञापनी'—'पुरुषचिह्न, कठोरता, दृढता'—इत्यादिरूप पुरुषना लक्षणने जणावनारी छे अने जे 'नपुंसकप्रज्ञापनी'—'स्तनादि अने दाढी मूछ वगेरेना सद्भाव अने अभावयुक्त' इत्यादिरूप नपुंसकना लक्षणने जणावनारी छे, आ भाषा प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? अहीं प्रश्ननो ए अभिप्राय छे के स्त्रीलिंगादि शब्दो शाब्दिक व्यवहारना बळथी स्त्री वगेरेना लक्षणरहित अन्य अर्थमा बीजे पण प्रवृत्ति करे छे जेमके खट्वा, घट, कुड्य वगेरे खट्वादि अर्थमां प्रवर्ते छे, परंतु तेमां पूर्वोक्त स्त्री वगेरेनां लक्षणो नथी, ए संबंधे पूर्वे कह्यु छे माटे अव्यापक होवाथी 'स्त्री वगेरेना लक्षणने जणावनारी भाषा न कहेवी जोइए के

७. अह भंते ! जा जायीति इत्थिवऊ, जातीइ पुमवऊ, जातीति णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! जातीति इत्थिवऊ, जाईति पुमवऊ, जातीति णपुंसगवऊ पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ।

७. हे भगवन् ! जे जातिमां स्त्रीवाक्–स्त्रीलिंगवाचक भाषा, जातिमां पुरुषवाक्–पुलिंगवाचक भाषा अने जातिमां नपुंसकवाक्–नपुंसकलिंगवाचक भाषा, ए भाषा प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? हा गौतम ! अवश्य जातिमां स्त्रीवाक्–स्त्रीलिंगवाची, जातिमां पुंवाक्–पुल्लिंगवाची अने जातिमां नपुंसकवाक्–नपुंसकलिंगवाची ए भाषा प्रज्ञापनी छे. आ भाषा असत्य नथी.

कहेवी जोइए' ? आ प्रमाणे संशयने प्राप्त थयेला गौतम स्वामी पूछे छे. अहीं भगवान् उत्तर आपे छे—'हंता गोयमा ! हे गौतम ! अवश्य-इत्यादि अक्षरार्थ प्रसिद्ध छे. तेनो भावार्थ आ छे—अहीं स्त्री वगेरेनां लक्षण बे प्रकारनां छे-शाब्दिक व्यवहारगत अने शास्त्रगत. तेमां ज्यारे शाब्दिक व्यवहारने अनुसरी प्रतिपादन करवुं इष्ट होय त्यारे अव्यापक होवाथी शास्त्रगत स्त्री वगेरेना लक्षण ए प्रमाणे न कहेवां जोइए, ते लक्षणोनी अव्यापकता ते प्रकारे पूर्वे लेशथी बतावेली छे. विस्तारथी स्वोपज्ञशब्दानुशासनना विवरणथी जाणवुं. माटे आ भाषा, शाब्दिक व्यवहारने आश्रयी प्रज्ञापनी छे. ज्यारे शास्त्रने अनुसरी स्त्री वगेरेनुं लक्षण प्रतिपादन करवानुं होय त्यारे यथावस्थित अर्थना कथनथी आ भाषा प्रज्ञापनीज छे, असत्य नथी.

७. 'अह भंते ! जा जातीति इत्थिवऊ' इत्यादि. हे भगवन् ! जातौ स्त्रीवाग् एटले जातिमां स्त्रीलिंगवाची वचन, जेमके 'सत्ता,' सत्ता जाति छे अने ते स्त्रीलिंगविशिष्ट छे. जातिमां पुंवाक्-पुरुषवचन, जेमके भाव, भाव ए जातिवाचक छे अने पुल्लिंग छे. अने जातिमां नपुंसकवाक्–नपुंसकवचन, जेमके सामान्य, सामान्य ए जातिवाचक छे अने नपुंसकलिंग छे. ए भाषा प्रज्ञापनी छे? आ भाषा असत्य नथी? अहीं

८. अह भंते ! जा जातीइ इत्थियाणमणी,जाइत्ति पुमआणवणी, जातीनि णपुंसगाणमणी पण्णवणी णं एसा

८. हे भगवन्! जे जातिरूपे स्त्रीआज्ञापनी, जातिरूपे पुरुषआज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकआज्ञापनी, ए भाषा प्रज्ञापनी छे?

प्रश्ननो ए अभिप्राय छे के जाति ए सामान्य कहेवाय छे अने सामान्यनी साथे लिंग अने संख्यानो संबन्ध नथी द्रव्यनोज लिंग अने संख्यानी साथे संबन्ध अन्य तीर्थिकोए स्वीकारेलो छे (कारण के 'लिङ्गसंख्यान्वितं द्रव्यम्'-लिंग अने संख्याना संबन्धवाळु द्रव्य होय छे) जो जातिमां लिंग अने संख्यानो योग मानीए तो पण औत्सर्गिक एकवचन अने नपुंसकलिंग घटे, पण अन्य लिंगनो संबंध घटी शके नहीं अने जातिमां [सत्ता, भाव, सामान्य वगेरे] अन्ये लिंगना वाचक शब्दो वपराय छे ए इत्यनांज कारण छे, तेथी संशय थाय छे के जातिमां स्त्रीलिंगवाचक, पुलिंगवाचक अने नपुंसकलिंगवाचक भाषा प्रज्ञापनी छे के नहीं? हवे भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा'। हा गौतम! इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे तेनो भावार्थ आ छे—जाति एटले सामान्य, अने ते सामान्य बीजाए कल्पेलु एक, अवयव रहित अने निष्क्रिय नथी, कारण के ते प्रमाणवडे बाधित छे, अने ते प्रमाणनो बाधानो विचार जे प्रकारे छे ते प्रकारे तत्त्वार्थटीकामां अमे करेलो छे, माटे त्यांथी जाणी लेवो परंतु सामानपरिणामरूप सामान्य छे, कारण के 'वस्तुओज जे समान परिणाम तेज सामान्य' एवु शास्त्रनु कथन छे, सामान परिणाम अनेक धर्मरूप छे अने धर्मोनो अने धर्मीनो परस्पर अभेद संबन्ध छे कारण के तेवा प्रकारे प्रमाणवडे जणाय छे माटे जातिनो पण अन्य लिंगनी साथे संबन्ध घटे छे, तेथी आ भाषा प्रज्ञापनी छे आ भाषा असत्य नथी

८ 'अथ भदन्त! 'जाती स्त्र्याज्ञापनी' हे भगवन्' जातिने उद्देशीने स्त्रीने आज्ञा करनारी भाषा, जेमके 'अमुक ब्राह्मणी ए क्षत्रियाणी एम करे' एवी रीते जातिने आश्रयी पुरुषने आज्ञा करनारी के नपुंसकने आज्ञा करनारी आ भाषा प्रज्ञापनी छे? आ भाषा असत्य नथी? अहीं पण आ संशयनु कारण छे—आज्ञापनी एटले आज्ञासंपादन करवानी क्रियामां युक्त स्त्री वगेरेने प्रेरणा करनारी, भाषा

भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! जातीति इत्थिआणमणी, जातीति पुमआणवणी, जातीति णपुंसगाणमणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।

९. अह भंते ! जातीति इत्थिपण्णवणी, जातीति पुमपण्णवणी, जातीति णपुंसगपण्णवणी, पण्णवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! जातीति इत्थिपण्णवणी, जाईति पुमपण्णवणी, जाईति णपुंस-

---

आ भापा असत्य नथी ? हे गौतम ! अवश्य जातिरूपे स्त्रीआज्ञापनी, जातिरूपे पुरुपआज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकाज्ञापनी ए भापा प्रज्ञापनी छे, आ भापा असत्य नथी.

९. हे भगवन् ! जातिरूपे स्त्रीप्रज्ञापनी–स्त्रीना लक्षणनुं प्रतिपादन करनारी, जातिरूपे पुरुपप्रज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकप्रज्ञापनी,

---

करायेल स्त्री वगेरे ते प्रमाणे करे के नहीं ? ए संशय छे, तो आ भापा प्रज्ञापनी छे के अन्य छे ? अहीं भगवान् उत्तर आपे छे– 'हन्ता गोयमा' ! हा गौतम !–इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे. तेनो भावार्थ आ छे–परलोकनो बाध नहीं करनारी आज्ञापनी भापा ते कहेवाय के जे स्व अने परना उपकारनी बुद्धिथी विवक्षित कार्यने करवाना सामर्थ्यवाळा विनीत स्त्री वगेरे शिष्यगणने प्रेरणा करनारी होय. जेमके 'अमुक ब्राह्मणी के साध्वी आजे शुभ नक्षत्र छे तेथी अमुक अंग के श्रुतस्कंधनो पाठ करे'–इत्यादि प्रज्ञापनी छे, केमके ते निर्दोष छे. तेथी अन्य भापा स्व अने परने पीडाजनक होवाथी असत्य छे अने तेथी ते अप्रज्ञापनी छे.

९. 'अथ भदन्त ! या जातिस्त्रीप्रज्ञापनी' हे भगवन् ! जे जातिने आश्रयी स्त्रीनां लक्षणने प्रतिपादन करनारी, जेमके स्त्री स्वभावथी तुच्छ, बहुअभिमानवाळी, चपळ इन्द्रियवाळी अने धीरज वडे दुर्बळ होय छे. कह्युं छे के–'तुच्छा गारवबहुला चलिंदिया दुब्बला य धीईए' । जे जातिने आश्रयी 'पुंप्रज्ञापनी' पुरुपनां लक्षणने प्रतिपादन करनारी, जेमके ' पुरुप स्वभावथी गंभीरआशयवाळो

गपण्णवणी पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा।

१०. अह भंते! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति बुयमाणा–अहमेसे बुयामीति? गोयमा! नो इणट्ठे

ए भाषा प्रज्ञापनी छे? आ भाषा असत्य नथी? हे गौतम! अवश्य जातिरूपे स्त्रीप्रज्ञापनी, जातिरूपे पुरुषप्रज्ञापनी अने जातिरूपे नपुसकप्रज्ञापनी ए भाषा प्रज्ञापनी छे, आ भाषा असत्य नथी.

१०. हे भगवन्! मंदकुमार (अत्यन्त नानो बाळक) के मंदकुमारीका (अत्यन्त नानी बालिका) बोलती एम जाणे के, 'हु आ

होय छे, मोटी आपत्तिमां पण कायर थतो नथी' इत्यादि, अने जे जातिने आश्रयी 'नपुसकप्रज्ञापनी'–नपुसकना स्वरूपने जणावनारी, जेम के 'नपुसक स्वभावथकी कायर होय छे अने प्रबळ मोहाग्निनी ज्वाळाना समूह वडे प्रज्वलित थयेलो होय छे'–इत्यादि, आ भाषा प्रज्ञापनी छे? आ भाषा असत्य नथी? अहीं पण आ सघळु कारण छे–स्त्री वगेरे जातिना गुणो एवा प्रकारना छे, परंतु क्वाइक कदाचित् व्यभिचार–नियमनो अभाव पण देखाय छे एटले केटलीपक व्यक्तिओमा एवा प्रकारना गुणो देखाता नथी जेमके कोइ कोइ स्त्री पण गंभीर आशयवाळी अने धैर्यवडे अत्यन्त बळवाळी होय छे, कोइ पुरुष पण तुच्छ प्रकृतिवाळो देखाय छे अने थोडी आपत्तिमा पण कायर थाय छे कोइक नपुसक पण अल्पमोहाग्निवाळो अने दृढसत्त्ववाळो होय छे तेथी संशय थाय छे के आ भाषा प्रज्ञापनी छे के नहीं? अहीं भगवान् कहे छे—'हा, गौतम'! इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे, परंतु भावार्थ आ छे–अहीं जातिना गुणनी प्ररूपणा बहुलताने आश्रयी छे, परंतु बधी व्यक्तिनी अपेक्षाए नथी. माटे ज जातिना गुणोनी प्ररूपणा करनार निर्मळबुद्धिवाळा प्राय शब्दनो उच्चार करे छे के 'आ हकीकत प्रायः समजवी' ज्या पण प्राय शब्दनु कथन नथी, त्या पण प्रसंगथी जाणी लेवु, तेथी क्वाइक अने कदाचित् जातिना गुणोनो व्यभिचार (अनियतपणु) होय तो पण दोषना अभावथी आ भाषा प्रज्ञापनी जाणवी, पण असत्य न समजवी

समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो। अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ आहारं आहारेमाणे-अहमेसे आहारमाहारेमित्ति ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो। अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति-अयं मे अम्मापियरो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो। अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति-अयं मे अतिराउलो अयं मे अइराउलेत्ति ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ स-

बोलुं छुं' ? हे गौतम ! संज्ञी-विशिष्टमनवाळा सिवाय अन्यत्र ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नथी. अर्थात् संज्ञी-विशिष्टमनवाळा सिवाय अन्य मन्दकुमार के मन्दकुमारिका एम जाणता नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के मन्दकुमारीका आहार करता जाणे के, 'हुं आ आहार करुं छुं' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के मन्दकुमारीका जाणे के 'आ मारा मातापिता छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के मन्दकुमारीका एम जाणे के,

१०-११. अहीं भाषा सम्यग् उपयोगवाळानी अने ते सिवाय बीजानी एम बे प्रकारनी छे. तेमां जे पूर्वापरनो विचार करवामां कुशल आत्मा श्रुतज्ञान वडे अर्थनो विचार करीने बोले छे ते सम्यग् उपयोगवाळो छे. ते एम जाणे छे के 'हुं आ बोलुं छुं' अने जे करण-मन अने इन्द्रियना सामर्थ्यरहित होवाथी के वातादि दोषथी उपघात थयेला चैतन्यवाळो होवाथी पूर्वापरना अनुसंधान-संबन्धरहित जेम तेम मन वडे विकल्प करी करीने बोले छे ते सम्यग् उपयोगरहित छे. ते एम नथी जाणतो के 'हुं आ बोलुं छुं', अने बालको वगेरे पण बोले छे, तेथी संशय थाय छे के 'अमे आ बोलीए छीए' एम एओ जाणे छे के जाणता नथी, तेथी पूछे छे-'अह भंते ! मन्दकुमार ए वा'-इत्यादि. हे भगवन् ! मन्दकुमार-चत्तो सूइ रहेनार बाळक, मन्दकुमारीका-चत्ती सूइ रहेनारी बाळिका बोलतो-भाषा योग्य पुद्गलोने ग्रहण करी भाषापणे परिणमावीने छोडी देतो-एम जाणे के 'हुं आ बोलुं छुं' ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! ए अर्थ

पिण्णो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति–अयं मे अहिवारए,अयं मे अहिवारएत्ति ? गो-
यमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ।

११. अह भंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणति बुयमाणे–अहमेसे बुयामि ? गोयमा ! णो इणट्ठे
समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति आहार आहारेमाणो–अहमेसे आहारेमि ? गो-

'आ मारा स्वामिनुं गृह छे, आ मारा स्वामीनुं गृह छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के
मन्दकुमारीका ए जाणे के, 'आ मारा स्वामिनो पुत्र छे, आ मारा स्वामिनो पुत्र छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए
अर्थ समर्थ–यथार्थ नथी.

११. हे भगवन् ! ऊंट, बळद, गधेडो, घोडो, बकरो अने घेटो बोलतो एम जाणे के 'हुं बोलुं छुं' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय
समर्थ-युक्त नथी, जो के ते बालक अथवा बालिका मनपर्याप्ति वडे पर्याप्त छे तोपण हजु सुधी तेनुं मनरूप करण असमर्थ छे, अने
मन करण असमर्थ होवाथी तेनो क्षयोपशम पण मन्द होय छे कारण के श्रुतज्ञानावरण कर्मनो क्षयोपशम प्रायः मन करणना सामर्थ्यने
आश्रयी उत्पन्न थाय छे, केमके तेवा प्रकारे लोकमां देखाय छे. तेथी मन्दकुमार के मन्दकुमारिका बोलती एम नथी जाणती के 'हुं आ
बोलुं छुं' एम यथार्थ जाणता नथी ? ए प्रश्नना उत्तरमां भगवान् कहे छे–'णण्णत्थ सण्णिणो' संज्ञीथी अन्यत्र, संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ
समर्थ नथी अहीं 'अन्यत्र' शब्द परिवर्जनना अर्थमां छे बीजे स्थळे पण परिवर्जनार्थक अन्यत्र शब्द जणाय छे जेमके–"अन्यत्र द्रोण
भीष्माभ्यां सर्वे योधाः पराङ्मुखाः" इति द्रोण अने भीष्मने वर्जीने बधा योद्धाओ पराङ्मुख थया–ए तेनो अर्थ छे संज्ञी–अवधिज्ञानी
जातिस्मरणयुक्त के सामान्य रीते विशिष्ट मनना सामर्थ्यवाळो, ते सिवाय बीजो जाणतो नथी. परंतु उपर कहेला स्वरूपवाळो संज्ञी

यमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जाव णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणति-अयं मे अम्मापियरो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जाव णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति-अयं मे अतिराउलेत्ति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जाव णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति-अयं मे भट्टिदारए २ ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जाव णण्णत्थ सण्णिणो ।

१२. अह भंते ! मणुस्से महिसे आसे हत्थी सीहे वग्घे विगे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे सियाले विराले

बीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट यावत् घेटो आहार करतो एम जाणे के, 'हुं आहार करुं छुं' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट, बळद, गधेडो, घोडो, बकरो अने घेटो एम जाणे के, 'आ मारा मातापिता छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट यावत् घेटो एम जाणे के, 'आ मारा स्वामिनुं घर छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट यावत् घेटो एम जाणे के, आ मारा स्वामिनो पुत्र छे' २? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय बीजे ए अर्थ समर्थ नथी.

१२. हे भगवन् ! मनुष्य, महिष-पाडो, अश्व, हस्ती, सिंह, वाघ, वृक-नाहार, दीपडो, रींछ, तरक्ष, परस्पर-गडो, शियाळ, विलाडो

जाणे छे. ए प्रमाणे आहारादि संबन्धी चारे सूत्रोनो विचार करवो. परंतु 'अतिराउल' ए देशीपद छे अने स्वामीना घरवाची छे. 'भर्तृदारकः' भर्ता-स्वामी, तेनो दार-पुत्र ते भर्तृदारक कहेवाय छे. ए प्रमाणे उंट वगेरे संबन्धे पण पांच सूत्रो जाणवां. परंतु उंट वगेरे पण अत्यन्त बाल्य अवस्थावाळा लेवा, पण मोटी उंमरना न लेवा. कारण के मोटी अवस्थामां तेओने पूर्वोक्त ज्ञाननो संभव छे.

सुणए कोलसुणए कोल्कंतिए ससए चित्तए चिल्ललए जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा एगवऊ? हंता गोयमा! मणुस्से जाव चिल्ललए, जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा एगवऊ। अह भंते! मणुस्सा जाव चिल्ललगा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा बहुवऊ? हंता गोयमा! मणुस्सा जाव चिल्ललगा सव्वा सा बहुवऊ।

कूतरो, शिकारी कूतरो, कोकंतिक-लोंकडी, ससलो, चित्तो, चिल्ललक, अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना ते बधा एकवचन छे? हे गौतम! अवश्य मनुष्य यावत् चिल्ललक अने ते सिवायना तेवा प्रकारना ते बधा एकवचन छे. हे भगवन्! मनुष्यो यावत् चिल्ललको अने ते सिवाय तेवा प्रकारना बीजा बधा बहुवचन छे? हे गौतम! अवश्य मनुष्यो, यावत् चिल्ललको अने ते सिवाय तेवा प्रकारना बधा बहुवचन छे.

१२ हवे एक वचनादि भाषा संबन्धी संशय दूर करवाने माटे पूछे छे—'अह भंते' इत्यादि. हे भगवन्! मनुष्य, महिष, अश्व, हस्ती, सिंह, वाघ अने वृक-नाहर ए प्रसिद्ध छे. दीपडो ए एक जातनो चित्तो छे. ऋक्ष-रींछ, तरक्ष-एक वाघनी जात, परस्सर-गेंडो, शृगाल-शीयाळ, बिलाडो, शुनक-कुतरो, कोलशुनक-शीकार करवामां कुशळ कुतरो, शशक-ससलो प्रसिद्ध छे, 'कोकंतिका' लोंकडी, चित्रक-प्रसिद्ध छे अने चिल्ललक ए अरण्यनो पशु विशेष छे, 'जे यावन्ने तहप्पगारा' इति ते सिवाय बीजा बधा तेवा प्रकारना एकवचनान्त शब्दो ते 'एकवाऊ' एकवचनप्रतिपादक भाषा छे? अहीं प्रश्ननो आ अभिप्राय छे—धर्मो अने धर्मीना समुदायरूप वस्तु छे, प्रत्येक वस्तुमां अनन्ता धर्मो छे, 'मनुष्य' इत्यादि कथनमां धर्म अने धर्मीना समुदायरूप संपूर्ण वस्तु प्रतीयमान थाय छे. कारण के तेवा प्रकारनो व्यवहार देखाय छे. एक अर्थमां एकवचन अने बहु अर्थमां बहुवचन आवे छे. अहीं घणा धर्मो अभिधेय-कहेवा योग्य छे, तेथी एकवचन केम घटी शके? अने लोकमां एक वचन वडे पण व्यवहार थाय छे. माटे पूछे छे के आ बधी एकवचन प्रतिपा-

द्क भाषा छे ? काकु-प्रश्नार्थक ध्वनि वडे आ सूत्र पाठ कहेवो, तेथी प्रश्नार्थनो ख्याल आवे छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! अवश्य आ वधी एकवचन प्रतिपादक भाषा छे-इत्यादि. अक्षरार्थ सुगम छे. भावार्थ आ छे-शब्दनी प्रवृत्ति विवक्षाने आधीन छे अने ते वक्तानी विवक्षा प्रयोजनना वशथी कोइ स्थळे, कोइ समये कथंचित् भिन्न भिन्न होवाथी अनियत होय छे. जेम के ते एकज पुरुष 'आ मारो पिता छे' एम पुत्र वडे विवक्षित होय त्यारे ते पिता कहेवाय छे. अने ज्यारे तेज पुरुष 'मने आ भणावे छे' एम ते पुत्रवडे ज विवक्षित होय त्यारे 'उपाध्याय' कहेवाय छे. तेमां ज्यारे धर्मोने गौण करी धर्मीनी प्रधानपणे विवक्षा कराय त्यारे धर्मी एक होवाथी एक वचन थाय छे अने धर्मो धर्मीनी अंतर्गत होवाथी संपूर्ण वस्तुनी प्रतीति थाय छे. जेम के 'तुं छे'. ज्यारे धर्मीने गौण करी पांडित्य, परोपकारीपणुं, महादाननुं दातापणुं वगेरे धर्मोनी प्रधानपणे विवक्षा कराय छे त्यारे धर्मो घणा होवाथी एक: व्यक्तिमां पण बहुवचन घटे छे. जेम के 'तमे छो.' तेथी अहीं पण मनुष्य इत्यादिना कथनमां धर्मोने गौण करी, धर्मीनी प्रधानपणे विवक्षा करी छे. माटे आ प्रकारनी वधी वाणी एकवचनप्रतिपादक छे. 'अह भंते मणुस्सा' इत्यादि सूत्रनो अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो. अहीं पण संशयनुं कारण आ छे-मनुष्यादि शब्दो जातिवाचक छे, अने जाति सामान्यरूप होवाथी एक छे. कारण के "एकं नित्यं निरवयवमक्रियं सर्वगं च सामान्यम्" एक, नित्य, अवयवरहित, निष्क्रिय अने सर्वव्यापक सामान्य छे-एकवचन छे, तेथी अहीं बहुवचन शी रीते घटे ? अने बहुवचन वडे पण व्यवहार जणाय छे, माटे प्रश्न करे छे के-आ वधी बहुवचनप्रतिपादक भाषा छे ? अहीं प्रश्नार्थक ध्वनि वडे सूत्रनो पाठ कहेवाथी प्रश्नार्थनो ख्याल आवे छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा' इत्यादि. हे गौतम ! अवश्य आ वधी बहुवचनप्रतिपादक भाषा छे. सूत्रनो अक्षरार्थ सुगम छे. तेनो भावार्थ आ छे-यद्यपि ए बधा जातिवाचक शब्दो छे तो पण जाति ए समानपरिणामरूप छे अने समान परिणाम असमान-विशेष परिणाम सिवाय होतो नथी, जो एम न होय तो वस्तुमां एकत्वना प्रसंगथी समानपणुं घटी न शके. तात्पर्य ए छे के वस्तुमां असमान परिणाम सिवाय केवळ समान परिणाम होय तो ते एक होवाथी समानपणुं घटी शकतो नहि. तेथी ज्यारे असमान परिणामथी अभिन्न एवा समान परिणामनी प्रधानपणे विवक्षा कराय त्यारे असमान परिणाम दरेक व्यक्तिमां भिन्न होवाथी तेने कहेवामां बहुवचन घटी शके छे.

१३. अह भंते ! मणुस्सी महिसी वलवा हत्थिणिया सीही वग्घी विगी दीविया अच्छी तरच्छी परस्सरा रासभी सियाली विराली सुणिया कोलसुणिया कोक्कंतिया ससिया चित्तिया चिल्ललिया जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा इत्थियऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सी जाव चिल्ललिगा जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा इत्थियऊ। अह

१२. हे भगवन् ! मानुषी–मनुष्यनी स्त्री, महिषी–भेंस, वडवा–घोडी, हाथणी, सिंहण, वाघण, नाहरी, दीपडी, रींछण, तरक्षी, गेंडी, गधेडी, शियाळी, बिलाडी, कुतरी, शिकारी कुतरी, कोकंतिका–लोंकडी, ससली, चीत्री, चिल्ललिका अने ते सिवायना बीजा तेवा प्रकारना होय ते बधा स्त्रीवाची छे ? हे गौतम ! अवश्य मानुषी यावत्–चिल्ललिका अने ते सिवाय बीजा तेवा प्रकारना ते बधा

जेम के घडाओ, परन्तु ज्यारे तेज समान परिणामनी प्रधानपणे विवक्षा कराय अने बीजो असमान परिणाम गौण होय त्यारे यथेच्छ समान परिणाम एक होवाथी तेना कथनमां एकवचन घटी शके छे जेम के सर्वे घड पहोळा तळीयां अने उदरादि आकारवाळो होय छे अहीं पण 'मनुष्याः' मनुष्यो इत्यादिना कथनमां असमान परिणामथी अभिन्न समान परिणाम प्रधानपणे विवक्षित छे अने ते अनेक होवाथी तेमां बहुवचन घटे छे

११ 'अह भंते ! मणुस्सी' इत्यादि मानुषी इत्यादि प्रश्नमां अभिप्राय आ छे—सर्वे वस्तु त्रण लिंगवाळी छे जेमके आ माटीनुं छे, तेथी पुलिंग छे आ माटीनी परिणति (परिणाम) छे के आ घटाकारवाळी परिणति (परिणाम) छे, तेथी स्त्रीलिंग छे, आ वस्तु छे तेथी नपुंसकलिंग छे, ए प्रमाणे अनेकरूपे रहेली वस्तुमां एकलिंगवाचक शब्द तेनो प्रतिपादक शी रीते होय ? नरसिंहना सिद्धान्त के मतानुसार तेनो प्रतिपादक होतो नथी, अने लोकमां एक लिंगना प्रतिपादकपणा वडे शब्दनो व्यवहार थाय छे, तेथी पूछे छे के–'सव्वा सा इत्थियऊ' एवा प्रकारनी बधी 'स्त्रीवाक्'–स्त्रीलिंगविशिष्ट अर्थनुं प्रतिपादन करनारी भाषा छे ? वाघुयडे

भंते ! मणुस्से जाव चिल्ललए जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा पुमवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्से महिसे जाव चिल्ललए जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा पुमवऊ। अह भंते ! कंसं कंसोयं परिमंडलं सेलं थूभं जालं थालं तारं रूवं अच्छिपव्वं कुंडं पउमं दुद्धं दहिं णवणीतं असणं सयणं भवणं विमाणं छत्तं चामरं भिंगारं अंगणं णिरं-

स्त्रीवाची छे. हे भगवन् ! मनुष्य यावत् चिल्ललक अने ते सिवाय तेवा प्रकारना वीजा वधा पुरुषवाची छे ? हे गौतम ! अवश्य मनुष्य, महिष, यावत् चिल्ललक अने ते सिवायना तेवा प्रकारना बीजा वधा पुरुषवाची छे. हे भगवन् कंस, कंसोय, परिमंडल, शैल, स्तूप, जाल, स्थाल, तार, रूप, अक्षिपर्व, कुंड, पद्म, दूध, दहिं, नवनीत, अशन, शयन, भवन, विमान, छत्र, चामर, भृङ्गार, कलश, अंगण–आंगणु, निरंगण, आभरण, रत्न अने ते सिवायना तेवा प्रकारना वीजा वधा नपुंसकवाची छे ? हे गौतम ! अवश्य

(प्रश्नार्थक ध्वनिवडे) सूत्रनो पाठ कहेवाथी प्रश्नार्थनो ख्याल आवे छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा'! इत्यादि. हा गौतम ! ते वधा स्त्रीलिंगवाची छे. अक्षरार्थ सुगम छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे-यद्यपि विचित्र स्वरूपवाळी (अनेक लिंगात्मक) वस्तु छे. तोपण आ शाब्दिक न्याय छे—जे धर्म वडे विशिष्ट वस्तुनुं प्रतिपादन करवुं इष्ट होय ते धर्मने प्रधान करीने अने बीजा धर्मोने गौण करीने ते धर्म विशिष्ट धर्मीनुं प्रतिपादन करे छे. जेमके एक व्यक्तिमां पुरुषत्व,शास्त्रज्ञत्व, दातृत्व, भोक्तृत्व, पितृत्व अने अध्यापकत्व धर्म एक साथे रहेलो छे, तोपण पुत्र ते व्यक्तिने आवती जोइने 'पिता आवे छे' एम कहे छे, शिष्य 'उपाध्याय आवे छे' एम कहे छे. ए प्रमाणे अहीं पण जो के मानुषी वगेरे सर्व वस्तु त्रिलिंगरूप छे. तोपण योनि, मृदुत्व अने अस्थिरतादिरूप स्त्रीपणुं प्रतिपादन करवुं इष्ट होवाथी तेने प्रधान करी अने वाकीना वीजा धर्मोने गौण करीने ते स्त्रीत्व धर्म विशिष्ट धर्मीनुं प्रतिपादन करे छे, माटे ते वधी स्त्रीवाक्–स्त्रीलिंगविशिष्ट अर्थनी वाचक छे. ए प्रमाणे पुंवाक्–पुंलिंगविशिष्ट अर्थनी वाचक, अने नपुंसकलिंगवाक्–नपुंसकलिंगविशिष्ट अर्थनी

गणं आभरणं रयणं जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वं तं णपुंसगवऊ? हंता गोयमा! कंसं जाव रयणं जे यावन्ने तहप्पगारा तं सव्व णपुंसगवऊ।

१४. अह भंते! पुढवी इत्थिवऊ आउत्ति पुमवऊ धण्णत्ति नपुंसगवऊ पन्नवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा? हंता गोयमा! पुढविति इत्थिवऊ आउत्ति पुमवऊ धण्णत्ति नपुंसगवऊ पण्णवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा। अह भंते! पुढवित्ति इत्थिआणमणी, आउत्ति पुमआणमणी, धण्णेत्ति नपुंसगाणमणी पण्ण-

---

कंस यावत् रत्न अने ते सिवायना तेवा प्रकारना बीजा पण ते सर्वे नपुंसकवाची छे.

१४ हे भगवन्! पृथिवी स्त्रीवाची, आऊ (अप्-पाणी) पुरुषवाची अने धान्य नपुंसकवाची ए भाषा प्रज्ञापनी छे? ए भाषा मृषा नथी? हे गौतम! अवश्य पृथ्वी स्त्रीवाची, आऊ (अप्) पुरुषवाची अने धान्य ए नपुंसकवाची ए भाषा प्रज्ञापनी छे. ए भाषा मृषा नथी. हे भगवन्! पृथ्वीने उद्देशी स्त्रीआज्ञापनी, आउ (पाणी) ने उद्देशी पुरुषआज्ञापनी अने धान्यने उद्देशी नपुंसकाज्ञापनी, ए

वाचक भाषानो विचार करवो

१५ 'अह भंते' पुढवी' इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु आऊ (अप्) ए प्राकृतना नियमथी पुंलिंग छे, संस्कृतमां तो ते स्त्रीलिंग ज छे 'अह भंते! पुढवीत्ति इत्थिआणवणी' इत्यादि हे भगवन्! 'तुं पृथ्वी कर, तुं पृथ्वी लाव' ए प्रमाणे स्त्रीलिंगमां पृथ्वीने उद्देशी आज्ञा करनारी स्त्रीआज्ञापनी, ए प्रमाणे पुंलिंगमां वर्तमान आऊने (अप्-पाणीने) उद्देशी आज्ञा करनारी पुमाज्ञापनी अने नपुंसकलिंगमां वर्तमान धान्यने उद्देशी आज्ञा करनारी नपुंसकाज्ञापनी ए भाषा प्रज्ञापनी छे? ए भाषा सत्य नथी? भगवान् उत्तर

वणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा? हंता गोयमा! पुढविति इत्थिआणमणी, आउत्ति पुमआणमणी, धण्णेत्ति नपुंसगाणमणी, पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा। अह भंते! पुढवीति इत्थिपण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, धण्णेत्ति णपुंसगपण्णवणी आराहणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा? हंता! गोयमा! पुढवीति इत्थिपण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, धण्णेत्ति नपुंसगपण्णवणी, आराहणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा। इच्चेवं भंते! इत्थिवयणं वा पुमवयणं वा नपुंसगवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा

भापा प्रज्ञापनी छे? आ भापा मृपा नथी? हे गौतम! पृथ्वीने उद्देशी स्त्रीआज्ञापनी, आउने (पाणीने) उद्देशी पुरुपआज्ञापनी अने धान्यने उद्देशी नपुंसकआज्ञापनी ए भापा प्रज्ञापनी छे, ए भाषा मृपा नथी. हे भगवन्! पृथ्वीने विपे स्त्रीप्रज्ञापनी आउने (पाणीने) उद्देशी पुरुपप्रज्ञापनी अने धान्यने उद्देशी नपुंसकप्रज्ञापनी ए भापा आराधनी छे? ए भापा असत्य नथी? हे गौतम! अवश्य पृथ्वीने उद्देशी स्त्रीप्रज्ञापनी, आउ-पाणीने उद्देशी पुरुपप्रज्ञापनी, अने धान्यने उद्देशीने नपुंसक प्रज्ञापनी ए भापा आराधनी छे. ए भापा असत्य नथी. हे भगवन्! ए प्रमाणे स्त्रीवाची, पुरुपवाची अने नपुंसकवाची बोलतो (साधु) जे भापा बोले छे ते भापा प्रज्ञापनी छे? ए

आपे छे-'हन्ता गोयमा'! हे गौतम! अवश्य ए भापा प्रज्ञापनी छे.

'अह भंते' इत्यादि, हे भगवन्! पृथ्वीने विपे स्त्री प्रज्ञापनी-स्त्रीपणाना स्वरूपने जणावनारी, आऊ (पाणी) ने विषे पुरुपत्व रूपने निरूपण करनारी पुरुपप्रज्ञापनी अने धान्यने विशे नपुंसकपणाना स्वरूपने वतावनारी नपुंसकप्रज्ञापनी ए भापा आराधनी-सम्यग् दर्शनादि मुक्तिमार्गनी साधक छे? आ भापा असत्य नथी? अर्थात्—ए प्रमाणे वोलनारने सत्यभापीपणानो प्रसंग

भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! इत्थिवयणं वा पुमवयणं वा णपुंसगवयणं वा वयमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा।

१७. भासा णं भंते ! किमादिया, किंपवहा, किंसंठिया, किंपज्जवसिया ? गोयमा ! भासा णं जीवादीया, स-

भाषा असत्य नथी ? हे गौतम ! अवश्य स्त्रीवाची, पुरुषवाची अने नपुंसकवाची बोलतो (साधु) जे भाषा बोले छे ते भाषा असत्य नथी

१५. हे भगवन् ! भाषानुं मूळ कारण शुं छे ? ते शाथी उत्पन्न थाय छे ? तेनो आकार कोना जेवो छे ? अने तेनो अन्त क्यां थाय छे ?

थायतो नथी ? भगवान् उत्तर आपे छे—ए भाषा आराधनी छे, ए भाषा असत्य नथी कारण के शाब्दिक व्यवहारनी अपेक्षाए यथावस्थित वस्तुतत्त्वनी प्ररूपणा करे छे अहीं एक एक पद संबन्धे केटलुं पूछी शकाय ? तेथी अतिदेश (सादृश्यबोधक वाक्य) थी पूछे छे—'इत्थेव भंते !' हे भगवन् ! 'इति' उपदर्शन अर्थमां छे अने 'एव' एज प्रकार अर्थमां छे पहेले उपदर्शित–बतावेला प्रकारे थई ज्यारे बीजा पण स्त्रीलिंगवाचक, पुलिंगवाचक अने नपुंसकलिंगवाचक भाषा साधु बोले त्यारे पण बोलतां जे भाषा बोलाय ते प्रज्ञापनी भाषा कहेवाय ? ते भाषा असत्य नथी ? भगवान् उत्तर आपे छे—'ए भाषा प्रज्ञापनी छे', कारण के शाब्दिक व्यवहारनुं अनुसरण करवाथी तेमां दोष नथी. अन्यरूपे रहेली वस्तुमां अन्यरूपे बोलवुं ते दोष छे, परंतु जे वस्तु यथावस्थित छे तेने ते प्रकारे कहेवामां शो दोष छे ? ए प्रमाणे भाषाना प्रतिपादन संबन्धे केटलाक संदेहो हता ते दूर कर्या

१७. हवे सामान्यतः भाषाना कारणादि संबन्धे प्रश्न करे छे—'भासा णं भंते ! किमाइया' इत्यादि हे भगवन् ! अवबोधनुं कारणभूत भाषा 'किमादिका'–किम् आदि–मोळ कारण यस्याः सा–जेनुं मूळ कारण शुं छे एवा प्रकारनी छे? अर्थात्–तेनुं उपादान

ीरप्पभवा, वज्जसंठिया, लोगंतपज्जवसिया पण्णत्ता ।

भासा कओ य पभवति? कतिहि व समएहि भासती भासं?। भासा कतिप्पगारा? कति वा भासा अणुमया उ?॥

सरीरप्पभवा भासा, दोहि य समएहिं भासती भासं। भासा चउप्पगारा, दोण्णि य भासा अणुमता उ।

हे गौतम! भाषानुं मूळ कारण जीव छे, भाषा शरीरथी उत्पन्न थाय छे, वज्रना जेवो तेनो आकार छे अने लोकान्ते तेनो अन्त थाय छे. १ भाषा क्यांथी उत्पन्न थाय छे? २ केटला समये भाषा बोले छे? ३ भाषा केटला प्रकारनी छे? अने ४ केटली भाषा बोलवा योग्य छे? १ शरीरथी भाषा उत्पन्न थाय छे. २ बे समये भाषा बोले छे. ३ भाषा चार प्रकारनी छे अने ४ बे भाषा बोलवा योग्य छे.

कारण सिवाय बीजुं मूळ कारण शुं छे? 'किंप्रभवा' तेनी उत्पत्ति शाथी थाय छे एटले तेनुं मूळ कारण छतां भाषा बीजा कया कारणथी उत्पन्न थाय छे? 'किंसंस्थिता' कया आकारे रहेली छे-एटले कोना जेवुं तेनुं संस्थान-आकार छे? 'किंपर्यवसिता' अने क्यां तेनुं पर्यवसान-अन्त थाय छे? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! 'जीवादिका' भाषानुं मूळ कारण जीव छे. कारण के जीवना तेवा प्रकारना प्रयत्न सिवाय अवबोधना कारणभूत भाषानो असंभव छे. ए संबन्धे भगवान् भद्रबाहु स्वामी कहे छे —"तिविहम्मि सरीरम्मि जीवपएसा हवन्ति जीवस्स। जेहि उ गेण्हइ गहणं तो भासइ भासओ भासं॥" औदारिक, वैक्रिय अने आहारक-ए त्रण प्रकारना शरीरमां जीवप्रदेशो जीवना छे, अने जे जीवप्रदेशो वडे ग्रहण—भाषाद्रव्यने ग्रहण करे छे अने त्यार पछी भाषक-वक्ता बोले छे'. हवे 'भाषा शाथी उत्पन्न थाय छे ए प्रश्ननो उत्तर आपे छे-'शरीरप्रभवा' भाषा शरीरथी उत्पन्न थाय छे, कारण के औदारिक, वैक्रिय अने आहारक शरीरमांना कोइ पण शरीरना सामर्थ्यथी भाषा द्रव्य नीकळे छे. भाषा केवा संस्थान-आकारवाळी छे? ए प्रश्ननो उत्तर आपे छे-'वज्रसंस्थिता' वज्रना जेवा संस्थान-आकारवाळी छे, कारण के तेवा प्रकारना प्रयत्न वडे नीकळेला भाषा-

द्रव्यो सर्व लोकोने व्याप्त करे छे, अने लोकनी वज्रना जेवी आकृति छे माटे भाषा पण वज्रना आकार जेवी छे, तेनु पर्यवसान (अन्त) क्यां छे ? ए प्रश्नो उत्तर—'लोकान्तपर्यवसिता' लोकान्तो तेनु पर्यवसान-अन्त छे, कारण के त्यार पछी गतिक्रियामा सहायक धर्मास्तिकायना अभावथी भाषाद्रव्यनो गमननो असंभव छे ए प्रमाणे में अने बीजा तीर्थंकरोए भाषा कही छे हवे फरीथी प्रश्न करे छे—'भासा कओ य पभवा' ? भाषा कया योगथी उत्पन्न थाय छे ? काययोगथी के वचन योगथी ? केटला समये भाषा बोले छे ? तात्पर्य ए छे के केटला समये नीकळता द्रव्यना समूहरूप भाषा होय छे ? तथा 'कतिप्रकारा' भाषाना केटला प्रकार छे ? अने केटली भाषा साधुने बोलवानी अनुज्ञा छे ? अहीं एकेक प्रश्नो उत्तर आपे छे—'शरीरप्रभवा भाषा'—शरीरथी उत्पन्न थाय छे अहीं शरीरना ग्रहणथी शरीरयोगनु ग्रहण करवु, कारण के 'भाषा शरीरमात्रथी उत्पन्न थाय छे' ए वातनो पूर्वेज निर्णय कर्यो छे अहीं 'शरीरप्रभवा' एटले भाषा शरीर-काययोगथी उत्पन्न थाय छे ए अर्थ समजवो ते आ प्रमाणे—काययोगवडे भाषायोग्य पुद्गलो ग्रहण करी भाषापणे परिणमावी वचन योग वडे बहार काढे छे तेथी काययोगना सामर्थ्यथी भाषा उत्पन्न थाय छे ए संबन्धे भगवान् भद्रबाहु स्वामी कहे छे—"गिण्हइ काएण निसरइ तह वाइएण जोगेणं"। इति काययोग वडे ग्रहण करे छे अने वचनयोग वडे बहार काढे छे केटला समये भाषा बोले छे ? ए प्रश्नो उत्तर आपे छे—बे समये भाषा बोले छे ते आ प्रमाणे—प्रथम समये भाषायोग्य पुद्गलो ग्रहण करे छे, अने बीजे समये भाषापणे परिणमावी छोडी दे छे 'भाषाना केटला प्रकार छे'—एनो उत्तर आ प्रमाणे छे—सत्यादिभा भेदथी भाषाना चार प्रकार छे अने तेनो विचार पूर्वे करेलो छे 'कई भाषा बोलवानी अनुज्ञा छे' ? एनो उत्तर—सत्यादि बे भाषा साधुने बोलवानी अनुज्ञा छे—सत्य अने असत्यामृषा, अर्थात् जे असत्य अने सत्यासत्य-मिश्र भाषा छे ते बोलवानी अनुज्ञा नथी कारण के ते बन्ने अयथार्थ अर्थनु प्रतिपादन करती होवाथी मोक्षने प्रतिकूल छे

१६. कतिविहा णं भंते ! भासा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा भासा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तिया य अपज्जत्तिया य । पज्जत्तिया णं भंते ! भासा कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सच्चा मोसा य ।

१७. सच्चा णं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता । तंजहा–जणवयसच्चा १, सम्मयसच्चा २, ठवणसच्चा ३, नामसच्चा ४, रूवसच्चा ५, पडुच्चसच्चा ६, ववहारसच्चा ७, भावसच्चा ८,

---

१६. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी भाषा कहेली छे? हे गौतम ! बे प्रकारनी भाषा कही छे. ते आ प्रमाणे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. हे भगवन् ! पर्याप्ता भाषा केटला प्रकारनी छे ? हे गौतम बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–सत्य अने मृषा.

१७. हे भगवन् ! पर्याप्ता सत्यभाषा केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! दस प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–१ जनपदसत्य, २ संमतसत्य, ३ स्थापनासत्य, ४ नामसत्य, ५ रूपसत्य, ६ प्रतीत्यसत्य (अपेक्षासत्य), ७ व्यवहारसत्य, ८ भावसत्य, ९ योगसत्य,

---

१६. भाषा संबन्धे फरीथी प्रश्न करे छे—'केटला प्रकारनी भाषा छे' ? उत्तर—पर्याप्ता भाषा अने अपर्याप्ता भाषा. जे प्रतिनियतरूपे-निश्चितार्थरूपे जाणी शकाय ते पर्याप्ता-अर्थनो सम्यक् के असम्यक् निर्णय करवाना सामर्थ्ययुक्त. ते सत्य अने मृषा बे प्रकारनी छे, कारण के बन्ने भाषा सत्य के असत्य एम निश्चितार्थरूपे जाणी शकाय छे. जे भाषा सत्य अने असत्य बन्नेनी मिश्रतारूप होवाथी अने सत्य अने असत्य बन्नेना प्रतिषेधरूप होवाथी प्रतिनियतरूपे–सत्य के असत्य एम निश्चितार्थरूपे जाणी शकाती नथी ते अपर्याप्ता-अर्थनो निर्णय करवाना सामर्थ्य रहित छे. ते सत्यमृषा अने असत्यमृषा जाणवी. कारण के बन्ने भाषानो पण प्रतिनियतरूपे–सत्य के असत्य एम विनिश्चय थइ शकतो नथी.

१७. ए प्रमाणे पर्याप्ता भाषाना स्वरूपनो विचार कर्यो, परन्तु तेना सत्य अने मृषा ए बे भेद कह्यां छे, तेथी सत्य भाषाना भेदो

जोगसच्चा ९, ओवम्मसचा १० ।

"जणवय १ संमत २ ठवणा ३ नामे ४ रूवे ५ पडुच्चसचे ६ य ।
ववहार ७ भाव ८ जोगे ९ दसमे ओवम्मसचे य १०" ॥

१० उपमासत्य.

जाणवा माटे प्रश्न करे छे—'सच्चा णं भंते ! भासा पज्जत्तिया कइविहा पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! पर्याप्त सत्य भाषा केटला प्रकारनी छे ?—इत्यादि पाठ सिद्ध छे हवे भगवान् उत्तर आपे छे—'गोयमा' ! हे गौतम दस प्रकारनी छे-१ 'जणवयसच्चा' जनपदसत्या-ते ते जनपद-देशने आश्रयी इष्ट अर्थना बोधनुं कारण होवाने लीधे व्यवहारनो हेतु होवाथी सत्य ते जनपदसत्य जेम के कोंकणादि देशमां पाणीने 'पिच्च' कहे छे-इत्यादि २ 'समतसत्या' जे सकल लोकने संमत होवाथी सत्यपणे प्रसिद्ध छे, जेमके कुमुद, कुवलय, उत्पल अने तामरस (रक्त कमळ) ए बधा समान रीते पंकथकी उत्पन्न थयेला होवा छतां पण गोपालो अरविन्दने ज पंकज माने छे, बाकीनाने मानता नथी, माटे अरविन्दमां पंकज कहेवुं ते संमतसत्य ३ 'स्थापनासत्या' तेवा प्रकारना अंक वगेरे के सिक्का वगेरेने जोइने कहेवाय, जेम के एकडानी पासे बे मीडां जोइने 'आ सो छे' एम कहेवाय अने पण मीडा जोइने 'आ हजार छे' एम कहेवाय, माटी वगेरेमां तेवा प्रकारनी मुद्रा-छाप जोइने 'आ मास छे, आ कार्षापण छे' एम कहेवाय ते स्थापनासत्य ४ 'नामसत्या' नाममात्रथी सत्य होय, जेम के कुलनी वृद्धि-अभ्युदय न करतो होय तो पण 'कुलवर्धन' कहेवाय छे ते नामसत्य ५ 'रूपसत्या' जे रूप-वेशमात्रथी सत्य होय, जेम के जेणे दम्भथी साधुनो वेश धारण करेलो होय ते साधु कहेवाय छे ते रूपसत्य ६ 'प्रतीत्यसत्या' प्रतीत्य—बीजी वस्तुनी अपेक्षाए जे सत्य होय, जेम के अनामिका आगळी कनिष्ठानी अपेक्षाए लांबी अने मध्यमानी अपेक्षाए टूंकी कहेवाय छे ते प्रतीत्यसत्य अहीं पण न कहेवुं के एक वस्तुमां ह्रस्वत्व अने दीर्घत्व वास्तविक रीते केम कहेवाय ? कारण के तेओनो परस्पर विरोध छे जे ह्रस्व होय ते दीर्घ केम होय अने जे दीर्घ

होय ते ह्रस्व केम होय ? तेनो उत्तर ए छे के भिन्न निमित्त होवाथी-जुदी जुदी अपेक्षाए होवाथी त्यां परस्पर विरोधनो संभव नथी. जो ते एक कनिष्ठाने के मध्यमा आंगळीने आश्रयी लांबी के टुंकी कहीए तो विरोधनो संभव छे, कारण के एक निमित्तनी अपेक्षाए परस्पर विरुद्ध बे कार्यनो असंभव छे, ज्यारे एक आंगळीनी अपेक्षाए टुंकी अने बीजीनी अपेक्षाए लांबी कहीए तो 'सत्त्व अने असत्त्वनी जेम भिन्न निमित्त होवाथी परस्पर विरोध नथी. अहीं शंका करे छे—'जो दीर्घत्व-लंबाइ अने ह्रस्वत्व-टुंकाइ वास्तविक होय तो ऋजुत्व-सरलता अने वक्रतानी जेम बीजा निमित्तनी अपेक्षा विना केम भासता नथी ? माटे अन्य निमित्त सापेक्ष होवाथी ह्रस्वत्व अने दीर्घत्व ए बन्ने धर्मो काल्पनिक छे', ते अयुक्त छे. वस्तुना धर्मो बे प्रकारना छे-सहकारी वडे जेनुं स्वरूप व्यक्त थाय ते अने ते सिवायना बीजा. तेमां जे सहकारीथी जेनुं स्वरूप व्यक्त थाय तेवा धर्मो छे ते सहकारीना संबन्धथी प्रतीत थाय छे. जेम जळना संबन्धथी पृथिवीमां गन्ध व्यक्त थाय छे. अने बीजा सहकारीना संबन्ध सिवाय स्वयं व्यक्त थाय एवा प्रकारना छे, जेम कर्पूरादिनो गंध. ह्रस्वत्व अने दीर्घत्व धर्मो पण सहकारीना संबन्धथी व्यक्त थाय तेवा प्रकारना छे, तेथी तेओ सहकारीने आश्रयी अभिव्यक्त थाय छे. ७ 'व्यवहारसत्या' व्यवहार—एटले लोकविवक्षा, व्यवहारथी सत्य ते व्यवहारसत्य, जेम के पर्वत बळे छे, पात्र झरे छे, पेट विनानी कन्या छे, ऊन विनानी घेटी छे. लोको पर्वत उपरनुं घास बळतुं होय त्यारे घासनी साथे पर्वतना अभेदनी कल्पना करी 'पर्वत बळे छे' एम कहे छे. पात्रथी पाणी झरतुं होय त्यारे पाणी अने पात्रना अभेदनी विवक्षा करी 'पात्र झरे छे' एम बोले छे. संभोग हेतुक पेटनी वृद्धिना अभावमां 'अनुदरा कन्या'-पेट विनानी कन्या कहेवाय छे, अने कापवा लायक ऊनना अभावमां 'अलोमिका एडका'-ऊन विनानी घेटी कहेवाय छे. माटे लोकव्यवहारनी अपेक्षाए ते प्रमाणे बोलनार साधुनी पण भाषा

१. एकज वस्तु स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावनी अपेक्षाए सत् छे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परभावनी अपेक्षाए असत् छे, अने ते भिन्न भिन्न निमित्तनी अपेक्षाए होवाथी तेमां सत्त्व अने असत्त्वनो परस्पर विरोध नथी.

१८. मोसा णं भंते! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पन्नत्ता? गोयमा! दसविहा पन्नत्ता, तंजहा-कोहणिस्सिया १, माणनिस्सिया २, मायानिस्सिया ३, लोहनिस्सिया ४, पेज्जणिस्सिया ५, दोसनिस्सिया ६, हासणिस्सिया ७,

१८. हे भगवन्! पर्याप्त मृषा भाषा केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! दस प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-क्रोधनिश्रित १, माननिश्रित २, मायानिश्रित ३, लोभनिश्रित ४, प्रेमनिश्रित ५, द्वेषनिश्रित ६, हास्यनिश्रित ७, भयनिश्रित ८, आख्यायिकानिश्रित ९,

व्यवहारसत्य छे ८ 'भावसच्चा' भाव-वर्णादि, ते वडे सत्य जे वर्णादिभाव जेमां उत्कट-अधिक होय ते वडे जे सत्यभाषा ते भावसत्य, जेम बगलामां पांच वर्णनो संभव छे तो पण शुक्लवर्णनी अधिकता होवाथी धोळो बगलो कहेवाय छे ९ 'योगसच्चा' योग-संबन्ध, ते वडे सत्य, जेम छत्रना संबन्धथी विवक्षित शब्दप्रयोगना समये छत्रनो अभाव होय तो पण छत्रना योगनो संभव होवाथी 'छत्री' अने दंडना संबन्धथी 'दंडी' कहेवाय छे ते योगसत्य १० 'उपमासच्चा' जेम समुद्रना जेवुं तळाव छे, आ उपमा सत्य छे. अहीं शिष्यजन उपर उपकार करवा माटे संग्रहणी गाथा कहे छे-'जणवयसम्मयठवणा' इत्यादि तेमां अर्थनो विचार करेलो छे

१८ मृषाभाषा दस प्रकारनी छे, जेम १ 'कोहनिस्सिया' इत्यादि क्रोधनिःसृता-क्रोधथी नीकळेली वाणी, आ बधे स्थळे विचार करवो तेमां क्रोधाधीन आत्मा विपरीत बुद्धिथी बीजाने छेतरवाने जे सत्य के असत्य बोले ते मृषा जाणवुं, कारण के तेनो आशय अतिदुष्ट छे. जो के घुणाक्षरन्यायथी तेमां सत्यांश होय अथवा कपटबुद्धिथी सत्य बोले ते पण आशयना दोषथी दुष्ट होवाथी असत्य छे २ 'माननिःसृता' पूर्वे ऐश्वर्यनो अनुभव न कर्यो होय तो पण पोतानो उत्कर्ष बतावया माटे 'अमे ते समये ऐश्वर्यनो अनुभव कर्यो हतो इत्यादि कहेनारनी माननिःसृत भाषा कहेवाय छे ३ 'मायानिःसृता' जे बीजाने छेतरवाना इरादाथी सत्य के असत्य बोले ते मायानिःसृत भाषा ४ 'लोभनिःसृता' लोभने अधीन थयेलो आत्मा खोटा तुला वगेरे करी 'तुला वगेरे बरोबर प्रमाणवाळां छे' एम बोले ते लोभनिःसृत भाषा ५ 'प्रेमनिःसृता' अतिप्रेमना वशथी 'हुं तारो दास छुं' इत्यादि खुशामत करनारनी प्रेमनिःसृत भाषा

भयणिस्सिया ८, अक्खाइयाणिस्सिया ९, उवघाइयणिस्सिया १० ।

"कोहे माणे माया लोभे पिज्जे तहेव दोसे य । हास भए अक्खाइय उवघाइयणिस्सिया दसमा ॥"

१९. अपज्जत्तिया णं भंते! कइविहा भासा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सच्चामोसा असच्चामोसा य। सच्चामोसा णं भंते! भासा अपज्जत्तिया कतिविहा पन्नत्ता? गोयमा! दसविहा पन्नत्ता, तंजहा–उप्प-

---

अने उपघातनिश्रित १०.

१९. हे भगवन्! अपर्याप्ता भाषा केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–सत्यमृषा अने असत्यामृषा. हे भगवन्! अपर्याप्ता सत्यमृषा भाषा केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! दस प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–१ उत्पन्नमिश्रिता, २ विगतमिश्रिता, ३ उत्पन्नविगतमिश्रिता, ४ जीवमिश्रिता, ५ अजीवमिश्रिता, ६ जीवाजीवमिश्रिता, ७ अनंतमिश्रिता, ८ प्रत्येकमिश्रिता, ९ अद्धामिश्रिता अने १० अद्धाद्धामिश्रिता.

---

६ 'द्वेषनिःसृता' द्वेषी आत्मा तीर्थंकरादि सत्पुरुषोना पण अवर्णवाद बोले ते द्वेषनिःसृत भाषा. ७ 'हास्यनिःसृता' केलि–गम्मतने लीधे जुठुं बोलवुं ते हास्यनिःसृत भाषा. ८ 'भयनिःसृता' चोर वगेरेना भयथी असत्य बोलवुं ते भयनिःसृत भाषा. ९ 'आख्यायिकानिःसृता' कथाओमां असंभवित वातो कहेवी ते आख्यायिका निःसृत भाषा. १० 'उपघातनिःसृता' 'तुं चोर छो' इत्यादि खोटुं आळ आपवुं ते उपघातनिःसृत भाषा. अहीं पण सूत्रकार संग्रहणी गाथा कहे छे–'कोहे माणे' इत्यादि. तेना अर्थनो विचार करेलो छे.

१९. सत्यमृषा भाषा दस प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे–'उत्पन्नमिश्रिता' संख्या पूरी करवा माटे जेमां नहि उत्पन्न थयेलानी साथे उत्पन्न थयेला मिश्रित छे ते उत्पन्नमिश्रित भाषा. ए प्रमाणे बीजे स्थळे पण यथासंभव विचारवुं. जेम के कोइ गाम के नगरमां ओछा

पणमिस्सिया १, विगतमिस्सिया २, उप्पण्णविगतमिस्सिया ३, जीवमिस्सिया ४, अजीवमिस्सिया ५, जीवाजीवमिस्सिया ६, अणंतमिस्सिया ७, परित्तमिस्सिया ८, अद्धामिस्सिया ९, अद्धद्धामिस्सिया १० ।

२० असच्चामोसा णं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुवालसविहा पन्नत्ता । तंजहा–

२०. हे भगवन् ! अपर्याप्त असत्यामृषा भाषा केटला प्रकारनी छे? हे गौतम ! बार प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–१ आमन्त्रणी,

अथवा अधिक बाळको जन्म्या होय त्यारे 'आजे दस बाळको जन्म्या' इत्यादि कहेवुं ते उत्पन्नमिश्रिता १ 'विगतमिश्रिता' ए प्रमाणे मरणना कथनमां विगतमिश्रिता २. जन्म अने मरणनुं निश्चित परिमाणना कथनमां विसंवाद–अयथार्थपणे कथन ते उत्पन्नविगतमिश्रिता ३ 'जीवमिश्रिता' घणा जीवता अने घणा मरी गयेला शंख शंखला वगेरेनो एक ढगलो जोइने कोइ एम कहे के 'अहो ! आ मोटो जीवनो ढगलो छे' त्यारे जीवमिश्रिता ४ जीवताने आश्रयी सत्य अने मरी गयेलाने आश्रयी असत्य होवाथी आ सत्यमृषा भाषा छे तेज राशिमां 'आटला जीवता छे अने आटला मरी गया छे' एम परिमाणपूर्वक निश्चित कथन करतां विसंवाद–अयथार्थपणुं होय त्यारे जीवाजीवमिश्रिता ६ मूळा वगेरे अनंतकायिकोना पत्र–पीळां पांदडां वडे अथवा कोइक प्रत्येक वनस्पति वडे मिश्र जोइने आ बधु अनंतकायिक छे' एम कहेवुं ते 'अनंतमिश्रिता' ७ प्रत्येक वनस्पतिना समुदायनो अनंतकायिक साथे करेलो ढगलो जोइने' आ बधी प्रत्येक वनस्पति छे' एम कहेवुं ते प्रत्येकमिश्रिता ८. अद्धाकाळ ते अहीं प्रस्तावने अनुसरी दिवस के रात्रि रूपकाळ ग्रहण करवो ते काळ वडे मिश्रित थयेल ते अद्धामिश्रिता जेम के कोइ मनुष्य त्वरा करतो दिवस छतां एम कहे के उठ रात्रि गइ अथवा रात्रि छतां एम कहे के उठ सूर्य उग्यो ९. दिवस के रात्रिनो एक अंश ते अद्धाद्धा, ते जेना मिश्र करायेल होय ते अद्धाद्धामिश्रिता, जेम के पहेलो पहोर छतां कोइ मनुष्य उतावळ करतो कोइने एम कहे के चाल मध्याह्न थइ गयो

२०-२२ असत्यामृषा भाषा बार प्रकारनी छे ते आ प्रमाणे—'आमंतणि' इति 'हे देवदत्त' ! इत्यादि आमन्त्रणी भाषा १ आ भाषा

आमंतणि १, आणमणी २, जायणि ३, तह पुच्छणी य ४, पण्णवणी ५ ।
पच्चक्खाणी ६ भासा भासा इच्छाणुलोमा ७ य ॥
अणभिग्गहिया भासा ८ भासा य अभिग्गहंमि बोद्धव्वा ९ ।
संसयकरणी भासा १० वोगड ११ अव्वोगडा चेव १२ "॥

२१. जीवा णं भंते ! किं भासगा, अभासगा ? गोयमा ! जीवा भासगावि, अभासगावि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-'जीवा भासगावि अभासगावि' ? गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता । तंजहा-संसारसमावण्णगा य

२ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ पृच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छालोमा (इच्छानुकूल), ८ अनभिगृहीता, ९ अभिगृहीता, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता अने १२ अव्याकृता भाषा.

२१. हे भगवन् ! जीवो शुं भाषक छे के अभाषक छे ? हे गौतम ! जीवो भाषक पण होय छे अने अभाषक पण होय छे. हे

पूर्वे कहेली सत्यादि त्रण भाषाना लक्षणथी रहित होवाने लीधे सत्य नथी, असत्य नथी तेम सत्यमृषा पण नथी, केवळ व्यवहार मात्रनी प्रवृत्तिनुं कारण छे, माटे ते असत्यामृषा कहेवाय छे. ए प्रमाणे बधे विचार करवो. आज्ञापनी—कार्यमां बीजाने प्रेरणा करवी, जेम के 'आ कर' २. याचनी—कोइ पण वस्तुनी 'तुं आप' एम याचना करवी ३. पृच्छनी—नहीं जाणेला अथवा संदिग्ध एवा कोइ पण अर्थने जाणवा माटे तेना जाणनारने पूछवुं ४. प्रज्ञापनी—जेणे विनयनी शिक्षा प्राप्त करी छे एवा शिष्यने उपदेश आपवो, जेम के, 'हिंसाथी निवृत्त थयेलां प्राणीओ भवान्तरमां दीर्घायुषी थाय छे' इत्यादि. कह्युं छे के "पाणिवहाउ नियत्ता हवंति दीहाउया अरोगा य । एमाई पण्णत्ता पण्णवणी वीयरागेहिं ॥ प्राणीना वधथी निवृत्त थयेला दीर्घायुषी अने नीरोगी थाय छे-इत्यादि भाषा

असंसारसमावण्णगा य। तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं अभासगा। तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सेलेसीपडिवण्णगा य असेलेसीपडिवण्णगा य। तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण अभासगा। तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—एगिंदिया य अणेगिंदिया य। तत्थ णं जे ते एगिंदिया ते णं अभासगा। तत्थ णं जे ते अणेगिंदिया ते दुविहा प-

भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के, 'जीवो भाषक पण होय छे अने अभाषक पण होय छे'? हे गौतम! जीवो बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—संसारी अने असंसारी. तेमां जे असंसारी छे ते सिद्धो छे अने सिद्धो अभाषक होय छे. अने तेमां जे संसारी जीवो छे ते बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—शैलेशीने प्राप्त थयेला अने शैलेशीने नहीं प्राप्त थयेला. तेमां जे शैलेशीने प्राप्त थयेला छे, ते अभाषक छे. शैलेशीने प्राप्त नहीं थयेला जीवो बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—एक इन्द्रियवाळा अने अनेक इन्द्रियवाळा. तेमां जे एकेन्द्रिय छे ते अभाषक छे. अनेक इन्द्रियवाळा जीवो बे प्रकारना छे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते अभाषक होय छे अने जे

वीतरागे प्रज्ञापनी कही छे ५. प्रत्याख्यानी—याचना करनारने निषेध करवो ६ इच्छानुलोमा—परनी इच्छाने अनुसरवु, जेम कोई कारक कार्य करतो त्यारे कोईने पूछे त्यारे ते कहे के 'तमे करो मने पण ए अभीष्ट छे' ७ 'अनभिग्रहा'—ज्यां प्रतिनियत अर्थनो निश्चय न होय ते जेमके घणा कार्यों करवाना होय त्यारे कोई कोईने पूछे के 'अत्यारे शु करु?' ते कहे के 'अत्यारे तने जे ठीक लागे ते कर' ८. 'अभिगृहिता'—ज्यां प्रतिनियत अर्थनो निश्चय होय ते जेमके 'अत्यारे आ करवु अने आ न करवु' ९. 'संशयकरणी' जे भाषा अनेक अर्थनी वाचक होवाथी बीजाने संशय उत्पन्न करे ते जेमके 'सैन्धव लाव' अहीं सैन्धव शब्द लवण, वस्त्र, पुरुष अने अश्वनो वाचक छे १० व्याकृता—प्रगट अर्थवाळी ११ अने अव्याकृता—अतिगम्भीर शब्दार्थवाळी अथवा अस्पष्ट उच्चारवाळी १२ कारण के तेना अर्थनो

न्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं अभासगा। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते णं भासगा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–'जीवा भासगावि अभासगावि' ।

२२. नेरइया णं भंते ! किं भासगा, अभासगा ? गोयमा ! नेरइया भासगावि, अभासगावि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति–'नेरइया भासगावि, अभासगावि' ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं अभासगा, तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते णं भासगा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–'नेरइया भासगावि अभासगावि' । एवं एगिंदियवज्जाणं निरंतरं भाणियव्वं ।

पर्याप्ता छे ते भाषक होय छे. ए कारणथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छे के 'जीवो भाषक पण होय छे अने अभाषक पण होय छे'.

२२. हे भगवन् ! नैरयिको भाषक होय छे के अभाषक होय छे ? हे गौतम ! नैरयिको भाषक पण होय छे अने अभाषक पण होय छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'नैरयिको भाषक पण होय छे अने अभाषक पण होय छे' ? हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना होय छे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते अभाषक छे अने जे पर्याप्ता छे ते भाषक छे. तेथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छुं के 'नैरयिको भाषक पण होय छे अने अभाषक पण होय छे'. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवाय बधा जीवोने निरंतर कहेवुं.

२३. हे भगवन् ! भाषाना केटला प्रकारो कह्या छे ? हे गौतम ! भाषाना चार प्रकारो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–एक सत्यभाषानो

विचार थतो नथी. बाकी बधुं यावत् 'कइ णं भंते ! भासज्जाया पन्नत्ता' इत्यादि सुधी सुगम छे.

२३. हे भगवन् ! भाषाना केटला प्रकारो कह्या छे ? आ भाषाना प्रकार पूर्वे कहेलां छे तो पण फरीथी कहेवानुं कारण बीजा

२३. कति णं भंते! भासज्जाया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारि भासज्जाया पन्नत्ता, तंजहा-सच्चमेगं भास- ज्जायं, बितियं मोसं, ततियं सच्चामोसं, चउत्थं असच्चामोसं। जीवा णं भंते! किं सच्चं भासं भासंति, मोसं भासं भासंति, सच्चामोसं भासं भासंति, असच्चामोसं भासं भासंति? गोयमा! जीवा सच्चंपि भासं भासंति, मोसंपि भासं भासंति, सच्चामोसंपि भासं भासंति, असच्चामोसंपि भासं भासंति। नेरइया णं भंते! किं सच्चं भासं भासंति, जाव असच्चामोसं भासं भासंति? गोयमा! नेरइया णं सच्चंपि भासं भासंति, जाव असच्चामोसंपि भासं भासंति। एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा। बेइंदियतेइंदियचउरिंदिया य नो सच्चं, नो

प्रकार, बीजो मृषा, त्रीजो सत्यमृषा अने चोथो असत्यामृषा. हे भगवन्! जीवो शुं सत्यभाषा बोले छे, मृषाभाषा बोले छे, सत्यमृषा भाषा बोले छे के असत्यामृषा भाषा बोले छे? हे गौतम! सत्य भाषा पण बोले छे, मृषा भाषा पण बोले छे, सत्यमृषा भाषा पण बोले छे अने असत्यामृषा भाषा पण बोले छे. हे भगवन्! नैरयिको शुं सत्य भाषा बोले छे के यावत् असत्यामृषा भाषा बोले छे? हे गौतम! नैरयिको सत्य भाषा पण बोले छे अने यावत् असत्यामृषा भाषा पण

सूत्रना सबन्ध माटे जे ते बतावे छे-'हे भगवन्! जीवो सत्य भाषा बोले छे' इत्यादि सुगम छे, परंतु बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां सत्यादि त्रण भाषानो प्रतिषेध समजवो, कारण के तेओ सम्यग् ज्ञान अने बीजाने छेतरवा वगेरेनो इरादो होतो नथी तिर्यञ्च पचेन्द्रियो पण यथावस्थित वस्तुना प्रतिपादनना अभिप्रायथी सम्यक् (यथार्थ) बोलता नथी, तेम बीजाने छेतरवानी बुद्धिथी बोलता नथी, परंतु ज्यारे बोले छे त्यारे गुस्से थया छतां के बीजाने मारवानो इच्छावाळा छता ए प्रमाणे ज बोले छे माटे

मोसं, नो सच्चामोसं भासं भासंति, असच्चामोसं भासं भासंति। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते! किं सच्चं भासं भासंति, जाव किं असच्चामोसं भासं भासंति? गोयमा! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णो सच्चं भासं भासंति, णो मोसं भासं भासंति, णो सच्चामोसं भासं भासंति, एगं असच्चामोसं भासं भासंति,णण्णत्थ सिक्खापुव्वगं उत्तरगुणलद्धिं वा पडुच्च सच्चंपि भासं भासंति, मोसंपि, सच्चामोसंपि, असच्चामोसंपि भासं भासंति। मणुस्सा जाव वेमाणिया एते जहा जीवा तहा भाणियव्वा।

बोले छे. ए प्रमाणे असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो जाणवा. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो सत्यभाषा, मृषाभाषा अने सत्यमृषा भाषा बोलता नथी, पण असत्यामृषा भाषा बोले छे. हे भगवन्! पंचेन्द्रिय तिर्यंचो शुं सत्य भाषा बोले छे के यावत् असत्यामृषा भाषा बोले छे? हे गौतम? सत्यभाषा, मृषाभाषा अने सत्यमृषा भाषा बोलता नथी, पण एक असत्यामृषा भाषा बोले छे. परन्तु शिक्षापूर्वक के उत्तरगुणनी लब्धि सिवाय बीजे जाणवुं. शिक्षा पूर्वक के उत्तरगुणनी लब्धिने आश्रयी सत्यभाषा पण बोले छे, असत्यभाषा पण बोले छे सत्यमृषा तथा असत्यामृषा भाषा पण बोले छे. मनुष्यो यावत् वैमानिको जेम जीवो कह्या तेम जाणवा.

तेओनी पण भाषा असत्यामृषा छे. शुं तेओ बधानी एक असत्यामृषा भाषा छे? 'नथी' एम जणावे छे. तेओ शिक्षादि सिवाय सत्यादि भाषा बोलता नथी, परंतु मेना पोपट वगेरे शिक्षापूर्वक संस्कार विशेषथी के तेवा प्रकारना क्षयोपशमनी विशेषताथी जातिस्मरणरूप के विशिष्ट व्यवहारनी कुशलतारूप लब्धिने आश्रयी सत्यादि चारे भाषा बोले छे.

२४ जीवे णं भंते! जातिं दव्वातिं भासत्ताए गिण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति, अठियाइं गेण्हति? गोयमा! ठियाइं गिण्हति,नो अठियाइं गिण्हति। जाइं भंते! ठियाइं गिण्हति ताइं किं दव्वतो गिण्हति, खेत्ततो गिण्हति, कालतो गिण्हति, भावतो गिण्हति? गोयमा! दव्वओवि गिण्हति, खेत्तओवि, कालओवि, भावओवि गिण्हति। जाति भंते! दव्वओ गेण्हति ताइं किं एगपदेसिताइं गिण्हति, दुपदेसियाइं जाव अणंतपदेसियाइं गेण्हति? गोयमा! नो एगपदेसियाइं गेण्हति, जाव नो असंखिज्जपदेसियाइं गिण्हइ, अणंतपदेसियाइं गेण्हति। जाइं

---

२४. हे भगवन्! जीव जे द्रव्यो भाषापणे ग्रहण करे छे, ते शुं स्थित-स्थिर रहेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे, अस्थित-अस्थिर द्रव्यो ग्रहण करे छे? हे गौतम! स्थिर द्रव्यो ग्रहण करे छे पण अस्थिर द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. हे भगवन्! जे स्थिर द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं द्रव्यथी ग्रहण करे छे, क्षेत्रथी ग्रहण करे छे, काळथी ग्रहण करे छे, के भावथी ग्रहण करे छे? हे गौतम! द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी ग्रहण करे छे. हे भगवन्! जे द्रव्यथी ग्रहण करे छे ते एकप्रदेशवाळां ग्रहण करे छे, बे प्रदेशवाळा के यावत् अनन्त प्रदेशवाळां ग्रहण करे छे? हे गौतम! एक प्रदेशवाळां के यावत् असंख्य प्रदेशवाळां द्रव्यो ग्रहण करतो नथी, पण अनन्त

२४-२५. हवे भाषाद्रव्यना ग्रहणादि सबन्धे संशयो दूर करवा प्रश्न करे छे—'हे भगवन्! जीव जे द्रव्योने भाषापणे ग्रहण करे छे' इत्यादि पाठ सुगम छे परंतु स्थित-गमनक्रियारहित द्रव्यो ग्रहण करे छे, पण अस्थित द्रव्यो ग्रहण करतो नथी.

द्रव्यथी विचारता अनन्त परमाणुरूप भाषा स्कन्धो ग्रहण करे छे, पण एक परमाणु, बे परमाणु वगेरेना स्कन्धो ग्रहण करतो नथी कारण के तेओ स्वभावथी ज जीवोने ग्रहण करवाने अयोग्य छे क्षेत्रना विचारमां असख्यात प्रदेशावगाढ द्रव्यो ग्रहण

खेत्तओ गेण्हति ताइं किं एगपएसोगाढाइं गेण्हति, दुपएसोगाढाइं गेण्हति, जाव असंखेज्जपएसोगाढाइं गेण्हति? गोयमा! नो एगपएसोगाढाइं गेण्हति, जाव नो संखेज्जपएसोगाढाइं गेण्हति, असंखेज्जपएसोगाढाइं गेण्हति।

प्रदेशवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे. जे क्षेत्रथी ग्रहण करे छे ते शुं एकप्रदेशावगाढ–एक प्रदेशमां रहेला, बे प्रदेशमां रहेलां के यावत् असंख्यात प्रदेशमां रहेलां ग्रहण करे छे? हे गौतम! ते एक प्रदेशमां रहेलां के यावत् संख्याता प्रदेशमां रहेलां द्रव्यो ग्रहण करतो

करे छे, कारण के एक प्रदेशादि अवगाढ द्रव्यो तेवा प्रकारना स्वभावथी ज ग्रहणने अयोग्य छे. काळथी विचार करतां एक समयनी स्थितिवाळां यावत् असंख्यात समयनी स्थितिवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे, कारण के पुद्गलोनी असंख्याता काळ सुधी स्थितिनो संभव छे. भगवती सूत्रमां सैज अने निरेज पुद्गलोनी स्थितिना विचारमां कह्युं छे–'हे भगवन्! अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध केटला काळ सुधी सैज –सकम्प होय? हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट आवलिकानो असंख्यातमो भाग होय. निरेज जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्ट असंख्याता काळ सुधी होय छे.' ते ग्रहण करेलां द्रव्यो ग्रहण पछीना समये अवश्य छूटे छे–ए स्वभाव छे अने ते पछीना समये ग्रहण थाय छे. बीजा आचार्यो आ प्रमाणे व्याख्या करे छे–'एक समयनी स्थितिवाळां द्रव्यो भाषाना आदि परिणामनी अपेक्षाए जाणवां, कारण के पुद्गलोनो विचित्र परिणाम छे, तेथी एक प्रयत्नथी ग्रहण करेलां अने छोडेलां छतां पण केटलाक एक समय सुधी भाषापणे रहे छे, केटलाक बे समय सुधी, यावत्–केटलाक असंख्याता समय सुधी रहे छे.' तथा 'गहणदव्वाइं' गृह्यन्ते इति ग्रहणानि–जे ग्रहण कराय ते ग्रहणद्रव्यो एटले ग्रहण करवाने योग्य द्रव्यो छे तेमांना केटला एक वर्णपरिणाम वडे एक वर्णवाळां, केटलांक बे वर्णवाळां, केटलांक त्रण वर्णवाळां, केटलांक चार वर्णवाळां अने केटलाक पांच वर्णवाळां होय छे. ज्यारे एक प्रयत्नथी ग्रहण करेलां पण बधा द्रव्योना समुदायनी विवक्षा करीए त्यारे अवश्य पांच वर्णवाळां ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे गन्ध अने रस संबन्धे विचार करवो. स्पर्शनी अपेक्षाए विचार करतां एक

जाइं कालतो गेण्हति ताइं किं एगसमयठिइयाइं गेण्हति, दुसमयठिइयाइं गिण्हति, जाव असंखिज्जसमयठिइयाइं गेण्हति? गोयमा! एगसमयठितीयाइंपि गेण्हति, दुसमयठितीयाइंपि गेण्हति, जाव असंखेज्जसमयठितीयाइंपि गेण्हति। जाइं भावतो गेण्हति ताइं किं वण्णमंताइं गेण्हति, गंधमंताइं, रसमंताइं, फासमंताइं गेण्हति?

नथी, पण असंख्यात प्रदेशवाळां रहेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे. जे द्रव्यो काळथी ग्रहण करे छे ते शुं एक समयनी स्थितिवाळां, बे समयनी स्थितिवाळां के यावत् असंख्य समयनी स्थितिवाळां ग्रहण करे छे? हे गौतम! एक समयनी स्थितिवाळां, बे समयनी स्थितिवाळां के यावत् असंख्यात समयनी स्थितिवाळां ग्रहण करे छे. जे द्रव्यो भावथी ग्रहण करे छे ते शुं वर्णवाळां, गंधवाळां, रसवाळां

स्पर्शनो प्रतिषेध जाणवो, एटले एक स्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करतो नथी, कारण के परमाणुने पण अवश्य बे स्पर्श होय छे. कह्युं छे के- 'कारणमेव तदन्त्यं सूक्ष्मो नित्यश्च भवति परमाणुः। एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च॥' परमाणु अन्त्य-छेल्लुं कारण छे (अर्थात्-तेनुं कोई कारण नथी) वळी ते सूक्ष्म अने नित्य छे. ते एक रस, एक गन्ध, एक वर्ण अने बे स्पर्शवाळो, अने कार्यरूप लिङ्गथी अनुमान करवा योग्य छे. 'दुफासाई गिण्हइ' द्विस्पर्शानि-मृदु अने शीत के मृदु अने उष्णस्पर्शवाळां इत्यादि ग्रहण करे

१ भाषा योग्य द्रव्यो स्पर्शनी अपेक्षाए बे स्पर्शवाळां ग्रहण करे, यावत्-चार स्पर्शवाळां पण ग्रहण करे एम कह्युं, त्यां टीकाकार 'दुफासाइं गिण्हइ' ए मूलनी प्रतीक लइने मृदु अने शीत तथा मृदु उष्णादि इत्यादि बे स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे एम जणावे छे. त्यां मृदु अने शीत, मृदु अने उष्ण ए बे स्पर्श ज केम समजवो? कारण के स्निग्ध अथवा रूक्ष स्पर्शनो पण संभव छे, तो विचार करतां ते स्पर्श पण नथी एवुं नथी, वळी त्रिस्पर्शवाळा पुद्गलोना ग्रहण संबन्धे टीकाकार जणावे छे के त्रिस्पर्शा एवम्—कानिचिद् मृदुशीतस्पर्शानि, कानिचिद् मृदुस्निग्धस्पर्शानि। कोई मृदु अने शीतस्पर्शवाळां द्रव्य होय छे अने कोई मृदु अने स्निग्ध स्पर्शवाळां होय छे. एटले मृदुनो मृदुमां अन्तर्भाव करतां मृदु, शीत अने स्निग्ध एम त्रण स्पर्शवाळां द्रव्य होय छे. हवे अहीं प्रश्न ए थाय छे के भाषावर्गणानो

कोइ स्कन्ध केवळ मृदु अने शीत स्पर्शवाळो होय? तेमां रूक्ष के शीत स्पर्श केम न होय? कारण के स्निग्ध अने रूक्ष बेमांथी एक स्पर्श तो होवो जोइए. जो स्निग्ध न होय तो रूक्ष होय अने रूक्ष न होय तो स्निग्ध होय, शीत न होय तो उष्ण होय अने उष्ण न होय तो शीत होय एटले एक स्कन्धमां परस्पर विरोधी स्पर्श न होय, तेथी कोइपण रीते मृदुशीतस्पर्शवाळां के मृदुस्निग्धस्पर्शवाळां द्रव्य घटी शकता नथी, कारण के मृदु अने शीत स्पर्श होय त्यां स्निग्ध के रूक्ष स्पर्श होवो जोइए, अने मृदु स्निग्ध स्पर्श होय त्यां शीत के उष्ण स्पर्श होवो जोइए. एटले बे स्पर्शवाळां के त्रण स्पर्शवाळां द्रव्यो घटी शकतां नथी. कदाच एम मानीए के मृदु अने लघु स्पर्श अवस्थित होवाथी तेनी गणना न करीए तोपण उपर कह्या प्रमाणे मृदु अने शीत अने मृदु अने उष्णरूप बे स्पर्शवाळां द्रव्यो घटता नथी, तेम त्रिस्पर्शवाळा द्रव्योना ग्रहण प्रसंगे मृदुशीतस्पर्शवाळा अने मृदुस्निग्धस्पर्शवाळा द्रव्यो घटतां नथी. लोकप्रकाशमां कह्युं छे के–

'तैजसाद्या वर्गणा अप्येव वर्णादिभिः स्मृताः। स्पर्शास्तु चतुःस्पर्शास्तेषां मृदुलघु ध्रुवौ। अन्यौ द्वौ च स्निग्धशीतौ स्निग्धोष्णौ वा प्रकीर्तितौ। रूक्षोष्णौ रूक्षशीतौ वा विज्ञेयौ यथागमम्॥ अयं पञ्चसंग्रहवृत्तिशतकबृहट्टीकाद्यभिप्रायः, कर्मप्रकृतिप्रज्ञप्त्याद्यभिप्रायेण त्वेतासु स्निग्धरूक्षोष्णशीतरूपमेव स्पर्शचतुष्टयं स्यान्नान्यदिति"। लोकप्रकाश, सर्ग ३५. श्लो० ४३—४४.

अर्थ—तैजस, भाषा, श्वासोच्छ्वास, मन अने कार्मण वर्गणाओ पण वर्णादि वडे ए प्रमाणे छे. परन्तु स्पर्शनी अपेक्षाए चार स्पर्शवाळी छे, तेमां मृदु अने लघु ए बे स्पर्शो ध्रुव–अवस्थित छे अने बीजा स्निग्ध शीत अथवा स्निग्ध उष्ण अने रूक्ष उष्ण अथवा रूक्ष शीत स्पर्श होय छे ए विद्वानोए आगमने अनुसरी जाणवुं. आ प्रमाणे पञ्चसंग्रहवृत्ति अने शतकबृहट्टीका वगेरेनो अभिप्राय छे. कर्मप्रकृति अने भगवती सूत्रना अभिप्रायथी स्निग्ध, उष्ण, रूक्ष अने शीत ए चार ज स्पर्श होय छे. एटले भाषावर्गणाना कोइ स्कन्ध स्पर्शनी अपेक्षाए स्निग्ध अने शीत स्पर्शवाळो, स्निग्ध अने उष्ण, रूक्ष अने शीत अथवा रूक्ष अने उष्ण स्पर्शवाळो होय तो ते अपेक्षाए बे स्पर्शवाळा द्रव्य ग्रहण करे छे, पण त्रण स्पर्शवाळां द्रव्य ग्रहण करे छे एमां कया त्रण स्पर्श लेवा ए प्रश्न तो बाकी ज रहे छे. सर्व ग्रहण योग्य द्रव्यनी अपेक्षाए चार स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ए तो बरोबर छे. पण प्रत्येक स्कन्धनी अपेक्षाए त्रण स्पर्शवाळां द्रव्यो तो कोइपण रीते घटी शकतां नथी. तत्त्व बहुश्रुत गम्य छे.

गोयमा ! वण्णमंताइंपि जाव फासमंताइंपि गेण्हति । जाइं भावओ वण्णमंताइंपि गेण्हति ताइं किं एगवण्णाइं गेण्हति, जाव पंचवण्णाइं गेण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगवण्णाइंपि गेण्हति, जाव पंचवण्णाइंपि गेण्हति, सव्वग्गहणं पडुच्च णियमा पंचवण्णाइं गेण्हति, तंजहा—कालाइं नीलाइं लोहियाइं हालिद्दाइं सुक्कि-

के स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! वर्णवाळा पण ग्रहण करे छे अने यावत् स्पर्शवाळां पण ग्रहण करे छे. जे भावथी वर्णवाळां ग्रहण करे छे ते शुं एक वर्णवाळा ग्रहण करे छे के यावत् पांच वर्णवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण द्रव्यो–ग्रहण योग्य प्रत्येक द्रव्योने आश्रयी एकवर्णवाळां पण यावत् पांचवर्णवाळा पण ग्रहण करे छे. सर्व ग्रहणयोग्य द्रव्योने आश्रयी अवश्य पांचवर्णवाळां

छे 'जाव चउफासाइं' यावत्–चार स्पर्शवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे तेमां यावत् आश्रयी त्रण स्पर्शवाळा द्रव्योने ग्रहण करे छे. त्रण स्पर्शवाळा द्रव्यो आ प्रमाणे छे–केटलाक द्रव्यो मृदु अने शीत स्पर्शवाळा छे अने केटलाक मृदु अने स्निग्ध स्पर्शवाळा छे तेमां मृदुस्पर्शनो मृदुस्पर्शमां समावेश थाय छे माटे एक स्पर्श, अने शीत अने स्निग्धरूप बे अन्य स्पर्शो एम समुदायने आश्रयी त्रण स्पर्शवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे एम बीजा स्पर्शोनो योग होय तोपण त्रण स्पर्शवाळां द्रव्यो जाणवां केटलाक चार स्पर्शवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे तेमां चार स्पर्शमां मृदु अने लघुरूप बे स्पर्शो अवस्थित छे, कारण के सूक्ष्म स्कन्धोमां ते अवश्य होय छे अने बीजा बे स्निग्ध अने उष्ण, स्निग्ध अने शीत, रूक्ष अने उष्ण, रूक्ष अने शीत स्पर्श होय छे सर्व समुदायनी अपेक्षाए अवश्य ते चार स्पर्शवाळा द्रव्य ग्रहण करे छे तेमां मृदु अने लघु ए बे स्पर्शो अवस्थित छे अने अवस्थित होवाथी व्यभिचारना (अनियतपणाना) अभावथी अर्थात्–निश्चित होवाथी गणाता नथी, ते सिवाय बीजा स्निग्धादि चार स्पर्शो विकल्पे होय छे–तेने आश्रयी सूत्र कहे छे 'शीतस्पर्शवाळा ग्रहण करे छे, (उष्ण स्पर्शवाळा, स्निग्ध स्पर्शवाळा अने रूक्ष स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे) इत्यादि यावत्–'जाइं भंते !

ल्लाइं । जाइं वण्णतो कालाइं गेण्हति ताइं किं एगगुणकालाइं गेण्हति, जाव अणंतगुणकालाइं गिण्हति? गोयमा! एगगुणकालइंपि गिण्हति, जाव अणंतगुणकालाइंपि गेण्हति । एवं जाव सुक्किल्लाइंपि । जाइं भावतो गंधमंताइं गिण्हति ताइं किं एगगंधाइं गिण्हति, दुगंधाइं गिण्हति? गोयमा! गहणदव्वाइं पडुच्च एगगंधाइंपि दुगंधाइंपि गिण्हति, सव्वग्गहणं पडुच्च नियमा दुगंधाइं गिण्हति। जाइं गंधतो सुब्भिगंधाइं गिण्हति ताइं किं

द्रव्यो ग्रहण करे छे. ते आ प्रमाणे–काळां, नील–लीलां, लोहित–रातां हारिद्र–पीळां अने शुक्ल–धोळां. जे वर्णथी काळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकगुणा काळां द्रव्यो ग्रहण करे छे के यावत् अनन्तगुण काळां द्रव्यो ग्रहण करे छे? हे गौतम! एकगुण काळां द्रव्यो ग्रहण करे छे, यावत् अनन्तगुणा काळां द्रव्यो पण ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे शुक्ल द्रव्यो सुधी जाणवुं. भावथी जे गंधवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकगंधवाळां ग्रहण करे छे के बेगंधवाळां ग्रहण करे छे? हे गौतम! ग्रहण योग्य प्रत्येक द्रव्योने

अणंतगुणलुक्खाइं गेण्हइ' 'हे भगवन्! जे यावत् अनन्तगुण रूक्ष द्रव्योने ग्रहण करे छे' त्यां सुधी सुगम छे. अहीं हमणां आ छेल्लुं सूत्र कह्युं के—अनन्तगुण रूक्ष द्रव्योने पण ग्रहण करे छे अने त्यारपछी सूत्रना संबन्धथी आ कह्युं के-'हे भगवन्! जे यावत् अनन्तगुण रूक्ष द्रव्योने ग्रहण करे छे.' अहीं यावत् शब्दवडे हे भगवन्! जे एकगुण काळावर्णवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे'-इत्यादि जाणवुं. हे भगवन्! ते द्रव्यो शुं स्पृष्ट-आत्मप्रदेशोवडे स्पर्श करायेला ग्रहण करे छे के नहि स्पर्श करायेला ग्रहण करे छे? भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम! आत्मप्रदेशो साथे स्पर्श करायेला ग्रहण करे छे, पण स्पर्श नहि करायेला ग्रहण करतो नथी. अहीं भाषा द्रव्योनो आत्मप्रदेशोनी साथे स्पर्श आत्मप्रदेशोना अवगाहना क्षेत्रथी बहार पण संभवे छे, माटे प्रश्न करे छे—हे भगवन्! इत्यादि. अवगाढ-आत्मप्रदेशो साथे एक क्षेत्रमां रहेला द्रव्यो ग्रहण करे छे पण तेथी बीजा अनवगाढ-भिन्न क्षेत्रमां रहेलां द्रव्य ग्रहण करतो

एगगुणसुब्भिगंधाइं गिण्हति, जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइंपि गिण्हति ? गोयमा ! एगगुणसुब्भिगंधाइंपि जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइंपि गेण्हइ । एवं दुब्भिगंधाइंपि गेण्हइ । जाइं भावतो रसमंताइं गेण्हति ताइं किं एगरसाइं गेण्हति, जाव किं पंचरसाइं गेण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगरसाइंपि गेण्हति जाव पंचरसाइंपि गेण्हति, सव्वग्गहणं पडुच्च नियमा पंचरसाइं गेण्हति । जाइं रसओ तित्तरसाइं गेण्हति ताइं किं एगगुणतित्तरसाइं गिण्हति, जाव अणंतगुणतित्तरसाइं गिण्हति ? गोयमा ! एगगुणतित्ताइंपि गिण्हइ, जाव अणंतगुणतित्ताइंपि गिण्हति, एवं जाव मधुररसो । जाइं भावतो फासमंताइं गेण्हति ताइं किं एगफासाइं गेण्हइ जाव

आश्रयी एकगंधवाळा के बे गंधवाळां ग्रहण करे छे अने ग्रहण योग्य सर्व द्रव्योने आश्रयी अवश्य बेगंधवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे. जे गंधथी सुरभिगंधवाळां ग्रहण करे छे ते शुं एकगुण सुरभिगंधवाळां के यावत् अनन्तगुण सुरभिगंधवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! एकगुण सुरभिगंधवाळां ग्रहण करे छे, यावत्–अनन्तगुण सुरभिगंधवाळा ग्रहण करे छे, ए प्रमाणे दुरभिगंधवाळां पण ग्रहण करे छे. भावथी जे रसवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकरसवाळां के यावत् पांच रसवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण योग्य प्रत्येक द्रव्योने आश्रयी एकरसवाळां के यावत्–पांच रसवाळां ग्रहण करे छे अने ग्रहण योग्य सर्व द्रव्योने आश्रयी अवश्य पांचरसवाळां ग्रहण करे छे. रसथी जे तिक्त रसवाळा ग्रहण करे छे ते शुं एकगुण तिक्त रसवाळा ग्रहण करे छे के यावत् अनन्तगुण तिक्तरसवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! एकगुण तिक्त रसवाळां के यावत् अनन्तगुण तिक्तरसवाळां ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे यावत् मधुरस सुधी जाणवु.

थी. जे अवगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे तेमां अनन्तरावगाढ–अन्तर सिवाय रहेला भाषाद्रव्योने ग्रहण करे छे पण परंपरावगाढ द्रव्योने

अट्ठफासाइं गिण्हति ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च णो एगफासाइं गेण्हति, दुफासाइं गिण्हइ, जाव चउफासाइं गेण्हति, णो पंचफासाइं गेण्हति, जाव नो अट्ठफासाइं गेण्हति, सव्वगहणं पडुच्च नियमा चउफासाइं गेण्हति, तंजहा-सीतफासाइं गेण्हति, उसिणफासाइं, निद्धफासाइं, लुक्खफासाइं गेण्हति। जाइं फासतो सीताइं गिण्हति ताइं किं एगगुणसीताइं गेण्हति, जाव अणंतगुणसीताइं गेण्हति ? गोयमा ! एगगुणसीताइंपि गेण्हति, जाव अणंतगुणसीताइंपि गेण्हति, एवं उसिणणिद्धलुक्खाइं जाव अणंतगुणाइंपि गिण्हति।

२५. जाइं भंते ! जाव अणंतगुणलुक्खाइं गेण्हति ताइं किं पुट्ठाइं गेण्हति, अपुट्ठाइं गेण्हति? गोयमा ! पुट्ठाइं

भावथी जे स्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकस्पर्शवाळां ग्रहण करे छे के यावत् आठ स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण योग्य (प्रत्येक) द्रव्योने आश्रयी एक स्पर्शवाळां ग्रहण करतो नथी, पण वे स्पर्शवाळां, यावत्-चार स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे, पांच स्पर्शवाळां के यावत्-आठस्पर्शवाळां ग्रहण करतो नथी. ग्रहण योग्य सर्व द्रव्योने आश्रयी अवश्य चार स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे. ते आ प्रमाणे -शीतस्पर्शवाळां उष्णस्पर्शवाळां, स्निग्धस्पर्शवाळां अने रुक्षस्पर्शवाळां ग्रहण करे छे. जे स्पर्शथी शीतस्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ते शुं एकगुण शीतस्पर्शवाळां के यावत् अनंतगुण शीत स्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ? हे गौतम! एकगुण शीतस्पर्शवाळा के यावत् अनन्तगुण शीतस्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष द्रव्यो संबंधे जाणवुं, यावत्-अनन्तगुण रुक्षस्पर्शवाळा द्रव्योने पण ग्रहण करे छे.

ग्रहण करतो नथी. भावार्थ ए छे के जे आत्मप्रदेशोने विषे जे भाषाद्रव्यो रहेलां छे ते आत्मप्रदेशो वडे तेज भाषाद्रव्योने ग्रहण करे छे,

गेण्हति, नो अपुट्ठाइं गेण्हति। जाइं भंते! पुट्ठाइं गेण्हति ताइं किं ओगाढाइं गेण्हति, अणोगाढाइं गेण्हति? गोयमा! ओगाढाइं गेण्हति, नो अणोगाढाइं गेण्हति। जाइं भंते! ओगाढाइं गेण्हति ताइं किं अणंतरोगाढाइं गेण्हति, परंपरोगाढाइं गेण्हति? गोयमा! अणंतरोगाढाइं गेण्हति, नो परंपरोगाढाइं गेण्हति। जाइं भंते! अणंतरोगाढाइं गेण्हति ताइं भंते! किं अणूइं गेण्हति, बायराइं गेण्हति? गोयमा! अणूइंपि गेण्हति, बायराइंपि गेण्हति। जाइं भंते! अणूइं गेण्हति ताइं किं उड्ढं गेण्हति, अधे गेण्हति, तिरियं गेण्हति? गोयमा! उड्ढंपि गेण्हति, अधेवि गेण्हति, तिरियंपि गेण्हति। जाइं भंते! उड्ढंपि गेण्हति, अधेवि गेण्हति, तिरियंपि गेण्हति

२५. हे भगवन्! जे यावत् अनन्तगुण रुक्ष द्रव्यो ग्रहण करे छे ते स्पृष्ट—आत्म प्रदेश साथे स्पर्शेला के अस्पृष्ट—नहि स्पर्शेला ग्रहण करे छे? हे गौतम! स्पर्शेला ग्रहण करे छे, पण नहि स्पर्शेला ग्रहण करतो नथी. हे भगवन्! जे स्पृष्ट द्रव्योने ग्रहण करे छे ते शुं अवगाढ (आत्मप्रदेशो साथे एक आकाश प्रदेशमां रहेला) ग्रहण करे छे के अनवगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे? हे गौतम! अवगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे पण अनवगाढ द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. हे भगवन्! जे अवगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं अनन्तरावगाढ (अन्तर सिवाय रहेला) के परंपरावगाढ (अन्तर—व्यवधान पूर्वक रहेला) द्रव्यो ग्रहण करे छे? हे गौतम! अनन्तरावगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे, पण परंपरावगाढ द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. हे भगवन्! जे अनन्तरावगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे ते अणु—थोडा

पण एक, बे, त्रण आत्मप्रदेशोने अन्तरे रहेला भाषाद्रव्योने ग्रहण करतो नथी. जे अनन्तरावगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे, ते अणु—थोडा प्रदेशवाळा पण ग्रहण करे छे अने बादर—घणा प्रदेशवाळा पण ग्रहण करे छे. अहीं अणुपणु अने बादरपणु आपवाने योग्य ते स्कन्धोना

ताइं किं आदिं गेण्हति, मज्झे गेण्हति,पज्जवसाणे गेण्हति ? गोयमा ! आदिंपि गेण्हति, मज्झेवि गेण्हति, पज्ज-वसाणेवि गेण्हति । जाइं भंते ! आदिंपि गिण्हति, मज्झेवि, गेण्हति, पज्जवसाणेवि गिण्हति ताइं किं सविसए गिण्हति, अविसए गिण्हति ? गोयमा ! सविसए गेण्हति,नो अविसए गेण्हति । जाइं भंते ! सविसए गेण्हति

प्रदेशवाळां ग्रहण करे छे के बादर-घणा प्रदेशवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अणु-सूक्ष्म पण ग्रहण करे छे अने बादर पण ग्रहण करे छे. हे भगवन् ! जे अणु-सूक्ष्म के बादर द्रव्यो ग्रहण करे छे ते ऊर्ध्व दिशाथी आवेलां, अधो दिशाथी आवेलां,के तिर्यग् दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे? हे गौतम ! ऊर्ध्व दिशाथी आवेलां, अधो दिशाथी आवेलां अने तिर्यग् दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे. हे भगवन् ! जे ऊर्ध्व, अधो के तिर्यग् दिशाथी आवेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं आदिमां (प्रथम समये), मध्यमां के अन्तमां (छेल्ला समये) ग्रहण करे छे? हे गौतम ! आदिमां, मध्यमां अने अन्ते ग्रहण करे छे. हे भगवन्! जे आदिमां, मध्ये अने अन्ते ग्रहण करे छे ते स्व विषय (स्पृष्ट अवगाढ अने अनन्तरावगाढ रूप) द्रव्योने ग्रहण करे छे के अविषयने ग्रहण करे छे ? हे गौतम! स्वविषयने ग्रहण

थोडा प्रदेश अने घणा प्रदेशनी अपेक्षाए समजवुं. कारण के मूळ टीकाकारे तेवा प्रकारनी व्याख्या करी छे.

जे अणुद्रव्योने पण ग्रहण करे छे ते ऊर्ध्व दिशाना, अधो दिशाना अने तिर्यग् दिशाना जाणवा. अहीं जेटला क्षेत्रमां जीवने ग्रहण योग्य भाषा द्रव्यो रहेलां छे, तेटला ज क्षेत्रमां उर्ध्वपणुं, अधोपणुं अने तिर्यक्पणुं समजवुं. 'जाइं भंते ! उड्ढंपि गेण्हइ' इत्यादि. जे भाषाद्रव्योनो ग्रहणयोग्य उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण काळ छे, तेने ते काळनी आदिमां-प्रथम समये पण ग्रहण करे छे,मध्ये-बीजा वगेरे समयोमां पण ग्रहण करे छे अने छेल्ले समये पण ग्रहण करे छे. 'जाइं भंते ! आदिंपि गेण्हइ' इत्यादि. जे आदिमां, मध्यमां अने अन्तमां जे द्रव्योने ग्रहण करे छे ते स्वविषय-स्पृष्ट, अवगाढ अने अनन्तरावगाढरूप द्रव्योने ग्रहण करे छे, परंतु अविषय-स्पृष्टादि सिवायना

ताइं किं आणुपुव्विं गेण्हति, अणाणुपुव्विं गेण्हति ? गोयमा ! आणुपुव्विं गेण्हति, नो अणाणुपुव्विं गेण्हति। जाइं भंते ! आणुपुव्विं गेण्हति ताइं किं तिदिसिं गेण्हति, जाव छद्दिसिं गेण्हति ? गोयमा ! नियमा छद्दिसिं गेण्हति। "पुट्ठोगाढअणंतर अणू य तह बायरे य उड्ढमहे। आदिविसयाणुपुव्विं णियमा तह छद्दिसिं चेव" ॥

करे छे, पण अविषयने ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे स्वविषय द्रव्योने ग्रहण करे छे, ते आनुपूर्वी–अनुक्रमे के अनानुपूर्वी (क्रम सिवाय) ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अनुक्रमे ग्रहण करे छे, पण क्रम सिवाय ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे अनुक्रमे ग्रहण करे छे ते शु त्रण दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे यावत् छ दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अवश्य छ दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे. "स्पृष्ट, अवगाढ, अनन्तर, अणु (सूक्ष्म), बादर, ऊर्ध्व, अधो, आदि, स्वविषय, आनुपूर्वी, अने अवश्य छ दिशाओने आश्रयी ग्रहण द्रव्य भाषा संबंधे कह्युं.

बीजा द्रव्योने ग्रहण करतो नथी 'जाइं भंते ! सविसए गेण्हइ' इत्यादि जे स्वविषयभूत द्रव्योने ग्रहण करे छे ते आनुपूर्वी वडे–ग्रहणनी अपेक्षाए जेम जेम नजीक होय ते क्रमथी ग्रहण करे छे, पण तेथी विपरीत क्रमथी ग्रहण करतो नथी

'जाइं भंते ! आणुपुव्विं गेण्हइ' इत्यादि हे भगवन् ! जे आनुपूर्वीथी ग्रहण करे छे ते त्रण दिशाथी आवेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे, यावत् चार दिशाथी आवेलां, पांच दिशाथी आवेलां के छ दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे ? एम गौतम स्वामीए प्रश्न कर्यो पछी भगवान् कहे छे–हे गौतम ! अवश्य छ दिशाथी आवेला द्रव्यो ग्रहण करे छे, कारण के भाषक–बोलनार अवश्य त्रस नाडीमां होय छे, अने ते सिवाय बीजे त्रस कायनो संभव नथी अने त्रस नाडीमां रहेलाने अवश्य छ दिशाओथी आवेला पुद्गलनो संभव छे ए पूर्वोक्त अर्थ संबंधे संग्रहणी गाथा कहे छे–'पुट्ठोगाढमणंतरं' इत्यादि प्रथम स्पृष्ट संबन्धी सूत्र, त्यारपछी अवगाढसूत्र, त्यारपछी

२६. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं संतरं गेण्हति, निरंतरं गेण्हति ? गोयमा ! संतरंपि गेण्हति, निरंतरंपि गेण्हति। संतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अंतरं कट्टु गेण्हति, निरंतरं गेण्हमाणे जहण्णेणं दो समए, उक्कोसेणं असंखेज्जसमये अणुसमयं अविरहियं निरंतरं गेण्हति। जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं णिसिरइ ताइं किं संतरं निसरइ, निरंतरं निसरइ ? गोयमा !

२६. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्यो भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं सान्तर (समयादिना अन्तर सहित) ग्रहण करे छे के निरंतर ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! सान्तर पण ग्रहण करे छे अने निरन्तर पण ग्रहण करे छे. सान्तर ग्रहण करतो जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्ट असंख्याता समयोनुं अन्तर करी ग्रहण करे छे अने निरन्तर ग्रहण करतो जघन्यथी बे समय अने उत्कृष्ट असंख्याता समयो सुधी प्रतिसमय निरंतर अविरहितपणे ग्रहण करे छे. हे भगवन् ! जीव भाषापणे ग्रहण करेलां जे द्रव्यो बहार काढे छे ते शुं सान्तर

अनन्तरावगाढसूत्र, ते पछी अणु अने बादर संबन्धी सूत्र, त्यारबाद ऊर्ध्व, अधो, तिर्यग् दिशा संबन्धी सूत्र, त्यारपछी 'आई' आदि मध्य अने अवसानसूत्र, त्यारपछी विषयसूत्र, त्यारबाद आनुपूर्वीसूत्र अने त्यारपछी 'नियमात्' अवश्य षड्दिशिसूत्र छे.

२६. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्यो भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं सान्तर (समयादिना अन्तर सहित) ग्रहण करे छे के निरंतर (समयादिना अन्तर सिवाय) ग्रहण करे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—सान्तर पण ग्रहण करे छे अने निरंतर पण ग्रहण करे छे, कारण के बन्ने प्रकारे ग्रहण करवानो संभव छे. तेमां सान्तर ग्रहण अने निरंतर ग्रहणना काळनुं प्रमाण बतावे छे—'संतरं गिण्हमाणे' इत्यादि. सान्तर ग्रहण करतो जघन्य एक समयनुं अन्तर करी ग्रहण करे छे. आ जघन्य एक समयनुं अन्तर निरंतर बोलवामां प्रवृत्त थयेला बोलनारने आश्रयी समजवुं, ते. आ प्रमाणे—एक समये भाषापुद्गलोने ग्रहण करी त्यार बाद मूकवाना समये

संतरं निसरइ, नो निरंतरं निसरइ । संतरं निस्सरमाणे एगेणं समएणं गेण्हति, एगेणं समएणं निसरइ, एतेणं गहणनिसरणोवाएणं जहन्नेणं दुसमइयं, उक्कोसेणं असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं गहणनिसरणोवायं करेति ।

काढे छे के निरंतर काढे छे ? हे गौतम ! सान्तर बहार काढे छे, पण निरन्तर काढतो नथी. सान्तर बहार काढतो एक समये ग्रहण करे छे अने एक समये बहार काढे छे. ए रीते ग्रहण अने निःसरण–बहार काढवा वडे जघन्य बे समय अने उत्कृष्ट असंख्यात समयना अन्तर्मुहूर्त सुधी ग्रहण अने निःसरण करे छे.

बीजा पुद्गलो ग्रहण कर्या सिवाय बीजा समये फरीथी ग्रहण ज करे छे, मूकतो नथी अने बीजा समये प्रथम समयमां ग्रहण करेला पुद्गलो मूके छे अने बीजा ग्रहण करतो नथी अहीं आशंका करे छे के 'अन्य प्रयत्नथी ग्रहण थाय छे अने अन्य प्रयत्नथी मूके छे, ते बन्ने ग्रहण अने निसर्ग प्रयत्न परस्पर विरुद्ध कार्य करवाथी परस्पर विरुद्ध छे, तो एक समये ते बे प्रयत्न केम होय ? ते आशंका अयुक्त छे कारण के जीवना तेवा प्रकारना स्वभावथी बे उपयोग एक समये होता नथी, परन्तु जे क्रियाओ छे ते घणी होय तो पण एक समये घटे छे, केमके तेवी रीते देखाय छे जेम के नृत्य करनारी एक छतां पण भ्रमणादि नृत्य करती एक समये पग हाथ वगेरेना विचित्र अभिनयो करती देखाय छे, वळी सर्व वस्तुओ पण प्रत्येक समये उत्पाद अने व्यय थाय छे अने एक ज समये संघात-भेळवुं अने परिशाट-जुदा पडवुं थाय छे माटे एक समये ग्रहण अने निसर्ग बे क्रियाओ मानवामां कोइ पण प्रकारनो दोष नथी ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे के—'परस्पर विरोधी एवा ग्रहण अने निसर्गरूप बे प्रयत्नो एक समये केम होय ? उत्तर- एक समये बे उपयोग न होय, पण अनेक क्रियाओ होवामां शो दोष छे' ? बीजा समये बीजा समये ग्रहण करेला तेज पुद्गलोने मूके छे अने बीजा ग्रहण करतो नथी पण सान्तर ग्रहण करे छे उत्कर्षथी तो असंख्याता समय सुधी निरन्तर ग्रहण करे छे कदाच बीजो कोइ असंख्याता समयमां थयेला ग्रहणने एक ग्रहण माने, तेथी कहे छे के 'प्रतिसमय ग्रहण करे छे' कदाचित् अन्तर पडतुं होय

२७. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं णिसिरति ताइं किं भिण्णाइं णिसरति, अभिण्णाइं णिसरति ? गोयमा ! भिन्नाइंपि निस्सरइ, अभिन्नाइंपि निस्सरइ । जाइं भिन्नाइं णिसरति ताइं अणंतगुणप-

२७. हे भगवन् ! जीव भाषापणे ग्रहण करेलां जे द्रव्यो बहार काढे छे ते भिन्न-भेदायेलां काढे छे के अभिन्न-नहि भेदायेलां काढे छे ? हे गौतम ! भिन्न पण काढे छे अने अभिन्न पण काढे छे. जे भिन्न द्रव्योने काढे छे, ते अनन्तगुणा वृद्धिथी वधतां लो-

तो पण व्यवहारथी 'प्रतिसमय ग्रहण करे छे' एम कहेवाय, तेथी ते आशंका दूर करवा माटे 'अविरहितपणे निरंतर ग्रहण करे छे' एम कह्युं छे. तेमां प्रथम समये पुद्गलोनुं ग्रहणमात्र होय छे, पण मूकवानुं होतुं नथी. कारण के ग्रहण कर्या सिवाय निसर्ग होतो नथी. छेल्ले समयये मूकवानुं ज होय छे. कारण के बोलवानी इच्छा बंध थतां ग्रहणनो संभव नथी. बाकीना बीजा त्रीजा वगेरे समयोमां ग्रहण अने निसर्ग-मूकवुं बन्ने एक समये थाय छे. स्थापना—

ग्र.	ग्र.	ग्र.	ग्र.	ग्र.	०
०	नि.	नि.	नि.	नि.	नि.

२७. 'जीवा णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं निसरइ'—हे भगवन् ! जीवो भाषापणे ग्रहण करेलां जे द्रव्यो मूके छे-इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तर—'सान्तरं निसृजति' सान्तर मूके छे पण निरन्तर मूकतो नथी. तेनो आ भावार्थ छे—अहीं प्रथम भाषा द्रव्यनुं ग्रहण निरन्तर कह्युं, कारण के-'अणुसमयं अविरहियं निरंतर गेण्हइ' प्रतिसमय अविरहितपणे निरंतर ग्रहण करे छे-एम हमणां ज सूत्र कह्युं, तेथी निसर्ग-मूकवुं पण प्रथम सिवायना बाकीना समयोमां निरंतर मानवुं जोइए, कारण के ग्रहण कर्या पछीना समये अ-वश्य निसर्ग-मूकवानुं होय छे. माटे 'सान्तरं निसृजति नो निरन्तरम्' इति-सान्तर मूके छे, निरंतर मूकतो नथी, ए ग्रहणनी अपेक्षाए समजवुं. ते आ प्रमाणे—जे समये जे भाषाद्रव्यो ग्रहण करे छे तेने ते समये मूकतो कथी. जेम के प्रथम समये ग्रहण करेलां भाषाद्रव्यो तेज प्रथम समये मूकतो नथी, पण पूर्व पूर्वना समये ग्रहण करेला पछी पछीना समये मूके छे. माटे निसर्ग ग्रहण पूर्वक

रिवुङ्गीणं परिखुङ्गमाणाइं लोयंतं फुसन्ति, जाइं अभिण्णाइं निसरइ ताइं असंखेज्जाओ ओगाहणवग्गणाओ गंता भेदमावज्जति, सखेज्जाति जोअणाति गंता विद्धंसमागच्छंति ।

कान्तनो स्पर्श करे छे. जे अभिन्न द्रव्यो काढे छे ते असंख्याती अवगाहनावर्गणा (असंख्य प्रदेशात्मक क्षेत्रना विभागरूप) पर्यन्त जइने भेदाय छे, अने पछी संख्याता योजनो सुधी जइने विनाश पामे छे.

होय छे, कारण के ग्रहण कर्या सिवाय निसर्ग होतो नथी, माटे सान्तर निसर्ग कह्यो छे ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे—प्रतिसमय निरन्तर ग्रहण करवानु कह्यु छे, तो मूकवानु पण निरंतर कहेवु जोइए, तो सान्तर (अन्तर पूर्वक) मूकवानु केम कह्यु ? उत्तर—ग्रहणनी अपेक्षाए मूकवु सान्तर कह्यु छे, कारण के जे समये जे भाषाद्रव्यो ग्रहण करेला छे तेने ते समये निरन्तर मूकतो नथी, जेम प्रथम समये (ग्रहण करे छे पण) मूकतो नथी. ग्रहण कर्या सिवाय मूकतो नथी माटे ग्रहणनु अन्तर होवाथी सान्तर मूके छे तात्पर्य ए छे के ग्रहणनी अपेक्षाए निसर्ग सान्तर छे अने समयनी अपेक्षाए निरन्तर छे, कारण के द्वितीयादि बधा समयोमां निरन्तर निसर्ग होय छे, एज बाबत सूत्रकार स्पष्ट करे छे–'संतर निसरमाणो एगेणं समएणं गेण्हइ, एगेणं समएणं निसरइ' इति–सान्तरपणे ग्रहण करतो एक समये–पूर्व पूर्वना समये ग्रहण करे छे अने एक समये–पछी पछीना समये मूके छे अथवा ग्रहणनी अपेक्षाए निसर्ग–मूकवानु होवाथी एक समये–प्रथम समये ग्रहण ज करे छे, पण मूकतो नथी, कारण के ग्रहण कर्या सिवाय मूकवानु होतु नथी अने एक छेल्ला समये मूके ज छे, पण ग्रहण करतो नथी कारण के बोलवानी इच्छा बन्ध थता भाषावर्गणाना ग्रहणनो समय नथी, बाकीना द्वितीयादि समयोमां एक साथे ग्रहण अने निसर्ग करे छे ते निरन्तर जघन्यथी बे समय सुधी अने उत्कर्षथी असंख्याता समयसुधी होय छे एज बाबत सूत्रकार कहे छे–'एतेणं गहणनिसरणोवाएणं जहण्णेणं दुसमइयं, उक्कोसेणं असंखिज्जसमइयं अन्तोमुहुत्तिगं गहणनिसिरणं करेइ–'आ ग्रहण अने निसर्गना उपाय–प्रयत्न वडे जघन्य बे समय सुधी अने उत्कृष्ट असंख्यातसमयना परिमाणवाळा अन्तर्मुहूर्त सुधी ग्रहण अने निसर्ग करे छे. 'जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं'–हे भगवन् ! जीवे भाषापणे ग्रहण

२८. तेसि णं भंते ! दव्वाणं कतिविहे भेए पण्णत्ते ? गोयमा ! पञ्चविधे भेदे पन्नत्ते । तंजहा-खंडाभेदे,

२८. हे भगवन् ! ते द्रव्योनो भेद केटला प्रकारनो कहेलो छे ! हे गौतम ! पांच प्रकारनो भेद कहेलो छे. ते आ प्रमाणे—१

करेलां जे द्रव्यो मूके छे, ते भिन्न मूके छे के अभिन्न मूके छे-इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे-'हे गौतम ! भिन्न-भेदायेलां पण मूके छे अने अभिन्न-नहि भेदायेलां पण मूके छे. अहीं आ भावार्थ छे-वक्ताना बे प्रकार छे-मन्दप्रयत्नवाळो अने तीव्रप्रयत्नवाळो. तेमां जे व्याधिविशेषथी के अनादरथी मन्दप्रयत्नवाळो छे ते तेवाज प्रकारना स्थूल खंडवाळां भाषा द्रव्यो मूके छे अने जे आरोग्यादिगुणयुक्त अने तथाविध आदरभावथी तीव्रप्रयत्नवाळो छे ते भाषाद्रव्योने ग्रहण अने मूकवाना प्रयत्नवडे अनेक खंड करीने मूके छे. ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे—"कोइ मन्दप्रयत्नवाळो वक्ता सकल-संपूर्ण नहि भेदायेलां सर्व द्रव्योने मूके छे अने बीजो तीव्रप्रयत्नवाळो भाषाद्रव्योने भेदीने-खंडो करीने मूके छे. ते माटे कह्युं छे के 'भिन्नाइंपि निसिरइ, अभिन्नाइंपि निस्सरइ, जाइं भिन्नाइं निसरइ'-भेदायेलां पण मूके छे अने नहि भेदायेलां पण मूके छे. तीव्रप्रयत्नवाळो वक्ता प्रथमथी ज जे भेदायेलां भाषाद्रव्योने मूके छे ते सूक्ष्म होवाथी अने घणां होवाथी घणां अन्य द्रव्योने वासित करे छे, अने ते अन्य द्रव्योने वासित करतां होवाथी अनन्तगुणवृद्धिथी वधतां छ ए दिशाए लोकान्तनो स्पर्श करे छे. ए संबन्धे कह्युं छे के ते 'भेदायेलां द्रव्यो सूक्ष्म होवाथी अनन्तगुण वृद्धिवडे लोकान्तने प्राप्त थाय छे, अने भाषावडे निरंतर लोकने पूर्ण करे छे. मन्दप्रयत्नवाळो वक्ता पूर्वे जेवा प्रकारनां जे भाषाद्रव्यो हतां तेवाज प्रकारना बधां अभिन्न-नहि भेदायेलां द्रव्योने भाषापणे परिणमावी मूके छे अने ते असंख्याती अवगाहनावर्गणा सुधी जइने भेदाय छे. एटले एक एक भाषाद्रव्यना आधारभूत असंख्यप्रदेशात्मक क्षेत्रना विभाग रूप अवगाहनाओना असंख्याता वर्गणा-समुदायो ओळंगी पछी ते भाषा द्रव्यो अने भेदाय छे ते भेदायेला भाषा द्रव्यो संख्याता योजन सुधी जइने नाश पामे छे-शब्दपरिणामनो त्याग करे छे. कह्युं छे के "अभिन्न भाषाद्रव्यो असंख्याती अवगाहना वर्गणा सुधी जइने भेदाय छे अने त्यार पछी संख्याता योजन पर्यन्त जइने नाश पामे छे."

पयराभेदे, चुण्णियाभेदे, अणुतडियाभेदे, उक्करियाभेदे। से किं तं खंडाभेदे? २ जण्णं अयखंडाण वा तउखंडाण वा तंबखंडाण वा, सीसखंडाण वा रययखंडाण वा जातरूवखंडाण वा खंडएण भेदे भवति से तं खंडाभेदे १। से किं तं पयराभेदे? २ जण्णं वंसाण वा वेत्ताण वा नलाण वा कदलीथंभाण वा अब्भपडलाण वा पयरेणं भेदे भवति, से तं पयराभेदे २। से किं तं चुण्णियाभेदे? २ जण्णं तिलचुण्णाण वा मुग्गचुण्णाण वा मासचुण्णाण वा पिप्पलीचुण्णाण वा मिरीयचुण्णाण वा सिंगबेरचुण्णाण वा चुण्णियाए भेदे भवति से तं चुण्णियाभेदे ३। से किं तं

खंडभेद, २ प्रतरभेद, ३ चूर्णिकाभेद, ४ अनुतटिकाभेद अने ५ उत्करिकाभेद. हे भगवन्! खंडभेद केवा प्रकारनो छे? हे गौतम! जे लोढाना खंडोनो, जसतना खंडोनो, त्रांबाना खंडोनो, सीसाना खंडोनो, रूपाना खंडोनो, के सुवर्णना खंडोनो खंडरूपे-टुकडारूपे भेद थाय ते खंडभेद. हे भगवन्! प्रतरभेद केवा प्रकारनो छे? जे वांसनो, नेतरनो, नडनो, केळना स्तंभनो के अबरखना पडोनो प्रतर-पडरूपे भेद छे ते प्रतरभेद. हे भगवन्! चूर्णिकाभेद केवा प्रकारनो छे? हे गौतम! जे तलना चूर्णोनो, मगना चूर्णोनो, अडदना चूर्णोनो, पीपरना चूर्णोनो, मरीना चूर्णोनो के सुंठना चूर्णोनो चूर्णरूपे भेद थाय ते चूर्णिकाभेद. हे भगवन्!

२८. 'भेद पामेलां पण भाषाद्रव्यो मूके छे' एम कह्युं, तेमां शब्दद्रव्यनो भेद केटला प्रकारनो छे-ए संबन्धे प्रश्न करे छे-'तेसि णं भंते! दव्वाणं कइविहे भेए-हे भगवन्! ते द्रव्योनो केटला प्रकारनो भेद कहेलो छे' इत्यादि तेमां लोढाना खंड वगेरेनी पेठे खंडभेद, अबरख अने भोजपत्रादिनी पेठे प्रतरभेद, फेंकेला चूर्णनी पेठे चूर्णिकाभेद, शेरडीनी छाल वगेरेनी जेम अनुतटिकाभेद अने धुति-फानना आवर्तनी? जेम उत्करिकाभेद जाणवो. ए भेदोनी व्याख्या करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रश्न अने उत्तरसूत्रो कहे छे—

अणुतडियाभेदे ? २ जण्णं अगडाण वा तडागाण वा दहाण वा नदीण वा वावीण वा पुक्खरिणीण वा दीहियाण वा गुंजालियाण वा सराण वा सरसराण वा सरपंतियाण वा सरसरपंतियाण वा अणुतडियाभेदे भवति, से तं अणुतडियाभेदे ४ । से किं तं उक्करियाभेदे ? २ जण्णं मूसाण वा मंडूसाण वा तिलसिंगाण वा मुग्गसिंगाण वा मासर्सिगाण वा एरंडबीयाण वा फुट्टिया उक्करियाए भेदे भवति, से तं उक्करियाभेदे ५ ।

२९. एएसि णं भंते ! दव्वाणं खंडाभेएणं पयराभेदेणं चुण्णियाभेदेणं अणुतडियाभेदेणं उक्करियाभेदेण य

अनुतटिकाभेद केवा प्रकारनो छे ? जे कूवा, तळावो, द्रहो, नदीओ, वावो, पुश्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ, सरोवरो, सरःसरोवरो, सरःपंक्तिओ के सरःसरःपंक्तिओनो अनुतटिकारूपे भेद थाय छे ते अनुतटिकाभेद. उत्करिकाभेद केवा प्रकारनो छे ? जे मूस-मस्रर, मंडूस, तलनी सिंगो, मगनी सिंगो, अडदनी सिंगो के एरंडाना बीजोनो फुटीने उत्करीकारूपे भेद थाय छे ते उत्करिकाभेद.

२९. हे भगवन् ! खंडभेद, प्रतरभेद, चूर्णभेद, अनुतटिकाभेद अने उत्करिकाभेदथी भेद पामतां ए द्रव्योमां कया द्रव्यो

'से किं तं खंडाभेदे ?' 'खंडभेद केवा प्रकारनो छे' इत्यादि पाठसिद्ध छे, परंतु अनुतटिका भेदमां कूवा, तळावो, ह्रदो ए बधा प्रसिद्ध छे, नद्दीओ-पर्वतनी नदीओ वगेरे, वावो-चतुष्कोण आकारवाळी, पुष्करिणीओ-गोळ आकृतिवाळी, दीर्घिका-सीधी नदीओ, गुञ्जालिका -वक्र नदीओ, घणां एकलां पुष्पप्रकरनी जेम छुटां सरोवरो, अने ते एक एक श्रेणिमां रहेलां होय ते सरःपंक्तिओ कहेवाय छे. श्रेणिवद्ध रहेलां सरोवरोमां कुवानुं पाणी प्रणाली-नीकद्वारा जाय ते सरःसरःपंक्ति कहेवाय छे. ए सिवाय बीजा अप्रसिद्ध भेदो लोकथी जाणी लेवा.

२९-३२. ए भेदवाळा द्रव्योनुं अल्पबहुत्व सूत्रना प्रामाण्यथी ते प्रमाणे ज मानवुं, कारण के ते युक्तिनो विषय नथी. बाकीना

भिज्जमाणाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा, विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवाइं दव्वाइं उक्कारियाभेदेणं भिज्जमाणाइं, अणुतडियाभेएणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, चुण्णियाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, पयराभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, खंडाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं ।

१०. नेरइए णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति अठियाइं गेण्हति ? गोयमा ! एवं चेव, जहा जीवे वत्तव्वया भणिया तहा नेरइयस्सवि जाव अप्पाबहुयं । एवं एगिंदियवज्जो दंडतो जाव वेमाणिता । जीवा णं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति अठियाइं गेण्हति ? गोयमा !

कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! उत्करिका भेद वडे भेद पामतां सौथी थोडा द्रव्यो छे, तेथी अनुतटिका भेद वडे भेदातां अनन्तगुणा छे, तेथी चूर्णिका भेद वडे भेदातां अनन्तगुण छे, तेथी प्रतर भेद वडे भेदातां अनन्तगुण छे अने तेथी खंडभेद वडे भेदातां अनन्तगुण छे.

१०. हे भगवन् ! नैरयिक जे द्रव्योने भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थिर द्रव्योने ग्रहण करे छे के अस्थिर द्रव्योने ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! जेम जीव संबन्धे वक्तव्यता कही छे तेम नैरयिकने पण यावत् अल्पबहुत्व सुधी कहेवी. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवायनो दंडक यावत् वैमानिक सुधी जाणवो. हे भगवन् ! जीवो जे द्रव्योने भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थित-स्थिर रहेलां ग्रहण करे छे

यथा सूत्रो पाठसिद्ध छे, यावत्-हे भगवन् ! केटला प्रकारना वचन कहेलां छे 'पुरुष' ए एकवचन छे 'पुरुषो-बे पुरुषो ए द्विवचन छे अने 'पुरुषा' अनेक पुरुषो ए बहुवचन छे. 'आ स्त्री' ए स्त्रीवचन, 'आ पुरुष' ए पुरुषवचन अने 'आ कुंड' ए नपुंसकवचन

एवं चेव, पुहुत्तेणवि णेतव्वं, जाव वेमाणिया २। जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति अठियाइं गेण्हति ? गोयमा ! जहा ओहियदंडओ तहा एसोऽवि, णवरं विगलिंदिया ण पुच्छिज्जंति । एवं मोसाभासाएवि, सच्चामोसाभासाएवि, असच्चामोसाभासाएवि एवं चेव, नवरं असच्चामोसाभासाए विगलिंदिया पुच्छिज्जंति इमेणं अभिलावेणं–विगलिंदिए णं भंते ! जाइं दव्वाइं असच्चामोसाभासाए गिण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ अठियाइं गेण्हइ ? गोयमा ! जहा ओहियदंडओ, एवं एए एगत्तपुहुत्तेणं दस दंडगा। भाणियव्वा ।

के अस्थित–अस्थिर रहेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! बहुवचन वडे पण एमज यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्योने सत्यभापापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थित द्रव्योने ग्रहण करे छे के अस्थित द्रव्योने ग्रहण करे छे ? जेम सामान्य दंडक कह्यो तेम आ पण जाणवो, परन्तु विकलेन्द्रियो संबन्धे न पूछवुं. ए प्रमाणे मृपा भापा, सत्यमृपा भापा अने असत्यामृपा भापा संबन्धे जाणवुं, परन्तु असत्यामृपा भापा वडे आ अभिलाप–पाठ वडे विकलेन्द्रियो पूछवा. हे भगवन् ! विकलेन्द्रिय जे द्रव्योने असत्यमृपा भापापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थिर रहेलां ग्रहण करे छे के अस्थिर रहेलां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! जेम सामान्य दंडक कह्यो छे तेम जाणवुं. ए प्रमाणे एकवचन अने बहुवचन वडे ए दस दंडको कहेवा.

मनमां बीजुं राखीने छेतरवानी बुद्धिथी बीजुं ज कहेवानी इच्छावाळो जलदीथी जे मनमां छे ते ज बोले ते अध्यात्मवचन. उपनीतवचन–प्रशंसानुं वचन, जेमके आ स्त्री रूपाळी छे, अपनीतवचन–निन्दात्मक वचन, जेमके आ कद्रूपी स्त्री छे, उपनीतापनीतवचन–

२१. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गिण्हति ताइं किं सच्चभासत्ताए निसिरइ, मोसभासत्ताए निसरइ, सच्चामोसभासत्ताए निसरति, असच्चामोसभासत्ताए निसरइ ? गोयमा ! सच्चभासत्ताए निसरइ, नो मोसभासत्ताए निसरति, नो सच्चामोसभासत्ताए निसरति, नो असच्चामोसभासत्ताए निसरइ । एवं एगिंदियविगलिंदियवज्जो दंडओ जाव वेमाणिया । एवं पुहुत्तेणवि । जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं मोसभासत्ताए गिण्हति ताइं किं सच्चभासत्ताए निसरति, मोसभासत्ताए, सच्चामोसभासत्ताए, असच्चामोसभासत्ताए निसरइ ? गोयमा ! नो सच्चभासत्ताए निसरति, मोसभासत्ताए निसरति, णो सच्चामोसभासत्ताए, णो असच्चामोसभासत्ताए निसरति । एवं सच्चामोसभासत्ताएवि । असच्चामोसभासत्ताएवि एवं चेव, नवरं असच्चामोसभासत्ताए

२१. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्यो सत्य भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं सत्य भाषापणे, मृषा भाषापणे, सत्यमृषा भाषापणे के असत्यामृषा भाषापणे मूके छे ? हे गौतम ! सत्य भाषापणे मूके छे, पण असत्य भाषापणे, सत्यमृषा भाषापणे के असत्यामृषा भाषापणे मूकतो नथी. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रिय सिवायनो दंडक यावत् वैमानिक सुधी कहेवो. एम बहुवचन वडे पण जाणवुं. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्योने मृषा भाषापणे ग्रहण करे छे तेने शुं सत्य भाषापणे, मृषा भाषापणे, सत्यमृषा भाषापणे के असत्यामृषा भाषापणे मूके छे ? हे गौतम ! मृषा भाषापणे मूके छे, पण सत्य भाषापणे, सत्यमृषा भाषापणे के असत्यामृषा भाषापणे मूकतो नथी. ए प्रमाणे सत्यमृषा भाषापणे अने असत्यामृषा भाषापणे पण एमज समजवुं, परन्तु असत्यामृषाभाषापणे विकलेन्द्रियो संबन्धे तेमज पूछवुं. जे भाषापणे जे प्रशंसा करीने निंदे, जेमके 'आ स्त्री रूपाळी छे पण दुराचारिणी छे' अपनीतोपनीतवचन जे-निंदा करीने प्रशंसा करे, जेमके

विगलिंदिया तहेव पुच्छिज्जंति, जाए चेव गिण्हति ताए चेव निसरति। एवं एते एगत्तपुहुत्तिया अट्ठ दंडगा भाणियव्वा।

३२. कतिविहे णं भंते! वयणे पन्नत्ते? गोयमा! सोलसविहे वयणे पन्नत्ते, तंजहा—एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे, इत्थिवयणे, पुमवयणे, णपुंसगवयणे, अज्झत्थवयणे, उवणीयवयणे, अवणीयवयणे, उवणीयावणीयवयणे, अवणीयोवणीयवयणे, तीतवयणे, पडुप्पन्नवयणे, अणागयवयणे, पच्चक्खवयणे, परोक्खवयणे। इच्चेइतं भंते! एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वदमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा? हंता! गोयमा!

ग्रहण करे छे ते भाषापणे मूके छे. ए प्रमाणे एकवचन अने बहुवचन संबन्धी ए आठ दंडको कहेवा.

३२. हे भगवन्! केटला प्रकारना वचन कह्यां छे? हे गौतम! सोळ प्रकारना वचनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—१ एकवचन, २ द्विवचन, ३ बहुवचन, ४ स्त्रीवचन, ५ पुरुषवचन, ६ नपुंसकवचन, ७ अध्यात्मवचन, ८ उपनीतवचन, ९ अपनीतवचन, १० उपनीतापनीतवचन, ११ अपनीतोपनीतवचन, १२ अतीतवचन, १३ प्रत्युत्पन्नवचन, १४ अनागतवचन, १५ प्रत्यक्षवचन अने १६ परोक्षवचन. ए प्रमाणे ए एकवचन यावत् परोक्षवचनने बोले ते प्रज्ञापनी भाषा छे? ए भाषा मृषा नथी? हे गौतम! अवश्य

'आ स्त्री कद्रूपी छे, पण सुशील छे.' अतीतवचन-भूतकाळनुं वचन, जेमके 'कर्युं' इत्यादि. प्रत्युत्पन्नवचन-वर्तमानकालनुं वचन, जेमके 'करे छे' वगेरे. अनागतवचन-जेमके 'करशे' वगेरे. प्रत्यक्षवचन-जेमके 'आ छे'. परोक्षवचन-जेमके ते वगेरे. ए सोळे वचनो यथावस्थित वस्तु संबन्धे जाणवा, पण काल्पनिक न समजवा. माटे एने सम्यक् उपयोगपूर्वक कहे त्यारे ते भाषा प्रज्ञापनी जाणवी. ते बावत

इच्चेइतं एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वदमाणे पण्णवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।

३३. कति णं भंते ! भासज्जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासज्जाया पन्नत्ता, तंजहा—सच्चमेगं भासज्जायं, बितियं मोस भासज्जातं, तइयं सचामोसं भासज्जातं, चउत्थं असच्चामोस भासज्जातं । इच्चेइयाइं भंते ! चत्तारि भासज्जायाइं भासमाणे किं आराहते विराहते ? गोयमा ? इच्चेइयाइं चत्तारि भासज्जायाइं आउत्तं भासमाणे आराहते, नो विराहते, तेण पर असंजतअविरयअपडिहतअपच्चक्खायपावकम्मे सच्चं भासं भासतो मोसं

ए प्रमाणे ए एकवचन, यावत् परोक्ष वचन बोले ते प्रज्ञापनी भापा छे, ए भापा असत्य नथी.

३३ हे भगवन् ! केटला भापाना प्रकारो कह्या छे? हे गौतम! भापाना चार प्रकारो कह्या छे, ते आ प्रमाणे, एक सत्य भापा, बीजी मृपा भापा, त्रीजी सत्यमृपा अने चोथी असत्यामृपा. हे भगवन्! ए प्रमाणे ए चार भापाना प्रकारो बोलनार आराधक छे के विराधक छे ? हे गौतम ! ए प्रमाणे ए चार भापाना प्रकारने सावधानपणे बोलतो आराधक छे, पण विराधक नथी. ते सिवाय बीजो असयत, विरतिरहित, जेओनु पापकर्म अप्रतिहत अने अप्रत्याख्यात छे एवो सत्यभापा बोलतो, असत्य, सत्यमृपा के असत्यामृपा भापा बोलतो

सूत्रकार कहे छे—'हे भगवन् ! ए प्रमाणे एकवचन द्विवचन' इत्यादि तेना अर्थनी भावना करी, अक्षरार्थ स्पष्ट छे

३३. 'हे भगवन् ! केटला भापाना प्रकार छे' इत्यादि सुगम छे, परंतु आयुक्त-सावधानपणे बोलतो-सम्यक् प्रवचननी मलिनतादिने दूर करवामां तत्परपणे बोलतो होय, ते आ प्रमाणे-प्रवचननी निन्दाना रक्षणादि निमित्ते गौरव अने लाघवनो विचार करी असत्य पण बोलनार साधु आराधक छे, जे सावधानतापूर्वक बोले छे ते सिवाय अन्य असंयत-मन, वचन अने कायना संयम रहित, अविरत-

वा सच्चामोसं वा असच्चामोसं वा भासं भासमाणे नो आराहते, विराहते ।

३४. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सच्चभासगाणं मोसभासगाणं सच्चामोसभासगाणं असच्चामोसभासगाणं अभासगाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा

आराधक नथी, पण विराधक छे.

३४. हे भगवन् ! ए सत्यभाषी, मृषाभाषी, सत्यमृषाभाषी के असत्यामृषाभाषी जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो सत्यभाषी छे, तेथी सत्यमृषाभाषी असंख्यातगुणा छे, तेथी मृषाभाषी असंख्यात-

---

सावद्य व्यापारथी जेनुं मन निवृत्त थयुं नथी एवो, अप्रतिहत-मिथ्या दुष्कृत आपवुं, प्रायश्चित्तनो स्वीकार करवो, इत्यादि वडे जेणे अतीत काळनुं पाप नाश कर्युं नथी, तथा अप्रत्याख्यात-फरीथी नहि करवा वडे भविष्यकाळना पाप कर्मनुं प्रत्याख्यान जेणे नथी कर्युं एवो सत्यादि कोइपण भाषाने बोलतो आराधक नथी.

३४. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा सत्यभाषी छे. अहीं सम्यक् उपयोगपूर्वक सर्वज्ञ मतना अनुसारे वस्तुने सिद्ध करवानी बुद्धिथी बोले छे ते सत्यभाषक छे, अने तेओ प्रश्न समये केटलाक ज होय छे माटे सौथी थोडा कह्या छे, तेथी असंख्यातगुणा सत्यमृषाभाषी छे, कारण के घणा जीवोने जे ते प्रकारे सत्यमृषा बोलवानो संभव छे, अने लोकमां तेम जणाय छे, तेथी असंख्यातगुणा असत्यभाषी छे, कारण के क्रोधाधीन अने बीजाने छेतरवा वगेरेना अभिप्रायवाळा घणा होय छे, अने तेओ असत्यभाषी होय छे. तेथी

सच्चभासगा, सच्चामोसभासगा असंखिज्जगुणा, मोसभासगा असंखेज्जगुणा, असच्चामोसभासगा असंखेज्जगुणा, अभासगा अणंतगुणा ।

पण्णवणाए भगवईए एक्कारसं भासापदं समत्तं ।

गुणा छे, तेथी असत्यामृषाभाषी असंख्यातगुणा छे अने तेथी अभाषी (नहि बोलनारा) अनन्तगुणा छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां अगियारमुं भाषापद समाप्त.

असंख्यातगुणा असत्यामृषाभाषी छे कारण के बेइन्द्रियादि जीवो असत्यामृषा भाषा बोले छे तेथी अनन्तगुणा अभाषक छे, कारण सिद्धो अने एकेन्द्रियो अनन्त छे

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां अगियारमुं भाषापद समाप्त.

भाषापद परिशिष्ट

मोक्षना अर्थीए भाषानी विशुद्धि अवश्य करवी जोइए, कारण के भाषासमिति अने वचनगुप्ति ए बन्ने भाषानी विशुद्धिने आधीन छे, भाषासमिति अने वचनगुप्ति चारित्रनुं अङ्ग छे, अने चारित्र मोक्षनुं कारण छे. अहीं आ शङ्का न करवी के 'वचनना विभागमां कुशलता रहित आत्माने केवळ मौन मात्रथी वचनगुप्ति सिद्ध थाय छे, कारण के सर्वथा मौन धारण करवामां व्यवहारनो उच्छेद थाय, वळी वचनना विवेकमां अकुशल आत्मा गुप्तिनो अनधिकारी छे. ए संवन्धे कह्युं छे के "वचननो विवेक करवामां अनभिज्ञ अने वचन संवन्धे बहु प्रकारने नहि जाणतो आत्मा जो के कंइपण न बोले तोपण ते वचनगुप्तिने प्राप्त थयेलो नथी." परंतु वचनगुप्ति रहित होवा छतां वचनगुप्तिना अभिमानादिथी दोषने ज प्राप्त थाय छे. ए संवन्धे कहे छे के "आह-जइ भासमाणस्स दोसो तो मोणं कायव्वं। आयरिओ भणइ-मोणमवि अणुवाएण कुणमाणस्स दोसो भवइ"त्ति। अहीं पूर्वपक्षी कहे छे के जो बोलनारने दोष लागे तो मौन धारण करवुं जोइए. आचार्य कहे छे के मौन पण अनुपाय-कारण सिवाय करनारने दोष लागे छे. विशुद्धि वडे लांबा काळ सुधी बोलनारने पण धर्मना उपदेशदानादि वडे गुण ज थाय छे. ते माटे आ कह्युं छे के-"वयणविभत्तिकुसलो वयोगयं बहुविहं वियाणं-तो। दिवसंपि भासमाणो तहा वि वयगुत्तयं पत्तो" ॥ वचननो विवेक करवामां कुशल अने वचन संवन्धी बहु प्रकारने जाणतो आत्मा आखो दिवस बोले तोपण वचनगुप्तिने प्राप्त थयेलो छे.

भाषाना चार प्रकार—नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव ए चार निक्षेप वडे भाषाना चार प्रकार छे—नामभाषा, स्थापनाभाषा, द्रव्यभाषा अने भावभाषा. कोइ जीव के अजीवनुं 'भाषा' एवुं नाम कराय ते नामभाषा. पुस्तक-पत्रादिमां लखेली स्थापनाभाषा,

---

१ श्रीमदुपाध्याय यशोविजयजीए प्रज्ञापना सूत्रना अगियारमा भाषापदना विषयने लइ तेना विवेचनरूपे भाषारहस्यनी रचना करी छे. तेथी तेमांथी आ विषयने स्पष्ट करवाना हेतुथी परिशिष्ट लेवामां आव्युं छे.

द्रव्यभाषा आगमथी अने नोआगमथी एम बे प्रकारे छे. अहीं आगम शब्दनो अर्थ ज्ञान इष्ट छे आगमथी भाषाना अर्थनो ज्ञाता अने ते विषे उपयोग रहित होय ते आगमथी द्रव्यभाषा. नोआगमथी द्रव्यभाषाना ज्ञशरीर, भव्य शरीर अने तद्व्यतिरिक्त ए त्रण प्रकार छे भाषाना अर्थ जाणनार पुरुषनुं जीवरहित शरीर ते नोआगमथी ज्ञशरीर द्रव्य भाषा जे भविष्यमां भाषानो अर्थ जाणवानो छे एवा पुरुषनुं शरीर ते भव्य शरीर तद्व्यतिरिक्त द्रव्य भाषाना त्रण प्रकार छे—ग्रहण, निःसरण अने पराघात तेमा वचन योगना परिणामवाळा आत्माए ग्रहण करेलां अने नहि छोडेला भाषाद्रव्यो ते ग्रहण, कदाचित् स्थानना प्रयत्नथी विभागपूर्वक छोडेला भाषा द्रव्यो ते निःसरण, अने छोडेला ते भाषा द्रव्यो वडे वासित थयेला भाषाना परिणामने योग्य बीजा द्रव्यो ते पराघात ए प्रमाणे द्रव्यभाषाना त्रण प्रकार छे. अने उपयोगवाळानी भाषा ते भावभाषा

भाषा द्रव्योने ग्रहण करवानो प्रकार—जीव भाषा द्रव्यो स्थित–स्थिति परिणामवाळां ग्रहण करे छे, पण गमन परिणामवाळां ग्रहण करतो नथी, जे स्थिति परिणामवाळां ग्रहण करे छे ते द्रव्यथी अनन्तप्रदेशवाळा ग्रहण करे छे, तेथी न्यून प्रदेशवाळां ग्रहण करतो नथी, कारण के ते स्वभावथीज ग्रहणने अयोग्य छे क्षेत्रथी असंख्याता प्रदेशावगाढज द्रव्यो ग्रहण करे छे, कारण के एक प्रदेशादिमां अवगाढ–रहेला द्रव्यो ग्रहणने अयोग्य छे कालथी एक समयनी स्थितिवाळा यावत् असंख्य समयनी स्थितिवाळां ग्रहण करे छे, कारण के पुद्गलोनी असंख्यात काळ सुधी पण स्थितिनो संभव छे "निरेए जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं" निरेज–निष्कंप पुद्गल जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी असंख्यात काळ सुधी रहे छे–परंतु भगवतीसूत्रनुं कथन छे भाषा द्रव्योनी एक समयनी स्थिति ग्रहण कर्या पछी छोडतां एक ग्रहण समय पर्यन्त रहेवाथी जाणवी 'एक प्रयत्न वडे ग्रहण करेलां द्रव्योना आदि भाषापरिणामनी स्थितिमां फेरफार थवाथी एक समयनी स्थितिवाळा द्रव्यो छे' एम अन्य आचार्य कहे छे भावथी वर्णवाळां यावत् स्पर्शवाळां पण ग्रहण करे छे वर्ण, गन्ध अने रसनी संख्याने आश्रयी समुदायनी विवक्षामां अवश्य पांच वर्ण, बे गन्ध अने पांच रसवाळा ग्रहण करे छे अने ग्रहण करवा योग्य प्रत्येक द्रव्यने आश्रयी एक, के बे

इत्यादि वर्ण, गन्ध अने रसवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ए विचारवुं. काळा वगेरे पण एक गुण काळा वगेरेथी मांडी अनन्तगुण काळा वगेरे द्रव्यो जाणवां. स्पर्शनी संख्याने आश्रयी प्रत्येक ग्रहण योग्य द्रव्योनी अपेक्षाए केटलाएक बे स्पर्शवाळां होय छे. परन्तु एक स्पर्शवाळां होतां नथी, कारण के एक परमाणुमां पण बे स्पर्श होय छे. अने ते बे स्पर्श मृदु अने शीत तथा मृदु अने उष्णरूप जाणवा. केटला एक त्रण स्पर्शवाळा पण होय छे, केटला एक मृदु अने शीत स्पर्शवाळां तथा केटला एक मृदु अने स्निग्ध स्पर्शवाळां इत्यादि दिशा वडे मृदु स्पर्शना अवयवोने बीजा स्पर्शोनो योग होय तो पण समुदायने आश्रयी त्रण स्पर्श जाणवा. केटलाएक चार स्पर्शवाळां पण होय छे. एटले समुदायने आश्रयी चार स्पर्शवाळा ज होय छे. तेमां चार स्पर्शोमां मृदु अने लघु रूप बे स्पर्श अवस्थित होय छे अने बीजा स्निग्ध अने उष्ण, स्निग्ध अने शीत, रूक्ष अने उष्ण तथा रूक्ष अने शीत स्पर्श होय छे. तेमां अवस्थित स्पर्श नियत होवाथी तेनी गणना करी नथी अने वैकल्पिक स्पर्शनी अपेक्षाए चार स्पर्शवाळानो निर्देश छे-एवो संप्रदाय (परंपरा) छे. आ संबन्धे प्रश्न न करवो, कारण के सूत्रनी गति विचित्र छे.

उपर कहेला स्वरूपवाळा भाषा द्रव्यो स्पृष्ट-आत्म प्रदेशो साथे रहेला होय तेने ग्रहण करे छे, पण अस्पृष्टने ग्रहण करतो नथी. स्पृष्ट छतां पण अवगाढ-आत्मप्रदेशो साथे एक क्षेत्रमां रहेलां होय तेने ग्रहण करे छे, परन्तु आत्मप्रदेशो वडे स्पर्श करायेला, पण आत्मप्रदेशना अवगाह क्षेत्रथी बहार रहेलां ग्रहण करतो नथी. तेमां पण अनन्तरावगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे, पण परंपरावगाढने ग्रहण करतो नथी. एटले जे आत्मप्रदेशोमां जे भाषा द्रव्यो रहेलां छे ते आत्मप्रदेशो वडे तेज द्रव्योने ग्रहण करे छे, परन्तु एक, बे, त्रण आत्मप्रदेशो वडे व्यवहित भाषा द्रव्योने ग्रहण करतो नथी. ते पण भाषाने योग्य स्कन्धोमां परस्पर थोडा प्रदेशोनी अपेक्षाए अणु अने वधारे प्रदेशोनी अपेक्षाए बादर स्कन्धो ग्रहण करे छे, परन्तु बीजा भाषाने अयोग्य स्कन्धोने ग्रहण करतो नथी. ते पण जीवना जेटला क्षेत्रमां ग्रहण योग्य भाषा द्रव्यो रहेला छे तेमां ऊर्ध्व दिशा अधो दिशा अने तिर्यग्दिशाए रहेलां ग्रहण करे छे, ते पण भाषाना द्रव्यने ग्रहण करवाने योग्य अन्तर्मुहूर्तना काळनी आदिमां मध्यमां अने अन्तमां पण ग्रहण करे छे. ते पण स्वविषय-स्पृ-

आदि द्रव्यो ग्रहण करे छे, पण अविषयरूप असंस्पृष्टादि द्रव्यो ग्रहण करतो नथी ते पण आनुपूर्वी-ग्रहणनी अपेक्षाए नजीक होय जेम-तेम ते ग्रहण करे छे, पण तेथी भिन्न द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. अने ते अवश्य छ ए दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे, कारण के त्रसनाडीमां रहेवाथी तेने छ दिशाथी आवेला पुद्गलोना ग्रहणनो संभव छे

तेमां कोइ तीव्र प्रयत्नवाळो वक्ता ग्रहण करताना अने छोडवाना प्रयत्न वडे भेदायेलां-खंडशः करायेलां भाषाद्रव्यो छोडे छे अने कोइ मन्द प्रयत्नवाळो वक्ता तेवा प्रकारनां नहि भेदायेलां स्थूल भाषा द्रव्योने छोडे छे तेमां भेदायेला भाषाद्रव्यो सूक्ष्म अने घणा होवाथी अने अन्य द्रव्यने वासित करता होवाथी अनन्तगुणवृद्धि पामता छ ए दिशामां लोकान्तने व्याप्त करे छे अने ते अभिन्न-नहि भेदायेला भाषा द्रव्यो असंख्याती अवगाहनावर्गणा सुधी जइने भेदाय छे अवगाहना-एक एक भाषाद्रव्यना आधारभूत असंख्याता प्रदेशरूप क्षेत्रनो विभाग, तेनी वर्गणा-समुदाय ते अवगाहना वर्गणा कहेवाय छे अने भेदायेला भाषाद्रव्यो संख्याता योजन सुधी जइने विलय पामे छे-शब्द परिणामनो त्याग करे छे

हवे जे भाषाद्रव्यो भेदाय छे ते भेद पांच प्रकारनो छे-१ खंडभेद, २ प्रतरभेद, ३ चूर्णिकाभेद, ४ अनुतटिकाभेद अने ५ उत्करिकाभेद. लोढा, त्रपुस, तांबु, सीसु वगेरे द्रव्योनो खंड-कटका रूपे भेद थाय ते खंडभेद. अभ्रक, भोजपत्र, पत्र, केळ, अबरख वगेरेनो प्रतर-पडरूपे भेद थाय ते प्रतरभेद, पीपर वगेरेनो चूर्णरूपे भेद थाय ते चूर्णिकाभेद. द्रह, तळाव, वाव वगेरेनो (तट-किनाराना भेद पडे (?)) भेद थाय छे ते अनुतटिकाभेद ए संबन्धे तत्त्वार्थटीकामां आ प्रमाणे छे-"अनुतटभेदस्तु वंशेक्षुत्वगुत्पाटनवत्" वांस, शेरडी, वगेरेनी उपरनी छाल उखेडवारूप भेद ते अनुतटभेद कहेवाय छे एरंडबीजादिनो सिंग वगेरेना फुटवा वडे भेद थाय ते उत्करिकाभेद अहीं भेद पामता भाषाद्रव्योनो नाश थाय छे, कारण के अवयवनो विभाग थवाथी द्रव्यना असमवायी कारणरूप अवयवना संयोगनो नाश थाय छे एम न समजवु. जेमके घटमां छिद्र पडवाथी पंदे भाषाद्रव्योनो भेदपर्याय उत्पन्न थाय छे तो पण अन्य द्रव्यनी उत्पत्ति थती नथी विशिष्ट उत्पत्तिमां विशिष्ट ध्वंस कारण होवाथी ते अविशिष्ट-सामान्यरूपे अवस्थितिनो विरोधी

नथी. जो एम न होय तो द्वितीयादि समयमां रहेला घटनी द्वितीयादि समयमां विशिष्ट उत्पत्ति थाय छे, तो पण घटना नाशनो व्यवहार थतो नथी. छिद्रघट ते घटथी भिन्नज उत्पन्न थाय छे एम न कहेवुं. कारण के त्यां दंडादिनो व्यापार नहि होवाथी तेनी उत्पत्ति आकस्मिक थशे. कोइ एम कहे के दंडादि घटविशेषमां कारण छे, पण अहीं छिद्रघटादिनी उत्पत्तिमां कारण नथी, आ कल्पना अपूर्व छे, तो पण घटमां छिद्र उत्पन्न थयुं छे, घट विनष्ट थयो नथी ए व्यवहारनुं शी रीते उपपादन करवुं ? वास्तविक रीते संयोगनो नाश द्रव्यनो नाशक नथी, पण आवश्यक होवाथी भेदज नाशक छे अने भेद पण भेदरूपे हेतु नथी पण भेदविशेषरूपे कारण छे. तेथी मन्द प्रयत्न वडे उच्चारेला भाषाद्रव्यनो गतिविशेषथी थतो भेद तेना नाशनुं कारण छे, पण ग्रहण अने निसर्ग-छोडवाना प्रयत्न वडे थयेलो भेद ध्वंसनुं कारण थतो नथी. माटे सूत्रमां कहेलुं छे ते युक्त छे. निसृष्ट-छोडेला-तालु वगेरे स्थानना प्रयत्न पूर्वक उच्चारेला द्रव्यो वडे वासनाने योग्य द्रव्योनो पराघात-वासना थाय छे, तेथी विश्रेणिमां केवळ वासित द्रव्यो होय छे, कारण के छोडेला भाषाद्रव्यो सूक्ष्म होवाथी श्रेणिना अनुसारे गमन करे छे. केमके जीव अने सूक्ष्म पुद्गलोनी गति श्रेणिने अनुसारे होय छे. अने भाषक-वक्तानी दिशानी समश्रेणिमां रहेलां निसृष्ट-छोडेलां अने वासित-एम मिश्र द्रव्यो होय छे. अहीं द्रव्यना प्राधान्य अने ग्रहणादिरूप क्रियाना अने भाषाना परिणामरूप भावना अप्राधान्यनी विवक्षा करीने तेनो द्रव्यभाषारूपे व्यवहार थाय छे. अर्थात् आ त्रणे प्रकारनी भाषा द्रव्यना योगनी विवक्षा करेली होवाथी द्रव्यभाषा कहेवाय छे. जो एम न मानवामां आवे तो "दोहिं समएहिं भासए भासं" 'बे समये भाषा बोले छे' ए वचननी साथे वचनयोगजन्य भाषा अने 'भाष्यमाणा'-बोलतो होय त्यारे भाषा कहेवाय-ए वचननो विरोध थशे, कारण के प्रथम समये भाषाद्रव्यो ग्रहण करी बीजा समये भाषापणे परिणमावी छोडे छे-ए रीते निसर्गना अभिप्रायथी संगत थाय छे. परन्तु पूर्वे कह्या प्रमाणे मानवामां आवे तो छोडवाना समयेज भावभाषा कहेवाय अने ग्रहण समये द्रव्यभाषा कहेवाय, पण निसर्गादि समये द्रव्यभाषा नहि कहेवाय ए माटे उपर कहेली विवक्षा आदरणीय छे. ए प्रमाणे 'वचनयोगथी उत्पन्न थयेली भाषा होय छे' ए पण वचन छोडवाना समये भावभाषा न मानो तो विरुद्ध थाय छे. छोडवाने अनुकूल

कायसंरंभ-शरीरनो प्रयत्न ते वचनयोग अथवा काययोग वडे ग्रहण करेला भाषाद्रव्यना समूहसहित जीवनो व्यापार वचनयोग कहे वाय छे अने बन्ने प्रकारे तेनाथी उत्पन्न थयेली भावभाषा कहेवाय छे ए प्रमाणे 'भाष्यमाणा' बोलाती होय ते भाषा ए भगवन्तनु वचन पण विरुद्ध थाय छे अहीं भाव भाषा ज विवेय छे, जो एम न होय तेनी पूर्वे अने पछी भाषा कहेवाती नथी ए अवधारण घटी शकशे नहि

हवे भावभाषा सबन्धे कहे छे-अहीं उपयोगवाळानी भाषा भावभाषा कहेवाय छे कारण के उपयोग भाव छे अने अनुपयोग द्रव्य छे जे अभिप्रायथी भाषा उत्पन्न थाय ते भावभाषा जे बोलवाने इच्छे छे ते पहेलाज तेने पोताने बधो व्यक्त होय छे के आ मारे कहेवानु छे, त्यार पछी ते बोलतो बीजाने पोतानो अभिप्राय जणावे छे, ए रीते भाषानु प्रयोजन छे के पोताने अने बीजाने बोध करवो अहीं कोइ शका करे के अग्निनो उपयोग भावाग्नि कहेवाय छे तेम भाषानो उपयोग भावभाषा कहेवाय, पण उपयोगना विषयभूत भाषा भावभाषा न कहेवाय, ते अयुक्त छे 'भावरूप भाषा ए भावभाषा' ए श्रेणी वडे उपर कहेलो अर्थ घटतो नथी पण भाववडे भाषा ते भावभाषा-ए रीते प्रकृत अर्थनी उपपत्ति थाय छे

अहीं कोइ शका करे के भाषा अर्थनो निर्णय करनारी नथी, कारण के शब्द अने अर्थनो तादात्म्य के तदुत्पत्ति सबन्ध नहि होवाथी स ए-धना अभावथी प्रतिनियत अर्थनो बोध नहि थाय, तेथी एम न जाणवु के शब्दोनी अनुत्पत्तिनो प्रसंग थशे अर्थना बोधकपणानो विचार करी शब्दनो उच्चार करे छे कारण विकल्पथी ज शब्दोनी उत्पत्ति थाय छे शब्दो पण विकल्पना उत्पन्न करवा वडे चरितार्थ थाय छे माटे विकल्प अने शब्दोनो परस्पर कार्यकारणभाव छे, ते शकाना समाधानमा कहे छे—

भाषा अवधारणी-अर्थनो निश्चय करनारी छे, कारण के पद अने पदार्थनो संकेतरूप सबन्ध होवाथी 'आ श्रुत-सामर्थ्यथी जाणु छु' एवो व्यवहार थाय छे जेम 'अनुमिनोमि' हु अनुमान करु छु ए बुद्धि वडे अनुमितिरूप प्रमाविशेषनी सिद्धि थवाथी अनुमान प्रमाणसिद्ध थाय छे तेम 'शब्दात् प्रत्येमि' शब्दथी जाणु छु-ए बुद्धि वडे प्रमाविशेषनी सिद्धि थवाथी शब्दप्रमाण सिद्ध थाय छे अहीं कोइ कहे छे के

शब्दथी अर्थनी प्रतीति अनुमानथी थाय छे, तेनो उत्तर ए छे के अनुमितिमां व्याप्ति ज्ञान वगेरे कारण छे अने ते सिवाय पण शब्दथी जल्दी अर्थनी प्रतीति थाय छे माटे ते अनुमान प्रमाण रूप नथी. तेथी भाषा अवधारणी-अर्थनो बोध करनारी छे.

हवे भावभाषाना भेदो कहे छे-द्रव्यने आश्रयी, श्रुतने आश्रयी अने चारित्रने आश्रयी भावभाषाना त्रण प्रकार छे. द्रव्यने आश्रयी भावभाषा चार प्रकारनी छे-१ सत्य, २ असत्य, ३ मिश्र-सत्यासत्य, अने ४ असत्यामृषा. ते चार प्रकारना भाषानो बे भेदमां समावेश करे छे. प्रथम सत्य अने असत्य ए बे प्रकारनी भाषा पर्याप्ता अने पछीना बे प्रकारनी भाषा अपर्याप्ता छे. तेमां जे सत्य के असत्यरूपे अवधारण करी शकाय ते पर्याप्ता अने अवधारण न करी शकाय ते अपर्याप्ता.

हवे पूर्वे कहेला भाषाना भेदोनुं निश्चय अने व्यवहार वडे विवेचन करे छे-व्यवहारनयथी भाषा चार प्रकारनी शास्त्रमां कहेली छे. अने निश्चयनयनी अपेक्षाए सत्य अने मृषा ए बे प्रकारनी भाषा छे. तेमां वस्तुतत्त्वने स्थापन करवानी बुद्धिथी जिनप्रणीत सिद्धान्तने अनुसरीने बोलाय, जेमके आत्मा सत् अने असत्स्वरूप छे ते सत्य भाषा कहेवाय छे, कारण के आराधकभाव छे. जे सिद्धान्तथी विरुद्ध बोलाय ते असत्य, कारण के विराधकभाव छे. यद्यपि वृक्षनो समूह छतां अशोक घणा होवाथी 'आ अशोकवन छे' एम कहेवाय ते मिश्रभाषा. जे वस्तुमात्रना पर्यालोचन करवामां तत्पर 'हे देवदत्त घट लाव' इत्यादि ते आराधकभाव अने विराधकभाव रहित होवाथी असत्यामृषाभाषा छे. अहीं परिभाषा ज शरण छे. परिभाषा एटले व्यवहार. अहीं असत्यामृषा भाषामां तात्पर्यनो बाध थतो होय तो तेनो असत्य भाषामांज समावेश थाय छे. तात्पर्यनो बाध न थतो होय तो ते सत्यभाषा छे. अहीं वृक्षना समूहरूप वनमां अशोकना अभेदना तात्पर्यनो बाध थवाथी मृषापणुं स्पष्ट छे. ज्यारे अशोकप्रधान वन ए विवक्षाथी प्रयोग होय त्यारे श्रमणसंघनी पेठे व्यवहारसत्य पण कहेवामां वांधो नथी एम जणाय छे. असत्यामृषा भाषा पण कोइने छेतरवानी बुद्धिपूर्वक होय तो तेनो असत्यमां अने ते सिवाय सत्यमां समावेश थाय छे. जेथी निश्चयनय वडे छेल्ली बे भाषानो पूर्वनी बे भाषामां समावेश कर्यो, अने पथीज आज्ञापनी भाषाने असत्यामृषाना भेदमां गणेली छे छतां जाति वडे-सामान्य वडे के सामान्य रहित भाषा प्रज्ञापना सूत्रमां तत्त्वार्थदर्शी श्यामाचार्ये प्रज्ञापनी-

भाषा कहेली छे—"अह भंते ! जातीति इत्थिआणमणी, जातीति पुमआणमणी, जातीति णपुंसगआणमणी पण्णवणी ण एसा ? ण एसा भासा मोसा? हंता गोयमा ! इत्यादि जो के जेने आज्ञा करे ते शिष्यादि कार्य न करे तेथी असत्यनी आशंकाथी प्रश्न कर्यो छे तेथी विनीत शिष्यादि विषयक आज्ञापनी भाषा असत्य नथी, तो पण अविनीतने आज्ञा करवी ते स्व अने परने पीडानुं कारण होवाथी पारिभाषिक-व्यावहारिक असत्य छे आराधकपणुं, विराधकपणुं, देशाराधकपणुं, देशविराधकपणुं तथा आराधकपणा अने विराधकपणाना अभावने आश्रयी भाषाना विभाग चार प्रकारे छे अने निश्चयथी आराधकपणुं अने विराधकपणुं ए बन्नेने आश्रयी बे प्रकारनी भाषा छे वास्तविक रीते तो भाषानिमित्त शुभाशुभ संकल्पनुं आराधकपणुं अने विराधकपणुं छे, परन्तु भाषानुं नथी अहीं प्रश्न थाय छे के तद्दन नाना बाळको के जेओनी इन्द्रियो असमर्थ होवाथी 'हुं आ बोलुं छुं' एवुं जेने भान नथी तेओने ते निमित्ते अशुभ संकल्प नहि होवाथी शी रीते आराधकपणुं के विराधकपणुं समजवुं ? तेनो उत्तर ए छे के उपयोगरहित परिणाम ज कर्मबंधनो हेतु होवाथी विराधकपणुं स्पष्ट छे कारण के आयुक्त-उपयोग पूर्वक चारे प्रकारनी भाषा बोलनार आराधक छे अने उपयोग सिवाय बोलनार विराधक छे-एम प्रज्ञापना सूत्रमां स्पष्टपणे प्रतिपादन कर्युं छे अहीं आयुक्त-सावधानपणे प्रवचननी मलीनता, निंदा वगेरेथी रक्षण करवाना तत्परता छे माटे निश्चयथी आराधकपणा अने विराधकपणाने आश्रयी सत्य अने असत्य बेज प्रकारनी भाषा छे अहीं एम न समजवुं के निश्चय नय तात्त्विक होवाथी भाषाना चार प्रकार कल्पना मात्र होवाथी वास्तविक नथी, कारण के व्यवहारानुगत वस्तु पण शास्त्रप्रसिद्ध छे

ए प्रमाणे नयनी अपेक्षाए भाषाना बे प्रकार अने चार प्रकार कह्या, हवे सूत्रना विभागने अनुसरी सत्यभाषाना लक्षणना कथनपूर्वक विभाग कहे छे-अवधारणपूर्वक ते वस्तुने विषे ते प्रकारनुं वचन ते सत्य भाषा छे अने तेने आराधनी भाषा कहेली छे तेना दस प्रकार छे-१ जनपदसत्य, २ संमतसत्य, ३ स्थापनासत्य, ४ नामसत्य, ५ रूपसत्य, ६ प्रतीत्यसत्य, ७ व्यवहारसत्य, ८ भावसत्य,

१ हे भगवन् ! जाति वडे स्त्रीने आज्ञा करनार, जाति वडे पुरुषने आज्ञा करनार अने जाति वडे नपुंसकने आज्ञा करनार भाषा प्रज्ञापनी कहेवाय ? ए भाषा मृषा नथी ? हा गौतम ! आ भाषा प्रज्ञापनी छे, मृषा नथी

९ योगसत्य, १० उपमासत्य. जे जनपद-देशना संकेत मात्रथी अर्थनी प्रतीति करावे ते जनपदसत्य, अहीं मात्र अनादि सिद्ध संकेतनो निषेध करवा माटे छे. जेमके कोंकणादि देशना संकेतज्ञानथी पिच्चादि पदथी पाणी वगेरे अर्थनी प्रतीति थाय छे. द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावने आश्रयी जे रूढिने छोडीने योग-व्युत्पत्ति मात्र वडे अर्थनो निश्चय न करे ते संमतसत्य. जेमके पद्मने विशे पंकज शब्दनो प्रयोग. शेवाळ वगेरे पंकथी उत्पन्न थयेला होवा छतां पंकजशब्द अरविन्द-कमळने जणावे छे, परन्तु शेवालादिनो बोध करता नथी: ते संमतसत्य. ए प्रमाणे समुदायनी शक्तिना प्रतिसंधान-स्मरण सिवाय नहि बोध करनारा पदयुक्त भाषा ते संमतसत्य ए तात्पर्य छे. अहीं जनपद सत्यमां अतिव्याप्ति थशे एम न जाणवुं. कारण के अवयव शक्तिना अतिप्रसंगने दूर करनार समुदायनी शक्तिनुं ग्रहण करेलुं होवाथी दोष नथी. व्युत्पत्तिरहित रूढ शब्दमां अव्याप्ति थशे एम न मानवुं कारण के अहीं शक्ति संकेतमात्र नथी, पण अनादि शास्त्रीय अबाधित संकेत छे. अन्यथा लक्षणादि वगेरेना उच्छेदनो प्रसंग प्राप्त थशे. २ स्थापनासत्य-स्थापनामां वर्तमान अने जेनो भावार्थरहित संकेत जाण्यो छे एवी स्थापनासत्य भाषा कहेवाय छे. जेमके जिनप्रतिमामां जिनशब्द स्थापनासत्य छे. अहीं संमतसत्य भाषानुं लक्षण लागु पडे छे तेथी कोइ पण प्रकारनो दोष नथी, कारण के उपधेयनुं (उपाधिना आश्रयनुं) सांकर्य छतां पण उपाधिनुं सांकर्य नथी. ३ नामसत्य-भावरूप अर्थ रहित भाषा नामना संकेतमात्रथी योगार्थना-व्युत्पत्ति प्रतिपाद्य अर्थना बाधनी दरकार कर्या सिवाय पोताने प्रतिपादन करवा योग्य अर्थनुं प्रतिपादन करे ते नामसत्य. जेमके धनरहित छतां नाम वडे धनवान् होय छे. ज्यां यथार्थ नाम होय त्यां केवळ नामसत्य नथी पण परिणामसत्य छे. भावरूप अर्थना बाध सहित अने रूपवाळाने विशे जेनो उपचार कर्यो छे एवा पद युक्त भाषा ते रूपसत्य. जेमके प्रकट दोषने सेवनारने विशे यतिशब्दनो प्रयोग. अहीं यतिपदनो रूपवाळा -वेषधारीने विशे उपचार छे. अहीं भाव यतिपणानो बाध छे माटे स्थापना यतिपणुं मानवुं युक्त छे एम न कहेवुं. कारण के स्थापना ते जातिना सदोष पदार्थमां होती नथी, पण विजातीय अने दोषरहित पदार्थने विशे होय छे. लिंग-वेषमां गुण अने दोष बन्ने होय छे अने प्रतिमामां बन्ने नथी. माटे तेथी भिन्न द्रव्यमां तेना आकारनी कल्पना ते स्थापना. अने केवळ रूप-वेश तो ते जातनुं

कूट द्रव्य छे ए विशेषता जाणवी ६ प्रतीत्यसत्य-विरोध सिवाय प्रतीत्य भाव-सापेक्ष पदार्थनो उपदेश करनारी भाषा प्रतीत्यसत्य कहेवाय छे जेमके अपेक्षाए एक फळ विगेरे नानु पण छे अने मोटु पण होय छे वळी अनामिका आगळी मध्य आगळीनी अपेक्षाए नानी होय छे अने कनिष्ठानी अपेक्षाए मोटी होय छे आ अणुत्व अने महत्वादि परस्पर विरुद्ध नथी, कारण के सत्यासत्यनी पेठे भिन्न भिन्न निमित्तसापेक्ष छे अने ते निमित्त अनेक प्रकारना होय छे

व्यवहार सत्य-व्यवहार एटले लोकनी विवक्षा, ते वडे जेनो प्रयोग थाय ते व्यवहारसत्य जेम के नदी पीवाय छे, पर्वत बळे छे अहीं नदी पीवाय छे एटले नदीनु पाणी पीवाय छे, पर्वत बळे छे एटले पर्वतमां रहेलु घास बळे छे अहीं पर्वत अने तृणादिना अभेदना कथनथी मृषावादीपणानो प्रसंग उपस्थित थशे पण न जाणवु, कारण के अहीं व्यावहारिक अभेदनो आश्रय करेलो होवाथी तेमां दोष नथी लोकनी विवक्षानु ग्रहण होवाथी रूपसत्यादिमां अतिव्याप्तिनो प्रसंग नथी ए प्रमाणे आमलकी वगेरेमां एकेन्द्रिय होवाथी नपुंसक छता पण स्त्री वगेरेनी अभेद विवक्षा वडे स्त्रीलिंगादिनु प्रतिपादन पण व्यवहारसत्य ज छे ७ भावसत्य-सद् वस्तुना अभिप्रायपूर्वक कहेली भाषा ते भावसत्य जेमके 'आ घट छे, बगलो धोळो छे' वास्तविक घटनो बोध करवाना अभिप्रायथी घटपदनो प्रयोग करेलो छे अथवा बगलामां पांचे वर्णनो संभव छे तो पण शुक्लवर्णनु कथन उत्कट शुक्लवर्ण बतावबा माटे छे, अहीं एम न कहेवु के आ बीजा उदाहरणनो व्यवहार सत्यमा समावेश थाय छे, कारण के व्यवहारसत्य लोकविवक्षाने आधीन छे ९ योगसत्य-ज्या वस्तुना योगे उपचार थाय ते योगसत्य अतीत काळे संबन्धवाळा लाक्षणिक पदयुक्त भाषा योगसत्य कहेवाय छे जेमके वर्तमान काळे छत्रा दिनो अभाव होवा छता अतीत काळे छत्रादिना सबन्धथी छत्री-छत्रवाळो, कुंडली कुंडलवाळो अने दंडी कहेवाय छे १० उपमासत्य-उपमान एटले ज्ञात, उदाहरण, निदर्शन अने दृष्टांत ए समानार्थक छे, ते वडे सत्य ते उपमान सत्य ते उपमान बे प्रकारे छे-चरित अने कल्पित चरित-पारमार्थिक, जेमके महारंभवाळो ब्रह्मदत्तनी पेठे दुःख पामे छे कल्पित-पोतानी बुद्धिनी कल्पना वडे रचेलु जेमके अनित्यतामां पीपळना पानंनु उदाहरण कल्पित पण रूपकनी पेठे तात्पर्यनो बाध थतो न होवाथी निरर्थक नथी ए प्रमाणे सद् उप-

मानवाचक पद वडे घटित भाषा उपमानसत्य छे. 'चन्द्रमुखी' इत्यादि देशोपमामां संभवित प्रसन्नत्वादि धर्मोनुं ग्रहण होवाथी दोष नथी.

ए प्रमाणे दस प्रकारनी सत्य भाषानुं प्रज्ञापनादि सूत्रने अनुसारे वर्णन कर्युं, हवे असत्य भाषानुं निरूपण करे छे-सत्यथी विपरीत होय ते असत्य. अहीं चरित उपमानादिमां अतिव्याप्ति थशे एम न कहेवुं, कारण के यथार्थ तात्पर्यना बाध वडे जे वचन होय ते असत्य छे. चरित अने कल्पित उपमानादिमां तात्पर्यनो बाध नहि होवाथी अतिव्याप्ति नथी. अथवा विराधनी भाषा ते असत्य भाषा कहेवाय छे. अहीं विराधकपणुं सद्भूत अर्थना प्रतिषेधादि वडे जाणवुं

असत्य भाषा चार प्रकारे छे. द्रव्यथी सर्व द्रव्यो संबन्धे, क्षेत्रथी लोक अने अलोक संबन्धे, काळथी दिवसे अथवा रात्रे अने भावथी क्रोध, लोभ, भय अने हास्यथी असत्य बोलवुं. अहीं एकना ग्रहणथी, तेनी जातिनुं ग्रहण थतुं होवाने लीधे क्रोधना ग्रहणथी माननुं ग्रहण, लोभना ग्रहणथी मायानुं ग्रहण अने भय अने हास्यना ग्रहणथी प्रेम, द्वेष, कलह अने अभ्याख्यानादिनुं ग्रहण जाणवुं एवो वृद्ध आचार्योनो संप्रदाय छे. अथवा तो क्रोध निश्रितादि दस भेदो भाव असत्यना ज छे. अहीं असत्यना संबन्धे द्रव्य अने भावना संयोगे विधि अने प्रतिषेध वडे चउभंगी जाणवी. १ द्रव्यथी मृषावाद छे अने भावथी नथी. जेमके कोइ शीकारी पूछे के 'तें पशु मृग वगेरे जोया'? त्यारे तेने कहे के 'में जोया नथी'. ए द्रव्यथी मृषावाद छे, भावथी नथी. २ भावथी मृषावाद छे, पण द्रव्यथी नथी. जेमके मृषा बोलवानी इच्छावाळो उतावळने लीधे एकदम सत्य बोली जाय. ए भावथी मृषा छे, पण द्रव्यथी नथी. ३ द्रव्यथी अने भावथी. जेम कोइ मृषा बोलवाना परिणामवाळो मृषावाद बोले. चोथो भंग शून्य छे. वळी असत्य भाषा दस प्रकारे छे-१ क्रोधना आवेशवाळो जे भाषा बोले ते क्रोधनिश्रित भाषा कहेवाय छे. जेमके गुस्से थयेलो पिता पुत्रने कहे के 'तुं मारो पुत्र नथी.' अथवा क्रोधना आवेशवाळानुं बधुं कथन असत्य छे. (प्र०)—क्रोधना आवेशवाळो गायने गाय कहे ते असत्य केम होय? (उ०)—तेनुं चित्त क्रोधथी व्याकुल होवाने लीधे गायने विशे गायनुं कथन पण अप्रमाणभूत छे-एवो संप्रदाय छे. परन्तु आ विचारणीय छे के तेमां मूढ व्यवहारने उपयोगी सत्य होवा छतां फळोपयोगी सत्य नथी, कारण

के संक्लिष्ट आचरणवाळानु कथन निष्फळ छे अहीं कोइ शंका करे के गुस्से थयेलो मनुष्य धुणाक्षर न्याय वडे पण सत्य बोले तो तेने अप्रशस्त क्रोधना वशथी क्लिष्ट कर्मनो बंध थवा छतां सत्यभाषा निमित्ते शुभ कर्मबन्ध केम न थाय? ए आशंकानो उत्तर ए छे के योगो स्थितिबन्ध अने रसबंध करनार कषायने योग्य प्रकृतिबंध अने प्रदेशबन्ध करे छे, पण तेथी भिन्न कर्मनो बन्ध करता नथी, एम कोइ भाषा व्यवहारथी सत्य होय तो पण क्लिष्ट कर्मना सामग्रीभूत कषायोनी अन्तर्गत होवाथी स्वतन्त्रपणे शुभकर्मना बन्धनो हेतु थती नथी, माटे क्रोधना आवेशवाळानी सर्व भाषा असत्य ज छे एटलु ज नहि पण क्रोधना आवेशवाळानी सत्य भाषा वधारे दुष्ट छे, कारण के ते भाषा जीवोने मिथ्या कदाग्रहने माटे थाय छे क्लिष्ट आशयवाळानु सत्य भाषण 'में बरोबर कह्यु छे' एम दुर्भाषणनु अनुमोदन उत्पन्न करवु महाकर्मबन्धनु कारण थाय छे माटे परमार्थथी असत्य ज छे एम माननिश्रितादि भाषा जाणवी उपघातनिश्रित-परना अशुभचिन्तनना परिणामवाळो जे असत्य बोले, जेम के चोर न होय तेने चोर कहे ते उपघातनिश्रित भाषा जाणवी ए दसेय प्रकारनी असत्य भाषा एकमे अनुसरी अप्रशस्त परिणामना योगथी सत्य कहेवाय छे अहीं राग, द्वेष अने मोह वडे असत्यभाषा बोले छे ए संबन्धे कह्यु छे के "रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वाऽवाक्यमुच्यते ह्यनृतम्। यस्य तु नैते दोषास्तस्यानृतकारणं किं स्यात्" ?॥ राग, द्वेष अने मोहथी अवाच्य-नहि कहेवा योग्य असत्य बोलाय छे, परन्तु जेने ए दोषो नथी, तेने असत्य बोलवानु शु कारण छे? असत्य बोलवानु असाधारण कारण राग द्वेष अने मोह छे, ते सिवाय बीजु असाधारण कारण नथी कारण के क्रोधादिनो तेमाज अन्तर्भाव थाय छे, एटले असत्यभाषाना त्रण प्रकारज कहेवा जोइए, तो पण तेनो दस प्रकारनो विभाग अत्यंत संक्षिप्त नहि तेम अत्यंत विस्तृत नहि एवी रुचिवाळा जीवो माटे प्राचीन शास्त्रमां निर्देश कर्यो छे

हवे प्रकारान्तरथी चार प्रकारे मृषा भाषा कहे छे-१ सद्भावनो निषेध करवो एटले वस्तुमात्रनो निषेध करवो जेमके आत्मा नथी २ असद्भूत वस्तुनु प्रतिपादन करवु एटले धर्मीनो स्वीकार करी तेमां विरुद्ध धर्मनु प्रतिपादन करवु जेमके जीव छे, पण अणुपरिमाण छे अथवा व्यापक छे ३ अन्य वस्तुमां अन्य शब्दनो प्रयोग करवो जेमके गायने विषे अश्व शब्दनो प्रयोग करवो ४ निन्दा-

व्यंजक शब्दनो प्रयोग करवो. जेम के 'आ काणो छे, वहेरो छे' इत्यादि.

हवे सत्यमृषा भाषानो लक्षणपूर्वक विचार करे छे-जेनो विषय अंशतः सत्य होय अने अंशतः असत्य होय ते सत्यमृषा भाषा कहेवाय छे. एम करवामां मृषाभेदनो उच्छेद थशे, कारणके सर्व प्रकारनी असत्य भाषा अंशतः सत्य होय छे. सर्व ज्ञान धर्मीना अंशे सत्य होय छे, जेमके घट विनाना भूतलमां आ घटवाळुं भूतल छे, तेमां भूतलांशे सत्य छे अने घटांशे असत्य छे तेथी सर्व प्रकारनी असत्य भाषा पण सत्यमृषा भाषा छे एम न समजवुं. कारण के धर्मी अंशने छोडी स्थूल भ्रम अने प्रमा उत्पन्न करनार भाषा सत्यमृषा कहेवाय छे. माटे आ भेदनी अधिकता स्पष्ट रीते छे. तेना उत्पन्नमिश्रिता इत्यादि उपाधिना भेदथी दस प्रकार छे. जेमके पांच अथवा दसथी अधिक बाळको उत्पन्न थया होय त्यारे दस बाळको उत्पन्न थया एम कहेवुं ते उत्पन्नमिश्रिता. अहीं दस संख्या पांचने वमणा करवाथी थाय छे, माटे पांच संख्याना अंशमां सत्य छे अने पांच संख्याना अंशमां असत्य छे. 'हुं आवती काले सो रूपीया आपीश' एम प्रतिज्ञा करीने पचास रूपिया आपनार नहि आपनारनी पेठे सर्वथा मृषाभाषी कहेवातो नथी, तेम सत्यभाषी पण कहेवातो नथी, एम प्रस्तुत वस्तुमां तेवा प्रकारना व्यवहारने अनुसरीने तेनी अनुपपत्ति नथी.

हवे लक्षणना कथन पूर्वक असत्यामृषा भाषाना भेदो कहे छे-जे सत्य, असत्य अने मिश्र ए भाषाथी विलक्षण होय अने आराधन अने विराधनना उपयोगवाळी न होय ते असत्यामृषा भाषा कहेवाय छे. तेना बार भेद छे-१ आमन्त्रणी, २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ पृच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छानुलोमा, ८ अनभिगृहीता, ९ अभिगृहीता, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता, १२ अव्याकृता.

हवे ते भेदोने अनुक्रमे जणावे छे.-जे संबोधन पदो वडे युक्त होय अने जेने सांभळी श्रोता श्रवणने अभिमुख थाय ते आमन्त्रणी, आ असत्यामृषा भाषा होवामां हेतु ते सत्यादि त्रण भाषाथी विलक्षण छे अने आराधकभाव अने विराधकभावथी रहित छे. १ आज्ञावचन वडे युक्त आज्ञापनी भाषा कहेवाय छे. अने ते पूर्वे कहेली स्त्रीआज्ञापनी वगेरे सत्यादि भाषाथी करवा, अने नहि करवानो नियम नहि होवाथी अने दुष्ट विवक्षापूर्वक नहि होवाथी भिन्न छे. करवानो नियम होय तो पहेले आज्ञा करायेल शिष्यादि ते

प्रमाणे कार्य करे तो सत्य, ते प्रमाणे कार्य न करे तो मृषा,माटे करवा अने नहि करवानो नियम नहि होवाथी सत्य अने असत्यथी भिन्न छे अने विवक्षापूर्वक नहि होवाथी मृषाथी भिन्न छे सत्यासत्यनो निषेध तेनो अहीं प्रसंग नहि होवाथी कर्यो नथी अहीं प्रश्न करे छे के आज्ञाना विषयमां आज्ञा आपनारनुं सत्यवादीपणु केम न होय ? कारण के श्रोतानी प्रवृत्ति न थवी ते बीजा निमित्तादिने आधीन छे एम न कहेवु आज्ञा करनार गुर्वादि शिष्यना अभिप्रायने जाण्या सिवाय आज्ञा करे अने तेथी शिष्यनी प्रवृत्ति न थाय तो ते परमार्थथी असत्य छे, कारण के आज्ञा करवा योग्य शिष्यनी प्रवृत्तिनो निर्णय नहि करवामां तेमनामां आयभाषानो नियामक सम्यग् उपयोगनो निर्वाह थतो नथी इच्छित पदार्थनी याचना करवामां तत्पर वचन ते याचनी भाषा कहेवाय छे जेमके साधु याचना करे के 'मने भिक्षा आपो' जेम अविनीतादिने विषे आज्ञापनी असत्य छे तेम नियम बहारना विषयमां याचनी भाषा पण असत्य छे अहीं प्रश्न करे छे के रागादिना अभाव वडे कोइने कइ पण नहि आपता तीर्थंकरना प्रति 'आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु' ए याचनी भाषा याचनानो विषय नहि होवाथी असत्यामृषा केम कहेवाय एम न कहेवु कारण के ते याचनी भाषा भक्तियुक्त छे, तेथी याचनानो विषय नहि होवा छतां पण असत्यामृषारूप गुण वडे अने निश्चयथी सत्यनी कोटीमां प्रवेश करवा रूप गुण वडे सहित छे माटे निर्दोष छे ए सबन्धे कह्यु छे–"भक्ति वडे कहेली भाषा असत्यामृषारूप छे, परन्तु रागद्वेषरहित तीर्थंकरो समाधि अने बोधि आपता नथी वास्तविक रीते जिनमां दातापणु छे, ए सबन्धे कह्यु छे के–"तेमोने जे आपवा योग्य छे ते सघळा जिनवरोए आप्यु छे अने ते दर्शन, ज्ञान अने चारित्ररूप मोक्षमार्गनो उपदेश छे" प्रार्थित वस्तुना उपायनी प्राप्ति छतां तेने नहि करवामां परमार्थथी प्रार्थना मृषा छे जे विषयनी जिज्ञासा थइ होय ते सबन्धी तेना जाणनारने पूछवु ते प्रच्छनी भाषा कहेवाय छे निरुत्तर करवा माटे भगवती सूत्रमां सोमिले भगवत महावीरने प्रश्न कर्यो हता के 'आप एक छो के बे छो ?' इत्यादि प्रच्छनी भाषा

नथी. परन्तु 'हे भगवन्! जीवो केटला प्रकारना छे? इत्यादि प्रच्छनी भाषा छे. विनीत शिष्यादिने विधिवाद-कर्तव्यनो उपदेश करवो ते प्रज्ञापनी, उपलक्षणथी 'हिंसादिमां प्रवृत्त थयेल जीव दुःखी थाय छे' इत्यादि निषेधनो उपदेश करवो ते पण प्रज्ञापनी भाषा जाणवी. आज्ञापनीमां आज्ञा प्रमाणे नहि करवामां अत्यंत अनिष्टना भयद्वारा प्रेरणा छे अने प्रज्ञापनी इष्ट साधनताना ज्ञानद्वारा प्रेरणा करे छे एटलो भेद छे, प्रार्थित-याचना करेल वस्तुनो निषेध करवो ते प्रत्याख्यानी भाषा कहेवाय छे. जेमके 'आ वस्तु नहि आपुं' वगेरे. 'हुं पाप नहि करुं' इत्यादि दुराचरण निषेधनुं वचन एटले निषेधना विषयमां निषेधनी प्रतिज्ञा ते पण प्रत्याख्यानी भाषा छे. पोतानी इच्छाना विषयभूत अर्थनुं कथन ते इच्छानुलोमा भाषा कहेवाय छे. जेमके कोइ मनुष्य कार्यनो प्रारंभ करतो पूछे के हुं 'आ कार्य करुं?' त्यारे ते कहे के 'करो' मने पण ए इष्ट छे. अहीं आप्त पुरुषनी इच्छानो विषय होवाथी पोतानी इष्टसाधनतानी शंकानो रोध थवाथी इष्टसाधनतानो निश्चय थाय छे अने तेथी पोतानी इच्छा विलंब विना तुरत थाय छे माटे ते इच्छानुलोमा भाषा कहेवाय छे. ए प्रमाणे दीक्षानी इच्छावाळो मनुष्य पिता वगेरेनी अनुमति माटे गुरुना प्रति प्रश्न करे अने गुरु उत्तर आपे के 'जेम सुख थाय तेम करो, प्रतिबन्ध न करो' ए पण इच्छानुलोमा भाषा जाणवी. जेमां अनेक कार्योनो प्रश्न कर्यो तेमां एकनो पण निश्चय न थाय ते अनभिगृहीत भाषा जाणवी. जेमके आ वधा कार्योमां कयुं कार्य करुं? ए प्रश्नना उत्तरमां 'जे तने ठीक लागे ते कर' ए उत्तरमां कोइ पण कार्यनो निर्णय थतो न होवाथी अनभिगृहीत भाषा कहेवाय छे. आ भाषानुं फळ ए छे के वधा कार्यो तुल्य फळवाळां होवाथी प्रथम उपस्थित कार्यमां जलदी प्रवृत्ति करवी, पण अधिकनी इच्छा वडे अन्य कार्यनी सामग्रीना विलंब वडे विलंब न करवो ए तात्पर्य छे. अथवा तो यदृच्छापूर्वक डित्थादिक वचन कहेवुं ते पण अनभिगृहीता भाषा कहेवाय छे. तेथी प्रतिपक्ष-विरुद्ध भाषा, एटले जेमां अनेक कार्यो संबन्धी प्रश्न कर्यो होय त्यारे एकनो निश्चय करवो ते अभिगृहीता. जेम के 'अत्यारे आ कार्य

वस्तु' अथवा 'आ घट छे' इत्यादि प्रसिद्ध प्रवृत्तिनिमित्तवाळा पदनुं कथन करवुं जेमा अनेकार्थक पद सांभळी श्रोताने संदेह थाय ते संशयकरणी भाषा जेमके कोइ 'सैन्धव लाव' एम कहे त्यारे सैन्धवशब्दनो लवण अने घोडा वगेरे अनेक अर्थमां संकेत करायेल होवाथी अनेकार्थ पदना बोधमां प्रकरणादिनुं ज्ञान कारण होवाथी ज्यां प्रकरणादिनुं ज्ञान न होय त्यां वक्ताना अभिप्रायनो संदेह थवाथी 'मारे लवण लाववुं के घोडो लाववो' एवो मानस संदेह थाय छे ज्यां प्रकरणादिनुं ज्ञान होय छे त्यां संदेह थतो नथी. कारण के भोजनना प्रकरणमां कह्युं होय त्यारे लवणनो बोध थाय छे अने गमनना प्रसंगे कह्युं होय तो घोडानो बोध थाय छे अहीं संशयकरणी भाषामां 'अनेकार्थक पद सांभळीने' कहेवामां आव्युं छे ते प्रायिक छे, तेथी 'संशयनुं कारण जे भाषा ते संशयकरणी भाषा' छे, तेथी 'स्थाणु अथवा पुरुष छे' ए भाषा पण संशयकरणी जाणवी प्रकट-स्पष्ट अर्थवाळी व्याकृता भाषा जाणवी, जेमके 'आ देवदत्तनो भाई छे' इत्यादि अतिगंभीर अने महा अर्थवाळी अव्याकृत भाषा कहेवाय छे अथवा बाळकोनी अव्यक्त भाषा पण अव्याकृत जाणवी ए प्रमाणे असत्यामृषा भाषाना बार भेद कह्या

यथा देवो, नारको अने मनुष्योने सत्यादि चारे प्रकारनी भाषा होय छे बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने असत्यामृषा भाषा होय छे, कारण के तेओने सम्यक् ज्ञान अने परने छेतरवा वगेरेनो अभिप्राय नहि होवाथी सत्यादि भाषानो असंभव छे, शिक्षा अने लब्धिरहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने असत्यामृषा भाषा होय छे, शिक्षा-संस्कार उत्पन्न करनार पठन, लब्धि जातिस्मरणरूप के तेवा प्रकारना व्यावहारिक कुशलता उत्पन्न करनार क्षयोपशम रूप जाणवी शिक्षा अने लब्धिरहित पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सम्यक् यथावस्थित वस्तु प्रतिपादनना अभिप्रायथी बोलता नथी, तेम बीजाने छेतरवानी बुद्धिथी बोलता नथी, परन्तु गुस्से थया छतां अने बीजाने मारवानी इच्छावाळा छतां ए प्रमाणे बोले छे अहीं गुस्से थयेला तेओनी भाषा क्रोधनिसृत असत्य होय एम न समजवुं, कारण के

तेओनी अव्यक्त भाषा होवाथी तेथी निश्चय थवाने अयोग्य छे. अथवा ते विलक्षण भाषाना पुद्गलो जन्य छे. शिक्षा अने लब्धिसहित शुक सारिका वगेरे तिर्यंचो यथासंभव चारे भाषाने बोले छे, कारण के शिक्षा अने लब्धिथी व्यक्त भाषानी उत्पत्ति थाय छे. ए प्रमाणे द्रव्यविषयक भाव भाषा कही.

हवे श्रुतविषयक भावभाषा कहे छे-श्रुतविषयक भावभाषा त्रण प्रकारनी छे-सत्य, असत्य अने असत्यामृषा. तेमां सम्यक्त्व सहित अने सम्यक् उपयोगवाळाने सत्य भाषा होय छे, कारण के तेनो विशुद्ध आशय छे. तेज सम्यग्दृष्टिने उपयोग सिवाय बोलता श्रुतविषयक असत्य भावभाषा होय छे. अथवा सत्य परिणामरहित-सम्यक् श्रुतना परिणामरहित मिथ्यादृष्टिने उपयोगसहित के उपयोग सिवाय बधी श्रुतविषयक असत्य भावभाषा होय छे. उपरना अवधि, मनःपर्याय अने केवळ त्रण ज्ञानमां उपयोगवाळो श्रुतविषयक जे बोले ते असत्यामृषा भाषा जाणवी. कारण के बहुधा सूत्रमां तेवा प्रकारनी भाषा छे. द्रव्यश्रुतने आश्रयी केवलज्ञान छतां पण भावभाषानो संभव छे. चारित्रने आश्रयी भावभाषा कहे छे-चारित्रनी विशुद्धि करनारी एटले जे बोलता चारित्र वृद्धि पामे ते सत्य भाषा छे अने चारित्रनी अविशुद्धि करनारी एटले जे बोलतां चारित्रनो परिणाम हीन थाय ते असत्य भाषा छे, ए सिवाय जे बोलतां चारित्रनो परिणाम स्थिर थाय ते असंक्लेश करनारी सत्य भाषा अने जे बोलतां चारित्र न रहे ते असत्य भाषा. ए बन्ने भाषा चारित्रने विशे भावने आश्रयी जाणवी.

ए प्रमाणे दोष अने गुणोने जाणीने युक्ति अने आगम वडे जेम चारित्र परिणामनी वृद्धिना हेतु गुणो न घटे, नाश न पामे तेवी रीते साधुओए बोलवुं. धर्ममां तत्पर अने अध्यात्म योगमां स्थिर, हितकारक अने परिमित बोलता महर्षिनी भाषा चारित्रनी विशुद्धि करे छे अने चारित्रनी विशुद्धि वडे मोहनीयकर्मनो क्षय करीने अने केवळज्ञान रूप लक्ष्मी प्राप्त करीने शैलेशी वडे योगनो निरोध करी सर्व संवरयुक्त थइने मोक्षसुखने प्राप्त करे छे.

बारसमं सरीरपयं ।

१. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पन्नत्ता, तंजहा—ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए । नेरइयाणं भंते ! कति सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! तओ सरीरया पन्नत्ता, तंजहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए । एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! कति सरीरया पन्नत्ता ?

बारमुं शरीर पद.

१. हे भगवन् ! केटलां शरीरो कह्यां छे ? हे गौतम ! पांच शरीरो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—१ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस अने ५ कार्मण. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटलां शरीरो कह्यां छे ? हे गौतम ! त्रण शरीरो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—१ वैक्रिय, २ तैजस अने ३ कार्मण. एम असुरकुमारोने यावत् स्तनितकुमारोने जाणवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटलां शरीरो छे ? हे

---

१ ए प्रमाणे अगियारमा पदनी व्याख्या करी, हवे बारमा पदनो आरंभ कराय छे, एनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—अहीं पूर्वना पदमां जीवोनी सत्यादि भाषानो विभाग बताव्यो, अने भाषा शरीरने आधीन छे, कारण के 'शरीरप्रभवा भाषा' भाषा शरीरथी उत्पन्न थाय छे, ए हमणां ज प्रतिपादन कर्युं छे बीजे स्थळे पण कह्युं छे के-'गेण्हइ काइएण निस्सरइ तह वाइएण जोएण' इति कायायोग वडे ग्रहण करे छे अने वचनयोग वडे बहार काढे छे, माटे शरीरनो विभाग बताववा माटे आ पदनो आरंभ करवामां आवे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता' ? इत्यादि उत्पत्ति समयथी मांडी प्रतिसमय 'शीर्यन्ते' क्षय पामे ते शरीर, हे भगवन् ! ते शरीरो केटला कह्या छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—पांच शरीरो कह्यां छे ते नामथी जणावे छे-'ओरालियए' इत्यादि

गोयमा ! तओ सरीरया पन्नत्ता, तंजहा—ओरालिए, तेयए, कम्मए। एवं वाउकाइयवज्जं जाव चउरिंदियाणं। वाउकाइयाणं भंते ! कति सरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरया पन्नत्ता, तंजहा—ओरालिए, वेउव्विते, तेयए, कम्मए। एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि। मणुस्साणं भंते! कति सरीरया पन्नत्ता? गोयमा! पंच सरीरया पन्नत्ता, तंजहा-ओरालिए, वेउव्विते, आहारए, तेयए, कम्मए। वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं, जहा नारगाणं।

गौतम ! त्रण शरीरो होय छे, ते आ प्रमाणे—औदारिक, तैजस अने कार्मण. ए प्रमाणे वायुकाय सिवाय यावत् चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! वायुकायिकोने केटलां शरीरो होय छे ? हे गौतम ! चार शरीरो होय छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिक, २ वैक्रिय, ३ तैजस अने ४ कार्मण. ए प्रमाणे पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने पण जाणवुं. हे भगवन् ! मनुष्योने केटलां शरीरो होय छे ? हे गौतम ! पांच शरीरो होय छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिक, २ वैक्रिय ३ आहारक, ४ तैजस अने ५ कार्मण. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नारकोनी पेठे जाणवुं.

आ शरीरोनो शब्दार्थ आगळ कहीशुं. तोपण स्थान खाली न रहे ते माटे कंइक कहीए छीए–'उदार' प्रधान, तेनुं प्रधानपणुं तीर्थंकर अने गणधरना शरीरोनी अपेक्षाए समजवुं, कारण के तीर्थंकर अने गणधरना शरीरथी अन्य अनुत्तर देवोनुं शरीर पण अनन्तगुण हीन छे. अथवा 'उरालं' उदार–विस्तारवाळुं, कारण के अवस्थित स्वभाववाळा औदारिक शरीरनो विस्तार कंइक अधिक हजार योजन प्रमाण छे, स्वाभाविक वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण एटलुं नथी, कारण के उत्कर्षथी पण अवस्थित स्वभाववाळा वैक्रिय शरीरनुं

प्रमाण पांचसो धनुष छे अने तेटलु प्रमाण सातमी नरकपृथिवीमां छे, बीजे नथी. जे उत्तरवैक्रिय लाख योजनना प्रमाणवाळु छे, पण ते अवस्थित नथी कारण के ते आखा भव सुधी रहेतु नथी, माटे तेनी अपेक्षाए अहीं कथन नथी. ए संबंधे चूर्णिकार कहे छे—"उराल नाम वित्थराल विसाल ति ज भणिय होइ, कह ? साइरेगजोयणसहस्समवट्ठियप्पमाणमोरालियं, अण्णमेद्दहमेत्त नत्थि, वेउव्विय जोयणसहस्सं-वणस्सईनाम्" इति. जे शरीर उराल-विस्तारवाळु विशाळ कहेलु छे, कारण के अवस्थित प्रमाणवाळु औदारिक शरीर कांइक अधिक हजार योजन छे. तेथी अन्य शरीर एटलु मोटु नथी. वैक्रिय शरीर मोटुं होय छे, पण ते अवस्थित प्रमाणवाळुं नथी. अवस्थित प्रमाणवाळु पांचसो धनुषनु, वैक्रिय शरीर सातमी नरकपृथिवीमां छे अने औदारिक शरीर अवस्थित प्रमाणवाळु हजार योजनथी कांइक अधिक वनस्पतिने होय छे, माटे ते ओराल-विशाळ कहेवाय छे अथवा उरल-थोडा प्रदेशवाळु, पण घन नहि, कारण के औदारिक शरीर भींडीनी पेठे थोडा प्रदेशवाळु अने विशाळ छे. अथवा सिद्धान्तनी परिभाषाथी ओराल-मांस अस्थि अने स्नायु वगेरेथी बंधायेलु, अर्थे स्वार्थमां इक प्रत्यय थयेलो छे अने पृषोदरादिमां पाठ होवाथी इष्ट रूपनी निष्पत्ति थाय छे. उदार शब्दथी औदारिक थाय छे अने प्राकृत होवाथी 'ओरालिय' रूप थाय छे. कह्युं छे के-तेमां उदार, उरल, उरल अने ओराल शब्दो जाणवा. तेमा प्रथम 'औदारिक' तीर्थंकरना शरीरने आश्रयी जाणवु. विस्तारवाळी वनस्पतिने आश्रयी 'उराल' कहेवाय छे कारण के स्वभावथी एटलु विशाळ बीजु कोइ शरीर नथी. उरल-थोडा प्रदेशोथी उपचित थयेलु अने भींडीनी पेठे मोटु, मांस, अस्थि अने स्नायु वडे बंधायेल छे माटे ए सिद्धान्तनी परिभाषाथी 'ओराल' कहेवाय छे.-विविध अथवा विशिष्ट क्रिया ते विक्रिया, ते निमित्ते थयेलु ते-वैक्रिय कायु छे के-विविध प्रकारनी के विशिष्ट क्रिया, ते निमित्ते जे थयेलु ते वैक्रिय, ते नारक अने देवोने स्वभावथी ज होय छे. अथवा वैकुर्विक शब्दनो आ रीते संस्कार करवो 'विकुर्व' ए सिद्धान्तप्रसिद्ध धातु छे. विकुर्वण- विकुर्व:—विविध प्रकारनी क्रिया ए तेनो अर्थ छे, ते हेतुथी बनेलु ते वैकुर्विक चौद पूर्वधरथी कार्यनी सिद्धि माटे योगबळ वडे 'आह्रियते' कराय ते आहारक ४ तेजनो विकार-परिणाम ते तैजस अने अने ५ कर्मोथी उत्पन्न थयेलु ते कार्मण

२. केवइया णं भंते ! ओरालियसरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धिल्लया य मुक्किल्लया य । तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो,

---

२. हे भगवन् ! औदारिक शरीरो केटला प्रकारनां कह्यां छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनां कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध–जीवे ग्रहण करेलां शरीरो छे ते असंख्याता छे अने ते काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना समयो वडे अ-

---

औदारिकादि शरीरोना आ प्रकारे क्रमिक उपन्यासनुं कंई प्रयोजन छे के यथाकथञ्चित् आ क्रम प्रवृत्त थयेलो छे? 'आवा प्रकारना क्रमनुं प्रयोजन छे' एम कहीए छीए. शुं प्रयोजन छे? उत्तरोत्तर शरीरना प्रदेशोनुं सूक्ष्मपणुं अने उत्तरोत्तर वर्गणामां प्रदेशोनुं अधिकपणुं जणाववा माटे छे, ते आ प्रमाणे–औदारिक करतां वैक्रिय शरीरना प्रदेशोनी सूक्ष्मता छे, वैक्रियथी पण आहारकना आहारकथी पण तैजसना अने तैजसथी पण कार्मणना प्रदेशोनी सूक्ष्मता होय छे, एटले शरीरना प्रदेशोनो उत्तरोत्तर सूक्ष्म परिणाम थाय छे. औदारिकथी वैक्रिय शरीरनी वर्गणामां, वैक्रियथी आहारकनी, आहारक करतां तैजसनी अने तैजसथी कार्मणनी वर्गणामां प्रदेशोनी अधिकता होय छे. ए पांच शरीरमां नैरयिकादिने विषे केटलां शरीरो संभवे छे तेनो विचार करे छे—'नेरइयाणं भंते ! केवइया सरीरा पण्णत्ता'–'हे भगवन् ! नैरयिकोने केटलां शरीरो कह्यां छे?–इत्यादि पाठसिद्ध छे.

२. शरीरो जीवोने बे प्रकारना होय छे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे विचार समये जीवे ग्रहण करेलां छे ते बद्ध अने जे पूर्व भवमां छोडी दीधेलां छे ते मुक्त शरीरो. हवे ते बद्ध शरीर अने मुक्त शरीरोना परिमाणनुं अत्यारे द्रव्य, क्षेत्र अने काळ वडे निरूपण करवुं जोइए. तेमां अभव्यादि द्रव्य वडे, श्रेणि–प्रतरादि क्षेत्रवडे, अने आवलिकादिरूप काळवडे प्रथम औदारिक शरीरने आश्रयी निरूपण करे छे–'केवइया णं भंते ! ओरालियसरीरा पण्णत्ता'–हे भगवन् ! केटलां औदारिक शरीरो कह्यां छे–इत्यादि. अहीं

खेत्ततो असंखेज्जा लोगा। तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ अणंता लोगा, अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणंतभागो। केवतिया णं भंते! वेउव्वियसरीरया पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेल्लया य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ असंखेज्जातो सेढीओ पयरस्स असंखेज्जतिभागो। तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति का-

---

पहराय छे क्षेत्रथी असंख्याता लोक प्रमाण छे. तेमां जे मुक्त (जीवे छोडेलां) शरीरो छे ते अनन्ता छे अने ते काळथी अनन्त उत्सर्पिणी–अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी अनन्त लोक प्रमाण छे अने ते अभव्योथी अनन्तगुणा अने सिद्धोने अनन्तमा भागे छे. हे भगवन्! केटलां वैक्रिय शरीरो छे? हे गौतम! ते बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते असंख्याता छे अने ते काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी प्रतरना असंख्यातमा भागमां रहेली असंख्याती श्रेणिओना प्रदेश प्रमाण छे. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे अने काळथी अनन्त

मूळमां 'बद्धिल्लया'-बद्ध शरीरो अने 'मुक्किल्लया'-मुक्त शरीरो-जीवोए त्याग करेलां शरीरो, अहीं प्राकृत भाषाने लीधे 'इल्ल' प्रत्यय अने स्वार्थमां 'क' प्रत्यय थयेलो छे तेमां बद्ध शरीरो असंख्याता छे, ते असंख्यातानुं निरूपण प्रथम काळने आश्रयी करे छे-असंखेज्जाहिं' इत्यादि प्रतिसमय एक एक शरीरनो अपहार करवा वडे असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे बधां शरीरो अपहराय तात्पर्य ए छे के-असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना जेटला समयो थाय तेटलां बद्ध-जीवोए ग्रहण करेलां औदारिक शरीरो छे [redacted]

लतो, जहा ओरालियस्स मुक्केल्लया तहेव वेउव्वियस्सवि भाणियव्वा। केवतिया णं भंते! आहारगसरीरया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धेलया य मुक्केल्लया य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं। तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता, जहा ओरालियस्स मुक्किल्लया तहेव भाणितव्वा। केवइया णं भंते! तेयगसरीरया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं अणंता, अणंताहिं

उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे–इत्यादि जेम औदारिक संबन्धे मुक्त शरीरो कह्यां छे तेम वैक्रियना पण कहेवां. हे भगवन्! आहारक शरीरो केटला प्रकारना छे? हे गौतम! बे प्रकारना छे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते कदाच होय के कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक, बे के त्रण होय अने उत्कृष्ट सहस्रपृथक्त्व होय. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे–इत्यादि जेम औदारिकना मुक्त शरीरो कह्या छे तेम कहेवां. हे भगवन्! केटला प्रकारना तैजस सरीरो कह्यां छे? हे गौतम! बे प्रकारना कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते अनन्ता छे अने काळथी अनन्त उत्सर्पिणी

काळथी परिमाण कह्युं हवे क्षेत्रने आश्रयी परिमाण कहे छे–'खेत्तओ असंखेज्जा लोगा'–क्षेत्रथी तेओनी संख्या असंख्याता लोकप्रमाण छे. तात्पर्य ए छे के–बधां औदारिक शरीरो पोतपोतानी अवगाहना वडे आकाशप्रदेशोमां जुदां जुदां अनुक्रमे स्थापीए तो ए प्रमाणे स्थापेलां ते शरीरो वडे असंख्याता लोको व्याप्त थाय. अहीं एक एक आकाशप्रदेशने विषे पण एक एक औदारिक शरीर स्थापवा वडे असंख्याता लोको व्याप्त थाय छे, परंतु पूर्वाचार्यो पोतानी अवगाहनानी स्थापना वडे प्ररूपणा करे छे तेथी अपसिद्धान्तनो दोष

उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ अणंता लोगा, दव्वओ सिद्धेहिंतो अणंतगुणा सव्वजीवाणंतभागूणा । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं अणंता,अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तत्तो अणंता लोगा, दव्वओ सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणा जीववग्गस्साणंतभागो । एवं कम्मगसरीराणिवि भाणितव्वाणि ।

अने अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी अनन्त लोक प्रमाण छे. द्रव्यथी सिद्धो करतां अनन्तगुणा अने अनन्तमा भाग वडे न्यून सर्व जीवोना जेटलां छे, तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे अने काळथी अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे क्षेत्रथी अनन्त लोक प्रमाण छे. द्रव्यथी सर्व जीवो करतां अनन्तगुणा अने सर्व जीवना वर्गना अनन्तमा भाग प्रमाण छे ए प्रमाणे कार्मण शरीरो पण कहेवां.

न प्राप्त थाय माटे असे पण ते आ प्रमाणे प्ररूपणा करीए छीए ए संबन्धे चूर्णिकार पण कहे छे–'जो के एक एक आकाशप्रदेशमां एक एक शरीर स्थापीए तोपण असंख्याता लोको थाय, परंतु अपसिद्धान्त दोषनो त्याग करवा माटे पोतपोतानी अवगाहना वडे स्थापन कराय छे' अहीं शङ्का करे छे–'अनन्ता जीवो छे, तो असंख्याता औदारिक शरीरो केम होय ? उत्तर–अहीं बे प्रकारना जीवो छे–प्रत्येक शरीरवाळा अने अनन्तकायिको तेमां जेओ प्रत्येकशरीरी छे तेओमां एक एक जीवने एक एक औदारिक शरीर होय छे, जो एम न होय तो प्रत्येकशरीरी न कहेवाय. जे अनन्तकायिक जीवो छे तेओमां अनन्त अनन्त जीवोने एक एक औदारिक शरीर होय छे, माटे बधी संख्या वडे पण असंख्याता औदारिक शरीरो होय छे जीवोए मुक्त—त्याग करेला औदारिक शरीरो अनन्त छे. ते अनन्तपणानुं काळ, क्षेत्र अने द्रव्य वडे निरूपण करे छे–'अणंताहिं' इत्यादि काळथी परिमाण–प्रतिसमय एक एक शरीरनो अपहार

करीए तो अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे सर्वथा अपहराय छे. तात्पर्य ए छे के अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जेटला समयो थाय तेटला मुक्त-त्याग करेलां औदारिक शरीरो छे. क्षेत्रथी परिमाण अनन्त लोक छे. अनन्तलोक प्रमाण आकाशखंडोमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटलां छे. द्रव्यथी परिमाण-अभव्योथी अनन्तगुणा छे. जो एम छे तो ते शरीरो सिद्धोनी राशि जेटलां थाय, ते माटे सूत्रकार कहे छे-सिद्धोना अनन्तमा भाग जेटला छे. (प्र०)—अहीं अभव्य अने सिद्धना वच्चे राशि वच्चे पतित सम्यग्दृष्टि जीवो कह्या छे, तो त्याग करेला औदारिक शरीरो तेना जेटलां छे? (उ०)—जो तेटलां होत तो सूत्रकार तेमज निर्देश करत, कारण के भगवन्त आर्य श्यामे शिष्यने सुखपूर्वक बोध थाय तेवा प्रकारनी सूत्ररचना करवानी प्रतिज्ञा करी छे. तो तेवा प्रकारनो निर्देश नहि करवाथी जणाय छे के पतित सम्यग्दृष्टिनी राशि जेटलां नथी. (प्र०)–जो ते राशि जेटलां न होय तो पतित सम्यग्दृष्टिना राशिथी न्यून होय के अधिक होय? तेनो उत्तर ए छे के कदाच ते राशिथी न्यून होय, कदाच अधिक के कदाच तुल्य होय. कारण के तेनुं अनियत प्रमाण होय छे, परन्तु हमेशां तेटलुं प्रमाण न होय. ए संबन्धे चूर्णिकार कहे छे-"तो शुं पडेला सम्यग्दृष्टिओना राशिप्रमाण अनन्त होय? कारण के तेओ वन्ने राशिनी वच्चे कहेला छे. अहिं उत्तर कहे छे—जो तेना जेटला होत तो तेनोज निर्देश कर्या होत, माटे तेना जेटला नथी. तो शुं तेथी नीचे होय के उपर होय? उत्तर—कदाचित् नीचे होय, कदाचित् उपर होय, के कदाचित् तुल्य होय, पण हमेशां तेना जेटला न होय. अहीं अन्य शंका करे छे—'मुक्त शरीरो उपर कहेल अनन्तसंख्याना परिमाणवाळां केम घटे? कारण के जो औदारिकादि शरीरो ज्यां सुधी अखंडित होय त्यां सुधी ज ग्रहण करीए तो तेओनी अनन्त काळ सुधी स्थिति नहि होवाथी अनन्तपणुं नहि घटी शके? जो अनन्त काळ सुधी रहे तो तो अनन्त काळे तेनी गणना करतां अनन्ता थाय, पण अनन्त काळ सुधी तेओनी स्थिति होती नथी. कारण के पुद्गलोनी उत्कर्षथी पण असंख्याता काळ सुधी स्थिति कहेली छे. जे पुद्गलो जीवे औदारिक शरीरपणे ग्रहण करीने अतीत काळे छोड्यां छे, तेओनुं ग्रहण थाय तो बधा जीवोमां प्रत्येक जीवे बधा पुद्गलो औदारिकपणे ग्रहण करीने मूक्यां छे, तेथी सर्व पुद्गलोनुं ग्रहण थाय अने एम होय तो जे कह्युं छे के 'अभव्यथी

अनन्तगुण अने सिद्धोना अनन्तमा भाग प्रमाण छे' ते विरुद्ध करे छे कारण के सर्व जीवोथी अनन्तानन्तगुणा पुद्गलोना ग्रहणनो प्रसंग प्राप्त थाय छे. उत्तर—अहीं केवळ अखंडित मुक्त औदारिक शरीरोनुं ग्रहण नथी, तेमज औदारिक शरीररूपे ग्रहण करीने मूकेला सर्व पुद्गलोनुं पण ग्रहण नथी, कारण के तेथी उपर कहेला दोषनी प्राप्ति थाय छे. परन्तु जे औदारिक शरीर जीवे ग्रहण करीने मूक्युं ते विशीर्ण भावने प्राप्त थतां तेना अनन्त भेद थाय छे, अने ते अनन्त भेदो थता थता ज्यां सुधी ते पुद्गलो औदारिकपरिणामनो त्याग न करे त्यां सुधी ते प्रत्येक भेदने 'औदारिक शरीर' कहेवाय छे, जे पुद्गलो औदारिक परिणामनो त्याग करे छे तेनी औदारिक शरीर तरीके गणना थती नथी तेथी एक शरीरना पण अनन्त शरीरो थाय छे. ए प्रमाणे बधा शरीरो संबन्धे जाणवुं. ए प्रमाणे एक एक शरीरना अनन्त भेद थता होवाथी एक शरीरना पण घणा अनन्त शरीरो थाय छे, माटे तेओ असंख्याता काल सुधी रहे छे अने ते असंख्याता काळे जीवे मूकेला बीजा असंख्याता शरीरो होय छे अने ते प्रत्येकना अनन्त भेदो थाय छे, तेओमां केटला काळे जेटलो औदारिक शरीर परिणामनो त्याग करे तेने ओछी देवा अने बाकीना गणवा तेथी ए प्रमाणे मुक्त औदारिक शरीरोनी उपर कहेली अनन्त संख्या घटी शके छे. आ मारी पोतानी मतिकल्पना नथी, कारण के ए संबन्धे मूळटीकाकार कहे छे—"अहीं केवळ अखंड औदारिक शरीरोनुं ग्रहण नथी, तेम औदारिकरूपे ग्रहण करी मूकेला सर्व पुद्गलोनुं पण ग्रहण नथी, परन्तु जे औदारिक शरीर जीवे मूक्युं छे, तेना अनन्त भाग थाय अने ज्यां सुधी ते पुद्गलो जीवप्रयोगे थयेला औदारिक शरीरकायप्रयोगनो त्याग न करे अने ज्यां सुधी अन्य परिणाम वडे परिणत न थाय त्यां सुधी ते प्रत्येक 'औदारिक शरीर' कहेवाय छे. ए प्रमाणे एक एक औदारिक शरीरना अनन्त भेद थवाथी अनन्त औदारिक शरीरो थाय छे" इत्यादि

अहीं शंका करे छे—'शरीर द्रव्यना एक एक भागनो औदारिक शरीररूपे केम व्यवहार थाय? उत्तर—लवणना दृष्टान्तथी थाय छे. जेम के खारी प्रमाण लवण होय, द्रोण प्रमाण होय के आढक प्रमाण होय ते बधु लवण ज कहेवाय, ज्यां सुधी एक गांगडो होय त्यां सुधी लवण कहेवाय छे, तेम अहीं पण अंश होय तो पण औदारिक शरीर कहेवाय, तेनो असंख्यातभाग होय तो पण, अने तेनो

पण एक भाग होय यावत् अनन्तमो भाग होय तो पण ते शरीर ज कहेवाय छे. अहीं तात्पर्य ए छे के जेम लवणना परिणाम वडे परिणत थोडा के घणा पुद्गलोनो समुदाय लवण कहेवाय छे, तेम औदारिक शरीरयोग्य पुद्गलोनो समुदाय पण औदारिकपणे परिणत थयेलो थोडो के घणो होय तो तेनो औदारिक शरीरपणे व्यवहार थइ शके छे. अथवा समुदायना एक भागमां पण समुदायवाचक शब्दनो व्यवहार थाय छे. जेम के देवदत्तनी आंगळीना अग्रभागमां स्पर्श कर्यो होय तो 'में देवनो स्पर्श कर्यो' एम कहेवाय छे, तेथी उपचारथी तेने औदारिक शरीर कहेवामां कांइ पण दोष नथी.

(प्र०) जो एम छे तो ते अनन्त लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण औदारिक शरीरो एक लोकमां केम रही शके ? उत्तर-प्रदीपना प्रकाशनी पेठे रही शके छे. ते आ प्रमाणे—जेम के एक पण दीवानो प्रकाश आखा घरने प्रकाशित करे छे, अने बीजा अनेक दीवाओनो प्रकाश होय तोपण तेमां ज समाय छे, कारण के तेओनो परस्पर विरोध नथी, तेम औदारिक शरीर संबन्धे जाणवुं. एम बधां मुक्त शरीरो संबन्धे पण आ युक्ति समजवी.

(प्र०)—द्रव्य अने क्षेत्र छोडीने प्रथम काळने आश्रयी प्ररूपणा केम करी ? (उ०)—अन्य काळमां रहेता होवाथी पुद्गलोने विशे शरीरनो उपचार थाय छे, अन्यथा थतो नथी, तेथी काळ मोटो छे माटे प्रथम काळने आश्रयी प्ररूपणा करी.

एम औदारिक शरीरो कह्यां, हवे वैक्रिय शरीर संबन्धे सूत्र कहे छे—'केवइया णं भंते ! इत्यादि. बद्ध-ग्रहण करेलां वैक्रिय शरीरो असंख्याता छे, तेमां काळने आश्रयी परिमाण बतावे छे-प्रतिसमये एक एक शरीरनो अपहार करीए तो असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे बधां शरीरो अपहराय. तात्पर्य ए छे के असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जेटला समयो थाय छे तेटला बद्ध वैक्रिय शरीरो छे. क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणीओ छे अने ते श्रेणिओनुं परिमाण प्रतरनो असंख्यातमो भाग छे. तात्पर्य ए छे के प्रतरना असंख्यातमा भागमां जेटली श्रेणिओ छे अने ते श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटलां बद्ध वक्रिय शरीरो छे.

(प्र०)—हवे श्रेणि ए शुं छे ? (उ०)—घनीकृत-घनरूपे कल्पेला अने चोतरफ सात रज्जुप्रमाण लोकनी सात रज्जुप्रमाण लांबी

गुणाकारीला जेपी एक आकाशप्रदेशनी पंक्ति व श्रेणि कहेवाय छे (३०)—लोकनो घन केवी रीते करवो अने ते सात रज्जुप्रमाण शी रीते थाय? (उ०)—अहीं लोक ऊर्ध्व अने अधो चौद रज्जुप्रमाण छे. नीचे विस्तारमां कंइक न्यून सात रज्जु प्रमाण छे. एक रज्जुप्रमाण मध्य भागमां छे, ब्रह्मलोकना प्रदेशना बहु मध्य भागमां पांच रज्जु अने लोकान्ते एक रज्जुप्रमाण छे स्वयंभूरमण समुद्रनी पूर्व वेदिकाना अन्तथी पश्चिम वेदिकाना अन्त सुधी रज्जु परिमाण जाणवु आपा प्रमाणवाळा वैशाख स्थान स्थित-रहेला पग करी अने केडे बे हाथ मूकीने उभा रहेला पुरुषनी आकृतिवाळा आ लोकना त्रस नाडीना दक्षिण भागमां रहेलो कंइक न्यून त्रण रज्जुना विस्तारवाळो अने कंइक अधिक सात रज्जुनी उंचाइवाळो अधोलोकनो खंड कल्पनाथी लइने ते त्रस नाडीना उत्तर भागमां उपर अने नीचेनो भाग उलटो करी जोडवो. पहेले उपरनो भाग नीचे करी अने नीचेनो भाग उपर करी मूकवो त्यार पछी ऊर्ध्व लोकमां त्रस नाडीना दक्षिण भागमां कोणीना आकारे रहेल जे बे खंडो छे, ते प्रत्येकनी उंचाइ कंइक न्यून साडा त्रण रज्जु प्रमाण छे, तेने कल्पनाथी लइ उलटा करी त्रस नाडीना उत्तरना भागमां जोडवा एम करवाथी नीचेनो लोकनो अर्ध भाग कंइक न्यून चार रज्जुना विस्तारवाळो अने कंइक अधिक सात रज्जुनी उंचाइवाळो थयो अने उपरनो अर्ध भाग त्रण रज्जुना विस्तारवाळो अने उंचाइमां कंइक न्यून सात रज्जु प्रमाण थयो पछी उपरनो अर्ध भाग कल्पनाथी लइने नीचेना अर्ध भागनी उत्तर दिशामां जोडवो. एम करवाथी कंइक अधिक सात रज्जु उंचो अने कंइक न्यून सात रज्जुना विस्तारवाळो घन थयो, त्यार पछी सात रज्जुना उपर जे अधिक भाग छे ते लइने ऊर्ध्व-अधो लांबो करी उत्तर भागनी साथे जोडवो तेथी विस्तारमां सात रज्जु परिपूर्ण थाय छे ए प्रमाणे कल्पनाथी लोकनो घन कराय छे अने घन कराय त्यारे सात रज्जुप्रमाण थाय छे जोके एटले घन थयाथी सात रज्जु प्रमाण पूरु न थाय त्यां बुद्धिथी सात रज्जुनी पूर्ति करी लेवी आ रीत पाटीमां लखीने बताववी सिद्धान्तमां ज्यारे पण श्रेणि के प्रतरनु ग्रहण होय त्यां सर्वत्र आ प्रमाणे घनरूपे करेला सात रज्जुप्रमाण लोकनु जाणवुं वैक्रिय शुक्ल शरीरो औदारिकनी पेठे जाणवां

आहारक शरीर संबन्धे सूत्र कहे छे-'केवइया णं भंते ! आहारगसरीरगा'—हे भगवन् ! आहारक शरीरो केटला प्रकारनां कह्यां छे ?-इत्यादि. 'वद्धानि सिय अत्थि सिय नत्थि'-वद्ध शरीरो कदाच होय अने कदाच न होय. अहीं 'अत्थि'-अस्ति ए अव्यय वहु-वचनमां छे, तेथी कदाचित् सन्ति, कदाचित् न सन्तीत्यर्थः' तेथी आहारक शरीरो कदाच होय अने कदाच होता नथी, कारण के आहारक शरीरनुं जघन्यथी एक समयनुं अने उत्कर्षथी छ मासनुं अन्तर होय छे. कह्युं छे के-'आहारक शरीरो लोकमां कदाचित् वधारेमां वधारे छ मास सुधा हो'नां नथी अने जघन्य एक समय सुधी होतां नथी. ज्यारे होय छे त्यारे पण जघन्यथी एक, बे अने उत्कर्षथी सहस्रपृथक्त्व-बे हजारथी नव हजार सुधी होय छे. अने मुक्त शरीरो औदारिकनी पेठे जाणवां.

तैजस शरीर संबन्धे सूत्र कहे के—'केवइयाणं भंते ! तेयगसरीरया'-हे भगवन् ! तैजस शरीरो केटला प्रकारनां छे' इत्यादि. तेमां वद्ध-ग्रहण करेलां तैजस शरीरो अनन्त छे. ते अनन्तपणानुं काळ, क्षेत्र अने द्रव्य वडे निरूपण करे छे-'अणंताहिं' इत्यादि. तेनुं काळथी परिमाण-अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समय जेटलां वद्ध तैजस शरीरो छे, क्षेत्रथी अनन्त लोक प्रमाण आकाशनां खंडना प्रदेश जेटला छे, द्रव्यथी परिमाण-सिद्धो करतां अनन्तगुणा छे. तैजस शरीर प्रत्येक संसारी जीवने होय छे. संसारी जीवो सिद्धोथी अनन्तगुणा छे, तेथी तैजस शरीरो पण सिद्धोथी अनन्तगुणा थाय छे, अने सर्व जीवो करतां तेना अनन्तमा भागे न्यून छे. अहीं तात्पर्य ए छे के सिद्धोने तैजस शरीर होतुं नथी, कारण के तेओ सर्व शरीर रहित छे, अने सिद्धो सर्व जीवोने अनन्तमे भागे छे तेथी सिद्धना जीवो वडे न्यून एटले अनन्तमा भागे न्यून सर्व जीवोना जेटला वद्ध तैजस शरीरो छे. मुक्त तैजस शरीरो अनन्त छे. ते अनन्तपणुं काळ, क्षेत्र अने द्रव्यवडे जणावे छे-'अणंताहिं' इत्यादि. काळ अने क्षेत्रना सूत्रो पूर्वनी पेठे जाणवा. अने द्रव्यथी परिमाण सर्व जीवो करतां अनन्तगुणा छे. (प्र०)—शाथी अनन्तगुणा छे ? (उ०)—एक एक संसारी जीवने एक एक तैजस शरीर होय छे, अने ते जीवोए मूकेलां शरीरो पूर्वे कहेली युक्तिथी अनन्त भेदवाळां थाय छे अने तेओ असंख्याता काळ सुधी रहे छे, तेटला काळमां जीवोए मूकेलां दरेक जीव दीठ अन्य असंख्य तैजस शरीरो प्राप्त थाय छे अने ते प्रत्येकना पूर्वोक्त युक्तिथी अनन्त भेदो

३. नेरइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं णत्थि । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं अणंता जहा ओरालियमुक्के-

३. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटलां औदारिक शरीरो कह्यां छे ? हे गौतम ! बे प्रकारना औदारिक शरीरो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-बद्ध अने मुक्त. तेमां नैरयिकोने बद्ध औदारिक शरीरो होतां नथी, अने मुक्त औदारिक शरीरो अनन्ता छे-इत्यादि जेम

थाय छे, माटे मुक्त-त्याग करेलां शरीरो सर्व जीवो करतां अनन्तगुणा छे ते शुं जीवोना वर्गप्रमाण छे ? ए प्रश्नना उत्तरमां कहे छे-'जीववग्गस्स अणंतभागो'—जीवोना वर्गना अनन्तमे भागे छे (प्र०)—जीवना वर्ग जेटला केम नथी ? (उ०)—जो एक एक जीवना शरीरो सर्व जीवराशि प्रमाण होय के तेथी कइक अधिक होय केजेथी तिद्धना अनन्तमा भागनी पूर्ति थाय, तो शरीरो जीववर्गप्रमाण थाय, ते राशिने तेटली राशि वडे गुणतां वर्ग थाय छे जेमके चारने चारे गुणता सोळ वर्ग थाय छे परंतु एक एक जीवना शरीरो सर्व जीव प्रमाण के तेथी कइक अधिक नथी, पण घणा थोडां छे अने ते पण असंख्याता काळ सुधी रहे छे, अने तेटला काळमां बीजां जे अन्य शरीरो होय छे ते पण थोडा होय छे, कारण के काळ थोडो छे, माटे जीववर्गप्रमाण थता नथी, परंतु जीववर्गना अनन्तमा भागे होय छे अनन्तमा भागना प्रमाणनु पूर्वाचार्योए बतावेलुं आ दृष्टान्त छे-सर्व जीवो वास्तविक रीते अनन्त छे, पण असत्कल्पनाथी दस हजार गणवा ते दस हजारनो वर्ग दस क्रोड थाय छे मुक्त तैजस शरीरो असत्कल्पनाथी दस लाख प्रमाण छे, तेथी सर्व जीवो करता सो गुणा एटले सर्व जीवोथी अनन्तगुणा छे अने ते जीववर्गना सोमा भागे छे तेथी जीववर्गना अनन्तमा भागप्रमाण थाय छे एम बद्ध अने मुक्त कार्मण शरीरोनो विचार करवो. कारण के तेनी संख्या तैजसना जेटली छे एम सामान्य पांचे शरीरो कह्यां

३ 'नेरइयाणं भंते ! इत्यादि नैरयिकोने बद्ध औदारिक शरीरो नथी, कारण के तेओने भवनिमित्तक औदारिक शरीरनो अनभय

ल्लगा तहा भाणियव्वा। नेरइयाणं भंते! केवइया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–वद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते वद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणिहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तत्तो असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलं वितीयवग्गमूलपडुप्पण्णं, अहव णं अंगुलवितीयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीतो। तत्थ

मुक्त औदारिक शरीरो कह्यां तेम कहेवां. हे भगवन्! नैरयिकोने केटलां वैक्रिय शरीरो कह्यां छे? हे गौतम! बे प्रकारनां वैक्रिय शरीरो कह्यां छे, ते आ प्रभाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध वैक्रिय शरीरो छे ते असंख्याता छे अने काळनी अपेक्षाए असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी प्रतरना असंख्यातमा भाग प्रमाण असंख्याती श्रेणिओ जेटला छे, ते श्रेणिओनी विष्कम्भसूचि अंगुल प्रमाण आकाश प्रदेशोना प्रथम वर्गमूलने बीजा वर्गमूल वडे गुणतां जेटला आकाश प्रदेशो आवे

छे. मुक्त शरीरो सामान्य मुक्त औदारिक शरीरोनी पेठे जाणवा. बद्ध वैक्रियशरीरो नारकोना जेटला छे, अने ते असंख्याता छे. ते असंख्याताने काळ अने क्षेत्र वडे प्ररूपणा करे छे—'असंखेज्जाहिं' इत्यादि. काळथी परिमाण-प्रतिसमय एक एक शरीरनो अपहार करतां असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे बधा शरीरो अपहराय छे. तात्पर्य ए छे के असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जेटला समयो थाय तेटला शरीरो छे. क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणिओ छे एटले असंख्याती श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला छे. 'संपूर्ण प्रतरमां पण असंख्याती श्रेणिओ होय छे, अने अर्ध भाग के त्रीजा भाग वगेरेमां पण असंख्याती श्रेणिओ होय छे, तो ते केटली श्रेणिओ होय' ए आशंकामां विशेष अर्थनो निर्णय करवा माटे कहे छे—'प्रतरस्यासंख्येयभागः' प्रतरना असंख्यातमा भागमां जेटली श्रेणिओ होय तेटली लेवी. बीजुं विशेष परिमाण आ प्रमाणे छे—'तासि णं सेढीणं विक्खंभ सूई'

णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा। नेरइयाणं भंते! केवइआ आहारगसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य, एवं जहा ओरालिए बद्धेल्लगा मुक्के-

तेटला प्रदेशोनी जाणवी. अथवा अंगुलप्रमाण आकाश प्रदेशोना बीजा वर्गमूलना घनप्रमाण श्रेणिओ जाणवी. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते जेम औदारिकना मुक्त शरीरो कह्या तेम कहेवां. हे भगवन्! नारकोने केटला आहारक शरीरो होय छे? हे गौतम! बे

इत्यादि ते श्रेणिओनी विष्कंभसूचि—विस्तारने आश्रयी सूची—एक प्रदेशनी श्रेणि अंगुलना प्रथम वर्गमूलवडे गुणेला बीजा वर्गमूल प्रमाण जाणवी अहीं आ भावार्थ छे—अहीं प्रज्ञापके सात रज्जु प्रमाण घनीकृत लोकनी पाटी वगेरेमां स्थापना करवी अने तेमां श्रेणि रेखाना आकार वडे बतावयी, अने बतावीने ए प्रमाणे कहेवु—अंगुलप्रमाण आकाशक्षेत्रमां जेटला प्रदेशो होय तेना असंख्याता वर्गमूलो थाय छे जेम के प्रथम वर्गमूल, तेनु जे वर्गमूल थाय ते बीजु वर्गमूल, तेनु जे वर्गमूल आवे ते त्रीजु वर्गमूल, एम असंख्याता वर्गमूलो थाय छे तेमां प्रथम वर्गमूलने बीजा वर्गमूल वडे गुणवा, अने गुणवाथी जेटला प्रदेशो आवे तेटला प्रदेशनी सूचिश्रेणि बुद्धिथी कल्पवी कल्पीने दक्षिण अने उत्तर लांबी स्थापवी अने तेने स्थापवा वडे जेटली श्रेणिओनो स्पर्श करे तेटली श्रेणिओ ग्रहण करवी तेमां आ उदाहरण छे—अंगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रदेशो वास्तविक रीते असंख्याता छे, तो पण असत्कल्पनाथी बसो छप्पन कल्पवा तेनु प्रथम वर्गमूल सोळ, बीजु वर्गमूल चार अने त्रीजु वर्गमूल बे तेमां चाररूप बीजा वर्गमूल वडे सोळरूप प्रथम वर्गमूलने गुणता चोसठ थाय, एटली श्रेणिओ ग्रहण करवी आ अर्थ बीजी रीते जणावे छे—'अहव णं' इत्यादि 'अथवा' शब्द प्रकारान्तरना अर्थमां छे 'ण' वाक्यालंकारमां छे अंगुलमात्र क्षेत्रना प्रदेशराशिना बीजा वर्गमूलरूप असत्कल्पनाए चारनो जे घन थाय तेटली श्रेणिओ ग्रहण करवी अहीं जे राशिनो जे वर्ग छे तेने ते राशि वडे गुणतां घन थाय छे जेम के बेनो घन आठ थाय छे ते आ प्रमाणे—बेनो वर्ग चार, तेने बेथी गुणता आठ थाय ए प्रमाणे अहीं पण चारनो वर्ग सोळ तेने चारे गुणता जे आवे तेटलो चारनो घन थाय छे,

ल्लया य भणिया तहेव आहारगावि भाणियव्वा। तेयाकम्मगाइं जहा एएसिं चेव वेउव्वियाइं।

४. असुरकुमाराणं भंते! केवइया ओरालियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! जहा नेरइयाणं ओरालियसरीरा भणिता तहेव एतेसिं भाणितव्वा। असुरकुमाराणं भंते! केवइया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा

प्रकारना आहारक शरीरो छे, ते आ प्रमाणे—बद्ध अने मुक्त. ए प्रमाणे जेम औदारिक शरीरो बद्ध अने मुक्त कह्यां तेम आहारक शरीरो पण कहेवां. तैजस अने कार्मण शरीरो जेम वैक्रिय शरीरो कह्यां तेम कहेवा.

४. हे भगवन्! असुरकुमारोने केटला औदारिक शरीरो कह्यां छे? हे गौतम! जेम नारकोने औदारिक शरीरो कह्यां तेम असुकुमारोने पण जाणवां. हे भगवन्! असुरकुमारोने केटलां वैक्रिय शरीरो कह्यां छे? हे गौतम! बे प्रकारना वैक्रिय शरीरो कह्यां छे,

---

अने त्यां पण तेज चोसठ थाय छे, बन्ने प्रकारना गणितमां अर्थनो भेद नथी. अहीं आ गणितनो व्यवहार छे के घणी संख्याने थोडी संख्याथी गुणाय छे. तेथी सूत्रकारे बे ज प्रकार बताव्या छे, अन्यथा त्रीजो प्रकार पण छे—'अंगुलबिइयवग्गमूलं पढमवग्गमूलपडुप्पन्नं' इति. अंगुलप्रमाण आकाशक्षेत्रना प्रदेशोना बीजा वर्गमूलने प्रथम वर्गमूलथी गुणवां. बीजा आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे—अंगुल प्रमाण क्षेत्रना प्रदेशोने पोताना प्रथम वर्गमूलनी साथे गुणतां जेटला प्रदेशो थाय तेटला प्रदेशनी सूची वडे जेटली श्रेणिओनो स्पर्श थाय तेटली श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला नारकोना बद्ध वैक्रिय शरीरो छे, अने मुक्त वैक्रिय शरीरो औदारिकनी पेठे जाणवा. नारकोने बद्ध आहारक शरीरो नथी, कारण के तेओने आहारकलब्धिनो असंभव छे. मुक्त शरीरो पूर्वनी पेठे जाणवां. बद्ध तैजसकार्मण शरीरो वैक्रियनी पेठे अने मुक्त शरीरो पूर्वनी पेठे जाणवा.

४. असुरकुमारोने औदारिक शरीरो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. तेओने बद्ध वैक्रिय शरीरो असङ्ख्याता छे अने ते असंख्यातानुं काळ अने क्षेत्रवडे

पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जतिभागो, तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स संखेज्जतिभागो । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा । आहारगसरीरगा जहा एतेसिं चेव ओरालिया तहेव दुविहा भाणियव्वा, तेयाकम्मगसरीरा

ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध वैक्रिय शरीरो छे ते असंख्याता छे अने कालथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी प्रतरना असंख्यातमा भागरूप असंख्याती श्रेणिओ छे. ते श्रेणिओनी विष्कम्भसूची अंगुलना प्रथम वर्गमूलना संख्यातमा भाग प्रमाण जाणवी. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते औदारिकना मुक्त शरीरो कह्यां छे तेम कहेवां. आहारक शरीरो तेम एओने औदारिक शरीरो कह्यां छे तेम बे प्रकारनां कहेवां. बन्ने प्रकारना पण तैजस अने कार्मण शरीरो तेम एओने वैक्रिय शरीरो

विकल्प करे छे–तेमां कालने आश्रयी सूत्र पूर्वोक्त रीते जाणवुं. क्षेत्रने आश्रयी असंख्याती श्रेणिओ छे. पहेले असंख्याती श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला छे. ते श्रेणिओ प्रतरनो असंख्यातमो भाग छे–प्रतरना असंख्यातमा भागप्रमाण छे माटे ... विचारवां प्रतरना असंख्यातमा भाग प्रमाण श्रेणिओ कही छे, तेनी बीजुं विशेष परिमाण कहे छे–ते श्रेणिओना परिमाणने माटे जे विष्कम्भ सूचि छे ते अंगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रदेश राशिना प्रथम वर्गमूलना संख्यातमा भागप्रमाण छे. तात्पर्य ए छे के अंगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रदेशोनो समूह असत्कल्पनाथी बसो छप्पन छे, तेनुं प्रथम वर्गमूल सोळ थाय, तेना संख्यातमा भागे केटलाक आकाशप्रदेशो छे ते असत्कल्पनाथी त्रण के छ जाणवा, तेटला प्रदेशोनी श्रेणिप्रमाण विष्कम्भसूचि जाणवी. ए प्रमाणे वैक्रियनी पहेलां अनुयोगा रोनी विष्कम्भसूचि असंख्यातगुण हीन जाणवी. ते आ प्रमाणे–वैक्रियोनी श्रेणिना परिमाण माटे जे विष्कम्भसूचि छे ते अंगुलना

दुविहावि जहा एतेसिं चेव विउव्विया, एवं जाव थणियकुमारा ।

५. पुढविकाइयाणं भंते! केवइया ओरालियसरीरगा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणिओस्सप्पिणीहिं अवहीरंति का-

कह्यां छे तेम कहेवां. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

५. हे भगवन्! पृथिवीकायिकोने केटलां औदारिक शरीरो कह्यां छे? हे गौतम! बे प्रकारना औदारिक शरीरो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध औदारिक शरीरो छे ते असंख्याता छे अने काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी वडे

प्रथमवर्गमूलने बीजा वर्गमूलनी साथे गुणतां जेटली संख्या आवे तेटला प्रदेशनी जाणवी. बीजुं वर्गमूल वास्तविक रीते असंख्यात प्रदेशरूप छे, तेथी असंख्यातगुण प्रथम वर्गमूलना प्रदेशरूप नैरयिकोनी विष्कंभसूचि छे, अने असुरकुमारोनी सूचि अंगुलना प्रथम वर्गमूलना संख्यातमा भागना प्रदेशरूप छे अने ए युक्त पण छे, कारण के त्रीजा पदने विशे महादंडकमां बधा भवनपतिओ रत्नप्रभाना नैरयिको करतां पण असंख्यातागुण हीन कह्या छे, तो पछी बधा नारको करतां असंख्यातगुण हीन होय एमां शुं कहेवुं? तेओना मुक्त शरीरो सामान्य मुक्त शरीरोनी पेठे जाणवा. आहारकशरीरो नैरयिकोनी पेठे जाणवां. बद्ध तैजस अने कार्मण शरीरो बद्ध वैक्रियनी पेठे समजवा. मुक्त तैजस अने कार्मण शरीरो सामान्य मुक्त तैजसकार्मणनी पेठे जाणवा. जेम असुरकुमारोने कह्युं तेम बाकीना भवनपतिओने यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं.

५. पृथिवी, अप् अने तेजस्कायिक सूत्रोमां बद्ध औदारिक शरीरो असंख्याता छे, तेमां पण काळने आश्रयी परिमाणनो विचार

लतो, खेत्ततो अणंता लोगा, अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणं अणंतभागो। पुढविकाइयाणं भंते! केवतिया वेउव्वियसरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं णत्थि। तत्थ णं जे ते मुक्केलगा ते णं जहा एएसिं चेव ओरालिया तहेव भाणियव्वा। एवं आहारगसरीराणि। तेयाकम्मगा जहा एएसिं चेव ओरालिया। एवं आउकाइयतेउकाइयावि।

अपहराय छे. क्षेत्रथी असंख्याता लोक प्रमाण छे. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे अने कालथी अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी अनन्त लोकप्रमाण छे. ते भव्य करतां अनन्तगुण अने सिद्धोना अनन्तमा भागे छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिकोने केटला वैक्रिय शरीरो कह्यां छे? हे गौतम! बे प्रकारनां कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते तेओने नथी. तेमा जे मुक्त शरीरो छे ते जेम एओने औदारिक शरीरो कह्यां छे तेम कहेवां. ए प्रमाणे आहारक शरीरो पण कहेवां तैजस अने कार्मण शरीरो एओने जेम औदारिक शरीरो कह्यां छे तेम कहेवां. ए प्रमाणे अप्कायिको अने तेजस्कायिको संबंधे पण कहेवुं.

करता प्रतिसमय एक एक शरीरनो अपहार करता असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे बधा शरीरो अपहराय छे क्षेत्रने आश्रयी परिमाणना विचारमा 'असंख्याता लोकप्रमाण छे' एटले पोतपोतानी अवगाहना वडे असंख्याता लोको व्याप्त थाय छे मुक्त शरीर सामान्य मुक्त शरीरनी पेठे जाणवा बद्ध तैजस अने कार्मण शरीरो बद्ध औदारिकनी पेठे अने मुक्त शरीरो सामान्य मुक्त शरीरनी पेठे जाणवा

६. वाउकाइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। दुविहावि जहा पुढविकाइयाणं ओरालिया। वेउव्वियाणं पुच्छा। गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा समए समए अवहीरमाणा २ पलितोवमस्स

६. हे भगवन् ! वायुकायिको ने केटलां औदारिक शरीरो कह्यां छे? हे गौतम ! बे प्रकारनां औदारिक शरीरो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. ते बन्ने प्रकारना शरीरो जेम पृथिवीकायिकोने औदारिक शरीरो कह्यां छे तेम कहेवां. वैक्रियशरीर संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते असंख्याता छे. अने समये समये अपहार कराता प-

६. वायुकायने पण औदारिक शरीरो पृथिव्यादिनी पेठे जाणवा. तेओने बद्ध वैक्रिय शरीरो असंख्याता छे, अने प्रतिसमय एक एकनो अपहार करता पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण काळे बधां अपहराय छे. तात्पर्य ए छे के पल्योपमना असंख्यातमा भागना जेटला समयो थाय तेटलां बद्ध वैक्रिय शरीरो छे, पण अधिक नथी, ते आ प्रमाणे–वायुकायिको चार प्रकारना छे, सूक्ष्म अने बादर. अने ते एक एकना बब्बे प्रकार छे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां बादर पर्याप्ता सिवाय बाकीना त्रणे प्रत्येक असंख्याता लोकाकाशप्रदेशप्रमाण छे. जेओ बादर पर्याप्ता छे ते प्रतरना असंख्यातमा भागप्रमाण छे. तेमांना त्रण प्रकारना वायुकायने वैक्रियलब्धि नथी. बादर पर्याप्तामां पण संख्याता भागमात्रने वैक्रियलब्धि छे, पण बाकीनाने नथी. ए संबन्धे चूर्णिकार कहे छे–"तिण्हं ताव रासीणं वेउव्वियलद्धी चेव नत्थि, बायरपज्जत्ताणंपि संखेज्जइभागमेत्ताणं लद्धी अत्थि" त्ति। त्रण राशिने वैक्रिय लब्धि नथी, बादर पर्याप्तामां पण मात्र संख्याता भागने ज वैक्रिय लब्धि होय छे." तेथी पल्योपमना असंख्यातमा भागना समयप्रमाण ज वायुकायिको प्रश्नसमये वैक्रियलब्धिवाळा होय छे, अधिक नथी. अहीं केटलाक आचार्यो कहे छे–"बधा वायुकायिको वैक्रियलब्धि

असंखेज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया। मुक्केल्लगा जहा पुढविकाइयाणं। आहारयतेयाकम्मा जहा पुढवीकाइयाणं, वणप्फइकाइयाणं जहा पुढविकाइयाणं, णवरं तेयाकम्मगा जहा ओहिया तेयाकम्मगा।

७. बेइंदियाणं भंते! केवइया ओरालिया सरीरगा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता। तंजहा—बद्धेल्लगा य

ल्योपमना असंख्यातमा भाग मात्र काळ सुधी अपहराय छे,तो पण एम अपहरायेलां नथी.मुक्त शरीरो पृथिवीकायिकोनी जेम जाणवा, आहारक, तैजस अने कार्मण शरीरो पृथिवीकायिकनी जेम कहेवा. वनस्पतिकायिको पृथिवीकायिकोनी पेठे जाणवा, परन्तु तैजस अने कार्मण शरीरो सामान्य तैजस अने कार्मणनी पेठे जाणवा.

७. हे भगवन्! बेइंद्रियोने केटला प्रकारना औदारिक शरीरो कह्या छे? हे गौतम! बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—बद्ध

वाळाज होय छे, कारण के वैक्रिय लब्धि रहित वायुकायने चेष्टानो ज असंभव छे" ते अयुक्त छे कारण के वस्तुस्थितिनुं परिज्ञान नथी वायु स्वभावथी गतिक्रियावाळा होय छे अने तेथी वैक्रियरहित छतां वाय छे एम जाणवुं कारण के 'वाति' इति वायुः—वाय छे ते वायु—एवी तेनी व्युत्पत्ति छे व तथन्धे चूर्णिकार कहे छे—"जेण सव्वेसु चेव लोगागासेसु चला वायवो वायंति, तम्हा अवेउव्वियावि वाया वायतीति घित्तव्वं" इति। जेथी सर्व लोकाकाशमा गतिक्रियायुक्त वायुओ वाय छे ते माटे वैक्रिय लब्धि रहित छतां वाय छे एम जाणवुं मुक्त वैक्रिय शरीरो सामान्य मुक्त वैक्रियनी पेठे जाणवा बद्ध तैजस अने कार्मण शरीरो बद्ध औदारिकनी पेठे अने मुक्त शरीरो सामान्य मुक्तनी पेठे जाणवा वनस्पतिकायना विचारमा औदारिक शरीरो पृथिव्यादिनी पेठे अने तैजस अने कार्मण शरीरो सामान्य तैजस अने कार्मणनी पेठे जाणवां

मुक्केल्लगा य, तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो, तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाइं सेढिवग्गमूलाइं । बेइंदियाणं ओरालियसरीरेहिं बद्धेल्लगेहिं पयरो अवहीरति, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अंगुलपयरस्स आवलियाते य असंखेज्जतिभागपलिभागेणं । तत्थ

अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते असंख्याता छे अने काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी प्रतरना असंख्यातमा भाग प्रमाण असंख्याती श्रेणिओ जाणवी. ते श्रेणिओनी विष्कंभसूची असंख्याता कोटा कोटी योजन प्रमाण अथवा असंख्याता श्रेणिना वर्गमूल प्रमाण जाणवी. बेइन्द्रियोना बद्ध औदारिक शरीरोथी क्षेत्रने आश्रयी अंगुलप्रमाण (एकप्रदेशरूप) प्रतरखंड वडे अने कालथी आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण खंड वडे (एक एक शरीरनो अपहार करता) असंख्याती उत्सर्पिणी अने

---

७. बेइन्द्रियसूत्रमां बद्ध औदारिक शरीरो असंख्याता छे, तेथी काळने आश्रयी परिमाणना विचारमां असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. एटले असंख्यात उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जेटला समयो छे तेटलां बद्ध औदारिक शरीरो छे. क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणिओ छे-एटले असंख्याती श्रेणिमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला छे. ते श्रेणिओना परिमाण विशेषनो निर्णय करवा माटे कहे छे—'प्रतरासंख्येयभागः'—प्रतरना असंख्यातमा भागरूप छे. एटले प्रतरना असंख्यातमा भाग प्रमाण असंख्यात श्रेणिओ ग्रहण करवी. प्रतरनो असंख्यातमो भाग नैरयिक अने भवनपतिओने पण कह्यो छे, माटे विशेषतर परिमाणनुं निरूपण करवा माटे सूचीनुं प्रमाण कहे छे—'तासि णं सेढीणं' इत्यादि. ते श्रेणिओना परिमाणनो निश्चय करवा माटे जे विष्कंभसूची छे ते असंख्याता कोटाकोटी योजन प्रमाण जाणवी. अथवा बीजुं विशेषथी परिमाण कहे छे—'असंखेज्जाइं सेढिवग्गमूलाइं' असंख्याता श्रेणिना

णं जे ते मुक्केल्लगा ते जहा ओहिया ओरालियमुक्केल्लगा। वेउव्विया आहारगा य बद्धिल्लगा णत्थि। मुक्किल्लगा जहा ओहिया ओरालियमुक्केल्लगा। तेयाकम्मगा जहा एतेसिं चेव ओहिया ओरालिया, एवं जाव चउरिंदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एव चेव, नवरं वेउव्वियसरीरएसु इमो विसेसो–पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते! केवइया वेउव्वियसरीरया पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं

अवसर्पिणी काळे समग्र प्रतर अपहराय छे. अर्थात् क्षेत्रथी अंगुल प्रमाण एक प्रदेशना प्रतर खंड वडे अने काळथी आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण खंड वडे एक एक शरीरनो अपहार करता असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळमां बधा बेइन्द्रियोना शरीरो अपहराय छे. तेमा जे मुक्त शरीरो छे ते औघिक–सामान्य औदारिक मुक्त शरीरोनी पेठे जाणवा. वैक्रिय अने आहारक बद्ध शरीरो नथी, अने मुक्त शरीरो सामान्य औदारिक मुक्त शरीरनी पेठे जाणवा. तैजस अने कार्मण एओना ज सामान्य औदारि-

---

वर्गमूल प्रमाण छे. तात्पर्य ए छे के एक संपूर्ण श्रेणिना प्रदेशराशिनुं प्रथम वर्गमूल, बीजुं, त्रीजुं एम असंख्यातमा वर्गमूल सुधी सर्व वर्गमूलो एकत्र संकलित करवा अने संकलित करेला ते वधाना जेटला प्रदेशो थाय तेटला प्रदेशप्रमाण विष्कम्भसूचि जाणवी अहीं आ दृष्टान्त छे–श्रेणिमां असंख्याता प्रदेशो होवा छतां पण असत्कल्पनाए ६५५३६ पासठ हजार पांचसो अने छत्रीश कल्पवा तेनुं प्रथम वर्गमूल बसो ने छप्पन २५६, बीजुं सोळ १६, त्रीजुं चार ४, अने चोथुं वर्गमूल बे २, एमोनुं संकलन–सरवाळो करता बसो ने अठ्योतेर २७८ थाय असत्कल्पना वडे एटला प्रदेशोनी सूचि जाणवी हवे ए बेइन्द्रिय जीवो केटली अवगाहना वडे व्याप्त थता केटला काळे संपूर्ण प्रतरने व्याप्त करे? उत्तर–अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण अवगाहना वडे एक एक आवलिकाना असंख्यातमा भागमां एक एक अवगाहनानी रचना करवाथी असंख्याती उत्सर्पिणी अव

जे ते बद्धेल्लया ते णं असंखिज्जा, जहा असुरकुमाराणं, णवरं तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जइभागो । मुक्केल्लगा तहेव ।

शरीरोनी पेठे कहेवां. ए प्रमाणे यावत्—चउरिंद्रियो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने एमज समजवुं. परन्तु वैक्रिय शरीरोमां आ विशेषता छे—हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने केटला प्रकारना वैक्रिय शरीरो कह्यां छे ? हे गौतम ! बे प्रकारना कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे तेओ असंख्याता छे—इत्यादि असुरकुमारनी पेठे जाणवुं. परन्तु ते श्रेणिओनी विष्कंभसूची अंगुलना प्रथम वर्गमूलना असंख्यातमा भाग प्रमाण जाणवी. मुक्तशरीरो तेमज जाणवां.

सर्पिणी वडे संपूर्ण प्रतर व्याप्त करे छे. तात्पर्य आ छे—एक एक आवलिकाना असंख्यातमा भागमां एक एक अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण अवगाहनानी रचना कराय छे अने तेथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळे बेइन्द्रियोना शरीर वडे संपूर्ण प्रतर व्याप्त थाय छे. एज यावत सूत्रकार कहे छे—'बेइंदियाणं' इत्यादि. बेइन्द्रियोना बद्ध औदारिक शरीरोथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे संपूर्ण प्रतर अपहराय छे. अहीं 'प्रतर' अपहराय छे, ए क्षेत्रने आश्रयी परिमाण कह्युं अने 'उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे' काळने आश्रयी परिमाण कहेलुं छे. हवे केटला क्षेत्र वडे अने केटला काळे अपहार थाय छे ? तेथी कहे छे—'अंगुलपयरस्स आवलियाए य असंखेज्जइभागपलिभागेणं' एक प्रदेशनी श्रेणिरूप अंगुलमात्र प्रतरना असंख्यातमा भाग प्रमाण खंड वडे अपहार थाय छे, आ क्षेत्रने आश्रयी परिमाण कह्युं अने 'आवलिकाना असंख्यातमा भागरूप खंड वडे अपहराय छे' ए काळने आश्रयी परिमाण छे. भावार्थ ए छे के एक बेइन्द्रिय वडे अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणखंड आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण काळे अपहराय छे, बीजा वडे पण तेटलो खंड तेटला काळे अपहराय छे, एम बधा बेइन्द्रियो वडे अपहार करातां समग्र प्रतर असंख्याती उत्स-

८ मणुस्साणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेल्लगा य

८. हे भगवन् ! मनुष्योने केटला प्रकारना औदारिक शरीरो कह्या छे ? हे गौतम ! बे प्रकारना कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-बद्ध

पिणी अने अवसर्पिणी काळे अपहराय छे मुक्त शरीरो सामान्य मुक्तनी पेठे जाणवा बद्ध तैजस अने कार्मण शरीरो बद्ध औदारिकनी पेठे जाणवा बद्ध वैक्रिय शरीरो तेओने नथी, मुक्त वैक्रिय शरीरो मुक्त वैक्रियनी जेम जाणवा ए प्रमाणे बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो संबन्धे पण जाणवु तिर्यंच पचेन्द्रियोने बद्ध अने मुक्त औदारिक शरीरो बेइन्द्रियनी पेठे जाणवां तेओने बद्ध वैक्रिय शरीरो असंख्याता छे तेमां तेओ काळथी परिमाणना विचारमां 'असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काळे अपहराय छे' क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला छे ते श्रेणिओनु परिमाण प्रतरना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'जहा असुरकुमाराण' इति जेम असुरकुमारोने कह्यु छे तेम कहेवु, परन्तु एटलो विशेष छे के विष्कम्भसूचिना परिमाणना विचारमां असुरकुमारोने अंगुलप्रमाण क्षेत्रना वर्गमूलनो संख्यातमो भाग कह्यो छे, अहीं असंख्यातमो भाग जाणवो तात्पर्य ए छे के अंगुलप्रमाण आकाशक्षेत्रना प्रदेशोनु जे प्रथम वर्गमूल तेना असंख्यातमा भागे जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला प्रदेशोनी सूचि ग्रहण करवी अने ते सूची वडे स्पर्श करायेली श्रेणिओना जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला तिर्यंच पचेन्द्रियोना बद्ध वैक्रिय शरीरो छे कह्यु छे के "अंगुलमूलासंखेज्जभागप्पमिया उ होंति सेढिओ । उत्तरविउव्वियाणं तिरियाण सन्निपज्जाण" ॥ उत्तर वैक्रियवाळा संज्ञी पर्याप्त तिर्यंचोने अंगुलना वर्गमूलना असंख्यातमा भागप्रमाण श्रेणिओ होय छे मुक्त वैक्रिय शरीरो सामान्य मुक्त शरीरनी पेठे जाणवा बद्ध तैजस अने कार्मण शरीरो बद्ध औदारिक शरीरनी पेठे समजवा अने मुक्त तैजस अने कार्मण शरीरो सामान्य मुक्त तैजस कार्मण शरीरोनी पेठे जाणवां

८ मनुष्योना बद्ध औदारिक शरीरो 'स्यात्' कदाचित् संख्याता होय अने कदाचित् असंख्याता होय अहीं तात्पर्य ए छे के—

मुक्केल्लगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं सिय संखिज्जा सिय असंखिज्जा, जहण्णपदे संखेज्जा, संखेज्जाओ कोडाकोडीओ, तिजमलपयस्स उवरिं चउजमलपयस्स हिट्ठा, अहव णं पंचमवग्गपडुप्पन्नो छट्ठो वग्गो, अहव णं छण्णउईछेयणगदाइरासी, उक्कोसपए असंखिज्जा, असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ रूवपक्खित्तेहिं मणुस्सेहिं सेढी अवहीरइ, तीसे सेढीए आकासखेत्तेहिं अवहारो मग्गिज्जइ–असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्ततो अंगुलपढमवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पण्णं । तत्थ णं

अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते कदाच संख्याता होय अने कदाचित् असंख्याता होय. जघन्य पदे संख्याता होय छे के संख्याता कोटाकोटी प्रमाण होय छे. अथवा त्रण यमलपदना उपर अने चार यमलपदनी नीचे छे. अथवा पांचमा वर्ग वडे छट्ठा वर्गने गुणतां जेटली संख्या आवे तेटलां छे. अथवा छन्नुं वार छेद आपी शकाय एटला राशिप्रमाण छे. उत्कृष्ट पदे असंख्याता छे. अने ते काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी एक संख्यानो प्रक्षेप करवाथी मनुष्यो वडे समग्र श्रेणि अपहराय छे. ते श्रेणिना आकाश प्रदेशोनो अपहार विचारीए तो तेओ असंख्याता थाय छे अने काळथी असंख्याती उत्स-

---

मनुष्यो बे प्रकारना छे–गर्भज अने संमूर्छिम. तेमां गर्भज हमेशां स्थायी होय छे, पण कोइ काळ नथी के जेमां गर्भज मनुष्योनो अभाव होय. संमूर्छिम मनुष्यो कदाचित् होय छे अने कदाचित् सर्वथा होता नथी. कारण के तेओनुं उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तनुं आयुष छे अने तेओनुं उत्पत्तिनुं अन्तर उत्कर्षथी चोवीश मुहूर्त प्रमाण छे. तेथी ज्यारे सर्वथा संमूर्छिम मनुष्यो होता नथी अने केवळ गर्भज

जे ते मुक्केल्लगा ते जहा ओरालिया ओहिया मुक्केल्लगा। वेउव्वियाणं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं संखिज्जा, समए २ अवहीरमाणे २ संखेज्जेणं कालेण अवहीरंति, नो चेव णं अवहीरिया सिया। तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा ते णं जहा ओरालिया ओहिया। आहारगसरीरा जहा ओहिया। तेयाकम्मगा जहा एतेसिं चेव ओरालिया। वाणमंतराणं जहा नेरइयाणं ओरा-

---

र्पिणी अने अवसर्पिणी वडे अपहराय छे. क्षेत्रथी अंगुलना प्रथम वर्गमूलने त्रीजा वर्गमूल वडे गुणतां जे संख्या आवे तेटलां जाणवा. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते औदारिक सामान्य मुक्त शरीरनी पेठे जाणवा. हे भगवन् ! वैक्रियशरीर संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते संख्याता छे अने ते समये समये तेनो अपहार करतां संख्याता काळे–समये अपहराय परन्तु एम अपहरायेलां नथी. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते सामान्य औदारिकनी जेम जाणवा. तैजस अने कार्मण

मनुष्यो ज होय छे त्यारे तेओ संख्याता होय छे कारण के गर्भज मनुष्यो हमेशा संख्याता ज होय छे, तेनु कारण ए छे के तेओ महा शरीरवाळा अने प्रत्येक शरीरवाळा छे तथा परिमित क्षेत्रमां रहे छे ज्यारे संमूर्छिम मनुष्यो होय छे त्यारे असंख्याता होय छे, कारण के तेओ उत्कृष्टथी श्रेणिना असंख्यातमा भागमा रहेला आकाशप्रदेशना राशिप्रमाण छे ते प्रकारे सूत्रकार कहे छे–'जहन्नपदे संखेज्जा' इत्यादि 'जघन्यपदे संख्याता होय छे' ज्यारे सौथी थोडा मनुष्य होय ते जघन्य पद. आ जघन्य पदमा संमूर्छिमोनुं ग्रहण छे के गर्भज मनुष्योनु ग्रहण छे ? उत्तर–संमूर्छिमोनु ग्रहण नथी, परन्तु गर्भजोनु ग्रहण छे, कारण के तेओ ज हमेशा अवस्थित होवाथी समूर्छिमना अभावमां सौथी थोडा होय छे अने उत्कृष्ट पदमा बन्ने प्रकारना मनुष्योनुं ग्रहण छे ए संबन्धे मूळ टीकाकार कहे छे के "सेत

लिया आहारगा य। वेउव्वियसरीगा जहा नेरइयाणं, नवरं तासि णं सेढीणं विक्खंभसूई,संखेज्जजोअणसयवग्गपलिभागो पयरस्स। मुक्किल्लया जहा ओरालिया, आहारगसरीरा जहा असुरकुमाराणं, तेयाकम्मया जहा एतेसि णं चेव वेउव्विता। जोइसियाणं एवं चेव, नवरं तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई,बिछप्पन्नंगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स। वेमाणियाणं एवं चेव, नवरं तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलबितीयवग्गमूलं तइयवग्गमूल-

शरीरो एओने जेम औदारिक शरीरो कह्यां छे तेम कहेवां व्यंतरोने नैरयिकोनी पेठे औदारिक अने आहारक शरीरो कहेवां अने वैक्रिय शरीरो नैरयिकोनी पेठे कहेवां. परन्तु ते श्रेणिओनी विष्कंभसूचि (संख्यातगुण हीन) जाणवी. संख्याता सेंकडो योजनना वर्ग प्रमाण खंड प्रतरने पूरवा के अपहरवामां जाणवो. मुक्त शरीरो औदारिकनी पेठे जाणवा. आहारक शरीरो जेम असुरकुमारोना कह्यां तेम कहेवां. तैजस अने कार्मण शरीर एओने वैक्रिय शरीरो कह्यां छे तेम कहेवां. ज्योतिषिकोने एम ज समजवुं, परन्तु ते श्रेणि-

राणां ग्रहणमुत्कृष्टपदे, जघन्यपदे गर्भव्युत्क्रान्तिनामेव केवलानां ग्रहणम्"। उत्कृष्टपदे संमूर्छिम अने गर्भज छे अने जघन्यपदे केवळ गर्भजनुं ज ग्रहण छे. आ जघन्यपदमां संख्याता मनुष्यो छे. तेमां संख्याताना संख्याता भेदो छे तेथी 'तेओ केटलां' छे एम न जाणी शकाय माटे विशेष संख्यानो निर्णय करे छे-'संख्येयाः कोटीकोट्यः' संख्याता कोटाकोटी मनुष्यो छे. ते सिवाय बीजुं तेथी विशेष परिमाण जणावे छे-'तिजमलपयस्स उवरिं, चउजमलपयस्स हेट्ठं' इति. त्रण यमल पदना उपर अने चार यमल पदनी नीचे छे, अहीं मनुष्यनी संख्या जणावनार ओगणत्रीश अङ्कस्थान आगळ कहेवामां आवशे, तेमां आगमनी परिभाषा-संकेतथी आठ आठनी 'यमलपद' एवी संज्ञा छे. चोवीश अङ्कस्थान वडे त्रण यमलपद थाय छे. उपरना पांच अङ्कस्थान बाकी रहे छे, पण यमलपद आठ अङ्कस्थानवडे थतुं होवाथी चोथुं यमलपद थतुं नथी. माटे कह्युं छे के 'त्रण यमलपदना उपर छे, कारण के पांच अंकस्थानो वधे छे,

पडुप्पन्न, अहव णं अंगुलतइयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ, सेसं तं चेव ।

पन्नवणाए भगवईए बारसम सरीरपयं समत्तं ।

श्रेणीनी विष्कंभसूचि पण (संख्यातगुणी) जाणवी. बसो छप्पन अंगुलना वर्ग प्रमाण खंड प्रतरने पूरवामां के अपहार करवामां जाणवो वैमानिको संबंधे पण एमज जाणवुं. परन्तु ते श्रेणिओनी विष्कंभसूचि अंगुलना बीजा वर्गमूलने त्रीजा वर्गमूल वडे गुणतां जेटला प्रदेशो आवे तेटला प्रदेशप्रमाण जाणवी. अथवा अंगुलना त्रीजा वर्गमूलना घनप्रमाण जाणवी.

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां बारमुं शरीरपद समाप्त

अने चोथा यमलपदनी नीचे छे, कारण के त्रण मनुष्योनो पदे न्यून छे अथवा बब्बे वर्गनो समुदाय ते एक यमलपद, चार वर्गनो समुदाय ते बे यमलपद अने छ वर्गनो समुदाय ते त्रण यमलपद अने आठ वर्गनो समुदाय ते चार यमलपद छे कारण के तेमां छ वर्गनी उपर अने सातमा वर्गनी नीचे छे ते माटे कह्यु छे के-त्रण यमल पदनी उपर अने चार यमल पदनी नीचे छे हवे संख्या बतावे छे—'अहव णं छट्ठवग्गो पंचमवग्गपडुप्पन्नो' इति. अथवा छट्ठा वर्गने पांचमा वर्ग वडे गुणवाथी जेटली संख्या थाय तेटला जघन्यपदे मनुष्यो छे तेमां पहेलो वर्ग एक ज थाय, तेनी वृद्धि न थाय, माटे तेनी गणना थती नथी बेनो वर्ग चार ए प्रथम वर्ग, चारनो वर्ग सोळ ए बीजो वर्ग, सोळनो वर्ग बसोने छप्पन ए त्रीजो वर्ग, अने बसो छप्पननो वर्ग पांसठ हजार पांचसो छत्रीस ए चोथो वर्ग, अने तेनो वर्ग चारसो ओगणत्रीश क्रोड ओगणपचास लाख सडसठ हजार बसो ने छन्नु ए पांचमो वर्ग कह्यु छे के-'चारसो ओगणत्रीश क्रोड ओगणपचास लाख, सडसठ हजार बसो ने छन्नु ए संक्षेपथी पांचमो वर्ग छे एनो छट्ठो वर्ग करीए अने जे आवे ते छत्रीस ए पांचमा वर्गनो जे वर्ग थाय ते छट्ठो वर्ग तेनु परिमाण—एक लाख चोराशी हजार चारसो ने सडसठ कोटाकोटी,

चुम्माळीश लाख सात हजार त्रणसो सित्तेर कोटी अने पञ्चाणु लाख एकावन हजार छसो सोळ ए छट्ठो वर्ग छे. कह्युं छे के-'एक लाख, चोराशी हजार चारसो सडसठ कोडाकोडी, चुम्माळीश लाख सात हजार त्रणसो सित्तेर कोडी अने पञ्चाणुं लाख एकावन हजार छसो ने सोळ ए छट्ठो वर्ग थाय छे. तेने पांचमा वर्ग वडे गुणतां जेटली संख्या थाय तेटला जघन्यपदे मनुष्यो छे. ते संख्या आटली थाय छे- ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६. ए ओगणत्रीश अंकस्थानो छे. एने कोटाकोटी वगेरे संख्याथी कोइपण रीते कही शकाय तेम नथी तेथी छेल्ला अङ्कथी मांडी अङ्कस्थानोनो संग्रह मात्र पूर्वाचार्ये प्रणीत बे गाथाओ द्वारा कहे छे—छ, त्रण, त्रण, शून्य, पांच, नव, त्रण, चार, पांच, त्रण, नव, पांच, सात, त्रण, त्रण, चार, छ, बे, चार, एक, पांच, बे, छ, एक, आठ, बे, बे, नव अने सात एटला अङ्क स्थानो उपर उपरना छे. अथवा आ अंक स्थानना प्रथमाक्षरनी संग्रहगाथा छे—

छ-ति-ति-सुं-पण-नव-ति-च-प-ति-न-प-स-ति-ति-चउ-छ-दो । च-ए-प-दो-छ-ए-अ-दो-दो-ण-स पढमक्खरसन्तियट्ठाणा ॥ "

आ उपर कहेला प्रथमाक्षर संबन्धी स्थानो छे. आ ओगणत्रीश अङ्कस्थानोनी पूर्वाचार्योए पूर्व अने पूर्वाङ्ग वडे संख्या कही छे ते बतावे छे—तेमां चोराशी लाखनी पूर्वाङ्ग संज्ञा छे. चोराशी लाखने चोराशी लाख वडे गुणीए एटले पूर्व थाय छे. तेनुं परिमाण सित्तेर लाख छप्पन हजार क्रोड थाय छे. ए संख्या वडे पूर्वोक्त ओगणत्रीश आंकवाळी संख्यानो भागाकार करवो. एटले आ नीचेनी संख्या आवे छे—अगियार कोटाकोटी, बावीश लाख कोटी, चोराशी हजार कोटी, एकसो अढार कोटी, एकाशी लाख, पंचाणु हजार त्रणसो अने छप्पन एटला पूर्वो, त्यार पछी पूर्व वडे भाग चालतो नथी. तेथी पूर्वाङ्ग वडे भाग चलाववो. तेथी आ नीचे बतावेली संख्या आवे छे. एकवीश लाख, सीत्तेर हजार, छसो ने ओगणसाठ पूर्वाङ्ग. त्यार बाद नीचेनी संख्या शेष रहे छे. त्र्याशी लाख, पचास हजार, त्रणसो अने छत्रीश. ए प्रमाणे मनुष्योनी संख्या छे. ए अर्थने जणावनारी पूर्वाचार्य रचित अहीं गाथा आपवामां आवी छे—"मनुष्योनी संख्या जघन्यपदे अगियार कोटाकोटी, बावीश लाख कोटी, चोराशी हजार कोटी, एकसो अढार कोटी, ते पछी एकाशी लाख, पञ्चाणु हजार, त्रणसो छप्पन एटला पूर्वो छे अने तेनुं स्वरूप पूर्वे वर्णवेलुं छे. एथी अधिक बीजा आ पूर्वाङ्गो

छे एकवीश लाख सित्तेर हजार छसो ने चोसठ एटला पूर्णांको छे, अने (ते उपर) त्र्याशी लाख पचास हजार त्रणसो ने छत्रीश, एटला बधा मनुष्यो छे आ ज संख्याने विशेष जाणवा खातर प्रकारान्तरे बतावे छे—'अहव णं छण्णउईछेयणगदायी रासी' इति अथवा जे संख्याने छन्नुं वार छेद आपी शकाय तेटला मनुष्यो छे तात्पर्य ए छे के जे राशिने अर्ध अर्ध छेद आपतां छन्नु वार छेद आपी शकाय अने छेवटे एक बाकी रहे ते राशिप्रमाण मनुष्यो जाणवा का राशि एवो छे के तेने छन्नु वार छेद आपी शकाय? उत्तर-पांचमा वर्गने छट्ठा वर्गनी साथे गुणतां जे आवे ते राशिने छन्नु वार छेद आपी शकाय छे ते आ प्रमाणे-प्रथमना वर्गने छेद आपतां बे वार छेद आपी शकाय छे जेमके प्रथम वर्ग चार छे तेनो प्रथम छेद बे अने बीजो छेद एक. बीजा वर्गने चार छेद आपी शकाय छे तेमां प्रथम छेद आठ, बीजो छेद चार, त्रीजो छेद बे अने चोथो छेद एक एवी रीते त्रीजा वर्गनो आठ वार चोथा वर्गनो सोळवार, पांचमा वर्गनो बत्रीशवार अने छट्ठा वर्गनो चोसठ वार छेद करी शकाय छे अने पछी पांचमा वर्ग साथे गुणवामां आवे छे, एटले ते राशिने छन्नु वार छेद आपी शकाय छे ए शी रीते जाणी शकाय? उत्तर—जे जे वर्गनो जे जे वर्गनी साथे गुणाकार करवामां आवे त्यां त्यां ते बन्नेनो छेद प्राप्त थाय छे जेम के बीजा वर्गनो *प्रथम वर्ग* वडे गुणाकार करवामां आवे तो ते राशि छ छेदने प्राप्त थाय छे जेम के बीजो वर्ग सोळ छे तेने प्रथम वर्ग चार वडे गुणतां चोसठ थाय तेनो प्रथम छेद बत्रीश, बीजो सोळ, त्रीजो आठ, चोथो चार, पांचमो बे अने छट्ठो छेद एक, ए प्रमाणे बीजा स्थळे पण जाणवु तेमां पांचमा वर्गमां बत्रीश छेद अने छट्ठा वर्गमां चोसठ छेद थाय छे तेथी पांचमा वर्ग वडे छट्ठा वर्गने गुणतां जे संख्या आवे तेनो छन्नु वार छेद थाय छे अथवा एकने स्थापी तेना छन्नु वार बमणा बमणा करवा अने तेम करवाथी तेनी एटली संख्या थाय छे के तेने छन्नु वार छेद आपी शकाय छे ए प्रमाणे जघन्य पद कह्यु, हवे उत्कृष्ट पद कहे छे—उत्कृष्टपदे मनुष्यो असंख्याता होय छे तेमां पण काळने आश्रयी परिमाणनो विचार करीए त्यारे प्रतिसमय एक एक मनुष्यनो अपहार करतां असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी वडे बधा मनुष्यो अपहराय अने क्षेत्रने आश्रयी एक संख्या उमेरीए तो मनुष्यो वडे संपूर्ण श्रेणि अपहराय तात्पर्य ए छे के उत्कृष्टपदे जे मनुष्यो छे तेओमां

असत्कल्पनाथी एक मनुष्य उमेरीए तो एक आखी श्रेणि अपहराय. ते श्रेणिनी क्षेत्र अने काळने आश्रयी अपहारमार्गणा–तेमां काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी वडे अने क्षेत्रथी अंगुलना प्रथम वर्गमूळने त्रीजा वर्गमूळनी साथे गुणतां जे संख्या आवे, जेम के अंगुलमात्र क्षेत्रना प्रदेशराशिनुं प्रमाण असत्कल्पनाथी बसो छप्पन छे, तेना प्रथम वर्गमूळ सोळने त्रीजा वर्गमूळरूप बे वडे गुणवा, अने गुणवाथी असत्कल्पनाए बत्रीश प्रदेशो आवे, एटला प्रदेशप्रमाण खंड वडे अपहार करतां जेटलामां श्रेणि पूरी थाय छे तेटलामां मनुष्यो पण पूरा थाय छे.

प्र०—पूर्वे कहेला प्रमाणना खंडो वडे एक श्रेणिनो अपहार करतां असंख्याता उत्सर्पिणी–अवसर्पिणीओ केम लागे ? उ०—क्षेत्र अतिसूक्ष्म होवाथी. सूत्रमां पण कह्युं छे के "काळ सूक्ष्म छे अने तेथी अधिक सूक्ष्म क्षेत्र छे. अंगुलप्रमाण श्रेणिमां (समये समये एक एक प्रदेशनो अपहार करतां) असंख्याती उत्सर्पिणी–अवसर्पिणीओ लागे छे. औदारिक मुक्त शरीरो सामान्य मुक्तनी पेठे जाणवां. बद्ध वैक्रिय शरीरो संख्याता छे, कारण के गर्भजमां केटलाकनेज वैक्रियलब्धिनो संभव छे. मुक्त वैक्रियशरीरो सामान्य मुक्तनी पेठे जाणवां. आहारक शरीरो सामान्य आहारकनी जेम अने बद्ध तैजस कार्मण शरीरो बद्ध औदारिकनी पेठे समजवा. तथा मुक्त तैजस अने कार्मण सामान्य मुक्तनी जेम जाणवा.

व्यन्तरोने औदारिक शरीरो नैरयिकोनी जेम समजवा. तेओने बद्ध वैक्रियशरीरो असंख्याता छे. तेमां काळथी परिमाण–प्रतिसमय एक एकनो अपहार करवामां आवे तो असंख्याती उत्सर्पिणी–अवसर्पिणीवडे अपहराय. क्षेत्रथी परिमाण–असंख्याती श्रेणिओ, एटले असंख्याती सूचि श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला व्यन्तरो छे. ते श्रेणिओ केटली छे ? प्रतरना असंख्यातमा भागप्रमाण छे. परंतु मात्र ते श्रेणिओनी विष्कम्भसूची कहेवी जोइए. अने ते प्रसिद्ध होवाथी कही नथी. केवी रीते प्रसिद्ध छे ? उत्तर–अहीं महादंडकमां पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च नपुंसको करतां असंख्यातगुणहीन व्यन्तरो कह्या छे. तेथी एनी विष्कम्भसूची पण तिर्यञ्च पंचेन्द्रियनी विष्कम्भसूची करतां असंख्या-

तगुणहीन कहेवी जोइए मूल टीकाकार पण कहे छे-'कारण के महादंडकमां पंचेन्द्रिय तिर्यंच नपुंसको करतां असंख्यातगुणा मोटा व्यन्तरो कहेला छे, तेथी विष्कम्भसूची पण ते करतां असंख्यातगुण हीन कहेवी' हवे प्रतिभाग कहेवाय छे—प्रतिभाग-खंड, संख्याता सेंकडो योजनना वर्गप्रमाण प्रतिभाग खंड प्रतरने पूरवामां के अपहरवामां जाणवो अहीं 'पूरवामां के अपहरवामां' ए वाक्यनो क्षेत्र-अपहार छे संख्याता सेंकडो योजनना वर्गप्रमाण श्रेणिखंडने विषे एक एक व्यन्तर स्थापीए तो आखु प्रतर पूरु भराइ जाय. अथवा एक एक व्यन्तरनो अपहार करतां संख्याता सेंकडो योजनना वर्गप्रमाण एक एक श्रेणिखंड अपहरीए तो एक तरफ व्यन्तरो खाली थाय अने बीजी तरफ आखु प्रतर खाली थाय. मुक्त शरीरो औधिक मुक्तनी पेठे जाणवा आहारक शरीरो नैरयिकोनी जेम, तथा तैजस अने कार्मण शरीरो पण वैक्रियनी पेठे अने मुक्त शरीरो औधिक मुक्तनी जेम जाणवा ज्योतिष्कोने औदारिक शरीरो नैरयिकनी जेम होय छे पण वैक्रिय शरीर असंख्याता छे. तेमां कालने आश्रयी मार्गणामां प्रतिसमय एक एकनो अपहार करवामां आवे तो असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे बधा अपहराय क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणिओ छे अने ते प्रतरना असंख्यातमा भागप्रमाण छे, ते बाबत सूत्रकार कहे छे-'ज्योतिषिकोने पण ए समजवु' परंतु एटलो विशेष छे के ते श्रेणिओनी विष्कम्भसूची कहेवी जोइए. आ पण सुप्रसिद्ध होवाथी कही नथी, कारण के महादंडकमां व्यन्तरथी ज्योतिष्को संख्यातगुणा कह्या छे, तेथी तेओनी विष्कम्भसूची पण व्यन्तरोनी विष्कम्भसूची करतां संख्यातगुणी जाणवी ते बाबत मूलटीकाकार कहे छे-"कारण के व्यन्तरोथी ज्योतिष्को संख्यातगुणा कहेला छे, तेथी तेओनी विष्कम्भसूची पण व्यन्तरो करतां संख्यातगुणी होय छे" परंतु प्रतिभागमां स्पष्ट विशेषता छे ते सूत्रकार जणावे छे-बसो छप्पन अंगुलना वर्गप्रमाण प्रतिभाग-श्रेणिनो खंड प्रतरने पूरवामां के अपहरवामां उपयोगी छे अहीं पण आ भावार्थ छे-बसो छप्पन अंगुलना वर्गप्रमाण श्रेणिखंडने विषे एक एक ज्योतिष्क स्थापवामां आवे तो संपूर्ण प्रतर भराइ जाय. अथवा एक एक ज्योतिषिकनो अपहार करतां एक एक बसो छप्पन अंगुलना वर्गप्रमाण श्रेणिखंडनो अपहार करवामां आवे तो एक तरफ बधा ज्योतिषिको खाली थइ जाय अने बीजी तरफ संपूर्ण प्रतर खाली थाय. ए

प्रमाणे ज्योतिषिकोनो व्यन्तरोथी संख्यातगुण हीन प्रतिभाग छे अने संख्यातगुणाधिक सूची छे. पञ्चसंग्रहमां तो वसो छप्पन अंगुल प्रमाण ज प्रतिभाग-खंड कह्यो छे, पण वसो छप्पन अंगुलना वर्गप्रमाण कह्यो नथी. ते आ प्रमाणे-छप्पन्नदोसयंगुलसूईपएसेहिं भाइयं पयरं जोइसिएहिं हिरइ" । वसो छप्पन अंगुलप्रमाण सूचिप्रदेशो वडे भाग आपेलुं प्रतर ज्योतिषिको वडे अपहराय छे. मुक्त शरीरो सामान्य मुक्तनी जेम, आहारक शरीरो नैरयिकोनी पेठे, वद्ध तैजस अने कार्मण वैक्रियनी पेठे अने मुक्त सामान्य मुक्त शरीरनी पेठे जाणवां. वैमानिकोने औदारिक शरीरो नैरयिकोनी जेम जाणवां. वद्ध वैक्रिय शरीरो असंख्याता छे. तेमां काळने आश्रयी मार्गणा ज्योतिषिकनी पेठे जाणवी. क्षेत्रथी मार्गणा-असंख्याती श्रेणिओ छे. पटले असंख्याती श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटला छे. ते श्रेणिओनुं परिमाण प्रतरना असंख्यातमा भागप्रमाण समजवुं, तेमां प्रतरनो असंख्यातमो भाग नैरयिकादिनी मार्गणामां पण कह्यो छे, माटे अहीं विशेषतर परिमाण वतावे छे-ते श्रेणिओनी विष्कम्भ सूची अंगुलना वीजा वर्गमूळने त्रीजा वर्गनी साथे गुणतां जेटली संख्या आवे तेटला प्रदेशप्रमाण जाणवी. पटले के अंगुलमात्र क्षेत्रना प्रदेशो असत्कल्पनाथी बसो छप्पन छे, तेनुं प्रथम वर्गमूळ सोळ, वीजुं वर्गमूळ असत्कल्पनाथी चार थाय, तेने त्रीजा वर्गमूल वडे पटले असत्कल्पनाथी वे वडे गुणतां जेटला प्रदेशो आवे पटले असत्कल्पनाथी आठ प्रदेशो आवे तेटला प्रदेशोनी विष्कम्भ सूचिप्रमाण श्रेणिओ जाणवी. त्यां पण असत्कल्पनाथी आठ ज श्रेणिओ जाणवी. वन्ने प्रकारे अर्थमां भेद नथी. आहारक शरीरो नैरयिकोनी पेठे, वद्ध तैजस कार्मण शरीरो वद्ध वैक्रियनी पेठे अने मुक्त शरीरो सामान्य मुक्तशरीरनी जेम जाणवा.

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां वारमुं शरीरपद समाप्त

तेरसमं परिणामपयं ।

१. कतिविधे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पन्नत्ते, तंजहा—जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य । जीवपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दसविधे पन्नत्ते, तंजहा—गतिपरिणामे १, इंदियपरिणामे २, कसायपरिणामे ३, लेसापरिणामे ४, जोगपरिणामे ५, उवओगपरिणामे ६, णाणपरिणामे ७,

तेरमुं परिणाम पद.

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो परिणाम कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो परिणाम कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—जीवपरिणाम अने अजीवपरिणाम. हे भगवन् ! जीवपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! दस प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ गतिपरिणाम, २ इन्द्रियपरिणाम, ३ कषायपरिणाम, ४ लेश्यापरिणाम, ५ योगपरिणाम, ६ उपयोगपरिणाम, ७ ज्ञानपरिणाम, ८ दर्शनपरिणाम,

१ हवे बारमा पदनी व्याख्या करी हवे तेरमा पदनो प्रारंभ कराय छे तेनो सबन्ध आ प्रमाणे छे—पूर्वेना पदमा औदारिकादि शरीरनो विभाग कह्यो, परंतु ते शरीरपरिणाम थवाथी थाय छे, परिणाम सिवाय थता नथी, तेथी परिणामना स्वरूपनु प्रतिपादन करवा माटे आ पदनो प्रारंभ करवामां आवे छे तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'कइविहे ण भंते ! परिणामे पन्नत्ते ?' हे भगवन् ! केटला प्रकारना परिणाम कह्या छे ?-इत्यादि द्रव्योनु परिणमन-रूपांतर के अवस्थान्तर थवु ते परिणाम ते परिणाम नयना भेदोथी विविध प्रकारनो होय छे नैगमादि अनेक प्रकारना नयो छे ते सर्व नयोनो संग्रह करनार बे नयो सिद्धान्तमा कहेला छे-द्रव्यार्थिक अने पर्यायार्थिक ए सबंधे श्री मल्लवादी सूरि कहे छे—

दंसणपरिणामे ८, चरित्तपरिणामे ९, वेदपरिणामे १० ।

९ चारित्रपरिणाम अने १० वेदपरिणाम.

'तित्थयरवयणसंगहविसेसपत्थारमूलवागरणी । दव्वट्ठिओ य पज्जवनओ य सेसा विगप्पा सिं "॥ (सन्मति. गा. २)

"तिर्थंकरना वचनोना संग्रहरूप सामान्यप्रस्तार अने विशेषप्रस्तारना मूलनुं प्रतिपादन करनार द्रव्यास्तिक अने पर्यायास्तिक ए बे नयो छे अने बाकीना बधा तेना विकल्पो-भेदो छे."

तेमां द्रव्यास्तिक नयना मते कथञ्चित् सत् छतां उत्तर पर्यायरूप धर्मान्तरने पामे ते परिणाम कहेवाय, तेमां पूर्व पर्यायनी सर्वथा स्थिति होती नथी, तेम तेनो एकान्तथी नाश पण होतो नथी. ए संबन्धे कह्युं छे के "अर्थान्तररूपे—अन्य स्वरूपे थवुं ते परिणाम, तेनी सर्वथा स्थिति होती नथी, तेम सर्वथा नाश पण होतो नथी, ते परिणाम तेना स्वरूपना जाणनाराओए मानेलो छे". पर्यायास्तिक नयना मते पूर्वना सत्-विद्यमान पर्यायनो विनाश अने बीजा असत्पर्यायोनी उत्पत्ति ते परिणाम कहेवाय छे. आ ज नयने आश्रयी अन्यत्र कहेवामां आव्युं छे के "सत्पर्यायरूपे नाश अने असत्पर्यायरूपे प्रादुर्भाव ते परिणाम पर्यायास्तिक नयना मते छे." हवे भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! बे प्रकारनो परिणाम छे—जीवपरिणाम अने अजीवपरिणाम. तेमां जीवनो परिणाम प्रायोगिक-चेतनाव्यापारजन्य छे अने अजीवनो परिणाम वैस्रसिक—स्वाभाविक छे. सूत्रकार ते परिणामना भेदो आगळ कहेशे, ते प्रमाणे जीव परिणामना भेदो कहे छे-'जीवपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते' ? जीवपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ?-इत्यादि. जीवपरिणाम

१, आ 'गाथा सन्मतितर्क प्रकरणनी छे अने तेना कर्ता तरीके सिद्धसेन दिवाकर प्रसिद्ध छे. छतां टीकाकार तेना कर्ता मल्लवादी तरीके जणावे छे ते विचारणीय छे. कदाच सन्मतितर्कनी आ गाथा मल्लवादी सूरिए पोताना ग्रन्थमां लीधी होय तेथी कदाच एम कह्युं होय तो ते संभवित छे.

दस प्रकारनो छे जेमके-'गतिपरिणाम' इत्यादि 'गम्यते' नैरयिकादि गतिनामकर्मना उदयथी जे प्राप्त थाय ते गति-नारकत्वादिरूप पर्यायनो परिणाम, जीवोनो तेवा प्रकारनो गतिरूप परिणाम ते गतिपरिणाम २ 'इन्द्' धातु ऐश्वर्य अर्थमां छे, ज्ञानरूप परम ऐश्वर्यना संबंधथी इन्द्र-आत्मा कहेवाय छे, तेनुं चिह्न ते इन्द्रिय अहीं 'इय' प्रत्यय थयो छे इन्द्रियरूप परिणाम ते इन्द्रियपरिणाम ३ 'कषन्ति-हिंसन्ति परस्परं प्राणिनोऽस्मिन्'-जेमां प्राणीओ परस्पर हिंसा करे ते कष-संसार, तेने अयन्ते-प्राप्त करावे ते कषायो, ते रूप आत्मानो परिणाम ते कषायपरिणाम ४ लेश्या वगेरेनो शब्दार्थ आगळ कहेवाशे लेश्या ए योगना परिणामरूप छे लेश्यारूप परिणाम ते लेश्यापरिणाम ५ मन, वचन अने कायाना योगरूप परिणाम ते योगपरिणाम ६ उपयोग-चेतनाशक्तिना व्यापाररूप परिणाम ते उपयोगपरिणाम ए प्रमाणे ७ ज्ञानपरिणाम, ८ दर्शनपरिणाम, ९ चारित्रपरिणाम अने १० वेदपरिणाम संबन्धे विचार करवो

हवे आ दस प्रकारना प्रकारना परिणामोने ए प्रकारे क्रमथी कहेवानुं प्रयोजन बतावे छे-१ ते ते औदयिकादि भावने आश्रित सर्वे भावो गतिपरिणाम सिवाय प्रगटता नथी, तेथी प्रथम गतिपरिणाम कह्यो छे २गतिपरिणाम थयाथी अवश्य इन्द्रियपरिणाम थाय छे माटे त्यारपछी इन्द्रियपरिणाम कह्यो छे ३ इन्द्रियपरिणाम थयाथी इष्ट अने अनिष्ट विषयना संबंधथी रागद्वेषनो परिणाम थाय छे माटे त्यारबाद कषायपरिणामनुं कथन करेलुं छे कषायपरिणाम अवश्य लेश्यापरिणाम सिवाय होतो नथी, ते आ प्रमाणे-लेश्या परिणाम सयोगी केवळी सुधी होय छे, कारण के लेश्यानी स्थितिना निरूपणना अवसरे लेश्याध्ययनमां शुक्ललेश्यानी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति कही छे-'शुक्ललेश्यानी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट स्थिति नव वर्ष न्यून पूर्व कोड वरसनी छे अने शुक्ल लेश्यानी उत्कृष्ट नव वरस न्यून पूर्व कोटि वरसनी स्थिति सयोगि केवलीने विषे ज घटी शके, बीजे घटी शकती नथी, अने कषाय परिणाम सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक सुधी होय छे ज्यां कषायपरिणाम होय छे, त्यां अवश्य लेश्यापरिणाम होय छे, अने लेश्यापरिणाम कषायपरिणाम सिवाय पण होय छे, माटे कषायपरिणामनी पछी लेश्यापरिणाम कह्यो छे पण लेश्यापरिणामनी पछी कषाय

२. गतिपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–नरयगतिपरिणामे, तिरियगतिपरिणामे, मणुयगतिपरिणामे, देवगतिपरिणामे १। इंदियपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–सोतिंदियपरिणामे, चक्खिंदियपरिणामे, घाणिंदियपरिणामे, जिब्भिंदियपरिणामे, फासिंदियपरि-

---

२. हे भगवन् ! गतिपरिणाम केटला प्रकारे कह्यो छे ? हे गौतम ! गतिपरिणाम चार प्रकारे कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ नरकगतिपरिणाम, २ तिर्यंचगतिपरिणाम, ३ मनुष्यगतिपरिणाम अने ४ देवगतिपरिणाम. हे भगवन् ! इन्द्रियपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेन्द्रियपरिणाम, २ चक्षुइन्द्रियपरिणाम, ३ घ्राणेन्द्रियपरिणाम, ४

परिणाम कह्यो नथी. ६ लेश्यापरिणाम योगना परिणामरूप छे, कारण के "योगपरिणामो लेश्या" एवुं शास्त्रनुं वचन छे. आ अर्थ लेश्यापदमां सविस्तरपणे युक्तिपूर्वक कहेवामां आवशे. माटे लेश्यापरिणाम कह्या पछी योगपरिणाम कह्यो छे. संसारी जीवोने योगनो परिणाम थया पछी उपयोगनो परिणाम थाय छे, माटे योगपरिणाम पछी उपयोगपरिणामनुं कथन कर्युं छे. ७ उपयोग परिणाम थवाथी ज्ञानपरिणाम थाय छे, माटे त्यार पछी ज्ञानपरिणाम कह्यो छे. ८ ज्ञानपरिणाम बे प्रकारे छे—सम्यग् ज्ञानपरिणाम अने मिथ्या ज्ञानपरिणाम. ते बन्ने प्रकारना ज्ञानपरिणाम सम्यग्दर्शन अने मिथ्यादर्शन सिवाय थता नथी, माटे त्यार पछी दर्शनपरिणामनुं कथन कर्युं छे. ९ सम्यग्दर्शन परिणाम थवाथी जीवोने जिनवचनश्रवणद्वारा नवा नवा संवेगनो अविर्भाव थवाथी चारित्रावरण कर्मना क्षयोपशम वडे चारित्रपरिणाम थाय छे, माटे दर्शनपरिणाम पछी चारित्रपरिणाम कह्यो छे. १० चारित्रपरिणामथी महासत्त्ववाळा आत्माओ वेदपरिणामनो नाश करे छे, माटे चारित्रपरिणामनी पछी वेदपरिणाम कह्यो छे.

२. ए प्रमाणे जीवना गत्यादि परिणामो कह्या, हवे ते गत्यादि परिणामना अनुक्रमे भेदो बतावे छे—'गइपरिणामे णं भंते'! कइ

णामे २। कसायपरिणामे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—कोहकसायपरिणामे, माणकसायपरिणामे, मायाकसायपरिणामे, लोभकसायपरिणामे ३। लेसापरिणामे णं भंते! कतिविधे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-कण्हलेसापरिणामे, नीललेसापरिणामे, काउलेसापरिणामे, तेउलेसापरिणामे, पम्हलेसापरिणामे, सुक्कलेसापरिणामे ४। जोगपरिणामे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! तिविधे पन्नत्ते, तंजहा-मणजोगपरिणामे, वइजोगपरिणामे कायजोगपरिणामे ५। उवओगपरिणामे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते?

जिह्वेन्द्रियपरिणाम अने ५ स्पर्शनेन्द्रियपरिणाम. हे भगवन्! कषायपरिणाम केटला प्रकारनो छे? हे गौतम! चार प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ क्रोधकषायपरिणाम, २ मानकषायपरिणाम, ३ मायाकषायपरिणाम, अने ४ लोभकषायपरिणाम. हे भगवन्! लेश्यापरिणाम केटला प्रकारनो छे? हे गौतम! लेश्यापरिणाम छ प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ कृष्णलेश्यापरिणाम, २ नीललेश्यापरिणाम, ३ कापोतलेश्यापरिणाम, ४ तेजोलेश्यापरिणाम, ५ पद्मलेश्यापरिणाम, अने ६ शुक्ललेश्यापरिणाम. हे भगवन्! योगपरिणाम केटला प्रकारनो छे? हे गौतम! त्रण प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे—१ मनोयोगपरिणाम, २ वचनयोगपरिणाम, अने ३

विहे पन्नत्ते?-हे भगवन्! गति परिणामना केटला प्रकार कह्या छे—इत्यादि सूत्रो पाठ सिद्ध छे हवे तेमा जे परिणामो वडे सहित नैरयिकादि जीवो छे ते परिणामोनु ते प्रकारे प्रतिपादन करे छे—'नेरइया गतिपरिणामेणं'-नैरयिको गतिपरिणाम वडे नरकगतिवाळा छे—इत्यादि पाठ सुगम छे, परन्तु नैरयिकोने कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण ज लेश्या होय छे, बाकीनी लेश्या होती नथी अने ते त्रण लेश्याओ पण नरकपृथिवीओमां आ क्रमथी छे—प्रथमनी बे नरकपृथिवीमा कापोतलेश्या, त्रीजी पृथिवीमा कापोत

गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते,तंजहा–सागारोवओगपरिणामे, अणागारोवओगपरिणामे य ६ । णाणपरिणामे णं भंते !
कइविहे पन्नते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा–आभिणिबोहियणाणपरिणामे, सुयणाणपरिणामे, ओहि-
नाणपरिणामे, मणपज्जवणाणपरिणामे, केवलणाणपरिणामे । अण्णाणपरिणामे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गो-
यमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा–मइअण्णाणपरिणामे, सुयअण्णाणपरिणामे, विभंगणाणपरिणामे ७ । दंसणपरि-
णामे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविधे पन्नत्ते, तंजहा–सम्मदंसणपरिणामे, मिच्छादंसणपरिणामे,

काययोगपरिणाम. हे भगवन् ! उपयोगपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे–साकारोपयोग-
परिणाम अने अनाकारोपयोगपरिणाम. हे भगवन् ! ज्ञानपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे–
१ आभिनिबोधिकज्ञानपरिणाम, २ श्रुतज्ञानपरिणाम, ३ अवधिज्ञानपरिणाम, ४ मनःपर्यवज्ञानपरिणाम अने ५ केवलज्ञानपरिणाम.
हे भगवन् ! अज्ञानपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे–१ मतिअज्ञानपरिणाम, २ श्रुतअज्ञा-
नपरिणाम अने ३ विभंगज्ञानपरिणाम. हे भगवन् ! दर्शनपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनो छे. ते आ

अने नीललेश्या, चोथी नरकपृथिवीमां नीललेश्या, पांचमी नरकपृथिवीमां नीललेश्या अने कृष्णलेश्या अने छट्ठी अने सातमी पृथिवीमां
कृष्णलेश्या ज होय छे. माटे एम कह्युं छे के 'कण्हलेसावि नीललेसावि काउलेसावि'—कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्यावाळा पण
होय छे. तिर्यंचपंचेन्द्रिय अने मनुष्य सिवाय बीजा जीवोमां चारित्रपरिणाम भवस्वभावथी सर्वथा होतो नथी, माटे अहीं चारित्रपरि-
णामनो निषेध कर्यो छे. वेदपरिणामना विचारमां नैरयिको नपुंसक ज होय छे, पण स्त्री अने पुरुषो होता नथी. कारण के "नारकसं-

सम्ममिच्छादंसणपरिणामे ८। चारित्तपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा—सामाइयचारित्तपरिणामे, छेदोवट्ठावणियचारित्तपरिणामे, परिहारविसुद्धियचारित्तपरिणामे, सुहुमसंपरायचरित्तपरिणामे, अहक्खायचरित्तपरिणामे ९। वेदंपरिणामे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा-इत्थिवेदपरिणामे, पुरिसवेदपरिणामे, णपुंसगवेदपरिणामे १०।

३. नेरइया गतिपरिणामेण निरयगतिया, इंदियपरिणामेण पचिंदिया, कसायपरिणामेणं कोहकसाईवि जाव

प्रमाणे–सम्यग्दर्शनपरिणाम, मिथ्यादर्शनपरिणाम अने सम्यग्मिथ्यादर्शनपरिणाम. हे भगवन् ! चारित्रपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे.ते आ प्रमाणे–१ सामायिकचारित्रपरिणाम, २ छेदोपस्थापनीयचारित्रपरिणाम, ३ परिहारविशुद्धिक चारित्रपरिणाम, ४ सूक्ष्मसंपरायचारित्रपरिणाम, अने ५ यथाख्यातचारित्रपरिणाम. हे भगवन् ! वेदंपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे–१ स्त्रीवेदपरिणाम, २ पुरुषवेदपरिणाम अने ३ नपुंसकवेदपरिणाम.

३. नैरयिको गतिपरिणाम वडे नरकगतिवाळा, इन्द्रियपरिणाम वडे पंचेन्द्रियो, कषायपरिणाम वडे क्रोधकषायवाळा यावत्

मूर्छिनो नपुंसकानि" (अ० २ सू० ५०) नारको अने संमूर्छिमो नपुंसको होय छे—एवुं तत्त्वार्थनुं सूत्र छे ए प्रमाणे असुरकुमारोने पण जाणवुं परन्तु तेओ गतिने आश्रयी देवगतिवाळा छे, अने तेओमां जे मोटी ऋद्धिवाळा छे तेओने तेजोलेश्या पण होय छे, ते माटे कह्युं छे के 'तेउलेस्सा वि'–तेजोलेश्यावाळा पण होय छे वेदपरिणामनो विचार करता तेओ पुरुषो अने स्त्रीओ होय छे, पण नपुंसको होता नथी कारण के देवोमां नपुंसकपणानो असंभव छे पृथिवीकायिकसूत्रमां 'नवरं लेसापरिणामेण' इत्यादि अहीं पृथिवी, पाणी

लोभकसायीवि, लेसापरिणामेणं कण्हलेसावि नीललेसावि काउलेसावि, जोगपरिणामेणं मणजोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि, उवओगपरिणामेणं सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि, णाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणीवि सुयणाणीवि ओहिणाणीवि, अण्णाणपरिणामेणं मइअण्णाणीवि सुयअण्णाणीवि विभंगणाणीवि, दंसणपरिणामेणं सम्मादिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि, चरित्तपरिणामेणं नो चरित्ती, नो चरित्ताचरित्ती, अचरित्ती, वेदपरिणामेणं नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। असुरकुमारावि एवं चेव,

---

लोभकषायवाळा, लेश्यापरिणाम वडे कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा, योगपरिणाम वडे मनोयोगवाळा, वचनयोगवाळा अने काययोगवाळा, उपयोगपरिणाम वडे साकार उपयोगवाळा अने अनाकार उपयोगवाळा, ज्ञानपरिणाम वडे आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी, अज्ञानपरिणाम वडे मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानी, दर्शनपरिणाम वडे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि होय छे. चारित्रपरिणाम वडे सर्वविरतिचारित्रवाळा अने देशविरतिचारित्रवाळा नथी. पण चारित्ररहित-अविरति होय छे. वेदपरिणाम वडे स्त्रीवेदी अने पुरुषवेदी नथी, पण नपुंसकवेदी होय छे. असुर

अने वनस्पतिने तेजोलेश्यानो पण संभव छे, कारण के एओमां सौधर्म अने ईशान देवलोक सुधीना देवो आवी उत्पन्न थाय छे. तेथी कह्युं छे के 'तेउलेसावि' तेजोलेश्यावाळा पण होय छे. ए पृथिव्यादि पांचे स्थावरोमां सास्वादन सम्यक्त्व पण होतुं नथी, कारण के सिद्धान्तमां तेनो निषेध कर्यो छे, तेथी ज्ञान अने सम्यक्त्वनो अहीं निषेध कर्यो छे. मिश्रदृष्टिनो परिणाम संज्ञी पंचेन्द्रियोने ज होय छे बाकीना जीवोने होतो नथी, माटे तेनो निषेध करवामां आव्यो छे. केटला एक बेइन्द्रियादि जीवने

णवर देवगतिया, कण्हलेसावि जाव तेउलेसावि, वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगावि, पुरिसवेदगावि, नो नपुंसगवेदगा, सेस त चेव। एव जाव थणियकुमारा। पुढविकाइया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया, इंदियपरिणामेणं एगिंदिया, सेस जहा नेरइयाणं, नवर लेसापरिणामेणं तेउलेसावि, जोगपरिणामेणं कायजोगी, णाणपरिणामो णत्थि, अण्णाणपरिणामेणं मतिअण्णाणी, सुयअण्णाणी, दसणपरिणामेणं मिच्छदिट्ठी, सेस तं चेव। एव आउवणस्सइकाइयावि। तेऊवाऊ एवं चेव, णवर लेसापरिणामेणं जहा नेरइया। बेइंदिया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया, इंदियपरिणामेणं बेइंदिया, सेस जहा नेरइयाणं। णवर जोगपरिणामेणं वयजोगी, कायजोगी, णाणपरिणामेण आभिणिबोहियणाणीवि, सुअणाणीवि, अण्णाणपरिणामेणं मइअण्णाणीवि, सुयअण्णाणीवि, नो

कुमारो पण एमज जाणवा. परन्तु देवगतिवाळा, कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा, वेदपरिणाम वडे स्त्रीवेदवाळा अने पुरुषवेदवाळा होय छे, परन्तु नपुंसकवेदवाळा होता नथी. बाकी बधु तेमज जाणवु. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी कहेवुं. पृथिवीकायिको गतिपरिणाम वडे तिर्यंचगतिवाळा अने इन्द्रियपरिणाम वडे एकेन्द्रियो होय छे. बाकी बधुं नैरयिकोनी पेठे कहेवु. परन्तु लेश्यापरिणाम वडे तेजोलेश्यावाळा पण होय छे योगपरिणाम वडे काययोगवाळा होय छे. तेओमां ज्ञानपरिणाम नथी. अज्ञानपरिणाम वडे मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अने दर्शनपरिणाम वडे मिथ्यादृष्टि होय छे. बाकी बधु तेमज जाणवु. अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको एमज जाणवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिको संबंधे एमज जाणवु, परन्तु तेओ लेश्यापरिणाम वडे नैरयिकोनी जेम

कारण अपर्याप्तावस्थामां सास्वादन सम्यक्त्व होय छे, माटे ज्ञानपरिणामवाळा अने सम्यग्दृष्टि पण कह्या छे तिर्यंच पंचेन्द्रियोने

विभंगणाणी, दंसणपरिणामेणं सम्मदिट्ठीवि, मिच्छदिट्ठीवि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, सेसं तं चेव। एवं जाव चउरिंदिया, णवरं इंदियपरिवुड्ढी कायव्वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया। सेसं जहा नेरइयाणं, णवरं लेसापरिणामेणं जाव सुक्कलेसावि। चरित्तपरिणामेणं नो चरित्ती, अचरित्तीवि, चरित्ताचरित्तीवि, वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगावि, पुरिसवेदगावि, नपुंसगवेदगावि। मणुस्सा गतिपरिणामेणं मणुस्सगतिया, इंदियपरिणामेणं पंचिंदिया, अणिंदियावि, कसायपरिणामेणं कोहकसाईवि जाव अकसाईवि, लेसापरिणामेणं कण्हलेसावि जाव अलेसावि, जोगपरिणामेणं मणजोगीवि जाव अजोगीवि, उवओगपरिणामेणं जहा नेरइया,

---

जाणवा. बेइन्द्रियो गतिपरिणाम वडे तिर्यंचगतिवाळा अने इन्द्रियपरिणाम वडे बे इन्द्रियवाळा होय छे. बाकी बधुं नैरयिकोनी पेठे कहेवुं. परन्तु योगपरिणाम वडे वचनयोगवाळा अने काययोगवाळा होय छे. ज्ञानपरिणाम वडे आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी पण होय छे. अज्ञानपरिणाम वडे मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी पण होय छे, परन्तु विभंगज्ञानी होता नथी. दर्शनपरिणाम वडे सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टि पण होय छे, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि होता नथी. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रियो सुधी कहेवुं. परन्तु इन्द्रियनी संख्या अधिक कहेवी. पंचेन्द्रियतिर्यंचो गतिपरिणाम वडे तिर्यंचगतिवाळा होय छे. बाकी बधुं नैरयिकोनी जेम कहेवुं. लेश्यापरिणाम वडे यावत् शुक्ललेश्यावाळा पण होय छे. चारित्रपरिणाम वडे सर्वविरति चारित्रवाळा नथी, पण अचारित्री—अविरति के देशविरतिचारित्रवाळा होय छे. वेदपरिणाम वडे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी अने नपुंसकवेदी होय छे. मनुष्यो गति-

---

छ ए लेश्यानो संभव छे, माटे सूत्रमां कह्युं छे के 'जाव सुक्कलेसावि'—यावत् शुक्ललेश्यावाळा पण होय छे. तथा देशविरतिनो परिणाम

णाणपरिणामेणं आभिणिबोहियणाणीवि जाव केवलणाणीवि, अण्णाणपरिणामेणं तिण्णिवि अण्णाणा, दंसणपरिणामेणं तिण्णिवि दंसणा, चरित्तपरिणामेणं चरित्तीवि अचरित्तीवि चरित्ताचरित्तीवि, वेदपरिणामेणं इत्थीवेयगावि पुरिसवेदगावि नपुंसगवेयगावि अवेयगावि। वाणमंतरा गतिपरिणामेणं देवगतिया, जहा असुरकुमारा एवं जोइसियावि, नवरं लेसापरिणामेणं तेउलेस्सा। वेमाणियावि एवं चेव, नवरं लेसापरिणामेणं तेउ-

परिणाम वडे मनुष्यगतिवाळा, इन्द्रियपरिणाम वडे पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रिय[1] पण होय छे. कषायपरिणाम वडे क्रोधकषायी, यावत् अकषायी होय छे. लेश्यापरिणाम वडे कृष्णलेश्यावाळा यावत् लेश्यारहित होय छे. योगपरिणाम वडे मनोयोगी, यावत् अयोगी—योगरहित होय छे. उपयोगपरिणाम वडे नैरयिकोनी जेम जाणवा. ज्ञानपरिणाम वडे आभिनिबोधिकज्ञानी, यावत् केवलज्ञानी पण होय छे. अज्ञानपरिणाम वडे त्रणे अज्ञानी अने दर्शनपरिणाम वडे त्रणे दर्शनी होय छे. चारित्रपरिणाम वडे सर्वविरतिचारित्रवाळा, चारित्ररहित अने देशविरतिचारित्रवाळा होय छे. वेदपरिणाम वडे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी अने वेदरहित पण होय छे. व्यन्तरो गतिपरिणाम वडे देवगतिवाळा—इत्यादि असुरकुमारोनी पेठे कहेवुं, ज्योतिषिको पण एमज जाणवा, परन्तु तेओ मात्र तेजो-

पण तेओने थाय छे, माटे कह्युं छे के 'चरित्ताचरित्ती वि'—चारित्राचारित्री-देशविरतिवाळा पण होय छे ज्योतिषिकोने केवळ

[1] सयोगी केवळी अने अयोगी केवलीनी अपेक्षाए मनुष्यो अनिन्द्रिय कह्या छे, कारण के केवलीने इन्द्रियोनो उपयोग होतो नथी यद्यपि केवळीने द्रव्यमननो उपयोग छे, परन्तु भाव मन नथी, तथा अयोगीने तो द्रव्य मन अने भाव मन बन्ने नथी, माटे अनिन्द्रिय छे

लेसावि पम्हलेसावि सुक्कलेसावि, सेत्तं जीवपरिणामे ।

४. अजीवपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दसविधे पन्नत्ते, तंजहा—बंधणपरिणामे १, गति-

---

लेश्यावाळा होय छे. वैमानिको पण एमज जाणवा, परन्तु लेश्यापरिणाम वडे तेजोलेश्यावाळा, पद्मलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळा होय छे. एम जीवपरिणाम कह्यो.

४. हे भगवन् ! अजीवपरिणाम केटला प्रकारे कह्यो छे ? हे गौतम ! दस प्रकारे कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ बंधनपरिणाम, २

तेजोलेश्या ज होय छे, बाकीनी होती नथी, तेथी 'लेसापरिणामेणं तेउलेस्सा' लेश्यापरिणाम वडे तेजोलेश्यावाळा कह्या छे.

४-५. 'बन्धन परिणामे णं भंते ! कतिविधे' हे भगवन् ! बन्धनपरिणाम केटला प्रकारे छे ? इत्यादि. हे गौतम ! ' स्निग्धबन्धनपरिणाम

---

१. स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्धः(तत्त्वार्थ अ. ५. सू. ३२.) स्निग्धपणाथी अने रूक्षपणाथी पुद्गलोनो परस्पर बन्ध थाय छे. एटले स्निग्ध अने रूक्ष पुद्गलोनो संयोग थवाथी स्नेहहेतुक अने रूक्षत्वहेतुक पुद्गलोनो बन्ध थाय छे. ते बन्ध सजातीय अने विजातीय एम बे प्रकारनो छे. तेमां स्निग्धनी साथे स्निग्धनो बन्ध अने रूक्षनी साथे रूक्षनो बन्ध ते सजातीय अथवा सदृश बन्ध छे. अने स्निग्ध अने रूक्षनो परस्पर बन्ध ते विजातीय के विसदृश बन्ध छे. आ सूत्र सामान्य रीते स्नेहहेतुक के रूक्षताहेतुक पुद्गलोना बन्धनुं विधान करे छे. तेनो अपवाद छे ते बतावे छे—"न जघन्यगुणानाम्" (तत्त्वार्थ अ. ५ सू. ३३) जघन्यगुणवाळा—एकगुणवाळा स्निग्ध अने जघन्यगुणवाळा—एकगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनो सजातीय अने विजातीय बन्ध थतो नथी. तात्पर्य ए छे के जघन्यगुणवाळा स्निग्ध पुद्गलोनो जघन्यगुणवाळा स्निग्ध के जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनी साथे, तेम जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनो जघन्यगुणवाळा स्निग्ध के जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनी साथे बन्ध थतो नथी. कारण के तेमां परिणमनी शक्तिनो अभाव छे. जघन्य स्नेहगुण थोडो होवाथी जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलने परिणमाववा समर्थ नथी. आ सूत्रनो फलितार्थ ए छे के—मध्यमगुणवाळा के उत्कृष्टगुणवाळा स्निग्ध अने रूक्ष पुद्गलोनो सदृश के विसदृश बन्ध थाय छे. तेनो पण अपवाद

परिणामे २, संठाणपरिणामे ३, भेदपरिणामे ४, वण्णपरिणामे ५, गंधपरिणामे ६, रसपरिणामे ७, फासपरिणामे ८, अगुरुलहुयपरिणामे ९, सद्दपरिणामे १० ।

गतिपरिणाम, ३ संस्थानपरिणाम, ४ भेदपरिणाम, ५ वर्णपरिणाम, ६ गन्धपरिणाम, ७ रसपरिणाम, ८ स्पर्शपरिणाम, ९ अगुरुलघुपरिणाम, अने १० शब्दपरिणाम.

अने रूक्षबन्धनपरिणाम ए बे प्रकारे छे स्निग्ध छता तेना बन्धननो परिणाम ते स्निग्धबन्धनपरिणाम अने रूक्ष छता तेना बन्धननो

छे, ते जणावे छे—'गुणसाम्ये सदृशानाम्' (तत्त्वार्थ अ ५ सू. ३४) गुणनी समानता होय तो सदृशनो बन्ध थतो नथी. तात्पर्य ए छे के संख्याता, असंख्याता के यावत्-अनन्त गुणवाळा स्निग्ध पुद्गलोनो तेटला ज प्रकारना स्निग्ध पुद्गलोनी साथे के तेवा प्रकारना रूक्ष पुद्गलोनो समानगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनी साथे बन्ध थतो नथी. तेनो फलितार्थ ए थाय छे के गुणनी विषमता होय तो सदृश पुद्गलोनो बन्ध थाय छे, अने गुणनी समानता होय तो विसदृश पुद्गलोनो बन्ध थाय छे. हवे गुणनी विषमतानी मर्यादाने नियत करे छे-'द्व्यधिकादिगुणानां तु' (तत्त्वार्थ अ ५ सू. ३५) बे, त्रण आदि गुण-अंश वडे अधिक होय तो स्निग्ध अने रूक्ष पुद्गलोनो सदृश बन्ध पण थाय छे जेमके—एक जघन्यगुणवाळो स्निग्ध परमाणु होय तो त्रिगुण स्निग्ध परमाणुनी साथे बन्ध थाय छे, तेम जघन्यगुणवाळा रूक्ष परमाणुनो द्विगुणाधिक-त्रिगुण रूक्ष परमाणुनी साथे बन्ध थाय छे एटले आ बधा सूत्रोनुं तात्पर्य ए छे के—१ जघन्यगुणवाळा स्निग्ध के रूक्ष पुद्गलोनो जघन्यगुणवाळा स्निग्ध के रूक्ष परमाणुओ साथे सदृश के विसदृश बन्ध थतो नथी २ जघन्यगुणवाळा पुद्गलोनो एकाधिक गुणवाळा पुद्गलोनी साथे सदृश बन्ध थतो नथी पण विसदृश बन्ध थाय छे, जघन्यगुणवाळा साथे द्विगुणाधिक पुद्गलोनो सदृश अने विसदृश बन्ध थाय छे. जघन्य सिवायना गुणवाळा पुद्गलो साथे तेना समान जघन्यगुण सिवायना पुद्गलोनो सदृश बन्ध थतो नथी, विसदृश बन्ध थाय छे जघन्य गुण सिवायना पुद्गलो साथे एकाधिक जघन्येतर पुद्गलोनो सदृश बन्ध थतो नथी पण विसदृश बन्ध थाय छे जघन्येतर गुणवाळा पुद्गलोनो द्विगुणाधिकादि जघन्येतर पुद्गलो साथे सदृश अने विसदृश बन्ध थाय छे.

५. बंधणपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–णिद्धबंधणपरिणामे, लुक्खबंधणपरिणामे य ।

समणिद्धयाए बंधो न होति समलुक्खयाएवि ण होति । वेमायणिद्धलुक्खत्तणेण बंधो उ खंधाणं ॥१॥
णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएणं लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएणं ।
निद्धस्स लुक्खेण उवेइ बंधो जहण्णवज्जो विसमो समो वा ॥ २ ॥

५. हे भगवन् ! बंधनपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–स्निग्धबंधनपरिणाम अने रुक्षबंधनपरिणाम. "स्कन्धोनो समान स्निग्धपणामां के समान रूक्षपणामां परस्पर बंध थतो नथी. परन्तु विषम स्निग्धपणा अने विषम रुक्षपणामां बंध थाय छे. स्निग्धनो द्विगुणादि अधिक स्निग्धनी साथे अने रूक्षनो द्विगुणादि अधिक रुक्षनी साथे बंध थाय छे. तथा स्निग्धनो रुक्षनी साथे जघन्यगुण सिवाय विषम होय के सम होय तो बंध थाय छे. एटले के एकगुणा स्निग्ध के एक

परिणाम ते रुक्षबन्धनपरिणाम. केवा प्रकारना स्निग्ध अने केवा प्रकारना रुक्षनो बन्धनपरिणाम थाय छे ? ए माटे बंधनपरिणामनुं लक्षण–स्वरूप बतावे छे–'समनिद्धयाए' इत्यादि. स्कंधनो 'समस्निग्धतायां' परस्पर समानगुण स्निग्धतामां बन्ध थतो नथी. तथा परस्पर 'समरूक्षतायां' समानगुण रूक्षतामां पण बन्ध थतो नथी, परन्तु 'विमात्रस्निग्धरूक्षत्वेन' जो स्निग्धतानी के रूक्षतानी विषम मात्रा–प्रमाण होय तो परस्पर बन्ध थाय छे. तात्पर्य ए छे के समानगुण स्निग्ध परमाणु आदिनो समानगुण स्निग्ध परमाणु वगेरेनी साथे संबन्ध थतो नथी, तेम समानगुणवाळा रूक्ष परमाणु आदिनो समानगुणवाळा रूक्ष परमाणु आदिनी साथे संबन्ध थतो नथी, परन्तु जो विषमगुणवाळो होय तो स्निग्ध स्निग्धनी साथे अने रूक्ष रूक्षनी साथे स्नेह के रूक्षपणानुं विषम प्रमाण होवाथी तेओनो

गतिपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–फुसमाणगतिपरिणामे य अफुसमाणगतिपरिणामे य । अहवा दीहगइपरिणामे य हस्सगइपरिणामे य २। संठाणपरिणामे णं भंते! कतिविधे

गुण रूक्षरूप जघन्य गुणने छोडीने बाकीना सम के विषमगुणवाळा स्निग्ध के रूक्षनो परस्पर बंध थाय छे. हे भगवन् ! गतिपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम! बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–स्पृशद्गतिपरिणाम अने अस्पृशद्गतिपरिणाम

परस्पर बन्ध थाय छे 'विषममात्रा वडे बन्ध थाय छे' एम कह्यु, माटे विषम मात्रानु निरूपण करे छे–"णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएण" इत्यादि जो स्निग्ध परमाणुआदिनो स्निग्धगुणवाळा परमाणुआदिनी साथे बन्ध थाय तो अवश्य बे त्रण आदि अधिकगुणवाळा परमाणुआदिनी साथे थाय, जो रूक्षगुणवाळा परमाणु वगेरेनी साथे रूक्षगुणवाळा परमाणु वगेरेनो बन्ध थाय तो पण बे त्रण आदि अधिकगुणवाळा परमाणु आदिनी साथे ज थाय, अन्यथा न थाय जो स्निग्धनो रूक्षनी साथे बन्ध थाय तो केवी रीते थाय ? ते बतावे छे–'णिद्धस्स लुक्खेण' इत्यादि स्निग्धनो रूक्षनी साथे बन्ध थाय तो जघन्यगुण सिवाय विषम के समान होय तो बन्ध थाय छे तात्पर्य ए छे के एकगुण स्निग्ध के एकगुण रूक्षने छोडी बाकीनानो यथा द्विगुणाधिक स्निग्धादि के द्विगुणाधिक रूक्षादिनी साथे बन्ध थाय छे एम बन्धनपरिणाम कह्यो हवे गतिपरिणाम कहे छे–'गइपरिणामे णं भंते' ! हे भगवन् ! गतिपरिणाम केटला प्रकारे छे–इत्यादि बे प्रकारनो गतिपरिणाम छे–स्पृशद्गतिपरिणाम अने अस्पृशद्गतिपरिणाम तेमां अन्य वस्तुने स्पर्श करतां छतां जे गतिपरिणाम ते स्पृशद्गतिपरिणाम जेम के पाणीना उपर प्रयत्नथी तीरछी फेंकेली ठीकरी वच्चे रहेला पाणीनो स्पर्श करती करती चाली जाय छे ए वात बालजन प्रसिद्ध छे तथा कोइ पण बीजी वस्तुने स्पर्श नहि करता छतां वस्तुनो गतिपरिणाम ते अस्पृशद्गतिपरिणाम जे वस्तु (गति करता) वच्चे रहेलो कोइ पण वस्तुनी साथे स्पर्श न करे तेनो अस्पृशद्गतिपरिणाम जाणवो. बीजा आचार्यो आ प्रमाणे समजावे छे–जे गतिपरिणाम वडे प्रयत्नविशेषथी क्षेत्रना प्रदेशोने स्पर्श करता गति करे ते स्पृशद्गतिपरिणाम अने जे गतिपरिणाम वडे क्षेत्रना प्रदेशोनो स्पर्श कर्या

पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पण्णत्ते, तंजहा–परिमंडलसंठाणपरिणामे, जाव आयतसंठाणपरिणामे ३। भेदपरि-
णामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–खंडाभेदपरिणामे, जाव उक्करियाभेद-
परिणामे ४ । वण्णपरिणामे णं भंते । कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा–कालवण्ण-
परिणामे, जाव सुक्किल्लवण्णपरिणामे ५ । गंधपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते,
तंजहा–सुब्भिगंधपरिणामे दुब्भिगंधपरिणामे य ६ । रसपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंच-
विहे पन्नत्ते, तंजहा–तित्तरसपरिणामे जाव महुररसपरिणामे ७। फासपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ?

अथवा दीर्घगतिपरिणाम अने ह्रस्वगतिपरिणाम. हे भगवन् ! संस्थानपरिणामना केटला प्रकार छे ? हे गौतम ! पांच प्रकार छे. ते आ
प्रमाणे–१ परिमंडलसंस्थानपरिणाम, यावत्–आयतसंस्थानपरिणाम. हे भगवन् ! भेदपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम !
पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ खंडभेदपरिणाम अने यावत् ५ उत्करिका भेदपरिणाम. हे भगवन् ! वर्णपरिणाम केटला
प्रकारे छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे–१ कृष्णवर्णपरिणाम, यावत् ५ शुक्लवर्णपरिणाम. हे भगवन् ! गंधपरिणाम
केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! बे प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे–१ सुरभिगन्धपरिणाम अने दुरभिगन्धपरिणाम. हे भगवन् ! रसपरिणाम
केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–१ तिक्तरसपरिणाम, यावत् ५ मधुररसपरिणाम. हे भगवन् ! स्पर्श-

सिवाय गति करे ते अस्पृशद्गतिपरिणाम. परन्तु आ वात अमे समजी शकता नथी, कारण के आकाश सर्वव्यापी होवाथी तेना
प्रदेशोनो स्पर्श कर्या सिवाय गतिनो असंभव छे. अथवा आ विचार बहुश्रुतोथी जाणवो. अहीं गतिपरिणाम अन्य प्रकारे बतावे छे–

गोयमा ! अट्ठविहे पन्नत्ते, तंजहा-कक्खडफासपरिणामे य जाव लुक्खफासपरिणामे य ८ । अगुरुलहुयपरि-
णामे णं भंते कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा ! एगागारे पन्नत्ते । सद्दपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? गोयमा !
दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-सुब्भिसद्दपरिणामे य दुब्भिसद्दपरिणामे य १० । सेत्तं अजीवपरिणामे य ॥ १३ ॥

परिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! आठ प्रकारनो छे ते आ प्रमाणे-१ कर्कशस्पर्शपरिणाम, यावत् ८ रूक्षस्पर्शपरिणाम. हे भगवन् ! अगुरुलघुपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! एक प्रकारनो छे. हे भगवन् ! शब्दपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-सुरभि-मनोज्ञ शब्दपरिणाम अने दुरभि-अमनोज्ञ शब्दपरिणाम. एम अजीवपरिणाम कह्यो.

प्रज्ञापना भगवतीनुं तेरमुं परिणाम पद समाप्त

बन्धन-परिणामनां गतिपरिणाम बे प्रकारनो छे-दीर्घगतिपरिणाम अने ह्रस्वगतिपरिणाम. तेमां दूर देशान्तरनी प्राप्ति ते दीर्घगतिपरिणाम अने तेनाथी विपरीत ते ह्रस्वगतिपरिणाम. संस्थानादि परिणामविशेष अने भेदादिनुं पूर्वे व्याख्यान करेलुं छे, माटे अहीं तेनुं व्याख्यान करता नथी. अगुरुलघुपरिणाम भाषादि पुद्गलोनो जाणवो. कारण के 'कम्मग-मण-भासाई एयाई अगुरुलहुयाई' कार्मण मन अने भाषाद्रव्यो ए अगुरुलघु छे-इत्यादि वचन छे. तथा आकाशादि अमूर्त द्रव्योनो पण अगुरुलघुपरिणाम छे. अगुरुलघुपरिणाम पण जाणवो अने ते औदारिकादि शरीर तेमज पुद्गलोना द्रव्योनो होय छे. कारण के "ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेय गुरुलहू दव्वा."-औदारिक, वैक्रिय, आहारक अने तैजस गुरुलघु द्रव्यो छे-एवं शब्दनुं वचन छे. शुभशब्द थवो ते शुभशब्द अने दुरभिशब्द थवो ते अशुभशब्द जाणवो.

आचार्य श्री मलयगिरि विरचित प्रज्ञापनाटीकाना अनुवादमां तेरमुं पद समाप्त.

चोद्दसमं कसायपयं ।

१. कति णं भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता, तंजहा-कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए । नेरइयाणं भंते! कति कसाया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता, तंजहा-

चौदमुं कषाय पद.

१. हे भगवन् ! केटला कषायो कह्या छे? हे गौतम! चार कषायो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय अने लोभकषाय. हे भगवन्! नैरयिकोने केटला कषायो कह्या छे ? हे गौतम ! चार कषायो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-क्रोधकषाय,

१. ए प्रमाणे तेरमा पदनी व्याख्या करी, हवे चौदमा पदनी व्याख्यानो प्रारंभ कराय छे, तेनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—पूर्वेना पदमां सामान्यरूपे गत्यादिरूपे जीवनो परिणाम कह्यो. अने सामान्य विशेषनिष्ठ-विशेषने आश्रयी रहेलुं छे, तेथी तेज परिणाम कोइक स्थळे विशेषरूपे प्रतिपादन कराय छे, तेमां एकेन्द्रियोने पण कषायो होवाथी अने "सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते" ॥ (अ० ९ सू० २) कषायसहित होवाथी जीव कर्मने योग्य पुद्गलो ग्रहण करे छे—एवा तत्त्वार्थ सूत्रना वचनथी कषायो बन्धनुं प्रधान कारण होवाथी प्रारंभमांज कषायपरिणामनुं विशेषरूपे प्रतिपादन करवा माटे आ पदनो आरंभ कराय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते कसाया पन्नत्ता' ?-हे भदन्त-परमकल्याणना योगवाळा भगवन् ! केटला कषायो कह्या छे ? तेमां 'कृष्' धातु खेडवा अर्थमां छे 'कृषन्ति'—सुख दुःखरूप धान्य उत्पन्न करवा माटे जे कर्मरूप क्षेत्रने खेडे छे ते कषायो. अहीं उणादि संबन्धी 'आय' प्रत्यय अने निपात होवाथी ऋकारनो अकार थयेलो छे. अथवा 'कलुषयन्ति' शुद्ध स्वभाववाळा छतां आत्माने कर्मथी मलिन करे ते कषायो. पूर्वेनी पेठे आय प्रत्यय थाय छे अने निपात होवाथी णिच् प्रत्ययान्त कलुष शब्दनो 'कष' आदेश थाय छे. कह्युं छे के—

कोहकसाए, जाव लोभकसाए। एवं जाव वेमाणियाणं।

२ कतिपतिट्ठिए णं भंते! कोहे पन्नत्ते? गोयमा! चउपतिट्ठिए कोहे पन्नत्ते, तंजहा—आयपतिट्ठिए, परप-

यावत् लोभकषाय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं.

२. हे भगवन्! क्रोध केटलां स्थानोने विषे रहेलो छे? हे गौतम क्रोध चार स्थानोने विषे रहेलो छे. ते आ प्रमाणे–१ आत्म-

"सुहदुक्खबहुस्सइयं कम्मक्खेत्तं कसंति ते जम्हा। कलुसंति ज च जीवं तेण कसाय त्ति वुच्चंति" ॥

जे कारणथी सुख-दुःखरूपी बहुधान्यवाळा कर्मक्षेत्रने खेडे छे अथवा जीवने कलुषित–मलिन करे छे ते माटे कषायो कहेवाय छे. उत्तर सूत्रनो अर्थ स्पष्ट छे. नैरयिकादि दंडकसूत्र पण सुगम छे.

२. 'कइपइट्ठिए णं भंते कोहे'–हे भगवन्! केटला स्थानोने विषे क्रोध रहेलो छे? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! चार स्थानोने विषे क्रोध रहेलो छे ते आ प्रमाणे—'आत्मप्रतिष्ठित' इत्यादि आत्माने विषेज रहेलो, पोताने अपलक्षीने उत्पन्न थयेलो होय ते, तात्पर्य ए छे के पोते आचरेला दुराचारनु फल ऐहिक दुःखरूप जाणीने कोइक पोताना उपर ज गुस्सो करे त्यारे आत्मप्रतिष्ठित क्रोध कहेवाय छे, २ ज्यारे बीजो आक्रोश–तिरस्कार वगेरे करवाथी गुस्सो उत्पन्न करे त्यारे तेना उपर क्रोध थाय छे ते परप्रतिष्ठित आ नैगमनयना मतथी कथन छे कारण के नैगमनय तेना विषयमात्र थडे तेने विषे स्थिति माने छे जेम के 'जीवमां सम्यग्दर्शन, अजीवमां सम्यग्दर्शन'—इत्यादि आठ भांगा सम्यग्दर्शनना अधिकरणना विचारप्रसंगे 'आवश्यक सूत्रमां कहेला छे तदुभ

१ नाणावरणिज्जस्स य दसणमोहस्स तह खओवसमे। जीवमजीवे अट्ठसु भंगेसु य होइ सव्वत्थ ॥

ज्ञानावरणीयनो तथा दर्शनमोहनीयनो क्षयोपशम जीव अने अजीव संबंधी आठ भांगाओमां बधे होय छे. ते भांगा आ प्रमाणे छे—१ जीव, २ अजीव,

तिट्ठिए, तदुभयपतिट्ठिए, अप्पइट्ठिते । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं दंडतो। एवं माणेणं दंडतो, मायाए दंडओ, लोभेणं दंडओ ।

प्रतिष्ठित, २ परप्रतिष्ठित, ३ तदुभयप्रतिष्ठित अने ४ अप्रतिष्ठित. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने दंडक कहेवो. एम मान, माया अने लोभने आश्रयी दंडक कहेवो.

यप्रतिष्ठित-पोताने अने परने अवलंबीने जे क्रोध थयेलो होय ते. जेम के कोइ मनुष्य तेवा प्रकारनो अपराध करवाथी पोताना उपर अने बीजाना उपर गुस्सो करे ते. अप्रतिष्ठित—ज्यारे पोताना दुराचार के परना आक्रोशादि सिवाय केवळ क्रोधवेदनीयना उदयथी निष्कारण कोप थाय छे ते, ते क्रोध आत्मप्रतिष्ठित नथी, कारण के पोतानो दुराचार नहि होवाथी पोतानो आत्मा ते क्रोधनो विषय थतो नथी, तेम परप्रतिष्ठित पण नथी, कारण के बीजो निरपराधी होवाथी अने तेना उपर अपराधनी संभावना नहि होवाथी ते पण

३ बहु जीव, ४ बहु अजीव, ५ जीव अने अजीव, ६ जीव अने बहु अजीव, ७ बहु जीव अने अजीव, ८ बहु जीवो अने बहु अजीवो-ए आठ भांगाओमां सम्यग्दर्शन होय छे. तेमां जिनना उपदेशथी दर्शनमोहनो क्षयोपशम थयेलो होय तो जिनने विशे सम्यग्दर्शन कहेवाय छे. १. तेमां एक जिनप्रतिमा निमित्त होय तो अजीवने विशे कहेवाय छे. २. तेमां घणा साधुओ निमित्त होय तो बहु जीवो सम्यग्दर्शननुं अधिकरण कहेवाय छे. ३. घणी प्रतिमाओ निमित्त होय तो बहु अजीवो सम्यग्दर्शननुं अधिकरण छे. ४. एक साधु अने एक जिनबिंब सम काळे निमित्त होय तो जीव अने अजीव अधिकरण छे, ५. एक साधु अने घणी जिनप्रतिमाओ निमित्त होय तो जीव अने बहु अजीवो अधिकरण छे. ६. घणा साधुओ अने एक जिनबिंब निमित्त होय तो बहु जीवो अने अजीव सम्यग्दर्शननु अधिकरण छे. ७. घणा साधुओ अने घणा जिनबिंबो निमित्त होय तो बहु जीवो अने अजीवो सम्यग्दर्शननुं अधिकरण छे. ८. जुओ. आ. स. आवश्यटीका प. ३८०.

३. कतिहिं णं भंते ! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति, तंजहा–खेत्तं पडुच, वत्थुं पडुच, सरीर पडुच, उवहिं पडुच । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवं माणेणवि मायाएवि लोभे-

३. हे भगवन् ! केटलां स्थानोए क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे ? हे गौतम ! चार स्थानोए क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे. ते आ प्रमाणे–१ क्षेत्रने आश्रयी, २ वस्तुने आश्रयी, ३ शरीरने आश्रयी अने ४ उपधिने आश्रयी. एप्रमाणे नैरयिकोथी मांडी वैमानिक सुधी जाणवु.

क्रोधनो विषय नथी, तेम उभयप्रतिष्ठित पण नथी वळी कोइने कदाचित् ए प्रमाणे केवळ क्रोधवेदनीयना उदयथी क्रोध उत्पन्न थाय छे, अने ते पाछळथी कहे छे–'अरे मने निष्कारण गुस्सो उत्पन्न थयो हतो, कारण के कोइ पण भाव रताव बोलतु नथी, तेम माय कइ बगाडतु नथी' माटेज पूर्वना महर्षिओए कयु छे—

" सापेक्षाणि निरपेक्षाणि च कर्माणि फलविपाकेषु । सोपक्रम निरुपक्रमं च दृष्टं यथाऽऽयुष्कम् ॥ "

कर्मों फळविपाकमां सापेक्ष अने निरपेक्ष होय छे जेम के आयुष सोपक्रम–उपक्रमसापेक्ष अने निरुपक्रम–उपक्रमनिरपेक्ष होय छे ए प्रमाणे मान, माया अने लोभ पण आत्मप्रतिष्ठित, परप्रतिष्ठित उभयप्रतिष्ठित अने अप्रतिष्ठित जाणवा

३. ए प्रमाणे अधिकरणना भेदथी क्रोधनो भेद कह्यो, हवे कारणना भेदथी भेद बतावे छे–'कतिहिंण भंते ! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती इत्यादि'–हे भगवन् ! केटला स्थाने क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे? 'तिष्ठन्त्येभिरिति स्थानानि' जे वडे कार्यनी स्थिति होय ते स्थान–कारण, अहीं केटला कारणो वडे क्रोध उत्पन्न थाय छे ? भगवान् उत्तर आपे छे–चार स्थानो–कारणो वडे क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे, ते स्थानो कहे छे–'खेत्त पडुच' क्षेत्र प्रतीत्य–क्षेत्रने आश्रयी, तेमां नैरयिकोने नैरयिक क्षेत्र आश्रयी, तिर्यञ्चोने तिर्यंञ्च क्षेत्र आश्रयी, मनुष्योने मनुष्यक्षेत्र आश्रयी अने देवोने देवक्षेत्र आश्रयी, 'वत्थु पडुच' सचेतन के अचेतन वस्तुने आश्रयी, 'शरीरं प्रतीत्य' खराब आकृतिवाळा के बेडोळ शरीरने आश्रयी, 'उपधिं प्रतीत्य' उपधि–उपकरणने आश्रयी एटले जेनु उपकरण चोर वगेरेथी हरण करायेलु होय के

णवि, एवं एतेवि चत्तारि दंडगा।

४. कतिविधे णं भंते! कोधे पण्णत्ते? गोयमा! चउव्विहे कोहे पन्नत्ते, तंजहा–अणंताणुबंधी कोहे, अपच्चक्खाणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। एवं माणेणं मायाए लोभेणं, एएवि चत्तारि दंडगा।

एम मान, माया अने लोभने आश्रयी दंडक कहेवो. ए चार दंडको कह्या.

४. हे भगवन्! केटला प्रकारनो क्रोध कह्यो छे? हे गौतम! चार प्रकारनो क्रोध कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ अनंतानुबंधीक्रोध, २ अप्रत्याख्यान क्रोध, ३ प्रत्याख्यानावरण क्रोध अने ४ संज्वलन क्रोध. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत्–वैमानिकोने कहेवुं. एम मान, माया अने लोभ संबंधे जाणवुं. ए चार दंडको कह्या.

न हरण करायेलुं होय तेने आश्रयी, ए चार कारणो वडे क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे. ए प्रमाणे नैरयिकादि दंडकनुं सूत्र पण जाणवुं.

४. हवे सम्यग् दर्शनादि गुणना घाती होवाथी कषायोनो भेद कहे छे–'कइविहे णं भंते! कोधे पन्नत्ते?' 'हे भगवन्! केटला प्रकारनो क्रोध कह्यो छे? इत्यादि. अनन्तानुबन्धी वगेरेनो शब्दार्थ आगळ कर्मप्रकृति पदमां कहीशुं. भावार्थ आ छे–सम्यग्दर्शनगुणनो विघात करनार अनन्तानुबन्धी, देशविरति गुणनो घाती अप्रत्याख्यान, सर्वविरति गुणनो घात करनार प्रत्याख्यानावरण अने यथाख्यात चारित्रनो विघात करनार संज्वलन कषाय छे. ए चारे कषायोनो पण नैरयिकादि दंडकना क्रमथी विचार करे छे–'एवं नेरइयाणं' इत्यादि. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने कहेवुं. एम मान, माया अने लोभना प्रत्येकना चार चार प्रकार सामान्य रीते दंडकना क्रमथी विचारवा.

५. कतिविधे णं भंते ! कोधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे कोहे पन्नत्ते, तंजहा—आभोगनिव्वत्तिए, अणाभोगनिव्वत्तिए, उवसंते, अणुवसंते । एव नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं । एवं माणेणवि, मायाएवि, लोभेणवि चत्तारि दंडगा ।

६. जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपग-

---

५. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो क्रोध कह्यो छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-१ आभोगनिर्वर्तित, २ अनाभोगनिर्वर्तित, ३ उपशान्त अने ४ अनुपशान्त, ए प्रमाणे नैरयिकोथी आरंभी वैमानिको सुधी जाणवुं. एम मान, माया, अने लोभने आश्रयी पण चारे दंडको जाणवा.

६. हे भगवन् ! जीवोए केटलां स्थाने आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय कर्यो हतो ? हे गौतम ! चार स्थाने आठ कर्मनी प्रकृति-

---

५. हवे ए क्रोधादिना उत्पत्तिभेदथी अने अवस्थाभेदथी भेद बतावे छे—बीजाओ अपराध सारी रीते जाणीने अने कोपनुं कारण व्यवहारथी सबळ मानी 'आ सिवाय एने शिक्षा नहि थाय' एम विचारी ज्यारे कोप करे त्यारे ते कोप आभोगनिर्वर्तित-विचारपूर्वक थयेलो कहेवाय छे ज्यारे ए प्रमाणे ज तेवा प्रकारना मुहूर्तना वशथी गुणदोषनी विचारणाशून्य आत्मा परवश थइने कोप करे छे त्यारे ते कोप अनाभोगनिर्वर्तित कहेवाय छे उपशान्त-अनुदयावस्थाने नहि प्राप्त थयेलो अने अनुपशान्त-उदयावस्थाने प्राप्त थयेलो ए प्रमाणे ए संबन्धे दंडकसूत्र पण विचारवुं एम मान, माया अने लोभ ए प्रत्येकना चार चार प्रकार सामान्य रीते अने दंडकना क्रमथी जाणवा

६ हवे फळना भेदथी त्रिकालवर्ती जीवोनो भेद बतावे छे—'जीवा ण भंते ! कइहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु' इत्यादि

डिओ चिणिंसु, तंजहा–कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं। जीवा णं भंते! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणंति? गोयमा! चउहिं ठाणेहिं, तंजहा–कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं नेरइया जाव वेमाणिया। जीवा णं भंते! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिस्संति? गोयमा! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिस्संति, तंजहा–कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं नेरइया जाव वे-

---

ओनो चय कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे–१ क्रोध वडे, २ मान वडे, माया वडे अने लोभ वडे. एम नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! जीवो केटलां स्थाने–कारणे आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय करे छे? हे गौतम! चार कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो चय करे छे. ते आ प्रमाणे–क्रोध वडे, मान वडे, माया वडे अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! जीवो केटलां कारणे आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय करशे? हे गौतम! चार कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो चय करशे. ते आ प्रमाणे–क्रोध, मान, माया अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन्! जीवो केटलां

हे भगवन्! जीवोए केटला स्थान—कारणो वडे आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय कर्यो हतो? कषायपरिणतिवाळा आत्माने कर्मपुद्गलोनुं मात्र ग्रहण थवुं ते चय. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! चार कारणोए चय कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे—क्रोध, मान, माया अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकादि दंडकने विषे कहेवुं. आ दंडक अतीतकाळ विषयक छे, एम वर्तमान काळ अने भविष्य काळ विषयक दंडको कहेवा. ए रीते उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदन अने निर्जरा संबन्धे दरेकना त्रण त्रण दंडक जाणवा. एम सर्व संख्या वडे अढार दंडको कहेवा. तेमां पोताना अबाधाकाळनी पछी ज्ञानावरणीयादि कर्मपुद्गलोने वेदवा माटे निषेक-रचना थवी ते उपचय.

माणिया। जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडिओ उवचिणिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ उवचिणिंसु, तंजहा-कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं। एवं नेरइया जाव वेमाणिया। जीवा णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति जाव लोभेणं, एवं नेरइया जाव वेमाणिया। एवं उवचिणिस्संति। जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ बंधिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपग-

कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो उपचय कर्यो हतो ? हे गौतम ! चार कारणे. ते आ प्रमाणे-क्रोध, मान, माया अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकोथी माडी यावत्-वैमानिको सुधी जाणवु. हे भगवन् ! जीवो केटला कारणे—इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! चार कारणे यावत् लोभ वडे उपचय करे छे. एम नैरयिकोथी आरभी यावत् वैमानिको सुधी जाणवु. एम 'उपचय करशे' ए सबन्धे पण जाणवु. हे भगवन् ! जीवोए केटला कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो बंध कर्यो हतो ? हे गौतम ! चार कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो बंध कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे-क्रोध वडे, मान वडे, यावत् लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिको यावत् वैमानिको जाणवा. बांधी हती, बांधे छे अने

ते आ प्रमाणे—प्रथम स्थितिमां सौथी अधिक कर्मदल होय छे, बीजी स्थितिमा विशेष हीन, तेथी त्रीजी स्थितिमा विशेष हीन, एम विशेषहीन विशेषहीन त्यां सुधी जाणवु के ज्या सुधी ते काळे बांधेला कर्मनी छेल्ली स्थिति होय ए सबन्धे कर्मप्रकृति-टीकामां अने पचसंग्रहनी टीकामा सविस्तर कह्यु छे त्याथी जाणी लेवु बन्धन-पूर्वोक्त प्रकारे पोतपोताना अबाधाकाळनी पछीना काळमां निषेक-रचनाने प्राप्त थयेला ज्ञानावरणीयादि कर्मपुद्गलोने पुन कषायना परिणामविशेषथी निकाचित करवा, उदय समयने नहि प्राप्त थयेला कर्मपुद्गलोने उदीरणा करणना सामर्थ्यथी उदयावलिकामा प्रवेश करावयो ते उदीरणा ते उदीरणा पण कोइ कर्मनो

डिओ बंधिंसु, तंजहा—कोहेणं, माणेणं, जाव लोभेणं, एवं नेरइया जाव वेमाणिया, बंधिंसु, बंधंति, बंधिस्संति, उदीरेंसु, उदीरंति, उदीरिस्संति, वेदिंसु, वेदेंति, वेदइस्संति, निज्जरिंसु, निज्जरेंति, निज्जरिस्संति, एवं एते जीवाइया वेमाणियपज्जवसाणा अट्ठारस दंडगा जाव वेमाणिया निज्जरिंसु निज्जरेंति निज्जरिस्संति ।

बांधशे, उदीरी हती, उदीरे छे अने उदीरशे. वेदी हती, वेदे छे अने वेदशे, निर्जरा करी हती, निर्जरा करे छे अने निर्जरा करशे. ए प्रमाणे जीवथी मांडी वैमानिक पर्यन्त (प्रत्येकना) अढार दंडक जाणवा. यावत् वैमानिकोए निर्जरा करी हती, निर्जरा करे छे अने निर्जरा करशे. (संग्रहणी गाथानो अर्थ—) आत्मप्रतिष्ठित, क्षेत्रने आश्रयी, अनंतानुबन्धी, आभोग, चय, उपचय, बंध, उदीरणा,

तथाविध कषायना परिणामविशेषथी थाय छे, माटे एम कह्युं छे के 'चउहिं ठाणेहिं उदीरेंसु, उदीरंति, उदीरिस्संति'—चार स्थाने उदीर्या हता, उदीरे छे अने उदीरशे. अन्यथा कषाय सिवाय पण क्षीणमोह गुणस्थानके ज्ञानावरणादि कर्मनी उदीरणा करनारा होय छे. पोतपोताना अबाधाकाळनो क्षय थवाथी स्वभावथी उदयने प्राप्त थयेला अथवा उदीरणा करणवडे उदयने प्राप्त थयेला कर्मनो उपभोग करवो ते वेदना. कर्मपुद्गलोने भोगवी भोगवीने अकर्मरूपे करवां ते निर्जरा. अर्थात् आत्मप्रदेशो साथे लागेलां ज्ञानावरणीयादि कर्मपुद्गलोने भोगवीने नाश करवो. कह्युं छे के "पुव्वकयकम्मसाडण निज्जरा"-पूर्वकृत कर्मनो नाश करवो ते निर्जरा. आ देशनिर्जरा जाणवी. कारण के ते कषायजन्य छे, पण सर्व निर्जरा न समजवी. कारण के ते सर्व निर्जरा जेणे सर्वयोगनो रोध कर्यो छे एवा कषायरहित आत्माने मोक्षरूपी प्रासाद उपर चढतां होय छे, बीजा जीवने होती नथी. ए माटेज चोवीश दंडक संबन्धी सूत्र पण अविरुद्ध समजवुं. केमके देशनिर्जरा हमेशां बधा जीवोने होय छे. हवे सूत्रकार शिष्य उपर उपकार करवा माटे जे जे पदने आश्रयी पूर्वे सूत्रो कह्यां छे ते पदोनो संग्रहणी गाथा वडे निर्देश करे छे—'आयपतिट्ठियं' इत्यादि. प्रथम कषायनो भेद बतावनार सामान्य सूत्र

आतपतिट्ठिय खेत्तं पडुच्च णंताणुबंधि आभोगे। चिण उवचिण बंध उदीर वेद तह निज्जरा चेव ॥ १ ॥

इति पण्णवणाए भगवईए चोद्दसमं कसायपयं समत्तं।

वेदना तथा निर्जरा ए पदसहित सूत्रो जाणवा.

प्रज्ञापना भगवतीमां चौदमुं कषाय पद समाप्त.

अत्यंत प्रसिद्ध होवाथी तेनो संग्रह कर्यो नथी, बीजुं आत्मप्रतिष्ठित पदसहित सूत्र, त्यार पछी अनन्तानुबन्धीपदसहित सूत्र, त्यार बाद आभोगपदसहित सूत्र, त्यार पछी चय, उपचय, बन्ध, उदीरण, वेदना अने निर्जरा संबन्धे अनुक्रमे सूत्रो जाणवां अहीं मूळमां 'चिण'-चयपद उपचयसूत्रनुं उपलक्षण-सूचक छे.

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकामां चौदमुं कषायपद समाप्त.

पन्नरसं इंदियपयं ।

संठाणं बाहल्लं पोहत्तं कतिपदेस ओगाढे । अप्पाबहु पुट्ठ पविट्ठ विसय अणगार आहारे ॥ १ ॥
अद्दाय असी य मणी दुद्ध पाणे तेल्ल फाणिय वसा य । कंबल थूणा थिग्गल दीवोदहि लोगऽलोगे य ॥ २ ॥

पंदरमुं इन्द्रिय पद—प्रथम उद्देशक

१ संस्थान, २ बाहल्य–जाडाइ, ३ पृथुत्व–विस्तार, ४ कतिप्रदेश–केटला प्रदेशवाळी, ५ अवगाढ–केटला प्रदेशमां रहेल, ६ अल्पबहुत्व, ७ स्पृष्ट, ८ प्रविष्ट, ९ विषय, १० अनगार, ११ आहार, १२ आदर्श, १३ असि, १४ मणि, १५ दूध, १६ पानक, १७ तेल, १८ फाणित, १९ वसा, २० कांबल, २१ स्थूणा–स्तंभ, २२ थिग्गल–आकाशना थीगडारूप, २३ द्वीपोदधि, २४ लोक अने २५ अलोक संबंधे पहेला उद्देशकमां पचीश अधिकारो छे.

ए प्रमाणे चौदमा पदनी व्याख्या करी, हवे पंदरमा पदनो प्रारंभ कराय छे. अहीं पूर्वना पदमां बन्धनुं प्रधान कारण होवाथी विशेषरूपे कषायपरिणामनुं प्रतिपादन कर्युं, अने त्यार पछी इन्द्रियवाळाने ज लेश्यादि परिणामनो सद्भाव होय छे, माटे विशेषथी इन्द्रियपरिणामनुं निरूपण करवा माटे आ पदनो आरंभ कराय छे. आ पदमा बे उद्देशको छे. तेमां प्रथम उद्देशकमां जे अर्थाधिकारो आवेला छे तेने संग्रह करनार आ बे गाथाओ छे—'संठाणं बाहल्लं' इत्यादि. १ प्रथम इन्द्रियोनुं संस्थान कहेवानुं छे, संस्थान एटले आकारविशेष, २ त्यार पछी तेओनुं बाहल्य कहेवानुं छे, बाहल्य एटले जाडाइ अथवा पिंड. ३ त्यार पछी इन्द्रियोनुं पृथुत्व–विस्तार कहेवानो छे, ४ त्यारपछी 'कतिपदेस'त्ति केटला प्रदेशोवाळी इन्द्रियो होय छे ते कहेवानुं छे, ५ त्यारपछी 'ओगाढ' इति–कतिप्रदेशावगाढमिन्द्रियम्' केटला प्रदेशोनी अवगाहनावाळी इन्द्रियो छे ते कहेवानुं छे. ६ त्यारबाद अवगाहना संबन्धे अने कर्कशादिगुण संबंधे अल्पबहुत्व कहेवानुं छे. ७

१ कति णं भंते ! इंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पन्नत्ता, तंजहा—सोतिंदिए, चक्खिंदिए, घाणिंदिए, जिब्भिंदिए, फासिंदिए ।

१. हे भगवन् ! केटली इन्द्रियो छे ? हे गौतम ! पांच इन्द्रियो छे. ते आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेन्द्रिय, २ चक्षुइन्द्रिय, ३ घ्राणेन्द्रिय, ४ जिह्वेन्द्रिय अने ५ स्पर्शनेन्द्रिय.

त्यारबाद 'पुट्ठ' त्ति अहीं स्पृष्टनु ग्रहण अन्य अस्पृष्टनु उपलक्षण होवाथी स्पृष्ट अने अस्पृष्ट सबन्धे सूत्र कहेवानु छे. ८ त्यार पछी प्रविष्ट-प्रविष्ट अने अप्रविष्ट विषयना विचार सबन्धी सूत्र छे, ९ त्यार पछी विषयनु परिमाण, १० त्यारबाद अनगार-साधुविषयक सूत्र छे, ११ त्यारबाद आहारक विषयक सूत्र, १२ त्यारपछी अनुक्रमे १३ आदर्श, १४ मणि, १५ दुग्धपत्रसहित, १६ पानक, १७ तैल, १८ फाणित, १९ वसा, २० चर्बल, २१ स्थूणा-ठुंठा, २२ महान आकाशरूपी पटना थिग्गल-थीगडा जेवा लोक संबन्धे अने २३ द्वीप-समुद्र, २४ लोक, अने २५ त्यारबाद अलोक विषे सूत्र छे

१ तेमा इन्द्रियोना संस्थानादि कहेवाना छे माटे प्रथम इन्द्रिय सम्बन्धी सूत्र कहे छे—'कइणं भंते ! इंदिया पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! इन्द्रियो-जेनो शब्दार्थ पूर्वे कहेलो छे ते केटली छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! पांच इन्द्रियो छे' तेने अहीं नामथी कहे छे—'सोइन्दिय' इत्यादि आ पांचे इन्द्रियो बे प्रकारनी छे—द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय तेमां द्रव्येन्द्रिय निर्वृत्ति अने उपकरण ए बे प्रकारे छे, अने भावेन्द्रिय लब्धि अने उपयोगरूप बे प्रकारे छे तत्त्वार्थ सूत्रकार कहे छे के "निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम्, लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्" (अ० २ सू० १७–१८) निर्वृत्ति अने उपकरण द्रव्येन्द्रिय, अने लब्धि अने उपयोग भावेन्द्रिय छे तेमां निर्वृत्ति—प्रतिनियत अमुक प्रकारनो आकारविशेष, ते बे प्रकारे छे-बाह्य निर्वृत्ति अने अभ्यन्तर निर्वृत्ति तेमां बाह्यनिर्वृत्ति पापडी वगेरेना जेवी आकृतिवाळी अने विचित्र छे, माटे ते प्रतिनियतरूपे वर्णवी शकाय तेम नथी जेमके मनुष्यना कान बन्ने नेत्रनी पडखे रहेला छे अने भमरो कानना

२. सोतिंदिए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? गोयमा ! कलंबुयापुप्फसंठाणसंठिते पन्नत्ते। चक्खिंदिए णं भंते ! किंसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! मसूरचंदसंठाणसंठिते पन्नत्ते । घाणिंदिए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अइमुत्तगचं-

२. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनो केवो आकार छे ? हे गौतम ! कदंब पुष्पना जेवो आकार छे. हे भगवन् ! चक्षुइन्द्रियनो केवो आकार छे ? हे गौतम ! मसूर चन्द्रना जेवो आकार छे. हे भगवन् ! घ्राणेन्द्रियनो केवो आकार छे ? हे गौतम ! अतिमुक्त

उपरना भागनी अपेक्षाए सम रेखामां आवेली छे. घोडाने नेत्रना उपर कान छे अने तेनो अग्रभाग तीक्ष्ण छे-इत्यादि जातिना भेदथी अनेक प्रकारनी बाह्य निर्वृत्ति होय छे अने अभ्यन्तर निर्वृत्ति सर्व प्राणीओने सरखी ज होय छे, तेथी तेने आश्रयी संस्थानादि विषयक सूत्रो आगळ कहेवानां छे. केवळ स्पर्शनेन्द्रियनी निर्वृत्तिमां आकृतिनी अपेक्षाए बाह्य अने अभ्यन्तरनो भेद नथी, कारण के पूर्वाचार्योए तेनो निषेध करेलो छे. माटे स्पर्शनेन्द्रियना बाह्यसंस्थान विषे ज सूत्र कहेवामां आवशे के 'फासिंदिए णं भंते ! किंसठाणसंठिए पण्णत्ते'? इत्यादि—'हे भगवन् ! स्पर्शनेन्द्रियनो केवो आकार छे' ? इत्यादि. खड्गसमान बाह्य निर्वृत्ति छे अने खड्गनी धार जेवी जे स्वच्छ पुद्गलोना समुदायरूप अभ्यन्तर निर्वृत्ति छे, तेनी शक्तिविशेष ते उपकरणेन्द्रिय छे. आ उपकरणरूप द्रव्येन्द्रिय अभ्यन्तर निर्वृत्तिथी कथंचिद् भिन्न छे. कारण के शक्ति अने शक्तिवाळानो कथंचिद् भेद छे. ए हेतुथी ज अभ्यन्तर निर्वृत्ति छतां द्रव्यादि वडे उपकरणना विघातनो संभव छे. जेम के—कदंबपुष्पादिना समान आकारवाळी अभ्यन्तर निर्वृत्ति छतां अत्यंत कठोर मेघनी गर्जनादि वडे उपघात थवाथी प्राणीओ शब्दादि विषयने जाणवा समर्थ थता नथी. भावेन्द्रिय बे प्रकारनी छे—लब्धि अने उपयोग. तेमां श्रोत्रेन्द्रियादिना विषयरूप सर्व आत्मप्रदेशो संबन्धी इन्द्रियज्ञानावरण कर्मनो जे क्षयोपशम ते लब्धि, अने पोतपोताना विषयमां लब्धिने अनुसारे आत्मानो जे व्यापार, जेने प्रणिधान कहे छे ते उपयोग छे.

२. हवे अभ्यन्तर निर्वृत्तिने आश्रयी संस्थानादिनो विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम संस्थाननो विचार करे छे—'सोतिं-

दसंठाणसंठिते पन्नत्ते । जिब्भिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! खुरप्पसंठाणसंठिते पन्नत्ते । फासिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते १ ।

२ सोइंदिएणं भंते ! केवइयं बाहल्लेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइभागे बाहल्लेणं पन्नत्ते २ । एवं जाव फासिंदिए । सोतिंदिए ण भंते ! केवइतं पोहत्तेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइभागं पोहत्तेणं पन्नत्ते । एवं

पुष्पना जेवो आकार छे. हे भगवन् ! जिह्वेन्द्रियनो केवो आकार छे ? हे गौतम अस्त्राना जेवो आकार छे. हे भगवन् ! स्पर्शनेन्द्रियनो केवो आकार छे ? अनेक प्रकारनो आकार छे.

२. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनी जाडाइ केटली छे ? हे गौतम ! अंगुलना असंख्यातमा भागनी जाडाइ छे. ए प्रमाणे यावत् स्प-

---

द्रिए ण भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ?'—हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनो केवो आकार छे इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे

२ हवे बाहल्य-इन्द्रियोनी जाडाइनो विचार करे छे—'सोइंदिए ण भंते ! केवइय बाहल्लेण पन्नत्ते'–हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनी केटली जाडाइ छे ? इत्यादि सूत्र पण पाठसिद्ध छे आ अर्थ बीजे स्थळे पण कह्यो छे–" बाहल्लतो य सव्वाइं अंगुलअसंखभागं " । बधी इन्द्रियो जाडाइमा अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण छे (प्र०)–जो स्पर्शनेन्द्रियनी जाडाइ अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय तो तरवार के छरी वगेरेना घाथी शरीरनी अंदर पीडानो केम अनुभव थाय ? (उ०)–आ शंका अयुक्त छे, कारण के सम्यक् वस्तुतत्त्वनु ज्ञान नथी स्पर्शनेन्द्रियनो विषय शीतादि स्पर्शो छे, जेम चक्षुइन्द्रियनो विषय रूप अने घ्राणेन्द्रियनो विषय गन्ध छे तरवार के छरीनो घा वागवाथी शरीरनी अंदर शीतादि स्पर्शोनो अनुभव थतो नथी, परन्तु केवळ पीडानो अनुभव थाय छे, अने ते दुःखरूप वेदनाने आत्मा ज्वरादिनी वेदनानी जेम सर्व शरीर वडे अनुभवे छे, पण केवळ स्पर्शनेन्द्रिय वडे भोगवतो नथी, माटे कांइपण दोष नथी जो

चक्खिंदिएवि घाणिंदिएवि। जिब्भिंदिए णं पुच्छा। गोयमा! अंगुलपुहुत्तेणं पन्नत्ते। फासिंदिए णं पुच्छा। गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ते पोहत्तेणं पन्नते ३।

४. सोतिंदिए णं भंते! कतिपदेसिते पन्नत्ते? गोयमा! अणंतपदेसिते पन्नत्ते। एवं जाव फासिंदिए।

र्शनेन्द्रिय सुधी समजवुं. हे भगवन्! श्रोत्रेन्द्रियनो केटलो विस्तार छे. हे गौतम! अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण विस्तार छे. ए प्रमाणे चक्षुइन्द्रिय अने घ्राणेन्द्रिय संबंधे जाणवुं. हे भगवन्! जिह्वेन्द्रियनो केटलो विस्तार छे? हे गौतम! अंगुलपृथक्त्वप्रमाण विस्तार छे. स्पर्शनेन्द्रियनो केटलो विस्तार छे? हे गौतम! शरीरप्रमाण विस्तार छे.

४. हे भगवन्! श्रोत्रेन्द्रिय केटला प्रदेशवाळी छे? हे गौतम! अनन्त प्रदेशवाळी छे. ए प्रमाणे यावत् स्पर्शनेन्द्रिय सुधी जाणवुं.

एम छे तो शीतळ पीणुं वगेरे पीतां अंदर शीतस्पर्शनो अनुभव थाय छे ते केम घटी शके? तेनो उत्तर ए छे के, अहीं स्पर्शनेन्द्रिय बधे आत्मप्रदेशना छेवटना भागमां होय छे, कारण के ते प्रमाणे पूर्वाचार्योए व्याख्या करी छे. ए संबन्धे मूलटीकाकार कहे छे- "सर्वप्रदेशपर्यन्तवर्तित्वात् त्वचोऽभ्यन्तरेऽपि शुषिरस्योपरि त्वगिन्द्रियस्य भावादुपपद्यतेऽन्तः शीतस्पर्शवेदनानुभवः"। त्वचा सर्वप्रदेशना पर्यन्तवर्ती होवाथी अने शरीरनो अंदर पण पोलाणना उपरना उपरना भागमां स्पर्शेन्द्रिय होवाथी अंदर शीत स्पर्शनो अनुभव घटी शके छे.

हवे इन्द्रियना विस्तार संबन्धे सूत्र कहे छे-'सोइंदिए णं भंते! केवइं पोहत्तेणं पन्नत्ते'? हे भगवन्! श्रोत्रेन्द्रियनो केटलो विस्तार छे-इत्यादि. अहीं स्पर्शनेन्द्रिय सिवाय बाकीनी चार इन्द्रियोनो विस्तार आत्मांगुल वडे जाणवो. अने स्पर्शनेन्द्रियनो विस्तार उत्सेधांगुलथी जाणवो. (प्र०)—इन्द्रियो शरीराश्रित होय छे अने शरीर उत्सेधांगुलथी मपाय छे, कारण के 'उस्सेहपमाणतो मिणसु

देह'-उत्सेधांगुलना प्रमाणथी शरीरनुं मान करवुं-एवुं शास्त्रवचन छे. तो इन्द्रियोनुं पण उत्सेधांगुलथी मान करवुं योग्य छे, पण आत्मांगुलथी करवुं योग्य नथी (उ०)—ते अयुक्त छे कारण के जीभ वगेरे इन्द्रियना विस्तारनुं मान उत्सेधांगुलथी करीए तो त्रण गाउ वगेरेना प्रमाणवाळा मनुष्यादिने रसास्वादना व्यवहारनो उच्छेद थाय. ते आ प्रमाणे-त्रण गाउना प्रमाणवाळा मनुष्योने अने छ गाउना प्रमाणवाळा हस्ती वगेरेने पोतपोताना शरीरने अनुसारे अति विशाळ मुख अने जीभ होय छे तेथी जो तेओनी क्षरप्रना आकारे कहेली अभ्यन्तर निर्वृत्तिरूप जीभनो उत्सेधांगुलथी अंगुलपृथक्त्वप्रमाण विस्तार मानीए तो ते अल्प होवाथी बाह्यनिर्वृत्तिरूप सर्व जीभने व्यापीने नहि रहे, अने जो सर्व जीभने व्यापीने न रहे तो आहार वडे सर्व जीभथी थतो रसना अनुभवरूप प्रत्येक प्राणी प्रसिद्ध व्यवहारनो उच्छेद थाय ए प्रमाणे घ्राणेन्द्रियादि संबन्धे पण यथासंभव गन्धादिना व्यवहारनो उच्छेद जाणवो तेथी जिह्वादि चार इन्द्रियोना विस्तारनुं प्रमाण आत्मांगुलथी जाणवुं पण उत्सेधांगुलथी न जाणवुं ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे—

" इन्दियमाणेवि तयं भयणिज्जं जं तिगाउयाईणं । जिब्भिंदियाइमाणं संववहारे विरुज्झेज्जा " ॥

इन्द्रियना प्रमाणमां उत्सेधांगुलनो विकल्प जाणवो कारण के त्रण गाउ वगेरेना प्रमाणवाळाने जिह्वेन्द्रियादिनुं प्रमाण संव्यवहारथी विरुद्ध थाय छे भावार्थ—ते उत्सेधांगुल इन्द्रियना परिमाणमां पण विकल्पे जाणवो, तेथी क्यांइक तेनुं ग्रहण थतुं नथी एटले इन्द्रियविषयना परिमाणमां तेनुं ग्रहण थतुं नथी बीजे स्थळे विकल्प होय, पण इन्द्रियना परिमाणमां विकल्प समजवो ए अपिशब्दनो अर्थ छे, तात्पर्य ए छे के स्पर्शनेन्द्रियना विस्तारना परिमाणमां उत्सेधांगुल ग्रहण करवो अने ते सिवाय बाकीनी इन्द्रियोना परिमाणमां न ग्रहण करवो, कारण के बाकीनी इन्द्रियोनुं परिमाण आत्मांगुलथी थाय छे ए शी रीते जाणी शकाय ? तेना उत्तरमां कहे छे के जो बधी इन्द्रियोनुं परिमाण उत्सेधांगुलथी करवामां आवे तो त्रण गाउना प्रमाणवाळा अने आदि शब्दथी बे गाउ वगेरेना प्रमाणवाळा मनुष्यनुं जिह्वेन्द्रियादिनुं यथोक्त मान व्यवहारथी विरोधी थाय छे, एटले घटी शकतुं नथी, अने जे प्रकारे विरोधी थाय छे ते प्रकारे तेनो हमणांज विचार कर्यो छे

५. सोइंदिए णं भंते ! कतिपदेसोगाढे पन्नत्ते ? गोयमा ? असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते । एवं जाव फासिंदिए।

६. एएसि णं भंते ! सोतिंदियचक्खिदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाणं ओगाहणट्ठयाए पएसट्ठयाए ओगाहणपएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे चक्खिंदिते ओगाहणट्ठयाते, सोतिंदिए ओगाहणट्ठयाते संखेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणट्ठयाते संखेज्जगुणे, जि-

---

५. हे भगवन् ? श्रोत्रेन्द्रिय केटला प्रदेशमां अवगाढ–रहेल छे ? तेनी केटला प्रदेशोनी अवगाहना छे ? हे गौतम ! असंख्याता प्रदेशोमां अवगाढ होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्पर्शनेन्द्रिय सुधी जाणवुं.

६. हे भगवन् ! ए श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय, अने स्पर्शनेन्द्रियोमां अवगाहनार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहना तथा प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडी चक्षुइन्द्रिय अवगाहनारूपे छे– एटले के चक्षुइन्द्रियनी अवगाहना सौथी थोडी छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे. तेथी घ्राणेन्द्रिय अवगाहनारूपे

---

४. हवे 'कतिप्रदेश'–इन्द्रिय केटला प्रदेशवाळी होय छे, ते द्वारनुं प्रतिपादन करे छे—'सोइंदिएण भंते' ! हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय– इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे.

६. हवे अल्पबहुत्व द्वार कहे छे–सौथी थोडी चक्षुइन्द्रिय अवगाहनार्थरूपे छे. तात्पर्य ए छे के चक्षुइन्द्रियनी अवगाहना सौथी थोडा आकाश प्रदेशोनी छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रिय अवगाहनार्थरूपे संख्यातगुण छे, कारण के अति घणा प्रदेशोमां तेनी अवगाहना होय छे, तेथी पण घ्राणेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे, कारण के अति घणा प्रदेशोमां तेनी अवगाहना होय छे, तेथी पण जिह्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे असंख्यात

ब्भिदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे,फार्सिदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, पदेसट्ठयाते-सव्वत्थोवे चक्खिदिए पदेसट्ठयाए, सोतिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए पएसट्ठयाए संखिज्जगुणे, जिब्भिदिए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फार्सिदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे ओगाहणपदेसट्ठयाए-सव्वत्थोवे चक्खिदिए ओगाहणट्ठयाए, सोतिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखिज्जगुणे, जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाए

संख्यातगुण छे, तेथी जिह्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे असंख्यातगुण छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे. प्रदेशार्थरूपे सौथी थोडी चक्षुरिन्द्रिय छे. अर्थात् चक्षुरिन्द्रियना प्रदेशो सौथी थोडा छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रिय प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुण छे, तेथी घ्राणेन्द्रिय प्रदेशरूपे संख्यातगुण छे, तेथी जिह्वेन्द्रिय प्रदेशरूपे असंख्यातगुण छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रिय प्रदेशरूपे संख्यातगुण छे. अवगाहना अने प्रदेशरूपे-सौथी थोडी चक्षुरिन्द्रिय अवगाहनारूपे छे एटले तेनी अवगाहना सौथी थोडा प्रदेशवाळी छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे, तेथी घ्राणेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे, तेथी जिह्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे असंख्यातगुण छे,

गुण छे, कारण के तेनो विस्तार अंगुलपृथक्त्व प्रमाण छे केटलाएक पुस्तकोमां 'संख्यातगुण' एवो जे पाठ देखाय छे ते अशुद्ध पाठ छे, केम के युक्तिथी असंगत छे ते आ प्रमाणे-चक्षु आदि त्रणे इन्द्रियो प्रत्येक अंगुलना असंख्यातभागप्रमाण विस्तारवाळी छे अने जिह्वेन्द्रियनो अंगुलपृथक्त्वप्रमाण विस्तार छे, माटे असंख्यातगुण ज घटे छे, पण संख्यातगुण घटतु नथी, तेथी स्पर्शेन्द्रिय संख्यातगुण छे, ते आ प्रमाणे-जिह्वेन्द्रियनो विस्तार अंगुल पृथक्त्वप्रमाण छे अहीं बे थी मांडी नव सुधीनी संख्याने पृथक्त्व कहे छे, अने स्पर्शनेन्द्रिय तो शरीरप्रमाण छे, माटे ते अंगुलपृथक्त्व प्रमाण मोटु होय तो पण संख्यातगुण ज घटे छे घणा पुस्तकोमां 'असंख्यातगुण' एवो जे पाठ

असंखेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखिज्जगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयाहिंतो चक्खिंदिए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, सोतिंदिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए पएसट्ठयाए संखिज्जगुणे, जिब्भिंदिए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदिए पदेसट्ठयाते संखेज्जगुणे।

७. सोतिंदियस्स णं भंते! केवइया कक्खडगुरुयगुणा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता कक्खडगुरुयगुणा पन्नत्ता,

---

तेथी स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे. स्पर्शनेन्द्रियनी अवगाहना करतां चक्षुइन्द्रिय प्रदेशरूपे अनंतगुण छे—एटले स्पर्शनेन्द्रियनी अवगाहना जेटला आकाश प्रदेशोनी होय छे ते करतां तेना—चक्षुइन्द्रियना प्रदेशो अनन्तगुणा छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रिय प्रदेशरूपे संख्यातगुण छे, तेथी घ्राणेन्द्रिय प्रदेशरूपे संख्यातगुण छे, तेथी जिह्वेन्द्रिय प्रदेशरूपे असंख्यातगुण छे अने तेथी स्पर्शनेन्द्रिय प्रदेशरूपे संख्यातगुण छे.

७. हे भगवन्! श्रोत्रेन्द्रियना कर्कश अने गुरुगुणो केटला छे? हे गौतम! कर्कश अने गुरुगुणो अनन्ता छे. ए प्रमाणे यावत्—

देखाय छे ते अशुद्ध छे, कारण के युक्तिरहित छे. ते आ प्रमाणे—आत्मांगुलपृथक्त्वप्रमाण जिह्वेन्द्रिय छे अने शरीरप्रमाण स्पर्शनेन्द्रिय होय छे, शरीर वधारेमां वधारे लाख योजन प्रमाण होय छे तेथी ते असंख्यातगुण केम घटी शके? आ क्रम वडे ज प्रदेशार्थरूपे पण सूत्रनो विचार करवो. अने उपर कहेला प्रकारवडे ज अवगाहनामां अने प्रदेशार्थरूप ए उभय सूत्रनो पण विचार करवो.

७-८. जे कर्कश-गुरु गुण वगेरे संबन्धे सूत्रो छे ते पाठ सिद्ध छे, परन्तु अल्पबहुत्वना सूत्रमां चक्षु, श्रोत्र, घ्राण, जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियना उत्तरोत्तर कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, अने पाछ इन्द्रियना पश्चानुपूर्वी—पाछळना क्रमथी पूर्व पूर्वना मृदु-लघु-

एवं जाव फासिंदियस्स । सोतिंदियस्स णं भंते ! केवइया मउयलहुयगुणा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता मउयलहुयगुणा पन्नत्ता, एवं जाव फासिंदियस्स ।

८. एतेसिं णं भंते ! सोइंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाणं कक्खडगुरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा, सोतिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा । मउयलहुयगुणाणं—सव्वत्थोवा फासिंदियस्स मउय-

---

स्पर्शनेन्द्रिय सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियना मृदु अने लघु गुणो केटला छे ? हे गौतम ! मृदु अने लघुगुणो अनन्ता छे. ए प्रमाणे यावत्—स्पर्शनेन्द्रिय सुधी जाणवुं.

८. हे भगवन् ! ए श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश अने गुरुगुणो तथा मृदु अने लघुगुणोमां कई इन्द्रियना कया गुणो कई इन्द्रियना कया गुणोथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा चक्षुइन्द्रियना कर्कश—गुरु गुणो छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रियना कर्कश—गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी घ्राणेन्द्रियना कर्कश—गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी जिह्वेन्द्रियना कर्कश—गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश—गुरु गुणो अनन्तगुणा छे. मृदु—लघु गुणोनुं अल्प

गुणो अनन्तगुणा जाणवा, कारण के ते प्रमाणे उत्तरोत्तर कर्कशरूपे अने पूर्व पूर्व अतिकोमळ रूपे जणाय छे पण साथे मन्नेना अल्पबहुत्व सूत्रमां 'स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो करतां तेना ज मृदु-लघु गुणो अनन्तगुण छे, कारण के शरीरमां उपर रहेला

लहुयगुणा, जिब्भिदियस्स मउयलहुयगुणा अनंतगुणा, घाणिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, सोतिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, चक्खिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा। कक्खडगरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य-सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स कक्खडगुरुयगुणा, सोतिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स कक्खडगुरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगुरुयगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, सोतिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंत-

बहुत्व-सौथी थोडा स्पर्शनेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो छे, तेथी जिह्वेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी घ्राणेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी चक्षुइन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे. कर्कश-गुरु गुणो अने मृदु-लघु गुणोनुं अल्पबहुत्व-सौथी थोडा चक्षुइन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी घ्राणेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी जिह्वेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो करतां तेनाज मृदु-लघु गुणो अनन्तगुण छे, तेथी जि ह्वेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्त गुण छे, तेथी घ्राणेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी चक्षुइन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे.

केटला एक प्रदेशो टाढ, ताप वगेरेना संबंधथी कर्कश होय छे. अने ते सिवायना बीजा शरीरनी अंदर रहेला घणा प्रदेशो मृदु

गुणा, चखिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा।

९. नेरइयाण भंते! कइ इंदिया पन्नत्ता? गोयमा! पंच, तंजहा-सोतिन्दिए जाव फासिन्दिए। नेरइयाणं भंते! सोतिन्दिए किंसठिए पन्नत्ते? गोयमा! कलंबुयासंठाणसंठिते पन्नत्ते। एवं जहा ओहियाणं वत्तव्वया भणिता तहेव नेरइयाणपि जाव अप्पाबहुयाणि दोण्णि। नवरं नेरइयाण भंते! फासिन्दिए किंसंठिए पन्नत्ते?

९. हे भगवन्! नैरयिकोने केटली इन्द्रियो छे? हे गौतम! पांच इन्द्रियो छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रिय, यावत् स्पर्शनेन्द्रिय. हे भगवन्! नैरयिकोने श्रोत्रेन्द्रिय केवा आकारनी छे? हे गौतम! कदंबपुष्पना आकार जेवी छे. ए प्रमाणे जेम सामान्य इन्द्रियोनी वक्तव्यता कही छे तेम नैरयिकोनी पण यावत् बन्ने प्रकारना अल्पबहुत्व सुधी कहेवी. परन्तु एटली विशेषता छे-हे भगवन्! नैरयिकोने स्पर्शनेन्द्रिय केवा आकारनी छे? हे गौतम! तेओने स्पर्शनेन्द्रिय बे प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-भवधारणीय अने उत्तरवै-

होय छे, माटे स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुण करता मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे

९. हवे नैरयिकोमा संस्थानथी माडी अल्पबहुत्व सुधीना आठ द्वारोनो विचार करे छे—'नेरइयाण भंते'!-हे भगवन्! नैरयिकोने केटली इन्द्रियो होय-इत्यादि सुगम छे, परन्तु 'नेरइयाण भंते! फासिंदिए किंसठिए पण्णत्ते?' हे भगवन्! नैरयिकोने स्पर्शनेन्द्रिय केवा आकारनी होय छे इत्यादि. नैरयिकोने बे प्रकारनु शरीर छे—भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय. भवधारणीय शरीर तेओने भव-स्वभावथी ज जेनी पांख मूळथीज तोडी नाखी छे अने डोक वगेरेना रुवाटा उखेडी नाख्या छे एवा पक्षीना शरीरनी पेठे अति बीभत्स आकृतिवाळु होय छे जे उत्तरवैक्रिय छे ते पण हुंडकसंस्थानवाळु होय छे, ते आ प्रमाणे—जो के ते नैरयिको 'अमे अतिसुन्दर शरीर विकुर्वीए' ए इच्छा वडे शरीरनो आरंभ करे छे, तो पण तेओने अत्यन्त अशुभ तेवा प्रकारना नामकर्मना उदयथी

गोयमा ! दुविधे पन्नत्ते, तंजहा–भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विते य। तत्थ णं जे से भवधारणिज्जे से णं हुंडसंठाणसंठिते पन्नत्ते, तत्थ णं जे से उत्तरवेउव्विते सेवि तहेव, सेसं तं चेव।

१०. असुरकुमाराणं भंते ! कइ इन्दिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच, एवं जहा ओहियाणि जाव अप्पाबहुगाणि दोण्णिवि। नवरं फासिन्दिए दुविधे पण्णत्ते, तंजहा–भवधारणिज्जे य उत्तरवेउव्विते य। तत्थ णं जे से भवधारणिज्जे से णं समचउरंससंठाणसंठिते पन्नत्ते, तत्थ णं जे से उत्तरवेउव्विते से णं णाणासंठाणसंठिते, सेसं तं चेव। एवं जाव थणियकुमाराणं।

क्रिय. तेमां जे भवधारणीय स्पर्शनेन्द्रिय छे ते हुंडक संस्थानना आकार जेवी छे अने जे उत्तरवैक्रियरूप स्पर्शनेन्द्रिय छे ते पण तेवी ज छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं.

१०. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटली इन्द्रियो छे? हे गौतम! पांच इन्द्रियो छे. ए प्रमाणे जेम सामान्य इन्द्रियो संबंधे कह्युं तेम बन्ने प्रकारना अल्पबहुत्व सुधी कहेवुं. परन्तु तेओने स्पर्शनेन्द्रिय बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय. तेमां जे भवधारणीय छे ते समचतुरस्रसंस्थानना आकारवाळी छे, अने जे उत्तरवैक्रियरूप छे ते अनेक प्रकारना आकारवाळी छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं अने ते यावत् स्तनितकुमारो सुधी समजवुं.

अत्यन्त अशुभ शरीर थाय छे.

१०. १२. असुरकुमार सूत्रमां तथास्वभावथी भवधारणीय समचतुरस्र संस्थान छे, अने उत्तरवैक्रिय अनेक आकृतिवाळुं होय छे,

११. पुढविकाइयाणं भंते ! कति इन्दिया पन्नत्ता ? गोयमा ! एगे फासिन्दिए पन्नत्ते । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते किंसंठाणसंठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! मसूरचंदसंठाणसंठिते पण्णत्ते । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते केवइयं बाहल्लेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पन्नत्ते । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिए केवतितं पोहत्तेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ते पोहत्तेणं । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिए कतिपदेसिते पन्नत्ते ? गोयमा ! अणंतपदेसिते पन्नत्ते । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते कतिपदेसोगाढे पन्नत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते । एतेसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं फासिन्दियस्स ओगाहणट्ठयाए पएसट्ठयाए ओगाहणपएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवे पुढविकाइयाणं फासिन्दिए ओगाहणट्ठ-

११. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटली इन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! तेओने एक स्पर्शनेन्द्रिय होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय केवा आकारनी होय छे ? हे गौतम ! मसूरचंद्रना आकार जेवी होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय जाडाइमां केटली छे ? हे गौतम ! जाडाइमां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियनो विस्तार केटलो छे ? हे गौतम ! विस्तारमां शरीरप्रमाण मात्र होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय केटला प्रदेशवाळी होय छे ? हे गौतम ! अनन्तप्रदेशवाळी होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय केटला प्रदेशोनी अवगाहनावाळी होय छे ? हे गौतम ! असंख्याता प्रदेशोनी अवगाहनावाळी होय छे. हे भगवन् ! ए पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय

कारण के स्वेच्छाथी तेनी उत्पत्ति थाय छे पृथिव्यादि सर्वे सूत्रो अत्यंत स्पष्ट छे

याते, ते चेव पदेसट्ठयाते अणंतगुणे। पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दियस्स केवइया कक्खडगरुयगुणा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता, एवं मउयलहुयगुणावि। एतेसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं फासिन्दियस्स कक्खडगरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइयाणं फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा, तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा। एवं आउकाइयाणवि जाव वणप्फइकाइयाणं, णवरं संठाणे इमो विसेसो दट्ठव्वो–आउकाइयाणं थिबुगबिंदुसंठाणसंठिते पन्नत्ते। तेउकाइयाणं सूइकलावसंठाणसंठिते पन्नत्ते। वाउकाइयाणं पडागासंठाणसंठिते पन्नत्ते। वणप्फइकाइयाणं णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते।

अवगाहनारूपे, प्रदेशरूपे अने अवगाहना–प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य, के विशेषाधिक होय छे? हे गौतम! सौथी थोडी पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहना रूपे छे, एटले तेना प्रदेशोनी अपेक्षाए स्पर्शनेन्द्रियनी अवगाहना सौथी थोडी छे, अने तेज प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे. अर्थात्–अवगाहना करतां तेना प्रदेशो अनन्तगुणा छे. हे भगवन्! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियना केटला कर्कश–गुरु गुणो छे ? हे गौतम! अनन्ता छे. एम मृदु–लघु गुणो पण जाणवा. हे भगवन्! ए पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश–गुरु गुणो अने मृदु–लघु गुणोमां कया गुणो कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियना सौथी थोडा कर्कश–गुरु गुणो छे, तेथी तेनाज मृदु–लघु गुणो अनन्ता छे. ए प्रमाणे अप्कायिको यावत् वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. परन्तु संस्थानमां आ विशेषता छे–अप्कायिकोनी स्तिबुक–परपोटानी आकृति जेवी, तेजस्कायिकोनी सोयना जत्थाना जेवी, वायुकायिकोनी ध्वजाना जेवी अने वनस्पतिकायिकोनी अनेक प्रकारना आकारवाळी स्पर्शनेन्द्रिय जाणवी.

१२. बेइंदियाणं भंते ! कति इंदिया पन्नत्ता? गोयमा! दो इंदिया पन्नत्ता, तंजहा–जिब्भिदिए य फासिंदिए य। दोण्हपि इंदियाणं सठाणं बाहल्लं पोहत्तं पदेसा ओगाहणा य जहा ओहियाणं भणिता तहा भाणियव्वा, णवरं फासिंदिए हुंडसठाणसंठिते पण्णत्तेत्ति इमो विसेसो। एतेसि णं भंते! बेइंदियाणं जिब्भिदियफासिंदियाणं ओगाहणट्ठयाते पदेसट्ठयाते ओगाहणपदेसट्ठयाते कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा० ४? गोयमा! सव्वत्थोवे बेइंदियाणं जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाते, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाते संखेज्जगुणे। पदेसट्ठयाते–सव्वत्थोवे बेइंदियाणं जिब्भिदिते पएसट्ठयाए, फासिन्दिए संखेज्जगुणे। ओगाहणपएसट्ठयाते–सव्वत्थोवे बेइंदियस्स जिब्भिदिए ओगाहणट्ठयाते, फासिन्दिए ओगाहणट्ठयाते संखेज्जगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयातेहिंतो जिब्भिदिए पएसट्ठयाते

---

१२. हे भगवन्! बेइन्द्रियोने केटली इन्द्रियो होय छे? हे गौतम! बे इन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे–जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रिय. बन्ने इन्द्रियोनुं संस्थान, जाडाइ, विस्तार, प्रदेशो अने अवगाहना जेम सामान्य इन्द्रियोनी कही छे तेम कहेवी. परन्तु स्पर्शनेन्द्रिय हुंडक संस्थाननी आकृति जेवी छे ए विशेष छे. हे भगवन्! ए बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियोमां अवगाहनारूपे, प्रदेशरूपे, अने अवगाहना–प्रदेशरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे सौथी अल्प छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे, प्रदेशार्थरूपे–बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रिय प्रदेशरूपे सौथी अल्प छे अने तेथी स्पर्शनेन्द्रिय प्रदेशरूपे संख्यातगुण छे. अवगाहना–प्रदेशार्थरूपे बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे सौथी अल्प छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे. स्पर्शनेन्द्रियनी अवगाहना करतां जिह्वेन्द्रिय प्रदेशरूपे

अणंतगुणे, फासिन्दिए पएसट्ठयाए संखेज्जगुणे। बेइन्दियाणं भंते! जिब्भिन्दियस्स केवइया कक्खडगरुयगुणा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता। एवं फासिन्दियस्सवि, एवं मउयलहुयगुणावि। एतेसि णं भंते! बेइन्दियाणं जिब्भिदियफासिन्दियाणं कक्खडगरुयगुणाणं, मउयलहुयगुणाणं, कक्खडगुरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य कतरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बेइन्दियाणं जिब्भिदियस्स कक्खडगरुयगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा। एवं जाव चउरिन्दियत्ति, नवरं इंदियपरिवुड्ढी कातव्वा। तेइंदियाणं घाणिन्दिए थोवे, चउरिन्दियाणं चक्खिदिए थोवे, सेसं तं चेव। पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं मणूसाण य जहा नेरइयाणं, णवरं

अनन्तगुण छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रिय प्रदेशार्थरूपे संख्यातगुण छे. हे भगवन्! बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रियना केटला कर्कश अने गुरु गुणो कह्या छे? हे गौतम! अनन्ता कह्या छे. ए प्रमाणे स्पर्शनेन्द्रियना पण जाणवा. एम मृदु अने लघु गुणो संबन्धे जाणवुं. हे भगवन्! बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो, मृदु-लघु गुणो तथा कर्कश-गुरु गुणो अने मृदु लघु गुणोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! बेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो सौथी थोडा छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुण छे, अने स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो करतां तेनाज मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी जिह्वेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा छे. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. परन्तु इन्द्रियनी संख्यामां वृद्धि करवी. तेइन्द्रियोने घ्राणेन्द्रिय सौथी अल्प छे, चउरिन्द्रियोने चक्षुइन्द्रिय अल्प छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनु-

फासिन्दिए छव्विहसठाणसंठिते पन्नत्ते, तंजहा-समचउरंसे निग्गोह परिमंडले सादी खुज्जे वामणे हुंडे । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

१३. पुट्ठाइ भंते ! सद्दाइं सुणेति, अपुट्ठाइ सद्दाइं सुणेति ? गोयमा ! पुट्ठाइं सद्दाइ सुणेति, नो अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेति । पुट्ठाइं भंते ! रूवाइं पासति, अपुट्ठाइं पासति ? गोयमा ! नो पुट्ठाइ रूवाइं पासति, अपुट्ठाइं रूवाइं पासति । पुट्ठाइं भंते ! गंधाइ अग्घाइ, अपुट्ठाइं गंधाइं अग्घाइ ? गोयमा ! पुट्ठाइ गंधाइं अग्घाइ, नो अपुट्ठाइं

व्योने नैरयिकोनी जेम कहेवुं, परन्तु स्पर्शनेन्द्रिय छ प्रकारना संस्थानना आकार जेवी होय छे. ते आ प्रमाणे—१ समचतुरस्र, २ न्यग्रोधपरिमडल, ३ सादि, ४ कुब्ज, ५ वामन अने ६ हुंड [जेने जेवा प्रकारनु संस्थान होय तेने तेवा प्रकारनी स्पर्शेन्द्रिय होय छे.] व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुरकुमारनी पेठे कहेवु.

१३. हे भगवन् ! स्पृष्ट–स्पर्श करायेला–इन्द्रियना संबधने प्राप्त थयेला शब्दो सांभळे के अस्पृष्ट–नहि स्पर्श करायेला शब्दो सांभळे ? हे गौतम ! स्पृष्ट शब्दो सांभळे, पण अस्पृष्ट शब्दो न सांभळे. हे भगवन् ! स्पृष्ट रूप जुए के अस्पृष्ट रूप जुए ? हे गौतम ! स्पृष्ट रूप न जुए पण अस्पृष्ट रूप जुए. हे भगवन् ! स्पृष्ट गन्ध सुंघे के अस्पृष्ट गन्ध सुंघे ? हे गौतम ! स्पृष्ट गन्ध सुंघे,पण अस्पृष्ट

[?] हवे सूत्रकार कहे छे—'पुट्ठाइं भंते ! सद्दाइं सुणेति' प्राकृत होवाथी सूत्रमा 'शब्द' नपुंसकलिंग छे, अन्यथा संस्कृत भाषामा 'शब्द' पुलिंग होय छे अहीं 'श्रोत्रेन्द्रिय' ए कर्तृवाचक पद अर्थापत्तिगम्य छे हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय स्पृष्ट शब्दोने सांभळे ? तेमा 'स्पृश्यन्ते इति स्पृष्टा' शरीर उपर धूलीकणनी पेठे जेनो श्लेषात्मक संबन्ध थाय ते स्पृष्ट–स्पर्शमात्रने प्राप्त थयेला कहेवाय छे कारण के 'पुट्ठ

अग्घाइ। एवं रसाणवि फासाणवि, णवरं रसाइं अस्साएति, फासाइं पडिसंवेदेति त्ति अभिलावो कायव्वो। पविट्ठाइं भंते! सद्दाइं सुणेति, अपविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति? गोयमा! पविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति, नो अपविट्ठाइं सद्दाइं सुणेति, एवं जहा पुट्ठाणि तहा पविट्ठाणिवि।

गन्ध न सुंघे. ए प्रमाणे रस अने स्पर्श संबन्धे पण जाणवुं. परन्तु 'रस आस्वादे छे अने स्पर्शने वेदे छे' ए पाठ कहेवो. हे भगवन्! प्रविष्ट–इन्द्रियमां प्रवेश करेला शब्द सांभळे के अप्रविष्ट शब्द सांभळे? हे गौतम! प्रविष्ट शब्द सांभळे, पण अप्रविष्ट शब्द न सांभळे–इत्यादि जेम स्पृष्ट संबंधे कह्युं तेम प्रविष्ट संबंधे जाणवुं.

रेणुं व तणुम्मि' शरीरने विषे धूळनी पेठे स्पर्श करायेला 'शब्यन्ते—प्रतिपाद्यन्तेऽर्था एभिरिति शब्दाः' जे वडे अर्थोनुं प्रतिपादन कराय ते शब्दो, तेने सांभळे–ग्रहण करे? तात्पर्य ए छे के–श्रोत्रेन्द्रिय स्पृष्टमात्र शब्द द्रव्यने जाणे छे, पण घ्राणेन्द्रियादिनी पेठे बद्धस्पृष्ट द्रव्यने नहि, कारण के शब्दद्रव्यो घ्राणेन्द्रियादिना विषयभूत द्रव्य करतां सूक्ष्म छे अने घणां छे. तेमज ते क्षेत्रमां रहेलां शब्दयोग्य द्रव्यने वासित करनारा छे, तेथी सूक्ष्म होवाथी, अतिघणां होवाथी अने अन्य द्रव्यने वासित करनार होवाथी आत्मप्रदेशोनी साथे स्पृष्टमात्र–स्पर्शमात्रने प्राप्त थयेलां निर्वृत्तिइन्द्रियमां प्रवेश करीने जलदी उपकरणेन्द्रियने–शब्दग्रहण करवानी शक्तिने अभिव्यक्त करे छे. वळी श्रोत्रेन्द्रिय पोताना विषयने जाणवामां घ्राणेन्द्रिय करतां वधारे समर्थ छे, तेथी ते स्पृष्टमात्र शब्दद्रव्यने जाणे छे, परन्तु अस्पृष्ट–सर्वथा आत्मप्रदेशो साथे संबन्धने नहि प्राप्त थयेला द्रव्योने जाणती नथी. कारण के तेनो श्रोत्रेन्द्रियने प्राप्त थयेला विषयने जाणवानो स्वभाव छे. जे प्रकारे श्रोत्रेन्द्रिय प्राप्यकारी–प्राप्त थयेला विषयने जाणवाना स्वभाववाळी छे, ते प्रकारे नन्दिसूत्रनी टीकादिमां चर्चा करी छे माटे ते त्यांथी जाणी लेवुं. 'पुट्ठाइं भंते! रूवाइं'–हे भगवन्! स्पृष्ट रूपने जुए–इत्यादि सुगम

१५. सोनिन्द्रियस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उ-

१५. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनो केटलो विषय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी बार यो-

छे उत्तर कहे छे-हे गौतम ! शब्दने स्पृष्ट रूपने न स्पृष्ट परन्तु अस्पृष्ट रूपने सुणे, कारण के चक्षु अप्राप्त विषयने ग्रहण करे छे अने ते अनात्मकालिय मध्यमंडलामां व्यक्तिरूपणे सिद्ध करेलु छे माटे त्यांथी जाणी लेवुं गन्धादिविषयक सूत्रो स्पष्ट छे, परन्तु स्पृष्ट गन्धान् आजिघ्रति-स्पृष्ट गन्धने सुंघे छे इत्यादि जो के कह्यु छे, तो पण बद्धस्पृष्ट गन्धने सुंघे छे एम जाणवु, कारण के आवश्यक नियुंक्तिमां कह्यु छे के—

"पुट्ठं सुणेइ सद्दं रूवं पुण पासइ अपुट्ठं तु । गंधं रसं च फासं बद्धपुट्ठं वियागरे" ॥

स्पृष्ट शब्द सांभळे छे, अने अस्पृष्ट रूपने जुए छे, गन्ध, रस अने स्पर्श बद्धस्पृष्टने जाणे छे तेमां स्पृष्ट एटले पूर्वेनी पेठे आत्मप्रदेशोनी साथे संबन्धमात्रने प्राप्त थयेला, अने बद्ध एटले आत्मप्रदेशो वडे अपनावेला, कारण के "बद्धमप्पीकयं पएसेहिं" बद्ध एटले प्रदेशोवडे आत्मसात-एकमेक करायेला-एवु शास्त्रनु वचन छे अहीं बद्ध विशेषण छे अने स्पृष्ट विशेष्य छे, अने तेओनो विशेषण समास थाय छे अहीं स्पर्शमात्रथी स्पृष्ट थाय छे, जेमके शब्द तेथी स्पर्शमात्रनो निषेध करीने खास स्पर्शविशेषनी अपेक्षा विना प्रतिप्रतिबोध थाय माटे बद्ध विशेषणनुं ग्रहण करेलु छे एटले बद्धरूप थयेला स्पृष्ट विषयने जाणे छे, अन्यने जाणती नथी शाथी ? कारण के गंधादि द्रव्यो बादर-स्थूल छे, अल्प छे, अने भावुक-वासक (बीजाने वासित करनारा) नथी, वळी घ्राण वगेरे इन्द्रियो पण श्रोत्रेन्द्रियनी अपेक्षाए मन्द शक्तिवाळी छे हवे प्रविष्ट अने अप्रविष्ट विषयनो विचार करे छे-'पविट्ठाई भंते ! सद्दाइं' हे भगवन् ! प्रविष्ट शब्दो सांभळे ? इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे, परन्तु स्पर्श शरीरमां धूलीना कणनी पेठे थाय छे अने प्रवेश मुखमां कोळीयानी पेठे थाय छे एम शब्दार्थ भिन्न होवाथी स्पृष्ट अने प्रविष्ट संबन्धी सूत्रोनो भिन्न विषय जाणवो

क्कोसेणं बारसहिं जोअणेहिन्तो अच्छिण्णे पोग्गले पुट्ठे पविट्ठातिं सद्दातिं सुणेति। चक्खिन्दियस्स णं भंते! केवतिए विसए पन्नत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं सातिरेगाओ जोयणसतसह-

---

जनथी आवेला अछिन्न (अन्य शब्दादि के वातादिथी नहि छेदायेला, सामर्थ्यवाळां) पुद्गलरूप प्रविष्ट शब्दोने सांभळे छे. हे भगवन् ! चक्षुइन्द्रियनो केटलो विषय छे ? हे गौतम ! जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी कंइक अधिक लाख योजन

---

१४. हवे इन्द्रियोना विषयनुं परिमाण कहे छे-'सोइंदियस्स णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते' ?-हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनो केटलो विषय छे-इत्यादि. अहीं श्रोत्र वगेरे इन्द्रियो प्राप्त विषयने ग्रहण करती होवाथी अंगुलना असंख्यातमा भागथी पण आवेला शब्दने सांभळे छे, नेत्र अप्राप्तकारी-अप्राप्त विषयने जाणे छे, तेथी ते जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भाग जेटला दूर रहेला विषयने जुए छे. तात्पर्य ए छे के नेत्र जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण दूर रहेला विषयने जाणे छे, पण तेथी नजीकना विषयने जाणतुं नथी. आ वात दरेक प्राणीने विदित छे. तेथी अत्यंत नजीकमां रहेला अंजन, रज अने नेत्रना मळने चक्षु जोइ शकती नथी, कह्युं छे के "अवरमसंखेज्जंगुलभागातो नयणवज्जाणं। संखेज्जंगुलभागो नयणस्स" नेत्र सिवाय बाकीनी इन्द्रियोनो विषय जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग छे अने नेत्रनो अंगुलनो संख्यातमो भाग छे. उत्कर्षथी श्रोत्रेन्द्रिय बार योजनथी आवेला अछिन्न-नहि छेदायेलां, अव्यवहित, अन्य शब्दो वडे अथवा वायु वगेरेथी जेनी शक्ति हणाइ नथी एवा पुद्गलोने सांभळे छे. आ कथन वडे 'शब्द पौद्गलिक छे, पण 'आकाशनो गुण नथी' एम प्रतिपादन कर्युं. 'शब्द पौद्गलिक छे' ए बाबत तत्त्वार्थटीकामां सिद्ध करी छे तेथी अहीं फरी तेनो विस्तार करता नथी. स्पृष्टमात्र-शरीरमां लागेली धूळनी पेठे स्पर्शमात्रने प्राप्त थयेलां अने प्रविष्ट-निर्वृत्ति इन्द्रियमां प्रवेशेला शब्दोने सांभळे छे, पण बार योजननी आगळथी आवेला शब्दोने सांभळती नथी. कारण के आगळथी आवेला शब्दोनो मन्द परिणाम थाय छे. ते आ प्रमाणे-बार योजनथी आगळ आवेला शब्द पुद्गलो तथास्वभावथी तेवा प्रकारना मन्दपरिणामवाळा थाय

स्साओ अच्छिण्णे पोग्गले अपुट्ठे अपविट्ठाणि रूवाइं पासइ। घाणिन्दियस्स पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं अंगुल-असंखेज्जइभागो, उक्कोसेणं नवहिं जोयणेहिंतो अच्छिण्णे पोग्गले पुट्ठे पविट्ठाणि गंधाणि अग्घाइ, एवं जिब्भिन्दियस्सवि फासिन्दियस्सवि।

अछिन्न पुद्गलरूप अस्पृष्ट अने अप्रविष्ट रूपने जुए छे. घ्राणेन्द्रियनो केटलो विषय छे? हे गौतम! जघन्य अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टथी नव योजनथी आवेला अछिन्न पुद्गलरूप स्पृष्ट अने प्रविष्ट गंधने सुंघे छे. ए प्रमाणे जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रिय संबंधे जाणवुं.

छे के जेथी पासाना विषयनुं ज्ञानमात्र उत्पन्न करवाने समर्थ थता नथी. श्रोत्रेन्द्रियनुं पण एवा प्रकारनुं पटुत्व पण नथी, जेथी बार योजनथी आवेला शब्दोने सांभळे. चक्षुरिन्द्रिय वधारेमां वधारे साधिक लाख योजनथी आवेली अछिन्न-वस्तुनी पासनी सुंदरी वगेरेनी अव्यवहित-अन्तर रहित, अस्पृष्ट-दूर रहेला अने पण काळथी अप्रविष्ट पुद्गलरूपने जुए छे कारण के तेथी नजीक अव्यवहित (कोई पण वस्तु वच्चे अन्तर न होय तेवुं) रूप होय तो पण तेने जोवामां चक्षुरिन्द्रियनी शक्ति नथी. अहीं अंगुल त्रण प्रकारनो छे ते आ प्रमाणे-आत्मांगुल, उत्सेधांगुल अने प्रमाणांगुल. तेमां "जे मनुष्यो जे काळे होय त्यारे तेओनुं मान-प्रमाण जे अंगुल ते आत्मांगुल अने ते अनियत प्रमाणवाळुं होय छे. आवा स्वरूपवाळो आत्मांगुल छे. परमाणु, त्रसरेणु, रथरेणु, वालाग्र, लीख, जू, जव ते यथा उत्तरोत्तर आठ गुणा वधारे होय छे" (अने पछी आठ जवनो आंगळ) ए स्वरूपवाळो एक उत्सेधांगुल हजार गुणो थाय त्यारे प्रमाणांगुल थाय छे अने ते उत्सेधांगुलने बमणो करतां भगवान महावीरनो आत्मांगुल थाय छे" एवा प्रकारनो त्रीजो प्रमाणांगुल छे. तेमां आत्मांगुल वडे ते काळना वाव, कूवा वगेरे वस्तु, उत्सेधांगुल वडे मनुष्य, तिर्यंच, देव अने नारकोना शरीरो अने प्रमाणांगुल वडे पृथिवी अने विमानो मपाय छे. कह्युं छे के—"आत्मांगुल वडे वस्तु-घर हाट आदि वस्तुनुं मान,

उत्सेधांगुलना प्रमाणथी शरीरनुं मान अने प्रमाणांगुल वडे पर्वत, पृथिवी अने विमानोनुं मान करवुं." (प्र०)—तेमां आ इन्द्रियना विषयनुं परिणाम आत्मांगुल, उत्सेधांगुल के प्रमाणांगुलथी करवुं? (उ०)—आत्मांगुलथी करवुं. तेज प्रमाणे चक्षुइन्द्रियना विषयना परिमाणना विचारमां भाष्यकार कहे छे—"नेत्र अने मन अप्राप्तकारी छे. इन्द्रियने अप्राप्त विषयने ग्रहण करनारा छे, नेत्रना विषयनुं परिमाण आत्मांगुल वडे कंइक अधिक लाख योजन छे. (प्र०)—शरीरनुं प्रमाण उत्सेधांगुलथी करवामां आवे छे अने इन्द्रियो शरीराश्रित छे तेथी तेओनुं विषयपरिमाण पण उत्सेधांगुलथी करवुं योग्य छे, तो आत्मांगुलथी करवुं एम कहो छो? (उ०)—आत्मांगुलथी मान करवामां दोष नथी, जो के इन्द्रियो शरीराश्रित छे, तो पण तेओनुं विषयपरिमाण आत्मांगुलथी ज करवुं. कारण के विषयपरिमाण शरीरथी अन्य छे. आज अर्थने भाष्यकार पण आक्षेप पूर्वक कहे छे—"उत्सेधांगुलना प्रमाणथी यावत् शरीरना मानादि कह्यां, परन्तु ते देहनुंज प्रमाण समजवुं, पण इन्द्रियना विषयनुं परिमाण न समजवुं." अहीं जे शरीरप्रमाण उत्सेधांगुल प्रमाण वडे कह्युं ते मात्र शरीरप्रमाण ज समजवुं पण इन्द्रियना विषयनुं परिमाण न जाणवुं. कारण के इन्द्रियना विषयनुं परिमाण आत्मांगुल वडे मान करवा योग्य छे. (प्र०)—जो इन्द्रियोना विषयनुं परिमाण उत्सेधांगुलथी थाय तो शो दोष थाय? (उ०)—पांचसो धनुष वगेरेना प्रमाणवाळा मनुष्योना विषयना व्यवहारनो विच्छेद थाय. ते आ प्रमाणे-जे भरतनो आत्मांगुल छे, ते प्रमाणांगुल बरोबर छे अने ते प्रमाणांगुल हजार उत्सेधांगुल वडे थाय छे. कारण के "उस्सेहंगुलमेगं हवइ परमाणंगुलं सहस्सगुणं" हजार गुणा उत्सेधांगुलनी बराबर प्रमाणांगुल छे-एवुं शास्त्रनुं वचन छे. तेथी भरत अने सगरप्रमुख चक्रवर्तीओनी जे अयोध्यादि नगरीओ, अने स्कन्धावार-छावणीओ आत्मांगुल वडे बार योजन प्रमाण सिद्धान्तमां प्रसिद्ध छे, तेनुं उत्सेधांगुलथी मान करवामां आवे तो अनेक हजार योजन थाय. एम थवाथी तेनी आयुधशाला-वगेरे स्थळे वगाडेली भेरी वगेरेना शब्दनुं श्रवण नहि थाय, कारण के 'श्रोत्रेन्द्रिय बार योजनथी आवेला शब्दने ग्रहण करे छे' एवुं शास्त्र वचन छे, वळी समस्त नगरव्यापी अने बधी छावणीमां व्याप्त थनार विजय सूचक ढक्का वगेरेनो शब्द आगममां कहेलो छे, अने ते प्रकारेज मनुष्यनो व्यवहार थाय छे, तेथी आगमप्रसिद्ध पांचसो धनुष वगेरे प्रमाण

शरीरवाळा मनुष्योना विषयव्यवहारनो विच्छेद न थाय माटे आत्मांगुल वडे इन्द्रियोना विषयनु परिमाण जाणवु, पण उत्सेधांगुल वडे नहि. ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे—

"तेण पयपयुगदलहिमिवयव्यवहारोच्छेओ । पावइ महस्सगुणियं जेण पमाणगुलं तत्तो ॥ (विशेषा० गा ३४२)

जेथी ते उत्सेधांगुलवडे पांचसो धनुषप्रमाण शरीरवाळा मनुष्यादिना इन्द्रियना विषय संबन्धी व्यवहारनो विच्छेद प्राप्त थाय, कारण के उत्सेधांगुलथी प्रमाणांगुल हजारगुणो होय छे' ते माटे आत्मांगुल वडे इन्द्रियोना विषयनु परिमाण जाणवु, पण उत्सेधांगुल वडे न समजवु-ए उपसंहार वाक्यनो स्वयमेव विचार करवो. यद्यपि पूर्वे कह्यु के 'शरीराश्रित इन्द्रियो छे माटे तेओना विषयनुं परिमाण उत्सेधांगुलथी करवु जोइए' ते पण अयुक्त छे, कारण के केटलीक इन्द्रियोना पण विस्तारनु परिमाण आत्मांगुल वडे स्वीकारेलु छे अने ए बाबत पूर्वे पण इन्द्रियना प्रमाणना विचारमां 'अयणिउअ' इत्यादि भाष्यकारना वचनो साक्षीए विचारेली छे माटे नथी इन्द्रि-

---

१ जेथी ते उत्सेधांगुल वडे इन्द्रियना विषयनु परिमाण मानीए तो पांचसो धनुषना प्रमाणवाळा, अतिशयवाळा भरत, सगरादि मनुष्योना अ आ चक्षुरादि इन्द्रियो वडे वस्तुनो जे प्रसिद्ध व्यवहार छे तेनो विच्छेद प्राप्त थाय. शाथी ? ए वडे छे-जेथी भरत चक्रवर्तीनो अंगुलरूप प्रमाणांगुल छे अने ए उत्सेधांगुलथी हजारगुणो थयो छे कारण के 'सहस्रगुण उत्सेधांगुल ए एक प्रमाणांगुल छे' एवु आगमवचन छे. भरतादिनी अयोध्यादि नगरीओ अने स्कन्धावार-छावणी विस्तारमां आत्मांगुल वडे बार योजन प्रमाण सिद्धान्तमां निर्णीत छे अने ते उत्सेधांगुल वडे अनेक हजार योजन थाय छे. आथी तेने विषे आयुधशालादिमां वगाडेली भेरी वगेरेना शब्दनुं श्रवण समस्त अभिन्नमां थवानु नहि थाय, कारण के श्रोत्रेन्द्रिय बार योजनथी आवेला शब्दने सांभळे छे, परंतु आगळना शब्दने सांभळती नथी. अने ए बार योजन नगरना जे उत्सेधांगुलथी मापीए तो उत्सेधांगुलथी थतां अनेक हजार योजनथी आवेल भेरी वगेरेना शब्दने श्रोत्रेन्द्रिय केम सांभळे ? अने भरतादिनी नगरीनी छावणीमां तेनुं श्रवण तो थाय छे, माटे आत्मांगुलथी इन्द्रियना विषयनु परिमाण छे पण उत्सेधांगुलथी नथी. जुओ यशो० ग्रन्थमाला मुद्रित विशेषावश्यक भाष्यटीका प. १०८

यना विषयनुं परिमाण आत्मांगुल वडेज थाय छे ए बाबत सिद्ध थाय छे. (प्र०)—आत्मांगुल वडे विषयनुं परिमाण भले हो, तो पण प्रकृत सूत्रमां कहेलुं चक्षुइन्द्रियना विषयनुं परिमाण घटतुं नथी, कारण के बीजा आगमोमां तेना विषयनुं परिमाण अधिक पण कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे-'पुष्करवर द्वीपार्धमां मानुषोत्तर पर्वतनी पासे रहेनारा मनुष्यो कर्कसंक्रान्तिने दिवसे प्रमाणांगुल वडे कंइक अधिक एकवीश लाख योजन दूर रहेला सूर्यने जुए छे' एम शास्त्रान्तरमां प्रतिपादन करे छे. अने ते प्रमाणे ते अर्थने प्रतिपादन करनार आ ग्रन्थ छे-

"इगवीसं खलु लक्खा चउतीसं चेव तह सहस्साइं । तह पंचसया भणिया सत्ततीसाए अतिरित्ता ॥
इइ नयणविसयमाणं पुक्खरदीवद्धवासिमणुयाणं । पुव्वेण य अवरेण य पिहं पिहं होइ नायव्वं" ॥

एकवीश लाख चोत्रीश हजार पांचसो ने साडत्रीश (योजन) ए प्रमाणे नेत्रना विषयनुं परिमाण पुष्करवरद्वीपना अर्ध भागमां रहेनारा मनुष्योने पूर्व अने पश्चिम दिशाए (उदय अने अस्त समये) जुदुं जुदुं जाणवुं इत्यादि. तो आ प्रस्तुत सूत्र आत्मांगुल वडे पण केम घटी शके ? कारण के प्रमाणांगुलथी पण व्यभिचार-अनियतपणुं थाय छे, कह्युं छे के—

"लक्खेहिं एक्कवीसाए साइरेगेहिं पुक्खरद्धम्मि । उदये पेच्छंति नरा सूरं उक्कोसए दिवसे" ॥
नयणिंदियस्स तम्हा विसयपमाणं जहा सुए भणियं । आउस्सेहपमाणंगुलाण एक्केणवि न जुत्तं" ॥ (विशेषा० गा. ३४५-६)

पुष्करार्धमां रहेला मनुष्यो उत्कृष्ट दिवसे-कर्क संक्रान्तिना दिवसे कंइक साधिक एकवीश लाख योजन दूर रहेला सूर्यने उदयसमये जुए छे. माटे नयनेन्द्रियना विषयनुं परिमाण जेम श्रुतमां कहेलुं छे तेम आत्मांगुल, उत्सेधांगुल अने प्रमाणांगुलमाना कोइ पण एक आंगुल वडे युक्त नथी. (उ०)—ए वात सत्य छे, परन्तु आ सूत्र केवळ प्रकाश्य-प्रकाश करवा योग्य विषयनी अपेक्षाए समजवुं. परन्तु प्रकाशक विषयनो अपेक्षाए न समजवुं. अहीं सूर्य प्रकाशक विषय छे, माटे प्रकाशक वस्तुमां विषयनुं परिमाण अधिक होय तो पण विरुद्ध नथी, कंइ पण दोष नथी. (प्र०)—ए प्रमाणे शी रीते जाणी शकाय ? पूर्वाचार्योए करेला व्याख्यानथी जाणी शकाय छे. कारण के

१५. अणगारस्स णं भंते! भावियप्पणो मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरमा णिज्जरापोग्गला, सुहुमा

१५. हे भगवन्! मारणांतिक समुद्घातने प्राप्त थयेला भावितात्मा अनगारना जे चरम–छेल्ला निर्जरापुद्गलो छे ते हे आयुष्मान्

महाबुद्धिवाळा पुरुषो यथा कालिकश्रुतनी व्याख्या पूर्वाचार्योए करेला व्याख्यानने अनुसरी करे छे, परन्तु मात्रअक्षरनी रचना प्रमाणे करता नथी, कारण के कालिक श्रुत पूर्वगत सूत्रना अर्थनो संग्रह करनार होवाथी तेमां कदाचित् संक्षेपमां कहेला अर्थने घणा विस्तारथी कहेवामां अने क्यारेक विस्तारवाळा अर्थने संक्षेपथी कहेवामां अर्वाचीन पुरुषोए पोतानी बुद्धिवडे यथावस्थितपणे जाणवु अशक्य छे आज हेतुथी बीजे कहेवामां आव्यु छे—

"जं जह भणियं सुत्ते तहेव जइ त वियालणा नत्थि। किं कालियाणुओगो दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं" ॥

जे प्रकारे सूत्रमां कह्यु छे तेमज होय अने तेमां विचार करवानो न होय तो प्रधानदृष्टिवाळा पुरुषोए कालिकसूत्रना अनुयोगनो (व्याख्याननो) उपदेश केम कर्यो छे? माटे सूत्रमां विचारणानी आवश्यकता छे तेथी पूर्वाचार्योना व्याख्यानथी प्रस्तुत सूत्रनो विरोध नथी. ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे—आ सूत्रनो अभिप्राय प्रकाशनीय वस्तुनी अपेक्षाए छे पण प्रकाशक वस्तुनी अपेक्षाए नथी, अने ते विशेषार्थ व्याख्यानथी समजवो, पण संवेदथी लक्षण-नियमनो अभाव न समजवो तथा घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियो उत्कृष्ट नव योजनथी आवेला अविच्छिन्न–नहि छेदायला, बीजा द्रव्योथी अप्रतिहत शक्तिवाळा गंधादि विषयोने जाणे छे, पण तेथी [illegible] आवेला विषयने जाणती नथी कारण के आगळथी आवेला गंधादि विषयो मन्दपरिणामवाळा थइ जाय छे, अने तेवा [illegible] मन्दपरिणामवाळा गंधादि विषयोने जाणवाने असमर्थ छे ए संबन्धे भाष्यकार कहे छे—"श्रोत्रेन्द्रिय सिवाय [illegible] बाकीनी इन्द्रियो नव योजनथी आवेला प्राप्त विषयने ग्रहण करे छे, अने एथी आगळथी आवेला विषयने [illegible] कारण के आगळथी आवेला द्रव्योनो मन्दपरिणाम थवाथी तेने ग्रहण करवामां इन्द्रियोनु पटु-सामर्थ्य नथी

णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं लोगंपि य णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ? हंता ! गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरमा णिज्जरापोग्गला, सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो !, सव्वं लोगंपि य णं ओगाहित्ता णं चिट्ठंति। छउमत्थे णं भंते! मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किं

श्रमण! सूक्ष्म कह्यां छे ? अने ते सर्व लोकमां अवगाहीने रहे छे ? हे गौतम ! अवश्य मारणांतिक समुद्घातने प्राप्त थयेला भावितात्मा अनगारना छेल्लां निर्जरापुद्गलो छे, ते हे आयुष्मान् श्रमण ! सूक्ष्म कह्यां छे अने ते सर्व लोकने विषे अवगाहीने रहे छे. हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरापुद्गलोनुं अन्यपणुं, नानापणुं, हीनपणुं, तुच्छपणुं, गुरुपणुं अने लघुपणुं जाणे छे अने जुए छे ? हे

१५-१६. 'अणगारस्स णं भंते' ! हे भगवन् ! जेने द्रव्यथी अने भावथी अगार-घर नथी ते अनगार-संयत, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपविशेष वडे जेनो आत्मा भावित-वासित थयेलो छे एवा अने मरणसमुद्घात वडे समवहत-हणायेला एटले मरणसमुद्घातने प्राप्त थयेला साधुना जे चरम-शैलेशीकाळना अन्त्य समयना निर्जरापुद्गलो-कर्मभाव रहित थयेला परमाणुओ छे ते पुद्गलो 'णं' निश्चय अर्थमां छे, कारण के निपातोना अनेक अर्थ होय छे. अवश्य सूक्ष्म-चक्षुआदि इन्द्रियना विषय रहित हे आयुष्मान् श्रमण ! कह्यां छे ? 'हे आयुष्मान् श्रमण' ! ए गौतमकृत भगवंतनुं संबोधन छे. तथा ए निश्चित छे के ते पुद्गलो सर्व लोकमां अवगाहीने-स्पर्श करीने (णं वाक्यालंकारमां वपरायेलो छे) रहे छे ? ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो एटले भगवान् कहे छे—हे गौतम ! हन्त-अवश्य, अहीं हन्त अवधारण अर्थमां छे, एमज छे-'भावितात्मा अनगारना' इत्यादि तेज प्रश्न पुनः कहेलो. 'हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरा पुद्गलोनुं अन्यत्व-भिन्नपणुं जाणे अने जुए इत्यादि. अहीं आ प्रश्नने शो अवकाश छे ? उत्तर—अहीं पूर्वे कह्युं हतुं के 'स्पृष्ट अने प्रविष्ट शब्द द्रव्यो सांभळे छे' इत्यादि. निर्जरापुद्गलो पण सर्वलोकनो स्पर्श करे छे तो तेओनो पण श्रोत्रादिमां स्पर्श अने प्रवेश शुं नथी थतो ? ए संशय

आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ पासइ'? गोयमा ! देवेवि य णं अत्थेगतिए जे णं तेसिं निज्जरापोग्गलाण नो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति,

गौतम ! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. हे भगवन् ! आ हेतुथी एम कहो छो के 'छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरापुद्गलोनुं अन्यपणुं, भिन्नपणुं, हीनपणुं, तुच्छपणुं, गुरुपणुं अने लघुपणुं जाणतो नथी' ? हे गौतम ! कोइ देव पण ते निर्जरा पुद्गलोनुं कंइपण अन्यपणुं, भिन्नपणुं, हीनपणुं, तुच्छपणुं, गुरुपणुं अने लघुपणुं जाणतो नथी, तेम देखतो नथी, ते माटे हे गौतम ! एम कहेवाय छे के छद्मस्थ मनुष्य ते निर्जरापुद्गलोनुं कंइपण अन्यपणुं यावत् जाणतो नथी, तेम देखतो नथी. ए प्रमाणे हे आयुष्मान् श्रमण ! एम ते

थाय छे तेथी प्रश्न करे छे—हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य, अहीं छद्मस्थनुं ग्रहण केवलीनो निषेध करवा माटे छे, कारण के केवलज्ञानी बधा य आत्माना प्रदेशो वडे सर्व जाणे छे अने जुए छे कह्यु छे के–"सव्वतो जाणइ केवली सव्वतो पासइ केवली"—केवलज्ञानी सर्व जाणे छे अने सर्वथी जुए छे स्तुतिकार पण कहे छे—'समन्ततः सर्वगुणं निरक्ष" इति अने छद्मस्थ अंगोपांगनामकर्मविशेष वडे संस्कारने प्राप्त थयेल इन्द्रियद्वाराज जाणे छे अने जुए छे माटे छद्मस्थनुं ग्रहण छे आ हेतुथीज अहीं विशिष्ट अवधिज्ञानरहित छद्मस्थनुं ग्रहण करवानुं छे ते निर्जरापुद्गलोनुं अन्यत्व–अन्यपणुं एटले बे अनगार–साधुओना जे निर्जरापुद्गलो छे तेओनुं परस्पर भिन्नपणुं, 'नानात्व' नानापणुं–बीजानी अपेक्षा सिवाय एकनाज निर्जरा पुद्गलोनुं वर्णादिनुं विचित्रपणुं, 'अवमत्व'–हीनपणुं, तुच्छत्व—निःसारपणुं, गुरुत्व अने लघुत्व प्रसिद्ध छे, भगवान् उत्तर आपे छे—ए अर्थ समर्थ–युक्तियुक्त नथी, कारण के छद्मस्थ मनुष्य ते

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा जाव जाणति पासति, एवं सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो !, सव्वलोगंपि य णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ।

१६. नेरइया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति, उदाहु न याणंति न पासंति आहारेंति ? गोयमा ! नेरइया णिज्जरापोग्गले न जाणंति न पासंति आहारेंति, एवं जाव पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं ।

पुद्गलो सूक्ष्म कह्या छे, अने सर्वलोकने अवगाहीने रहे छे.

१६. हे भगवन् ! नैरयिको ते निर्जरापुद्गलो जाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार करे छे ? अथवा जाणता नथी, जोतो नथी अने आहार करे छे ? हे गौतम ! नैरयिको निर्जरापुद्गलोने जाणता नथी, जोता नथी अने तेनो आहार करे छे. एप्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सुधी जाणवुं.

निर्जरापुद्गलोनुं अन्यपणुं वगेरे जाणतो नथी अने जोतो नथी.

आ संबन्धे प्रश्न करे छे–'हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो'–इत्यादि सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे–कोइ कर्मपुद्गल संबन्धी अवधिज्ञानरहित देव छे, जे ते निर्जरापुद्गलोनुं कंइपण अन्यपणुं वगेरे जाणतो नथी अने जोतो पण नथी. तात्पर्य ए छे के देवोने मनुष्यो करतां वधारे सामर्थ्यवाळी इन्द्रियो होय छे, तेमां देव पण जाणतो नथी अने जोतो नथी तो मनुष्य माटे तो शुं कहेवुं, 'ए हेतुथी' इत्यादि उपसंहार वाक्य सुगम छे. एटला प्रमाणवडे ते निर्जरा पुद्गलो सूक्ष्म कह्यां छे. 'हे आयुष्मान् श्रमण' ! ए भगवाने करेलुं गौतमने संबोधन छे. ते एवा प्रकारना अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गलो सर्व लोकने पण अवगाहीने रहे छे, परन्तु ते बादररूप पुद्गलो नथी, जो बादर होय तो सांव्यवहारिक प्रत्यक्षना (इन्द्रिय प्रत्यक्षना) विरोधनो प्रसंग उपस्थित थाय. ते निर्जरापुद्गलो सर्व

१७. मणूसा णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति, उदाहु न याणंति न पासंति आहारेंति ? गोयमा ! अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगतिया न याणंति न पासंति आहारेंति । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-'अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेंति, अत्थेगतिया न जाणंति न पासंति आहारेंति'?

१७. हे भगवन् ! मनुष्यो ते निर्जरापुद्गलोने शुं जाणे छे, जुए छे, अने तेनो आहार करे छे ? अथवा जाणता नथी, जोता नथी, अने आहार करे छे ? हे गौतम ! केटलाएक जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे, केटलाएक जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'केटलाएक जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे, केटलाएक जाणता नथी,

लोकस्पर्शी छे, तेथी आ पण प्रश्न थाय छे—'नेरइया णं भंते' ! इत्यादि हे भगवन् ! नैरयिको ते निर्जरापुद्गलोनो आहार करे छे ए सिद्ध छे, कारण के पुद्गलो ते ते सामग्रीना वशथी विचित्र परिणाम पामवाना स्वभाववाळा होवाथी आहाररूपे पण तेओना परिणमनो संभव छे, मात्र आज बाबत प्रश्न छे के 'ते नैरयिको जाणे छे, जुए छे' ! इत्यादि आहृत होवाथी क्रियाना हेतुपणामां पण वर्तमान विभक्ति थयेली छे तेथी आ अर्थ थाय छे-नैरयिको ते पुद्गलोने जाणता अने जोता आहार करे छे के नहि जाणता अने नहि जोतां आहार करे छे भगवान् उत्तर आपे छे—'नहि जाणता अने नहि जोता आहार करे छे' शाथी ? कारण के ते निर्जरापुद्गलो अति सूक्ष्म होवाथी चक्षुआदि इन्द्रियोना विषय रहित छे अने नैरयिकोने कार्मणशरीरना पुद्गलविषयक अवधिज्ञान होतुं नथी ए प्रमाणे असुरकुमार संबन्धी सूत्रो यावत् तिर्यंचपंचेन्द्रियसुधी जाणवां

१७-१८ मनुष्यसूत्रमां 'सन्निभूया य' संज्ञीभूत-संज्ञीपणाने प्राप्त थयेला अने ते सिवायना बीजा असंज्ञीभूत छे अहीं संज्ञी एटले विशिष्ट अवधिज्ञानवाळो ग्रहण करवो, के जेना ज्ञाननो विषय ते कार्मण शरीरना पुद्गलो छे बाकी बधु सुगम छे वैमानिक सूत्रमां 'मायीमि-

गोयमा ! मणूसा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–सण्णिभूया य असण्णिभूया य । तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं न याणंति न पासंति आहारेंति । तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–उवउत्ता य अणुवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न याणंति न पासंति आहारेंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ–'अत्थेगतिया न याणंति न पासंति आहारेंति, अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारेंति' । वाणमंतरजोइसिया जहा नेरइया ।

जोता नथी अने आहार करे छे' ? हे गौतम ! मनुष्यो बे प्रकारना छे—संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत. तेमां जे असंज्ञीभूत छे ते जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे. अने तेमां जे संज्ञीभूत छे ते बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे–उपयुक्त (उपयोगवाळा) अने अनुपयुक्त (उपयोगरहित). तेमां जे उपयोगरहित छे ते जाणता नथी, जोता नथी, अने आहार करे छे. अने जे उपयोगवाळा छे ते जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे. ए हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'केटलाक जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे, अने केटलाएक जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे. व्यन्तर अने ज्योतिषिको नैरयिकोनी पेठे जाणवा.

च्छादिट्ठी' इत्यादि. मायी मिथ्यादृष्टि–माया–त्रीजो कषाय छे, अने ते अन्य कषायोनुं उपलक्षण–सूचक छे, ते जेओने छे एवा मायी–उत्कट रागद्वेषवाळा मिथ्यादृष्टि, ते रूपे उत्पन्न थयेला ते मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्न कहेवाय छे, अने तेथी विपरीत अमायी सम्यग्दृष्टि उपपन्नक जाणवा. अहीं मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्नना ग्रहणथी नवमा ग्रैवेयक सुधीना वैमानिको जाणवा. जो के नीचेना कल्पोमां अने ग्रैवेयकमां सम्यग्दृष्टि देवो छे तो पण तेओनुं अवधिज्ञान कार्मणशरीरना पुद्गलविषयक नथी, तेथी तेओ पण मायीमिथ्यादृष्टि उप-

१८. वेमाणिया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति पासंति आहारेंति ? जहा मणूसा । णवरं वेमाणिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–माइमिच्छदिट्ठीउववण्णगा य अमायिसम्मदिट्ठीउववण्णगा य । तत्थ णं जे ते माइमिच्छदिट्ठीउववण्णगा ते णं न याणंति न पासंति आहारेंति, तत्थ णं जे ते अमायिसम्मदिट्ठिउववण्णगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–अणंतरोववण्णगा य परंपरोववण्णगा य । तत्थ णं जे ते अणंतरोववण्णगा ते णं न याणंति न

---

१८. हे भगवन् ! वैमानिको ते निर्जरापुद्गलोने शुं जाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार करे छे ? हे गौतम ! मनुष्योनी जेम जाणवा. परन्तु वैमानिको बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्नक अने अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्नक. तेमां जे मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्नक छे ते जाणता नथी, जोता नथी, पण आहार करे छे. तेमां जे अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्नक छे ते बे प्रकारनां छे. ते आ प्रमाणे—अनन्तरोपपन्न अने परंपरोपपन्न. तेमां जे अनन्तरोपपन्न छे ते जाणता नथी जोता नथी, अने आहार करे छे. जे परप-

---

पण जेवा होवाथी उपमालथी मायी मिथ्यादृष्टिउपपन्नक शब्दथी कहेवाय छे जेओ अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्नक देवो छे ते अनुत्तर देवो छे तेओ बे प्रकारना छे–अनन्तरोपपन्न अने परंपरोपपन्न जेओ एक पण समयना अन्तर सिवाय उत्पन्न थयेला पहेले उत्पत्तिना प्रथम समयवर्ती छे तेओ अनन्तरोपपन्न अने परंपरा वडे उत्पन्न थयेला पहेले उत्पत्ति पछी बे त्रण इत्यादि समयोमां वर्तता परंपरोपपन्न कहेवाय छे तेमां जेओ अनन्तरोपपन्न छे तेओ ते निर्जरा पुद्गलोने जाणता नथी अने जोता नथी, कारण के तेओने एक समयना उपयोगनो असंभव छे अने तेओ अपर्याप्ता छे परंपरोपपन्नक बे प्रकारना छे–पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेमां जेओ अपर्याप्ता छे तेओ जाणता नथी अने जोता नथी, कारण के अपर्याप्ता होवाथी सम्यक् उपयोगनो असंभव छे. पर्याप्ता [illegible] बे प्रकारना छे–उपयुक्त–उपयोगवाळा अने अनुपयुक्त–उपयोग रहित तेमां जे उपयोगरहित छे ते जाणता नथी अने जोता नथी कारण के उपयोग सिवाय

पासंति आहारेंति। तत्थ णं जे ते परंपरोववण्णगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं न जाणंतिः न पासंति आहारेंति। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—उवउत्ता य अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न याणंति न पासंति आहारेंति, तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारेंति, से एतेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति—'अत्थेगतिया याणंति जाव अत्थेग-

रोपपन्न छे ते बे प्रकारना छे—पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे. तेमां जे पर्याप्ता छे ते बे प्रकारना छे—उपयुक्त अने अनुपयुक्त. तेमां जे अनुपयुक्त छे ते जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे. जे उपयुक्त छे ते जाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार करे छे. ते हेतुथी हे गौतम! एम कहुं छुं के केटलाएक जाणे छे, यावत्—केटलाएक आहार करे छे.

सामान्यरूपे अने विशेषरूपे ज्ञान थवुं अशक्य छे. जेओ उपयोगवाळा छे तेओ जाणे छे अने जुए छे. केवी रीते जाणे छे अने जुए छे? उत्तर—अहीं आवश्यकमां अवधिज्ञानना विषयना विचारमां आ कह्युं छे के "संखेज्ज कम्मदव्वे लोगे थोवूणगं पलियं" अर्थः—

१. "संखिज्जमणोदव्वे भागो लोगपलियस्स बोद्धव्वो" इति गाथापूर्वार्धः। मनोद्रव्य विषयक अवधिज्ञान होय तो लोक अने पल्योपमनो संख्यातमो भाग तेना विषय तरीके जाणवो. अने कर्मद्रव्य विषयक अवधिज्ञान होय तो लोक अने पल्योपमना संख्याता भागो तेनो विषय छे. तात्पर्य ए छे के मनोद्रव्यने जोतो अवधिज्ञानी क्षेत्रथी लोकनो संख्यातमो भाग अने काळथी पल्योपमनो संख्यातमो भाग जुए छे, अने कर्मवर्गणा द्रव्यने जोतो अवधिज्ञानी क्षेत्रथी लोकना संख्याता भागो अने काळथी पल्योपमना संख्याता भागो जुए छे. तथा क्षेत्रथी समस्त लोकने जोतो काळथी कंईक न्यून पल्योपमने जुए छे. जुओ विशेषा० टीका प. ३४१.

तिता आहरेंति ।

१९. अद्दायं पेहमाणे मणूसे अद्दाय-पेहति, अत्ताणं पेहइ,-पलिभागं पेहति ? गोयमा ! अद्दायं पेहति, नो अप्पाणं पेहति, पलिभागं पेहति । एवं एतेण अभिलावेणं असिं मणिं दुद्धं पाणं तेल्लं फाणियं वसं ।

१९. हे भगवन् ! आदर्शने जोनार मनुष्य आदर्शने जुए छे, आत्माने-पोताने जुए छे के प्रतिबिम्ब जुए छे ? हे गौतम ! आदर्शने जुए छे, आत्माने-पोताने जोतो नथी, पण प्रतिबिंब जुए छे. ए प्रमाणे ए पाठ वडे असि, मणि, दूध, पानक, तेल, फाणित अने वसा संबंधे प्रश्नो जाणवां.

कर्मद्रव्य-कार्मण शरीर द्रव्योने जोतो देवथी लोकना संख्याता भागोने जुए छे, अने अनुत्तर देवो सपूर्ण लोकनाडीने जुए छे कारण के "सम्भिन्नलोकनाडी पासन्ति अनुत्तरा देवा"-एवु शास्त्र वचन छे माटे उपयोगवाळाओ ते अवधिज्ञान वडे निर्जरापुद्गलोने जाणे छे अने जुए छे तथा 'आहार करे छे' त्यां बधे लोमाहारथी आहार करे छे एम समजवु

१९. 'अद्दाय पेहमाणे' इत्यादि इन्द्रियना अधिकारथी आ पण प्रश्न थाय छे के आदर्श-आरिसो जोनार मनुष्य आरीसो जुए छे, अथवा आत्मा-शरीर जुए छे ? अहीं आत्मशब्दथी शरीर लेवु अथवा प्रतिभाग-प्रतिबिंब जुए छे ? भगवान् उत्तर आपे छे-प्रथम आरीसो तो जुए छे ज, कारण के स्फुटरूपवाळा आरीसाने ते यथार्थपणे जाणे छे पण आत्माने-पोताना शरीरने जोतो नथी, कारण के तेनो त्यां अभाव छे पोतानु शरीर पोताने विषे रहेलु छे, आरीसामां रहेलु नथी, तो आरीसामां पोताना शरीरने केम जुए ? प्रतिभाग-पोताना शरीरनु प्रतिबिम्ब जुए छे, हवे प्रतिबिम्ब केवा प्रकारनु छे ? उत्तर—छाया पुद्गलरूप छे, ते आ प्रमाणे-सर्व प्रकारनी इन्द्रियगम्य स्थूल वस्तु चय अने अपचय स्वभाववाळी अने किरणोवाळी छे किरणो ए छायापुद्गलो छे अने तेनो प्रत्यक्ष

सिद्ध छायापुद्गलो तरीके व्यवहार थाय छे, कारण के सर्वे स्थूल वस्तुओनी छाया होय छे अने ते प्रत्यक्षथी बधा प्राणीओने विदित छे. बीजुं जो स्थूल वस्तु कोइ वस्तुने अन्तरे रहेली होय के दूर होय तो तेना किरणो आरीसा वगेरेमां पडतां नथी, तेथी ते वस्तु तेमां देखाती नथी. माटे जणाय छे के छायापुद्गलो छे. ते छायापुद्गलो ते ते सामग्रीना वशथी विचित्र परिणाम पामवाना स्वभाववाळा होय छे. ते आ प्रमाणे-ते छायापुद्गलो दिवसे अभास्वर-(अन्यने प्रकाशित नहि करनार) वस्तुमां पडेला होय तो स्वसंबन्धी द्रव्यनी आकृतिने धारण करतां श्यामरूपे (कइक कृष्णरूपे) परिणत थाय छे अने रात्रे कृष्णरूपे परिणत थाय छे, आ वात दिवसे सूर्यना किरणो प्रसरे छे त्यारे अने रात्रिए चन्द्रना प्रकाशमां प्रत्यक्ष सिद्ध छे. ते छाया परमाणुओ आदर्शादि भास्वर द्रव्योमां प्रतिबिम्बत थयेला स्वसंबन्धी द्रव्यना आकारने धारण करता स्वसंबन्धी द्रव्यमां कृष्ण, नील, शुक्ल के पीत जेवा प्रकारनो वर्ण होय ते रूपे परिणमे छे अने तेओनी आरीसा वगेरेमां उपलब्धि थाय छे, ए पण आरीसा वगेरेमां प्रत्यक्षथी सिद्ध छे, तेथी प्रस्तुत सूत्रमां पण जे मनुष्योना छायापरमाणुओ आरीसामां संक्रमीने पोताना शरीरना वर्णरूपे अने पोताना शरीरना आकाररूपे परिणमे छे ते पुद्गलोनी तेमां उपलब्धि थाय छे अने ते पुद्गलो प्रतिबिम्ब शब्दवाच्य छे, माटे कह्युं छे के 'शरीरने जोतो नथी, पण प्रतिबिंबने जुए छे. आ बधुं स्वमतिकल्पित नथी, कारण के आगममां कह्यं छे—

"सामा उ दिया छाया अभासुरगता निसि तु कालाभा। सा चेव भासुरगया सदेहवन्ना मुणेयव्वा ॥
जे आदरिसस्सन्तो देहावयवा हवंति संकंता। तेसिं तत्थुवलंभो पगासजोगा न इयरेसिं" ॥

अभास्वर पदार्थमां पडेली छाया दिवसे श्याम अने रात्रीए काळी होय छे, अने भास्वर पदार्थमां पडेली छाया पोताना शरीरना वर्ण जेवी जाणवी. जे आरीसामां शरीरना अवयवो संक्रान्त थाय छे तेओनी प्रकाशयोगथी उपलब्धि (प्रत्यक्ष) थाय छे, बीजानी थती नथी. ए संबन्धी मूलटीकाकार पण कहे छे—"यस्मात्सर्वमेव हि ऐन्द्रियकं स्थूलं द्रव्यं चयापचयधर्मकं रश्मिवच्च भवति, यतश्चादर्शादिषु छाया स्थूलस्य दृश्यते अवगाढरश्मिनः, ततः स्थूलद्रव्यस्य कस्यचिद्दर्शनं भवति, नचान्तरितं दृश्यते किंचिद् अतिदूरस्थं वा"। कारण

२०. कंबलसाडए णं भंते ! आवेढितपरिवेढिते समाणे जावतियं उवासंतरं फुसित्ता णं चिट्ठति विरल्लिएवि समाणे तावइय चेव उवासंतरं फुसित्ता णं चिट्ठति ? हंता गोयमा ! कंबलसाडए णं आवेढिअपरिवेढिते समाणे जावतियं त चेव । थूणा णं भंते ! उड्ढं ऊसिया समाणी जावइयं खेत्तं ओगाहइत्ता णं चिट्ठति, तिरियंपि य णं

२० हे भगवन् ! कंबलरूप शाटक-वस्त्र आवेष्टित परिवेष्टित-संकेलेलुं होय अने ते जेटला अवकाशान्तरने-आकाशप्रदेशोने स्पर्शीने रहे छे ते जो विस्तृत कर्युं होय तो तेटलाज आकाशप्रदेशोने स्पर्शीने रहे ? हे गौतम ! 'अवश्य कंबलरूप शाटक संकेलेलुं होय तो ते जेटला'-इत्यादि तेमज कहेवुं. हे भगवन् ! स्थूणा-स्तंभ उंची उभी करी होय तो जेटला क्षेत्रने अवगाहीने-स्पर्शीने रहे छे, जो

के पण इन्द्रियगम्य स्थूल द्रव्यो चय अने अपचयधर्मवाळां अने किरणोवाळां होय छे जेथी आरीसा वगेरेमां जेम किरणो पडेला छे तेथी स्थूल वस्तुनी छाया देखाय छे, तेथी कोइपण स्थूल द्रव्यनुं दर्शन थाय छे, परन्तु ते कोइने अन्तरे न रहेली होय अथवा अतिदूर न होय ए माटे 'पलिभाग' प्रतिभाग- प्रतिबिंबने जुए छे ए प्रमाणे असि, मणि इत्यादि विषयक छ सूत्रो जाणवा सूत्रपाठ पण आ प्रमाणे—"असिने देखतो कोइ मनुष्य असिने देखे छे, पोताने देखे छे के प्रतिबिंबने देखे छे"? इत्यादि, हे गौतम ! असि देखे छे, पोताने देखातो नथी अने प्रतिबिंबने देखे छे इत्यादि

२० 'अहीं निर्जराना पुद्गलो छद्मस्थोने इन्द्रियगम्य थता नथी, कारण के ते अतीन्द्रिय छे' एम कह्युं, तेथी अतीन्द्रियना प्रसंगथी आ पण अतीन्द्रिय विषयक प्रश्न करे छे—'हे भगवन् कम्बलशाटक'—कम्बलरूप शाटक-कम्बलशाटक'—एवी व्युत्पत्ति थाय छे कम्बलरूप वस्त्र आवेष्टित-परिवेष्टित-अत्यत संकेलेलुं जेटला अवकाशान्तर-आकाशना प्रदेशोने स्पर्शीने-अवगाहीने रहे, तेने विरल्लित-विस्तृत कर्युं होय तो पण ते तेटला अवकाशान्तर-आकाशप्रदेशोने स्पर्शीने रहे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! अवश्य रहे,

आयता समाणी तावइयं चेव खेत्तं ओगाहइत्ता णं चिट्ठति । हंता गोयमा! थूणा णं उड्ढं ऊसिया तं चेव चिट्ठति।

२१. आगासथिग्गले णं भंते ! किंणा फुडे, कइहिं वा काएहिं फुडे ? किं धम्मत्थिकाएणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे ? एवं अधम्मत्थिकाएणं, आगासत्थिकाएणं एएणं भेदेणं जाव

तीरछी लांबी करी होय तो पण तेटलाज क्षेत्रने स्पर्शीने रहे ? हे गौतम! 'अवश्य स्थूणा उंची उभी करी होय तो' इत्यादि तेमज [स्पर्शीने] रहे छे.

२१. हे भगवन्! आकाशथिग्गल–लोक कोनाथी स्पर्श करायेलो छे? केटला काय वडे स्पर्श करायेलो छे? शुं धर्मास्तिकाय वडे स्पर्श करायेलो छे? धर्मास्तिकायना देश वडे स्पर्श करायेलो छे? धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्श करायेलो छे? एम अधर्मा-

अहिं 'हन्त' ए अवधारण–निश्चयार्थक छे एटले ए प्रमाणेज छे, अहीं संक्षेपार्थ आ छे–कम्बलशाटक संकेलेलुं होय अने ते जेटला आकाशप्रदेशोने अवगाहीने रहे, तेनो विस्तार कर्यो होय तो पण ते तेटला आकाशप्रदेशोने अवगाहीने रहे छे. केवळ घन अने प्रतररूपे भेद छे. प्रदेशनी संख्या बन्ने स्थळे तुल्य छे. आ अर्थ नेत्रपटने आश्रयी अन्य स्थळे पण कहेलो छे–जेम मोटा प्रमाणवाळो नेत्रपट आकाशप्रदेशोमां संकुचित कर्यो होय अने पहोळो होय तो पण तेटलाज आकाशप्रदेशोने स्पर्शे छे. ए प्रमाणे स्थूणासूत्रनो पण विचार करवो.

२१. 'आगासथिग्गले णं भंते'! इत्यादि. आकाश थिग्गल–आकाशरूपी पटमां थिग्गल–थीगडा समान लोक कहेवाय छे. कारण के ते विस्तृत पटना जेवा मोटा बाह्य आकाशना थिग्गल–थीगडाना जेवो लागे छे. हे भगवन्! ते आकाशथिग्गल कोनाथी स्पृष्ट—स्पर्श करायेलो–व्याप्त करायेलो छे? आ सामान्यरूपे प्रश्न कर्यो छे, हवे विशेषरूपे प्रश्न करे छे—केटला कायो वडे स्पर्शायेलो छे?

पुढविकाएणं फुडे, जाव तसकाएणं, अद्धासमएणं फुडे ? गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं फुडे, नो धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एव अधम्मत्थिकाएणवि, नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे, आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं जाव वणस्सइकाएणं फुडे, तसकाएणं सिय फुडे, सिय नो फुडे, अद्धासमएणं देसे फुडे, देसे णो फुडे । जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे किंणा फुडे? कइहिं वा काएहिं फुडे ? किं धम्मत्थिकाएणं

स्तिकाय वडे, आकाशास्तिकाय वडे–एम ए प्रकारे यावत् पृथिवीकाय वडे, यावत् त्रसकाय वडे के अद्धासमय वडे स्पर्श करायेल छे ? हे गौतम ! धर्मास्तिकाय वडे स्पर्श करायेल छे, पण धर्मास्तिकायना देश वडे स्पर्श करायेल नथी. धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्श करायेल छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय वडे पण स्पर्श करायेलो छे. आकाशास्तिकाय वडे स्पर्श करायेल नथी, पण आकाशास्तिकायना देश वडे स्पर्श करायेलो छे, आकाशास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्श करायेल छे. यावत् वनस्पतिकाय वडे कदाचित् स्पर्श करायेलो छे.

अहीं 'वा' शब्द प्रकारान्तरनो सूचक छे, अने ते प्रकारान्तर सामान्यथी विशेषरूप छे तेथी प्रत्येक काय संबन्धे विशेषरूपे पूछे छे— 'किं धम्मत्थिकाएण फुडे'–शुं धर्मास्तिकायथी स्पृष्ट छे–इत्यादि सुगम छे भगवान् कहे छे—हे गौतम ! धर्मास्तिकाय वडे स्पर्श करायेलो छे, कारण के लोकमां धर्मास्तिकाय रहेलो छे, आ ज हेतुथी धर्मास्तिकायना देशथी स्पर्श करायेलो नथी, कारण के जे जेनाथी सर्वकरे व्याप्त छे ते तेना ज देशवडे व्याप्त नथी, कारण के विरोध छे पण तेना प्रदेशो वडे व्याप्त छे कारण के तेमा बधा धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला छे ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना विषयमा पण उत्तर कहेवो तथा संपूर्ण आकाशास्तिकाय द्रव्य वडे स्पर्श करायेलो नथी कारण के लोक आकाशास्तिकायनो देशमात्र–अंशमात्र छे, परन्तु तेना देशवडे अने प्रदेशो वडे व्याप्त छे. पृथिवीकायादि पण सूक्ष्म सकललोक व्यापी होय छे माटे ते वडे पण लोक सर्वकरे व्याप्त थयेलो छे. 'तसकाएण सिय फुडे'–त्रसकाय वडे

जाव आगासत्थिकाएणं फुडे ? गोयमा! णो धम्मत्थिकाएणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थिकायस्सवि आगासत्थिकायस्सवि, पुढविकाइएणं फुडे, जाव वणस्सइकाएणं फुडे, तसकाइएणं सिय फुडे सिय णो फुडे, अद्धासमएणं फुडे। एवं लवणसमुद्दे, धायतिसंडे दीवे, कालोए समुद्दे, अब्भिंतरपुक्खरद्धे। बाहिरपुक्खरद्धे एवं चेव, णवरं अद्धासमएणं नो फुडे। एवं जाव सयंभूरमणसमुद्दे। एसा परिवा-

अने अद्धासमय वडे तेना एक देशमां स्पर्श करायेल छे अने एक देशमां स्पर्श करायेलो नथी. हे भगवन्! जंबूद्वीप नामे द्वीप कोनाथी स्पर्श करायेलो छे? केटला काय वडे स्पर्श करायेलो छे? शुं धर्मास्तिकायथी यावत्-आकाशास्तिकायथी स्पर्श करायेलो छे? हे गौतम! धर्मास्तिकाय वडे स्पर्श करायेलो नथी, परन्तु धर्मास्तिकायना देश वडे अने धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्श करायेलो छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय संबंधे पण जाणवुं. पृथिवीकाय यावत् वनस्पतिकाय वडे स्पर्श करायेल छे, त्रसकाय वडे क्वचित् स्पर्श करायेल छे अने क्यांइक स्पर्श करायेल नथी. अद्धा समय वडे स्पर्श करायेलो छे. ए प्रमाणे लवण समुद्र, धातकिखंड द्वीप, कालोद समुद्र अने अभ्यन्तर पुष्करार्ध संबंधे जाणवुं. बहारना पुष्करार्ध संबन्धे एमज जाणवुं. परन्तु ते अद्धासमय

कदाचित् स्पर्श करायेलो छे, ज्यारे समुद्घातने प्राप्त थयेला केवलज्ञानी चोथा समयमां होय छे त्यारे ते पोताना प्रदेशो वडे सर्व लोकने व्याप्त करे छे माटे त्रसकायवडे स्पर्श करायेलो छे, कारण के केवली त्रसकाय छे. बाकीना काळे स्पर्श करायेलो होतो नथी. कारण के लोकमां बधे स्थळे त्रसकाय होता नथी. ए प्रमाणे जंबूद्वीपादि संबन्धे पण सूत्रो जाणवा. परन्तु बहारना पुष्करार्ध द्वीपना विचारमां 'अद्धासमएणं नो फुडे'-ते अद्धासमय वडे स्पर्श करायेलो नथी. अद्धासमय (काळ) अढी द्वीप समुद्रमां छे, बहार नथी.

डी इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वा, तंजहा—"जंबुद्दीवे लवणे धायति कालोय पुक्खरे वरुणे । खीरघयखोयणंदि य अरुणवरे कुण्डले रुयते ॥१॥ आभरणवत्थगंधे उप्पलतिलए य पउमनिहिरयणे । वासहरदहनईओ विजया वक्खारकप्पिंदा ॥२॥ कुरु मंदर आवासा कूडा नक्खत्तचंदसूरा य । देवे णागे जक्खे भूए य सयंभुरमणे य ॥३॥ एवं जहा बाहिरपुक्खरद्धे भणिए तहा जाव सयंभूरमणसमुद्दे जाव अद्धासमएणं नो फुडे ।

वडे स्पर्श करायेलो नथी. ए प्रमाणे स्वयंभूरमण समुद्र सुधी जाणवुं. आ द्वीपसमुद्रनो अनुक्रम आ गाथाओ वडे जाणवो. ते आ प्रमाणे—"जंबूद्वीप, लवण, धातकि, कालोद, पुष्करवर वरुण, क्षीर,घृत,क्षोद–इक्षु,नंदि,अरुणवर, कुंडल, रुचक (१),आभरण, वस्त्र, गन्ध, उत्पल, तिलक, पद्म, निधि, रत्न, वर्षधर पर्वतो, द्रह, नदीओ, विजयो, वक्षस्कार (पर्वतो),कल्प–देवलोक, इन्द्रो (२) कुरु, मन्दर अवास, कूट, नक्षत्र, चन्द्र अने सूर्य (ए बधाना नामे द्वीप अने समुद्रो छे.) देव, नाग, यक्ष, भूत अने स्वयंभूरमण समुद्र ३ [ए पांच द्वीप अने समुद्रो छेल्ला छे] ए प्रमाणे जेम बाह्य पुष्करार्ध कह्यो तेम स्वयंभूरमण समुद्र सुधी जाणवुं. यावत्–तेओ अद्धा समय वडे स्पर्श करायेला नथी.

एनो विचार धर्मसंग्रहणीनी टीकामां कर्यो छे माटे बहारना द्वीपसमुद्रोमां अद्धासमयना स्पर्शनो प्रतिषेध कर्यो 'जंबुद्दीवे लवण'–इत्यादि गाथा छे सर्व द्वीपसमुद्रोना मध्यवर्ती जंबूद्वीप छे तेने चो तरफ वींटी लवण समुद्र रहेलो छे, त्यार पछी धातकिखंड नामे द्वीप छे, ते पछी कालोद समुद्र छे त्यार बाद पुष्करवर द्वीप अने त्यार पछी द्वीपना समान नामवाळा समुद्रो छे एटले ते पछी पुष्करवर समुद्र ते पछी वरुणवरद्वीप अने वरुणवर समुद्र, क्षीरवरद्वीप, क्षीरोद समुद्र, घृतवरद्वीप, घृतोद समुद्र, इक्षुवर

द्वीप अने इक्षुवर समुद्र, नंदीश्वर द्वीप अने नन्दीश्वर समुद्र-ए आठे समुद्रो एक प्रत्ययावतार-एक एक रूपवाळा छे. अने पछीना द्वीप अने समुद्रो त्रिप्रत्ययावताररूप छे. जेम के अरुण, अरुणवर, अरुणवरावभास, कुंडल, कुंडलवर, कुंडलवरावभास, रुचक, रुचकवर अने रुचकवरावभास-इत्यादि. अहीं आ क्रम छे—नन्दीश्वर समुद्र पछी अरुणद्वीप, अरुण समुद्र. ते पछी अरुणवर द्वीप अने अरुणवर समुद्र-इत्यादि नामनो उच्चार करी केटला द्वीपसमुद्रो कही शकाय ? माटे तेना नामनो संग्रह करीने कहे छे—'आभरणवत्थ'-इत्यादि बे गाथा छे—जे कोइ आभरणना नामो होय, जेम के हार, अर्धहार, रत्नावली, कनकावली प्रमुख, जे कोइ वस्त्रना नामो चीनांशुक वगेरे होय, जे कोइ कोष्ठपुटादि गन्धना नामो होय, जलरुह, चन्द्रोद्द्योत वगेरे जे उत्पलना नामो होय, तिलक वगेरे जे वृक्षना नामो होय, शतपत्र, सहस्रपत्र, वगेरे पद्मना नामो होय, पृथिवी, रत्नप्रभा वगेरे जे पृथिवीना नामो होय, जे नव निधिना नामो, चक्रवर्तीना चौद रत्नना नामो, चुल्लहिमवंत आदि वर्षधर पर्वतादिना नामो, पद्मादि ह्रदोना नामो, गंगा सिन्धु वगेरे नदीओना नामो, कच्छादि विजयो, माल्यवंतादि वक्षस्कार पर्वतो, सौधर्मादि कल्पो, शक्र वगेरे इन्द्रो, देवकुरु, उत्तरकुरु, मन्दर, मेरुनी नजीक वगेरे शक्रादिना आवासो, चुल्लहिमवंत वगेरे पर्वतोना कूटो-शिखरो, कृत्तिकादि नक्षत्रो, चन्द्रो अने सूर्योना जे नामो छे ते बधाने त्रिप्रत्ययावतार करीने कहेवा. जेम के हारद्वीप, हारसमुद्र, हारवर द्वीप, हारवर समुद्र, हारवरावभास द्वीप, हारवरावभास समुद्र-इत्यादिरूपे त्रिप्रत्ययावतार त्यां सुधी कहेवा यावत् सूर्य द्वीप, सूर्य समुद्र, सूर्यवर द्वीप अने सूर्यवर समुद्र सूर्यवरावभास द्वीप, अने सूर्यवरावभास समुद्र छे. जीवाभिगमनी चूर्णिमां कह्युं छे के-"अरुणाई दीवसमुद्दा तिपडोयारा यावत् सूर्यवरावभासः समुद्रः"। अरुणादि द्वीपसमुद्रो त्रिप्रत्ययावतारवाळा यावत्-'सूर्यवरावभास' समुद्र छे त्यां सुधी करवा. त्यार पछी सूर्यवरावभास समुद्रने चो तरफ वींटी देवद्वीप रहेलो छे, पछी देवसमुद्र, पछी नागद्वीप अने नागसमुद्र. ते पछी यक्षद्वीप अने यक्षसमुद्र, ते पछी भूतद्वीप अने भूत समुद्र अने स्वयंभूरमण द्वीप अने स्वयंभूरमण समुद्र छे. ए पांचे देवादि द्वीपो अने देवादि समुद्रो एकरूपवाळा छे, तेओनो प्रत्ययावतार थतो नथी. जीवाभिगमनी चूर्णिमां कह्युं छे के "एते पञ्च द्वीपाः पञ्च समुद्रा एकप्रकारा" इति. ए पांचे द्वीपो अने पांचे समुद्रो

२२. लोगे णं भंते ! किंणा फुडे ? कइहिं वा काएहिं ? जहा आगासथिग्गले । अलोए णं भंते ! किंणा फुडे, कतिहिं वा काएहिं पुच्छा । गोयमा ! नो धम्मत्थिकाएणं फुडे, जाव नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे, नो पुढविकाइएणं फुडे, जाव नो अद्धासमएणं फुडे । एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणं-

---

२२. हे भगवन् ! लोक कोनाथी स्पर्श करायेलो छे ? केटला काय वडे स्पर्श करायेलो छे' इत्यादि आकाशथिग्गलनी जेम जाणवुं. हे भगवन् ! अलोक कोनाथी स्पर्श करायेलो छे ? केटला काय वडे स्पर्श करायेलो छे' इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! धर्मास्तिकायथी स्पर्श करायेलो नथी, यावत् आकाशास्तिकायथी स्पर्श करायेलो नथी, आकाशास्तिकायना देशथी स्पर्श करायेलो छे. पृथिवीकायथी स्पर्श करायेलो नथी, यावत् अद्धासमयथी स्पर्श करायेलो नथी. ते एक अजीवद्रव्यनो देश-भाग छे, अनन्त अगुरुलघु गुणो

एक प्रकारना छे. जीवाभिगम सूत्रमां पण कह्युं छे—देव, नाग, यक्ष, भूत अने स्वयंभूरमण ए एक एक कहेवो, कारण के तेओने भिन्नत्वयावतार थतो नथी

२२. पूर्वे आकाशथिग्गलशब्द वडे लोकसंबन्धी [illegible] कर्यो हतो, हवे लोकशब्द वडे ज लोक संबन्धे प्रश्न करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'लोएणं भंते ! किंणा फुडे'-हे भगवन् ! लोक कोनाथी स्पर्श करायेलो छे-इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे अलोकसूत्र पण पाठसिद्ध छे, परन्तु अलोक ए एक अजीवद्रव्यनो देश छे-एटले आकाशास्तिकायनो देश छे पण संपूर्ण आकाशास्तिकाय नथी, कारण के ते लोकाकाश वडे हीन छे आज कारणथी ते अगुरुलघुरूप छे कारण के अमूर्त छे अनन्त अगुरुलघुगुणो वडे संयुक्त छे, कारण के प्रत्येक प्रदेशे स्व अने पर भेदवडे भिन्न अनन्त अगुरुलघुपर्यायो होय छे अलोकनुं केटलुं प्रमाण छे ? ए माटे सूत्रकार

तेहिं अगुरुलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासअणंतभागूणे ।

पन्नवणाए भगवईए पन्नरसस्स इंदियपयस्स पढमो उद्देसो समत्तो ।

वडे संयुक्त छे अने सर्व आकाशथी अनन्तमो भाग न्यून छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां पंदरमा इन्द्रियपदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

कहे छे— अनन्तमाभाग न्यून सर्व आकाशरूप छे-एटले लोकाकाशना खंडरहित सर्व आकाशप्रमाण छे.

श्रीमदाचार्य मलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां पंदरमा इन्द्रियपदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

बीओ उद्देसो.

इंदियउवचय १ णिव्वत्तणा २ य समया भवे असंखेज्जा ३। लद्धी ४ उवओगद्धं ५ अप्पाबहुए विसेसाहिया ६॥
ओगाहणा ७ अवाए ८ ईहा ९ तह वंजणोग्गहे १० चेव। दव्विंदिय ११ भाविंदिय १२ तीया बद्धा पुरक्खडिया॥

द्वितीय उद्देशक

१ इन्द्रियोपचय, २ निर्वर्तना (इन्द्रियोनी उत्पत्ति), ३ निर्वर्तनाना असंख्याता समयो, ४ लब्धि, ५ उपयोगाद्धा-उपयोगनो काळ, ६ अल्पबहुत्वमां विशेषाधिक उपयोगनो काळ, ७ अवग्रह, ८ अपाय, ९ ईहा, १० व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह, ११-१२ अतीत, बद्ध अने पुरस्कृत द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय-ए अधिकारो बीजा उद्देशकमां छे.

प्रथम उद्देशकनी व्याख्या करी, हवे बीजा उद्देशकनो प्रारंभ कराय छे, तेना प्रारंभमां अर्थाधिकारनो संग्रह करनारी आ बे गाथाओ छे-प्रथम इन्द्रियोनो उपचय कहेवानो छे 'उपचीयते इन्द्रियमनेनेत्युपचयः' जे वडे इन्द्रिय उपचयने प्राप्त थाय ते उपचय-इन्द्रिय योग्य पुद्गलोनो संग्रह करवानी शक्ति, इन्द्रियपर्याप्ति २ त्यार पछी निर्वर्तना कहेवानी छे, निर्वर्तना-बाह्य अने अभ्यन्तर रूप निर्वृत्ति-आकारमात्रनी उत्पत्ति ३ त्यार बाद निर्वर्तना-इन्द्रियनी उत्पत्ति केटला समये थाय छे?' ए प्रश्नमां 'असंख्याता समये थाय छे' ए उत्तर कहेवो जोइए ४ त्यार पछी इन्द्रियावरणना क्षयोपशमरूप इन्द्रियोनी लब्धि कहेवी जोइए ५ त्यार बाद उपयोगाद्धा-इन्द्रियना उपयोगनो काळ कहेवो जोइए ६ त्यार पछी अल्पबहुत्वना विचारमां पूर्व पूर्वनी इन्द्रियोना उपयोगकाळ करतां उत्तरोत्तर इन्द्रियनो उपयोगकाळ विशेषाधिक छे ते कहेवुं जोइए ७ त्यार पछी अवग्रह-ज्ञान कहेवुं जोइए अने ते अपायादिना भेदथी अनेक प्रकारे छे. माटे ८ त्यार पछी अपाय कहेवो जोइए. ९ त्यार पछी ईहा, १० त्यार पछी व्यञ्जनावग्रह, 'च' शब्द नहि कहेला अर्थनो समुच्चय

२३. कतिविहे णं भंते ! इंदियउवचए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियउवचए पन्नत्ते । तंजहा–सोतिंदिय उवचते, चक्खिंदियउवचते, घाणिंदियउवचते, जिब्भिन्दियउवचते, फासिन्दियउवचते । नेरइयाणं भंते ! कतिविहे इन्दिओवचए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इन्दिओवचए पन्नत्ते, तंजहा–सोतिन्दियउवचए, जाव फासिन्दियउवचए, एवं जाव वेमाणियाणं । जस्स जइ इन्दिया तस्स ततिविहो चेव इंन्दियउवचओ भाणियव्वो १। कतिविहा णं भंते ! इन्दियनिव्वत्तणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियनिव्वत्तणा पन्नत्ता, तंजहा–सोतिन्दियनिव्वत्तणा, जाव फासिन्दियनिव्वत्तणा । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इन्दिया

२३. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो इन्द्रियोपचय छे. ते आ प्रमाणे–१ श्रोत्रेन्द्रियोपचय, २ चक्षुइन्द्रियोपचय, ३ घ्राणेन्द्रियोपचय, ४ जिह्वेन्द्रियोपचय अने ५ स्पर्शनेन्द्रियोपचय. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय कह्यो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो इन्द्रियोपचय कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–श्रोत्रेन्द्रियोपचय, यावत् स्पर्शनेन्द्रियोपचय.ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. जेने जेटली इन्द्रियो तेने तेटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय कहेवो. हे भगवन् ! इन्द्रियनिर्वर्तना–इन्द्रियनी उत्पत्ति केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! इन्द्रिनिवर्तना पांच प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे–श्रोत्रेन्द्रियनिर्वर्तना यावत् स्पर्शेन्द्रियनिर्वर्तना. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनी

करनार होवाथी अर्थावग्रह पण कहेवो जोइए. ११ त्यार बाद अतीत, बद्ध अने पुरस्कृत द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रियनो विचार करवानो छे.

२३–२४. तेमां 'यथोद्देशं निर्देशः' उद्देश प्रमाणे निर्देश होय छे, माटे प्रथम इन्द्रियोपचय सूत्र कहे छे–'कइविहेणं भंते इंदियउव-

अत्थि २। सोतिन्दियणिव्वत्तणा णं भंते कइसमइया पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखिज्जइसमया अंतोमुहुत्तिया पन्नत्ता, एवं जाव फासिन्दियनिव्वत्तणा। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ३। कइविहा णं भंते ! इन्दियलद्धी पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियलद्धी पन्नत्ता, तंजहा-सोतिन्दियलद्धी, जाव फासिन्दियलद्धी। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इन्दिया अत्थि, तस्स तावइया भाणियव्वा ४। कतिविहा णं भंते ! इन्दियउवओगद्धा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियउवओगद्धा पन्नत्ता, तंजहा-सोतिन्दियउवओगद्धा, जाव फासिन्दियउवओगद्धा। एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इन्दिया अत्थि।

इन्द्रियनिर्वर्तना कहेवी. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनी निर्वर्तना (उत्पत्ति) केटला समयनी छे ? हे गौतम ! असंख्याता समयना अन्तर्मुहूर्तनी छे. ए प्रमाणे स्पर्शनेन्द्रियनिर्वर्तना सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी इन्द्रियलब्धि छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनी इन्द्रियलब्धि छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियलब्धि यावत् स्पर्शनेन्द्रियलब्धि. एम नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणवु. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनी इन्द्रियलब्धि कहेवी. हे भगवन् ! इन्द्रियोपयोगाद्धा-इन्द्रियना उपयोगनो काळ केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रिय उपयोगाद्धा यावत् स्पर्शनेन्द्रिय उपयोगाद्धा. ए प्रमाणे नैरयिको, यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रका-

---

चय पन्नत्ते ?" हे भगवन् ! केटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय छे ?" इत्यादि सुगम छे, परन्तु जे नैरयिकादिने जेटली इन्द्रियोनो संभव होय तेने तेटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय कहेवो तेमा नैरयिकोथी मांडी स्तनितकुमार सुधी पांच प्रकारनो इन्द्रियोपचय होय छे पृथिवी,

२४. एतेसि णं भंते ! सोतिन्दियचक्खिन्दियघाणिन्दियजिब्भिन्दियफासिन्दियाणं जहण्णयाए उवओगद्धाए उक्कोसियाए उवओगद्धाए जहन्नुक्कोसियाए उवओगद्धाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा० ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चक्खिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा, सोतिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, उक्कोसियाए उवओगद्धाए—सव्वत्थोवा चक्खिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा, सोतिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा वि-

---

रनो इन्द्रियोपयोगाद्धा समजवो.

२४. हे भगवन् ! ए श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय, अने स्पर्शनेन्द्रियोना जघन्य उपयोगाद्धामां उत्कृष्ट उपयोगाद्धामां अने जघन्य-उत्कृष्ट उपयोगाद्धामां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम सौथी थोडो चक्षुइन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा-उपयोग काळ छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी घ्राणेन्द्रियोनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी जिह्वेन्द्रिनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, उत्कृष्ट उपयोगाद्धामां—सौथी थोडो चक्षुइन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशे-

---

पाणी, तेज, वायु अने वनस्पतिओने एक प्रकारनो, बे इन्द्रियोने बे प्रकारनो, तेइन्द्रियोने त्रण प्रकारनो, चउरिन्द्रियोने चार प्रकारनो अने तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने पांच प्रकारनो इन्द्रियोपचय होय छे. एम आवा प्रकारनो छे—

सेसाहिया, जिब्भिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिन्दियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जहण्णउक्कोसियाए उवओगद्धाए–सव्वत्थोवा चक्खिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा, सोतिन्दियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्दियस्स जहन्निया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिन्दियस्स जहन्निया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स जहन्निया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स जहण्णियाहिंतो उवओगद्धाहिंतो चक्खिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, सोतिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स उक्कोसिया

पाधिक छे, तेथी घ्राणेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी जिह्वेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे अने तेथी स्पर्शनेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे. जघन्य उत्कृष्ट उपयोगाद्धामां–सौथी थोडो चक्षुरन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी घ्राणेन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे,तेथी जिह्वेन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियनो जघन्य उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे. स्पर्शनेन्द्रियना जघन्य उपयोगाद्धाथी चक्षुइन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी घ्राणेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे. तेथी जिह्वेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशेषाधिक छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियनो उत्कृष्ट उपयोगाद्धा विशे-

---

स्पर्शन, रसन, घ्राण चक्षु अने श्रोत्रेन्द्रिय ए प्रमाणे इन्द्रिय निर्वर्तना वगेरे सबन्धे सूत्रो जाणवा कारण के प्राय सुगम छे. परन्तु इन्द्रियोपयोगाद्धा–जेटला काळ सुधी इन्द्रियो वडे उपयोगवाळो होय तेटला काळनो इन्द्रियोपयोगाद्धा कहेवाय छे

उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया ।

२५. कतिविहा णं भंते ! इंदियओगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदियओगाहणा पन्नत्ता, तंजहा—सोतिंदियओगाहणा, जाव फासिंदियओगाहणा, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि ६।

२६. कतिविधे णं भंते ! इंदियअवाए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे इंदियअवाए पन्नत्ते, तंजहा—सोतिंदियअवाए, जाव फासिंदियअवाए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि । कतिविहा णं

पाधिक छे.

२५. हे भगवन् ! केटला प्रकारे इन्द्रियावग्रहणा—इन्द्रियो वडे अवग्रह—ज्ञान थाय छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे इन्द्रियावग्रह छे. ते आ प्रमाणे—श्रोत्रेन्द्रियावग्रह, यावत् स्पर्शनेन्द्रियावग्रह. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनो इन्द्रियावग्रह कहेवो.

२६. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो इन्द्रियापाय कहेलो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो इन्द्रियापाय कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—श्रोत्रेन्द्रियापाय, यावत्—स्पर्शनेन्द्रियापाय. ए प्रमाणे नैरयिको यावत् वैमानिकोने जाणवुं, परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला

---

२५. 'कतिविहा णं भंते! ओगाहणा पन्नत्ता' हे भगवन्! केटला प्रकारनो इन्द्रियावग्रह छे इत्यादि. इन्द्रियो वडे अवग्रह—ज्ञान थाय ते इन्द्रियावग्रह कहेवाय छे.

२६-२७. इन्द्रियावग्रह संबन्धे सामान्यरूपे प्रश्न कर्यो हतो, परन्तु सामान्य विशेषने आश्रित होय छे माटे अपायादि विशेष संबन्धे

भंते ! ईहा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा ईहा पन्नत्ता, तंजहा-सोतिंदियईहा, जाव फासिंदियईहा । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इंदिया ८ । कतिविधे णं भंते ! उग्गहे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पन्नत्ते, तंजहा-अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य । वंजणोग्गहे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउव्विधे पन्नत्ते, तंजहा-सोतिंदियवंजणोग्गहे, घाणिंदियवंजणोग्गहे, जिब्भिंदियवंजणोग्गहे, फासिंदियवंजणोग्गहे । अत्थोग्गहे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-सोतिंदियअत्थोग्गहे, चक्खिंदियअत्थोग्गहे, घाणिंदिय-

---

प्रकारनो अपाय जाणवो. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी ईहा छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनी ईहा छे, ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रिय ईहा, यावत् स्पर्शनेन्द्रिय ईहा. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनी ईहा जाणवी. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो अवग्रह छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो अवग्रह छे. ते आ प्रमाणे-अर्थावग्रह अने व्यंजनावग्रह. हे भगवन् ! व्यंजनावग्रह केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! व्यंजनावग्रह चार प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रह, ३ जिह्वेन्द्रियव्यंजनावग्रह, ४ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रह. हे भगवन् ! अर्थावग्रह केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम !

सूत्रो कहे छे—'कतिविहे णं भंते ! इंदियअवाए पन्नत्ते ?' हे भगवन् ! इन्द्रियापाय केटला प्रकारनो कह्यो छे ? इत्यादि तेमां अवग्रहरूप ज्ञान वडे अवगृहीत-सामान्यरूपे जाणेला अने ईहा ज्ञान वडे ईहित-विचारेल अर्थनो निर्णयरूप जे अध्यवसाय ते अपाय 'आ शंखनो ज शब्द छे, अथवा रणशींगडानो ज छे' इत्यादिरूप निश्चयात्मक बोध ते अपाय 'ईहा' इति ईह् धातु चेष्टा अर्थमां छे सद्भूत अर्थनी विचारणारूप चेष्टा ते ईहा तात्पर्य ए छे के अवग्रह पछी अने अपायनी पूर्वे सद्भूत अर्थविशेषने ग्रहण करवा

अत्थोग्गहे, जिब्भिंदियअत्थोग्गहे, फासिंदिअत्थोग्गहे, नोइंदियअत्थोग्गहे ।

२७. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पन्नत्ते, तंजहा–अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य । एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! कतिविधे उग्गहे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविधे उग्गहे पन्नत्ते–अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य । पुढविकाइयाणं भंते ! वंजणोग्गहे कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! एगे फासिंदियवंजणोग्गहे पन्नत्ते । पुढविकाइयाणं भंते ! कतिविधे अत्थोग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगे

अर्थावग्रह छ प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह, २ चक्षुइन्द्रिय अर्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह, ४ जिह्वेन्द्रिय अर्थावग्रह, ५ स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह अने ६ नोइन्द्रियअर्थावग्रह.

२७. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनो अवग्रह कह्यो छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–अर्थावग्रह अने व्यंजनावग्रह. ए प्रमाणे असुरकुमारोथी मांडी स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटला प्रकारनो अवग्रह छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे–अर्थावग्रह अने व्यञ्जनावग्रह. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने व्यंजनावग्रह केटला प्रकारनो

तरफ अने असद्भूत अर्थ विशेषनो त्याग करवा अभिमुख, प्रायः अहीं शंख वगेरेना मधुरत्वादि शब्दधर्मो जणाय छे अने रणशींगडा वगेरेना कर्कश निष्ठुरत्वादि शब्दधर्मो जणाता नथी, आवा प्रकारनी मतिविशेष ते ईहा. भाष्यकार कहे छे—" भूयाभूयविसेसादाणच्चायाभिमुहमीहा "–सद्भूत अर्थने ग्रहण करवा अने असद्भूत अर्थने त्याग करवा अभिमुख बोध विशेष ते ईहा. 'दुविहे ओग्गहे पन्नत्ते'–बे प्रकारनो अवग्रह छे–अर्थावग्रह अने व्यंजनावग्रह. तेमां अर्थनो अव–अपकृष्ट ग्रह–ज्ञान एटले जेनो निर्देश न करी

फासिंदियअत्थोग्गहे पन्नत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । एवं बेइंदियाणवि, नवरं बेइंदियाणं वंजणोग्गहे दुविहे पन्नत्ते, अत्थोग्गहे दुविहे पन्नत्ते, एवं तेइंदियचउरिंदियाणवि, णवर इंदियपरिवुड्ढी कायव्वा । चउरिंदियाण वंजणोग्गहे तिविधे पन्नत्ते, अत्थोग्गहे चउव्विधे पन्नत्ते, सेसाण जहा नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ९–१०।

छे? हे गौतम ! एक स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावग्रह छे.हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटला प्रकारनो अर्थावग्रह छे? हे गौतम ! एक स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह छे. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवु. ए प्रमाणे बेइन्द्रियोने पण समजवुं. परन्तु बेइन्द्रियोने व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह बे प्रकारनो छे. एम तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने पण जाणवुं, परन्तु इन्द्रियोनी वृद्धि करवी. चउरिन्द्रियोने व्यंजनावग्रह त्रण प्रकारनो अने अर्थावग्रह चार प्रकारनो छे. बाकीनाने वैमानिको सुधी नैरयिकोनी पेठे जाणवु.

शकाय तथा सामान्य रूपादि अर्थनु ग्रहण-ज्ञान ते अर्थावग्रह अहीं नन्दिसूत्रना चूर्णिकार कहे छे–" सामन्नस्स रूवाइविसेसणरहियस्स अनिद्देसस्स अवग्गहो' इति रूपादि विशेषणरहित एटले आ रूप छे, गन्ध छे, शब्द छे के स्पर्श छे इत्यादि नामजात्यादिनी कल्पना रहित, जेनो निर्देश न करी शकाय तथा सामान्य अर्थनु ग्रहण ते अवग्रह 'व्यज्यते अनेन अर्थः' जेम प्रदीप वडे घट प्रगट कराय तेम जे वडे अर्थ प्रगट कराय ते व्यंजन एटले उपकरण इन्द्रिय अने शब्दादिरूपे परिणत थयेला द्रव्योनो परस्पर सम्बन्ध जाणवो कारण के सम्बन्ध थयाथी ज श्रोत्र वगेरे इन्द्रियो वडे ते ते अर्थ प्रगट करी शकाय छे, ते सिवाय नहि, माटे इन्द्रिय अने शब्दादि अर्थनो सम्बन्ध व्यंजन समजवो आ सम्बन्धे भाष्यकार कहे छे के " वजिज्जइ जेणत्थो घडुव्व दीवेण वंजण त च । उवगरणिंदियसद्दाइपरिणयद्व्वसंबन्धो ॥" जेम दीवा वडे घट प्रगट कराय तेम जे वडे अर्थ 'व्यज्यते' प्रगट कराय ते व्यंजन अने ते उपकरणेन्द्रिय अने शब्दादि परिणामवाळा द्रव्यनो संबन्ध जाणवो ते व्यंजन-संबन्ध वडे सम्बन्धने प्राप्त थयेला शब्दादिरूप अर्थनु अव्यक्तरूप

ज्ञान ते व्यंजनावग्रह. अथवा 'व्यज्यन्ते' जे प्रगट कराय ते व्यंजन-उपकरणेन्द्रियने प्राप्त थयेला शब्दादिरूप परिणामवाळा द्रव्योनो अवग्रह-अव्यक्त ज्ञान ते व्यंजनावग्रह. (प्र०)-प्रथम व्यंजनावग्रह थाय छे अने त्यार पछी अर्थावग्रह थाय छे तो अहीं प्रथम अर्थावग्रह केम कह्यो छे? (उ०)—स्पष्टरूपे जणाय छे ते माटे प्रथम अर्थावग्रह कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-अर्थावग्रह स्पष्टरूपे बधा प्राणीओ वडे अनुभवाय छे. कारण के अत्यन्त शीघ्र गमनादि क्रियामां एकवार जलदीथी ज्ञान थाय छे के 'कंइक जोयुं'-अनुभव्युं पण बरोबर विचार्युं नहिं'-एवा प्रकारनो व्यवहार थाय छे. वळी अर्थावग्रह सर्व इन्द्रियो अने मनद्वारा थाय छे अने व्यंजनावग्रह एम थतो नथी, माटे प्रथम अर्थावग्रह कह्यो छे. हवे व्यंजनावग्रह पछी अर्थावग्रह थाय छे ए क्रमने आश्रयी प्रथम व्यंजनावग्रहनुं स्वरूप प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार शिष्यद्वारा प्रश्न करावे छे—'वंजणोग्गहे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते'-हे भगवन्! व्यंजनावग्रह केटला प्रकारनो छे'? इत्यादि. अहीं व्यंजन एटले 'उपकरणेन्द्रिय अने शब्दादिरूप परिणामवाळा द्रव्यनो परस्पर संबन्ध' एम पूर्वे कह्युं तेथी श्रोत्र वगेरे चार इन्द्रियोनो व्यंजनावग्रह थाय छे अने मननो थतो नथी. कारण के ते बन्ने अप्राप्यकारी-अप्राप्त विषयने ग्रहण करे छे, ते अप्राप्यकारितानो विचार नन्दिसूत्रनी टीकामां बताव्यो छे माटे अहीं बतावता नथी. अर्थावग्रह छ प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—'सोइंदियअत्थुग्गहे' श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह इत्यादि. श्रोत्रेन्द्रिय वडे व्यंजनावग्रह थया पछी एक समयमां जेनो निर्देश न थइ शके एवुं सामान्यमात्र अर्थनुं ज्ञान ते श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह. ए प्रमाणे घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना अर्थावग्रह संबन्धे पण कहेवुं. चक्षु अने मननो व्यंजनावग्रह थतो नथी, तेथी ते बन्नेनो प्रथमज स्वरूप, द्रव्य, गुण अने क्रियानी कल्पना रहित, जेनो निर्देश न थइ शके एवा सामान्यमात्र स्वरूपवाळा अर्थना ज्ञानरूप अर्थावग्रह जाणवो. 'नोइंदियअत्थावग्गहो' नोइन्द्रियार्थावग्रह-नोइन्द्रिय-मन, ते द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारनुं छे. तेमां मनःपर्याप्ति नामकर्मना उदयथी मनयोग्य वर्गणाना पुद्गलो ग्रहण करी मनरूपे परिणमन करवुं ते द्रव्य मन. ए संबन्धे नन्दिसूत्रना चूर्णिकार तेमज कहे छे—"मणपज्जत्तिनामकम्मोदयओ जोग्गे मणोदव्वे घित्तुं मणत्तेण परिणामिया दव्वा दव्वमणो भन्नइ" इति. मनपर्याप्ति नामकर्मना उदयथी योग्य मनोद्रव्यने ग्रहण करीने मनपणे परिणाम पमाडेलां द्रव्यो द्रव्य मन कहे-

२८. कतिविहा णं भंते ! इंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–दव्विंदिया य भाविंदिया य। कति णं भंते ! दव्विंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठ दव्विंदिया पन्नत्ता, तंजहा–दो सोत्ता, दो नेत्ता, दो घाणा, जीहा, फासे । नेरइयाणं भंते ! कति दव्विंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! अट्ठ एते चेव, एवं असुरकुमाराणं जाव थ-

---

२८. हे भगवन् ! इन्द्रियो केटला प्रकारनी छे ? हे गौतम ! बे प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे–द्रव्येन्द्रियो अने भावेन्द्रियो. हे भगवन् ! द्रव्येन्द्रियो केटला प्रकारनी छे ? हे गौतम ! आठ द्रव्येन्द्रियो छे. ते आ प्रमाणे–बे श्रोत्र, बे नेत्र, बे घ्राण–नासिका, जीभ अने स्पर्शन.

थाय छे तथा द्रव्य मनने अवलंबी जीवनो जे मनन परिणाम ते भावमन ते प्रमाणे नन्दिसूत्रना चूर्णिकार कहे छे–"जीवो पुण मणपरिणामकिरियावंतो भावमणो । किं भणियं होइ ? मणदव्वालंबणो जीवस्स मणवावारो भावमणो भण्णइ" इति–मनना परिणामनी क्रियावाळो जीव भावमन कहेवाय छे शुं कह्युं ? मन द्रव्योने अवलंबी जीवनो मननव्यापार ते भावमन कहेवाय छे तेमां अहीं भाव मननुं प्रयोजन छे, कारण के तेनुं ग्रहण करवाथी अवश्य द्रव्य मननुं पण ग्रहण थाय छे अने द्रव्य मन सिवाय भाव मननो असंभव छे भाव मन सिवाय पण भवस्थ केवलज्ञानीने पेठे द्रव्य मननो संभव छे माटे कह्युं छे के अहीं भावमननुं प्रयोजन छे तेमां नोइन्द्रिय–भाव मन वडे अर्थावग्रह–द्रव्येन्द्रियना व्यापारनी अपेक्षा सिवाय 'आ शुं छे ?' ए प्रमाणे घटादि अर्थना स्वरूपनी विचारणा करवामां अभिमुख, प्रथम एक समय मात्रनो, रूपादि तथा ऊर्ध्वाकारादि (उभी आकृति वगेरे) विशेषनी विचारणारहित, जेनो निर्देश न थइ शके एवो, सामान्यमात्रना विचाररूप बोध ते नोइन्द्रियार्थावग्रह अवग्रहनुं ग्रहण उपलक्षण–सूचक छे, तेथी नोइन्द्रियार्थावग्रहनुं साक्षात् ग्रहण छे अने ते सिवाय बीजा ईहा अने अपायनुं उपलक्षणथी ग्रहण करेलुं छे कारण के सूत्रनी गति विचित्र होवाथी दोष नथी

२८ 'कतिविहा णं भंते ! इंदिया पन्नत्ता' हे भगवन् ! इन्द्रियो केटला प्रकारनी छे ? द्रव्येन्द्रियसूत्र सुगम छे कारण के तेनो पूर्वे विचार करेलो छे 'कइ ण भंते ! दव्विंदिया पन्नत्ता'–हे भगवन् ! केटली द्रव्येन्द्रियो कही छे'–इत्यादि द्रव्येन्द्रियनी संख्या विषे सूत्र

णियकुमाराणवि । पुढविकाइयाणं भंते! कति दव्विंदिया पन्नत्ता ? गोयमा! एगे फासिंदिए पन्नत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं भंते ! कति दव्विंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! दो दव्विंदिया पन्नत्ता, तंजहा-फासिंदिए य जिब्भिंदिए य । तेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि दव्विंदिया पन्नत्ता, तंजहा-दो घाणा, जीहा, फासे । चउरिंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! छ दव्विंदिया पन्नत्ता, तंजहा-दो णेत्ता, दो घाणा, जीहा, फासे । सेसाणं जहा नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ।

२९. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया बद्धेल्लगा ? गो-

---

हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली द्रव्येन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! ए आठ ज होय छे. ए प्रमाणे असुरकुमारोने यावत् स्तनितकुमारोने जाणवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटली द्रव्येन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! एक स्पर्शनेन्द्रिय होय छे. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! बेइन्द्रियोने केटली द्रव्येन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! बे द्रव्येन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे-स्पर्शनेन्द्रिय अने जिह्वेन्द्रिय. तेइन्द्रियो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! चार द्रव्येन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे—बे घ्राण-नासिका, जीभ अने स्पर्शन. चउरिन्द्रियो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! छ द्रव्येन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे-बे नेत्रो, बे नासिका, जीभ अने स्पर्शन. बाकी बधा जीवोने नैरयिकोनी जेम वैमानिको सुधी जाणवुं.

२९. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-भूतकाळमां थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय.

अने दंडक संबन्धे सूत्र पाठसिद्ध छे.

यमा ! अट्ठ । केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ वा सोल वा सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता । केवइया बद्धेल्लगा ? अट्ठ । केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठ वा नव वा सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणियकुमाराणं ताव भाणियव्वं । एवं पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइकाइयावि, नवरं केवइया बद्धेल्लगत्ति पुच्छाए उत्तरं एक्के फासिंदियदव्विंदिए । एवं तेउकाइयवाउकाइयस्सवि, नवरं पुरेक्खडा नव वा दस वा । एवं बेइंदियाणवि, णवरं

केटली द्रव्येन्द्रियो बद्ध–वर्तमानकाळे विद्यमान होय ? हे गौतम ! आठ होय. केटली पुरस्कृत–भविष्यकाळे थवानी होय ? हे गौतम ! आठ, सोळ, सत्तर, संख्याता, असंख्याता अने अनन्त द्रव्येन्द्रियो भविष्यमां थवानी होय छे. हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत–पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय. केटली बद्ध–वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय ? आठ होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? सात, आठ, नव, सत्तर, संख्याती, असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी कहेवुं. एम पृथिवीकायिको, अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको पण जाणवा. परन्तु केटली बद्ध–

२९. एक एक जीव सम्बन्धे अतीत, बद्ध (वर्तमान) अने पुरस्कृत (भविष्यमां थवानी) द्रव्येन्द्रियना विचारमा 'पुरक्खडा अट्ठ वा सोल वा सत्तरस वा संखिज्जा वा असंखिज्जा वा अणंता वा' पुरस्कृत–भविष्यत्कालीन द्रव्येन्द्रियो आठ, सोळ, सत्तर, संख्याती, असंख्याती के अनन्त जाणवी. जे नैरयिक पछीनाज भवमां मनुष्यपणु पामीने सिद्ध थाय–मुक्त थाय तेने मनुष्य भवसंबन्धी आठ इन्द्रियो, अने जे पछीना भवमां तिर्यंचपणु पामी त्यांथी मरण पामी मनुष्यमां आवीने सिद्ध थाय तेने तिर्यंचभवनी आठ अने मनुष्यभवनी आठ

बद्धेल्लगपुच्छाए दोण्णि। एवं तेइंदियस्सवि, णवरं बद्धेल्लगा चत्तारि। एवं चउरिंदियस्सवि, नवरं बद्धेल्लगा छ। पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणूसवाणमंतराजोइसियसोहम्मीसाणगदेवस्स जहा असुरकुमारस्स, नवरं मणूसस्स पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। सणंकुमारमाहिंदबंभलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगदेवस्स य जहा नेरइयस्स। एगमेगस्स णं भंते! विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवस्स केवइया दव्विंदिया अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया बद्धे-

---

वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय? ए प्रश्नना उत्तरमां एक स्पर्शनेन्द्रियरूप द्रव्येन्द्रिय होय. ए प्रमाणे तेजस्कायिक अने वायुकायिक संबन्धे कहेवुं. परन्तु भविष्यमां थनारी जघन्यपदे नव अथवा दस द्रव्येन्द्रियो होय. ए प्रमाणे बेइन्द्रियोने पण कहेवुं. परन्तु बद्ध-वर्तमान द्रव्येन्द्रियना प्रश्नमां बे द्रव्येन्द्रियो होय. एम तेइन्द्रियोने जाणवुं. परन्तु तेओने चार बद्ध द्रव्येन्द्रियो होय. चउरिन्द्रियोने पण एमज जाणवुं. परन्तु तेने छ बद्ध-विद्यमान द्रव्येन्द्रियो होय. पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवोने असुरकुमारनी पेठे कहेवुं. परन्तु मनुष्यने द्रव्येन्द्रियो भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने

मळीने सोळ इन्द्रियो होय. जे नरकथी नीकळी पछीना भवमां तिर्यंचपंचेन्द्रियपणुं पामी त्यार पछी एक भवमां पृथिवीकायिकादि थइने मनुष्यमां आवी सिद्ध थाय तेने तिर्यंचभवनी आठ, एक पृथिवीकायादिभवनी अने आठ मनुष्यभवनी एम सत्तर द्रव्येन्द्रियो होय. संख्याता काळ सुधी संसारमां रहेनारने संख्याती, असंख्याता काळ सुधी रहेनारने असंख्याती अने अनन्तकाळ पर्यंत रहेनारने अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय.

ल्लगा ? अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा । सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता, पद्धेल्लगा अट्ठ, पुरेक्खडा अट्ठ । नेरइयाणं भंते ! केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणंता । एवं जाव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं मणूसाणं पद्धेल्लगा सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अ-

---

आठ, नव, सख्याती, असंख्याती के अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय. सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लांतक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत अने ग्रैवेयक देवने नैरयिकनी पेठे जाणवुं. हे भगवन् ! एक एक विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत–पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त द्रव्येन्द्रियो थयेली होय. केटली बद्ध–वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय ? आठ होय, केटली भविष्यमां थवानी होय ? आठ, सोळ, चोवीश अथवा संख्याती होय. सर्वार्थसिद्ध देवने अतीत–भूतकाळे अनन्त द्रव्येन्द्रियो थयेली होय. बद्ध–वर्तमान आठ होय अने भविष्यमां थवानी आठ होय. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत –पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त थयेली होय. केटली बद्ध–विद्यमान होय ? हे गौतम ! असंख्याती होय. अने भवि-

---

असुरकुमार सूत्रमां 'पुरेक्खडा अट्ठ वा नव वा' भविष्यमां प्राप्त थवानी आठ अथवा नव वगेरे इन्द्रियो होय तेमां असुरकुमारना भवथी नीकळी पछीना भवमां मनुष्यपणुं पामी सिद्ध थाय तेने आठ द्रव्येन्द्रियो होय असुरकुमारथी मांडी ईशान सुधीना देवो पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिमां उत्पन्न थाय छे, तेथी पछीना भवमां पृथिव्यादिमां जइने त्यार पछी मनुष्यपणुं पामीने सिद्ध थाय तेने नव इन्द्रियो होय, सख्याती, असंख्याती अने अनन्त द्रव्येन्द्रियोनो विचार पूर्वनी पेठे करवो पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिना सूत्रमां

तीता अणंता, वद्धेल्लगा असंखेज्जा, पुरेक्खडा असंखेज्जा। सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं पुच्छा । गोयमा! अतीता अणंता, वद्धेल्लगा संखेज्जा, पुरेक्खडा संखेज्जा ।

ष्यमां थवानी केटली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. ए प्रमाणे ग्रैवेयक देवो सुधी जाणवुं. परन्तु मनुष्योने वद्ध द्रव्येन्द्रियो कदाचित् संख्याती होय अने कदाचित् असंख्याती होय. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अतीत काळे अनन्त, वद्ध–वर्तमान असंख्याती, अने भविष्यमां थवानी असंख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे. सर्वार्थसिद्ध देवो संबंधे पृच्छा, हे गौतम ! पूर्वकाळे थयेली अनन्त, विद्यमान संख्याती, अने भविष्यमां थवानी संख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे.

'पुरेक्खडा अट्ठ वा नव वा' इति. भविष्यमां थवानी आठ, नव वगेरे इन्द्रियो होय छे. पृथिव्यादि पोताना भवथी नीकळीने पछी मनुष्योमां उत्पन्न थाय अने सिद्ध थाय, तेमां जे पछीना भवमां मनुष्यपणुं पामीने सिद्ध थाय तेने मनुष्यभव संवन्धी आठ इन्द्रियो होय, अने जे पछी एक पृथिव्यादि भव करीने त्यारवाद मनुष्यभव पामी सिद्ध थाय तेने नव द्रव्येन्द्रियो होय. तेजस्कायिक अने वायुकायिको मरण पामी तुरत मनुष्यपणुंज पामता नथी, अने वेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो पछी तुरत मनुष्यपणुं पामे छे, परन्तु तेओ सिद्ध थता नथी, तेथी तेओना सूत्रमां जघन्य पदे नव के दस द्रव्येन्द्रियो होय एम कहेवुं जोइए. वाकीनानो विचार पूर्वे कह्या प्रमाणे करवो, मनुष्यसूत्रमां पुरस्कृत-भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो कोइने होय अथवा न होय, ते भवेज सिद्ध थनारने न होय अने वाकीनाने होय, जेओने होय तेओ पण जो पछीना भवमां फरीथी मनुष्य थइने सिद्ध थाय तेने आठ अने जे वच्चे पृथिव्यादिनो एक भव करी मनुष्य थइने सिद्ध थाय तेने नव होय. वाकीनानो विचार पूर्वनी पेठे करवो. सनत्कुमारादि देवो मरण पामी तुरत पृथिव्यादिमां आवता नथी, परन्तु पंचेन्द्रियोमां आवे छे. तेथी तेओ नैरयिकोनी पेठे कहेवा. माटे कह्युं छे के 'सनत्कुमार,

३०. एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया पद्धेल्लगा ?

३० हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत–भूतकाळे थयेली होय? हे गौतम! अनन्त

माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत अने ग्रैवेयक देवोने नैरयिकोनी पेठे कहेवु

विजयादि चार देव संबन्धी सूत्रोमां जे पछीना भवमा मनुष्यपणु पामीने सिद्ध थाय तेने आठ द्रव्येन्द्रियो होय जे एकवार मनुष्य थइने फरीथी पण मनुष्यपणु पामी सिद्ध थाय तेने सोळ द्रव्येन्द्रियो होय, अने जे वच्चे देवपणु अनुभवी मनुष्य थइने सिद्ध थाय तेने चोवीश होय, कारण के मनुष्यभवमा आठ, देवभवमां आठ अने फरीथी मनुष्यभवमां आठ संख्याता काळ सुधी संसारमां रहेनारने संख्याती द्रव्येन्द्रियो होय जे अहीं विजयादि चार देवोमां गयेला घणा काळपर्यन्त असंख्याता के अनन्तकाल सुधी ससारमा रहेता नथी तेथी 'संखेज्जा वा' संख्यात काळ–कह्यो छे, पण 'नासंखेज्जा अणंता वा'–असंख्यात अने अनन्तकाळ कह्यो नथी सर्वार्थसिद्ध पछीना भवमा अवश्य सिद्ध थाय छे, तेथी तेने जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय भविष्यमां थवानी आठ ज द्रव्येन्द्रियो होय छे

बद्धवचनना विचारमां नैरयिकसूत्रने विषे बद्ध द्रव्येन्द्रियो असंख्याती होय छे, कारण के नैरयिको असंख्याता छे ए प्रमाणे बाकीना सूत्रोमां उपयोग–ध्यान राखी कहेवु परन्तु मनुष्यसूत्रमा 'सिय संखिज्जा सिय असंखिज्जा'—कदाच संख्याती होय अने कदाच असंख्याती होय अहीं संमूर्छिम मनुष्यो कदाचित् सर्वथा होता नथी, कारण के तेनो चोवीश मुहूर्तप्रमाण विरहकाळ पूर्वे कह्यो छे तेमा ज्यारे संमूर्छिम मनुष्यो प्रश्नसमये सर्वथा न होय त्यारे संख्याती द्रव्येन्द्रियो होय, कारण के गर्भज मनुष्यो संख्याता छे ज्यारे संमूर्छिम मनुष्यो पण होय छे त्यारे असंख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे सर्वार्थसिद्ध महाविमानना देवो संख्याता होय छे, कारण के बादर अने मोटा शरीरवाळा छता परिमित क्षेत्रमां रहे छे तेथी तेओने बद्ध अने पुरस्कृत द्रव्येन्द्रियो संख्याती होय छे

३०–३५. 'एगमेगस्स णं भंते नेरइयस्स नेरइयत्ते' हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामा केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे

गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एगमेगस्स णं नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणि-

थयेली होय . केटली वर्तमान होय ? हे गौतम ! आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय जेने थवानी होय. तेने आठ, सोळ, चोवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो पूर्व काळे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त थयेली होय. केटली बद्ध होय ? हे गौतम ! न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय

होय—इत्यादि, 'पुरस्कृत-भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो कोइने होय अने कोइने न होय. जे नरकथी नीकळी फरीथी पण नैरयिकपणुं नहि पामे तेने न होय. जे नारकपणुं पामशे तेने होय, ते पण जो एकवार नरकमां आववानो होय तो तेने आठ, बे वार आववानो होय तो सोळ, त्रण वार आववानो होय तो चोवीश, संख्याती वार आववानो होय तो संख्याती द्रव्येन्द्रियो इत्यादि होय.

मनुष्यपणाना विचारमां 'कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि' इति न वक्तव्यम्—कोइने होय अने कोइने न होय एम न कहेवुं, कारण के तेओनुं मनुष्योमां आगमन अवश्य थवानुं छे. तेथी जघन्यपदे आठ अने उत्कर्षथी अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय छे एम कहेवुं.

विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितना विचारमां अतीत काळे द्रव्येन्द्रियो नथी, कारण के विजयादि चार अनुत्तरमां गयेलो जीव अवश्य त्यांथी मरण पामी तथास्वभावथी कदि पण नैरयिकथी मांडी तिर्यंच पंचेन्द्रिय सुधीना दडकोमां तथा व्यन्तर अने

यकुमारत्ति । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को वा दो वा तिण्णि वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं जाव वणस्सइकाइयत्ते । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स बेइन्दियत्ते केवइया दव्विन्दिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केव-

तेने आठ, सोळ, चोवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त थवानी होय. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली बद्ध होय ? हे गौतम ! न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय, जेने थवानी होय तेने एक, बे, त्रण, सख्याती, असख्याती के अनन्त थवानी होय. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायपणामां जाणवुं. हे भगवन् !

ज्योतिष्कोमां आववानो नथी, पण मनुष्योमां अने सौधर्मादि देवोमां आवशे, त्यां पण जघन्यथी एक, बे अने त्रण भव सुधी अने उत्कर्षथी सख्याता भव सुधी, परन्तु असंख्याता के अनन्त भव सुधी आवशे नहि, तेथी नैरयिकने विजयादिपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे नथी, पुरस्कृत-भविष्यमां द्रव्येन्द्रियो आठ अथवा सोळ होय छे कारण के विजयादिमां बे वार उत्पन्न थाय छे तेनो पछीना भवमां अवश्य मोक्ष थाय छे ए प्रमाणे जेम नैरयिकनो नैरयिकपणा वगेरे चोवीश स्थानोमां विचार कर्यो, तेम असुरकुमारादि प्रत्येकनो विचार करवो अने पूर्वोक्त भावना अनुसारे स्वयं उपयोग राखी विचारवु भावेन्द्रियसूत्रो पण सुगमज छे, केवळ द्रव्येन्द्रिय सबन्धे कहेली भावनाने अनुसारे [illegible] विचार करवो

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां पदरमा इन्द्रियपदनो बीजो उद्देशक समाप्त.

इया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि दो वा चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं तेइन्दियत्तेवि, नवरं पुरेक्खडा चत्तारि अट्ठ वा बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं चउरिंदियत्तेवि, नवरं पुरेक्खडा छ वा बारस वा अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते। मणूसत्तेवि एवं चेव, नवरं केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। सव्वेसिं मणूसवज्जाणं पुरेक्खडा मणूसत्ते कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि एवं ण वुच्चति। वाणमंतरजोइसियसोहम्मग–जाव गेवेज्जगदेवत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा नत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा

एक एक नैरयिकने बेइन्द्रियपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली बद्ध होय ? हे गौतम ! नथी. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने बे, चार, संख्याती, असंख्याती के अनंत थवानी होय. ए प्रमाणे तेइन्द्रियपणामां पण जाणवुं. परंतु भविष्यमां थवानी चार, आठ, बार, संख्याती, असंख्याती के अनंत द्रव्येन्द्रियो होय. एम चउरिन्द्रियपणामां पण समजवुं, परंतु भविष्यमां थवानी छ, बार, अढार, संख्याती, असंख्याती के अनंत द्रव्येन्द्रियो होय. जेम असुरकुमारपणामां कयुं तेम पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकपणामां पण जाणवुं. मनुष्यपणामां पण एमज समजवुं. परंतु भविष्यमां केटली द्रव्येन्द्रियो थवानी होय ? आठ, सोळ, चोवीश, संख्याती, असंख्याती के अनंत द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. मनुष्य सिवाय बधाने मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न

अणंता वा। एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ वा सोलस वा। सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते अतीता नत्थि, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ। एवं जहा नेरइयदंडओ नीतो तहा असुरकुमारेणवि नेतव्वो, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिण्णं, नवरं जस्स सट्ठाणे जइ बद्धेल्लगा तस्स तइ भाणियव्वा।

११. एगमेगस्स णं भंते! मणूसस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया बद्धे-

---

होय एम न कहेवु. व्यंतर, ज्योतिष्क, सौधर्म यावत् ग्रैवेयकदेवपणामां द्रव्येन्द्रियो पूर्व काळे अनन्त थयेली होय, बद्ध द्रव्येन्द्रियो नथी, अने भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय जेने होय तेने आठ, सोळ, चोवीश, सख्याती, असख्याती के अनन्त द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत–भूतकाळे थयेली होय? हे गौतम! न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय? कोइने थवानी होय अने कोइने न होय. जेने थवानी होय तेने आठ अथवा सोळ द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. सर्वार्थसिद्धदेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत अने बद्ध नथी, भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय. जेने भविष्यमां थवानी छे तेने आठ द्रव्येन्द्रियो थवानी होय ए प्रमाणे जेम नैरयिकनो दंडक कह्यो तेम असुरकुमार वडे पण दंडक कहेवो. यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच वडे दंडक कहेवो. परंतु जेने स्वस्थानमां जेटली बद्ध–वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी.

ल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ते, णवरं एगिंदियविगलिंदिएसु जस्स जइ पुरेक्खडा तस्स तत्तिया भाणियव्वा । एगमेगस्स णं भंते! मणूसस्स मणूसत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । वाणमंतरजोइसिय-जाव गेवेज्जगदेवत्ते जहा नेरइयत्ते । एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दव्विंदिया

---

३१. हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने नारकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो पूर्वकाळे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त थयेली होय. केटली बद्ध होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने भविष्यमां थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने भविष्यमां थवानी होय तेने आठ, सोळ, चोवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिपणामां जाणवु. परंतु एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रियमां जेने जेटली भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी. हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने मनुष्यपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली बद्ध–वर्तमान होय ? हे गौतम ! आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ, सोळ, चोवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त थवानी होय. व्यंतर, ज्योतिषिक, यावत् ग्रैवेयकपणामां जेम नारकपणामां कह्युं छे तेम कहेवुं. हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो

अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ वा सोलस वा । केवइया बद्धेल्लगा ? नत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सऽत्थि अट्ठ वा सोलस वा। एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिता दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ । वाणमंतरजोतिसिए जहा नेरतिए । सोहम्मगदेवेवि जहा नेरइए, नवरं सोहम्मगदेवस्स विजयवेजयंतजयंतापराजियत्ते केवइया अतीता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्ख-

---

अतीत काळे थयेली होय ? हे गौतम ! कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ अथवा सोळ होय. केटली वर्तमान होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ अथवा सोळ थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने सर्वार्थसिद्धदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे थयेली होय ? हे गौतम ! कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली वर्तमान होय ? न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ थवानी होय. व्यन्तर अने ज्योतिष्क नैरयिकनी पेठे जाणवा. अने सौधर्मदेव पण नैरयिकनी जेम कहेवो. परंतु सौधर्म देवने विजय, वैजयत, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली विद्यमान होय ? न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ अथवा सोळ

डा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सति णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ वा सोलस वा। सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते जहा नेरइयस्स, एवं जाव गेवेज्जगदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते ताव णेतव्वं।

३२. एगमेगस्स णं भंते! विजयवेजयंतजयंतापराजितदेवस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा? णत्थि। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ते। मणूसत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा। वाणमंतरजोइसियत्ते जहा नेरइयत्ते। सोहम्मगदेवत्तेऽतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा। एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते। विजयवेजयंतजयंतअपराजितदे-

---

थवानी होय. सर्वार्थसिद्धदेवपणामां नैरयिकनी पेठे कहेवुं ए प्रमाणे यावत् ग्रैवेयकदेवने यावत् सर्वार्थसिद्धदेवपणामां एमज कहेवु.

३२. हे भगवन्! एक एक विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने नैरयिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीतकाळे थयेली होय? हे गौतम! अनन्त होय. बद्ध केटली होय? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय? न होय. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचपणामां कहेवुं. मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीतकाळे अनन्त थयेली होय. वर्तमान काळे न होय. अने भविष्यमां थनारी आठ, सोळ, चोवीश के संख्याती होय. व्यंतर अने ज्योतिष्कपणामां नैरयिकपणामां कह्युं तेम कहेवुं. सौधर्मदेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे अनन्त थयेली होय. वर्तमान काळे नथी अने भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय. जेने भविष्यमां थवानी होय तेने आठ, सोळ, चोवीश के संख्याती होय. ए प्रमाणे यावत् ग्रैवेयकपणामां जाणवुं. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेव-

वत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ, केवतिया पद्धेल्लगा ? अट्ठ, केवतिया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ। एगमेगस्स णं भंते ! विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया बद्धेल्लगा ? नत्थि केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ। एगमेगस्स णं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि। एवं मणूसवज्ज जाव गेवेज्जगदेवत्ते, नवरं मणूसत्ते अतीता अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठ। विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते अतीता कस्सति अत्थि कस्सति नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेल्लगा ?

पणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली बद्ध होय ? आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने सर्वार्थसिद्ध देवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! न होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक सर्वार्थसिद्ध देवने नैरयिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे मनुष्य सिवाय यावत् ग्रैवेयकपणामां जाणवुं. परंतु मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीतकाळे अनन्त होय. केटली वर्तमान होय ? न

णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि। एगमेगस्स णं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया बद्धेल्लगा ? अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि।

३३. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिता दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? असंखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? अणंता। नेरइयाणं भंते ! असुरकुमारत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? अणंता, एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते। नेरइयाणं भंते ! विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? नत्थि, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? असंखिज्जा, एवं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्तेवि। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते भा-

---

होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? आठ थवानी होय. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली बद्ध होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय. हे भगवन् ! एक एक सर्वार्थसिद्ध देवने सर्वार्थसिद्धपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! न होय. केटली वर्तमान काळे होय ? आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय.

३३. हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनंत होय. केटली वर्तमान काळे होय ? असंख्याती होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? अनन्त थवानी होय. हे भगवन् ! नैरयिकोने असुरकुमारपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ?

णिघव्वं, नवरं वणस्सइकाइयाणं विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते य पुरेक्खडा अणंता, सव्वेसिं मणूससव्वट्ठसिद्धगवज्जाणं सट्ठाणे बद्धेल्लगा असंखेज्जा, परट्ठाणे बद्धेल्लगा णत्थि। वणस्सइकाइयाणं बद्धेल्लगा अणंता। मणूसाणं नेरइयत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा अणंता। एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते, नवरं सट्ठाणे अतीता अणंता, बद्धेल्लगा सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, पुरेक्खडा अणंता। मणूसाणं भंते! विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता? संखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा? णत्थि, केवइया पुरे-

---

अनन्त थवानी होय ए प्रमाणे यावत् ग्रैवेयकदेवपणामां जाणवुं. हे भगवन्! नैरयिकोने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय? न होय. केटली वर्तमान काळे होय? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय? असंख्याती होय ए प्रमाणे सर्वार्थसिद्धदेवपणामां पण जाणवुं. एम यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको सर्वार्थसिद्धदेवपणामां कहेवा. परंतु वनस्पतिकायिकोने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां तथा सर्वार्थसिद्ध देवपणामां भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो अनंत होय. मनुष्य अने सर्वार्थसिद्ध सिवाय बधाने स्वस्थानने आश्रयी बद्ध–वर्तमान द्रव्य इन्द्रियो असंख्याती होय. परस्थानने आश्रयी वर्तमान काळे द्रव्येन्द्रियो न होय. वनस्पतिकायिकोने बद्ध–वर्तमान द्रव्येन्द्रियो अनन्त छे. मनुष्योने नैरयिकपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे अनंत होय. वर्तमान काळे नथी, अने भविष्यमां थवानी अनन्त होय. ए प्रमाणे यावत् ग्रैवेयकदेवपणामां जाणवु परंतु स्वस्थानमां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे अनन्त होय. वर्तमान काळे कदाच संख्याती होय अने कदाच असंख्याती होय, अने भविष्यमां थवानी अनंत होय. हे भगवन्! मनुष्योने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो

क्खडा ? सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा । एवं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते अतीता णत्थि, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा, एवं जाव गेवेज्जगदेवाणं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं भंते ! नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि । एवं जाव जोइसियत्तेवि, णवरं मणूसत्ते अतीता अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, पुरेक्खडा असंखिज्जा । एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते सट्ठाणे अतीता असंखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा ? असंखिज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? असंखेज्जा । सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते

अतीत काळे होय ? संख्याती होय. केटली वर्तमान काळे होय ? नथी. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कदाचित् संख्याती होय अने कदाचित् असंख्याती होय. ए प्रमाणे सर्वार्थसिद्धदेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे न होय, वर्तमानकाळे न होय, अने भविष्यमां थवानी असंख्याती होय. ए प्रमाणे यावत् ग्रैवयक देवो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! विजय, वैजयन्त जयन्त अने अपराजितदेवोने नारकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्य काळमां थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे यावत् ज्योतिपिकदेवपणामां पण जाणवुं. परंतु मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे अनन्त होय. वर्तमान काळे केटली होय ? न होय. भविष्यमां थवानी केटली होय ? असंख्याती होय. ए प्रमाणे यावत् ग्रैवेयकदेवपणामां स्वस्थाननी अपेक्षाए अतीत काळे असंख्याती होय. केटली वर्तमान काळे होय ? असंख्याती होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? असंख्याती होय. सर्वार्थसिद्धदेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे न होय, वर्तमान काळे न होय अने भविष्यमां थवानी असंख्याती होय. हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्धदेवोने नारकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय.

अतीता नत्थि, पद्धेल्लगा नत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा। सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते! नेरइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया पद्धेल्लगा ? नत्थि, केवतिया पुरेक्खडा ? णत्थि। एवं मणूसवज्जं ताव गेवेज्जगदेवत्ते। मणुसत्ते अतीता अणंता, पद्धेल्लगा नत्थि, पुरेक्खडा संखेज्जा। विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? संखेज्जा, केवइया पद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि। सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? णत्थि, केवइया पद्धेल्लगा ? संखिज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि। दार ११।

३४. कति णं भंते ! भाविंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पन्नत्ता, तंजहा–सोतिंदिए, जाव फासिंदिए। नेरइयाण भंते ! कति भाविंदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पन्नत्ता, तंजहा–सोतिंदिते,

---

केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे मनुष्य सिवाय यावत् ग्रैवेयकदेवपणामां जाणवुं. मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे अनन्त होय, वर्तमान काळे न होय, अने भविष्यमां थवानी असंख्याती होय. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? संख्याती होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय. हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध देवोने सर्वार्थसिद्धदेवपणामा केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? न होय. केटली वर्तमान काळे होय ? संख्याती होय, केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय.

३४. हे भगवन् ! केटली भावेन्द्रियो कही छे ? हे गौतम ! पांच भावेन्द्रियो कही छे. ते आ प्रमाणे—श्रोत्रेन्द्रिय यावत्

जाव फासिंदिते। एवं जस्स जइ इंदिया तस्स तइ भाणितव्वा, जाव वेमाणियाणं। एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? पंच, केवइया पुरेक्खडा ? पंच वा दस वा एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं असुरकुमारस्सवि, नवरं पुरेक्खडा पंच वा छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं जाव थणियकुमारस्सवि। एवं पुढविकाइयआउकाइयवणस्सइकाइयस्सवि, वेइंदियतेइंदियचउरिंदियस्सवि। तेउकाइयवाउकाइयस्सवि एवं चेव, नवरं पुरेक्खडा छ वा सत्त वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जाव ईसाणस्स जहा असुरकुमारस्स, नवरं मणूसस्स पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थित्ति भाणियव्वं। सणंकुमार–जाव गेवेज्जगस्स जहा नेरइयस्स।

स्पर्शनेन्द्रिय. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली भावेन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! पांच भावेन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे–श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शनेन्द्रिय. ए प्रमाणे जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली इन्द्रियो वैमानिको सुधी कहेवी. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटली भावेन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काळे होय ? पांच होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? पांच, दस, अगियार, संख्याती, असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे असुरकुमारने पण जाणवुं. परंतु भविष्यमां थवानी पांच, छ, संख्याती, असंख्याती के अनन्त भावेन्द्रियो होय. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारने पण जाणवुं. एम पृथिवीकायिक, अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकने पण समजवुं. वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने पण एमज जाणवुं. तेजस्कायिक

विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवस्स अतीता अणंता, बद्धेल्लगा पंच, पुरेक्खडा पंच वा दस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा। सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता, बद्धेल्लगा पंच, केवइया पुरेक्खडा? पंच। नेरइयाणं भंते! केवइया भाविंदिया अतीता? गोयमा! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा? असंखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा? अणंता। एवं जहा दव्विंदिएसु पोहत्तेणं दंडतो भणितो तहा भाविंदिएसुवि पोहत्तेणं दंडतो भाणियव्वो, नवरं वणस्सइकाइयाणं बद्धेल्लगा अणंता।

अने वायुकायिकने पण एमज कहेवु. परन्तु भविष्यमां थवानी छ, सात, सख्याती, असख्याती के अनन्त भावेन्द्रियो होय. पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकने यावत् ईशानदेवने असुरकुमारनी पेठे जाणवुं. परन्तु मनुष्यने भविष्यमां थवानी भावेन्द्रियो कोइने होय अने कोइने न होय एम कहेवुं. सनत्कुमार यावत् ग्रैवेयकने नैरयिकनी जेम जाणवु. विजय, वैजयन्त,जयन्त अने अपराजित देवने द्रव्येन्द्रियो अतीतकाळे अनन्त होय, वर्तमान काळे पांच होय अने भविष्यमां थवानी पाच, दस, पंदर के सख्याती होय. सर्वार्थसिद्ध देवने अतीत काळे अनन्त होय, वर्तमानकाळे पांच होय, केटली भविष्यमां थवानी होय? पाच थवानी होय. हे भगवन्! नैरयिकोने केटली भावेन्द्रिय अतीत काळे होय? हे गौतम! अनन्त होय. केटली वर्तमानकाळे होय? असख्याती होय. केटली भविष्यमां थवानी होय? अनन्त थवानी होय. ए प्रमाणे जेम द्रव्येन्द्रियोमा बहुवचन वडे दंडक कह्यो तेम भावेन्द्रियमा पण बहुवचन वडे दंडक कहेवो, परंतु वनस्पतिकायिकोने वर्तमान काळे भावेन्द्रियो अनन्त होय छे.

३५. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, बद्धेल्लगा ? पंच, पुरेक्खडा कस्सवि अत्थि कस्सवि नत्थि, जस्स अत्थि पंच वा दस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं, नवरं बद्धेल्लगा नत्थि। पुढविकाइयत्ते जाव वेइंदियत्ते जहा दव्विंदिया। तेइंदियत्ते तहेव, नवरं पुरेक्खडा तिण्णि वा छ वा णव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं चउरिंदियत्तेवि, नवरं पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं एए चेव गमा चत्तारि जाणेतव्वा जे चेव दव्विंदिएसु, णवरं तइयगमे जाणितव्वा जस्स जइ इंदिया ते पुरे-

---

३५. हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटली भावेन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. वर्तमान-काळे केटली होय ? पांच होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने होय अने कोइने न होय, जेने होय तेने पांच, दस, पंदर, संख्याती, असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे असुरकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधी जाणवुं. परंतु वर्तमान काळे न होय. पृथिकायिकपणामां यावत् बेइन्द्रियपणामां जेम द्रव्येन्द्रियो कही तेम भावेन्द्रियो कहेवी. तेइन्द्रियपणामां पण तेमज कहेवुं. परंतु भविष्यमां थवानी त्रण, छ, नव, संख्याती, असंख्याती के अनंत भावेन्द्रियो होय. चउरिन्द्रियपणामां पण एमज जाणवुं. परन्तु भविष्यमां थवानी भावेन्द्रियो चार, आठ, बार, संख्याती असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे द्रव्येन्द्रियोमां जे चार गम-पाठ कह्या छे ते आ चारे पाठ अहीं जाणवा. परंतु त्रीजा गमने विषे जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली इन्द्रियो भविष्यमां जाणवी. चोथा

पत्थडेसु मुणेतव्वा । चउत्थगमे जहेव दव्विंदिया, जाव सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवतिया भाविंदिया अतीता ? नत्थि, बद्धेल्लगा ? संखिज्जा, पुरेक्खडा ? णत्थि । समत्तो बीओ उद्देसो ।

पन्नवणाए भगवईए पन्नरसं इन्दियपयं समत्तं ।

गमन विषे जेम द्रव्येन्द्रियो कही छे तेम कहेवी. यावत् सर्वार्थसिद्धदेवपणामां केटली भावेन्द्रियो अतीत काळे होय ? न होय. वर्तमानकाळे केटली होय ? संख्याती होय. भविष्यमां थवानी केटली होय ? न होय. बीजो उद्देशक समाप्त.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमा पदरमु इन्द्रियपद समाप्त

सोलसमं पओगपयं ।

१ कतिविहे णं भंते ! पओगे पन्नते ? गोयमा ! पण्णरसविहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे १, असच्चमणप्पओगे २, सच्चामोसमणप्पओगे ३, असच्चामोसमणप्पओगे ४, एवं वइप्पओगेवि चउहा ८, ओरा-

सोळमुं प्रयोगपद.

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो प्रयोग कह्यो छे ? हे गौतम ! पंदर प्रकारनो प्रयोग कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्यमनःप्रयोग, २ असत्य मनःप्रयोग, ३ सत्यमृषा मनःप्रयोग, ४ असत्यामृषा मनःप्रयोग, ५–८ ए प्रमाणे वचनप्रयोग पण चार प्रकारनो छे. ९

१. ए प्रमाणे पंदरमा पदनी व्याख्या करी, हवे सोळमा पदनो आरंभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे. अहीं पूर्वना पदमां प्रधानपद-मोक्षनुं कारण होवाथी अने इन्द्रियवाळानेज लेश्यादि परिणामनो सद्भाव होवाथी विशेषरूपे इन्द्रियपरिणाम कह्यो छे, त्यार पछी अहीं परिणामनुं समानपणुं होवाथी प्रयोगपरिणामनुं प्रतिपादन कराय छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'कइविहे णं पओगे पन्नत्ते' हे भगवन् ! केटला प्रकारनो प्रयोग कह्यो छे ? अहिं 'णं' वाक्यालंकारमां छे. प्र उपसर्ग पूर्वक युज् धातु योग-व्यापार अर्थमां छे, तेने भाव-क्रियाना अर्थमां 'घञ्' प्रत्यय लागी प्रयोग शब्द थाय छे. तेनो अर्थ परिस्पन्द क्रिया अथवा आत्मव्यापार एवो थाय छे, प्रकर्षेण युज्यन्तेऽनेन-जे वडे क्रियाओमां अथवा सांपरायिक-काषायिक के ईर्यापथ-योगनिमित्तक कर्मनी साथे आत्मा जोडाय ते प्रयोग. अहीं करण अर्थमां 'घञ्' प्रत्यय थयो छे. भगवान् उत्तर कहे छे—'पंदर प्रकारनो प्रयोग छे.' ते पंदर प्रकार बतावे छे—१ 'सच्च-मणप्पओगे' इत्यादि. सत्यमनप्रयोग 'सत्सु साधुः सत्यः' सतने साधु-हितकारी होय ते सत्य. सत्-सत्पुरुषो, मुनिओ अथवा पदार्थो, तेने एटले मुनिओने मुक्तिने प्राप्त करावनार होवाथी हितकारी अने यथार्थ स्वरूपना चिन्तन वडे पदार्थोने हितकारी ते

लियसरीरकायप्पओगे ९, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे १०, वेउव्वियसरीरकायप्पओगे ११, वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे १२, आहारकसरीरकायप्पओगे १३, आहारगमीससरीरकायप्पओगे १४, कम्मासरीरकायप्पओगे १५ ॥

औदारिकशरीरकायप्रयोग, १० औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ११ वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १२ वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग, १३ आहारकशरीरकायप्रयोग, १४ आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग, १५ तैजसकार्मणशरीरकायप्रयोग.

सत्य जेमके 'जीव छे, सद्-असद्रूप छे अने शरीरमात्र व्यापी छे' इत्यादिरूपे यथार्थ वस्तुनु चिन्तन करनार सत्य मन, तेनो प्रयोग-व्यापार ते सत्यमन प्रयोग २ 'असच्चमणप्पओगे' सत्यथी विपरीत ते असत्य, जेमके 'जीव नथी, अथवा एकान्त सत् छे' इत्यादि कुविकल्प करनार मन, तेनो प्रयोग-व्यापार ते असत्यमनप्रयोग ३ 'सच्चामोसमणप्पओगे' सत्यमृषा-सत्यासत्य, जेमके धव, खेर अने पलाशादि वडे मिश्र घणा अशोक वृक्षो छता 'आ अशोकवन छे' एवो विकल्प करवामा तत्पर ते सत्यमृषामनप्रयोग, तेमां केटलाएक अशोकवृक्षो होवाथी सत्य छे, अने बीजा पण धव, खेर वगेरे झाडो होवाथी असत्य छे. ए प्रमाणे व्यवहारनयना मतथी कहेवाय छे, पण वास्तविक रीते तो आ असत्यज छे, कारण के जेवी रीते चिंतवेल छे तेवा प्रकारना अर्थनो अभाव छे ४ 'असच्चामोसमणप्पओगे' जे सत्य नथी तेम असत्य पण नथी ते असत्यामृषा, अहीं विप्रतिपत्ति-मतभेद होय त्यारे पदार्थने स्थापन करवानी बुद्धिथी सर्वज्ञना मतने अनुसारे विचार कराय, जेम के 'जीव छे, अने ते सद्-असद्रूप छे' ते आराधक होवाथी सत्य छे मतभेद होय त्यारे वस्तुने स्थापन करवानी बुद्धिथी सर्वज्ञना मतथी विरुद्ध प्रतिकूलपणे विचाराय, जेमके 'जीव नथी, अथवा ते एकान्त नित्य अथवा अनित्य छे' इत्यादि विराधक होवाथी असत्य छे अने जे वस्तुने स्थापन करवानी इच्छा सिवाय स्वरूपमात्रनो विचार करवामां तत्पर होय, जेमके 'देवदत्त ! घट लाव, गायनी याचना कर' इत्यादि चिन्तन करवामा तत्पर ते अस-

त्यामृषा. आ स्वरूपमात्रनो विचार करवामां तत्पर होवाथी पूर्वोक्त स्वरूपवाळुं सत्य नथी, कारण के ते आराधक नथी, तेम असत्य पण नथी कारण के विराधक नथी, आ पण व्यवहारनयना मतनी अपेक्षाए जाणवुं. अन्यथा छेतरवानी बुद्धिपूर्वक चिन्तन होय तो असत्यमां तेनो समावेश थाय छे. अने ते सिवाय अन्य होय तो तेनो सत्यमां समावेश थाय छे. 'एवं वइप्पओगोवि चउहा' जेम मननो प्रयोग चार प्रकारे कह्यो तेम वचनप्रयोग पण चार प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्यवचनप्रयोग, २ मृषावचनप्रयोग, ३ सत्यमृषावचनप्रयोग अने ४ असत्यामृषावचनप्रयोग. आ सत्यवचनादि सत्यमननी पेठे जाणवा. 'ओरालियसरीरकायप्पओगे' इति. औदारिकशरीरकायप्रयोग-औदारिकादिनो शब्दार्थ आगळ कहीशुं. औदारिक शरीर ज पुद्गलस्कन्धना समुदायरूप होवाथी अने उपचयने प्राप्त थतुं होवाथी काय कहेवाय छे. काय-समुदाय, अथवा चीयते-उपचयने पामे ते काय. तेनो प्रयोग-व्यापार ते औदारिक शरीरकायप्रयोग कहेवाय छे. आ योग पर्याप्त तिर्यंच अने मनुष्यने होय छे. 'औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग' इति. कार्मणनी साथे मिश्र थयेल औदारिक ते औदारिकमिश्र कहेवाय छे. ए संबन्धे निर्युक्तिकारे शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां कह्युं छे के "जोएणं कम्मएणं आहारेइ अणंतरं जीवो। तेण परं मीसेणं जाव सरीरस्स निप्फत्ती ॥" 'जीव कार्मण योग वडे तुरत आहार करे छे अने त्यार पछी मिश्र वडे यावत् शरीरनी उत्पत्ति थाय छे.' (प्र०)—मिश्रपणुं बन्नेमां रहेलुं छे, जेम औदारिक कार्मणनी साथे मिश्र थयेल छे, तेम कार्मण पण औदारिकनी साथे मिश्र थयेल छे, तो शा हेतुथी औदारिकमिश्र कहेवाय छे, पण कार्मणमिश्र कहेवातुं नथी? (उ०)—शास्त्रमां तेनोज व्यवहार थाय छे के जेथी श्रोताओने वक्ताए कहेवा धारेला अर्थनो स्पष्ट बोध थाय, जो एम न होय तो संदेह थवाथी वक्ताए कहेवा धारेला अर्थनो बोध न थवाने लीधे श्रोताओने उपकार थतो नथी, कार्मणशरीर संसार पर्यन्त निरन्तर रहेतुं होवाथी ते बधा शरीरोमां होय छे. तेथी 'कार्मणमिश्र' एम कहेवाथी न जाणी शकाय के ते तिर्यंच-मनुष्यने अपर्याप्तावस्थामां विवक्षित छे के देव नारकोने विवक्षित छे? तेथी उत्पत्तिनी अपेक्षाए औदारिकनुं प्रधानपणुं होवाथी अने कदाचित् होवाथी विवक्षित अर्थनो स्पष्ट बोध थवा माटे औदारिक वडे 'औदारिकमिश्र' एवो व्यवहार थाय छे. तथा ज्यारे वैक्रियलब्धियुक्त औदारिकशरीरवाळा

मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त बादर वायुकायिक वैक्रियशरीर करे छे त्यारे ते औदारिकशरीरप्रयोगमां ज वर्तंतो आत्मप्रदेशोने विस्तारी वैक्रिय शरीरयोग्य पुद्गलो ग्रहण करी ज्यां सुधी वैक्रिय शरीरपर्याप्ति पूर्ण न करे त्यां सुधी जो के औदारिकनी वैक्रियनी साथे मिश्रता बन्नेमां रहेली छे तो पण औदारिक प्रारंभ करनार होवाथी प्रधान छे, माटे 'औदारिकमिश्र' पणो व्यवहार थाय छे, पण 'वैक्रियमिश्र' पणो व्यवहार थतो नथी तथा ज्यारे कोई आहारकलब्धिवाळो चौद पूर्वधर आहारक शरीर करे छे त्यारे जो के आहारक साथे औदारिकनुं मिश्रपणुं बन्नेमां रहेलुं छे, तो पण औदारिक आरंभक होवाथी प्रधान छे, तेथी ते वडे 'औदारिकमिश्र' पणो व्यवहार थाय छे, परन्तु आहारक वडे थतो नथी औदारिकमिश्रशरीरकायनो प्रयोग-व्यापार ते औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग 'वैक्रिय शरीरकायप्रयोग'—वैक्रियशरीर पर्याप्ति वडे पर्याप्ताने वैक्रियशरीरकायप्रयोग होय छे, वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग देव नारकोने अपर्याप्तावस्थामां होय छे त्यां मिश्रपणुं कार्मणनी साथे जाणवुं अहीं आक्षेप-पूर्वपक्ष अने परिहार-समाधान पण पूर्वनी पेठे जाणवुं ज्यारे मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के वायुकायिक वैक्रिय शरीर करी पोतानुं कार्य समाप्त करी वैक्रियशरीरनो त्याग करता औदारिक शरीरने विषे प्रवेश करवानो प्रयास करे त्यारे ते वैक्रियशरीरना बळथी औदारिक ग्रहण करवाने प्रवर्ते छे, माटे अहीं वैक्रियनुं प्रधानपणुं होवाथी वैक्रियवडे 'वैक्रियमिश्र' पणो व्यवहार थाय छे, पण औदारिक वडे थतो नथी 'आहारकशरीरकायप्रयोग' आहारक शरीरपर्याप्तिवडे पर्याप्ताने होय छे आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग आहारकथी औदारिकमां प्रवेश करतां होय छे तात्पर्य आ छे—ज्यारे आहारकशरीरी थई पोतानुं कार्य करी फरीथी औदारिकशरीर ग्रहण करे छे त्यारे जो के मिश्रपणुं बन्नेमां रहेलुं छे, तो पण आहारकना सामर्थ्यथी औदारिकमां प्रवेश थाय छे माटे आहारकनुं प्रधानपणुं होवाथी ते वडे 'आहारकमिश्र' पणो व्यवहार थाय छे। पण औदारिक वडे थतो नथी आ सिद्धान्तना अभिप्रायथी कह्युं छे कार्मग्रन्थिको वैक्रियना प्रारंभकाळे अने तेने त्याग करवाना समये वैक्रियमिश्र अने आहारकना प्रारंभकाळे अने तेने छोडवाना समये आहारकमिश्र होय छे अने कोई पण अवस्थामां औदारिकमिश्र नथी पण माने छे तैजसकार्मणशरीरप्रयोग विग्रहगतिमां अने समुद्घातनी अवस्थामां सयोगी केवलीने त्रीजा, चोथा अने पांचमा

२. जीवाणं भंते ! कतिविधे पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविधे पण्णत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे, जाव कम्मासरीरकायप्पओगे । नेरइयाणं भंते ! कतिविधे पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कारसविधे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे, जाव असच्चामोसवयप्पओगे, वेउव्वियसरीरकायप्पओगे, वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे । एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! तिविहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मा-

---

२. हे भगवन् ! जीवोने केटला प्रकारना प्रयोग होय छे ? हे गौतम ! पंदर प्रकारना प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—सत्यमनप्रयोग, यावत्–कार्मणशरीरकायप्रयोग. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारना प्रयोग होय छे ? हे गौतम ! अगियार प्रकारना प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्य मनःप्रयोग, यावत् ८ असत्यामृषा वचनप्रयोग, ९ वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १० वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग अने ११ कार्मणशरीरकायप्रयोग. ए प्रमाणे असुरकुमारथी मांडी स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने त्रण प्रकारनो प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—१ औदारिकशरीरकायप्रयोग, २ औदारिकमिश्र-

---

समये होय छे. अहीं तैजस कार्मणनी साथे नियत सहचारी छे माटे तैजसकार्मणनुं साथे ग्रहण करेलुं छे.

२. आ पंदर प्रयोगोनो जीवादि स्थानोमां विचार करता सूत्रकार कहे छे—'जीवाणं भंते ! कतिविधे पओगे पन्नत्ते' ? हे भगवन् ! जीवोने केटला प्रकारनो प्रयोग होय छे वगेरे. तेमां जीवपदमां पंदरे प्रयोगो होय छे. कारण के भिन्नभिन्न जीवोनी अपेक्षाए हमेशां पंदरे प्रयोगो प्राप्त थाय छे. नैरयिकपदमां अगियार प्रयोगो होय छे, कारण के तेओने औदारिक, औदारिकमिश्र, आहारक अने

सरीरकायप्पओगे य। एवं जाव वणस्सइकाइयाणं, णवरं वाउकाइयाणं पञ्चविहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—ओरालियकायप्पओगे, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे य, वेउव्विए दुविधे, कम्मासरीरकायप्पओगे य। वेइंदियाणं पुच्छा। गोयमा! चउव्विहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—असच्चामोसवइप्पओगे, ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमिससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे। एवं जाव चउरिंदियाणं। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा! तेरसविधे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोसमणप्पओगे,

---

शरीरकायप्रयोग, अने ३ कार्मणशरीरकायप्रयोग. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवु. परन्तु वायुकायिकोने पांच प्रकारनो प्रयोग होय छे—१ औदारिकशरीरकायप्रयोग, २ औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ३-४ वैक्रिय बे प्रकारनो प्रयोग अने ५ कार्मणशरीरकायप्रयोग. बेइन्द्रियो सबन्धे पृच्छा. तेओने चार प्रकारनो प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—१ असत्यामृषा वचनप्रयोग, २ औदारिकशरीरकायप्रयोग, ३ औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग अने ४ कार्मणशरीरकायप्रयोग. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवु. पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको सबन्धे पृच्छा. हे गौतम! तेने तेर प्रकारनो प्रयोग कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्य मनःप्रयोग, २ मृषा मन-

---

आहारकमिश्र ए चार प्रयोगनो असम्भव छे ए प्रमाणे यथा भवनपति, व्यन्तरो, ज्योतिषिक अने वैमानिकोमा विचार करवो वायुकाय सिवायना पृथिवीकायादि एकेन्द्रियोमा प्रत्येकने त्रण त्रण प्रयोग होय छे—१ औदारिक, २ औदारिकमिश्र अने ३ कार्मण वायुकायिकोमा पांच प्रयोगो होय छे, कारण के वैक्रिय अने वैक्रियमिश्रनो पण तेओने सम्भव छे बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमा प्रत्येकने चार चार प्रयोग होय छे—१ औदारिक, २ औदारिकमिश्र, ३ कार्मण अने ४ असत्यामृषा भाषा वाकीनी सत्यादि

असच्चामोसमणप्पओगे, एवं वइप्पओगेवि, ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे, वेउव्वियसरीरकायप्पओगे, वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे। मणूसाणं पुच्छा। गोयमा! पण्णरसविधे पओगे पन्नत्ते,तंजहा—सच्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे। वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं।

३. जीवा णं भंते! किं सच्चमणप्पओगी,जाव किं कम्मसरीरकायप्पओगी? गोयमा! जीवा सव्वेवि ताव होज्ज सच्चमणप्पओगीवि जाव वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगीवि कम्मासरीरकायप्पओगीवि१३। अहवेगे य आहारगस-

---

प्रयोग, ३ सत्यमृपा मनःप्रयोग, ४ असत्यामृपा मनःप्रयोग, ८ ए प्रमाणे वचनप्रयोग पण समजवो, ९ औदारिकशरीरकायप्रयोग, १० औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ११ वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १२ वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग अने १३ कार्मणशरीरकायप्रयोग. मनुष्यो संबंधे प्रश्न. हे गौतम! तेओने पंदर प्रकारनो प्रयोग होय छे. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरयिकोनी पेठे जाणवुं.

३. हे भगवन्! शुं जीवो सत्यमनप्रयोगवाळा छे के यावत्–कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय छे? हे गौतम! सर्वे जीवो सत्यमन-

---

भागनो तेओने संभव नथी. कारण के 'विगलेसु असच्चमोसेव' विकलेन्द्रियोमां एक असत्यामृषा भाषा होय छे-एवुं शास्त्रनुं वचन छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने तेर प्रयोगो होय छे, कारण के तेओने चौद पूर्वना ज्ञाननो असंभव होवाथी आहारक अने आहारकमिश्रप्रयोग नथी. मनुष्योने विषे पंदरे योगो होय छे, कारण के मनुष्योने सर्व भावोनो संभव छे.

३. हवे जीवादि पदोमां नियत प्रयोगोनो विचार करता सूत्रकार कहे छे—'जीवा णं भंते'–हे भगवन्! जीवो शुं सत्यमनप्रयो-

रीरकायप्पओगी य १,अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २,अहवेगे य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगमीससरीरकायप्पओगिणो य ४ चउभङ्गो । अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीससरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओ-

---

प्रयोगवाळा, यावत् वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. १३. अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ३ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय, ४ अथवा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय-ए चतुर्भंगी जाणवी. १ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकाय

वाळा इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे उत्तर सूत्रमां 'घणा जीवो सत्यमनप्रयोगवाळा होय छे-इत्यादि प्रथम भांगो थाय छे तात्पर्य ए छे के हमेशां घणा जीवो सत्यमनप्रयोगवाळा, असत्यमनप्रयोगवाळा, यावत् वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय छे नारकादि जीवोने हमेशां उपपात अने उत्तरवैक्रियना आरंभनो समय छे कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा हमेशा होय छे, कारण के वनस्पत्यादि विग्रहगति वडे हमेशां भवान्तरगतिमां होय छे आहारकशरीरी कदाचित् सर्वथा होतो नथी, कारण के तेने उत्कर्षथी छमास सुधीना अन्तरनो संभव छे ज्यारे आहारकशरीरी होय छे त्यारे जघन्यथी एक, बे अने उत्कर्षथी सहस्रपृथक्त्व-बे हजारथी नव हजार सुधी होय छे कह्यु छे के "आहारगाइं लोए छम्मासे जा न होंतिवि कयाई । उक्कोसेण नियमा एक्क समय जहन्नेण ॥ होंताइं जहन्नेण इक्क दो तिण्णि पंच व हवंति । उक्कोसेण जुगवं पुहुत्तमेत्त सहस्साणं" ॥ लोकमां आहारकशरीरो क्यारेक उत्कृष्ट छ मास सुधी अवश्य होता नथी अने जघन्यथी एक समय सुधी होता नथी ज्यारे होय छे त्यारे जघन्यथी एक, बे, त्रण

गिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४, एए जीवाणं अट्ठ १ ।

४. नेरइया णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मसरीरकायप्पओगी ११ ? गोयमा ! नेरइया सव्वेवि ताव होज्जा सच्चमणप्पओगीवि जाव वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगीवि, अहवेगे य कम्मसरीरकायप्पओगी

प्रयोगवाळा होय, ३ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगी होय, ४ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे जीवोने आश्रयी आठ भांगा जाणवा.

४. हे भगवन् ! नैरयिको शुं सत्यमनप्रयोगवाळा यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम ! बधा नैरयिको सत्यमनप्रयोगवाळा यावत् वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय, अथवा एक नैरयिक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा केट-

के पांच होय छे. अने उत्कृष्ट एक साथे सहस्रपृथक्त्व होय छे, तेथी ज्यारे आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक पण न होय त्यारे ते बे प्रयोग सिवाय बहुवचनयुक्त तेर पदनो प्रथम भंग थाय छे. कारण के तेरे पदोनुं पण हमेशां बहुपणुंज होय छे. ज्यारे एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय छे, त्यारे बीजो भांगो घटे छे. तेओ पण ज्यारे घणां होय त्यारे त्रीजो भांगो. ए प्रमाणे ज आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपद घटे पण बे भांगा थाय छे. एम एकना योगमां चार भांगाओ थया. द्विकसंयोगमां पण प्रत्येकना एकवचन अने बहुवचन वडे चार भांगाओ, एम सर्व संख्यावडे जीवपदने आश्रयी नव भांगाओ थाय छे.

४. नैरयिकपदमां सत्यमनप्रयोगवाळाथी आरंभी वैक्रियमिश्रकायप्रयोगवाळा पर्यन्त दश पदो हमेशां बहुवचन वडे रहेलां छे, तेथी ए प्रथम

य १, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, एवं असुरकुमाराविं, जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइया णं भंते! किं ओरालियसरीरकायप्पओगी ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी कम्मासरीरकायप्पओगी? गोयमा! पुढविकाइया ओरालियसरीरकायप्पओगीवि ओरालियमीससरीरकायप्पओगीवि कम्मासरीरकायप्पओगीवि,

---

लाक्क कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे असुरकुमार यावत् स्तनितकुमारोने जाणवु. हे भगवन्! पृथिवीकायिको शु औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा के कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय? हे गौतम! पृथिवीकायिको औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय. ए प्रमाणे वनस्पति-

---

भंग (प्र०)—वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा हमेशां केम होय? कारण के नरकगतिनो बार मुहूर्तनो उपपात विरहकाळ छे (उ०)—आ उत्तरवैक्रियनी अपेक्षाए घटु छे ते आ प्रमाणे-यद्यपि बार मुहूर्तनो गतिमां उपपात विरहकाळ होय छे, तो पण ते समये पण उत्तर वैक्रियशरीरनो आरंभ करवाना समये छे अने उत्तर वैक्रियना प्रारंभमां भवधारणीय वैक्रिय पडे मिश्र थाय छे, कारण के वैक्रिय शरीरना सामर्थ्यथी उत्तर वैक्रियनो आरंभ करे छे भवधारणीय शरीरमां प्रवेशमां पण उत्तर वैक्रिय घडे मिश्र थाय छे, कारण के उत्तर वैक्रियना बळथी भवधारणीय शरीरमां प्रवेश करे छे, तेथीज उत्तर वैक्रियनी अपेक्षाए भवधारणीय अने उत्तर वैक्रियना मिश्रनो समय होवाथी ते समये पण वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा नैरयिको होय छे कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो नैरयिक कदा चित् एक पण न होय, कारण के बार मुहूर्तनो गतिमां उपपात विरहकाळ होय छे ज्यारे होय छे त्यारे पण जघन्यथी एक बे अने उत्कर्षथी असंख्याता होय छे, तेथी ज्यारे कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो एक पण न होय त्यारे प्रथम भंग, ज्यारे एक होय त्यारे बीजो भंग, ज्यारे घणा होय त्यारे त्रीजो भंग थयो अहीं त्रण भागाओ भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकमां विचारवा पृथिवी, पाणी,

एवं जाव वणप्फइकाइयाणं । णवरं वाउकाइया वेउव्वियसरीरकायप्पओगीवि वेउव्वियमीसासरीरकायप्पओगीवि । बेइंदियाणं भंते ! किं ओरालियसरीरकायप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! बेइन्दिया सव्वेवि ताव होज्जा असच्चामोसवइप्पओगीवि ओरालियसरीरकायप्पओगीवि ओरालियमीससरीरकायप्पओगी-

कायिको सुधी जाणवुं. परंतु वायुकायिको वैक्रियशरीरकायप्रयोगवाळा अने वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय छे. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो शुं औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम ! बधा बेइन्द्रियो असत्यामृषावचनप्रयोगवाळा, औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा अने औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय छे. १ कार्मणकायप्रयोगमां अ-

अग्नि, वायु अने वनस्पतिओमां औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण हमेशां घणां होय छे, माटे प्रत्येकने त्रणे पदोना बहुवचनरूप एकज भांगो होय छे. वायुकायिकोमां औदारिकद्विक, वैक्रियद्विक, अने कार्मणशरीर ए पांच पदना बहुवचनरूप एक भांगो होय छे, कारण के तेओमां वैक्रियशरीरवाळा अने वैक्रियमिश्रशरीरवाळा हमेशां घणा होय छे. बेइन्द्रियोमां जो के अन्तर्मुहूर्तनो उपपातविरह काळ छे, तो पण उपपातविरहकाळनुं अन्तर्मुहूर्त नानुं छे अने औदारिकमिश्रनुं अन्तर्मुहूर्त घणुं मोटुं छे, माटे तेमां औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण हमेशां होय छे. कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो तो कदाचित् एक पण न होय, कारण के तेओनो उपपातविरहकाळ अन्तर्मुहूर्तनो होय छे. ज्यारे ते होय छे त्यारे जघन्यथी एक बे अने उत्कर्षथी असंख्याता होय छे, तेथी ज्यारे एक पण कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो न होय त्यारे प्रथम भंग, ज्यारे एक कार्मणशरीरी होय त्यारे बीजो भंग, अने ज्यारे घणा होय त्यारे त्रीजो भांगो होय छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय ने विषे विचारवुं. 'पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया' इत्यादि. जेम नैरयिको संबन्धे कह्युं तेम पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको संबन्धे कहेवुं, परन्तु वैक्रिय अने

वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगीवि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य, एवं जाव चउरिंदियावि। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवर ओरालियसरीरकायप्पओगीवि, ओरालियमीसासरीरकायप्पओगीवि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगी य अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य।

थवा एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो पण होय, २ अथवा केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवु. पचेन्द्रिय तिर्यंचो नैरयिकोनी पेठे समजवा. परन्तु तेओ औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा अने औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय. १ कार्मणकायप्रयोगमां—अथवा एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय, अथवा केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय.

वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळाने स्थाने औदारिक अने औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा कहेवा, तात्पर्य ए छे के १ सत्यमनप्रयोगवाळा, यावत् ८ असत्यामृषावचनप्रयोगवाळा, ९ औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा अने पछी १० औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय-एम कहेवु ए दस पदो हमेशां बहुवचन वडे अवस्थित छे जो के तिर्यंच पचेन्द्रियोनो उपपातविरहकाळ अन्तर्मुहूर्तनो छे, तो पण उपपातविरहकाळनु अन्तर्मुहूर्त नानु छे, औदारिकमिश्रनु अन्तर्मुहूर्त घणु मोटु छे, माटे अहीं पण औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा सदा होय छे जे बार मुहूर्तनो उपपातविरहकाळ कह्यो छे ते गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंचोने आश्रयी समजवो, पण सामान्य तिर्यंचोनी अपेक्षाए न जाणवो कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो तो तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां पण कदाचित् एक पण न होय, कारण के तेओनो उपपातविरहकाळ अन्तर्मुहूर्तनो छे तेथी ज्यारे एक पण कार्मणशरीरी न होय त्यारे प्रथम भग, ज्यारे एक होय त्यारे बीजो भग, अने ज्यारे घणा होय त्यारे त्रीजो भग होय छे. मनुष्योमां चार मनना, चार वचनना, औदारिक अने वैक्रियद्विकरूप अगियार

५. मणूसाणं भंते! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा! मणूसा सव्वेवि ताव

५. हे भगवन्! मनुष्यो शुं सत्यमनप्रयोगवाळा यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम! बधा मनुष्यो सत्यमनपदो हमेशां बहुवचनयुक्त होय छे. (प्र०)—वैक्रियमिश्रशरीरवाळा हमेशां केम होय ? (उ०)—विद्याधरनी अपेक्षाए होय छे. जेमके—विद्याधरो अने ते सिवाय बीजा केटलाएक मिथ्यादृष्टि वगेरे वैक्रियलब्धिवाळा अन्य अन्य अभिप्राय वडे हमेशां विकुर्वणा करता होय छे. आ संबन्धे मूलटीकाकार कहे छे—"मनुष्या वैक्रियमिश्रशरीरप्रयोगिणः, सदैव विद्याधरादीनां विकुर्वणाभावाद्" इति—मनुष्यो वैक्रियमिश्रशरीरप्रयोगवाळा होय छे, कारण के विद्याधरादिने हमेशां विकुर्वणा होय छे. औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा कदाचित् सर्वथा होता नथी, कारण के तेओने चार मुहूर्तनो उपपातविरहकाळ होय छे. आहारकशरीरवाळा अने आहारकमिश्रशरीरवाळा कदाचित् होय छे-ए पूर्वे कह्युं छे. तेथी औदारिकमिश्रादिना अभावमां अगियार पदना बहुवचनरूप एक भांगो थाय छे. त्यार पछी औदारिकमिश्रपदने आश्रयी एकवचन अने बहुवचन वडे बे भांगा, ए प्रमाणे आहारकपद वडे बे भांगा, आहारकमिश्रपद वडे बे भांगा अने कार्मणपद वडे बे भांगा-एम एक एक संयोगवडे आठ भांगा थाय छे. द्विकसंयोगमां प्रत्येकना एकवचन अने बहुवचन वडे औदारिकमिश्र अने आहारकपदना चार भांगा, ए प्रमाणे ज औदारिकमिश्र अने आहारकमिश्रपदना चार भांगा, औदारिकमिश्र अने कार्मणना चार भांगा, आहारक अने आहारकमिश्रना चार भांगा, आहारक अने कार्मणना चार भांगा, आहारकमिश्र अने कार्मणना चार भांगा-एम बधा मळी द्विकसंयोगमां चोवीश भांगा थाय छे. त्रिकसंयोगमां औदारिकमिश्र, आहारक अने आहारकमिश्रपदना एकवचन अने बहुवचन वडे आठ भांगा थाय छे. औदारिकमिश्र, आहारक अने कार्मणना आठ भांगा, औदारिकमिश्र, आहारकमिश्र अने कार्मणना आठ भांगा, अने आहारक, आहारकमिश्र अने कार्मणना आठ भांगा-एम बधा मळी त्रिकसंयोगी बत्रीश भांगा थाय छे. औदारिकमिश्र, आहारक,आहारकमिश्र अने कार्मण-ए चार पदोना एकवचन अने बहुवचन वडे सोळ भांगा थाय छे. अने सर्व मळीने एंशी भांगा थाय छे.

होज्जा सघमणप्पओगीवि, जाव ओरालियसरीरकायप्पओगीवि, वेउव्वियसरीरकायप्पओगीवि, वेउव्वियमीससरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य कम्मगसरीरकायप्पओगी य, अहवेगे य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २, एते अट्ठ भंगा पत्तेय। अहवेगे य ओरालियमीससरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहरगमी-

प्रयोगवाळा, यावत् औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, वैक्रियशरीरकायप्रयोगवाळा अने वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय, १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय, ४ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ५ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, ६ अथवा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ७ अथवा एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे एक सयोगना आठ भागाओ थाय छे. अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४

सासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य ४ एवं एते चत्तारि भंगा, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४ चत्तारि भंगा, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे ओरा-

---

अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे ए चार भांगाओ थया. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए चार भांगा थाय छे. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक औदारिकमि-

ल्लियमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४ एते चत्तारि भंगा, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगेय आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४ चत्तारि भंगा, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४ चउरो भङ्गा, अहवेगे य आहारगमीसा-

श्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. एम चार भांगा थाय छे. १ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए चार भांगा थाय छे. १ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय छे. ए

सरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४ चउरो भङ्गा,एवं चउव्वीसं भङ्गा। अहवेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २,अहवेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३,अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरका-

---

चार भांगा थाय छे. १ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ३ अथवा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकाय प्रयोगवाला अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. एम चार भांगाओ थाय छे. ए प्रमाणे चोवीश भांगाओ थया. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग-

यप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ६ अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारकसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ८ एते अट्ठ भंगा, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्म-

---

वालो होय. ४ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवालो, केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाला अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला होय, ५ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवालो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवालो होय, अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवालो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला होय, ७ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला, केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाला अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवालो होय, ८ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला, केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाला अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाला होय. ए आठ भांगा थाय छे. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवालो, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवालो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवालो होय, २ अथवा

गसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ६, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य

एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ३ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय, ४ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ५ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय, ६ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटला एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ७ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे आठ भांगा थाय छे. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकाय-

आहारगसरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्म-

---

प्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ५ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ६ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ७ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा

गसरीरकायप्पओगी य ६, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओ-

---

अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. १ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो, एक आहारकमिश्रशरी रकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ५ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ६ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकाय-

गिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ५, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ६, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मसरीरकायप्पओगिणो य ८। एए तियसजोगणं चत्तारि अट्ठ भंगा, सव्वेवि मिलिता बत्तीस भंगा जाणितव्वा ३२। अहवेगे य ओरालियमिस्सासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसास-

---

प्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा केटलाएक आहारकशरीकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे त्रिकसंयोग वडे चार प्रकारे आठ आठ भांगा थाय छे बधा मळीने बत्रीश भांगा जाणवा. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारक-

रीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ४, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ६, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरका-

---

मिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ५ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ६ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ७ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिश्र-

यप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ७, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ८, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ९, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १०, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ११, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरका-

---

शरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ९ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. १० अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ११ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. १२ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. १३ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहार-

यप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १२, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १४, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य १५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १६ एवं एते चउसंजोएणं सोलस भंगा भवंति,सव्वेऽवि य णं संपिंडिया असीति भंगा

कमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. १४ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. १५ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. १६ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे आ चतुःसंयोगी सोळ भांगा थया. बधा एकठा करीए एटले मनुष्यो संबन्धे एंशी भांगा थाय छे. व्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिको असुरकुमारोनी पेठे जाणवा.

भवंति। वाणमंतरजोइसवेमाणिया जहा असुरकुमारा।

६ कइविहे णं भंते! गइप्पवाए पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तंजहा-पओगगती १, ततगती २, बंधणछेदणगती ३, उववायगती ४, विहायगती ५। से किं तं पओगगती? पओगगती पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा-सच्चमणप्पओगगती, एवं जहा पओगो भणितो तहा एसावि भाणितव्वा जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगती। जीवाणं भंते! कतिविहा पओगगती पण्णत्ता? गोयमा! पण्णरसविहा पन्नत्ता, तंजहा-

६. हे भगवन्! गतिप्रपात केटला प्रकारनो कह्यो छे? हे गौतम! पांच प्रकारनो गतिप्रपात कह्यो छे. ते आ प्रकारे—१ प्रयोगगति, २ ततगति, ३ बन्धनछेदनगति, ४ उपपातगति, ५ विहायोगति, प्रयोगगति केटला प्रकारनी छे? प्रयोगगति पंदर प्रकारनी छे ते आ प्रमाणे—सत्यमनप्रयोगगति-इत्यादि जेम प्रयोग कह्यो तेम आ प्रयोगगति पण कहेवी. यावत्-कार्मणशरीरकायप्रयोगगति सुधी कहेवुं हे भगवन्! जीवोने केटला प्रकारनी प्रयोगगति कही छे? हे गौतम! पंदर प्रकारनी कही छे. ते आ

६ प्रयोग कह्यो, प्रयोगना वशथी जीव अने अजीवनी गति थाय छे, माटे गतिनुं निरूपण करवा माटे कहे छे-'हे भगवन्! गतिप्रपात केटला प्रकारनो कह्यो छे' इत्यादि गति-गमन, अथवा प्राप्ति, अने ते देशान्तर-अन्य देशनी प्राप्ति अथवा पर्यायान्तर-अन्य अन्य पर्यायनी प्राप्ति समजवी कारण के धातुनो अर्थ घणे अर्थमा घटी शके छे, अने ते प्रकारे गतिशब्दनो प्रयोग पण घणे अर्थमा देखाय छे जेमके देवदत्त क्यां गयो? पाटण गयो वचनमात्रथी आ कोपने प्राप्त थयो आगममा पण घणे प्रकारना प्रयोग मळे छे जेमके 'परमाणु एक समयमां एक लोकान्तथी बीजा लोकान्त सुधी जाय छे, तथा ते ते अध्यवसायान्तरोने प्राप्त थाय छे गतिनो प्रपात-प्रवृत्ति, एटले क्या क्या अर्थमा गति शब्दनी प्रवृत्ति थाय छे? भगवान् उत्तर आपे छे-गतिप्रपात पांच प्रकारनो छे-

९॥

सच्चमणप्पओगगती, जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगती। नेरइयाणं भंते! कइविहा पओगगती पन्नत्ता? गोयमा! एक्कारसविहा पन्नत्ता, तंजहा–सच्चमणप्पओगगती, एवं उवउज्जिऊण जस्स जतिविहा तस्स ततिविहा भाणितव्वा जाव वेमाणियाणं। जीवाणं भंते! सच्चमणप्पओगगती, जाव कम्मगसरीरकायप्पओगगती? गो-

प्रमाणे—सत्यमनःप्रयोगगति, यावत्–कार्मणशरीरकायप्रयोगगति. हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारनी प्रयोगगति होय छे? हे गौतम! अगियार प्रकारनी प्रयोगगति होय छे. ते आ प्रमाणे—सत्यमनप्रयोगगति–इत्यादि ए प्रमाणे उपपयोग–ध्यान आपी जेने जेटला प्रकारनी प्रयोगगति होय तेने तेटला प्रकारनी वैमानिको सुधी कहेवी. हे भगवन्! जीवो सत्यमनप्रयोगगतिवाळा,

'प्रयोगगतिः' इत्यादि. प्रयोग–जीवव्यापार, अने ते पूर्वे पंदर प्रकारनो कह्यो छे. प्रयोगरूप गति ते प्रयोगगति. अहीं देशान्तरप्राप्तिरूप गति समजवी, कारण के जीववडे व्यापृत थयेला सत्य मन वगेरेना पुद्गलो अल्प के अधिक देशान्तर सुधी गमन करे छे. 'ततगतिः' तत–विस्तारवाळी गति ते ततगति. जेमके जे ग्राम के संनिवेश तरफ देवदत्त वगेरेए गमन कर्युं होय अने ते ग्रामादि पर्यन्त हजी सुधी पहोंच्यो नथी त्यां सुधी मार्गमां एक एक पगलुं मूकतां देशान्तर प्राप्तिरूप गति होय छे, माटे ततगति कहेवाय छे. अहीं गतिनो विषय विस्तीर्ण होवाथी गतिने तत–विस्तीर्ण विशेषण आपवामां आव्युं छे, तेथी आ गति जूदी कही छे. अन्यथा तेनो प्रयोगगतिमां अन्तर्भाव थाय छे. कारण के पगे चालवुं ते शरीरना प्रयोग–व्यापाररूप छे. ए प्रमाणे बीजे स्थळे पण यथासंभव जाणी लेवुं. 'बन्धछेदनगतिः' बन्धननो छेद थवाथी गति थाय ते. अने ते जीवथी मुक्त शरीरनी के शरीरथी मुक्त जीवनी समजवी. परन्तु कोशना संबन्धनो विच्छेद थवाथी एरंडबीजनी गति न जाणवी, कारण के ते विहायोगतिना भेद तरीके कहेवामां आवशे. 'उपपातगतिः' उपपात–प्रादुर्भाव, उत्पत्ति, अने ते क्षेत्र, भव अने नोभवना भेदथी त्रण प्रकारे छे. जेमके क्षेत्रोपपात, भवोपपात अने नोभवोपपात. तेमां क्षेत्र–आकाश, ज्यां नारकादि जीवो, सिद्धो अने पुद्गलो रहे छे. भव–कर्मना संबन्धथी उत्पन्न थयेलो नारकादिपर्याय, कारण के 'भव-

यमा ! जीवा सव्वेवि ताव होज्ज सच्चमणप्पओगगतीवि, एवं त चेव पुव्ववण्णितं भाणितव्वं, भगा तहेव जाव वेमाणियाण, से तं पओगगती १।

७. से किं तं ततगती ? ततगती जे णं जं गामं वा जाव सण्णिवेसं वा सपट्ठिते असंपत्ते अंतरापहे वट्टति, से सं ततगती २।

८. से किं तं बंधणछेदणगती ? बंधणछेदणगती जीवो वा सरीराओ सरीर वा जीवाओ, सेत्त बंधणछेदणगती ३।

यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगगतिवाळा होय ? हे गौतम ! सर्वे जीवो (समुदायनी अपेक्षाए) सत्य मनःप्रयोगगतिवाळा पण होय इत्यादि पूर्वे कहेलुं तेज कहेवुं, भांगा पण तेमज कहेवा. एम यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे प्रयोगगति कही.

७. हे भगवन् ! ततगति केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेणे गाम यावत् सनिवेश तरफ प्रयाण कर्युं होय, परन्तु त्यां पहोंच्या सिवाय मार्गमां वर्ततो होय ते ततगति. एम ततगति कही

८. बन्धनछेदनगति केवा प्रकारनी छे ? जीव शरीरथी जुदो पडतां अने शरीर जीवथी जुदुं पडतां बन्धनछेदनगति थाय छे. एम बन्धनछेदनगति कही.

न्ति अस्मिन्' जेमां कर्मने वश थयेला प्राणीओ उत्पन्न थाय ते 'भव' एवी व्युत्पत्ति थाय छे नोभव-भव रहित, एटले कर्मना सब न्धथी प्राप्त थयेल नारकत्वादिपर्यायरहित ए भावार्थ छे अने तेवा प्रकारना पुद्गल अथवा सिद्ध छे, कारण के बन्ने पूर्वोक्त स्वरूप वाळा भवथी रहित छे ते रूपे उपपात-उपजवारूप गति ते उपपात गति

९. से किं तं उववायगती ? उववायगती तिविहा पन्नत्ता,तंजहा—खेत्तोववायगती, भवोववायगती, नोभवोववायगती। से किं तं खेत्तोववायगती ? खेत्तोववायगती पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—नेरइयखेत्तोववायगती १,तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती २, मणूसखेत्तोववायगती,३ देवखेत्तोववायगती ४, सिद्धखेत्तोववायगती ५। से किं तं नेरइयखेत्तोववायगती ? नेरइयखेत्तोववायगती सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—रणयप्पभापुढविनेरइयखेत्तोववायगती, जाव अधेसत्तमापुढविनेरइयखेत्तोववायगती। से त्तं नेरइयखेत्तोववायगती १। से किं तं तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती ? तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती। से त्तं तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती २। से किं तं म-

---

९. उपपातगति केटला प्रकारनी छे ? उपपातगति त्रण प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ क्षेत्रोपपातगति, २ भवोपपातगति, ३ नोभवोपपातगति. क्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? क्षेत्रोपपातगति पांच प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ नैरयिकक्षेत्रोपपातगति, २ तिर्यञ्चयोनिकक्षेत्रोपपातगति, ३ मनुष्यक्षेत्रोपपातगति, ४ देवक्षेत्रोपपातगति, ५ सिद्धक्षेत्रोपपातगति. नैरयिकक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? सात प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकक्षेत्रोपपातगति, यावत् ७ अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकक्षेत्रोपपातगति. एम नैरयिकक्षेत्रोपपातगति कही. तिर्यंचयोनिकक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? पांच प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकक्षेत्रोपपातगति, ५ यावत् पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकक्षेत्रोपपातगति. एम तिर्यंचयोनिकक्षेत्रोपपात गति कही. मनुष्यक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्च्छिममनुष्यक्षेत्रोपपातगति अने गर्भज-

णूसखेत्तोववायगती ? मणूसखेत्तोववायगती दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–संमुच्छिममणूसखेत्तोववायगती, गब्भवक्कंतियमणूसखेत्तोववायगती । सेत्तं मणूसखेत्तोववायगती ३ । से किं तं देवखेत्तोववायगती ? देवखेत्तोववायगती चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा–भवणवति०, जाव वेमाणियदेवखेत्तोववायगती । सेत्त देवखेत्तोववायगती ४ ।

१०. से किं तं सिद्धखेत्तोववायगती ? सिद्धखेत्तोववायगती अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–जंबुद्दीवे दीवे भरहेरयवासे सपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे चुल्लहिमवंतसिहरिवासहरपव्वतसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे हेमवतहेरण्णवाससपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे सद्दावइवियडावइवट्टवेयड्ढसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे महाहिमवंतरुप्पिवासहरपव्वतसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे हरिवासरम्मगवाससपक्खिं सप-

---

मनुष्यक्षेत्रोपपातगति एम मनुष्यक्षेत्रोपपातगति कही. देवक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? चार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे–१ भवनपतिदेवक्षेत्रोपपातगति, यावत् वैमानिकदेवक्षेत्रोपपातगति.

१०. सिद्धक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? अनेक प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–जंबूद्वीप नामे द्वीपमां भरत अने ऐरावत क्षेत्रनी उपर सपक्ष–चारे दिशाए अने सप्रतिदिक्–चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीपमां चुल्लहिमवंत अने शिखरी पर्वतनी उपर चारे दिशाए अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीपमां हैमवत अने हैरण्यवत क्षेत्रनी उपर चारे दिशाए अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीपनामे द्वीपमां शब्दापाती अने विकटापाती वृत्त वैताढ्यनी उपर चारे दिशा

डिदिसिं सिद्धक्खेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे गंधावातिमालवंतपव्वयवट्टवेयड्ढसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे णिसहणीलवंतवासहरपव्वतसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहावरविदेहसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरुसपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स सपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, लवणे समुद्दे सपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, धायइसंडे दीवे पुरिमद्धपच्चत्थिमद्धमंदरपव्वतसपक्खिं स-

---

अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां महाहिमवंत अने रुक्मी वर्षधर पर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां हरिवर्ष अने रम्यकवर्षनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां गन्धापाती अने माल्यवंत वृत्त वैताढयनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां निषध अने नीलवंत वर्षधर पर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां पूर्व विदेह अने पश्चिम विदेहनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां देवकुरु अने उत्तर कुरुनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मन्दर पर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. लवणसमुद्रनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. धातकिखंड द्वीपने विषे पूर्वार्ध अने पश्चिमार्धना मेरु पर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. कालोदसमुद्रनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोप-

पडिदिसिं सिद्धखित्तोववायगती, कालोयसमुद्दसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, पुक्खरवरदीवद्धपुरत्थिमद्धभरहेरवयवाससपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, एवं जाव पुक्खरवरदीवद्धपच्छिमद्धमंदरपव्वतसपक्खि सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगती, से तं सिद्धखेत्तोववायगती ५।

११ से किं तं भवोववायगती ? भवोववायगती चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा–नेरइयभवोववायगती, जाव देवभवोववायगती। से किं तं नेरइयभवोववायगती ? नेरइयभवोववायगती सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा, एवं सिद्धवज्जो भेदो भाणितव्वो जो चेव खेत्तोववायगतीए सो चेव, से तं देवभवोववायगती। से तं भवोववायगती।

१२. से किं तं नोभवोववायगती ? नोभवोववायगती दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पोग्गलणोभवोववायगती,

---

पातगति कही छे. पुष्करवरद्वीपार्धना पूर्वार्धना भरत अने ऐरावत क्षेत्रनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. ए प्रमाणे यावत्–पुष्करवरद्वीपार्धना पश्चिमार्धमां मेरुपर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. ए प्रमाणे सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे.

११. भवोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? भवोपपातगति चार प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–नैरयिकभवोपपातगति, यावत् देवभवोपपातगति. नैरयिकभवोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? नैरयिकभवोपपातगति सात प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–इत्यादि जे क्षेत्रोपपातगतिनो सिद्ध सिवायनो भेद छे ते अहीं कहेवो. एम देवभवोपपातगति कही. ए प्रमाणे भवोपपातगति कही.

१२. नोभवोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे–पुद्गलनोभवोपपातगति अने सिद्धनोभवोपपातगति.

सिद्धनोभवोववायगती । से किं तं पोग्गलनोभवोववायगती ? पोग्गलनोभवोववायगती जण्णं परमाणुपोग्गले लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चत्थिमिल्लं चरमंतं एगसमएणं गच्छति, पच्चत्थिमिल्लाओ वा चरमंताओ पुरत्थिमिल्लं चरमंतं एगसमएणं गच्छति, दाहिणिल्लाओ वा चरमंताओ उत्तरिल्लं चरमंतं एगसमएणं गच्छति, एवं उत्तरिल्लाओ दाहिणिल्लं, उवरिल्लातो हेट्ठिल्लं, हिट्ठिलाओ उवरिल्लं, से तं पोग्गलणोभवोववायगती ।

१३. से किं तं सिद्धणोभवोववायगती ? सिद्धणोभवोववायगती दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–अणंतरसिद्धणोभवोववायगती परंपरसिद्धणोभवोववायगती य । से किं तं अणंतरसिद्धणोभवोववायगती ? २ पण्णरसविहा पन्नत्ता, तंजहा–तित्थसिद्धअणंतरसिद्धणोभवोववायगती य जाव अणेगसिद्धणोभवोववायगती य । से किं तं प-

---

पुद्गलनोभवोपपातगति केवा प्रकारनी छे ? परमाणुपुद्गल जे लोकना पूर्वना चरमान्त–छेडाथी पश्चिमना चरमान्त सुधी एक समयमां जाय अने पश्चिमना चरमान्तथी पूर्वना चरमान्त सुधी एक समयमां जाय, ए प्रमाणे दक्षिणना चरमान्तथी उत्तरना चरमान्त सुधी अने उत्तरना चरमान्तथी दक्षिणना चरमान्त सुधी, उपरना चरमान्तथी नीचेना चरमान्त सुधी अने नीचेना चरमान्तथी उपरना चरमान्त सुधी जाय ते पुद्गलनोभवोपपातगति कहेवाय छे.

१३. सिद्धनोभवोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? सिद्धनोभवोपपातगति बे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—अनन्तरसिद्धनोभवोपपातगति अने परंपरसिद्धनोभवोपपातगति. अनन्तरसिद्धनोभवोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? पंदर प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—तीर्थसिद्धअनन्तरसिद्धनोभवोपपातगति, यावत् अनेकसिद्धअनन्तरसिद्धनोभवोपपातगति. परंपरसिद्धनोभवोपपातगति केटला प्रकारनी

रपरसिद्धणोभवोववायगती ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा-अपढमसमयसिद्धणोभवोववायगती, एवं दुसमयसिद्धणोभवोववायगती, जाव अणंतसमयसिद्धणोभवोववायगती, सेत्तं सिद्धणोभवोवायगती,'से तं णोभवोववायगती, से तं उववायगती ४।

१४. से किं तं विहायगती ? विहायगती सत्तरसविहा पण्णत्ता, तंजहा-फुसमाणगती १, अफुसमाणगती २, उवसपज्जमाणगती ३, अणुवसपज्जमाणगती ४, पोग्गलगती ५, मंडूयगती ६, णावागती ७, नयग ८, छायागती ९, छायाणुवातगती १०, लेसागई ११, लेसाणुवातगती १२, उद्दिस्सपविभत्तगती १३, चउपुरिसपविभ-

छे ? अनेक प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—अप्रथमसमय (प्रथमसमय सिवायना द्वितीयादि समयमां) सिद्धनी नोभवोपपातगति, ए प्रमाणे द्विसमयसिद्धनोभवोपपातगति, यावत् अनन्तसमयसिद्धनोभवोपपातगति. एम सिद्धनोभवोपपातगति कही. ए प्रमाणे नोभवोपपातगति कही अने उपपातगति कही.

१४. विहायोगति केटला प्रकारनी कही छे ? विहायोगति सत्तर प्रकारनी कही छे. ते आ प्रमाणे—१ स्पृशद्गति, २ अस्पृशद्गति, ३ उपसंपद्यमानगति, ४ अनुपसंपद्यमानगति, ५ पुद्गलगति, ६ मंडूकगति, ७ नौकागति, ८ नयगति, ९ छायागति, १० छायानुपातगति, ११ लेश्यागति, १२ लेश्यानुपातगति, १३ उद्दिश्य प्रविभक्तगति, १४ चतुःपुरुषप्रविभक्तगति, १५ वक्रगति, १६

१४ विहायसा गतिर्विहायोगतिः विहायसा-आकाशमां गति थाय ते विहायोगति ते उपाधि-विशेषणना भेदथी सत्तर प्रकारे छे—'स्पृशद्गति'-इत्यादि तेमां परमाणु वगेरे बीजा परमाणु वगेरेनी साथे परस्पर स्पर्श करी करीने गति करे ते स्पृशद्गति.

त्तगती १४, वंकगती १५, पंकगती १६, बंधणविमोयणगती १७।

पंकगति अने १७ बन्धनविमोचनगति.

कारण के स्पृशतः गतिः-स्पर्श करतां छतां गति थाय ते स्पृशद्गति एवी व्युत्पत्ति थाय छे' १. तेथी विपरीत अस्पृशद्गति, जे परमाणु आदि अन्य परमाणु आदिनी साथे परस्पर संबन्धने अनुभव्या सिवाय गति करे ते, जेम परमाणु एक समयमां एक लोकान्तथी बीजा लोकान्त सुधी जाय छे ते अस्पृशद्गति २. उपसंपद्यमानगति—जे अन्यनो उपसंपद्य-आश्रय करी तेनी सहाय वडे गमन करवुं ते, जेमके धनसार्थवाहना अवलंबन वडे धर्मघोषसूरिनुं गमन ते उपसंपद्यमानगति ३. अनुपसंपद्यमानगति—परस्पर अवलम्बन रहित पुरुषोनुं मार्गमां गमन ते अनुपसंपद्यमानगति ४. जे मंडूक-देडकानी पेठे कूदीने गमन करवुं ते मंडूकगति ६. नौकावडे मोटी नदी वगेरेमां जे गमन करवुं ते नौकागति ७. नैगमादि नयोए पोतपोताना मतनी पुष्टि करवी, अथवा परस्पर सापेक्ष बधा नयोए प्रमाण वडे अबाधित वस्तुनुं प्रतिपादन करवुं ते नयगति ८. छायाने अनुसरी तेना अवलम्बन वडे अथवा छायानो आश्रय करवा माटे गति करवी ते छायागति ९. छायानुपातगतिरिति—छायानी पोताना निमित्तरूप पुरुषादिना अनुपपात-अनुसरवा वडे गति, जेमके छाया पुरुषने अनुसरे छे, पण पुरुष छायाने अनुसरतो नथी. माटे छायानी अनुपपातगति कहेवाय छे, पण छायानी स्वतन्त्र गति नथी १०. जे तिर्यञ्च अने मनुष्योना कृष्णादिलेश्या द्रव्यो नीलादिलेश्या द्रव्यो पामीने तद्रूपादिपणे परिणमे छे ते लेश्यागति ११. लेश्यानुं अनुपात-अनुसरण, ते वडे जे गति ते लेश्यानुपातगति. 'लेश्याया अनुपात गतिः' ए विग्रहमां कर्ममां छट्ठी विभक्ति छे. एटले लेश्याने अनुसरीने गति थवी कारण के आगळ कहेवामां आवशे के 'जे लेश्याद्रव्योने ग्रहण करी जीव काळ करे छे ते लेश्यावाळामां उत्पन्न

१. अप्रथमसमयसिद्धनी भवोपपातगति बे समयथी मांडी यावत् अनन्त समय पर्यन्त होय छे. अथवा तो सिद्धपणानी उत्पत्ति समय पछी बे समय जेओने थया छे ते द्विसमय सिद्धनी भवोपपातगति, यावत् अनन्तसमयसिद्धनी भवोपपातगति जाणवी.

थाय छे, पण बीजी लेश्यावाळामां उपजतो नथी' माटे जीव लेश्या द्रव्यने अनुसरे छे, परंतु ते जीवने अनुसरता नथी १२ उद्दिश्य-प्रविभक्तगति'—प्रविभक्त-प्रतिनियत आचार्यादिकने उद्देशी जे तेनी पासे गमन करे ते उद्दिश्यप्रविभक्तगति १३ 'चतुःपुरुषप्रविभक्त-गति'—चार प्रकारनी पुरुषोनी प्रविभक्त-प्रतिनियत गति ते चार प्रकार बतावे छे—'समगं पट्ठियाणं'-एक साथे तैयार थयेला इत्यादि मूळ ग्रन्थ वडे सूत्रकार स्वयं कहेशे १४ वक्रगति चार प्रकारनी छे ते आ प्रमाणे—घट्टनता, स्तम्भनता, श्लेषणता अने पतनता तेमां घट्टनशब्दस्य भाव-घट्टन शब्दनो भाव एटले प्रवृत्तिनिमित्त घट्टन ज समजवो ए प्रमाणे शेषपदना शब्दार्थनो विचार करवो घट्टन-लंगडो गति, स्तम्भन-ग्रीवामां धमनी-रुधिरवाहक नाडी वगेरेनु रोकवु, अथवा आत्मानु शरीरना प्रदेशोमा रोकवु श्लेषण-साथळ वगेरेनो जानु वगेरेनी साथे संबन्ध पतन-उभा रहेला के चालतां पडवु आ घट्टनादि जीवने अनिष्ट होवाथी अने असमंजस होवाथी वक्रगति शब्द वडे कहा छे १५. पङ्क-कीचडमां गति ते पङ्कगति, पङ्कनु ग्रहण ते उदकनु पण सूचक छे तेथी कीचड अथवा पाणीमां अतिदुस्तर पोताना शरीरने कोइनी साथे 'उव्विहिया'-उद्वध्य बांधीने तेना बळथी गमन करे ते पङ्कगति १६ बन्धनथी विमोचन-छूटा थवा वडे जे गति ते बन्धनविमोचनगति अत्यंत पाकेलां अने तेथी बन्धनथी छूटां पडेला आम्रादि फळोनु जे विस्रसा-स्वभावथी प्रतिबंध सिवाय गमन ते बन्धनविमोचनगति ए भावार्थ छे १७ एज बाबत सूत्रकार जणावे छे-'से किं तं पओगई' 'प्रयोगगति केटला प्रकारनी छे' इत्यादि आ पदनी समाप्ति सुधी सुगम छे

परन्तु 'जंबूदीवे दीवे भरहेरवयवासेसु सपक्खिं सपडिदिसिं सिद्धखेत्तोववायगई' जंबूद्वीप नामे द्वीपमां जे भरतवर्ष अने ऐरावतवर्ष छे तेना उपर सिद्धक्षेत्रोपपातगति छे केवी रीते छे ते जणावे छे—'सपक्ष सप्रतिदिक्' सह-विद्यमान पक्ष-पूर्व, पश्चिम, उत्तर अने दक्षिणरूप पार्श्व भागो जे गतिमां छे तथा सह-विद्यमान प्रतिदिग्-अग्निकोण वगेरे विदिशाओ जे गतिमा छे एवी सिद्ध-क्षेत्रोपपात गति छे आ क्रियाविशेषण छे भावार्थ आ छे—जंबूद्वीप नामे द्वीपमां भरत अने ऐरावत क्षेत्रनी उपर सर्व दिशामां अने विदिशामां एवे सिद्धक्षेत्रोपपातगति छे. एम बाकीना सूत्रो संबन्धे पण जाणवु उपसंपद्यमान गतिसूत्रमां राजा-पृथिवीपति, युवराज-

१५. से किं तं फुसमाणगती ? फुसमाणगती जण्णं परमाणुपोग्गले(ल)दुपएसिय-जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं अण्णमण्णं फुसित्ता णं गती पवत्तइ, सेत्तं फुसमाणगती १। से किं तं अफुसमाणगती ? अफुसमाणगती जण्णं एतेसिं चेव अफुसित्ता णं गती पवत्तति, से तं अफुसमाणगती २। से किं तं उवसंपज्जमाणगती ? २ जण्णं रायं वा जुवरायं वा ईसरं वा तलवरं वा मांडबितं वा कुडुंबितं वा इब्भं वा सिट्ठिं वा सेणावतिं वा सत्थवाहं वा उवसंपज्जित्ता णं गच्छति, से तं उवसंपज्जमाणगती ३। से किं तं अणुवसंपज्जमाणगती ? २ जण्णं

---

१५. स्पृशद्गति केवा प्रकारनी छे ? परमाणुपुद्गल, द्विप्रदेशिक, यावत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोनी परस्पर स्पर्श करीने जे गति प्रवर्ते ते स्पृशद्गति. एम स्पृशद्गति कही १. अस्पृशद्गति केवा प्रकारनी छे ? परस्पर स्पर्श कर्या सिवाय ए परमाणु वगेरेनी जे गति प्रवर्ते ते अस्पृशद्गति. एम अस्पृशद्गति कही २. उपसंपद्यमानगति केवा प्रकारनी छे ? राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, मांडबिक, कौटुम्बिक-कुटुम्बस्वामी, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाहने अनुसरी जे गमन करे छे ते उपसंपद्यमानगति. एम उपसंपद्यमा-

---

राज्यनी चिंता करनार अने राजानो प्रतिनिधि, ईश्वर-अणिमा वगेरे ऐश्वर्ययुक्त,तलवर-संतुष्ट थयेला राजाए आपेल पट्टबन्ध वडे विभूषित राजाना जेवो, माडम्बिक-छिन्नभिन्न थयेला मंडब-गामविशेषनो अधिपति, कौटुंबिक-केटलाएक कुटुंबनो स्वामी, 'इभमर्हति इभ्यः' हाथीने योग्य होय ते धनवान्, श्रेष्ठी-श्रीदेवी युक्त सुवर्णना पट्टथी जेनुं मस्तक विभूषित छे एवो. सेनापति-राजाए स्थापेलो चतुरङ्ग सेनानो नायक, सार्थवाह-सार्थनो नायक. नौगतिसूत्रमां 'पुव्ववेतालीओ' इत्यादि. वैतालीशब्द अहीं देश्य होवाथी वेताला नदीना तटवाची छे.

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सोळमुं प्रयोगपद समाप्त.

एतेसिं चेव,अण्णमण्णं अणुवसंपज्जित्ता णं गच्छति, से तं अणुवसंपज्जमाणगती ४। से किं तं पोग्गलगती? २ जं णं परमाणुपोग्गलाणं जाव,अणंतपएसियाणं,खंधाण गती पवत्तति से तं पोग्गलगती ५। से किं तं मण्डूयगती ?,२ जण्ण मंडूओ फिडित्ता गच्छति, से तं मंडूयगती ६। से किं तं णावागती ?, जण्णं णावा पुव्ववेतालीओ दाहिणवेयालिं जलपहेणं गच्छति, दाहिणवेतालीओ वा अवरवेतालिं जलपहेणं गच्छति, से तं णावागती ७। से किं त णयगती? २ जण्णं णेगमसंगहववहारउज्जुसुयसद्दसमभिरूढएवंभूयाण नयाणं जा गती, अहवा सव्वणयावि जं इच्छंति, से तं नयगती ८। से किं तं छायागती? २ जं णं हयछायं वा गयछायं वा नरछायं वा किण्णरछायं वा महोरगच्छायं वा गंधव्वच्छायं वा उसहछायं वा रहछायं वा छत्तछायं वा उवसंपज्जि-

---

नगति कही ३. अनुपसंपद्यमानगति केवा प्रकारनी छे? एओ परस्पर एक बीजाने अनुसर्या सिवाय जे गमन करे छे ते अनुपसंपद्यमानगति ४. पुद्गलगति केवा प्रकारनी छे? परमाणुपुद्गल, यावत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोनी जे गति प्रवर्ते छे ते पुद्गलगति एम पुद्गलगति कही ५. मण्डूकगति केवा प्रकारनी छे? मंडूक-देडको कूदी कूदीने जे गमन करे छे ते मण्डूकगति. एम मण्डूकगति कही ६. नौकागति केवा प्रकारनी छे? नौका जे पूर्ववेतालीथी-वेताला नदीना पूर्वना कीनाराथी दक्षिणना कीनारे जळमार्गे गमन करे छे अने दक्षिणना कीनाराथी पश्चिमना कीनारे जाय छे ते नौकागति. एम नौकागति कही ७. नयगति केवा प्रकारनी छे? जे नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ अने एवंभूत नयोनी गति-प्रवृत्ति, अथवा सर्व नयो पण जे इच्छे-जे माने ते नयगति. एम नयगति कही ८. छायागति केवा प्रकारनी छे? जे घोडानी छाया, हाथीनी छाया, मनुष्यनी छाया, किन्नरनी छाया,

त्ताणं गच्छति, से तं छायागती ९। से किं तं छायाणुवायगती ? २ जेणं पुरिसं छाया अणुगच्छति, नो पुरिसे छायं अणुगच्छति, से तं छायाअणुवायगती १०। से किं तं लेस्सागती ? २ जण्णं किण्हलेसा नीललेसं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताते भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवं नीललेसा काउलेसं पप्प तारूवत्ताए जाव ता फासत्ताए परिणमति, एवं काउलेसावि तेउलेसं तेउलेसावि पम्हलेसं पम्हलेसावि सुक्कलेसं पप्प तारूवत्ताते जाव परिणमति, से तं लेसागती ११। से किं तं लेसाणुवायगती ? २ जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उववज्जति, तंजहा–किण्हलेसेसु वा जाव सुक्कलेसेसु वा, से तं लेसाणुवायगती १२। से किं तं उद्दिस्सपविभत्तगती ? २ जण्णं आयरियं वा उवज्झायं वा थेरं वा पवत्तिं वा गणिं वा

महोरगनी छाया, गांधर्वनी छाया, वृषभनी छाया, रथनी छाया अने छत्रनी छायाने अनुसरी गमन करे ते छायागति. एम छायागति कही ९. छायानुपातगति केवा प्रकारनी छे ? जे कारणथी पुरुषने छाया अनुसरे छे, पण पुरुष छायाने अनुसरतो नथी, एटले पुरुषने अनुसरी छाया गति करे छे ते छायानुपातगति. एम छायानुपातगति कही १०. लेश्यागति केवा प्रकारनी छे ? कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तद्रूपपणे–ते वर्णपणे, ते गन्धपणे, ते रसपणे अने ते स्पर्शपणे जे वारंवार परिणमे छे, ए प्रमाणे नीललेश्या कापोतलेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् ते स्पर्शपणे परिणमे छे, एम कापोतलेश्या पण तेजोलेश्याने, तेजोलेश्या पण पद्मलेश्याने अने पद्मलेश्या पण शुक्ललेश्याने पामीने जे तद्रूपपणे यावत् परिणमे छे ते लेश्यागति. एम लेश्यागति कही ११. लेश्यानुपातगति केवा प्रकारनी छे ? जे लेश्यावाळां द्रव्यो ग्रहण करी मरण पामे छे अने ते लेश्यावाळामां उत्पन्न थाय छे. जेमके कृष्णलेश्यावाळामां,

गणहर चा गणावच्छेदं वा उद्दिसिय २ गच्छति, से तं उद्दिस्सियपविभत्तगती १३। से किं तं चउपुरिसपविभत्तगती ? से जहानामए चत्तारि पुरिसा समगं पज्जवट्ठिया समगं पट्ठिता १, समगं पज्जवट्ठिया विसमगं पट्ठिया २, विसमं पज्जवट्ठिया विसमं पट्ठिया ३, विसमं पज्जवट्ठिया समगं पट्ठिया ४, से तं चउपुरिसपविभत्तगती १४। से किं तं वंकगती ? २ चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—घट्टनया, थंभणया, लेसणया, पवडणया, से तं वंकगती १५। से किं तं पंकगती ? २ से जहाणामते केइ पुरिसे पंकंसि वा उदयंसि वा कायं उव्विहिया २ गच्छति, से तं पंकगती १६। से किं तं बंधणविमोयणगती ? २ अप्पणं अंबाण वा अंबाडगाण वा माउलुंगाण वा बिल्लाण वा कविट्ठाण वा भव्वाण वा फणसाण वा दालिमाण वा पारेवताण वा अक्खोलाण वा चाराण वा बोराण वा

यावत्-शुक्ललेश्यावाळामां, ते लेश्यानुपातगति. एम लेश्यानुपातगति कही १२. उद्दिश्यप्रविभक्तगति केवा प्रकारनी छे ? जे आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, प्रवर्तक, गणी, गणधर के गणावच्छेदकने उद्देशी उद्देशीने जे गमन करे ते उद्दिश्यप्रविभक्तगति. एम उद्दिश्यप्रविभक्तगति कही १३. चतुःपुरुषप्रविभक्तगति केवा प्रकारनी छे ? जेमके चार पुरुषो एक साथे तैयार थाय अने एक साथे प्रयाण करे १, एक साथे तैयार थाय अने जुदा जुदा समये प्रयाण करे २, जुदा जुदा काळे तैयार थाय जुदा जुदा काळे प्रयाण करे ३ अने जुदा जुदा काळे तैयार थाय अने साथे प्रयाण करे ४, ते चतुःपुरुषप्रविभक्तगति एम चतुःपुरुषप्रविभक्तगति कही १४. वक्रगति केटला प्रकारनी छे ? वक्रगति चार प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ घट्टनता, २ स्तंभनता, ३ श्लेषणता अने ४ पतनता. एम वक्रगति कही १५. पंकगति केवा प्रकारनी छे ? जेम कोइ पुरुष पंक-कीचडमां के पाणीमां पोताना शरीरने टेको आपीने

तिंडुयाण वा पक्काणं परियागयाणं बंधणातो विप्पमुक्काणं निव्वाघातेणं अधे वीससाए गती पवत्तइ, से तं बंधणविमोयणगती । से तं विहायोगती १७ ।

पण्णवणाए भगवईए सोलसमं पओगपदं समत्तं ।

(स्थिर करी करीने) गमन करे ते पंकगति. एम पंकगति कही १६. बन्धनविमोचनगति केया प्रकारनी छे? पक्व थयेलां अति पाकेला अने बन्धनथी जुदा थयेला आम्र, अंबाडक, बीजोरां, बीलां, कोठां, भच्च फणस, दाडम, पारावत, अखोड, चार, बोर अने तिंदुकनी निर्व्याघात–प्रतिबन्ध सिवाय नीचे स्वाभाविक गति थाय ते बन्धनविमोचनगति. एम बन्धविमोचनगति कही. १७.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां सोळमुं प्रयोगपद समाप्त.

सत्तरसं पयं ।

पढमो उद्देसो ।

आहार समसरीरा उस्सासे कम्मवन्नलेसासु । समवेयण समकिरिया समाउया चेव बोद्धव्वा ॥१॥

सत्तरमुं लेश्या पद—प्रथम उद्देशक

१ सम आहार सम शरीर अने सम उच्छ्वास, २ सम कर्म, ३ सम वर्ण, ४ सम लेश्या, ५ सम वेदना, ६ सम क्रिया, अने ७ सम आयुष–ए सात अधिकारो प्रथम उद्देशकमां छे.

पम सोळमुं प्रयोगपद कह्युं, हवे सत्तरमा पदनो आरंभ कराय छे तेनो आ संबन्ध छे–अहीं पूर्वना पदमां प्रयोगपरिणाम संबन्धे कह्युं हवे परिणामनी समानताथी लेश्या परिणाम कहेवाय छे लेश्यानो शब्दार्थ शो छे? 'लिश्यते आत्मा कर्मणा सह अनया' जे वडे आत्मा कर्मनी साथे लेपाय ते लेश्या वळी कृष्णादि द्रव्यना प्रधानपणाथी आत्मानो परिणाम विशेष कह्युं छे के—

" कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात् परिणामो य आत्मनः । स्फटिकस्येव तत्रायं लेश्याशब्दः प्रवर्तते" ॥

कृष्णादि द्रव्यना प्रधानपणाथी–निमित्तपणाथी स्फटिकनी जेवा आत्मानो जे परिणाम थाय तेमां आ लेश्याशब्दनी प्रवृत्ति थाय छे (प्र०)—क्या कृष्णादि द्रव्यो छे? (उ०)—अहीं योग होय छे त्यारे लेश्या होय छे, योगना अभावमां नथी होती, माटे योगनी साथे अन्वय अने व्यतिरेक संबन्ध जणावाथी लेश्यानुं कारण योग छे एम निश्चय थाय छे केमके बधे कार्यकारणभावनो निश्चय 'अन्वय[1]

[1] तत्सत्वे तत्सत्वमन्वयः, तदभावे तदभावः व्यतिरेकः,—तेनो विद्यमानतामां तेनुं होवुं ते अन्वय अने तेना अभावमां तेनो अभाव थवो ते व्यतिरेक.

अने व्यतिरेकना दर्शनथी थाय छे. लेश्या योगनिमित्तक छे तेमां बे विकल्प छे-लेश्या योगना अन्तर्गत द्रव्यरूप छे के योगना कारणभूत कर्मद्रव्यरूप छे ? तेमां प्रथम योगना कारणभूत कर्मद्रव्यरूप नथी, कारण के तेमां बे विकल्प सिवाय त्रीजो विकल्प थतो नथी. ते आ प्रमाणे-लेश्या योगना निमित्त भूत कर्मद्रव्यरूप होय तो ते घाती कर्मद्रव्यरूप छे के अघाती कर्मद्रव्यरूप छे ? घाती कर्मद्रव्यरूप तो नथी, कारण के घाती कर्मनो अभाव छतां सयोगी केवलीने लेश्या होय छे. अघाती कर्मद्रव्यरूप पण नथी, कारण के अघाती कर्म होवा छतां अयोगी केवलीने लेश्या नथी, तेथी परिशेष न्यायथी लेश्या योगान्तर्गत द्रव्यरूप मानवी जोइए. ते योगान्तर्गत द्रव्यो ज्यां सुधी कषायो छे त्यां सुधी तेना उदयने वधारे छे. योगान्तर्गत द्रव्योनुं कषायना उदयने वधारवानुं सामर्थ्य छे, जेमके पित्तद्रव्यनुं. ते आ प्रमाणे-पित्तना प्रकोपथी क्रोध अत्यन्त वधतो जणाय छे. वळी बाह्य द्रव्यो पण कर्मना उदय अने क्षयोपशमादिमां कारणरूपे जणाय छे. जेमके ब्राह्मी औषधी ज्ञानावरणना क्षयोपशमनुं अने मदिरापान ज्ञानावरणना उदयनुं कारण छे. जो ज्ञानावरणना उदयनुं कारण न होय तो मदिरापानथी मनुष्य युक्त अने अयुक्तना विवेकरहित केम थाय ? दहिं निद्रारूप दर्शनावरणना उदयनुं कारण थाय छे. तो पछी योगद्रव्यो कषायोदयनुं कारण केम न होय ? तेथी लेश्याथी स्थितिपाकविशेष थाय छे एम शास्त्रमां कह्युं छे ते बरोबर घटे छे. कारण के स्थितिपाकविशेष एटले अनुभाग, तेनुं निमित्त कषायोदयना अन्तर्गत कृष्णादि लेश्याना परिणामो छे. अने ते वास्तविक रीते तेना अन्तर्गत होवाथी कषायोदयरूप ज छे. केवळ योगान्तर्गत द्रव्यरूप सहकारी कारणना भेद अने तेनी विचित्रता लीधे कृष्णादि भेदो थइ भिन्न अने प्रत्येकना तारतम्य भेदथी विचित्र परिणामो थाय छे. तेथी कर्मप्रकृतिकार भगवन्त शिवशर्मसूरिए शतकमां जे कह्युं छे—'ठिइअणुभागं कसायओ कुणइ' स्थिति अने अनुभाग कषायथी करे छे, ते पण युक्त छे. कारण के कषायोदयना अन्तर्गत कृष्णादि लेश्याना परिणामो पण कषायरूप छे. तेथी कोइ एम कहे छे के 'लेश्याने योगना परिणामरूप मानवामां आवे तो "जोगा पयडिपएसं ठिइअणुभागं कसाइओ कुणइ" योगथी प्रकृतिबन्ध अने प्रदेश-बन्ध करे छे अने कषायथी स्थिति अने अनुभागबन्ध करे छे-ए वचनथी लेश्या प्रकृतिबन्ध अने प्रदेशबन्धनुं कारण थशे, पण

स्थितिबन्धनुं कारण नहि थाय,' ते पण अयुक्त छे, कारण के तेने उपर कहेला भावार्थनुं ज्ञान नथी वळी लेश्या स्थितिनुं कारण नथी, पण कषायो छे लेश्या तो कषायोदयना अन्तर्गत अनुभागनुं कारण थाय छे ए हेतुथी ज 'स्थितिपाकविशेषस्तस्य भवति लेश्याविशेषेण'-स्थितिपाकविशेष लेश्याविशेषथी थाय छे'-एम कह्युं छे अहीं अनुभागनो बोध थवा माटे 'पाक'शब्दनुं ग्रहण करेलुं छे आ बाबत कर्मप्रकृतिटीकादिमां सुनिश्चित करी छे तेथी उपरनी शङ्का करनारने सिद्धान्तनुं परिज्ञान पण यथोक्त नथी

वळी जे कह्युं छे के "कर्मनिष्यन्दो लेश्या" —लेश्या ए कर्मना निष्यन्दरूप छे, लेश्या निष्यन्दरूप होय तो ज्यां सुधी कषायनो उदय छे त्यां सुधी निष्यन्द पण होय छे, माटे कर्मस्थितिनुं पण कारण थाय छे, ते पण अयुक्त छे कारण के लेश्या अनुभागबन्धनुं कारण छे, पण स्थितिबन्धनुं कारण नथी वळी कर्मनिष्यन्द ए शुं छे? कर्मना कल्क-असाररूप छे के कर्मना साररूप छे? कर्मना कल्करूप नथी, कारण के ते असाररूप होवाथी उत्कृष्ट अनुभागबन्धनुं कारण थइ शकते नहि कल्क असाररूप छे अने असार ए उत्कृष्ट अनुभाग बन्धनुं कारण केम थाय? अने उत्कृष्ट अनुभागबन्धनुं कारण पण लेश्या थाय छे हवे लेश्या ए कर्मना साररूप छे ए पक्षनो स्वीकार करवामां आवे तो ते कया कर्मनो सार छे? यथा समय आठे कर्मना साररूप छे एम कहेवामां आवे तो तेनो उत्तर ए छे के के शास्त्रमां आठे कर्मना विपाको वर्णववामां आव्या छे, पण कोइ कर्मनो लेश्या रूप विपाक वर्णववामां आव्यो नथी माटे कर्मना साररूप पक्षने केम अंगीकार करी शकाय? माटे पूर्वे कहेलो योगान्तर्गत द्रव्यरूप पक्ष ज श्रेयस्कर छे अने तेने हरिभद्रसूरि वगेरेए ते ते स्थळे अंगीकार करेलो छे

आ लेश्यापदमां छ उद्देशको छे, तेमा प्रथम उद्देशकना अर्थने संग्रह करनारी आ गाथा छे—'आहार समसरीरा' इत्यादि गाथाना पूर्वार्धमां 'सम'शब्द प्रत्येकनी साथे जोडाय छे अने उत्तरार्धमां तो दरेक पदनी साथे समशब्दनो साक्षात् सबन्ध करेलो छे. तेथी आ अर्थ थाय छे-यथा समान आहारवाळा, समान शरीरवाळा अने समान उच्छ्वासवाळा छे' ए प्रश्नसहित प्रथम अधिकार, 'समानकर्मवाळा' ए बीजो अधिकार, 'समानवर्णवाळा' ए त्रीजो अधिकार, 'समानलेश्यावाळा' ए चोथो अधिकार, 'समानवेदनावाळा'

१. णेरइया णं भंते ! सव्वे समाहारा, सव्वे समसरीरा, सव्वे समुस्सासनिस्सासा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'नेरइया नो सव्वे समाहारा, जाव णो सव्वे समुस्सासनिस्सासा' ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–महासरीरा य अप्पसरीरा य। तत्थ णं जे ते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गले

१. हे भगवन् ! नैरयिको बधा समान आहारवाळा, बधा समान शरीरवाळा अने बधा समान उच्छ्वास–निःश्वासवाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के 'नैरयिको बधा समान आहारवाळा नथी, यावत् बधा समान उच्छ्वास निःश्वासवाळा नथी' ? हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–महाशरीरवाळा अने अल्पशरीरवाळा. तेमां जेओ

ए पांचमो अधिकार, 'समानक्रियावाळा' ए छट्टो अधिकार, अने 'समानआयुष्यवाळा' ए सातमो अधिकार छे. (प्र०)—अहीं लेश्यापरिणामनो अधिकार छे, तेमां आ उपर बतावेला अर्थोनो केम उपन्यास करवामां आव्यो छे ? (उ०)—पूर्वे प्रयोगपदमां कहेवामां आव्युं छे के—केटला प्रकारनो गतिप्रपात छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे—१ प्रयोगगति, २ ततगति, ३ बंधनछेदनगति, ४ उपपातगति, ५ विहायोगति, तेमां उपपातगति त्रण प्रकारनी छे—१ क्षेत्रोपपातगति, भवोपपातगति, ३ नोभवोपपातगति. तेमां भवोपपातगति चार प्रकारनी छे—नैरयिकभवोपपातगति, देवभवोपपातगति, तिर्यञ्चभवोपपातगति, अने मनुष्यभवोपपातगति. तेमां नारकत्वादि भवरूपे उत्पन्न थयेला जीवोने उत्पत्ति समयथी मांडी आहारादि अर्थनो अवश्य संभव छे माटे लेश्याना अधिकारमां पण आहारादि अधिकारोनो उपन्यास करवामां आव्यो छे.

१. "यथोद्देशं निर्देशः" उद्देशना क्रम प्रमाणे निर्देश थाय छे–ए न्यायथी प्रथम 'समान आहारवाळा' ए प्रश्नसूचित अर्थाधिकार कहे छे—'नेरइया णं भंते ! सव्वे समाहारा' ? हे भगवन् ! बधा नैरयिको समान आहारवाळा छे–इत्यादि प्रश्नसूत्र

आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, अभिक्खणं ऊससंति अभिक्खणं नीससति। तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले ऊससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससति, आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च ऊससंति, आहच्च नीससंति, से एएणट्ठेणं गोयमा!

महाशरीरवाळा छे तेओ घणा पुद्गलोनो आहार करे छे, घणा पुद्गलोने परिणमावे छे, घणा पुद्गलोने उच्छ्वासरूपे ग्रहण करे छे अने घणा पुद्गलोने निःश्वासरूपे मूके छे, वारंवार आहार करे छे, वारंवार परिणमावे छे, वारंवार उच्छ्वासरूपे ग्रहण करे छे अने वारंवार निःश्वासरूपे मूके छे. तेमां जे अल्पशरीरवाळा छे ते अल्प पुद्गलोनो आहार करे छे, अल्प पुद्गलोने परिणमावे छे, अल्प पुद्गलोने उच्छ्वासरूपे ग्रहण करे छे अने निःश्वासरूपे मूके छे. आहच्च—कदाचित् आहार ग्रहण करे छे, कदाचित् परिणमावे छे, कदाच

सुगम छे भगवान् उत्तर कहे छे—'गोयमा' इत्यादि—हे गौतम! आ अर्थ समर्थ—युक्तियुक्त नथी पुनः प्रश्न करे छे—'से केणट्ठेण' —शा हेतुथी एम कहो छो? इत्यादि 'से' शब्द अथशब्दना अर्थमां छे अथ केनार्थेन—क्या प्रयोजनथी हे भगवन्! एम कहो छो? भगवान् कहे छे—'हे गौतम' इत्यादि नैरयिको बे प्रकारना छे—अल्पशरीरवाळा अने महाशरीरवाळा अहीं अल्पपणु अने महत्त्व—महापणु सापेक्ष छे तेमां जघन्य अल्पपणु अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण अने उत्कृष्ट महत्त्व पांचसो धनुषप्रमाण छे आ भवधारणीय (स्वाभाविक) शरीरनी अपेक्षाए समजवु उत्तरवैक्रियनी अपेक्षाए जघन्य अल्पपणु अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण अने उत्कृष्ट महत्त्व हजार धनुषप्रमाण जाणवु ए कथन वडे 'समशरीरवाळा होय छे'? ए प्रश्ननो उत्तर कह्यो. (प्र०)—अहीं प्रथम आहार संबन्धी प्रश्न छे अने शरीर संबन्धी प्रश्न बीजा स्थानमां कहेलो छे, तो तेनो प्रथम उत्तर केम आप्यो? (उ०)—शरीरनी

एवं वुच्चइ–'नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, णो सव्वे समुस्सासनिस्सासा।

उच्छ्वास ले छे अने कदाचित् मूके छे, ए हेतुथी एम कहुं छुं के 'नैरयिको बधा समान आहारवाळा नथी, बधा समान शरीरवाळा नथी अने बधा समान उच्छ्वासनिःश्वासवाळा नथी'.

विषमता कहेवाथी आहार अने उच्छ्वासनी विषमता सारी रीते कही शकाय छे, माटे बीजा स्थानमां कहेला शरीरसंबन्धी प्रश्ननो प्रथम उत्तर आप्यो छे. हवे आहार अने उच्छ्वासनो उत्तर आपे छे–'तत्थ णं' इत्यादि. तेमां अल्पशरीरवाळा अने महाशरीरवाळारूप बे राशिमां जेओ जेनाथी महाशरीरवाळा छे तेओ तेनी अपेक्षाए मोटा शरीरवाळा होवाथी घणा पुद्गलोनो आहार करे छे, लोकमां पण एम देखाय छे के मोटा शरीरवाळो घणुं खाय छे, जेमके हाथी, अने नाना शरीरवाळो ससलानी पेठे अल्प खाय छे. बहुलतानी अपेक्षाए आ उदाहरण आपेलुं छे, अन्यथा तेवा प्रकारना मनुष्यनी पेठे कोइ मोटा शरीरवाळो पण थोडुं खाय छे अने कोइ नाना शरीरवाळो पण घणुं खाय छे. नारको तो [1]उपपात वगेरे निमित्ते सातवेदनीयना उदय सिवाय असातवेदनीयना उदयमां वर्तता होवाथी जेम महाशरीरवाळा, दुःखी अने तीव्र आहारनी इच्छावाळा होय छे तेम अवश्य घणा पुद्गलोनो आहार करे छे अने घणापुद्गलोने परिणमावे छे, कारण के आहारना पुद्गलोने अनुसरी परिणाम होय छे. जो के परिणाम संबन्धे प्रश्न नथी कर्यो छतां ते आहारनुं कार्य छे एम धारी उत्तर आप्यो छे. तथा 'बहुतराए पुग्गले ऊससंति' तेमज मोटुं शरीर होवाथी घणां पुद्गलोने उच्छ्वासरूपे ग्रहण करे छे अने 'नीससंति' निःश्वासरूपे मूके छे. लोकमां पण देखाय छे के मोटा शरीरवाळा ते जातना बीजा प्राणीनी अपेक्षाए बहु उच्छ्वास अने निःश्वासवाळा होय छे अने दुःखी पण होय छे. ते प्रमाणे नारको दुःखी होय छे. आहारनुं कालनी

१ अहीं तीर्थंकरना उपपात–जन्म वगेरे कल्याणक निमित्ते नारकोने क्षण पर्यन्त सातानो उदय होय छे, ते सिवाय असातानो निरंतर उदय होय छे.

२. नेरइया णं भंते ! सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'नेरइया नो

२. हे भगवन् ! नैरयिको बधा समानकर्मवाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के

अपेक्षाए विषमपणु बतावे छे-'अभिक्खणं' अभीक्ष्ण-वारंवार आहार करे छे जेओ जेनाथी मोटा शरीरवाळा छे तेओ तेनी अपेक्षाए शीघ्र अतिशीघ्र आहार ग्रहण करवाना स्वभाववाळा होय छे, अभीक्ष्ण-वारंवार उच्छ्वास ले छे अने वारंवार निःश्वास मूके छे महाशरीरवाळा होवाने लीधे अत्यन्त दुःखी होवाथी निरंतर उच्छ्वासादि क्रिया करे छे ए भावार्थ छे 'तत्थ ण जे ते' इत्यादि अहीं 'जे' जेओ कहेवा मात्रथी अर्थ सरे छे तो 'जे ते' जेओ-तेओ कहेवानु कारण तेवा प्रकारनी भाषाशैली छे जेओ अल्पशरीरवाळा छे तेओ अत्यन्त अल्प पुद्गलोनो आहार करे छे एटले जेओ जेनाथी अल्पशरीरवाळा छे तेओ तेने ग्रहण करवा लायक पुद्गलोनी अपेक्षाए अल्प शरीर होवाथी घणा अल्प पुद्गलोनो आहार करे छे 'आहच्च आहारयंति'-कदाचित् आहार करे छे अने कदाचित् आहार करता नथी, कारण के महाशरीरवाळाने आहारग्रहण करवानु अन्तर छे तेनी अपेक्षाए ते [illegible] काळना अन्तर बडे आहार करे छे ए भावार्थ छे 'आहच्च ऊससंति, आहच्च नीससंति'-कदाचित् उच्छ्वास ले छे अने कदाचित् मूके छे कारण के एओ अल्प शरीरवाळा होवाथी महाशरीरवाळानी अपेक्षाए अल्प दुःखवाळा होवाथी आहच्च-कदाचित् एटले सान्तरपणे उच्छ्वासादि क्रिया करे छे ए भावार्थ छे अथवा अपर्याप्तिकाळे-अपर्याप्तावस्थामां अल्पशरीरवाळा लोमाहारनी अपेक्षाए आहार करता नथी, अने उच्छ्वासपर्याप्ति बडे अपर्याप्ता होवाथी उच्छ्वास लेता नथी, अन्य काळे आहार ग्रहण करे छे अने उच्छ्वास ले छे, माटे कह्यु छे के-'आहच्च आहारयंति आहच्च ऊससंति' कदाचित् आहार ले छे अने कदाचित् उच्छ्वास ले छे' 'ते हेतुथी' इत्यादि निगमन वाक्य सुगम छे

२. हवे समानकर्मपणानो अधिकार कहे छे-'नेरइया णं' हे भगवन् ! नैरयिको बधा समान कर्मवाळा छे'-इत्यादि बधा नैरयिको समान कर्मवाळा नथी तेनु कारण बतावे छे-नैरयिको बे प्रकारना छे-'पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य' पूर्वे उत्पन्न

सव्वे समकम्मा' । गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'नेरइया णो सव्वे समकम्मा' ।

३. नेरइया णं भंते ! सव्वे समवन्ना ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'नेरइया नो

'नैरयिको वधा समानकर्मवाळा नथी' ? हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–पूर्वे उत्पन्न थयेला, अने पाछळ उत्पन्न थयेला. तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे ते अल्पकर्मवाळा छे अने पाछळ उत्पन्न थयेला छे ते महाकर्मवाळा छे. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'नैरयिको वधा समान कर्मवाळा नथी.

३. हे भगवन् ! नैरयिको वधा समानवर्णवाळा छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो

थयेला अने पश्चात्–पछी उत्पन्न थयेला. पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पछी उत्पन्न थयेला नैरयिकोमां जेओ पूर्वे उत्पन्न थयेला छे तेओए नरकायुष, नरकगति अने असातावेदनीयादि घणा कर्मनी निर्जरा करी होय छे अने थोडां कर्म वाकी होय छे, तेथी तेओ अल्प कर्मवाळा होय छे. बीजा तेनाथी विपरीत होवाथी महाकर्मवाळा छे. आ हकीकत समान स्थितिवाळा जे नारको छे तेने आश्रयी कहेली समजवी, जो एम न होय तो रत्नप्रभामां उत्कृष्ट स्थितिवाळा नारकनुं घणुं आयुष क्षीण थयुं होय अने पल्योपमनुं आयुष वाकी होय त्यारे ते ज रत्नप्रभामां दश हजार वर्षनी स्थितिवाळो अन्य कोइ नारक उत्पन्न थाय ते पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पल्योपम वाकी रहेला आयुषवाळा नारकनी अपेक्षाए महाकर्मवाळो कही शकाय ?

३. वर्णसूत्रमां 'विशुद्धतरवर्णकाः'–पूर्वे उत्पन्न थयेला नैरयिको विशुद्धतर वर्णवाळा छे. शा हेतुथी ? नारकोने अप्रशस्त वर्णनाम-

सव्वे समवन्ना' ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवन्नतरागा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-'णेरइया नो सव्वे समवन्ना' । एवं जहेव वन्नेण भणिया तहेव लेसासु विसुद्धलेसतरागा

के 'नैरयिको बधा समानवर्णवाळा नथी'? हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पाछळ उत्पन्न थयेला. तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे ते विशुद्धतरवर्णवाळा अने जे पाछळ उत्पन्न थयेला छे ते अविशुद्धवर्णवाळा छे, ए हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'नैरयिको बधा समानवर्णवाळा नथी'. ए प्रमाणे जेम वर्ण संबंधे कह्युं तेम लेश्यासंबंधे विशुद्धलेश्यावाळा

कर्मनो अशुभ अने तीव्र रसोदय भवनी अपेक्षाए छे ए संबन्धे कह्यु छे के—'कालभवखेत्तवेक्खाओ उदओ सविवागअविवागो' । काळ, भव अने क्षेत्रनी अपेक्षाए कर्मनो विपाकसहित के विपाक रहित उदय होय छे (प्र०)—तेमां मात्र आयुषकर्म भवविपाकिनी प्रकृति छे, तो अप्रशस्त वर्णनामकर्मनो उदय भवसापेक्ष केम कहो छो? (उ०)—ए सत्य छे, तो पण आ अप्रशस्त नामकर्मनो तीव्ररसवाळो शुभ उदय पूर्वाचार्योए कहेलो छे अने ते पूर्वे उत्पन्न थयेला नारकोए भोगवी घणो क्षय कर्यो होय छे, अने थोडो बाकी छे अने वर्णनाम कर्म पुद्गलविपाकिनी प्रकृति छे, तेथी पूर्वे उत्पन्न थयेला नारको विशुद्धतर वर्णवाळा छे, पाछळ उत्पन्न थयेला नारकोए हजी सुधी भोगवीने घणो क्षय कर्यो नथी, माटे तेओ अविशुद्ध वर्णवाळा छे आ हकीकत पण समानस्थितिवाळा नारकोनी अपेक्षाए समजवी अन्यथा पूर्वे कह्या प्रमाणे अनियतपणानो संभव छे 'एवं जहेव वन्नेण भणिया' इत्यादि ए प्रमाणे जेम वर्ण संबन्धे कह्यु तेम लेश्या संबन्धे पण कहेवु ते आ प्रमाणे—"हे भगवन्! बधा नैरयिको समान लेश्यावाळा होय छे? हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी' इत्यादि परंतु पूर्वे उत्पन्न थयेला विशुद्ध लेश्यावाळा छे कारण के पूर्वे उत्पन्न थयेला नारकोए घणा अप्रशस्त लेश्याद्रव्यो अनुभवी

अविसुद्धलेसतरागा य भाणियव्वा ।

४. नेरइया णं भंते ! सव्वे समवेदणा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-'नेरइया णो सव्वे समवेयणा' ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सन्निभूया य असन्निभूया य । तत्थ णं जे ते सन्निभूता ते णं महावेदणतरागा, तत्थ णं जे ते असन्निभूता ते णं अप्पवेदणतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा !

अने अविशुद्धलेश्यावाळा कहेवा.

४. हे भगवन् ! नैरयिको बधा समानवेदनावाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'नैरयिको बधा समानवेदनावाळा नथी ?' हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-संज्ञीभूत-सम्यग्दृष्टि अने असंज्ञीभूत-मिथ्यादृष्टि. तेमां जेओ संज्ञीभूत छे ते महावेदनावाळा छे अने असंज्ञीभूत छे ते अल्पवेदनावाळा छे. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं

अनुभवीने क्षीण कर्या छे, ते माटे ते विशुद्ध लेश्यावाळा छे अने बीजा पाछळ उत्पन्न थयेला होवाथी तेथी विपरीत अविशुद्धलेश्या-वाळा छे. आ लेश्यासूत्र पण समान स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए समजवुं.

४. हवे समानवेदनावाळा पद वडे सूचित अर्थाधिकारनुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे—'नेरइया णं भंते ! सव्वे समवेदणा ?' नैरयिको बधा समानवेदना-समान पीडावाळा छे ?-इत्यादि. तेमां जेओ संज्ञीभूत छे एटले पूर्वे संज्ञी पंचेन्द्रिय छतां नारकपणुं पाम्यां छे तेओ महावेदनावाळा छे, कारण के तीव्र अशुभ अध्यवसाय वडे अशुभतर कर्मनो बन्ध करवाथी महानरकोमां उत्पन्न थयेला छे. जेओ असंज्ञीभूत-असंज्ञी पंचेन्द्रिय छतां नैरयिक भावने प्राप्त थयेला छे तेओ अल्पवेदनावाळा छे. असंज्ञी चारे गतिमां उत्पन्न थाय थाय छे, कारण के तेने तेने योग्य आयुपना बन्धनो संभव छे. ते संबन्धे कह्युं छे के—"कइविहे णं भंते ! असन्निआउए पन्नत्ते ?

एवं वुच्चइ–'नेरइया नो सव्वे समवेयणा' ।

के–'नैरयिको बधा समानवेदनावाळा नथी.'

गोयमा! चउव्विहे असण्णिआउए पन्नत्ते, तंजहा–नेरइयअसण्णिआउए, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सजोणियअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए।" हे भगवन्! केटला प्रकारनु असंज्ञी आयुष कह्यु छे? हे गौतम! असंज्ञी आयुष चार प्रकारनु कह्यु छे ते आ प्रमाणे—नैरयिकअसंज्ञीआयुष, तिर्यंचयोनिकअसंज्ञीआयुष, मनुष्ययोनिअसंज्ञीआयुष अने देवअसंज्ञीआयुष तेमा देव अने नारकना असंज्ञीना आयुषनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी छे अने उत्कर्षथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग छे तिर्यंच अने मनुष्यनी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पल्योपमनो असंख्यातमो भाग छे ए प्रमाणे असंज्ञी छता तेओ नरकमा उत्पन्न थाय छे तेओ अति तीव्र अशुभ अध्यवसायना अभावथी रत्नप्रभामां ज्यां अति तीव्र वेदना नथी एवा नरकावासमा उत्पन्न थाय छे, अने तेओ अल्प स्थितिवाळा होय छे तेथी अल्पवेदनावाळा छे अथवा संज्ञीभूत-पर्याप्ता, तेओ पर्याप्ता होवाथी महावेदनावाळा छे अने असंज्ञी अल्पवेदनावाळा छे, कारण के अपर्याप्ता होवाथी प्राय' वेदनानो असंभव छे [मनरूप करणना अभावमा वेदनानो अनुभव थतो नथी] अथवा संज्ञा-सम्यग्दर्शन, ते जेओने छे ते संज्ञी-सम्यग्दृष्टिपणाने प्राप्त थयेला, तेओ महावेदनावाळा छे, कारण के पूर्वे करेला कर्मना विपाकनु स्मरण करता तेओने 'अहो मोटु दुःख अमने प्राप्त थयु छे, अति विषम विषयना उपभोग वडे घेरित चित्तवाळा अमे सकल दुःखनो क्षय करनार भगवन्त अर्हत्प्रणीत धर्म न कर्यो' आवा प्रकारे मोटु दुःख मनमां थाय छे, तेथी महावेदनावाळा छे असंज्ञी-मिथ्यादृष्टि तेओ 'पोताना करेला कर्मनु आ फळ छे' एम जाणता नथी, नहि जाणता तेओ पश्चात्तापरहित मानसवाळा होय छे, तेथी अल्पवेदनावाळा होय छे

५. णेरइया णं भंते ! सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति-'नेरइया णो सव्वे समकिरिया' ? गोयमा ! नेरइया तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-सम्मद्दिट्ठी, मिच्छद्दिट्ठी, सम्मामिच्छद्दिट्ठी। तत्थ णं जे ते सम्मद्दिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ कज्जंति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया। तत्थ णं जे ते मिच्छद्दिट्ठी जे सम्मामिच्छद्दिट्ठी तेसि णं नियताओ पञ्च किरियाओ क-

---

५. हे भगवन् ! वधा नैरयिको समानक्रियावाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'नैरयिको वधा समानक्रियावाळा नथी' ? हे गौतम ! नैरयिको त्रण प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि. तेमां जे सम्यग्दृष्टि छे तेओने चार क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे-१ आरंभिकी २ पारिग्रहिकी, ३ मायाप्रत्ययिकी अने ४ अप्रत्याख्यानक्रिया. तेमां जे मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे तेओने अवश्य पांच क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे-

---

५. हवे 'समकिरिया' समान क्रिया सबन्धी अधिकारनो विचार करता सूत्रकार कहे छे-'नेरइया णं भंते ! सव्वे समकिरिया' हे भगवन् ! वधा नैरयिको समान क्रियावाळा छे ?-इत्यादि. सम-तुल्य छे कर्मना हेतुभूत आरंभिकी वगेरे क्रियाओ जेओने ते समानक्रियावाळा कहेवाय छे. आरंभ-पृथिव्यादि जीवनी हिंसा ते प्रयोजन जेनुं छे ते आरंभिकी. 'परिग्गहिया' इति. धर्मना उपकरण सिवायनी वस्तु राखवी अने धर्मोपकरणमां पण मूर्छा राखवी ते परिग्रह, ते जेनुं प्रयोजन छे ते पारिग्रहिकी. 'मायावत्तिया' माया-वक्रता, सरलतानो अभाव, ते क्रोधादिना उपलक्षण-सूचक होवाथी क्रोधादि पण ग्रहण करवा, ते जेनुं प्रत्यय-कारण छे ते मायाप्रत्ययिकी. 'अपच्चक्खाणकिरिया' अप्रत्याख्यान-विरतिनो अभाव, ते वडे कर्मबन्धनना कारणभूत जे क्रिया ते अप्रत्याख्यानक्रिया. ए चार क्रियाओ सम्यग्दृष्टिने होय छे, सम्यग्मिथ्यादृष्टि अने मिथ्यादृष्टिने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीसहित पांच क्रियाओ 'नियइयाओ' नियत-

ज्जंति, तंजहा–आरम्भिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ–'नेरइया नो सव्वे समकिरिया' ।

६. नेरइया णं भंते ! सव्वे समाउआ, सव्वे समोववन्नगा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! नेरइया चउविहा पन्नत्ता, तंजहा–अत्थेगतिया समाउआ समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया-

---

१ आरम्भिकी, २ पारिग्रहिकी, ३ मायाप्रत्ययिकी, ४ अप्रत्याख्यानक्रिया अने ५ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छु के 'नैरयिको बधा समानक्रियावाळा नथी.'

६. हे भगवन् ! नैरयिको बधा समानआयुष्यवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला होय छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! नैरयिको चार प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–१ केटलाएक समान आयु-

---

अवश्य होय छे मिथ्यादर्शन प्रत्यय–कारण जेनु छे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी ते सिवाय सम्यग्दृष्टिने ए क्रियाओ अनियत होय छे कारण के संयतादिने विषे व्यभिचार–अनियतपणु छे

(प्र०)—मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योग ए कर्मबन्धना हेतुओ प्रसिद्ध छे, अहीं तो कर्मबन्धना हेतुरूपे आरंभिकी वगेरे क्रियाओ कही छे, तो परस्पर विरोध केम नथी ? (उ०)—अहीं आरम्भ अने परिग्रह शब्दवडे योग ग्रहण करेलो छे, कारण के योगो आरंभ अने परिग्रहरूप छे अने बाकीना पद वडे बाकीना बन्धहेतुओनु ग्र[illegible] थाय छे, एटले मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी वडे मिथ्यादर्शननु, अप्रत्याख्यानक्रिया वडे अविरतिनु अने मायाप्रत्यय क्रिया वडे कषायनु ग्रहण करेलु छे, माटे तेमां कइ पण दोष नथी

६ नेरइया ण भंते ! सव्वे समाउआ'–हे भगवन् ! बधा नैरयिको समान आयुष्यवाळा छे–इत्यादि प्रश्नना उत्तररूप चतुर्भंगी

विसमोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ।

७. असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? एवं सव्वेवि पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? जहा नेरइया । असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केण-

पवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला, २ केटलाएक समानआयुपवाळा अने विषम–जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला, ३ केटलाएक विषम–जुदा जुदा आयुपवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला अने ४ केटलाएक जुदा जुदा आयुपवाळा अने जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'नैरयिको वधा समान आयुपवाळा नथी अने साथे उत्पन्न थयेला नथी'.

७. हे भगवन् ! वधा असुरकुमारो समान आहारवाळा छे ? एम समशरीरादि वधा संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! आ अर्थ युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? नैरयिकोनी पेठे कहेवुं. हे भगवन् ! असुरकुमारो वधा समानकर्मवाळा छे ? हे गौतम ! आ

छे, तेनो विचार कराय छे–जेओए दस हजार वरसनुं आयुप बांधेलुं छे एवा अने साथे उत्पन्न थयेला ए पहेलो भंग, तेज दस हजार वरसनी स्थितिवाळा नरकावासमां केटला एक प्रथम उत्पन्न थयेला छे अने बीजा पछी उत्पन्न थयेला छे-ए बीजो भंग, अन्य नारकोए विषम-भिन्न आयुप बांध्युं छे, केटलाएके दस हजार वरसनी स्थितिवाळा अने केटलाएके पंदर हजार वर्षनी स्थितिवाळा नरक संबन्धी आयुप बांध्युं छे अने साथे उत्पन्न थयेला छे-ए त्रीजो भंग. केटलाएक सागरोपमनी स्थितिवाळा छे अने केटलाएक दस हजार वरसनी स्थितिवाळा छे एम विषम स्थितिवाळा छे अने जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला छे. ए चोथो भंग छे.

७. हवे असुरकुमारादिने विषे आहारादि नव पदनो विचार करे छे–'असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा' हे भगवन् ! असुर-

ट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं महाकम्मतरा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–'असुरकुमारा णो सव्वे समकम्मा' । एवं वन्नलेस्साए पुच्छा । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अविसुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं विसुद्धवन्नतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा !

अर्थ युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! असुरकुमारो बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे–पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पछी उत्पन्न थयेला तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे ते महाकर्मवाळा छे अने जे पछी उत्पन्न थयेला छे ते अल्पकर्मवाळा छे, ते हेतुथी एम कहुं छुं के 'असुरकुमारो बधा समानकर्मवाळा नथी'. ए प्रमाणे वर्ण अने लेश्या संबंधे पृच्छा करवी. तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे, ते अविशुद्धवर्णवाळा छे अने जे पछी उत्पन्न थयेला छे ते विशुद्धवर्णवाळा छे, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं

कुमारो बधा समानआहारवाळा छे ?–इत्यादि आ सूत्र नारकसूत्रना समान छे, तो पण तेमो विशेषतः विचार कराय छे—असुरकुमारोनुं अल्प शरीर भवधारणीय शरीरनी अपेक्षाए जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण छे अने महा शरीर उत्कर्षथी सात हाथ प्रमाण छे उत्तर वैक्रियनी अपेक्षाए अल्प शरीर जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण अने उत्कर्षथी महा शरीर लाख योजन प्रमाण छे तेमां जेओ महाशरीरवाळा छे तेओ मनवडे भक्षण करवा रूप आहारनी अपेक्षाए घणा पुद्गलोनो आहार करे छे कारण के देवोने मनोभक्षणरूप आहार संभवे छे अने ते प्रधान आहार छे, शास्त्रमां प्रधाननी अपेक्षाए वस्तुनो निर्देश थाय छे, तेथी अल्प शरीरवडे ग्रहण करवा लायक आहारना पुद्गलोनी अपेक्षाए जे घणा पुद्गलो छे तेनो तेओ आहार करे छे 'घणा परिणमावे छे' —इत्यादि त्रण पदनी व्याख्या पूर्वनी पेठे समजवी तथा 'वारंवार आहार करे छे अने वारंवार उच्छ्वास ले छे' अहीं जेओ एक दिवसादि

एवं वुच्चइ–'असुरकुमारा णं सव्वे णो समवन्ना'। एवं लेस्साएवि, वेयणाए जहा नेरइया, अवसेसं जहा नेरइयाणं। एवं जाव थणियकुमारा।

के 'असुरकुमारो बधा समानवर्णवाळा नथी.' ए प्रमाणे लेश्या संबंधे पण समजवुं. वेदना संबन्धे नैरयिकोनी पेठे समजवुं. बाकी बधुं नैरयिकोने कह्युं तेम कहेवुं. ए प्रमाणे स्तनितकुमार सुधी जाणवुं.

व्यतीत थया पछी आहार करे छे अने सात स्तोक वगेरे काळ व्यतीत थया बाद उच्छ्वास ले छे तेने आश्रयी वारंवार कह्युं छे, कारण के जेओ कंइक अधिक एक हजार वरस पछी आहार करे छे अने कंइक अधिक एक पखवाडीया पछी उच्छ्वास ग्रहण करे छे तेनी अपेक्षाए ए असुरकुमारोनो अल्प काळे आहार अने उच्छ्वास होय छे, तेथी वारंवार आहार करे छे-इत्यादि व्यवहार थाय छे. तथा अल्प शरीरवाळा अल्प शरीर होवाथी अतिअल्प पुद्गलोनो आहार करे छे, अने उच्छ्वास ले छे. जे तेओना आहार अने उच्छ्वासनुं कदाचितपणुं ते महाशरीरवाळाना आहार अने उच्छ्वासना अन्तर करतां घणुं वधारे अन्तर होवाथी कह्युं छे. तेओ वच्चेना अन्तरमां आहारादि करता नथी, ते सिवाय बीजा समये करे छे एवी विवक्षा छे. तेथी महाशरीरवाळाने पण आहार अने उच्छ्वासनुं अन्तर छे पण ते अल्प होवाथी तेनी विवक्षा करी नथी, तेथी 'वारंवार आहारादि करे छे' एम कह्युं छे. महाशरीरवाळा तेओने आहार अने उच्छ्वासनुं अल्प अन्तर अने अल्पशरीरवाळाने घणुं अन्तर छे ए सिद्ध छे. जेमके सौधर्मादि देवो सात हाथ प्रमाण होवाथी महाशरीरवाळा छे, तेओने आहारनुं अन्तर बे हजार वरस अने श्वासोच्छ्वासनुं अंतर बे पखवाडीआ छे. अने अनुत्तर देवोनुं हस्तप्रमाण शरीर होवाथी ते अल्पशरीरवाळा छे तेथी तेओनुं आहारनुं अन्तर तेत्रीश हजार वर्ष अने श्वासोच्छ्वासनुं अन्तर तेत्रीश पखवाडीआ छे. ए महाशरीरवाळाने वारंवार आहार अने उच्छ्वासना कथन वडे तेओनी अल्प स्थिति जणाय छे, अने बीजानी तेथी विपरीत मोटी स्थिति वैमानिक देवनी पेठे जाणवी. अथवा लोमाहारनी अपेक्षाए वारंवार प्रतिसमय

महाशरीरवाळा पर्याप्तावस्थामां आहार करे छे श्वासोच्छ्वास पूर्वोक्त प्रमाणे घटे होवा छतां पूर्व भवनी अपेक्षाए वारंवार कहेवाय छे अपर्याप्तावस्थामां तो अल्पशरीरवाळा लोमाहारथी आहार करता नथी, पण ओजाहारथी आहार करे छे तेथी 'तेओ कदाचित् आहार करे छे' एम कहेवाय छे अपर्याप्तावस्थामां उच्छ्वास लेता मूकता नथी बीजा समये ले छे, माटे कहेवामां आव्युं छे के 'कदाचित् उच्छ्वास ले छे'

हवे कर्मसूत्र कहे छे—'असुरकुमारा णं भंते ! सव्वे समकम्मा' ? हे भगवन् ! बधा असुरकुमारो समान कर्मवाळा छे ?–इत्यादि अहीं नैरयिकसूत्रनी अपेक्षाए विपर्यास–उलटुं कह्युं छे कारण के पूर्वे उत्पन्न थयेला नैरयिको अल्पकर्मवाळा अने बीजा महाकर्मवाळा कह्या छे, असुरकुमारो तो पूर्वे उत्पन्न थयेला महाकर्मवाळा अने पछी उत्पन्न थयेला अल्प कर्मवाळा छे केवी रीते छे ? तेनो उत्तर ए छे के असुरकुमारो पोताना भवथी नीकळी तिर्यंच अने मनुष्यमां उत्पन्न थाय छे तिर्यंचमां उत्पन्न थता केटलाएक पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिरूप एकेन्द्रियोमा उत्पन्न थाय छे, अने केटलाक पंचेन्द्रियोमा उत्पन्न थाय छे, मनुष्यमां पण उत्पन्न थता कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योमा उत्पन्न थाय छे, बाकीनामां उत्पन्न थता नथी छ मासनुं आयुष बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुष बांधे छे अने परभवना आयुषना बंधसमये एकान्त तिर्यंच योग्य के एकान्त मनुष्य योग्य प्रकृतिओनो उपचय करे छे, तेथी पूर्वे उत्पन्न थयेला महाकर्मवाळा छे जेओ पाछळ उत्पन्न थयेला छे तेओए हजी पण परभवनुं आयुष बांध्युं नथी अने तिर्यंच अने मनुष्य योग्य प्रकृतिओनो उपचय कर्यो नथी, तेथी तेओ अल्पकर्मवाळा छे आ सूत्र पण समानस्थितिवाळा अने समानभववाळा परिमित असुरकुमार संबन्धे समजवुं पूर्वे उत्पन्न थयेला पण जेणे परभवनुं आयुष बांध्युं छे एवा अने पछी उत्पन्न थयेला पण जेणे परभवनुं आयुष बांध्युं नथी एवा थोडा काळना अन्तरवाळा ग्रहण करवा अन्यथा तिर्यंच अने मनुष्य योग्य प्रकृतिनो बंध करवा छतां पण पूर्वे उत्पन्न थयेलाथी पछी उत्पन्न थयेलो उत्कृष्टस्थितिवाळो अने नवीन उत्पन्न थयेलो अनन्त संसारी महाकर्मवाळो अवश्य होय छे

वर्णसूत्रमा जेओ पूर्वे उत्पन्न थयेला छे तेओ अविशुद्ध वर्णवाळा छे केवी रीते छे ? असुरकुमारोने भवसापेक्ष प्रशस्त वर्ण

नामकर्मनो शुभ अने तीव्र रसवाळो उदय छे. अने ते पूर्वे उत्पन्न थयेलानो घणो क्षीण थयेलो छे, तेथी तेओ अविशुद्धतर वर्णवाळा छे. ते सिवाय बीजा पछी उत्पन्न थयेला होवाथी हजी सुधी पण वर्ण नामकर्मनो घणो क्षय कर्यो नथी माटे विशुद्धवर्णवाळा छे. आ सूत्र समानस्थितिवाळा असुरकुमारनी अपेक्षाए समजवुं. एवं 'लेस्साएवि' इति. एम लेश्या संबन्धे पण जाणवुं-एटले वर्णसूत्रनी पेठे लेश्यासूत्र पण कहेवुं. पूर्वे उत्पन्न थयेला अविशुद्ध लेश्यावाळा कहेवा अने पछी उत्पन्न थयेला विशुद्ध लेश्यावाळा कहेवा ए भावार्थ छे. अहीं आ तात्पर्य छे—अहीं देवो अने नैरयिकोने तेवा प्रकारना भवस्वभावथी लेश्यानो परिणाम उत्पत्तिना समयथी मांडी भवना क्षय पर्यन्त निरन्तर होय छे. जेथी त्रीजा लेश्योद्देशकमां कहेवामां आवशे के "से नूणं भंते! कण्हलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे उव्वट्टइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उव्वट्टइ"? इत्यादि. हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय? अने कृष्णलेश्याळो थइ मरण पामे? जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो थइ मरण पामे? आ सूत्रनो भावार्थ आ छे-पंचेन्द्रिय तिर्यंच के मनुष्य आयुष क्षीण थवाथी नैरयिकायुष वेदतो ऋजुसूत्रनयनी दृष्टिथी विग्रहगतिमां वर्ततो होय तो पण नारकज कहेवाय छे. तेने कृष्णादि लेश्यानो उदय पूर्वभवनुं अन्तर्मुहूर्त आयुष बाकी होय त्यारेज होय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

[1]"अन्तमुहुत्तंमि गए अन्तमुहुत्तंमि सेसए चेव। लेस्साहिं परिणयाहिं जीवा वच्चंति परलोयं॥

१ आगामी भवनी लेश्याना प्रथम समये परभवायुषनो उदय थाय के पूर्वभवनी लेश्याना अन्त समये परभवना आयुषनो उदय थाय अथवा बीजी रीते थाय? ए शंका दूर करवा माटे भद्रबाहु स्वामी कहे छे-'परिणत थयेली सर्व लेश्याना प्रथम समये परभवमां कोइ जीवनी उत्पत्ति थती नथी, तेम तेना छेल्ला समये पण परभवमां कोइनी उत्पत्ति थती नथी, परन्तु आगामी भवनी लेश्यानुं अन्तर्मुहूर्त गया पछी तिर्यंच अने मनुष्यो अने स्वभवसंबन्धी लेश्यानुं अन्तर्मुहूर्त बाकी होय त्यारे देव अने नारको परलोकमां जाय छे. जुओ-बृहत्संग्रहणी टीका प. १०८-९.

लेश्याओनु अन्तर्मुहूर्त गया पछी अने अन्तर्मुहूर्त बाकी होय त्यारे परिणत थयेली लेश्या वडे जीवो परलोकमा जाय छे केवळ तिर्यंच अने मनुष्यो आगामी भवनी लेश्यानु अन्तर्मुहूर्त गया पछी अने देव अने नारको पोताना भवनी लेश्यानु अन्तर्मुहूर्त बाकी होय त्यारे परलोकमा जाय छे एम देवो सबन्धे पण जाणवु तथा लेश्याध्ययनमा नारकादिने विषे कृष्णादि लेश्यानी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति आ प्रमाणे कही छे—"कापोत लेश्यानी जघन्य स्थिति दस हजारनी वरसनी छे उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे नील लेश्यानी जघन्य स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे, कृष्णलेश्यानी जघन्य स्थिति दस सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपमनी छे ए नैरयिकोनी लेश्यानी स्थिति वर्णवी ते पछी तिर्यंच, मनुष्य अने देवोनी स्थिति कहीश—

" अन्तोमुहुत्तमद्धा लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ। तिरियनराण वा वज्जिता केवल लेस " ॥

तिर्यंच अने मनुष्यमा जेने जेने विषे जे लेश्याओ होय छे तेओनी केवळ-शुक्ल लेश्याने छोडी अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति छे आ गाथानो अक्षरार्थ आ छे-जे जे पृथिवीकायिकादिमा के समूर्छिम मनुष्यादिमा जे कृष्णादि लेश्याओ छे तेओनी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्तनी छे ए लेश्याओ कोइने विषे कोइ होय छे-पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिने कृष्ण, नील, कापोत अने तेजोलेश्या रूप चार लेश्याओ होय छे, अग्नि, वायु, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिंद्रिय, समूर्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय अने मनुष्यने कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्याओ छे गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय अने गर्भज मनुष्योने छ ए लेश्याओ होय छे परन्तु ए प्रमाणे शुक्ललेश्यानी स्थिति अन्तर्मुहूर्तनी थाय ए आ शकाना उत्तरमा कहु छे के 'केवल' शुक्ललेश्या-शुक्ललेश्याने छोडीने समजवु ते शुक्ललेश्यानी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट नव वरस न्यून पूर्वकोटि वर्षनी जाणवी आ तिर्यंच अने मनुष्यनी लेश्यानी स्थिति वर्णवी छे अने त्यार बाद देवोनी लेश्यानी स्थिति कहीश—दस हजार वर्षनी कृष्णलेश्यानी जघन्य स्थिति छे अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असख्यातमा भाग प्रमाण छे जे कृष्ण लेश्यानी

उत्कृष्ट स्थिति छे तेने समयाधिक करतां नीललेश्यानी जघन्य स्थिति अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्ट स्थिति समजवी. त्यारबाद देवोनी तेजोलेश्यानी स्थिति कहीश-भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने तेजोलेश्यानी दस हजार वर्षनी जघन्य स्थिति छे, अने उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग छे. जे तेजोलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति छे तेने समयाधिक करता पद्मलेश्यानी जघन्य स्थिति अने उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक दस सागरोपमनी जाणवी. अहीं अन्तर्मुहूर्त अधिक कह्युं छे ते पूर्वभवनुं अन्तर्मुहूर्त अने पछीना भवनुं अन्तर्मुहूर्त एम बे अन्तर्मुहूर्तनी एक विवक्षा करीने कह्युं छे. कारण के देव अने नैरयिकोने लेश्या पूर्वभवना अने उत्तरभवना बे अन्तर्मुहूर्त अधिक पोताना आयुषना कालप्रमाण स्थितिवाळी होय छे. तथा जे पद्मलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति छे तेने समयाधिक करतां शुक्ललेश्यानी जघन्य स्थिति अने अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी. तेथी पूर्वे कहेला आ लेश्यानी स्थितिना परिमाणथी अने त्रीजा लेश्योद्देशकमां कहेवामां आवशे ते सूत्रथी जणाय छे के देवो अने नैरयिकोने लेश्याद्रव्यनो परिणाम उत्पत्तिना समयथी आरंभी भवना अन्त सुधी निरन्तर होय छे. पूर्वे उत्पन्न थयेला असुरकुमारोए घणां अने तीव्ररसवाळां लेश्याद्रव्यो अनुभवी अनुभवीने क्षय कर्यां छे अने थोडां मन्दरसवाळां बाकी छे तेथी पूर्वे उत्पन्न थयेला अविशुद्धलेश्यावाळा होय छे अने पछी उत्पन्न थयेला तेथी विपरीत होवाथी विशुद्धलेश्यावाळा होय छे. 'वेयणाए जहा नेरइया' इति. वेदनामां जेम नैरयिको कह्या तेम असुरकुमारो पण कहेवा, कारण के त्यां पण असंज्ञीनी उत्पत्ति होय छे. तेमां जो के वेदनासूत्रनो पाठ नारकोनी पेठे असुरकुमारोने छे, तो पण भावार्थमां विशेषता छे. ते आ प्रमाणे—जेओ संज्ञीभूत छे ते सम्यग्दृष्टि होवाथी महावेदनावाळा छे, कारण के चारित्रनी विराधनाथी तेओना चित्तने संताप थाय छे. बीजा असंज्ञीभूत छे, ते मिथ्यादृष्टि होवाथी अल्पवेदनावाळा छे, कारण के तेने उपर कह्या प्रमाणे चित्तनो संताप नथी. अथवा संज्ञीभूत-पूर्वभवमां संज्ञी होय ते, अथवा पर्याप्ता शुभवेदनाने आश्रयी महावेदनावाळा छे अने पूर्वभवमां असंज्ञी होय ते अथवा अपर्याप्ता अल्पवेदनावाळा छे. 'अवसेसं जहा नेरइयाणं' इति. बाकीनुं क्रियासूत्र अने आयुषसूत्र जेम नैरयिकोने कह्युं छे तेम कहेवुं अने सुगम होवाथी तेनो स्वयं विचार करवो.

८. पुढविकाइया आहारकम्मवन्नलेस्साहिं जहा नेरइया। पुढविकाइया सव्वे समवेयणा पन्नत्ता? हंता गोयमा! सव्वे समवेदणा। से केणट्ठेण? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे असन्नी असन्निभूय अणियथं वेयणं वेयन्ति, से तेणट्ठेणं गोयमा! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा। पुढविकाइया णं भंते! सव्वे समकिरिया? हंता गोयमा! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया। से केणट्ठेणं? गोयमा! पुढविकाइया सव्वे माइमिच्छादिट्ठी, तेसिं णियइयाओ पंच किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा—आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया,

---

८. पृथिवीकायिको आहार, कर्म, वर्ण अने लेश्या वडे नैरयिकोनी पेठे जाणवा. पृथिवीकायिको बधा समान वेदनावाळा छे? हा गौतम! बधा समानवेदनावाळा छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! पृथिवीकायिको बधा असंज्ञी छे अने तेथी तेओ असंज्ञीभूत-असंज्ञीना जेवी अनियत वेदना वेदे छे. ते हेतुथी हे गौतम! बधा पृथिवीकायिको समानवेदनावाळा छे. हे भगवन्! बधा पृथिवीकायिको समानक्रियावाळा छे? हा गौतम! बधा पृथिवीकायिको समानक्रियावाळा छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो? हे गौतम! बधा पृथिवीकायिको मायी मिथ्यादृष्टि छे, तेओने नियत-अवश्य पांच क्रियाओ होय छे. ते

ए प्रमाणे-असुरकुमारने कह्या प्रमाणे नागकुमारथी आरंभी स्तनितकुमार सुधी कहेवु.

८ 'पुढविकाइया' इत्यादि. पृथिवीकायिको आहार, कर्म, वर्ण अने लेश्याओ वडे जेम नैरयिको कह्या छे तेम कहेवा पृथिवीकायिकोना आहारादिविषयक चार सूत्रो नैरयिकसूत्रोनी पेठे पृथिवीकायिकना पाठ वडे कहेवां ए भावार्थ छे केवळ आहारसूत्रमा आ विचार छे-पृथिवीकायिकोनु अंगुलना असंख्यातमा भागप्रमाण शरीर छता पण अल्पशरीर अने महाशरीर आगमना वचनथी जाणवु ते

मिच्छादंसणवत्तिया य, से तेणट्ठेणं गोयमा ! । एवं जाव चउरिंदिया । पंचेंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं किरियाहिं सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी। तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा- असंजता य संजयासंजता य । तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसि णं तिन्नि किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया । तत्थ णं जे अस्संजता तेसि णं चत्तारि किरियाओ कज्जन्ति,तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपचक्खाणकिरिया।तत्थ णं जे ते मिच्छादिट्ठी जे य सम्मामिच्छदिट्ठी तेसि णं णियइयाओ पंच किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया,अपचक्खाणकिरिया,

आ प्रमाणे-१ आरंभिकी, २ पारिग्रहिकी, ३ मायाप्रत्ययिकी, ४ अप्रत्याख्यान क्रिया अने ५ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. परन्तु क्रियावडे सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि होय छे. तेमां जे सम्यग्दृष्टि छे ते बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—असंयत-अविरति अने संयतासंयत-देशविरति. तेमां जे संयतासंयत छे तेओने त्रण क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे—आरंभिकी, पारिग्रहिकी अने मायाप्रत्ययिकी. तेमां जेओ असंयत छे तेओने चार क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे—आरंभिकी, पारिग्रहिकी मायाप्रत्ययिकी अने अप्रत्याख्यानक्रिया. तेमां जेओ मिथ्यादृष्टि अने जेओ सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे तेओने अवश्य पांच क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे—

आगम आ प्रमाणे छे—"पुढविक्काए पुढविकाइयस्स ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए" इत्यादि. पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए चार स्थानने प्राप्त थयेल छे-इत्यादि. तेमां महाशरीरवाळा महाशरीर होवाथी लोमाहार वडे घणा पुद्गलोनो आहार करे छे अने घणा

मिच्छादंसणवत्तिया, सेसं तं चेव।

आरंभिकी, पारिग्रहिकी मायाप्रत्ययिकी, अप्रत्याख्यानक्रिया अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. बाकी बधुं तेमज कहेवुं.

पुद्गलोने उच्छ्वासरूपे ले छे तथा वारंवार आहार करे छे अने वारंवार उच्छ्वास ले छे अने अल्प शरीरवाळाने अल्प शरीर होवाथी अल्प आहार अने अल्प उच्छ्वास होय छे आहार अने उच्छ्वासनुं कदाचित्पणुं अपर्याप्तावस्थानी अपेक्षाए समजवुं

हवे वेदनासूत्र कहे छे—'पुढविकाइया णं भंते! सव्वे समवेयणा'? हे भगवन्! शुं पृथिवीकायिको बधा समान वेदनावाळा छे'—इत्यादि 'असंज्ञी' मिथ्यादृष्टि अथवा मनरहित, तेओ असंज्ञीभूत-असंज्ञीने जे वेदना साता थाय छे तेथी, ए अर्थने स्पष्ट करे छे-अनियत-अनिश्चित स्वरूपवाळी वेदना वेदे छे अने वेदनाने अनुभव करवा छतां पण मिथ्यादृष्टि होवाथी के मन रहित होवाथी मत्त मूर्छितादिनी पेठे 'आ पूर्वे बांधेला अशुभकर्मनो परिणाम छे' एम जाणता नथी

किरियासूत्रमां माईमिच्छद्दिट्ठि त्ति मायीमिथ्यादृष्टि छे, कारण के तेओमां मायाः मायावाळा उत्पन्न थाय छे ए संबन्धे सिद्धान्ती पण कहे छे—"उम्मग्गदेसओ मग्गनासओ गूढहियमायाल्लो। सढसीलो य ससल्लो तिरियाउं बंधइ जीवो॥"—उन्मार्गनो उपदेशक, मार्गनो नाशक, गूढहृदयवाळो, मायावाळो, शठस्वभाववाळो अने शल्ययुक्त जीव तिर्यंचनुं आयुष बांधे छे माटे तेओ मायावाळा कहेवाय छे माया अहीं समस्त अनन्तानुबन्धी कषायनुं उपलक्षण (सूचक) छे, तेथी मायावाळा-अनन्तानुबंधी कषायना उदयवाळा अने एथीज मिथ्यादृष्टि होय छे, तेओने नियत-अवश्य पांच ज क्रियाओ होय छे, पण चार क्रियाओ वगेरे नथी होती.' सेणट्ठेणं ते हेतुथी-इत्यादि निगमन-उपसंहार वाक्य छे ए प्रमाणे यावत् 'चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं' अहीं महाशरीरवाळा अने अल्पशरीरवाळा पोतपोतानी अवगाहनाने अनुसारे जाणवा आहार बेइन्द्रियादिने प्रक्षेपरूप समजवो. 'पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया जहा नेरइया' इति पंचेन्द्रिय तिर्यंचो नैरयिकोनी पेठे जाणवा' ए प्रसिद्ध छे परन्तु अहीं महाशरीरवाळा वारंवार आहार करे छे अने वारंवार उच्छ्वास ले छे

९. मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–महासरीरा य अप्पसरीरा य । तत्थ णं जे ते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गले आहारेंति, जाव बहुतराए पोग्गले नीससंति, आहच्च आहारेंति, आहच्च नीससंति । तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्प-

---

९. हे भगवन् ! बधा मनुष्यो समान आहारवाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! मनुष्यो बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—महाशरीरवाळा अने अल्पशरीरवाळा. तेमां जेओ महाशरीरवाळा छे तेओ घणा पुद्गलोनो आहार करे छे, यावत्–घणा पुद्गलोने निःश्वासरूपे मूके छे. कदाचित् आहार ग्रहण करे छे अने कदाचित् निःश्वास मूके

ते संख्याता वरसना आयुषवाळानी अपेक्षाए समजवुं, कारण के ते प्रमाणे देखाय छे, असंख्यात वरसना आयुषवाळानी अपेक्षाए न समजवुं, कारण के तेओनो प्रक्षेपाहार बे दिवस पछी कहेलो छे. अल्पशरीरवाळाने आहार अने उच्छ्वासनुं कदाचितपणुं ते अपर्याप्तावस्थामां लोमाहार अने उच्छ्वास नहि होवाथी अने पर्याप्तावस्थामां होवाथी जाणवुं. परन्तु कर्मसूत्रमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेलाने अल्प कर्म अने बीजाने महाकर्म ते आयुष वगेरे ते भवमां वेदवा योग्य कर्मनी अपेक्षाए समजवुं. वर्ण अने लेश्यासूत्रमां पण पूर्वे उत्पन्न थयेलाने शुभवर्णादि कह्या छे ते तरुणपणाथी अने पछी उत्पन्न थयेलाने अशुद्ध वर्णादि कह्या छे ते बालपणानी अपेक्षाए समजवा. कारण के लोकमां तेवी रीते देखाय छे. तथा 'संजयासंजया' इति. संयतासंयत–स्थूल प्राणातिपातादिथी निवृत्त थयेला होवाने लीधे देशविरतिवाळा समजवा, कारण के बीजा सूक्ष्म प्राणातिपातादिथी तेओ निवृत्त थयेला नथी.

९. हवे मनुष्य संबन्धी सूत्र कहे छे—'मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समाहारा' ? हे भगवन् ! मनुष्यो बधा समानआहारवाळा छे ? इत्यादि सुगम छे, परन्तु 'आहच्च आहरेंति, आहच्च ऊससंति आहच्च नीससंति' इति. कदाचित् आहार ग्रहण करे छे, कदाचित् उच्छ्वास

तराए पोग्गले आहारेंति, जाव अप्पतराए पोग्गले नीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, जाव अभिक्खणं नीससंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति-'मणुस्सा सव्वे णो समाहारा'। सेसं जहा नेरइयाणं, नवर किरियाहिं मणूसा तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी। तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-संयता, असयता, संयतासंयता। तत्थ णं जे ते सयता ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सरागसंयता य वीयरागसयता य। तत्थ णं जे ते वीयरागसयता ते णं अकिरिया, तत्थ ण जे ते सरागसयता ते

छे. तेमां जेओ अल्पशरीरवाळा छे तेओ थोडा पुद्गलोनो आहार करे छे, यावत् अल्प पुद्गलोनो निःश्वास मूके छे. वारवार आहार करे छे, यावत् वारवार निःश्वास मूके छे. ते कारणथी हे गोतम ! एम कहुं छुं के मनुष्यो बधा समान आहारवाळा नथी. बाकी बधुं नैरयिकोनी पेठे जाणवुं, परन्तु क्रियाओमां मनुष्यो त्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि. तेमां जेओ सम्यग्दृष्टि छे ते त्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-सयत, असंयत अने सयतासयत. तेमां जेओ सयत छे ते बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—सरागसयत अने वीतरागसंयत. तेमां जे वीतरागसयत छे तेओ क्रियारहित छे. तेमां जेओ सरागसंयत छे ते बे

ले छे अने कदाचित् निःश्वास मूके छे महाशरीरवाळा देवकुरु आदिना युगलिक मनुष्यो छे, तेओ कदाचितज कवलाहार वडे आहार करे छे कारण के 'अट्ठमभत्तस्स आहारो' तेओनो आहार अट्ठमभक्त-त्रण दिवस पछी होय छे-एवुं शास्त्रवचन छे तेओनो उच्छ्वास-निःश्वास पण बाकीना बीजा मनुष्यनी अपेक्षाए अतिसुखी होवाथी कदाचितज होय छे अल्प शरीरवाळा वारवार अल्प आहार करे छे, कारण के बालको वगेरेने तेवा प्रकारे जणाय छे अने समूर्छिम अल्पशरीरवाळा मनुष्योने निरंतर आहारनो संभव छे उच्छ्वास-

दुविहा-पन्नत्ता, तंजहा—पमत्तसंयता य अपमत्तसंयता य । तत्थ णं जे ते अपमत्तसंजया तेसिं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जति । तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया तेसिं दो किरियाओ कज्जंति—आरंभिया मायावत्तिया य । तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसिं तिन्नि किरियाओ कज्जंति, तंजहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया । तत्थ णं जे ते असंजया तेसिं चत्तारि किरियाओ कज्जंति, तंजहा—आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्च-

---

प्रकारना छे—पमत्तसंयत अने अप्रमत्तसंयत. तेमां जे अप्रमत्त संयत छे तेओने एक मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय छे. अने जे प्रमत्तसंयत छे तेओने बे क्रियाओ होय छे—आरंभिकी अने मायाप्रत्ययिकी. जेओ संयतासंयत छे तेओने त्रण क्रियाओ होय छे, ते आ प्रमाणे—आरंभिकी, पारिग्रहिकी अने मायाप्रत्ययिकी. तेमां जेओ असंयत छे तेओने चार क्रियाओ छे. ते आ प्रमाणे—आरंभिकी, पारिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी अने अप्रत्याख्यानक्रिया. तेमां जेओ मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे तेओने अवश्य पांच क्रियाओ

निःश्वास पण अल्पशरीरवाळाने वारंवार होय छे, कारण के प्रायः तेओ घणा दुःखी होय छे. 'सेसं जहा नेरइयाणं' इति बाकी कर्म, वर्णादि संबन्धे सूत्र जेम नैरयिकोने कह्युं छे ते प्रमाणे जाणवुं, परन्तु अहीं पूर्वे उत्पन्न थयेलाने तरुणपणाथी शुद्धवर्णादि जाणवा. क्रियासूत्रमां विशेषता जणावे छे—'किरियाहिं मणुसा तिविहा' इत्यादि. परन्तु क्रियाओमां मनुष्य त्रण प्रकारना छे. तेमां सरागसंयतो-जेना कषायो क्षीण के उपशान्त थया नथी एवा छे वीतरागसंयतो-जेना कषायो उपशान्त अथवा क्षीण थया छे एवा छे अने ते 'अकिरिया' इति क्रियारहित छे, कारण के वीतराग होवाथी तेओने आरंभादि क्रियानो अभाव छे. अप्रमत्त संयतने एक मायाप्रत्ययक्रिया होय छे, अने ते शासनना उड्डाहरक्षणमां प्रवृत्त थयेलाने होय छे, कारण के तेना कषायो क्षीण थया नथी. प्रमत्त संयतने आरंभिकी अने मायाप्रत्ययिकी ए बे क्रिया होय छे, प्रमत्तसंयतोनो सर्व प्रमत्तयोग आरंभरूप छे माटे तेने आरंभिकी क्रिया होय छे अने

पच्चक्खाणकिरिया। तत्थ णं जे ते मिच्छदिट्ठी जे सम्मामिच्छदिट्ठी तेसिं नियइयाओ पंच किरियाओ कज्जंति, तंजहा–आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादंसणवत्तिता, सेसं जहा नेरइयाणं।

१०. वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं। एवं जोइसियवेमाणियाणवि, नवरं ते वेदणाए दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अमाइसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे ते माईमिच्छदिट्ठीउववन्नगा ते णं अप्पवेदणतरागा। तत्थ णं जे ते अमाईसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते णं महावेदणतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं

होय छे. ते आ प्रमाणे–आरंभिकी, पारिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी, अप्रत्याख्यानक्रिया अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. बाकी बधुं नैरयिकोनी जेम जाणवुं.

१०. व्यन्तरोने असुरकुमारोनी जेम समजवुं. एम ज्योतिषिक अने वैमानिकोने पण जाणवुं. परन्तु वेदनामां तेओ बे प्रकारना छे–मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला. तेमां जे मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला छे ते अल्पवेदनावाळा होय छे, अने जे अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला छे तेओ महावेदनावाळा छे. ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं. बाकी

तेना कषायो क्षीण नहि थया होवाथी मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय छे 'सेसं जहा नेरइयाणं' इति बाकीनुं आयुष संबन्धी सूत्र जे प्रमाणे नैरयिकोने कह्युं छे ते प्रमाणे कहेवुं अने ते सुगम होवाथी स्वयं विचारी लेवुं

१० 'वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं' व्यन्तरोने असुरकुमारोनी पेठे कहेवुं–इत्यादि जेम असुरकुमारो संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत छे तेमां जे संज्ञीभूत छे ते महावेदनावाळा छे अने असंज्ञीभूत छे ते अल्पवेदनावाळा छे–ए प्रमाणे असुरकुमारो संबन्धे [illegible] छे

वुचइ । सेसं तहेव ।

वधुं तेमज जाणवुं.

तेम व्यन्तरो संवन्धे पण कहेवुं. कारण के असुरकुमारथी आरंभी व्यन्तर सुधीना देवोमां असंज्ञी उत्पन्न थाय छे. भगवतीसूत्रमां प्रथम शतकना बीजा उद्देशकमां कह्युं छे के 'असन्नी जहन्नेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु'। असंज्ञी जघन्यथी भवनवासी अने उत्कृष्टपणे व्यन्तरोमां उत्पन्न थाय छे. अने तेओ असुरकुमारना प्रकरणमां कहेली युक्तिथी अल्पवेदनावाळा होय छे एम जाणवुं. जे पूर्वे व्याख्यान कर्युं के संज्ञी-सम्यग्दृष्टि अने असंज्ञी मिथ्यादृष्टि-ए प्रमाणे पण वृद्ध आचार्योना व्याख्यानने अनुसरी करेलुं व्याख्यान घटे छे, माटे दोषरहित छे. ए प्रमाणे असुरकुमारने कहेला प्रकार वडे ज्योतिषिक अने वैमानिकोने पण कहेवुं, परन्तु वेदनामां तेओ आ प्रमाणे कहेवा—'दुविहा जोइसिया पन्नत्ता, तंजहा-मायिमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य' इत्यादि. वे प्रकारना ज्योतिषिको छे-मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला-इत्यादि. (प्र०)—ज्योतिषिक संवन्धे एवा प्रकारनो पाठ केम कह्यो छो, पण असुरकुमारनी पेठे 'सन्निभूया य असन्निभूया य'—संज्ञीभूत अने 'असंज्ञीभूत एवो पाठ केम कहेता नथी? (उ०)—ज्योतिषिकमां असंज्ञी उत्पन्न थता नथी माटे. ए शाथी जाणवुं? युक्तिथी जाणी शकाय छे, ते आ प्रमाणे-असंज्ञीना आयुषनी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमनो असंख्यातमो भाग होय छे अने ज्योतिषिकोनी जघन्य स्थिति पण पल्योपमनो संख्यातमो भाग छे, अने वैमानिकोनी जघन्य स्थिति पल्योपमनी छे तेथी जाणी शकाय छे के तेओमां असंज्ञी उपजता नथी. अने तेना अभावथी उपर कह्या प्रमाणे पाठ कहेवामां आव्यो छे, पण असुरकुमारना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे कहेवामां आव्यो नथी. तेमां शुभ वेदनाने आश्रयी मायी मिथ्यादृष्टि अल्पवेदनावाळा छे अने बीजा महावेदनावाळा छे.

११. सलेसा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारा, समसरीरा, समुस्सासनिस्सासा–सव्वेवि पुच्छा। गोयमा ! एवं जहा ओहिओ गमओ तहा सलेसागमओवि निरवसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिया। कण्हलेसा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारा–पुच्छा। गोयमा ! जहा ओहिया, नवरं नेरइया वेयणाए माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अमाइसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा, सेसं तहेव जहा ओहियाणं। असुरकुमारा जाव वाणमंतरा एते जहा ओहिया, नवरं मणुस्साणं किरियाहिं विसेसो–जाव तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पन्नत्ता, तंजहा–

११. हे भगवन् ! लेश्यासहित नैरयिको बधा समानआहारवाळा, समानशरीरवाळा अने समानउच्छ्वासनिःश्वासवाळा छे ? एम बीजा बधा सबन्धे पृच्छा करवी. हे गौतम ! जेम औघिक–सामान्य नैरयिको संबन्धे आलापक कह्यो छे तेम लेश्यासहित समग्र आलापक पण यावत्–वैमानिक सुधी कहेवो. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा नैरयिको बधा समानआहारवाळा छे–इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! जेम औघिक–सामान्य नैरयिको कह्या छे तेम कहेवा, पण वेदनामां मायी मिथ्यादृष्टि उपपन्नक अने अमायी सम्यग्दृष्टि-उपपन्नक कहेवा. बाकी बधु जेम सामान्य नैरयिकोने कह्यु तेमज कहेवु. असुरकुमारथी आरंभी व्यन्तर सुधी सामान्य असुरकुमारा-

११ हवे सलेश्यपदरूप विशेषणयुक्त चोवीश दंडकनुं आहारादि नव पदवडे निरूपण करे छे—'सलेसा णं भंते ! नेरइया' हे भगवन् ! लेश्यावाळा नैरयिको बधा समान आहारवाळा छे ? इत्यादि जेम हमणा औघिक–सामान्य, विशेषणरहित आलापक पूर्वे कह्यो तेम सलेश्य संबन्धी समग्र आलापक वैमानिकसूत्र पर्यन्त कहेवो, कारण के सलेश्यपदरूप विशेषण सिवाय बीजु विशेषण क्याइ पण घटतुं नथी हवे भिन्न भिन्न कृष्णादि लेश्याना विशेषणयुक्त ३ दंडकोनुं आहारादि पदो वडे निरूपण करवानी इच्छावाळा

संजया अस्संजया संजयासंजया य, जहा ओहियाणं। जोइसियवेमाणिया आइल्लियासु तिसु लेसासु ण पुच्छिज्जंति। एवं जहा किण्हलेसा विचारिया तहा नीललेस्सावि विचारेयव्वा। काउलेसा नेरइएहिंतो आरब्भ जाव वाणमंतरा, नवरं काउलेस्सा नेरइया वेदणाए जहा ओहिया। तेउलेसाणं भंते! असुरकुमाराणं ताओ चेव पुच्छाओ। गोयमा! जहेव ओहिया तहेव, नवरं वेयणाए जहा जोइसिया। पुढविआउवणस्सइपंचेंदियतिरिक्खमणु-

दिनी पेठे कहेवुं. परन्तु मनुष्योने क्रियाओमां विशेषता छे—यावत् तेमां जेओ सम्यग्दृष्टि छे तेओ त्रण प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—संयत, असंयत अने संयतासंयत—इत्यादि जेम औधिक—सामान्य मनुष्य संबन्धे कह्युं छे तेम कहेवुं. ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे आदिनी त्रण लेश्यामां न पूछवुं. ए प्रमाणे जेम कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोनो विचार कर्यो तेम नीललेश्यावाळा नैरयिकोनो विचार करवो. कापोत लेश्यानो नैरयिकोथी आरंभी व्यन्तरो सुधी विचार करवो, परन्तु कापोतलेश्यावाळा नैरयिको वेदनामां सामान्य नैरयिको कह्या तेम कहेवा. हे भगवन्! तेजोलेश्यावाळा असुरकुमारो—इत्यादि असुरकुमार संबन्धे तेज पूर्वोक्त पृच्छा करवी. हे गौतम! जेम सामान्य असुरकुमारो कह्या तेमज जाणवा. परन्तु वेदनामां ज्योतिषिकनी जेम कहेवा. पृथिवीकाय, अप्काय,

सूत्रकार कहे छे—'कण्हलेसा णं भंते! नेरइया'—हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळा नैरयिको समान आहारवाळा होय—इत्यादि. जेम औधिक—विशेषणरहित सामान्य नैरयिको आहार, शरीर, उच्छ्वास, कर्म, वर्ण, लेश्या, वेदना, क्रिया अने उपपातरूप नवपदो वडे पूर्वे कह्या छे तेम कृष्णलेश्यावाळा पण कहेवा. परन्तु वेदना पदमां नैरयिको आ प्रमाणे कहेवा—'माइमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अमाइसम्मदिट्ठीउववन्नगा य' मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला. परन्तु औधिकसूत्रमां जेम 'सन्नि-

स्सा जहा ओहिया तहेव भाणियव्वा, नवरं मणूसा किरियाहिं जे संजता ते पमत्ता य अपमत्ता य भाणियव्वा, सरागा वीयरागा नत्थि। वाणमंतरा तेउलेसाए जहा असुरकुमारा, एवं जोइसियवेमाणियावि, सेसं तं चेव। एवं पम्हलेसावि भाणियव्वा, नवरं जेसिं अत्थि। सुक्कलेस्सावि तहेव जेसिं अत्थि, सव्वं तहेव जहा ओहियाणं

वनस्पतिकाय, पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो जेम औघिक–सामान्यरूपे कह्या तेम लेश्यासहित कहेवा. परन्तु मनुष्यो क्रियाओमां जे संयत छे ते प्रमत्त अने अप्रमत्त बे प्रकारना छे, पण सराग अने वीतराग एवा भेद थता नथी. व्यन्तरो तेजोलेश्यामां असुरकुमारनी जेम कहेवा. एम ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण जाणवुं. बाकी बधु तेमज कहेवुं. ए प्रमाणे पद्मलेश्यावाळा पण कहेवा. परन्तु पद्मलेश्या जेओने होय तेओने कहेवी. शुक्ललेश्यावाळा पण तेमज जाणवा, परन्तु शुक्ललेश्या जेओने होय तेओने कहेवी. बाकी

भूया य' 'संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत' ए पाठ न कहेवो (प्र०)—शा माटे न कहेवो ? (उ०)—अहीं असंज्ञी प्रथम नरक पृथिवीमां ज उत्पन्न थाय छे, कारण के 'असन्नी खलु पढमं'—असंज्ञी प्रथम नरकपृथिवी सुधी उत्पन्न थाय छे—एवुं शास्त्रनुं वचन छे, अने प्रथम पृथिवीमां कृष्णलेश्या नथी, जे पांचमी वगेरे नरकपृथिवीमां कृष्णलेश्या छे त्यां असंज्ञी उपजता नथी तेमां मायी मिथ्यादृष्टि महा वेदनावाळा छे, कारण के प्रकृष्ट–छेवटनी अशुभ स्थिति तेओ बांधे छे अने प्रकृष्ट अशुभ स्थितिमां मोटी वेदना होय छे, तेथी विपरीत बीजी स्थितिमां अल्प वेदना होय छे असुरकुमारथी मांडी व्यन्तर सुधीना बधा जीवो जेम औघिक–सामान्यरूपे कह्या छे तेम कहेवा, परन्तु मनुष्योने क्रियाओमां विशेषता छे, ते विशेषता बतावे छे—'तत्थ णं जे ते' इत्यादि सम्यग्दृष्टि वगेरेमां जे सम्यग्दृष्टि छे तेओ त्रण प्रकारना छे—संयत, असंयत अने संयतासंयत इत्यादि 'जहा ओहियाणं' इति–सामान्यत कह्युं छे तेम कृष्णलेश्यावाळाने पण कहेवु जेमके संयतोने आरंभिकी अने मायाप्रत्ययिकी ए बे क्रियाओ होय छे अने कृष्णलेश्या प्रमत्तसंयतोने होय छे,

गमओ, नवरं पम्हलेस्ससुक्कलेस्साओ पंचेंदियतिरिक्खजोणियमणूसवेमाणियाणं चेव, न सेसाणं ति ।

पन्नवणाए भगवईए सत्तरसे लेस्सापए पढमो उद्देसओ समत्तो ।

बधुं जेम औघिक–सामान्य आलापक कह्यो छे तेमज कहेवो. परन्तु पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य अने वैमानिकने ज जाणवी, बाकीनाने न जाणवी.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां सत्तरमा लेश्यापदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

पण अप्रमत्तसंयतोने होती नथी. तेथी तेओने पूर्वोक्त बेज क्रियाओ होय छे. संयतासंयतने आरंभिकी, पारिग्रहिकी अने मायाप्रत्ययिकी ए त्रण क्रियाओ होय छे. अने असंयतने आरंभिकी, पारिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी अने अप्रत्याख्यानक्रिया ए चार क्रियाओ होय छे. ज्योतिषिको अने वैमानिकोने आदिनी त्रण लेश्या संवन्धे न पूछवुं. एटले ते संवन्धे सूत्र न कहेवुं. कारण के प्रथमनी त्रण लेश्याओ तेओने होती नथी. जेम कृष्णलेश्या संवन्धे सूत्र कह्युं तेम नीललेश्या संवन्धे पण कहेवुं. कारण के तेमां विशेषता नथी. एज बाबत सूत्रकार कहे छे—'एवं जहा किण्हलेसा विचारिया तहा नीललेसा विचारेयव्वा' जेम कृष्णलेश्यानो विचार कर्यो तेम नीललेश्यानो पण करवो. नीललेश्या विषे सूत्रपाठ ए प्रमाणेज छे. मात्र कृष्णलेश्यापदने स्थाने नीललेश्यापदनो उच्चार करवो. 'काउलेस्सा' इत्यादि. कापोतलेश्या सूत्रथी नीललेश्याना जेवी छे अने ते नैरयिकोथी आरंभी व्यन्तरो सुधी कहेवी. परन्तु कापोतलेश्यामां नैरयिको जेम वेदनासूत्रमां औघिक–सामान्यरूपे कह्या तेम कहेवा—'नेरइया दुविहा पन्नत्ता–सन्निभूया य असन्निभूया य' जेमके नैरयिको बे प्रकारना छे–संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत–ए प्रमाणे कहेवा. कारण के असंज्ञी पण प्रथम नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय छे अने त्यां कापोतलेश्या होय छे. तेजोलेश्या संवन्धी सूत्र कहे छे—'तेउलेस्सा णं भंते ! असुरकुमारा' हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा असुरकुमारो' समानआहारवाळा–वगेरे होय छे ? इत्यादि. अहीं नारको, अग्नि, वायु अने विकलेन्द्रियोने तेजोलेश्यानो संभव नथी, माटे

प्रथमथीज असुरकुमार सम्बन्धी सूत्र कह्युं आ कारणथी अग्नि, वायु अने विकलेन्द्रियसूत्र पण न कहेवुं असुरकुमारो पण पूर्वे जेम सामान्यरूपे कह्या छे तेम कहेवा, परन्तु वेदनापदमां जेम ज्योतिषिको कह्या छे तेम कहेवा अने संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत एम न कहेवा परन्तु मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला होय छे-एम कहेवा, कारण के असंज्ञी जीवो तेजोलेश्यावाळामां उत्पन्न थता नथी पृथिवी, पाणी, वनस्पति, तिर्यंच पंचेन्द्रियो अने मनुष्यो जेम पूर्वे सामान्यरूपे कह्या छे तेम कहेवा परन्तु मनुष्यो क्रियाओमां जे संयत छे तेओ प्रमत्त अने अप्रमत्त एम बे प्रकारना कहेवा, कारण के ते बन्नेने पण तेजोलेश्यानो संभव छे सरागसंयत अने वीतरागसंयत ए भेदो न कहेवा कारण के वीतरागने तेजोलेश्यानो असंभव होवाथी वीतरागपदनो उपन्यास अने तेजोलेश्या सरागने अवश्य होवाथी सरागपदनो उपन्यास निरर्थक छे. 'वाणमंतरा तेउलेसाए जहा असुरकुमारा' व्यन्तरो तेजोलेश्यामां असुरकुमारनी पेठे जाणवा तेओ पण मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला छे एम कहेवुं पण संज्ञीभूत अने असंज्ञीभूत न कहेवा कारण के तेजोलेश्यावाळामां असंज्ञीनी उत्पत्ति थती नथी 'एवं पम्हलेसावि भाणियव्वा' ए प्रमाणे पद्मलेश्या पण कहेवी पहेले तेजोलेश्याना प्रकरणमां कहेला प्रकारवडे पद्मलेश्या पण कहेवी ए भावार्थ छे शुं बधा जीवोने सामान्यपणे कहेवी ? नहि 'नवरं जेसिं अत्थि' परन्तु आ विशेषता छे-जेओने पद्मलेश्या छे तेओनेज कहेवी, बाकीना जीवोने न कहेवी तेमां पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, मनुष्यो अने वैमानिकोने पद्मलेश्या होय छे, बाकीनाने होती नथी, माटे पद्मलेश्या सूत्र तेओ संबंधेज होय छे शुक्ललेश्या पण जेम पद्मलेश्या कही तेमज कहेवी अने ते पण जेओने होय तेओने कहेवी जेम औधिक-सामान्य पाठ कह्यो छे तेम एवुं सूत्र कहेवुं पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या जेओने होय तेओनो साक्षात् निर्देश करे छे—'नवरं पम्हसुक्कलेसाओ' इत्यादि सुगम छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा लेश्यापदनो प्रथम उद्देशक समाप्त

बीओ उद्देसो ।

१२. कइ णं भंते ! लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा–कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेस्सा ।

द्वितीय उद्देशक.

१२. हे भगवन् ! केटली लेश्याओ कही छे ? हे गौतम ! छ लेश्याओ कही छे. ते आ प्रमाणे–कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या.

---

१२. छ द्वार वगेरे अर्थनुं प्रतिपादन करनार प्रथम उद्देशक कह्यो, हवे बीजो उद्देशक कहेवाय छे, तेनुं आ प्रथम सूत्र छे—'हे भगवन् ! केटली लेश्याओ कही छे ? आ सूत्रनो पूर्वना उद्देशकनी साथे शो संबन्ध छे ? तेनो आ उत्तर छे–प्रथम उद्देशकमां 'हे भगवन् ! लेश्यावाळा नैरयिको समानआहारवाळा छे इत्यादि कह्युं, अहीं तेज लेश्यानो विचार कराय छे—'केटली लेश्याओ छे ?' तेमां लेश्यानो शब्दार्थ पूर्वे कह्यो छे. भगवान् उत्तर आपे छे–हे गौतम ! छ लेश्याओ छे, ते नामथी कहे छे—'कृष्णलेश्या' इत्यादि. कृष्ण द्रव्यरूप, अथवा कृष्णद्रव्यथी उत्पन्न थयेली लेश्या ते कृष्णलेश्या. ए प्रमाणे 'नीललेश्या' इत्यादि पदने विषे पण विचार करवो. 'हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली लेश्याओ होय छे इत्यादि अल्पबहुत्वनी वक्तव्यतानी पहेलानुं बधुं सूत्र सुगम छे, परन्तु वैमानिक सूत्रमां जे वैमानिकोने एक तेजोलेश्या कही छे, तेमां आ कारण छे–वैमानिक देवीओ सौधर्म अने ईशानमांज छे. अने तेमां केवळ तेजोलेश्या छे. अहीं सामान्यतः

१३. नेरइयाणं भंते ! कइ लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! तिन्नि, तंजहा-किण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा । तिरिक्खजोणियाणं भंते ! कइ लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-कण्हलेस्सा, जाव सुक्कलेसा । एगिंदियाणं भंते ! कइ लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा चत्तारि लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-कण्हलेसा, जाव तेउलेसा । पुढविकाइयाणं भंते ! कइ लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! एवं चेव । आउवणस्सइकाइयाणवि

---

१३. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली लेश्याओ होय छे ? गौतम ! त्रण लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या. हे भगवन् ! तिर्यंचोने केटली लेश्याओ छे ? हे गौतम ! छ लेश्याओ छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. हे भगवन् ! एकेन्द्रियोने केटली लेश्याओ होय छे ? हे गौतम ! चार लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् तेजोलेश्या. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटली लेश्याओ होय छे ? हे गौतम !

नप्रज्ञप्तीनी आ गाथाओ छे—

" किण्हा नीला काऊ तेउलेसा य भवणवंतरिया । जोइससोहम्मीसाण तेउलेसा मुणेयव्वा ॥१॥
कप्पे सणकुमारे माहिंदे चेव बंभलोए य । एएसु पम्हलेसा तेण परं सुक्कलेसा उ ॥२॥
पुढवीआउवणस्सइबायरपत्तेय लेस चत्तारि । गब्भयतिरियनरेसु छल्लेसा तिन्नि सेसाण ॥३॥ "

कृष्ण, नील, कापोत अने तेजोलेश्या भवनपति अने व्यन्तरने होय छे ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशानने तेजोलेश्या होय छे सनत्कुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक ए कल्पोमां पद्मलेश्या अने त्यार पछी शुक्ललेश्या होय छे बादर पृथिवीकाय, अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायने चार लेश्याओ, गर्भज तिर्यंच अने मनुष्यने छ लेश्याओ अने बाकीना जीवोने त्रण लेश्याओ होय छे"

एवं चेव । तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणं जहा नेरइयाणं । पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेस्सा–कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा । संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। गोयमा ! जहा नेरइयाणं । गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसा–कण्हलेसा, जाव सुक्कलेसा । तिरिक्खजोणिणीणं पुच्छा। गोयमा ! छल्लेसा एयाओ चेव । मणूसाणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसा एयाओ चेव; संमुच्छिममणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! जहा नेरइयाणं । गब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसाओ, तंजहा–कण्हलेसा, जाव सुक्कलेसा । मणुस्सीणं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव। देवाणं पुच्छा । गोयमा ! छ एयाओ चेव । देवीणं पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि–कण्हलेसा, जाव तेउलेस्सा । भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा । गोयमा एवं

ए प्रमाणे जाणवुं. अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकोने पण एमज समजवुं. तेजस्कायिक, वायुकायिक, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने नैरयिकोनी जेम जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने छ लेश्याओ होय छे. कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! नैरयिकोनी पेठे जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! छ लेश्याओ होय छे. जेम के कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. तिर्यंचयोनिक स्त्री संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एज छ लेश्याओ होय छे. मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एज छ लेश्याओ होय छे. संमूर्छिम मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! नैरयिकोनी पेठे जाणवुं. गर्भज मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! छ लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. मनुष्य स्त्री संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एमज जाणवुं. देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एज छ लेश्याओ होय छे. देवीओ संबन्धे

चेव, एव भवणवासिणीणवि । वाणमंतरदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेव, एवं वाणमंतरीणवि । जोइसियाणं पुच्छा । गोयमा ! एगा तेउलेसा, एवं जोइसिणीणवि । वेमाणियाणं पुच्छा । गोयमा ! तिन्नि, तंजहा-तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेस्सा । वेमाणिणीणं पुच्छा । गोयमा ! एगा तेउलेस्सा ।

१४ एएसि णं भंते ! जीवाणं सलेस्साणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेस्साणं अलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थो वा जीवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउ-

---

पृच्छा. हे गौतम ! चार लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे–कृष्णलेश्या, यावत् तेजोलेश्या. भवनवासी देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एमज जाणवु. भवनवासिनी देवीओने पण एमज समजवु. व्यन्तर देवो सबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एमज जाणवु. व्यन्तरदेवी सबन्धे पण एमज समजवु. ज्योतिषिक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने एक तेजोलेश्या होय छे. ए प्रमाणे ज्योतिषिक देवीओने पण समजवु. वैमानिको संबन्धे पृच्छा हे गौतम ! त्रण लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे–तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या, वैमानिक स्त्री संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने एक तेजोलेश्या होय छे.

१४. हे भगवन् ! लेश्यावाळा, कृष्णलेश्यावाळा, यावत् शुक्ललेश्यावाळा अने लेश्यारहित जीवोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो शुक्ललेश्यावाळा होय छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा सख्यातगुणा छे, तेथी

---

१४ हवे सलेश्यादि आठ पदोनु अल्पबहुत्व कहे छे–'एएसि ण भंते ! सलेस्साण' हे भगवन् ! लेश्यावाळा इत्यादि आ आठ स्थानोमा कया जीवो कोनाथी अल्प, कया जीवो कोनाथी घणा, कया जीवो कोनी तुल्य, अहीं प्राकृत होवाथी त्रीजी विभक्तिमा पण 'कयरेहिंतो' पचो

लेस्सा संखेज्जगुणा, अलेस्सा अणंतगुणा, काउलेसा अणंतगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, सलेस्सा विसेसाहिया ।

तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, तेथी लेश्यारहित अनन्तगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे अने तेथी लेश्यावाळा विशेषाधिक छे.

पांचमी विभक्तिनो निर्देश छे, तेथी एवा प्रकारनी व्याख्यामां दोष नथी. तथा कया जीवो कोनाथी विशेषाधिक छे? ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो एटले भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा छे, शुक्लरूप के शुक्लद्रव्यथी उत्पन्न थयेली लेश्या जेओने होय ते शुक्ललेश्यावाळा जीवो कहेवाय छे. ए प्रमाणे बाकीना स्थानोने विषे पण विग्रहनो विचार करवो. कारण के केटलाक पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, मनुष्य अने लान्तकादि देवोमां शुक्ललेश्या होय छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे. कारण के संख्यातगुणा तिर्यंच पंचेन्द्रियो, मनुष्यो, सनत्कुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोककल्पवासी देवोमां पद्मलेश्या होय छे. (प्र०)—लांतकादि देवोथी सनत्कुमारादि त्रण कल्पमां रहेनारा देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळा करतां पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा थाय, तो संख्यातगुणा केम कह्या? (उ०)—अहीं जघन्य पदे पण असंख्याता, सनत्कुमारादि त्रण कल्पवासी देवोथी पण असंख्यातगुणा पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चोने शुक्ललेश्या होय छे तेथी पद्मलेश्याना विचारमां सनत्कुमारादि देवोनो प्रक्षेप करीए तोपण असङ्ख्यातगुणा थता नथी, परन्तु जे तिर्यञ्च पंचेन्द्रियनी अपेक्षाए संख्यातगुणपणुं छे ते ज रहे छे, ए माटे शुक्ललेश्यावाळा करतां पद्मलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे. तेथी पण संख्यातगुणा तेजोलेश्यावाळा छे. कारण के बादर पृथिवीकाय, अप्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायने तथा संख्यातगुणा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय अने मनुष्योने तथा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने सौधर्म ईशान देवोने तेजोलेश्या होय छे. संख्यातगुणपणामां पूर्वनी पेठे अहीं पण विचार करवो. तेथी पण लेश्यारहित अनन्तगुणा छे, कारण के लेश्यारहित सिद्धो पूर्व करतां अनन्तगुणा छे.

१५. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कण्हलेसाणं नीललेस्साणं काउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया कण्हलेसा, नीललेसा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा। एतेसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, एवं जहा ओहिया, नवर अलेसवज्जा। एएसि एगिंदियाणं कण्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणं

१५. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा ए नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा नैरयिको कृष्णलेश्यावाळा छे, तेथी नीललेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा, ए तिर्यंचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तिर्यंचो शुक्ललेश्यावाळा छे–इत्यादि जेम औधिक–सामान्य लेश्यावाळा जीवो संबंधे कह्युं छे तेम कहेवुं. परतु लेश्या रहितने वर्जवा. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा अने तेजोलेश्या-

तेथी पण कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो करतां अनन्तगुणा वनस्पतिकायिको कापोतलेश्यावाळा छे तेथी पण नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे कारण के क्लिष्ट, क्लिष्टतर अध्यवसायवाळा घणा जीवो होय छे कृष्णलेश्यावाळा करतां पण लेश्यावाळा विशेषाधिक छे कारण के तेमां नीललेश्यावाळा वगेरेनो पण प्रक्षेप थाय छे. ए प्रमाणे सामान्यथी अल्पबहुत्वनो विचार कर्यो

तगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहिया एगिंदिया, नवरं काउलेस्सा असंखेज्जगुणा । एवं आउकाइयाणवि । एतेसि णं भंते ! तेउकाइयाणं कण्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो

वाळा एकेन्द्रियोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा एकेन्द्रियो तेजोलेश्यावाळा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा अनंतगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे अने तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा ए पृथिवीकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम् ! जेम औधिक एकेन्द्रियो कह्या तेम कहेवा. परन्तु कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा जाणवा. ए प्रमाणे अप्कायिकोने पण कहेवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा ए तेजस्कायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य

---

१५. हवे नैरयिकोमां लेश्या संबन्धे अल्पबहुत्वनो विचार करे छे—'एएसि णं भंते ! नेरइयाणं' इत्यादि. नैरयिकोने त्रण लेश्याओ होय छे. जेमके कृष्ण, नील, अने कापोतलेश्या. कह्युं छे के—"कापोतलेश्या प्रथमनी बे नरकपृथिवीमां, त्रीजीमां मिश्र-कापोत अने नील ए बन्ने लेश्या, चोथीमां नीललेश्या. पांचमीमां मिश्र-नील अने कृष्ण बन्ने लेश्या, छट्ठीमां कृष्ण अने ते पछी (सातमीमां) परम कृष्णलेश्या होय छे. तेथी अहीं त्रणे पदोनो परस्पर अल्पबहुत्वनो विचार करवामां आव्यो छे. तेमां सौथी थोडा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिको छे, कारण के केटलाएक पांचमी पृथिवीना नरकावासोमां तथा छट्ठी अने सातमी नरक पृथिवीमां कृष्णलेश्या होय छे. तेथी असंख्यातगुणा नीललेश्यावाळा छे, कारण के केटलाएक त्रीजी पृथिवीना नरकावासोमां, चोथी समग्र नरक पृथिवीमां तथा पांचमी नरकपृथिवीना केटलाएक नरकावासोमां पूर्वोक्तथी असंख्यातगुणा नैरयिकोने नीललेश्या होय छे. तेथी असंख्यातगुणा कापोतलेश्यावाळा छे. कारण

अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया काउलेस्सा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, एव वाउकाइयाणवि । एतेसि णं भंते ! वणस्सइकाइयाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य जहा एगिंदियओहियाणं । बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं जहा तेउकाइयाणं ।

के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तेजस्कायिको कापोतलेश्यावाळा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे वायुकायिकोने पण कहेवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा ए वनस्पतिकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? जेम सामान्य एकेन्द्रियो संबन्धे कह्युं छे तेम कहेवुं. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने तेजस्कायिकोनी पेठे कहेवु.

के प्रथम अने बीजी नरकपृथिवीमां तथा त्रीजी नरकपृथिवीना केटलाएक नरकावासोमां पूर्वे कहेलाथी असंख्यातगुणा नारकोने कापोत लेश्या होय छे हवे तिर्यञ्चो सबन्धी अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं' इत्यादि 'एवं जहा ओहिया' ए प्रमाणे-पूर्वे बतावेला प्रकार वडे जेम पूर्वे औधिक-सामान्य लेश्यावाळा जीव कह्या छे तेम अहीं कहेवा परंतु लेश्यारहितने वर्जवा, कारण के तिर्यञ्चोमां लेश्यारहितनो असम्भव छे ते आ प्रमाणे-सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा तिर्यञ्चो छे, कारण के तेओ जघन्यपदे पण असंख्याता जाणवा तेथी संख्यातगुणा पद्मलेश्यावाळा छे, तेथी पण संख्यातगुणा तेजोलेश्यावाळा छे, तेथी पण अनन्तगुणा कापोतलेश्यावाळा छे, तेथी पण नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे अने तेथी पण लेश्यासहित विशेषाधिक छे हवे एकेन्द्रियोने विषे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसि णं भंते ! एगिंदियाणं' इत्यादि सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा एकेन्द्रियो छे, कारण के केटलाएक बादर पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिकायिकोने अपर्याप्तावस्थामां तेजोलेश्या होय छे तेथी कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे,

१६. एएसि णं णं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हलेसाणं एवं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहियाणं तिरिक्खजोणियाणं, नवरं काउलेस्सा असंखेज्जगुणा। संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेउकाइयाणं । गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं जहा ओहियाणं तिरिक्खजोणियाणं, नवरं काउलेस्सा संखेज्जगुणा,एवं तिरिक्खोजोणिणीणवि। एएसि णं भंते! संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य कण्हलेसाण जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा

---

१६. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम सामान्य तिर्यंचोने कह्युं छे तेम कहेवुं. परंतु कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने तेजस्कायिकोनी पेठे जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने औधिक–सामान्य तिर्यंचोनी जेम कहेवुं. परंतु कापोतलेश्यावाळा संख्यातगुणा कहेवा. तिर्यंच स्त्री संबन्धे पण एमज कहेवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने

कारण के अनन्त सूक्ष्म अने बादर निगोदना जीवोने कापोतलेश्या होय छे, तेथी पण नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. अहीं भावना पूर्वे कही छे. हवे पृथिवीकायादि संबन्धे अल्पबहुत्व कहेवानुं छे–तेमां पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिकायिकोने चार लेश्या होय छे, अने अग्नि अने वायुने त्रण लेश्याओ होय छे, ते प्रकारे सूत्र कहे छे—'एएसिणं भंते पुढविकाइयाणं' इत्यादि, 'हे भगवन् तेजोलेश्यावाळा–इत्यादि सूत्र सुगम छे. अने बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने विशे पण सुगम छे.

१६. पंचेन्द्रिय तिर्यंचना सूत्रमां कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा जाणवा, पण अनन्तगुणा न समजवा. कारण के पंचेन्द्रिय तिर्यंचो बधा मळीने पण असंख्याता छे. संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने जेम तेजस्कायिकोने कह्युं तेम कहेवुं. कारण के तेजस्कायिकोनी पेठे तेओने

या ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, काउलेस्सा संखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्सा संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेसाण जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहेव पंचमं तहा इमं छट्ठं भाणियव्वं । एएसि णं भंते गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणियाण तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्व-

गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंचो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा सख्यातगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए संमूर्छिम पचेन्द्रिय तिर्यंचो अने तिर्यंच स्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ?

पण प्रथमनी त्रण लेश्याओ होय छे गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंचना सूत्रमा तेजोलेश्यावाळा करता कापोतलेश्यावाळा असख्यातगुणा कहेवा कारण के केवळज्ञानीए तेटलाज आमेला छे बाकी बधु औधिक सूत्रनी पेठे कहेवु ए प्रमाणे तिर्यंच-स्त्री संबन्धे पण सूत्र कहेवु जोइए, ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एव तिरिक्खजोणीणवि'-ए प्रमाणे तिर्यंच स्त्री संबन्धे पण कहेवु

त्थोवा गब्भवक्कंतिय पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, सुक्कलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेसा गब्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, पम्हलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा तिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसा संखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ। एएसि णं भंते ! संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियपंचेदियति-

---

हे गौतम ! जेम पांचमुं अल्पबहुत्व कह्युं तेम आ छट्ठुं अल्पबहुत्व कहेवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावद् शुक्ललेश्यावाळा ए गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने तिर्यंचस्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णले-

---

हवे संमूर्छिम पंचेन्द्रिय अने गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च स्त्री संबन्धे सूत्र कहे छे—'एएसि णं भंते ! संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य' इत्यादि. आ सूत्र सुगम छे, अने तेनो पूर्वनी पेठे विचार करवो. आ पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चना अधिकारमां छट्ठुं सूत्र छे अने तेनी पूर्वे हमणां कह्युं ते पांचमुं सूत्र छे माटे कह्युं छे के—'जहेव पञ्चमं तहा इमं छट्ठं भाणियव्वं' जेम पांचमुं सूत्र कह्युं तेम छट्ठुं सूत्र पण कहेवुं. गर्भज तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय अने तिर्यञ्च स्त्री विषे सातमुं सूत्र कहे छे—'एएसि णं भंते' इत्यादि.

रिक्खजोणिणीया य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतिया तिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, सुक्कलेसाओ तिरि० संखेज्जगुणाओ, पम्हलेसा गब्भवक्कंतिया तिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, पम्हलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा गब्भवक्कंतिया तिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसाओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसा संखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसाओ विसेसा-

श्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए संमूर्छिम पंचेन्द्रियतिर्यंचो, गर्भज पंचेंद्रियतिर्यंचो अने तिर्यंच स्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा गर्भज तिर्यंचो छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा गर्भज तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळी तिर्यंच स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा गर्भज तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी तिर्यंच स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा गर्भजतिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्या-

आ सूत्र सुगम छे, परंतु सर्व लेश्याओमां स्त्रीओ घणी छे अने ते सर्व संख्या घडे पण तिर्यञ्च पुरुषो करतां तिर्यञ्च स्त्रीओ त्रणगुणी छे कारण के "तिगुणा तिरूवअहिया तिरियाण इत्थिया मुणेयव्वा" 'त्रणगुणी अने त्रण अधिक तिर्यञ्चोनी स्त्रीओ जाणवी'—एवु शास्त्रवचन छे ते माटे संख्यातगुणी कहेली छे, गर्भज नपुंसको थोडा छे माटे पूर्वोक्त अल्पबहुत्वने व्याप्त करता नथी हवे संमूर्छिम पंचेन्द्रिय

हियाओ, काउलेसा संमुच्छिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया,कण्हलेसा विसेसाहिया। एएसि णं भंते ! पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेसाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचेंदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, सुक्कलेसाओ संखिज्जगुणाओ, पम्हलेसा संखिज्जगुणा, पम्हलेसाओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ संखिज्जगुणाओ, काउलेसा संखेज्जगुणा, नीललेसाओ विसेसाहिआओ,कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसा असंखेज्जगुणा,

वाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा संमूर्छिम पंचेन्द्रियतिर्यंचो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा पंचेन्द्रियतिर्यंचो अने तिर्यंचस्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा तिर्यंचपंचेन्द्रियो छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ

तिर्यञ्च, गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अने तिर्यञ्च स्त्री संबन्धे आठमुं, सामान्य पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो अने तिर्यञ्च स्त्री विषे नवमुं अने सामान्य तिर्यञ्चो अने तिर्यञ्च स्त्री विषे दशमुं अल्पबहुत्व कहे छे. 'एएसि णं भंते' इत्यादि. सूत्रनो विचार पूर्वे कह्या प्रमाणे करवो. तिर्यञ्च संबन्धे सूत्रनी संकलना कहे छे—'एवमेए दस अप्पाबहुगा तिरिक्खजोणियाणं' इति. ए प्रमाणे तिर्यञ्चोना दस अल्पबहुत्वो

नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ । एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं, तिरिक्खजोणिणीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहेव नवमं अप्पाबहुगं तहा इमपि, नवर काउलेसा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । एवं एते दस अप्पाबहुगा तिरिक्खजोणियाणं ।

संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी तिर्यंचस्त्रीओ विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए तिर्यंचो अने तिर्यंच स्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम ! जेम नवमुं अल्पबहुत्व कह्युं तेम आ पण कहेवुं. परंतु कापोतलेश्यावाळा तिर्यंचो अनन्तगुणा कहेवा. ए प्रमाणे तिर्यंचोना ए दस अल्पबहुत्व कह्यां छे. ए प्रमाणे मनुष्योने पण अल्पबहुत्व कहेवुं. परंतु तेओने छेल्लुं अल्पबहुत्व नथी.

तिर्यंचो संबन्धे छे परंतु अहीं पूर्वाचार्योए बतावेली आ बे संग्रहणी गाथाओ छे—

"ओहियपणिंदि १ समुच्छिमा २ य गब्भे ३ तिरिक्खइत्थीओ ४ । समुच्छ गब्भ तिरिया ५ मुच्छतिरिक्खी य ६ गब्भमि ७ ||१||

समुच्छिमगब्भइत्थी ८ पणिंदी तिरिगित्थीयाओ ९ ओहित्थी १० । दस अप्पबहुगभेया तिरियाणं होंति नायव्वा " ||२||

१ औघिक सामान्य तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, २ संमूर्छिम तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, ३ गर्भज तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, ४ तिर्यञ्च स्त्रीओ, ५ संमूर्छिम अने गर्भज तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रिय, ६ समूर्छिम पञ्चेन्द्रिय अने तिर्यञ्च स्त्री, ७ गर्भज तिर्यञ्च अने तिर्यञ्च स्त्री, ८ समूर्छिम गर्भज तिर्यञ्च अने तिर्यञ्च स्त्री, ९ पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च अने स्त्री, १० ओघ-सामान्य तिर्यञ्चो अने तिर्यञ्च स्त्री—ए तिर्यञ्चोना दस अल्पबहुत्व जाणवां जेम तिर्यञ्चोना अल्पबहुत्व कह्यां तेम मनुष्योने पण कहेवां परन्तु छेल्लु दसमु अल्पबहुत्व नथी, कारण के मनुष्यो अनन्त नथी अने

१७. एएसि णं भंते ! देवाणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? ४ गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेसा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा संखेज्जगुणा । एएसि णं भंते ! देवीणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ देवीओ काउलेसाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसा विसेसाहियाओ तेउलेसाओ संखेज्जगुणाओ एवं । एएसि णं भंते ! देवाणं देवीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो

---

१७. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा देवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळी यावत् तेजोलेश्यावाळी देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडी कापोतलेश्यावाळी देवीओ छे, तेथी नीललेश्यावाळी देवीओ विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी संख्यातगुणी छे.

अनन्ता नहि होवाथी कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे ए पदनो संभव छे.

१७. हवे देव संबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते ! देवाणं' इत्यादि. सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे, कारण के लान्तकादि देवलोकमां ज शुक्ललेश्यावाळा देवो होय छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के सनत्कुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पमां पद्मलेश्या होय छे अने तेओ लान्तकादि देवो करतां असंख्यातगुणा छे. तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे,

अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा देवा संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।

हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी नील अने कृष्णलेश्यावाळा अनुक्रमे विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा देवो संख्यातगुणा छे, अने तेथी तेजोलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे.

कारण के सनत्कुमारादि देवो करता असंख्यातगुणा भवनपति अने व्यन्तर देवोमां कापोतलेश्यानो सम्भव छे. तेथी पण नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, कारण के घणा भवनपति अने व्यन्तरने नीललेश्यानो सम्भव छे, तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, कारण के अति घणा भवनपति अने व्यन्तरोने कृष्णलेश्या होय छे तेथी पण तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, कारण के केटलाक भवनपति अने व्यन्तरने तथा सर्व ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवोने तेजोलेश्या होय छे

हवे देवी सम्बन्धे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसि णं भंते ! देवीणं' इत्यादि देवीओ सौधर्म अने ईशान देवलोक सुधी ज होय छे आगळना देवलोकमां नथी माटे तेओने चार ज लेश्याओ होय छे तेथी ते सम्बन्धे ज अल्पबहुत्व कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकारे 'जाव तेउलेसाण य' यावत् 'तेजोलेश्यावाळी' एम पाठ पण कह्यो छे सौथी थोडी देवीओ कापोतलेश्यावाळी छे, कारण के केटलीक भवनपतिनी अने व्यन्तरनी देवीओने कापोतलेश्या होय छे तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, कारण के घणी भवनपतिनी अने

१८. एएसि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउलेसा, काउलेसा असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा

---

१८. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा ए भवनवासी देवोमां कोण कोनाथी अल्प०४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी

व्यन्तरनी देवीओने नीललेश्यानो सम्भव छे. तेथी पण कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, कारण के ते घणी देवीओने कृष्णलेश्या होय छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणी छे, कारण के ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवलोकनी वधी देवीओने तेजोलेश्या होय छे.

हवे देव अने देवीना अल्पबहुत्व सम्बन्धे सूत्र कहे छे—"एएसि णं' इत्यादि. सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी पण कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, पटलानो पूर्वे विचार कर्यो छे. तेथी पण कापोतलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे, अने ते भवनपति अने व्यन्तरनिकायनी अन्तर्गत जाणवी. कारण के बीजे देवीओने कापोतलेश्यानो असम्भव छे. देवीओ देवो करतां दरेक निकायमां सामान्य रीते बत्रीशगुणी छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा देवोथी कापोतलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी पण घटे छे. तेथी नीललेश्यावाळी देवीओ विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. अहीं पण पूर्वनी पेठे विचार करवो. तेथी पण तेजोलेश्यावाळा देवो संख्यातगुणा छे, कारण के केटलाक भवनपति, व्यन्तरो अने वधा सौधर्म अने ईशान देवोने तेजोलेश्या होय छे. तेथी पण तेजोलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे, कारण के देवो करतां देवीओ बत्रीशगुणी छे.

१८. हवे भवनवासी देवो संबंधे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते' इत्यादि. सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा छे, कारण के महर्द्धिक

विसेसाहिया । एतेसि णं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! एवं चेव । एएसि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं देवीण य कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउलेसा, भवणवासिणीओ तेउलेसाओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसा भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसा भवणवासिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ,

कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळी यावत् तेजोलेश्यावाळी ए भवनवासिनी देवीओमा कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! एमज जाणवु. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा ए भवनवासी देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ सख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णले-

(मोटी ऋद्धिवाळा) देवो तेजोलेश्यावाळा होय छे अने महर्द्धिक तो थोडा होय छे माटे सौथी थोडा छे तेथी असख्यातगुणा कापोतलेश्यावाळा छे कारण के अतिशय घणा भवनवासी देवोने कापोतलेश्यानो संभव छे तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, कारण के तेथी घणा भवनवासी देवोने नीललेश्यानो समव छे तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे कारण के तेथी पण घणा भवनवासी देवोने कृष्णलेश्या होय छे ए प्रमाणे भवनपतिदेवी सबधे पण सूत्र जाणवु

हवे भवनपति देव अने देवी विषे अल्पबहुत्व कहे-छे 'एएसिण' इत्यादि सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो छे अहीं युक्ति पूर्वे कही छे तेथी तेजोलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ सख्यातगुणी छे कारण के सामान्य रीते देवो करतां देवीओ दरेक निकायमां

एवं वाणमंतराणं, तिन्नेव अप्पावहुया जहेव भवणवासीणं तहेव भाणियव्वा ।

१९. एतेसि णं भंते ! जोइसियाणं देवाणं देवीण य तेउलेसाणं कयरे कयरेहिंतो ? अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जोइसिया देवा तेउलेस्सा, जोइसिणीओ देवीओ तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ ।

२०. एएसि णं भंते ? वेमाणियाणं देवाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा

श्यावाळा विशेपाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेपाधिक छे अने तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेपाधिक छे. ए प्रमाणे व्यंतर देवोने जेम भवनवासीने त्रण अल्प बहुत्वो कह्यां तेम कहेवां..

१९. हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा ए ज्योतिपिक देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा ज्योतिपिक देवो छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी ज्योतिपिक देवीओ संख्यातगुणी छे.

२०. हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा पद्मलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळा ए वैमानिक देवोमां कोण कोनाथी अल्प छे०४ ? हे गौतम !

बत्रीशगुणी छे, तेथी संख्यातगुणी घटे छे. तेथी कापोतलेश्यावाळा भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे. तेथी नीललेश्यावाळा विशेपाधिक छे. तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेपाधिक छे. अहीं पूर्वे कहेली युक्तिनुं अनुसरण करवुं. तेथी कापोतलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ संख्यातगुणी छे. भावना पूर्वे कहेली भावनाने अनुसारे कहेवी-पटले तेनुं कारण पूर्वे कह्या प्रमाणे समजवुं. तेथी नीललेश्यावाळी देवीओ विशेपाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळी देवीओ विशेपाधिक छे. ए प्रमाणे व्यन्तर संबंधे पण त्रणे सूत्रनो विचार करवो.

१९. ज्योतिपिक देवो संबंधे एक ज सूत्र छे, कारण के ते निकायमां तेजोलेश्या सिवाय बीजी लेश्यानो असंभव होवाथी देव अने देवी संबंधे बे जुदा सूत्रो नथी.

४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा असंखेज्जगुणा, तेउलेसा असंखेज्जगुणा । एतेसि णं भंते ! वेमाणियाण देवाणं देवीण य तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेसाओ वेमाणिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।

सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा वैमानिक देवो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा, पद्मलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळा ए वैमानिक देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा वैमानिक देवो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे अने तेथी तेजोलेश्यावाळी वैमानिक देवीओ संख्यातगुणी छे.

२० वैमानिक देव संबंधे अल्पबहुत्व कहे छे-'एएसि णं भंते' ! वेमाणियाण इत्यादि सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा वैमानिक देवो छे कारण के लान्तकादि देवोने [redacted] शुक्ललेश्यानो संभव छे. अने तेओ उत्कर्षथी पण श्रेणिना असंख्यातमा भागना प्रदेश राशिप्रमाण छे तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के सनत्कुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पवासी सर्व देवोने पद्मलेश्यानो संभव छे अने तेओ श्रेणिना अत्यंत मोटा असंख्यातमा भागमां आकाशप्रदेश प्रमाण छे लान्तकदेवना परिमाणनुं कारण श्रेणिना असंख्यातमा भागनी अपेक्षाए तेओना परिमाणनो हेतु श्रेणिनो असंख्यातमो भाग असंख्यातगुण छे तेथी पण तेजोलेश्यावाळा देवो असंख्यातगुणा छे तेजोलेश्या सौधर्म अने ईशानदेवोने होय छे अंगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रदेशराशिना बीजा वर्गमूलने त्रीजा वर्गमूलवडे गुणवाथी जेटला प्रदेशो थाय तेटली घनीकृत लोकनी पण प्रदेशवाळी श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला ईशानकल्पमां देवदेवीओनो

२१. एएसि णं भंते ! भवणवासीदेवाणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वेमाणियाण य देवाण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेसा भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा,

२१. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्लले यावाळा ए भवनवासीदेवो, व्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक देवोमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा वैमानिकदेवो छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे. तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा व्यतरदेवो असंख्यातगुणा छे.

समुदाय छे, तेथी कंइक न्यून बत्रीशमा भाग जेटला ईशान देवो छे. तेथी पण संख्यातगुणा सौधर्म कल्पना देवो छे. तेथी पद्मलेश्यावाळाथी तेजोलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. देवीओ सौधर्म अने ईशानकल्पमां ज छे अने त्यां केवळ तेजोलेश्या छे. तेथी बीजी लेश्यानो संभव नहि होवाथी ते संबंधे जुदुं सूत्र कह्युं नथी. हवे वैमानिक देव अने देवीओनुं अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं देवीण य' इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु 'तेजोलेश्यावाळी वैमानिक देवीओ संख्यातगुणी छे.' कारण के देवो करतां देवीओ बत्रीशगुणी छे.

२१. भवनपति, व्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिक देवोना अल्पबहुत्व संबन्धे सूत्र कहे छे–'एएसिणं भंते ! भवणवासिणं' इत्यादि. तेमां सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा वैमानिक देवो छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा

नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, तेउलेसा जोइसिया देवा संखेज्जगुणा। एएसि णं भंते! भवणवासिणीणं वाणमंतरीणं जोइसिणीणं वेमाणिणीण य कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेउलेसाओ, भवणवासिणीओ तेउलेसाओ असंखेज्जगुणाओ, काउलेसाओ असंखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसाओ वाणमंतरीओ देवीओ असंखेज्जगुणाओ, काउलेसाओ असंखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसाओ जोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ।

तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे. तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा ज्योतिषिक देवो संख्यातगुणा छे. हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळी यावत् तेजोलेश्यावाळी भवनवासिनी देवी, व्यंतर देवी, ज्योतिषिक देवी अने वैमानिक देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे? हे गौतम! सौथी थोडी तेजोलेश्यावाळी वैमानिक देवीओ छे. तेथी तेजोलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ असंख्यातगुणी छे. तेथी कापोतलेश्यावाळी असंख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेश्यावाळी व्यन्तरी देवीओ असंख्यातगुणी छे. तेथी कापोतलेश्यावाळी असंख्यातगुणी छे. तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे अने तेथी तेजोलेश्यावाळी ज्यो-

---

असंख्यातगुणा छे तेनो विचार हमणा ज करेलो छे तेथी तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे शी रीते छे? अंगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रदेशोना प्रथम वर्गमूलने बीजा वर्गमूलवडे गुणता जेटला प्रदेशो आवे तेटली घनीकृत लोकनी एक प्रदेशवाळी

२२. एएसि णं भंते ! भवणवासीणं जाव वेमाणियाणं देवाण य देवीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा ? सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा असंखेज्जगुणा, तेउलेसा असंखेज्जगुणा, तेउलेसाओ वेमाणियदेवीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, तिपिक देवीओ संख्यातगुणी छे.

२२. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए भवनवासी देवो यावत् वैमानिक देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा वैमानिक देवो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी वैमानिक देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो असं-

श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला भवनपति देवदेवीनो समुदाय छे. तेथी कंइक न्यून बत्रीशमा भाग जेटला भवनपति देवो छे. अने तेथी पओ घणा होवाथी सौधर्म ईशान देवो करतां तेजोलेश्यावाळा भवनपति देवो असंख्यातगुणा छे. तेथी कापोतलेश्यावाळा भवनपति देवो ज असंख्यातगुणा छे, कारण के अल्पऋद्धिवाळा पण घणाने कापोत लेश्यानो सम्भव छे. तेथी भवनवासी ज नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे. अहीं युक्ति पूर्वे कही छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा व्यन्तरो असंख्यातगुणा छे. केवी रीते छे ? अहीं एक प्रतरमां संख्याता कोटाकोटी योजनप्रमाण सूचीरूप खण्डो जेटला होय तेटला व्यन्तर देवदेवीओनो समुदाय छे. तेथी कंइक न्यून बत्रीशमा भाग जेटला व्यन्तरदेवो छे. तेथी तेओ भवनपति करतां घणा होय छे. माटे कृष्ण लेश्यावाळा भवनपति करतां तेजोलेश्यावाळा व्यन्तरो असंख्यातगुणा घटे छे. तेथी पण कापोतलेश्यावाळा व्यन्तरो असंख्यातगुणा छे. कारण के अल्प ऋद्धिवाळाने पण कापोतलेश्या होय छे. तेथी नीललेश्यावाळा व्यन्तरो विशेषाधिक छे. तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा व्यन्तरो विशेषाधिक छे. अहीं पण पूर्वे कहेली युक्तिनुं अनुसरण करवुं. तेथी तेजोलेश्यावाळा ज्योतिषिक देवो संख्यातगुणा छे,

तेउलेसाओ भवणवासिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसा भवणवासी असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिआ, काउलेसाओ भवणवासिणीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा वाणमंतरा संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ वाणमंतरीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसा वाणमंतरा असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिआ, काउलेसाओ वाणमंतरीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा जोइसिया संखेज्जगुणा,

---

ख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ सख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी भवनवासिनी देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा व्यन्तरदेवो सख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी व्यंतरी देवीओ सख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा व्यंतर देवो असख्यातगुणा छे, . तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी व्यंतरदेवीओ संख्यातगुणी छे.

कारण के एक प्रतरमां वसो छप्पन अंगुल प्रमाण सूचीरूप खण्डो जेटला होय तेटला ज्योतिषिक देवदेवीओनो समुदाय छे, तेथी कंइक न्यून बत्रीशमा भाग जेटला ज्योतिषिक देवो छे तेथी कृष्णलेश्यावाळा व्यन्तरोथी ज्योतिषिक देवो सख्यातगुणा ज घटी शके छे, पण असख्यातगुणा घटता नथी कारण के सूचिरूप खण्ड प्रमाण सख्याता कोटाकोटी योजननी अपेक्षाए वसो छप्पन अंगुल सख्यातमा भागे छे हवे भवनवासिनी आदि देवो सम्बन्धे अने त्यारपछी भवनपति वगेरे देवो अने देवीओ सम्बन्धे अल्पबहुत्व कहे छे—आ बन्ने सूत्रो पूर्वोक्त भावनाने अनुसारे विचारवां

तेउलेसाओ जोइसिणीओ संखिज्जगुणाओ।

२३. एएसि णं भंते ! जीवाणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पड्ढिया वा महड्ढिया वा ? गोयमा ! कण्हलेसेहिंतो नीललेसा महड्ढिया, नीललेसेहिंतो काउलेसा महड्ढिया, एवं काउलेस्सेहिंतो तेउलेसा महड्ढिया, तेउलेसेहिंतो पम्हलेसा महड्ढिया, पम्हलेसेहिंतो सुक्कलेसा महड्ढिया, सव्वप्पड्ढिया जीवा कण्हलेसा,

---

तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा ज्योतिषिक देवो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी ज्योतिषिक देवीओ संख्यातगुणी छे.

२३. हे भगवन् ! ए कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्लेश्यावाळामां कोण कोनाथी अल्पऋद्धिवाळा छे के मोटी ऋद्धिवाळा छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा करतां नीललेश्यावाळा मोटी ऋद्धिवाळा छे, नीललेश्यावाळा करतां कापोतलेश्यावाळा मोटी ऋद्धिवाळा छे, एम कापोतलेश्यावाळाथी तेजोलेश्यावाळा, तेजोलेश्यावाळाथी पद्मलेश्यावाळा अने पद्मलेश्यावाळाथी शुक्लेश्यावाळा महर्द्धिक छे. सौथी

---

२३. हवे लेश्यावाळा जीवोनुं अल्पर्द्धिकपणुं अने महर्द्धिकपणुं प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'एएसि णं भंते ! जीवाणं कण्हलेसाणं' इत्यादि सुगम छे. परंतु लेश्याना क्रमथी उत्तरोत्तर महर्द्धिकपणुं अने पूर्व पूर्वनुं अल्पर्द्धिकपणुं जाणवुं. ए प्रमाणे नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य अने वैमानिक सम्बन्धे पण सूत्रोनो विचार करवो. जेओने जेटली लेश्याओ होय तेओने तेटली लेश्याओनो विचार करी कहेवुं.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा लेश्यापदनो बीजो उद्देशक समाप्त.

सव्वमहड्डिया सुक्कलेसा ॥

२४. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पड्डिया वा महड्डिया वा ? गोयमा ! कण्हलेसेहिंतो नीललेसा महड्डिया, नीललेसेहिंतो काउलेसा महड्डिया, सव्वप्पड्डिया नेरइया कण्हलेसा, सव्वमहड्डिया नेरइया काउलेसा ॥

२५. एएसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पड्डिया वा महड्डिया वा ? गोयमा ! जहा जीवाणं । एएसि णं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पड्डिया वा महड्डिया वा ? गोयमा ! कण्हलेसेहिंतो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो

अल्प ऋद्धिवाळा कृष्णलेश्यावाळा जीवो छे अने सौथी महर्द्धिक शुक्ललेश्यावाळा छे.

२४. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प ऋद्धिवाळा के महर्द्धिक छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा करतां नीललेश्यावाळा महर्द्धिक छे अने नीललेश्यावाळाथी कापोतलेश्यावाळा महर्द्धिक छे. सौथी अल्प ऋद्धिवाळा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिको छे अने सौथी मोटी ऋद्धिवाळा कापोतलेश्यावाळा नैरयिको छे.

२५. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा तिर्यंचोमां कोण कोनाथी अल्प ऋद्धिवाळा के मोटी ऋद्धिवाळा छे ? हे गौतम ! जेम जीवोने कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा एकेन्द्रिय तिर्यंचोमां कोण कोनाथी अल्प ऋद्धिवाळा के मोटी ऋद्धिवाळा छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा एकेन्द्रिय तिर्यंचोथी नीललेश्यावाळा महर्द्धिक छे. नीललेश्यावाळा तिर्यंचोथी

नीललेसा महड्डिया, नीललेसेहिंतो तिरिक्खजोणिएहिंतो काउलेसा महड्डिया, काउलेसेहिंतो तेउलेसा महड्डिया, सव्वप्पड्डिया एगिंदियतिरिक्खजोणिया कण्हलेसा, सव्वमहड्डिया तेउलेसा। एवं पुढविकाइयाणवि। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भावियाओ तहेव नेयव्वं जाव चउरिंदिया। पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं संमुच्छिमाणं गब्भवक्कंतियाण य सव्वेसिं भाणियव्वं जाव अप्पड्डिया वेमाणिया देवा तेउलेसा, सव्वमहड्डिया वेमाणिया सुक्कलेसा। केई भणंति–चउवीसं दंडएणं इड्डी भाणियव्वा। बीओ उद्देसओ समत्तो।

तइओ उद्देसो

२६. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गोयमा ! नेरइए नेरइएसु उववज्जइ,

---

कापोतलेश्यावाळा महर्द्धिक छे अने कापोतलेश्यावाळा तिर्यंचोथी तेजोलेश्यावाळा महर्द्धिक छे. सौथी अल्पऋद्धिवाळा कृष्णलेश्यावाळा एकेन्द्रिय तिर्यंचो छे, अने सौथी महर्द्धिक तेजोलेश्यावाळा छे. ए प्रमाणे पृथिवीकायिकोने पण जाणवुं. एम आ पाठ वडे जेम लेश्याओनो विचार कर्यो तेम यावत् चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. संमूर्च्छिम अने गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, तिर्यंच स्त्रीओ, ए बधाने ए प्रमाणे कहेवुं. यावत् अल्पऋद्धिवाळा तेजोलेश्यावाळा वैमानिक देवो छे, अने सौथी महर्द्धिक शुक्ललेश्यावाळा वैमानिक देवो छे. कोइ आचार्यो कहे छे के ऋद्धि चोवीश दंडके कहेवी जोइए.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां सत्तरमा पदनो द्वितीय उद्देशक समाप्त.

नो अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ, एवं जाव वेमाणियाणं । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उववट्टइ, अनेरइए नेरइएहिंतो उववट्टति ? गोयमा ! अनेरइए नेरइएहिंतो उववट्टति, णो नेरइए नेरइएहिंतो उववट्टइ । एवं जाव वेमाणिए, नवरं जोइसियवेमाणिएसु 'चयणं'ति अभिलावो कायव्वो ।

तृतीय उद्देशक

२६. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय के अनैरयिक-नैरयिक सिवाय अन्य नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, पण नैरयिक सिवाय अन्य नैरयिकोमां न उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी उद्वर्ते-मरण पामे के अनैरयिक-नैरयिकथी अन्य नैरयिको थकी उद्वर्ते ? हे गौतम ! अनैरयिक नैरयिकोथी उद्वर्ते पण नैरयिक नैरयिकोथी न उद्वर्ते ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं.

२६ बीजो उद्देशक कह्यो, हवे त्रीजा उद्देशकनो प्रारंभ थाय छे तेनु आ प्रथम सूत्र छे—'नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ' ! हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि आ सूत्रनो आ संबन्ध छे—बीजा उद्देशकमां नारकादि जीवोने लेश्यानी संख्या, अल्पबहुत्व अने महर्द्धिकपणु कह्यु अहीं ते ते लेश्याओ उपपातक्षेत्रने प्राप्त थयेला ज नारकादि जीवोने होय छे के विग्रहगतिमां पण होय छे'—ए अर्थनु प्रतिपादन करवा माटे पूर्वे अन्य नयनी अपेक्षाए नारकादिरूप व्यवहार संबन्धे प्रश्न करे छे—'हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय के अनैरयिक-नैरयिक सिवाय बीजो नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? आ प्रश्नसूत्र सुगम छे भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय छे, पण अनैरयिक नैरयिकोमा उत्पन्न थतो नथी' शा हेतुथी ? कारण के नारकादि भवनो संबन्ध करावनार आयुष ज छे, बीजु कांइ नथी जेमके नारकनुं आयुष उदयमां आवे त्यारे

नारकभव अने मनुष्यायुषनो उदय थाय त्यारे मनुष्य भव होय छे वगेरे. तेथी नारकादिना आयुषना उदयने प्रथम समये ज नारकादिरूप व्यवहार थाय छे. आ ऋजुसूत्र नयनो मत छे. नयशेष ऋजुसूत्र नयनुं स्वरूप निरूपण करतां आ प्रमाणे कह्युं छे—

'पलालं न दहत्यग्निर्भिद्यते न घटः क्वचित् । नाशून्ये निष्क्रमोऽस्तीह न च शून्यं प्रविश्यते ॥ १ ॥

नारकव्यतिरिक्तश्च नरके नोपपद्यते । नरकान्नारकश्चास्य न कश्चिद् विप्रमुच्यते " ॥ २ ॥

'पराळ बळतुं नथी, पण अग्नि बळे छे, क्वचित् घट फुटतो नथी, पण कपाल फुटे छे—एटले कपालावस्थामां घट फूटे छे. अशून्यमां-अशून्यावस्थामां निष्क्रम होतो नथी, तेम शून्यमां प्रवेश थतो नथी. तात्पर्य ए छे के निष्क्रम समये अशून्यावस्था होती नथी, तेम प्रवेशसमये शून्यावस्था होती नथी. नारक सिवाय बीजो नरकमां उत्पन्न थतो नथी, तेम कोइ नारक आ नरकथी मुक्त थतो नथी.' ए प्रमाणे नैरयिकने कह्युं छे तेम वैमानिक संबन्धी सूत्र पर्यंत कहेवुं, अने ते सुगम होवाथी स्वयं विचारवुं. हवे नैरयिकोमां उद्वर्तना संबन्धे सूत्र कहे छे—'नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उववट्टइ' इत्यादि. आ सूत्र पण ऋजुसूत्र नयना मतथी जाणवुं. ते आ प्रमाणे—ज्यारे परभवना आयुषनो उदय थाय छे त्यारे जीव त्यांथी उद्वर्ते छे-एटले ते भवथी भवान्तरमां जाय छे. अने जे भवनुं आयुष उदयमां आव्युं होय ते भवरूपे तेनो व्यवहार थाय छे, जेम नारकायुषनो उदय थतां 'आ नारक छे' एवो व्यवहार थाय छे. तेथी नैरयिकोथी अनैरयिक ज उद्वर्ते छे, पण नैरयिक उद्वर्ततो नथी. ज्यां सुधी नारकायुषनो उदय होय छे त्यां सुधी ते नैरयिक ज छे अने ते नारकभवथी मुक्त थतो नथी, पण ज्यारे परभवना आयुषनो उदय थाय छे त्यारे ते नैरयिक नथी, अनैरयिक छे अने तेथी अनैरयिक उद्वर्ते छे-मरण पामे छे. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी वैमानिको सुधी सूत्र कहेवुं, परंतु ज्योतिषिक अने वैमानिकना विषयमां च्यवन संबन्धे पाठ कहेवो. कारण के ज्योतिषिक अने वैमानिकथी जे उद्वर्तन थाय छे तेने च्यवन कहेवाय छे ए सूत्रप्रसिद्ध छे. ते प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव वेमाणिए नवरं' इत्यादि.

२७. से नूणं भंते ! कण्हलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जति, कण्हलेसे उव्वट्टइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उव्वट्टइ ? हंता गोयमा ! कण्हलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जति, कण्हलेसे उव्वट्टइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उव्वट्टइ, एवं नीललेस्सेवि, एवं काउलेस्सेवि । एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमारा, नवर लेस्सा अब्भहिया । से नूणं भंते ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेसु पुढविकाइएसु उववज्जति, कण्हलेसे उव्वट्टइ, जल्लेसे उववज्जति तल्लेसे उव्वट्टति ? हंता गोयमा ! कण्हलेसे पुढविक्काइए कण्हलेसेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति,

---

२७. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय अने कृष्णलेश्यावाळो थइ मरण पामे ? जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो मरण पामे ? हा गौतम ! कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय अने कृष्णलेश्यावाळो मरण पामे. जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो मरण पामे. ए प्रमाणे नीललेश्यावाळा संबन्धे अने कापोतलेश्यावाळा संबन्धे जाणवु. एम असुरकुमारोथी आरभी स्तनितकुमारो सुधी जाणवु. परन्तु अहीं लेश्या अधिक कहेवी. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय ? अने कृष्णलेश्यावाळो थइ मरण पामे ?

---

२७ हवे उत्पत्तिमां कृष्णलेश्या संबन्धे सूत्र कहे छे—'से नूणं भंते ! कण्हलेसे नेरइए' इत्यादि मूळमां 'से' शब्द अथ शब्दना अर्थमां छे अने अथ शब्द प्रश्नना अर्थमां छे 'नूनं'–निश्चित, हे भगवन् ! आ निश्चित छे के कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय अने ते कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोथी उद्वर्ततो कृष्णलेश्यावाळो थइने मरण पामे ? ए ज अर्थना निश्चयने दृढ करवा माटे प्रकारान्तरथी कहे छे—'यल्लेश्य उत्पद्यते तल्लेश्य उद्वर्तते ?' जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते ज लेश्यावाळो उद्वर्ते ?

सिय कण्हलेसे उववट्टइ, सिय नीललेसे उववट्टइ, सिय काउलेसे उववट्टइ, सिय जल्लेसे उववज्जति सिय तल्लेसे उववट्टइ। एवं नीलकाउलेस्सासुवि। से नूणं भंते! तेउलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जइ पुच्छा। हंता गोयमा! तेउलेसे पुढविकाइए तेउलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उववट्टइ, सिय नीललेसे उववट्टइ, सिय काउलेसे उववट्टइ, तेउलेसे उववज्जइ, नो चेव णं तेउलेसे उववट्टइ। एवं आउकाइया वणस्सइकाइयावि। तेऊ-वाऊ एवं चेव, नवरं एतेसिं तेउलेस्सा नत्थि। बितियचउरिंदिया एवं चेव तिसु लेसासु। पंचेंदियतिरिक्खजो-

---

जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो मरण पामे? हे गौतम! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेश्यावाळा पृथिविकायिकोमां उत्पन्न थाय. कदाचित् कृष्णलेश्यावाळो थइ मरण पामे, कदाचित् नीललेश्यावाळो थइ मरण पामे अने कदाचित् कापोतलेश्यावाळो थइ मरण पामे. कदाचित् जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो थइ मरण पामे. ए प्रमाणे नीललेश्या अने कापोतलेश्या संबंधे जाणवुं. हे भगवन्! अवश्य तेजोलेश्यावाळो पृथिवीकायिक तेजोलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि पृच्छा. हा गौतम! अवश्य अवश्य तेजोलेश्यावाळो पृथिवीकायिक तेजोलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय. कदाचित्

-मरण पामे? बीजी लेश्याने प्राप्त थइ न उद्वर्ते? भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा'! इत्यादि. 'हन्त' अनुमत अर्थमां छे. हे गौतम! मने ए अनुमत छे के कृष्णलेश्यावाळो उत्पन्न थाय अने कृष्णलेश्यावाळो ज मरण पामे. (प्र०) कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक होय ते कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां केम उत्पन्न थाय, बीजी लेश्यासहित केम न उत्पन्न थाय? (उ०)—अहीं तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के मनुष्य नारकनुं आयुष बांधेलुं होवाथी नरकमां उत्पन्न थवावाळो अनुक्रमे तिर्यञ्चायुष के मनुष्यायुषनो संपूर्ण क्षय कर्यो नथी

णिया मणुस्सा य जहा पुढविक्काइया आदिल्लिया तिसु लेसासु भणिया तहा छसुवि लेसासु भाणियव्वा, नवरं छप्पि लेस्साओ चारेयव्वाओ। वाणमंतरा जहा असुरकुमारा। से णूणं भंते! तेउलेस्से जोइसिए तेउलेस्सेसु जोइसिएसु उववज्जइ? जहेव असुरकुमारा। एवं वेमाणियावि, नवरं दोण्हंपि चयंतीति अभिलावो।

कृष्णलेश्यावाळो उद्वर्ते, कदाचित् नीललेश्यावाळो अने कदाचित् कापोतलेश्यावाळो उद्वर्ते. तेजोलेश्यावाळो उत्पन्न थाय पण तेजोलेश्यावाळो न उद्वर्ते. ए प्रमाणे अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको पण जाणवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिको एम ज समजवा. परन्तु एओने तेजोलेश्या नथी. बेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो त्रण लेश्याओमां एमज जाणवा. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो जेम पृथिवीकायिको प्रथमनी त्रण लेश्याओमां कह्या तेम छए लेश्याओमां पण कहेवा. परन्तु छए लेश्याओनो विचार करवो. व्यन्तरो असुरकुमारोनी पेठे जाणवा. हे भगवन्! शुं तेजोलेश्यावाळो ज्योतिषिक तेजोलेश्यावाळा ज्योतिषिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम असुरकुमार संबंधे कह्युं तेम कहेवुं. वैमानिको पण एमज समजवा, परन्तु बन्ने स्थळे 'च्यवे छे' एवो पाठ कहेवो.

अने अन्तर्मुहूर्त बाकी होयछे त्यारे जे लेश्यावाळा नरकोमां उत्पन्न थवानो छे ते संबन्धी लेश्यावडे परिणत थाय छे एटले ते लेश्याना परिणामवाळो थाय छे अने ते अपतित परिणाम वडे नरकनुं आयुष वेदे छे तेथी एम कहेवाय छे के 'कृष्णलेश्यावाळो कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकमां ज उत्पन्न थाय छे पण अन्य लेश्याना परिणामवाळो उत्पन्न थतो नथी (प्र०)—कृष्णलेश्यावाळो ज केम उद्वर्ते छे? (उ०)—देव अने नारकोने लेश्यानो परिणाम पोताना भवना अन्त पर्यंत होय छे अने ए वात पूर्वे सविस्तरपणे सिद्ध करी छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळो ज उद्वर्ते छे ए प्रमाणे नीललेश्या अने कापोतलेश्या संबन्धे सूत्र कहेवुं एम असुरकुमारथी मांडीने स्तनितकुमारो सुधी कहेवुं परन्तु त्यां तेजोलेश्या सूत्र अधिक कहेवुं, कारण के तेओने तेजोलेश्या पण होय छे.

२८. से नूणं भंते! कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उववट्टइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववट्टइ ? हंता गोयमा! कण्हनीलकाउलेसे उववज्जइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववट्टइ। से नूणं भंते! कण्हलेसे जाव तेउलेस्से असुरकुमारे कण्हलेसेसु जाव तेउलेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ ? एवं जहेव नेरइए तहा असुरकुमारावि जाव थणियकुमाराविं। से नूणं भंते! कण्हलेसे जाव तेउलेसे पुढविक्काइए कण्हलेसेसु तेउलेसेसु पुढविक्काइएसु उववज्जइ ? एवं पुच्छा जहा

२८. हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो अने कापोतलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? अने कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो अने कापोतलेश्यावाळो त्यांथी उद्वर्ते ? जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते ? हे गौतम! अवश्य कृष्ण, नील अने कापोतलेश्यावाळो उत्पन्न थाय. जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते. हे भगवन्! शुं कृष्णलेश्यावाळो यावत् तेजोलेश्यावाळो असुरकुमार कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय–इत्यादि जेम नैरयिक संबंधे कह्युं तेम असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो संबंधे कहेवुं.

२८. हवे पृथिवीकायिकोमां कृष्णलेश्या संबन्धे सूत्र कहे छे—'से नूणं भंते! कण्हलेसे पुढवीकाइए' इत्यादि. अहीं तिर्यञ्च अने मनुष्योने लेश्यानो परिणाम अन्तर्मुहूर्तनो होय छे. तेथी कदाचित् जे लेश्यावाळो होय ते लेश्याना परिणामवाळो उद्वर्ते अने कदाचित् अन्य लेश्याना परिणामवाळो पण उद्वर्ते, परंतु आ तो नियम छे के जे लेश्यावाळामां उत्पन्न थाय ते अवश्य ते लेश्यावाळो ज उत्पन्न थाय, कारण के मनुष्य अने तिर्यञ्चो आगामी भवनी लेश्यानुं अन्तर्मुहूर्त व्यतीत थया बाद अने देव अने नारको पोताना

असुरकुमाराणं । हंता गोयमा ! कण्हलेसे जाव तेउलेसे पुढविक्काइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेसेसु पुढविक्काइएसु उववज्जति, सिय कण्हलेसे उववट्टइ, सिय नीललेसे, सिय काउलेसे उववट्टइ, सिय जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववट्टइ, तेउलेसे उववज्जइ, नो चेव णं तेउलेसे उववट्टइ । एवं आउकाइया वणस्सइकाइयावि भाणियव्वा । से नूणं भंते ! कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे तेउकाइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु तेउकाइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उववट्टइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववट्टइ ? हंता गोयमा! कण्हलेसे नीललेसे का-

हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो यावत् तेजोलेश्यावाळो पृथिवीकायिक शु कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम असुरकुमारो संबंधे प्रश्न कर्यो तेम करवो. हा गौतम! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय. कदाच कृष्णलेश्यावाळो, कदाच नीललेश्यावाळो अने कदाच कापोतलेश्यावाळो उद्वर्ते कदाच जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते. तेजोलेश्यावाळो उत्पन्न थाय पण तेजोलेश्यावाळो न उद्वर्ते. ए प्रमाणे अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको पण कहेवा. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो अने कापोतलेश्यावाळो तेजस्कायिक कृष्ण, नील अने कापोतलेश्यावाळा तेजस्कायिकोमां उत्पन्न थाय ? अने कृष्ण, नील अने कापोत

भवनी लेश्यानु अन्तर्मुहूर्त बाकी होय त्यारे परिणत थयेली लेश्या वडे जीवो परलोकमां जाय छे-एवु शास्त्रनु वचन छे. ते माटे एम छे के 'गोयमा ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेसु पुढविकाइएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उववट्टइ'—कृष्णलेश्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमा उत्पन्न थाय छे अने कदाचित् कृष्णलेश्यावाळो उद्वर्ते छे-इत्यादि ए प्रमाणे नीललेश्या

उलेसे तेउकाइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु तेउकाइएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उव्वट्टइ, सिय नीललेसे उववट्टति, सिय काउलेसे उववट्टइ, सिय जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववट्टइ। एवं वाउकाइयवेइंदियतेइंदियचउरिंदियावि भाणियव्वा। से नूणं भंते! कण्हलेसे जाव सुक्कलेसे पंचेंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेसेसु पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ? पुच्छा। हंता गोयमा! कण्हलेसे जाव सुक्कलेस्से

लेश्यावाळो उद्वर्ते? जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते? हे गौतम! अवश्य कृष्ण, नील अने कापोतलेश्यावाळो तेजस्कायिक कृष्ण, नील अने कापोतलेश्यावाळा तेजस्कायिकोमां उत्पन्न थाय, कदाचित् कृष्णलेश्यावाळो, कदाचित् नीललेश्यावाळो अने कदाचित् कापोतलेश्यावाळो उद्वर्ते. कदाचित् जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लश्यावाळो उद्वते. ए प्रमाणे वायुकायिक, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो कहेवा. हे भगवन्! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो यावद् शुक्ललेश्यावाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच शुं कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय–इत्यादि पृच्छा. हे गौतम! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो यावत् शुक्ललेश्या-

अने कापोतलेश्या विषयक सूत्र कहेवुं. तथा ज्यारे तेजोलेश्यावाळा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशानदेवो पोताना भवथी च्यवी पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय छे त्यारे केटलाक काळ सुधी अपर्याप्तावस्थामां तेओने तेजोलेश्या पण होय छे. त्यारपछी होती नथी. कारण के तेवा प्रकारना भवस्वभावथी तेजोलेश्या योग्य द्रव्यने ग्रहण करवानी तेओनी शक्ति नथी. माटे तेजोलेश्या सूत्रमां कह्युं छे—'तेउल्लेसे उववज्जइ, नो चेव णं तेउलेसे उववट्टइ' इति. तेजोलेश्यावाळो उत्पन्न थाय छे, पण तेजोलेश्यावाळो उद्वर्ततो नथी–मरण पामतो नथी. जेम पृथिवीकायिकोना चार सूत्रो कह्यां तेम अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकना पण कहेवां. कारण के तेओने पण अपर्याप्तावस्थामां तेजोलेश्यानो संभव छे. तेजस्कायिक, वायु, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने प्रत्येकने त्रण सूत्रो

पंचेंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेसेसु पंचेंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उव्वट्टइ, जाव सिय सुक्कलेसे उव्वट्टइ, सिय जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उव्वट्टइ। एवं मणूसेवि। वाणमंतरा जहा असुरकुमारा। जोइसियवेमाणियावि एवं चेव, नवरं जस्स जल्लेसा। दोण्हवि 'चयणं'ति भाणियव्वं।

वाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय. कदाचित् कृष्णलेश्यावाळो यावत् कदाचित् शुक्ललेश्यावाळो उद्वर्ते. कदाचित् जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते. ए प्रमाणे मनुष्य संबंधे पण जाणवु. व्यन्तरो असुरकुमारोनी पेठे जाणवा. ज्योतिषिक अने वैमानिको पण एम ज समजवा परन्तु जेओने जे लेश्या होय ते कहेवी, अने बन्नेने पण 'च्यवे छे' एवो पाठ कहेवो.

कहेवां. कारण के तेओने तेजोलेश्यानो असंभव छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो जेम प्रथमनी त्रण लेश्यामां पृथिवीकायिकने माटे तेम छए लेश्यामां कहेवा. कारण के ए लेश्यामांनी कोइपण लेश्या वडे तेओनी उत्पत्तिनो संभव छे अने उत्पत्ति सम्बन्धी एक एक लेश्याना सिद्धमां अनुक्रमे लिये ए ब विकल्पोनो संभव छे. सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे—"से नूणं भंते! कण्हलेसे पंचिंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, कण्हलेसे उव्वट्टइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उव्वट्टइ? हन्ता गोयमा! कण्हलेसे पंचिंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उव्वट्टइ, सिय नीललेसे उव्वट्टइ, सिय काउलेसे उव्वट्टइ, सिय तेउलेसे उव्वट्टइ, सिय सुक्कलेसे उव्वट्टइ, सिय जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उव्वट्टइ।"—हे भगवन्! शुं खरेखर कृष्णलेश्यावाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच कृष्णलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय? अने कृष्णलेश्यावाळो उद्वर्ते? जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते? हा गौतम! कृष्णलेश्यावाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच कृष्णलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां

२९. कण्हलेसे णं भंते ! नेरइए कण्हलेसं नेरइयं पणिहाए ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे केवतियं खेत्तं जाणइ, केवइयं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! णो बहुयं खेत्तं जाणइ, णो बहुयं खेत्तं पासइ, णो दूरं खेत्तं

२९. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी 'प्रणिधाय' अपेक्षाए अवधिज्ञान वडे सर्वतः-चारे दिशामां

उत्पन्न थाय, कदाच कृष्णलेश्यावाळो, कदाच नीललेश्यावाळो, कदाच कापोतलेश्यावाळो कदाच तेजोलेश्यावाळो कदाच पद्मलेश्यावाळो अने कदाच शुक्ललेश्यावाळो उद्वर्ते, कदाच जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते. ए प्रमाणे नील-कापोत, तेजस् पद्म अने शुक्ललेश्या संबन्धे सूत्रो कहेवां. 'वाणमंतरा जहा असुरकुमारा' व्यन्तरो असुरकुमारोनी जेम कहेवा. एटले तेओ संबन्धे जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्वर्ते-एम कहेवुं. कारण के सर्व देवोने लेश्यानो परिणाम पोताना भव सुधी निरंतर होय छे. ए प्रमाणे लेश्यानी संख्यानो विचार करी ज्योतिष्क अने वैमानिक संबन्धे सूत्रो कहेवां. परन्तु 'चयन्ति'-च्यवे छे एवो पाठ कहेवो. ए प्रमाणे एक एक लेश्या संबन्धे चोवीश दंडकना क्रमथी नैरयिकादि संबन्धे सूत्रो कहेवां. तेमां कोइ आशंका करे के थोडा एवा एक एक नारकादि संबन्धे आ सूत्रसमूह छे, ज्यारे घणा भिन्नलेश्यावाळा नैरयिकादि ते गतिमां उत्पन्न थाय त्यारे वस्तुस्थिति अन्यथा पण होय, कारण के एक एक व्यक्तिना धर्मनी अपेक्षाए समुदायनो धर्म क्वचित् अन्यथा जणाय छे. तेथी ते आशंका दूर करवा माटे जेओने जेटली लेश्याओनो संभव छे तेओने एक साथे तेटली लेश्याओ संबन्धे एक एक सूत्र उपर कहेला अर्थ वाळुं प्रतिपादन करे छे-"से नूणं भंते ! कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु नेरइएसु उववज्जइ' इत्यादि. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो अने कापोतलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा के कापोतलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि समग्र सूत्र सुगम छे.

२९. हवे कृष्णादिलेश्यावाळा नैरयिकना अवधिज्ञान अने दर्शनना विषयभूत क्षेत्रना परिमाणनुं तारतम्य बतावे छे—'हे भगवन् !

जाणइ, णो दूरं खेत्तं पासइ, इत्तरियमेव खित्तं जाणइ, इत्तरियमेव खेत्तं पासइ। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुचइ–'कण्हलेसे णं नेरइए तं चेव जाव इत्तरियमेव खेत्तं पासइ'? गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिज्जंसि भूमिभागंसि ठिचा सव्वओ समंता समभिलोएज्जा, तए णं से पुरिसे धरणितलगयं पुरिसं पणिहाए सव्वओ समंता समभिलोएमाणे णो बहुयं खेत्तं जाव पासइ, जाव इत्तरियमेव खेत्तं पासइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुचइ–'कण्हलेसे णं नेरइए जाव इत्तरियमेव खेत्तं पासइ'। नीललेसे णं भंते! नेरइए कण्हलेसं नेरइयं

अने समतात्–चारे विदिशामां जोतो केटलुं क्षेत्र जाणे अने केटलुं क्षेत्र देखे? हे गौतम! ते बहु क्षेत्र जाणतो नथी, बहु क्षेत्र जोतो नथी, दूर रहेलु क्षेत्र जाणतो नथी अने दूर रहेल क्षेत्र देखतो नथी. थोडुं (अधिक) क्षेत्र जाणे छे अने थोडुं (अधिक) क्षेत्र देखे छे. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक'–इत्यादि तेज कहेवु, यावत् इत्वर–थोडुं अधिक क्षेत्र जाणे छे? हे गौतम! जेम कोइ पुरुष बरोबर सरखी अने रमणीय भूमिभाग उपर ऊभो रहीने चारे तरफ जुए तेथी ते पुरुष पृथिवीतलमां रहेला पुरुषनी अपेक्षाए चोतरफ जोतो बहु क्षेत्रने यावत् देखतो नथी, यावत् थोडां क्षेत्रने देखे छे. ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के कृष्णलेश्या-

कृष्णलेश्यावाळो कोइक नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा बीजा नैरयिकनी 'प्रणिधाय'–अपेक्षाए अवधिज्ञान वडे सर्वतः चारे दिशामां 'समन्ततः'–चारे विदिशामां 'समभिलोकमान' जोतो केटलु क्षेत्र जाणे अथवा अवधिदर्शन वडे केटलु क्षेत्र देखे? भगवान् उत्तर आपे छे–हे गौतम! घणु क्षेत्र न जाणे, तेम घणु क्षेत्र न देखे तात्पर्य ए छे के विवक्षितकृष्णलेश्यावाळो नैरयिक पोतानी योग्यताने अनुसारे अतिविशुद्ध छतां पण बीजा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अति घणु क्षेत्र अवधिज्ञान-दर्शन वडे जाणतो अने जोतो नथी एज वापरा कहे छे–

पणिहाय ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे २ केवतियं खेत्तं जाणइ, केवतियं खेत्तं पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं खेत्तं जाणइ बहुतरागं खेत्तं पासइ,दूरतरं खेत्तं जाणइ,दूरतरं खेत्तं पासइ,वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ, वितिमिरतरागं खेत्तं पासइ, विसुद्धतराग खेत्तं जाणइ, विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ।से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ– 'नीललेसे णं नेरइए कण्हलेसं नेरइयं पणिहाय जाव विसुद्धतरागं खेत्तं जाणइ, विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ' ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ पव्वयं दुरूहित्ता सव्वओ समंता सम-

---

वाळो नैरयिक यावत् अल्प क्षेत्रने जुए छे. हे भगवन् ! नीललेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अवधिज्ञान वडे चारे तरफ जोतो जोतो केटला क्षेत्रने जाणे अने देखे ? हे गौतम ! अति घणा क्षेत्रने जाणे अने अत्यंत घणा क्षेत्रने देखे. अति दूर क्षेत्रने जाणे अने अति दूर क्षेत्रने देखे. वितिमिरक–अत्यन्त स्पष्ट क्षेत्रने जाणे अने अत्यन्त स्पष्ट क्षेत्रने देखे, अत्यन्त विशुद्ध क्षेत्रने जाणे अने अत्यन्त विशुद्ध क्षेत्रने देखे. हे भगवन् ! एम शाथी कहो छो के नीललेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए यावत् विशुद्धतर क्षेत्रने जाणे अने विशुद्धतर क्षेत्रने देखे ? हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष बरोबर सरखी अने रमणीय भूमिभागथी पर्वत उपर चढीने चारे

अतिदूरनुं क्षेत्र जाणतो नथी, तेम अति दूरनुं क्षेत्र जोतो नथी. परन्तु इत्वर–थोडुं अधिक क्षेत्र जाणे छे अने थोडुं अधिक क्षेत्र देखे छे. आ सूत्र समान नरक पृथिवीमां रहेला कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोनी अपेक्षाए समजवुं, कारण के एम जो न मानीए तो व्यभिचारनो संभव थाय छे. जेमके सातमी नरकपृथिवीमां रहेलो कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक जघन्यथी अर्ध गाउ जाणे छे अने वधारेमां वधारे एक गाउ जाणे छे. छट्ठी पृथिवीमां रहेलो जघन्यथी एक गाउ अने उत्कर्षथी दोढ गाउ, पांचमी नरकमां रहेलो जघन्यथी दोढ गाउ अने उत्कर्षथी

भिलोएज्जा, तए णं से पुरिसे धरणितलगयं पुरिसं पणिहाय सव्वओ समंता समभिलोएमाणे २ बहुतरागं खेत्तं जाणइ, जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—'नीललेस्से नेरइए कण्हलेसं जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ'। काउलेस्से णं भंते! नेरइए नीललेस्सं नेरइयं पणिहाय ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोएमाणे २ केवतियं खेत्तं जाणइ पासइ? गोयमा! बहुतरागं खेत्तं जाणइ पासइ, जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासति। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—'काउलेस्से णं नेरइए जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ'? गोयमा! से जहा-

दिशा अने विदिशामां जुए, तेथी ते पुरुष पृथिवीतल उपर रहेला पुरुषनी अपेक्षाए चारे तरफ जोतो घणा क्षेत्रने जाणे, यावत् विशुद्धतर क्षेत्रने देखे, ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के नीललेश्यावाळो नारक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए यावत् विशुद्ध क्षेत्रने जुए. हे भ० कापोतलेश्यावाळो नैरयिक नीललेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अवधिज्ञानवडे चारेतरफ जोतोजोतो केटला क्षेत्रने जाणे अने देखे? हे गौतम! घणां क्षेत्रने जाणे अने देखे, यावत् विशुद्धतर क्षेत्रने देखे हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'कापोतलेश्यावाळो नैरयिक यावत् विशुद्ध क्षेत्रने जुए'? हे गौतम! जेम कोइ पुरुष बरोबर सरखी अने रमणीय भूमि उपरथी पर्वत उपर चढे, अने उपर

काइक न्यून बे गाउ जाणे छे अने जुए छे तेथी घणा के घणतर अधिक क्षेत्रनो संभव होवाथी प्रस्तुत सूत्रमां व्यभिचार-अनियतपणुं प्राप्त थाय छे जेमके अतिविशुद्ध छता पण कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक समान नरक पृथिवीमां रहेनारा बीजा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए काइक अधिक जुए छे, पण घणुं वधारे जोतो नथी ते प्रमाणे दृष्टान्तद्वारा सिद्ध करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'से केणट्ठेणं भंते' इत्यादि हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो—इत्यादि अहीं आ तात्पर्य छे—जेम सरखी पृथिवी उपर रहेलो कोइ

नामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ पव्वयं दुरूहइ, दुरूहित्ता दोवि पाए उच्चाविया, (वइत्ता) सव्वओ समंता समभिलोएज्जा, तए णं से पुरिसे पव्वयगयं धरणितलगयं च पुरिसं पणिहाय सव्वओ समंता समभिलोएमाणे बहुतरागं खेत्तं जाणइ बहुतरागं खेत्तं पासइ, जाव वितिमिरतरागं पासइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—'काउलेस्से णं नेरइए नीललेस्सं नेरइयं पणिहाय तं चेव जाव वितिमिरतरागं खेत्तं पासइ' ।

चढीने बन्ने पग उंचा करी चोतरफ जुए तेथी ते पर्वत उपर रहेला अने पृथिवी उपर रहेला पुरुषनी अपेक्षाए चोतरफ जोतो घणा क्षेत्रने जाणे अने जुए, यावत् स्पष्ट क्षेत्रने जुए, ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के 'कापोतलेश्यावाळो नैरयिक नीललेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए इत्यादि तेमज कहेवुं, यावत्—स्पष्ट क्षेत्रने देखे.

एक विवक्षित पुरुष पोतानी चक्षु निर्मल होवाथी कंइक अधिक जुए छे. पण घणुं वधारे जोतो नथी, तेम कोइ एक विवक्षित कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक पोतानी भूमिकाने अनुसारे अतिविशुद्ध छतां समान पृथिवीमां रहेनार बीजा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अवधिवडे कंइक अधिक क्षेत्र जुए छे, पण घणुं वधारे क्षेत्र जोतो नथी. अहीं बरोबर सरखी पृथिवीना स्थाने समान नरक पृथिवी छे, पोतानी भूमिका समान कृष्णरूप लेश्या छे अने चक्षुना स्थाने अवधिज्ञान छे, एथी आ अर्थ व्यक्त थाय छे—जेम समान भूमि उपर रहेलो पुरुष सर्व दिशाओ अने सर्व विदिशामां जोतो खाडामां रहेला पुरुषनी अपेक्षाए घणु वधारे क्षेत्र जुए छे, ते प्रमाणे पांचमी नरकपृथिवीमां रहेलो पोतानी भूमिकाने अनुसारे अतिविशुद्ध कृष्णलेश्यावाळो विवक्षित नैरयिक छे ते सातमी नरकपृथिवीमां रहेला अतिमन्द सामर्थ्यवाळा अवधिज्ञानी नैरयिकनी अपेक्षाए घणुं वधारे जुए छे, कारण के तेनुं अवधिज्ञान कंइक अधिक त्रणगणुं छे. हवे नीललेश्यावाळा नैरयिक संबन्धे सूत्र कहे छे—'नीललेस्से णं भंते! नेरइए कण्हलेस्सं नेरइयं पणिहाए' इत्यादि. हे भगवन्! नीलले-

३०. कण्हलेसे णं भंते ! जीवे कइसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होज्जा,

३०. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो जीव केटला ज्ञानोमां होय ? हे गौतम ! बे, त्रण अने चार ज्ञानमां वर्ततो होय. जो बे ज्ञानमां

लेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अवधिज्ञान वडे केटला क्षेत्रने जाणे ? इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे, परन्तु 'वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ' विगत-गयु छे तिमिर-तिमिर अन्य भ्रान्ति जेमां ते वितिमिर-स्पष्ट, आ वितिमिर-स्पष्ट छे, आ पण वितिमिर स्पष्ट छे, परन्तु आ अतिशय वितिमिर छे, माटे वितिमिर-भ्रान्तिरहित क्षेत्रने जाणे छे अहीं अतिशय अर्थमां तर प्रत्यय थयो छे अने प्राकृतना नियमथी स्वार्थमां क प्रत्यय अने दीर्घ थयो छे ए कारणथी विशुद्धतर-अत्यन्त स्फुट प्रतिभासवाळु जाणे छे भावार्थ आ छे—जेम पृथिवी उपर रहेला पुरुषनी अपेक्षाए पर्वत उपर चढेलो मनुष्य अतिदूरना क्षेत्रने जुए छे, अने ते पण स्फुटप्रतिभासवाळा क्षेत्रने जाणे छे, तेम विवक्षित-नीललेश्यावाळो पोतानी योग्यताने अनुसारे अतिविशुद्ध अवधिज्ञानथी अन्य कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अतिदूर अने स्फुटप्रतिभासवाळा क्षेत्रने जाणे छे अहीं पर्वतने स्थाने उपरनी त्रीजी नरकपृथिवी छे, तेओने पोतानी भूमिकाने अनुसारे अतिविशुद्ध नीललेश्या छे, पृथिवीतलने स्थाने नीचेनी कृष्णलेश्या छे अने चक्षुने स्थाने अवधिज्ञान छे. एवे नीललेश्यावाळानी अपेक्षाए कापोतलेश्या संबन्धे सूत्र कहे छे—'काउलेस्से णं भंते ! नेरइए नीललेस्सं नेरइयं पणिहाय' इत्यादि 'हे भगवन्'! कापोतलेश्यावाळो नैरयिक नीललेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए —इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे, परन्तु 'पन्ने गगो 'उच्चाइत्ता-उंचा करीने एटले 'पगे पानी उंची करीने' ए अर्थ समजवो. भावार्थ छे—जेम पर्वतना उपर वृक्ष उपर चढेलो चारे तरफ दिशाओ अने विदिशाओमां जोतो घणु अने अत्यंत स्पष्ट जुए छे, तेम कापोतलेश्यावाळो नैरयिक बीजा नीललेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए घणु क्षेत्र अवधिज्ञानवडे जाणे छे अने जुए छे, अने ते पण अतिस्पष्टपणे जाणे छे, अहीं वृक्षने स्थाने कापोतलेश्या अने उपरनी नरकपृथिवी छे, पर्वतने स्थाने नीललेश्या अने त्रीजी नरकपृथिवी छे अने चक्षुने स्थाने अवधिज्ञान छे

दोसु होमाणे आभिणिवोहियसुयनाणे होज्जा, तिसु होमाणे आभिणिवोहियसुयनाणओहिनाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिवोहियसुयनाणमणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिवोहियसुयओहिमणपज्जवनाणेसु होज्जा, एवं जाव पम्हलेसे। सुक्कलेसेणं भंते! जीवे कइसु नाणेसु होज्जा? गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा, दोसु होमाणे आभिणिवोहियनाण एवं जहेव कण्हलेसाणं तहेव भाणियव्वं जाव

होय तो आभिनिवोधिक अने श्रुतज्ञानमां होय. जो त्रण ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमां होय. अथवा आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमां होय. जो चार ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमां होय. ए प्रमाणे यावत् पद्मलेश्यावाळो जाणवो. हे भगवन् शुक्ललेश्यावाळो जीव केटला ज्ञानमां होय? हे गौतम! बे, त्रण अने चार ज्ञानमां होय. जो बे ज्ञानमां होय तो 'आभिनिकबोधिकज्ञान'—इत्यादि जेम कृष्णलेश्यावाळाने कह्युं तेमज कहेवुं, यावत् चार

---

३०. 'कयी लेश्याओ केटला ज्ञानोमां होय' ए निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—कण्हलेसे णं भंते! जीवे कइसु नाणेसु होज्जा? 'हे भगवन्! कृष्णलेश्यावाळो जीव केटला ज्ञानोमां होय'—इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् कहे छे—'हे गौतम! बे, त्रण अने चार ज्ञानमां होय छे, तेमां बे ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक अने श्रुतज्ञानमां होय, त्रण ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमां अथवा आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यव ज्ञानमां होय, अहीं अवधिज्ञान रहितने पण मनःपर्यवज्ञान थाय छे, कारण के सिद्धप्राभृतादि ग्रन्थोमां अनेकवार तेवी रीते प्रतिपादन करेलुं छे. वळी दरेक ज्ञाननी तेना आवरणना क्षयोपशमनी सामग्री विचित्र होय छे. तेमां कोइक आमर्षौंध्यादिमांनी कोइपण लब्धिसहित अप्रमत्त चारित्रवाळाने मनःपर्यायज्ञानावरणना क्षयोपशमना निमित्तभूत तेवा प्रकारना अध्यवसायादिरूप सामग्री प्राप्त थाय छे, परन्तु अवधिज्ञानावरणना क्षयोपशमना कारणभूत सामग्री

चउहिं । एगंमि नाणे होमाणे एगंमि केवलनाणे होज्जा ।

पन्नवणाए भगवईए सत्तरसे लेस्सापए तइओ उद्देसओ समत्तो ।

ज्ञानमां होय. जो एक ज्ञानमां होय तो एक केवलज्ञानमां होय.

प्रज्ञापना भगवतीमां सत्तरमा लेश्यापदनो त्रीजो उद्देशक समाप्त

प्राप्त थती नथी, तेथी तेने मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त थाय छे (प्र०)—मनःपर्यवज्ञान अतिविशुद्धने थाय छे अने कृष्णलेश्या संक्लिष्ट अध्यवसायरूप छे तो कृष्णलेश्यावाळाने मनःपर्यव ज्ञाननो केम संभव होय? (उ०)—अहीं प्रत्येक लेश्याना असंख्याता लोकाकाश प्रदेशप्रमाण अध्यवसायस्थानो होय छे. तेमांना केटलाएक मन्द रसवाळा अध्यवसायस्थानको प्रमत्तसंयतने पण होय छे. तेथी कृष्ण, नील अने कापोतलेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थानक सुधी अन्य कार्मग्रन्थिक शास्त्रमां कहेली छे मनःपर्यवज्ञान प्रथम अप्रमत्त संयतने थाय छे अने त्यार पछी प्रमत्तसंयतने पण होय छे, माटे कृष्णलेश्यावाळाने पण मनःपर्यवज्ञान संभवे छे चार ज्ञानमां होय तो आभिनिबोधिक, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यव—ए चार ज्ञानमां होय 'एवं जाव पम्हलेसे' ए प्रमाणे कृष्णलेश्यावाळाने कह्युं तेम उपर कहेला प्रकारवडे यावत् पद्मलेश्या सुधी कहेवुं एटले के नीललेश्यावाळो, कापोतलेश्यावाळो, तेजोलेश्यावाळो अने पद्मलेश्यावाळो उपर कह्या प्रमाणे बे, त्रण अने चार ज्ञानोमां कहेवो ते आ प्रमाणे—"हे भगवन्! नीललेश्यावाळो जीव केटला ज्ञानमां होय? हे गौतम! बे, त्रण के चार ज्ञानमां होय—इत्यादि पण शुक्ललेश्यावाळामां विशेषता छे माटे ते संबन्धे जुदु सूत्र कहे छे—"सुक्कलेसे णं भंते!" इत्यादि हे भगवन्! शुक्ललेश्यावाळो इत्यादि शुक्ललेश्यामांज केवलज्ञान होय छे पण बीजी लेश्याओमां होतुं नथी, तेथी बाकीनी लेश्यावाळाओथी शुक्ललेश्यावाळानी विशेषता छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा लेश्यापदनो त्रीजो उद्देशक समाप्त

चउत्थो उद्देसो।

परिणामवन्नरसगंधसुद्धअपसत्थसंकिलिट्ठुण्हा। गतिपरिणामपदेसोगाढवग्गणठाणाणमप्पबहुं ॥१॥

३१. कइ णं भंते! लेसाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा। से नूणं भंते! कण्हलेसा नीललेसं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए

चोथो उद्देशक

१ परिणाम, २ वर्ण, ३ रस, ४ गंध, ५ शुद्ध, ६ अप्रशस्त, ७ संक्लिष्ट, ८ उष्ण, ९ गति, १० परिणाम, ११ प्रदेश, १२ अवगाढ, १३ वर्गणा, १४ स्थान अने १५ अल्पबहुत्व ए प्रमाणे पंदर अधिकार चोथा उद्देशकमां छे.

३१. हे भगवन्! केटली लेश्याओ छे? हे गौतम! छ लेश्याओ छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. हे भगवन्! कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तेना रूपपणे, तेना वर्णपणे, तेना गंधपणे, तेना रसपणे अने तेना स्पर्शपणे वारंवार परिणमे? हा गौतम!

त्रीजो उद्देशक कह्यो, हवे चोथा उद्देशकनो प्रारंभ थाय छे. तेमां आदिमां अधिकार प्रतिपादक आ गाथा छे—'परिणामवण्ण' इत्यादि. १ प्रथम परिणामाधिकार, २ बीजो वर्णाधिकार, ३ त्रीजो रसाधिकार, ४ चोथो गन्धाधिकार, ५ पांचमो शुद्ध अने अशुद्धाधिकार, ६ छट्ठो प्रशस्त अने अप्रशस्ताधिकार, ७ सातमो संक्लिष्ट अने असंक्लिष्टाधिकार, ८ आठमो उष्ण-शीताधिकार, ९ नवमो गत्यधिकार, १० दसमो परिणामाधिकार, ११ अगियारमो प्रदेश-प्रदेशप्ररूपणाधिकार, १२ बारमो अवगाढ-अवगाहनाधिकार, १३ वर्गणाधिकार, १४ स्थानप्ररूपणाधिकार अने १५ पंदरमो अल्पबहुत्वाधिकार ए पंदर अधिकारो आ उद्देशकमां कहेवाना छे.

३१. तेमां प्रथम परिणामाधिकार कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार जेनो परिणाम कहेवानो छे ते लेश्याओ केटली छे ते बतावे छे

भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति' ? गोयमा ! से जहा नामए खीरे दूसिं पप्प सुद्धे वा वत्थे रागं पप्प तारूवत्ताए जाव ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमइ, से तेणट्ठेणं

कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तद्रूपपणे, यावत्–वारवार परिणमे छे. हे भगवन् ! एम आ हेतुथी कहो छो के 'कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तद्रूपणे यावत् वारवार परिणमे छे' ? हे गौतम ! जेम दूध दुष्य–छाशने प्राप्त करी, अथवा शुद्ध वस्त्र रंगने प्राप्त करी तद्रूपणे, यावत् तत्स्पर्शपणे वारवार परिणमे छे, ते कारणथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामी तद्रूपणे यावत्

—कइ ण भंते ! लेसाओ पण्णत्ताओ ? हे भगवन् ! केटली लेश्याओ कही छे–इत्यादि आ सूत्र पूर्वे पण कह्यु छे, परन्तु परिणामरूप अर्थाधिकारनुं प्रतिपादन करवा माटे फरीथी कहेवामां आव्युं छे—'से नूण भंते' ! इत्यादि 'से' शब्द अथशब्दना अर्थमां छे अने अथशब्द प्रश्नना अर्थमां छे हे भगवन् ! 'नूनम्' निश्चित कृष्णलेश्या–कृष्णलेश्याने योग्य द्रव्यो नीललेश्याने–नीललेश्याने योग्य द्रव्योने पामीने एटले परस्पर एकबीजाना अवयवनो स्पर्श प्राप्त करी 'तद्रूपतया' तद्रूपपणे–नीललेश्यारूपपणे, अहीं रूपशब्द स्वभाववाची छे एटले नीललेश्याना स्वभावपणे 'भूयो भूयः' वारंवार परिणमे ? तेनो स्वभाव तेना वर्णादिरूपे होय छे, तेथी कहे छे के 'तद्वर्णतया, तद्रसतया तद्गन्धतया, तत्स्पर्शतया'–तेना वर्णरूपे, तेना रसरूपे, तेना गन्धरूपे अने तेना स्पर्शरूपे, अहीं सर्वे तत् (ते) शब्दवडे नीललेश्या योग्य द्रव्यने ग्रहण करे छे एटले नीललेश्या द्रव्यना स्वभावपणे 'भूयो भूयः' अनेकवार तिर्यंच अने मनुष्योने ते ते भवान्तरनी प्राप्तिमां अथवा वाकीना समये परिणमे छे ? आ हकीकत तिर्यंच मनुष्योने आश्रयी जाणवी ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो पछी एटले भगवान् उत्तर आपे छे–'हन्ता गोयमा' ! हा गौतम ! इत्यादि अहीं 'हन्ता' ए अनुमतिना अर्थमां छे हे गौतम ! ए मने अनुमत छे के कृष्णलेश्या नीललेश्याने

गोयमा ! एवं वुच्चइ—'कण्हलेसा नीललेसं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमइ' । एवं एतेणं अभिलावेणं नीललेसा काउलेसं पप्प, काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसं पप्प, पम्हलेसा सुक्कलेसं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमइ ।

वारंवार परिणमे छे'.ए प्रमाणे ए पाठ वडे नीललेश्या कापोतलेश्याने पामी,कापोतलेश्या तेजोलेश्याने पामी,तेजोलेश्या पद्मलेश्याने पामी अने पद्मलेश्या शुक्ललेश्याने पामी यावत् वारंवार परिणमे .

पामीने तद्रूपपणे परिणमे छे. अहीं आ भावार्थ छे—ज्यारे कृष्णलेश्याना परिणामवाळो तिर्यंच के मनुष्य भवान्तरमां जवानी इच्छावाळो होय अने नीललेश्या योग्य द्रव्यने ग्रहण करे त्यारे नीललेश्या योग्य द्रव्यना संबधथी ते कृष्णलेश्याने योग्य द्रव्यो तेवा प्रकारना जीवना परिणामरूप सहकारी कारण प्राप्त करी नीललेश्या द्रव्यरूपे परिणमे छे. कारण के पुद्गलानो ते ते रूपे परिणाम पामवानो स्वभाव छे. तेथी ते केवळ नीललेश्या योग्य द्रव्यना प्राधान्यथी नीललेश्याना परिणामवाळो थइ काळ करी भवान्तरमां उत्पन्न थाय छे. कह्युं छे के 'जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसे उववज्जइ'-जे लेश्याद्रव्योने ग्रहण करी काळ करे छे ते लेश्याना परिणामवाळो उत्पन्न थाय छे. तथा तेज तिर्यंच अने मनुष्य तेज भवमां वर्तता ज्यारे कृष्णलेश्याना परिणामवाळो थइने नीललेश्यापणे परिणत थाय छे त्यारे पण कृष्णलेश्या योग्य द्रव्यो ते काळे ग्रहण करेला नीललेश्या योग्य द्रव्यना संबन्धथी नीललेश्या योग्य द्रव्यरूपे परिणत थाय छे. आज अर्थनो दृष्टान्त वडे विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम प्रश्नसूत्र कहे छे—'से केणट्ठेणं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! एम शाथी कहो छो-इत्यादि प्रश्न सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे-'गोयमा ! से जहानामए खीरे' इत्यादि. 'यथानाम' लोकप्रसिद्ध जेमके गोक्षीर-गायनुं दूध, बकरीनुं दूध, भेंसनुं दूध-इत्यादि नामवाळुं दूध होय ते 'दूसी' देशी शब्द होवाथी दूष्य-चलोवेली छाशने प्राप्त करी परस्पर अवयवना स्पर्श वडे एकमेक थइने, तथा शुद्ध-मेलरहित वस्त्र, कारण के मलिन वस्त्रने

३२. से नूण भंते ! कण्हलेसा नीललेसं काउलेसं तेउलेसं पम्हलेसं सुक्कलेसं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमइ ? हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेसं पप्प जाव सुक्कलेसं पप्प तारूवत्ताए तागंधत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'कण्हलेसा नीललेसं जाव सुक्कलेसं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमइ' ? गोयमा ! से जहानामए वेरुलियमणी

३२. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्याने पामी तद्रूपपणे, तद्वर्णपणे, तद्गन्धपणे, तद्रसपणे अने तत्स्पर्शपणे वारंवार परिणमे ? हा गौतम ! कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने, यावत् शुक्ललेश्याने पामी तद्रूपपणे, तद्वर्णपणे, तद्गन्धपणे तद्रसपणे अने तत्स्पर्शपणे वारवार परिणमे छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'कृष्णलेश्या

रंगवामां आवे तो पण तेवा प्रकारनो रंग लागतो नथी माटे शुद्ध वस्त्र कह्युं छे, राग-मजीठ वगेरेनो रंग प्राप्त करीने 'तद्रूपतया' मजीठ वगेरे रंगना स्वभावरूपे एटले 'तद्वर्णतया' इत्यादि तेना वर्णादिरूपे परिणमे छे, ते प्रमाणे कृष्णलेश्यायोग्य द्रव्यो नीललेश्या योग्य द्रव्योने प्राप्त करी ते रूपे परिणमे छे अहीं आ भावार्थ छे—जेम दूधरूप कारणमां अन्दर रहेला वर्णादि छाशना वर्णादि भावे परिणमे छे, अथवा शुद्ध वस्त्ररूप कारणमां रहेला वर्णादि मजीठ वगेरे रंगद्रव्यना वर्णादिभावे परिणत थाय छे तेम कृष्णलेश्या योग्य द्रव्यरूप कारणमां रहेला वर्णादि नीललेश्या योग्य द्रव्यना वर्णादिपणे परिणमे छे 'से तेणट्ठेणं' ते कारणथी इत्यादि उपसंहार वाक्य सुगम छे ए प्रमाणे 'नीललेश्या कापोतलेश्याने पामीने' इत्यादि चारे सूत्रोनो विचार करवो

३२-३३. एम पूर्व पूर्व लेश्यानुं पछी पछीनी लेश्याने आश्रयी ते रूपे परिणमन कह्युं हवे एक एक लेश्यानुं अनुक्रमे बाकीनी बधी लेश्यारूपे यथासंभव परिणमन कहे छे-'से नूण भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्स काउलेस्सं'—हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्या

सिया कण्हसुत्तए वा नीलसुत्तए वा लोहियसुत्तए वा हालिद्दसुत्तए वा सुक्किल्लसुत्तए वा आइए समाणे तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमइ, से तेणट्ठेणं एवं वुच्चइ–'कण्हलेसा नीललेसं जाव सुक्कलेसं पप्प तारूवत्ताए भुज्जो २ परिणमति ।

२३. से नूणं भंते ! नीललेसा किण्हलेस्सं जाव सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमइ ? हंता

नीललेश्या यावत् शुक्ललेश्याने पामी तद्रूपणे यावत् वारंवार परिणमे छे'? हे गौतम ! जेम कोइ वैडूर्य मणि होय अने ते काळा सूत्रमां, लीला सूत्रमां, राता सूत्रमां के धोळा सूत्रमां परोव्यो होय तो तद्रूपणे यावत् वारंवार परिणमे छे, ते कारणथी एम कहुं छुं के कृष्णलेश्या नीललेश्या यावत् शुक्ललेश्याने पामीने तद्रूपपणे वारंवार यावत् परिणमे छे.

२३. हे भगवन् ! अवश्य नीललेश्या कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्याने पामी तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमे ? हा गौतम ! एमज

अने कापोतलेश्या वगेरेने पामी ते रूपे परिणमे ? इत्यादि. अहीं वा शब्द वधे कह्यो नथी छतां जाणी लेवो. एटले नीललेश्या अथवा कापोतलेश्या यावत् शुक्ललेश्याने पामी ते रूपे परिणत थाय छे, कारण के एक लेश्यानो परस्पर विरुद्धपणे एक समये अनेक लेश्यारूपे परिणाम थवो असंभवित छे. बाकी अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो. आ विषयमां दृष्टांत कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'से केणट्ठेणं भंते' ! हे भगवन् ! एम शाथी कहो छो ? इत्यादि सुगम छे. परंतु जेम 'वैडूर्यमणि एक ज छतां ते ते उपाधि (निमित्त) रूप द्रव्यना संबन्धथी ते ते रूपपणे परिणमे छे, तेम ते कृष्णलेश्यायोग्य द्रव्य पण ते ते नीलादिलेश्यायोग्य द्रव्यना संबन्धथी ते ते रूपे परिणमे छे,–तेटला अंशे आ दृष्टांत छे, पण जेम वैडूर्यमणि पोताना स्वरूपनो त्याग नहि करतां ते ते उपाधि-निमित्तरूप द्रव्यना 'संबन्धथी ते ते आकार मात्रने धारण करवा वडे ते ते रूपे परिणमे छे, तेम आ कृष्णलेश्यायोग्य द्रव्यो पण पोताना

गोयमा ! एवं चेव, काउलेसा किण्हलेसं नीललेसं तेउलेसं पम्हलेसं सुक्कलेसं, एवं तेउलेसा किण्हलेसं नीललेसं काउलेसं पम्हलेसं सुक्कलेसं, एव पम्हलेसा किण्हलेसं नीललेसं काउलेसं तेउलेसं सुक्कलेसं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमइ ? हन्ता गोयमा ! तं चेव । से नूणं भंते ! सुक्कलेसा किण्हलेसं नीललेसं काउलेसं तेउलेसं पम्हलेसं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमइ ? हंता गोयमा ! तं चेव ।

छे. कापोतलेश्या कृष्णलेश्या, नीललेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्याने पामी, ए प्रमाणे तेजोलेश्या कृष्ण, नील, कापोत, पद्म अने शुक्ललेश्याने पामी, एम पद्मलेश्या कृष्ण, नील, कापोत, तेजस् अने शुक्ललेश्याने पामी यावत् वारंवार परिणमे ? हा गौतम ! तेमज छे. हे भगवन् ! शुक्ललेश्या कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या अने पद्मलेश्याने पामी यावत् वारंवार परिणमे ? हा गौतम! तेमज छे.

स्वरूपने नहि छोडता ते ते नीलादिलेश्यायोग्य द्रव्यना संबन्धथी तेना जेवा आकार मात्रने धारण करवा वडे ते ते रूपे परिणमे छे' एटला भाटे दृष्टान्त नथी, कारण के तिर्यंञ्च अने मनुष्योने लेश्याद्रव्योनो सर्वथा तद्रूपपणे परिणाम सिद्धान्तसमत छे जो एम न होय तो नारक अने देवो संबन्धी लेश्याद्रव्योनी पेठे तिर्यञ्च अने मनुष्योने पण लेश्याद्रव्यो सर्वथा पोताना स्वरूपनो त्याग नहि करता वडे तेओनो लांबा काळ सुधी रहेवानो समय थाय, जेथी एओनी उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति अन्य स्थळे कही छे तेनी साथे विरोध थाय, केमके मनुष्य अने तिर्यंचनी उत्कृष्ट स्थिति त्रण पल्योपम होवाथी तेनी उत्कृष्ट स्थिति यावत् त्रण पल्योपमनी पण संभवे ए प्रमाणे ते सिवायनी अन्य पांच लेश्याना परिणामने आश्रयी कृष्णलेश्या संबन्धे सूत्र कह्युं, एम नीलादि लेश्या संबन्धे पण प्रत्येकना ते सिवायनी अन्य पांच लेश्याना परिणामने आश्रयी पांच सूत्रो कहेवां एम तिर्यंच अने मनुष्योने भवान्तर प्राप्ति समये अने बाकीना काळे लेश्याद्रव्योनो परिणाम कह्यो देव अने नारक संबन्धी लेश्याद्रव्यो पोतपोताना भवपर्यन्त अवस्थित होय छे,

३४. कण्हलेसा णं भंते ! वन्नेणं केरिसिया पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए जीमूते इ वा अंजणे इ वा खंजणे इ वा कज्जले इ वा गवले इ वा गवलवलए इ वा जंबूफले इ वा अद्दारिट्ठपुप्फे इ वा परपुट्ठे इ वा भमरे इ वा भमरावली इ वा गयकलभे इ वा किण्हकेसरे इ वा आगासथिग्गले इ वा किण्हासोए इ वा कण्हकणवीरए इ वा कण्हबंधुजीवए इ वा, भवे एतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, कण्हलेस्सा णं इत्तो अणिट्ठयरिया चेव अ-

३४. हे भगवन् ! कृष्णलेश्या वर्णथी केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ मेघ, अंजन, खंजन–दीवाना कोडीयानो मेल, काजळ, गवल–पाडानुं शींगडुं, गवलवलय–वलयनी आकृतिवाळुं पाडानुं शींगडुं, जांबु, लीला अरीठानुं फुल, कोयल, भ्रमर, भ्रमरनी पंक्ति, हाथीनुं बच्चुं, कृष्ण केसर–काळुं बकुलनुं झाड, आकाश थिग्गल–मेघाच्छादित आकाशखंड, कृष्ण अशोक, काळी कणेर अने काळो बंधुजीवक छे, शुं एवा प्रकारनी कृष्णलेश्या होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. कृष्णलेश्या एथी वधारे अनिष्ट, अत्यंत अ-

तेथी अन्य लेश्याद्रव्यना संबन्धथी तेनो आकारमात्र धारण करे छे, ते अहीं कहेवामां आवशे. तेथी परिणामरूप अधिकार कह्यो.

३४. हवे वर्णाधिकार कहे छे—'कण्हलेसा णं भंते ! वण्णेणं केरिसिया पन्नत्ता'–हे भगवन् ! कृष्णलेश्या वर्णे वडे केवा प्रकारनी छे—इत्यादि. कृष्णद्रव्यरूप लेश्या ते कृष्णलेश्या एटले कृष्णलेश्यायोग्य द्रव्यो. कारण के तेओने ज वर्णादिनो संभव छे, परन्तु कृष्णद्रव्यथी उत्पन्न थयेल भावरूप कृष्णलेश्या न लेवी, कारण के तेओने वर्णादिनो संभव नथी. ते कृष्णलेश्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे ? भगवान् कहे छे—'हे गौतम ! 'यथानामकः' लोकप्रसिद्ध 'जीमूतः' मेघ, ते अहीं वर्षाऋतुना प्रारंभकाळनो जलथी भरेलो जाणवो, कारण के प्रायः तेनामां ज अतिशय काळाश होय छे. इति शब्द उपमानभूत वस्तुओना नामनी समाप्ति द्योतक छे. वा शब्द बीजा उपमानोनी अपेक्षाए समुच्चयना अर्थमां छे. एम बधे 'इति' अने 'वा' शब्द जाणवा. अञ्जन–सौवीराञ्जन, सुरमो, अथवा श्याम वर्णवाळुं रत्नविशेष,

कंतयरिया चेव अप्पियतरिया चेव अमणुन्नतरिया चेव अमणामतरिया चेव वन्नेणं पन्नत्ता ।

कांत, अत्यन्त अप्रिय, अतिअमनोज्ञ, अने मनने न गमे तेवी वर्ण वडे कहेली छे.

खञ्जन-दिवानी कोडीयानो मेल अथवा 'तैलाद्यभ्यङ्गयुक्त गाडानी धरीना घसावाथी उत्पन्न थयेल मेल' एम बीजा आचार्यो कहे छे 'कज्जल' काजळ प्रसिद्ध छे, गवल-पाडानुं शींगडुं, अने ते पण उपरनी त्वचाना भागने दूर करेलुं समजवुं, कारण के त्यांज विशिष्ट कालापणानो संभव छे जांबु प्रसिद्ध छे, अरिष्ट-अरीठो, परपुष्ट-कोयल, भमर-भमरो, भमरानी पंक्ति, गजकलभ-हाथीनुं बच्चुं, कृष्ण केसर-काळी बोरसली, आकाशथिग्गल-शरदऋतुमां मेघवडे आच्छादित आकाशनो खंड, ते पण घणोज काळो लागे छे माटे कह्युं छे, कृष्ण अशोक, कृष्ण कणवीर-कणेर, कृष्ण बन्धुजीवक-बपोरीयो-ए बधा अमुक प्रकारना वृक्षो छे अशोकादि वृक्षो जातिभेदथी पांच वर्णना होय छे तेथी बाकीना वर्णोनो निषेध करवा कृष्णनुं ग्रहण कर्युं छे पछी वळी पण पहले गौतम कहे छे—'भवे एयारूवा'? हे भगवन्! कृष्णलेश्या वर्ण वडे एवा स्वरूपवाळी होय? भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम! एवा रूपवाळी कृष्णलेश्या होय ए अर्थ समर्थ-युक्त नथी, परन्तु ते कृष्णलेश्या आ जीमूतादि-मेघ वगेरेथी कृष्ण वर्णवडे अत्यन्त अनिष्ट छे अहीं किंचित् अनिष्ट होवा छतां स्वरूपथी कान्त-मनोहर होय छे माटे कान्तपणानो निषेध करवा माटे कहे छे-अत्यन्त अकान्त होय छे केटलाकने कश्क अनिष्ट छतां अने स्वरूपथी अकान्त छतां बीजाने प्रिय होय छे माटे सर्वथा प्रियपणानो निषेध करवा माटे कहे छे—'अप्रियतरिका' अत्यन्त अप्रिय छे आम वारंवार 'अमनोज्ञतरिका' अत्यन्त अमनोज्ञ छे, कारण के वस्तुनुं यथार्थ परिज्ञान थवाथी उदासीन उपेक्षकने तेमां मननी प्रवृत्ति थती नथी अथवा अमनोज्ञ छतां कश्क मध्यम होय, तेथी अत्यन्त अधमपणा प्रकर्षविशेषनुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे- 'अमणामतरिका' अत्यन्त मनने प्राप्त नहि थनार, 'मनांसि आप्नोति' मनने प्राप्त थाय, अर्थात् मनने वश करे ते मनाप कहेवाय, एवी न होय ते 'अमणामतरिया' अत्यन्त अमनोज्ञ (अहीं मणाम शब्द मनोज्ञपणानो वाचक छे.) वळी अत्यन्त अमनोहर एवा प्रकारनी लेश्या

३५. नीललेस्सा णं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए भिंगए इ वा भिंगपत्ते इ वा चासे इ वा चासपिच्छए इ वा सुए इ वा सुयपिच्छे इ वा सामा इ वा वणराई इ वा उच्चंतए इ वा पारेवयगीवा इ वा मोरगीवा इ वा हलहरवसणे इ वा अयसिकुसुमे इ वा वणकुसुमे इ वा अंजणकेसियाकुसुमे इ वा नीलुप्पले इ वा नीलासोए इ वा नीलकणवीरए इ वा नीलबंधुजीवे इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो जाव अमणामयरिया चेव वन्नेणं पन्नत्ता ।

३५. हे भगवन् ! नीललेश्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ भृंग, भृंगनी पांख, चास, चासपिच्छ, शुक, शुकपिच्छ, श्यामा–प्रियंगु, वनराजि, उच्चंतक–दांतनो रंग, पारेवानी ग्रीवा, मोरनी ग्रीवा, बलदेवनुं वस्त्र, अलसी पुष्प, वणनुं कुसुम, अंजनकेशिकानुं कुसुम, नीलोत्पल. नीलाशोक, लीलुं कणवीर, अने लीलुं बंधुजीवक छे, एवा प्रकारनी नीललेश्या होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. एथी वधारे मनने न गमे तेवी वर्ण वडे कहेली छे.

वर्णवडे कहेली छे.

३५. 'नीललेश्या णं भंते' ! हे भगवन् ! नीललेश्या वर्णवडे केवा प्रकारनी छे ? इत्यादि अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो. परन्तु भृंग–पांखवाळुं पक्षीविशेष छे, भृंगपत्र–ते भृंग पक्षिनी पांख; चास–एक जातनुं पक्षी, चासपिच्छ–चासपक्षीनी पांख, शुक–पोपट, शुकपिच्छ–पोपटनी पांख, श्यामा–प्रियंगुलता, वनराजि–वननो घटा प्रसिद्ध छे, उच्चन्तक–दांतनो रंग, ए संबन्धे मूल टीकाकार कहे छे–"उच्चंतगो दंतरागो भन्नइ" उच्चंतकने दांतनो रंग कहेवाय छे. पारेवानी अने मोरनी ग्रीवा–डोक प्रसिद्ध छे. हलधरवसन–बलदेवनुं वस्त्र, ते लीलुं होय छे माटे ग्रहण कर्युं छे. अलसीपुष्प अने वणनुं फुल प्रसिद्ध छे. अंजनकेशिका–वनस्पतिविशेष, तेनुं कुसुम–पुष्प. नीलो-

३६. काउलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए खदिरसारए इ वा कइरसारए इ वा धमाससारे इ वा तंबे इ वा तंबकरोडे इ वा तंबच्छिवाडियाए इ वा वाइंगणिकुसुमे इ वा कोइलच्छदकुसुमे इ वा जवासाकुसुमे इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । काउलेस्सा णं एत्तो अणिट्ठयरिया जाव अमणामयरिया चेव वन्नेणं पन्नत्ता ।

३७ तेउलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए ससरुहिरए इ वा उरब्भरुहिरे

---

३६. हे भगवन् ! कापोतलेश्या वर्णे वडे केवा प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! जेम कोइ खेरसार, करीरसार, धमासासार, तंब-ताम्र, तंबकरोड-ताम्रकरोटक, तंबछेवाडिया, (तांबानी कटोरी), वेंगणीना पुष्प, कोकिलच्छद(तेलकंटक)पुष्प अने जवासाकुसुम छे. कापोतलेश्या एवा प्रकारनी होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. कापोतलेश्या एथी अनिष्टतर, यावत् मनने न गमे तेवी वर्णे वडे होय छे

३७. हे भगवन् ! तेजोलेश्या वर्णे वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ ससलानु रुधिर, उरभ्र-घेटानु रुधिर, सुकरनुं

स्थल-लीलु कमळ, नील अशोक, नील कणवीर अने नील बन्धुजीव ए यथा अमुक प्रकारना सूत्रो छे

'काउलेस्सा णं भंते' ! हे भगवन् ! कापोतलेश्या वर्णवडे केवा प्रकारनी छे ? इत्यादि अहीं पण अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो खदिरसार-खेरसार अने धमासासार लोकप्रसिद्ध छे 'तंबे इ वा तंबकरोडए इ वा तंबछेवाडिया इ वा' ए समदायथी जाणी लेवा 'वृन्ताकीकुसुम' रींगणीनुफुल प्रसिद्ध छे 'कोइलच्छदकुसुमए वा'—कोकिलच्छद-तेलकंटकनु पुष्प, ए सर्व ते टीकाकार कहे छे—"वर्णना

इ वा वराहरुहिरे इ वा संवररुहिरे इ वा मणुस्सरुहिरे इ वा इंदगोपे इ वा वालेंदगोपे इ वा वालदिवायरे इ वा संझारागे इ वा गुंजद्धरागे इ वा जातिहिंगुले इ वा पवालंकुरे इ वा लक्खारसे इ वा लोहितक्खमणी इ वा किमिरागकंबले इ वा गयतालुए इ वा चीणपिट्ठरासी इ वा परिजायकुसुमे इ वा जासुमणकुसुमे इ वा किंसुयपुप्फरासी इ वा रत्तुप्पले इ वा रत्तासोगे इ वा रत्तकणवीरए इ वा रत्तबंधुयजीवए इ वा, भवेयारूवा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । तेउलेसा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव जाव मणामतरिया चेव वन्नेणं पन्नत्ता ।

रुधिर, सावरनुं रुधिर, मनुष्यनुं रुधिर, इन्द्रगोप, नवो इन्द्रगोप, बाळ सूर्य, संध्यानो रंग, अर्ध चणोठीनो रंग, जातिहिंगलो, प्रवालांकुर, लाक्षारस, लोहिताक्षमणि, करमजी रंगवाळी कांबल, हाथीनुं ताळवुं, चीनपिष्टराशि (मसूरना पिष्टनो राशि ?) पारिजातकुसुम, जपाकुसुम–जासुदना फुल, केसुडानां फुलनो राशि, रक्तोत्पल, रक्ताशोक, रक्त कणेर अने रक्त बन्धुजीवक छे. तेजोलेश्या एवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. तेजोलेश्या एथी वधारे इष्ट, यावत् मनने गमे एवी वर्ण वडे कहेली छे.

अधिकारमां कोकिलच्छद छे ते अहीं तैलकंटक कहेवाय छे." अने तेनुं फुल प्रसिद्ध छे.

३७. 'तेउलेस्सा णं भंते' ! हे भगवन् ! तेजोलेश्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे–इत्यादि. ससला, घेटा, सावर वराह अने मनुष्यनुं रुधिर बीजा जीवोना रुधिर करतां उत्कट रातावर्णवाळुं होय छे, तेथी एओनुं ग्रहण करेलुं छे. 'बालेन्द्रगोपकः' तत्काळ जन्मेलो इन्द्रगोप, ते ज्यारे मोटो थाय छे त्यारे कंइक श्वेत-रक्तवर्णवाळो थाय छे, तेथी बालनुं ग्रहण कर्युं छे. 'इन्द्रगोपकः'–वर्षाऋतुना प्रथम समयमां थवावाळो अमुक प्रकारनो कीडो, 'बालदिवाकरः'—प्रथम उगतो सूर्य, गुंजार्ध–चणोठीनो अर्धभाग, चणोठीनो अर्धभाग अत्यंत रातो होय छे अने अर्धभाग अत्यन्त काळो होय छे, माटे अर्धनुं ग्रहण कर्युं छे, जात्य-प्रधान हिंगळोक, प्रवाल–नवां पावडां, तेना

३८. पम्हलेसाणं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए चंपे इ वा चंपयछल्ली इ वा चंपयभेदे इ वा हालिद्दा इ वा हालिद्दगुलिया इ वा हालिद्दभेदे इ वा हरियाले इ वा हरियालगुलिया इ वा हरिया-

३८. हे भगवन् ! पद्मलेश्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ चंपो, चंपानी छाल, चंपकभेद-चंपानो खंड हलदर, हलदरनी गोळी, हलदरनो खंड, हडताल, हडतालगुटिका, हडतालखंड, चिकुर, चिकुरराग, सुवर्णनी छीप, श्रेष्ठ सुवर्णनो

अंकुर ते प्रवालांकुर, ते प्रथम उगता होय त्यारे अत्यंत राता होय छे तेथी तेनुं ग्रहण कर्युं छे लाक्षारस-लाखनो रस प्रसिद्ध छे, लोहिताक्षमणि-लोहिताक्ष नामे रत्नविशेष, कीरमजी रंग वडे रंगेली कंबल ते कृमिरागकंबल कहेवाय छे अहीं शाकपार्थिवादिनी पेठे मध्यमपदनो लोप थयो छे गजतालु, चिनपिष्टराशि, पारिजातकुसुम, जपाकुसुम-जासुद, किंशुकपुष्पराशि, रक्तोत्पल, रक्ताशोक, रक्त कणवीर-कणेर अने रक्त बन्धुजीव ए यथा लोकप्रसिद्ध छे 'भवे एयारूवा' ? एवा प्रकारनी तेजोलेश्या होय ? भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी' कारण के तेजोलेश्या आ ससलाना रुधिर वगेरेथी वधारे राता वर्णवडे अत्यंत इष्ट छे तेमां किंचित् अकान्त छतां पण केटलाएकने इष्टतर होय छे ते माटे अत्यन्त कान्तपणुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे-'कान्ततरिकैव'-अत्यन्त कान्त होय छे केटलाएकने अत्यन्त इष्ट अने स्वरूपथी अत्यन्त कान्त होय तो पण बीजाने अप्रिय होय छे तेथी अत्यन्त] प्रियपणुं बतावया माटे कहे छे—'प्रियतरिकैव' अतिशय प्रिय छे आ हेतुथी 'मनोज्ञतरिकैव' अधिक मनोज्ञ छे अधिक मनोज्ञ छतां पण कदाच मध्यम मनोज्ञ होय ते माटे अत्यंत प्रकर्षनो प्रकर्षविशेष जणाववा माटे कहे छे—'मनापतरिकैव' मनने प्राप्त करनार-मनने वश करनार वर्णवडे कहेली छे

३८ 'पम्हलेस्सा ण भंते' ! हे भगवन् ! पद्मलेश्या वर्णवडे केवा प्रकारनी छे—इत्यादि अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे जाणवो परन्तु चंपक एटले सामान्यतः सुवर्णचंपक—पीळो चंपो जाणवो, चंपकछल्ली-सुवर्ण चंपकनी छाल, 'चम्पकभेए इ वा' चंपकभेद-सुवर्णचंपकनो

लभेदे इ वा चिउरे इ वा चिउररागे इ वा सुवन्नसिप्पी इ वा वरकणगणिहसे इ वा वरपुरिसवसणे इ वा अल्लइ-कुसुमे इ वा चंपयकुसुमे इ वा कण्णियारकुसुमे इ वा कुहंडयकुसुमे इ वा सुवण्णजूहिया इ वा सुहिरन्निया-कुसुमे इ वा कोरिंटमल्लदामे इ वा पीतासोगे इ वा पीतकणवीरे इ वा पीतबंधुजीवए इ वा, भवेयारूवे? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। पम्हलेस्सा णं एत्तो इट्ठतरिया जाव मणामयरिया चेव वन्नेणं पन्नत्ता।

३९. सुक्कलेस्सा णं भंते! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता? गोयमा! से जहानामाए अंके इ वा संखे इ वा चंदे

कस, वासुदेवनुं वस्त्र, अल्लकी पुष्प, चंपकपुष्प, कर्णिकार कुसुम-कणेर पुष्प, कूष्मांडकुसुम-कोहळाना फुल, सुवर्ण जूइ, सुहिरण्यिका कुसुम, कोरंटकनी माला, पीळो अशोक, पीत कणवीर, अने पीत बंधुजीवक छे, एवा प्रकारनी पद्मलेश्या होय? हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी. पद्मलेश्या एथी अत्यंत इष्ट, यावत् अत्यंत मनने गमे तेवी वर्ण वडे कहेली छे.

खंड, टुकडो, ज्यारे तेनो खंड कर्यो होय त्यारे तेना वर्णनो प्रकर्ष थाय छे ते माटे भेदनुं ग्रहण करवामां आव्युं छे. हरिद्रा-पिंडहरिद्रा, हरिद्रागुटिका-हळदरनी गोळी, हरिद्राभेद-हळदरनो खंड, हरिताल-हडताळ, हरितालगुटिका-हडताळनी बनावेली गोळी, हरिताल भेद-हडतालनो खंड, कटको, चिकुर-पीळुं अमुक जातनुं द्रव्य, चिकुरराग-चिकुरनो वस्त्रादिने लागेलो रंग, 'सुवण्णसिप्पी इ वा'-सुवर्णनी छीप, वर-प्रधान सुवर्णनो निकष-कसोटी उपरनो रेखारूप कस, वरपुरुष-वासुदेवनुं वसन-वस्त्र, ते पीळुं होय छे माटे ग्रहण कर्युं छे. अल्लकीकुसुम लोकथी जाणवुं. चंपककुसुम-सुवर्ण चंपकनुं पुष्प, कर्णिकारकुसुम-कांचनारनुं पुष्प, कूष्मांडिकाकुसुम-पुंस्फलिकानुं पुष्प, सुवर्णयूथिकाकुसुम-पीळी जूइनुं कुसुम प्रसिद्ध छे. सुहिरण्यिका-अमुक प्रकारनो वनस्पतिनुं कुसुम, कोरंटकमाल्यदाम-कोरंटकना पुष्पनी माळा, पीत अशोक, पीत कणवीर-कणेर, अने पीत बन्धुजीव प्रसिद्ध छे.

इ वा कुंदे इ वा दगे इ वा दगरए इ वा दवी इ वा दहिघणे इ वा खीरे इ वा खीरपूरए इ वा सुक्कच्छिवाडिया इ वा पेहुणमिंजिया इ वा धंतधोयरूप्पपट्टे इ वा सारदयलाहए इ वा कुमुददले इ वा पोंडरीयदले इ था सालिपिट्ठरासीति था कुडगपुप्फरासीति वा सिंदुवारमल्लदामे इ वा सेयासोए इ वा सेयकणवीरे इ वा सेतबंधुजीवए इ वा, भवेयारूवे? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। सुक्कलेसा णं एत्तो इट्ठतरिया चेव मणुण्णयरिया चेव वन्नेणं पन्नत्ता।

३९. हे भगवन्! शुक्ललेश्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे? हे गौतम! जेम कोइ एक अंकरत्न, शंख, चन्द्र, कुन्द–मोगरो, पाणी, दकरज–पाणीना बिन्दु, दहीं, दहींनो पिंड, क्षीर–दूध, क्षीरनो समूह, शुष्क छीवाडी–वाल वगेरेनी फळी, पिहुणमिंजा–मयूरपिच्छनो मध्यभाग, तपावेल स्वच्छ रूपानो पट्ट, शरत्कालनो मेघ, कुमुदपत्र, पुंडरीक पत्र, शालिपिष्टराशि, कुटजपुष्पराशि, सिंदुवारना पुष्पनी माला, श्वेत अशोक, श्वेत कणवीर अने श्वेत बन्धुजीवक छे, एवा प्रकारनी शुक्ललेश्या होय? हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी शुक्ललेश्या एथी वधारे इष्ट अने अत्यंत मनोज्ञ वर्ण वडे कही छे.

३९. 'सुक्कलेसा ण भंते'! इत्यादि हे भगवन्! शुक्ललेश्या वर्णवडे केवा प्रकारनी छे–इत्यादि अक्षरार्थ पूर्वनी पेठे समजवो परन्तु अंक–अमुक प्रकारनु रत्न, शंख अने चन्द्र प्रसिद्ध छे, कुन्द–मोगरानु पुष्प, दक–उदक, पाणी, उदकरज–पाणीना कणो, ते अत्यंत धोळा होय छे माटे तेनु ग्रहण कर्युं छे दधि–दहि प्रसिद्ध छे, दधिघन–दहिनो पिंड. क्षीर–दूध प्रसिद्ध छे, क्षीरपूर–उकळतु अने क्षतिता पछी उभराइ जतु दूध, 'सुक्कछिवाडिया इ वा' शुष्क छीवाडी–वाल वगेरेनी शींगो, ते सूकायेली होय त्यारे अत्यत धोळी होय छे माटे तेनु ग्रहण कर्युं छे, 'पेहुणमिंजिया इ वा' पेहुण–मोरपिंछनी मध्यवर्ती मज्जा–गर्भ, ते अत्यन्त शुक्ल होय छे माटे तेनु ग्रहण कर्युं छे. 'धंतधोयरूप्पपट्टे इ वा' ध्मात–तपावेलो, अग्निना सपर्कथी निर्मल करायेलो, धौत–भस्मथी खरडायेला रूप्य पछी साफ कर्या

४०. एयाओ णं भंते ! छल्लेसाओ कइसु वन्नेसु साहिज्जंति ? गोयमा ! पंचसु वन्नेसु साहिज्जंति, तंजहा–कण्हलेसा कालएणं वन्नेणं साहिज्जति, नीललेस्सा नीलवन्नेणं साहिज्जति, काउलेस्सा काललोहिएणं वन्नेणं साहिज्जति, तेउलेस्सा लोहिएणं वन्नेणं साहिज्जति, पम्हलेस्सा हालिद्दएणं वन्नेणं साहिज्जइ, सुक्कलेस्सा सुक्किल्लएणं वन्नेणं साहिज्जति ।

४०. हे भगवन् ! आ छ ए लेश्याओ कया वर्णो वडे कहेवाय छे–कया वर्णवाळी छे ? हे गौतम ! पांचे वर्ण वडे कहेवाय छे. ते आ प्रमाणे– कृष्णलेश्या काळा वर्ण वडे कहेवाय छे. नीललेश्या नील–लीला वर्ण वडे कहेवाय छे, कापोतलेश्या कंइक काळा अने कंइक राता वर्ण वडे कहेवाय छे. तेजोलेश्या राता वर्ण वडे कहेवाय छे, पद्मलेश्या पीळा वर्ण वडे कहेवाय छे, अने शुक्ललेश्या शुक्ल वर्ण वडे कहेवाय छे.

वडे अत्यन्त स्वच्छ करायेलो जे रूपानो बनेलो पट्ट, 'सारइयवलाहगे इ वा' शारदिक–शरदृतुना वलाहक–मेघ, पुंडरीक–धोळुं कमळ, तेना दल–पत्र–पांखडीओ, शालिपिष्टराशि, कुटजपुष्पराशि, सिन्दुवार पुष्पनी माळा, अने श्वेत बन्धुजीव प्रसिद्ध छे.

४०. अहीं पांच वर्णो छे. ते आ प्रमाणे–कृष्ण, नील, रक्त–रातो, हारिद्र–पीळो अने शुक्ल. लेश्याओ छ छे, तेथी उपमान–समानपणावडे वर्णनो निर्देश करवा छतां पण संशय थाय के 'कइ लेश्या कया वर्णमां होय छे' ? तेथी पूछे छे—'एयाओ णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! आ हमणां कहेली छ लेश्याओ 'कइसु वन्नेसु साहिज्जंति' केटला वर्ण वडे कहेवाय छे ? [अहीं प्राकृत होवाथी तृतीया विभक्तिना अर्थमां सप्तमी विभक्ति थाय छे. जेमके 'तिसु तेसु अलंकिया पुढवी' ते त्रण वडे पृथिवी अलंकृत छे.] भगवान् कहे छे—हे गौतम ! पांच वर्ण वडे कहेवाय छे. जे प्रमाणे कहेवाय छे ते प्रमाणे 'तं जहा' इत्यादि वडे बतावे छे. ए प्रमाणे वर्णपरिणाम कह्यो.

४१. कण्हलेस्सा णं भंते ! केरिसिया आसाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए निंबे इ वा निंबसारे इ वा निंबछल्ली इ वा निंबफाणिए इ वा कुडए इ वा कुडगफलए इ वा कुडगछल्ली इ वा कुडगफाणिए इ वा कडुगतुंबीइ वा कडुगतुंबिफले इ वा खारतउसी इ वा खारतउसीफले इ वा देवदालीति वा देवदालीपुप्फे इ वा मिगवालुंकी इ वा मियवालुंकीफले इ वा घोसाडए इ वा घोसाडईफले इ वा कण्हकंदए इ वा वज्जकंदए इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, कण्हलेसा णं एत्तो अणिट्ठतरिया चेव जाव अमणामयरिया चेव आसाएणं पन्नत्ता ।

४१. हे भगवन् ! कृष्णलेश्या आस्वाद वडे केवा प्रकारनी छे? हे गौतम ! जेम के कोइ निंब-लींबडो, निंबसार-लींबडानो सार, लींबडानी छाल, निंबफाणित-लींबडानो कवाथ, कुटज (कडाछालनु वृक्ष), कुटजफल, कडाछाल, कुटजकवाथ, कडवी तुंबडी, कडवी तुंबडीनु फळ, क्षारत्रपुषी-कडवी चीभडी, कडवी चीभडीनुं फळ, देवदाली-कुकडवेल, देवदालीनुं पुष्प, मृगवालुंकी, मृगवालुंकी फळ-इन्द्रवरणुं (?), घोषातकी (कडवा तुरीयां), घोषातकी फळ, कृष्णकंद अने वज्रकन्द छे, तथा प्रकारनी कृष्ण लेश्या होय? हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी. कृष्णलेश्या एथी वधारे अनिष्ट यावत् मनने गमे तेवी आस्वाद-रस वडे कहेली छे.

४१ हवे रसपरिणाम कहे छे—'कण्हलेसा णं भंते ! केरिसिया आसाएणं पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! कृष्णलेश्या आस्वाद वडे केवा प्रकारनी छे ?—इत्यादि सूत्र सुगम छे भगवान् उत्तर कहे छे-ते 'यथानामकः' लोकप्रसिद्ध-जेम के निंब-लींबडो, निंबसार-लींबडानो मध्यवर्ती भाग, लींबडानी छाल, निंबफाणित-लींबडानो कवाथ, कुटज-कडायचु वृक्ष, कुटजफल-इन्द्रजव, कुटजवल्ली-कडाछाल,

४२. नीललेसाए पुच्छा। गोयमा ! से जहानामए भंगीति वा भंगीरए इ वा पाढा इ वा चविया इ वा चित्तामूलए इ वा पिप्पली इ वा पिप्पलीमूलए इ वा पिप्पलीचुण्णे इ वा मिरिए इ वा मिरियचुण्णए इ वा सिंगबेरे इ वा सिंगबेरचुण्णे इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नीललेस्सा णं एत्तो जाव अमणामतरिया चेव आसाएणं पन्नत्ता ।

४२. नीललेश्या संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जेम कोइ भंगी–भांग, भंगीरज, पाठा, चव्यक, चित्रमूल, पीपर, पीपरीमूळ, पीपरचूर्ण, मरी, मरीचूर्ण, शृंगबेर–सुंठ अने सुंठनुं चूर्ण छे, एवा प्रकारनी नीललेश्या होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. नीललेश्या एथी यावत् मनने न गमे तेवी आस्वाद वडे छे.

कुटजफाणित–कडाछालनो कवाथ, कटुकतुंबी–कडवी तुंबडी प्रसिद्ध छे, कटुक तुंबीफल–कडवी तुंबडीनुं फल, क्षारत्रपुषी अहीं क्षार शब्द कटुकवाची छे, कारण के तेवा प्रकारे आगममां प्रसिद्ध छे. एटले कडवी चीभडी, क्षारत्रपुषीफल–कडवुं चीभडुं, देवदाली–रोहिणी (कुकडवेल), तेनुंज पुष्प देवदालीपुष्प, मृगवालुंकी–इन्द्रवारुणी (?) लोकथकी जाणवी. तेनुं फळ मृगवालुंकी फळ, घोषातकी–कडवी घीसोडी, तेनुं फळ ते घोषातकीफळ, कृष्णकन्द अने वज्रकन्द अनन्तकायिक वनस्पतिविशेष लोकथी जाणी लेवा. ए प्रमाणे कह्युं एटले गौतम पूछे छे—हे भगवन् ! कृष्णलेश्या रसथी एवा प्रकारनी छे—लींबडा वगेरेना जेवी छे ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी, कारण के कृष्णलेश्या आ लींबडा वगेरेना रसनी अपेक्षाए अत्यन्त अनिष्ट छे इत्यादि पूर्वनी पेठे जाणवुं.

४२. 'नीललेसाए पुच्छा' नीललेश्या संबन्धे प्रश्न इत्यादि. भंगी–वनस्पति विशेष, (भांग?) तेनी रज ते भंगीरज, पाठा अने चित्रमूल लोकप्रसिद्ध छे. पीपर, पीपरीमूळ, पीपरचूर्ण, मरी, मरीचूर्ण, सुंठ अने सुंठनुं चूर्ण ए बधां प्रसिद्ध छे.

४३. काउलेस्साए पुच्छा । गोयमा ! से जहानामए अंबाण वा अंबाडगाण वा माउलिंगाण वा बिल्लाण वा कविट्ठाण वा भज्जाण वा फणसाण वा दाडिमाण वा पारेवताण वा अक्खोडयाण वा चोराण वा बोराण वा तिंदुयाण वा अपक्काण अपरिवागाण वन्नेणं अणुववेयाणं गंधेणं अणुववेयाणं फासेणं अणुववेयाणं, भवेयारूवे? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, जाव एत्तो अमणामयरिया चेव काउलेस्सा अस्साएणं पन्नत्ता ।

---

४३. कापोतलेश्या सबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जेम कोइ आम्र, अंबाडक–आम्रातक, मातुलिंग–बीजोरां, बीलां, कपित्थ–कोठा, भज्जा (?), फणस, दाडम, पारापत, अखोड, चोर, बोर, तिंदुक–ते बधां अपक्व, संपूर्ण परिपाकने नहि प्राप्त थयेला, विशिष्ट वर्ण, गन्ध अने स्पर्श वडे रहित होय, एवी कापोतलेश्या छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी, यावत् एथी मनने न गमे तेवी कापोतलेश्या आस्वाद वडे कहेली छे

---

४३ 'काउलेसाए पुच्छा'–कापोतलेश्या सबन्धे प्रश्न इत्यादि आम्रफलो, आम्रातक–फळ विशेष, बीजोरां, बीलां, कोठ, फणस, अने दाडम ए प्रसिद्ध छे पारापत ए फळ विशेष छे, अखोडवृक्षना फळो अखोडो, चोरवृक्षोना फळो बोर अने तिन्दुक प्रसिद्ध छे ए फळो अपक्व होय, तेमां सर्वथा पण अपक्व फळ कहेवाय, माटे कहे छे—'अपरिपाकानाम्' जेओनो परिपाक–परिपूर्ण पाक नथी थयो एवा, अर्थात् कंइक पाकेला, एनेज वर्णादि वडे कहे छे–अतिशयविशिष्ट वर्ण, घ्राणेन्द्रियने सुखकारक गन्ध, विशिष्ट परिपाकना नियत सहचारी एवा स्पर्शने नहि प्राप्त थयेला एवा आम्रादिनो जेवो रस होय छे अहीं गौतमस्वामी पूछे छे—आवा प्रकारना रसवाळी कापोतलेश्या होय ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी परन्तु आ अपरिपक्व आम्रफलादिथी अत्यन्त अनिष्ट रसवडे युक्त छे इत्यादि पूर्वनी पेठे कहेवु

इट्ठतरिया चेव जाव मणामयरिया चेव आसाएणं पन्नत्ता ।

४६. सुक्कलेसाणं भंते ! केरिसिया अस्साएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए गुले इ वा खंडे इ वा स-

होय छे. एवा प्रकारनी पद्मलेश्या छे ? हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी. पद्मलेश्या एथी वधारे इष्ट यावत् मनने गमे तेवी आस्वाद वडे छे.

४६. हे भगवन् ! शुक्ललेश्या आस्वाद वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ गोळ, खांड, साकर, मत्स्यंडिका, पर्पटमोदक,

तेनुं स्वरूप जाणवुं. तेमां श्रेष्ठ प्रसन्ना मदिराना विशेषणो कहे छे-'मंसला' उपचित रसवाळी, 'पेशला' मनोज्ञ, अने मनोज्ञ होवाथी 'ईपद्ओष्ठावलंबिनी' इपत्-जरा ओष्ठने विषे अवलंबन करवाना-लागवाना स्वभाववाळी अने त्यार पछी अत्यंत स्वादिष्ठ होवाथी आगळ चाली जाय एवी, तथा 'इपद्व्यवच्छेदकटुका' इपत्-जरा पीधा पछी बंध पडतां एलची वगेरे द्रव्यना संवन्धथी कटुक-तीखी, एटले जेनो तिक्त स्वभाव जणाय छे एवी. इपत्-कंइक ताम्र-लाल आंख करनारी, कारण के प्रायः बधी मदिराओ एवाज स्वभावनी होय छे. 'उक्कोसमयपत्ता' उत्कृष्ट मद करवाना स्वभावने प्राप्त थयेली, एनुंज वर्णादि वडे समर्थन—प्रतिपादन करे छे-उत्कृष्ट मदनी साथे नियत रहेवावाळा प्रशस्त वर्ण वडे, घ्राणेन्द्रियने सुखकारक गन्ध वडे, परम सुख आपनार रस वडे अने मदना परिपाकनी साथे अव्यभिचारी (नियत रहेला) स्पर्श वडे युक्त, आ हेतुथी आस्वाद करवा योग्य, विशेपतः स्वाद करवा लायक, 'प्रीणनीया' प्रीति उत्पन्न करनारी, ए प्रमाणे दर्प उत्पन्न करनारी, मद उत्पन्न करनारी, सर्व इन्द्रिय अने सर्व शरीरने सुख आपनारी एवा प्रकारनी श्रेष्ठ प्रसन्ना मदिरा छे, ए प्रमाणे कह्युं एटले भगवान् गौतम पूछे छे—'हे भगवन्! आवा प्रकारना रसवाळी पद्मलेश्या छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'आ अर्थ युक्त नथी' इत्यादि बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

४६. 'सुक्कलेसा णं भंते' ! हे भगवन् ! शुक्ललेश्या आस्वाद वडे केवा प्रकारनी छे—इत्यादि. गोळ अने खांड प्रसिद्ध छे, शर्करा-

फकरा इ वा मच्छंडिया इ वा पप्पडमोदए इ वा भिसकंदए इ वा पुप्फुत्तरा इ वा पउमुत्तरा इ वा आदंसिया इ वा सिद्धत्थिया इ वा आगासफालितोवमा इ वा उवमा इ वा, अणोवमा इ वा, भवेतारूवे? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, सुक्कलेस्सा एत्तो इट्ठतरिया चेव पियतरिया चेव मणामयरिया चेव आसाएणं पन्नत्ता।

४७ कइ णं भंते! लेस्साओ दुब्भिगंधाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! तओ लेस्साओ दुब्भिगंधाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा। कइ णं भंते! लेस्साओ सुब्भिगंधाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! तओ

बीसकन्द, पुष्पोत्तरा, पद्मोत्तरा, आदर्शिका, सिद्धार्थिका, आकाशस्फटिकोपमा, उपमा अने अनुपमा होय, एवा प्रकारनी शुक्ललेश्या होय? हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी. शुक्ललेश्या एथी वधारे इष्ट, वधारे प्रिय अने अधिक मनने गमे तेवी आस्वाद वडे छे.

४७. हे भगवन्! केटली लेश्याओ दुरभिगंधवाळी छे? हे गौतम! त्रण लेश्याओ दुरभिगंधवाळी छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या. हे भगवन्! केटली लेश्याओ सुरभिगंधवाळी छे? हे गौतम! त्रण लेश्याओ सुरभिगन्धवाळी छे ते

साकर काष्ठ वगेरेथी उत्पन्न थयेली, मत्स्यंडी-खडशर्करा-खांडनी बनेली साकर, पर्पटमोदक वगेरे सम्प्रदायथी जाणी लेवा. बाकी बधुं सुगम छे ए प्रमाणे लेश्याद्रव्योनो ए कह्यो

४७ हवे गन्धाधिकार कहे छे—'कइ ण भंते! लेस्साओ दुब्भिगंधाओ'? हे भगवन्! केटली लेश्याओ दुरभिगंधवाळी छे? इत्यादि परन्तु कृष्ण, नील अने कापोतलेश्या दुरभिगंधवाळी छे, कारण के मरी गयेल गाय वगेरेना कलेवरथी अनन्तगुण दुरभिगन्धयुक्त छे, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या ए सुरभिगन्धवाळी छे, कारण के पीसवामां आवता सुगन्धी-सुवासित द्रव्यो अने सुगन्धी कुसुमादिथी-पण अनन्तगुण सुरभिगन्धसहित छे ए सबन्धे उत्तराध्ययनना लेश्याध्ययनमां कह्युं छे—

लेस्साओ सुब्भिगंधाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा, एवं तओ अविसुद्धाओ, तओ विसुद्धाओ, तओ अप्पसत्थाओ, तओ पसत्थाओ, तओ संकिलिट्ठाओ, तओ असंकिलिट्ठाओ, तओ सीतलु-

आ प्रमाणे–तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या. ए प्रमाणे त्रण अविशुद्ध लेश्याओ छे अने त्रण विशुद्ध लेश्याओ छे. त्रण अप्रशस्त लेश्याओ छे अने त्रण प्रशस्त लेश्याओ छे. त्रण संक्लेशवाळी लेश्याओ छे अने त्रण असंक्लेशवाळी लेश्याओ छे. त्रण शीत–

"जह गोमडस्स गन्धो णागमडस्स व जहा अहिमडस्स । एत्तो उ अणंतगुणो लेस्साणं अप्पसत्थाणं ॥

जह सुरभिकुसुमगंधो गन्धवासाण पिस्समाणाणं । एत्तो उ अणंतगुणो पसत्थलेस्साण तिण्हंपि ॥

जेम मरी गयेल गायनो, मरी गयेला हस्तीनो अने मरी गयेला सापनो गन्ध होय छे एथी अनन्तगुण दुर्गन्ध अप्रशस्त लेश्याओनो जाणवो. जेम सुगन्धी पुष्पोनो गन्ध अथवा पीसाता सुवासित द्रव्योनो गन्ध होय तेथी अनन्तगुण गन्ध त्रण प्रशस्त लेश्याओनो जाणवो. गन्धपरिणाम कह्यो. हवे शुद्धाशुद्धपणुं बतावधा माटे कहे छे—'एवं तओ अविसुद्धाओ, ततो विसुद्धाओ' ए प्रमाणे–उपर कह्या प्रमाणे आदिनी त्रण लेश्याओ अशुद्ध कहेवी, कारण के अप्रशस्त वर्ण, गन्ध अने रससहित छे. पछीनी त्रण लेश्याओ विशुद्ध छे, कारण के प्रशस्त वर्ण, गन्ध अने रसयुक्त छे. तेथी एम कहेवुं जोइए— कइ णं भंते ! लेस्साओ अविसुद्धाओ पन्नत्ताओ ? हे भगवन् ! केटला प्रकारनी अविशुद्ध लेश्याओ छे ? हे गौतम ! त्रण अविशुद्ध लेश्याओ छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या. हे भगवन् ! केटली विशुद्ध लेश्याओ कही छे ? हे गौतम ! त्रण विशुद्ध लेश्याओ कही छे, ते आ प्रमाणे—तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या. एम शुद्धपणुं अने अशुद्धपणुं कह्युं , हवे प्रशस्तपणुं अने अप्रशस्तपणुं जणावे छे—तओ अप्पसत्थाओ तओ पसत्थाओ' आदिनी त्रण लेश्याओ अप्रशस्त छे, कारण के लेश्या योग्य द्रव्यो अप्रशस्त होवाथी अप्रशस्त अध्यवसायनुं कारण छे. पछीनी त्रण लेश्याओ प्रशस्त छे, केमके प्रशस्त द्रव्य होवाथी प्रशस्त अध्यवसायनुं कारण छे. सूत्रपाठ पूर्वनी पेठे जाणवो–

फ्खाओ, तओ निद्धुण्हाओ, तओ दुग्गतिगामियाओ, तओ सुगतिगामियाओ ।

रूक्ष लेश्याओ छे अने त्रण स्निग्ध-उष्ण लेश्याओ छे. त्रण दुर्गतिगामी (दुर्गतिमां लइ जनारी) लेश्याओ छे अने त्रण सुगतिगामी (सुगतिमां लइ जनारी) लेश्याओ छे.

'कइ णं भंते ! लेस्साओ अप्पसत्थाओ पन्नत्ताओ' ? हे भगवन् ! केटली लेश्याओ अप्रशस्त छे—इत्यादि एम प्रशस्तपणुं अने अप्रशस्तपणुं कहुं हवे संक्लिष्टपणुं अने असंक्लिष्टपणुं जणावे छे—'तओ संकिलिट्ठाओ, तओ असंकिलिट्ठाओ'—प्रथमनी त्रण लेश्याओ संक्लिष्ट छे, कारण के संक्लिष्ट एवा आर्तध्यान अने रौद्रध्यानना अध्यवसायस्थाननो हेतु छे पछीनी त्रण लेश्याओ असंक्लिष्ट छे, कारण के संक्लेशरहित धर्मध्यान अने शुक्लध्यानना अध्यवसायस्थाननुं कारण छे अहीं पण सूत्रपाठ पूर्वेनी पेठे जाणवो—'हे भगवन् ! केटली लेश्याओ संक्लिष्ट छे' इत्यादि हवे शीत अने उष्ण स्पर्शनुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे—'तओ सीयलुक्खाओ, तओ णिद्धुण्हाओ' आदिनी त्रण लेश्याओ शीत अने रूक्षस्पर्शवाळी छे अने पछीनी त्रण लेश्याओ स्निग्ध अने उष्णस्पर्शवाळी छे अहीं लेश्याद्रव्योने बीजा पण कर्कशादि स्पर्शो छे, कारण के लेश्याध्ययनमां कहुं छे के

जह करवयस्स फासो गोजिब्भाए व सागपत्ताणं । एत्तो वि अणंतगुणो लेस्साणं अप्पसत्थाणं ॥

जेम करवतनो, गायनी जीभनो अने सागना पांदडानो स्पर्श होय तेथी पण अनन्तगुण (कर्कश) स्पर्श अप्रशस्त लेश्याद्रव्योनो छे

जह बूरस्स व फासो नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं । एत्तो वि अणंतगुणो पसत्थलेस्साण तिण्हंपि ॥

जेम बरु, नवनीत-माखण, अने शिरीषना फूलनो स्पर्श छे, तेथी पण अनन्तगुण (मृदु) स्पर्श त्रणे प्रशस्त लेश्याओनो छे तो पण प्रथमनी त्रण लेश्याओनो शीत अने रूक्ष स्पर्श चित्तनी अस्वस्थता उत्पन्न करवामां अने अने पछीनी त्रण लेश्याओनो स्निग्ध अने उष्ण स्पर्श परम संतोष उत्पन्न करवामां अत्यंत साधक छे तेथी ते बन्ने जुदा जुदा साक्षात् कह्या छे, माटे तेमां दोष नथी

४८. कण्हलेस्सा णं भंते ! कतिविहं परिणामं परिणमति ? गोयमा ! तिविहं वा नवविहं वा सत्तावीसविहं वा एक्कासीतिविहं वा बेतेयालीसतविहं वा बहुयं वा बहुविहं वा परिणामं परिणमइ, एवं जाव सुक्कलेसा ।

४८. हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रकारना परिणाम वडे परिणमे छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारना, नव प्रकारना, सत्यावीश प्रकारना, एकाशी प्रकारना, बसो तेंतालीस प्रकारना, बहु अने बहु प्रकारना परिणाम वडे परिणमे छे. ए प्रमाणे शुक्लेश्या सुधी जाणवुं.

सूत्रपाठ पूर्वनी पेठे जाणवो-'हे भगवन् ! केटली लेश्याओ शीतरूक्ष छे'-इत्यादि. हवे गतिद्वार कहे छे—'तओ दुग्गइगामिणीओ, तओ सुग्गइगामिणीओ'-आदिनी त्रण लेश्याओ दुर्गतिमां लइ जवाना स्वभाववाळी छे, कारण के संक्लिष्ट अध्यवसायनो हेतु छे, पर्छीनी त्रण लेश्याओ सुगतिमां लइ जवाना स्वभाववाळी छे, कारण के प्रशस्त अध्यवसायनो हेतु छे. सूत्रपाठ पूर्वनी पेठे जाणवो— 'हे भगवन् ! केटली लेश्याओ दुर्गतिगामी-दुर्गतिमां लइ जनारी छे' इत्यादि.

४८. हवे परिणामद्वार कहे छे—'कण्हलेसा णं भंते ! 'कइविहं परिणामं'-अहीं प्राकृत होवाथी तृतीयाना अर्थमां द्वितीया विभक्ति समजवी. जेम आचारांग सूत्रमां-"अगणिं च खलु पुट्ठा' अग्नि वडे स्पर्श करायेला-ए अर्थ छे. तेथी आ अर्थ थाय छे—हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रकारना परिणाम वडे परिणमे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'गोयमा ! तिविहं वा'—'हे गौतम ! त्रण प्रकारना परिणाम वडे इत्यादि परिणमे छे. अहीं लेश्यानो जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट भेद वडे त्रण प्रकारनो परिणाम छे. ज्यारे ए जघन्यादि परिणामनी स्वस्थानना तारतम्यना विचारमां प्रत्येकने जघन्यादि त्रण वडे गुणीए त्यारे नव प्रकारनो परिणाम थाय, एम फरी फरी त्रण वडे गुणतां सत्यावीश प्रकार, एकाशी प्रकार, बसो तेंतालीश प्रकार, एम बहु अने बहु प्रकारना परिणामनो विचार करवो. अहीं बधे तृतीयाना अर्थमां द्वितीया विभक्ति छे. तेथी त्रण प्रकारना परिणाम वडे, नव प्रकारना परिणाम वडे परिणमे छे एम पदोनी योजना करवी. 'एवं जाव सुक्कलेस्सा' ए प्रमाणे शुक्लेश्या सुधी जाणवुं. एटले कृष्णलेश्या संबन्धी प्रकार वडे नीलादि

४९ कण्हलेस्सा णं भंते ! कतिपदेसिया पन्नत्ता? गोयमा ! अणंतपदेसिया पन्नत्ता, एवं जाव सुक्कलेसा। कण्हलेस्सा णं भंते ! कइपएसोगाढा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जपएसोगाढा पन्नत्ता। एवं जाव सुक्कलेस्सा। कण्हलेस्साए णं भंते! केवतियाओ वग्गणाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अणंताओ वग्गणाओ, एवं जाव सुक्कलेस्साए।

४९. हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रदेशवाळी छे ? हे गौतम ! अनन्त प्रदेशवाळी छे. एम शुक्ललेश्या सुधी समजवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रदेशनी अवगाहनावाळी छे ? हे गौतम ! असंख्याता प्रदेशोनी अवगाहनावाळी छे. एम शुक्ललेश्या सुधी समजवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यानी केटली वर्गणाओ छे ? हे गौतम ! अनन्त वर्गणाओ छे ए प्रमाणे शुक्ललेश्या सुधी जाणवु.

लेश्याओ पण यावत् शुक्ललेश्या सुधी कहेवी सूत्रपाठ सुगम होवाथी स्वयं विचारवो.

४९. हवे प्रदेशद्वार कहेवाने इच्छा वडे सूत्रकार कहे छे—'कण्हलेस्सा णं भंते ! कइपएसिया'–हे भगवन् ! 'कृष्णलेश्या केटला प्रदेशवाळी छे'–इत्यादि सुगम छे, परन्तु 'अनन्त प्रदेशवाळी छे' कारण के कृष्णलेश्याने योग्य द्रव्यना प्रदेशो–तेने योग्य परमाणुओ अनन्तानन्त संख्यावाळा छे केमके अनन्त प्रदेशो सिवायनो कोइ पण स्कन्ध जीवने ग्रहण योग्य नथी एम नीलादि लेश्याओ पण कहेवी एम शुक्ललेश्या सुधी कहेवु हवे अवगाहनाद्वार कहे छे—'कण्हलेस्सा णं भंते ! कइपएसोगाढा' ? हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रदेशोनी अवगाहनावाळी छे ? इत्यादि अहीं अवगाहनाद्वारमां प्रदेशो एटले क्षेत्रना प्रदेशो ग्रहण करवा, कारण के तेमां ज अवगाहनानो प्रसिद्धि छे ते क्षेत्रप्रदेशो अनन्त वर्गणाओना आधारभूत असंख्याता ज जाणवा कारण के संपूर्ण लोकना पण असंख्याता प्रदेशो छे हवे वर्गणाद्वार कहे छे—'कण्हलेस्साए णं भंते ! केवइयाओ वग्गणाओ पन्नत्ताओ' ?–हे भगवन् ! कृष्णलेश्यानी केटली वर्गणाओ छे–इत्यादि अहीं वर्गणा औदारिकादि शरीरयोग्य परमाणुओनी वर्गणानी पेठे कृष्णलेश्याने योग्य द्रव्यना परमाणुओनी वर्गणा ग्रहण करवी अने ते वर्णादिना भेदथी समान जातिवाळानी ज होवाथी अनन्त वर्गणाओ जाणवी एम नीललेश्यादि प्रत्येकनी

५०. केवतिया णं भंते ! कण्हलेस्साठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा कण्हलेस्साठाणा पन्नत्ता । एवं जाव सुक्कलेस्सा ।

५०. हे भगवन् ! कृष्णलेश्याना केटलां स्थानो छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्याना असंख्याता स्थानो छे. ए प्रमाणे शुक्ललेश्या सुधी जाणवुं.

वर्गणाओ कहेवी. ए प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एवं जाव सुक्कलेस्साए' इति एम शुक्ललेश्या सुधी कहेवुं.

५० हवे स्थानद्वार कहे छे—'केवइया णं भंते कण्हलेसाठाणा पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! कृष्णलेश्याना केटलां स्थानो एटले विशुद्धि अने अविशुद्धिना प्रकर्ष-अधिकता अने अप्रकर्ष-न्यूनता वडे करायेला स्वरूपना भेदो छे ? अहीं स्थानशब्द भेदवाची छे. सूत्रमां पुंलिंगनो निर्देश प्राकृत होवाथी थयेलो छे. अहीं ज्यारे भावरूप कृष्णादि लेश्याओनो विचार करीए त्यारे एक एक लेश्याना विशुद्धि के अविशुद्धिना हीनाधिकपणाथी करायेला स्वरूपना भेदरूप स्थानो काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समय प्रमाण छे अने क्षेत्रथी असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे. कह्युं छे के—

"असंखेज्जाणुसप्पिणीण अवसप्पिणीण जे समया । संखाईया लोगा लेस्साणं होंति ठाणाइं ॥"

असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जे समयो छे, अथवा असंख्याता लोकाकाशनो जेटला प्रदेशो छे तेटला लेश्याना स्थानो छे. परन्तु अशुभलेश्याना संक्लेशरूप अने शुभलेश्याना विशुद्धरूप स्थानो छे. ए भावलेश्याना स्थानोना कारणभूत कृष्णादि द्रव्यो छे, तेने पण स्थानोज कहेवाय छे अने तेज स्थानो अहीं ग्रहण करवा, कारण के आ उद्देशकमां कृष्णादि द्रव्यनोज विचार प्रस्तुत छे: ते स्थानो प्रत्येक लेश्याना असंख्याता छे, कारण के तेवा प्रकारना एक परिणामना कारणभूत अनन्त द्रव्यो पण एक अध्यवसायना हेतुभूत होवाथी एकरूप छे. ते स्थानो प्रत्येक लेश्याना बे प्रकारना छे-जघन्य अने उत्कृष्ट. जघन्य लेश्यास्थानरूप परिणामना कारण

५१. एएसि णं भंते ! कण्हलेस्साठाणाणं जाव सुक्कलेस्साठाणाण य जहन्नगाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जहन्नगा काउलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए, जहन्नगा नीललेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा कण्हलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा

५१ हे भगवन् ! जघन्य एवा कृष्णलेश्याना स्थानो यावत् शुक्ललेश्याना स्थानोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे, तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य कृष्णलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यात-

ते जघन्य अने उत्कृष्ट लेश्यास्थानरूप परिणामना कारण ते उत्कृष्ट. जे मध्यम स्थानो छे तेमां जे जघन्यने नजीक होय तेनो जघन्यमां समावेश थाय छे अने उत्कृष्टने नजीक होय तेनो उत्कृष्टमां समावेश थाय छे ते एक एक जघन्य स्थानो अने उत्कृष्ट स्थानो पोताना स्थानने आश्रयी परिणामरूप गुणना भेदथी असंख्याता छे अहीं आ दृष्टान्त छे-जेम स्फटिकमणिनी रक्तता अळताने लीधे थाय छे, अने ते जघन्य रक्तागुणवाळा अळताथी जघन्य रक्तता थाय छे, एकगुण अधिक अळता वडे एकगुण अधिक जघन्य रक्तता होय छे, एम एक एक गुणनी वृद्धि करवा वडे जघन्य रक्ततामां असंख्याता स्थानो थाय छे अने ते बधा व्यवहारथी थोडागुणवाळा होवाथी जघन्य स्थानो कहेवाय छे ए प्रमाणे आत्माने पण जघन्य एकगुणाधिक, द्विगुणाधिकादि लेश्याद्रव्यना संनिधानथी असंख्याता लेश्यापरिणामो थाय छे अने ते बधाय व्यवहारथी अल्पगुणवाळा होवाथी 'जघन्य' कहेवाय छे तेना कारणभूत लेश्याद्रव्योना स्थानो पण जघन्य कहेवाय छे ए प्रमाणे उत्कृष्ट स्थानो पण असंख्याता जाणवा

५१ हवे अल्पबहुत्व कहे छे—'एएसिणं भंते ! कण्हलेस्साठाणाणं' इत्यादि अहीं त्रण अल्पबहुत्व छे-जघन्य स्थानविषयक, उत्कृष्ट स्थानविषयक अने उभयस्थानविषयक एक एकना पण त्रण त्रण प्रकार छे-द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे, अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे तेमां

तेउलेसाठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा पम्हलेसाठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा सुक्कले-
साठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, पएसट्ठयाए-सव्वोत्थोवा जहन्नगा काउलेसाठाणा पएसट्ठयाए, जहन्नगा
नीललेसाठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा कण्हलेसाठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा तेउले-
स्साए ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा पम्हलेसाठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा सुक्कले-
साठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा जहन्नगा काउलेसाठाणा दव्वट्ठयाए, जह-
न्नगा नीललेसाठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, जहन्नगा सुक्कलेसा-

---

गुणा छे, तेथी जघन्य तेजोलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य पद्मलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यात-
गुणा छे, तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थरूपे-सौथी थोडा जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो
प्रदेशार्थरूपे छे, तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य कृष्णलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे
असंख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य तेजोलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. तेथी जघन्य पद्मलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे
असंख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे—सौथी थोडा जघन्य

जघन्य स्थानना विषयमां द्रव्यार्थरूपे अने प्रदेशार्थरूपे कापोत, नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्ल प्रत्येक लेश्याना स्थानो अनुक्रमे
उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा कहेवा. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे-प्रथम द्रव्यार्थरूपे कापोत, नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्ललेश्याना अनुक्रमे
उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा स्थानो छे. त्यार बाद शुक्ललेश्याना स्थान पछी प्रदेशार्थरूपे कापोतलेश्याना स्थानो अनन्तगुणा छे. त्यार

ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेस्साठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए जहन्नकाउलेस्साठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नया नीललेस्साठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं जाव सुक्कलेस्साठाणा।

५२. एतेसि णं कण्हलेस्साठाणाणं जाव सुक्कलेस्साठाणाण य उक्कोसगाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा उक्कोसगा काउलेस्साठाणा दव्वट्ठयाए, उ-

कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे. तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. एम जघन्य कृष्णलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्याना स्थानो छे. तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थरूपे जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे शुक्ललेश्याना स्थानो सुधी जाणवु.

५२. हे भगवन्! ए उत्कृष्ट कृष्णलेश्याना स्थानो यावत् शुक्ललेश्याना स्थानोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा उत्कृष्ट कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे.

पछी नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्ललेश्याना स्थानो अनुक्रमे प्रदेशार्थरूपे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थानो द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने उभयार्थपणे विचारवा माटे कह्यु छे के 'एवं जहेव जहन्नगा तहेव उक्कोसगावि, नवरं उक्कोसत्ति अभिलावो' जेम जघन्य स्थानो कह्यां तेम उत्कृष्ट स्थानो पण कहेवा, परन्तु त्यां जघन्यने बदले 'उत्कृष्ट' पाठ कहेवो जघन्य अने उत्कृष्ट स्थानना समुदायविषयक अल्पबहुत्वमा प्रथमथी द्रव्यार्थपणे कापोत, नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्ललेश्याना जघन्य स्थानो अनुक्रमे

क्कोसगा नीललेसाठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं जहेव जहन्नगा तहेव उक्कोसगावि, नवरं उक्कोसत्ति अभिलावो।

५३. एतेसि णं भंते! कण्हलेस्सठाणाणं जाव सुक्कलेस्सठाणाण य जहन्नउक्कोसगाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा जहन्नगा काउलेसठाणा दव्वट्ठयाए, जहन्नया नीललेसठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेस्सठाणा, जहन्निया सुक्कलेसठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेसठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए उक्कोसा काउलेसठाणा दव्वट्ठयाए

तेथी उत्कृष्ट नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, ए प्रमाणे जेम जघन्य स्थानो कह्यां तेम उत्कृष्ट स्थानो पण कहेवां. परन्तु जघन्यने स्थाने 'उत्कृष्ट' एवो पाठ कहेवो.

५३. हे भगवन्! ए जघन्य अने उत्कृष्ट कृष्णलेश्याना स्थानो यावत् शुक्ललेश्याना स्थानोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे? हे गौतम! सौथी थोडा जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे. तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. एम कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्याना स्थानो संबंधे जाणवुं. तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थरूपे जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट कापोतलेश्याना स्थानो

उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे, त्यार पछी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट कापोत, नील, कृष्ण, तेज , पद्म अने शुक्ललेश्याना स्थानो अनुक्रमे द्रव्यार्थपणे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे. एम प्रदेशार्थपणे पण जघन्य अने उत्कृष्टस्थान संबन्धे अल्पबहुत्व विचारवुं. ते

असखेज्जगुणा, उक्कोसा नीललेसाठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेसट्ठाणा, उक्कोसा सुक्कलेसाठाणा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा जहन्नगा काउलेसठाणा पएसट्ठयाए, जहन्नगा नीललेसठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं जहेव दव्वट्ठयाए तहेव पएसट्ठयाएवि भाणियव्वं, नवरं पएसट्ठयाएत्ति अभिलावविसेसो । दव्वट्ठपएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा जहन्नगा काउलेसठाणा दव्वट्ठयाए, जहन्नगा नीललेसठाणा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, एव कण्हतेउपम्हलेसट्ठाणा, जहन्नया सुक्कलेसठाणा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेसाठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए उक्कोसा काउलेसठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसा

द्रव्यार्थपणे असख्यातगुणा छे. तेथी उत्कृष्ट नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असख्यातगुणा छे, ए प्रमाणे कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्या संबधे कहेवुं. तेथी उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे प्रदेशार्थपणे-सौथी थोडा जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे छे, तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असख्यातगुणा छे, ए प्रमाणे जेम द्रव्यार्थरूपे कह्युं तेम प्रदेशार्थरूपे पण कहेवु. परन्तु 'प्रदेशार्थरूपे' एवो पाठ विशेष कहेवो. द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे—सौथी थोडा जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे. तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्या सवधे जाणवु. तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, द्रव्यार्थरूपे जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट

प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—'एव जहेव दव्वट्ठयाए तहेव पएसट्ठयाएवि भाणियव्व, नवरं 'पएसट्ठयाए' त्ति अभिलावविसेसो'-जेम द्रव्यार्थपणे कह्यु तेम प्रदेशार्थपणे पण कहेवु परन्तु 'प्रदेशार्थपणे' एवो पाठ कहेवो ए विशेष छे द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थ

नीललेस्सठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेसट्ठाणा, उक्कोसगा सुक्कलेसठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसएहिंतो सुक्कलेसठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए जहन्नगा काउलेसठाणा पएसट्ठयाए अणंतगुणा, जहन्नगा नीललेसठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेसट्ठाणा, जहन्नगा सुक्कलेसठाणा असंखेज्जगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेसाठाणेहिंतो पएसट्ठयाए उक्कोसा काउलेसाठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसया नीललेसाठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपम्हलेसाट्ठाणा, उक्कोसया सुक्कलेसाठाणा

कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी उत्कृष्ट नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. एम कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्या संबंधे जाणवुं. तेथी उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थपणे उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानोथी जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुणा छे, तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्या संबंधे जाणवुं. तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. प्रदेशार्थरूपे जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, तेथी उत्कृष्ट नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. एम कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्या संबंधे जाणवुं. तेथी उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थ-

---

पणामां-प्रथमथी द्रव्यार्थरूपे कापोत, नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्ललेश्याना जघन्य स्थानो अनुक्रमे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे. त्यारबाद जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उपर कहेला क्रम वडे उत्कृष्ट स्थानो द्रव्यार्थरूपे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे. त्यारबाद उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानोथी जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे. ते पछी प्रदेशार्थपणेज नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने

पगसट्ठयाग असंखेज्जगुणा ।

पन्नवणाए भगवईए सत्तरसमस्स लेसापदस्स चउत्थओ उद्देसओ समत्तो ।

रूपे असंख्यातगुणा छे.

प्रज्ञापना भगवतीमा सत्तरमां लेश्यापदनो चतुर्थ उद्देशक समाप्त

शुक्ललेश्यना जघन्य स्थानो उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे ए प्रमाणे उत्कृष्ट स्थानो पण उपर कहेला क्रमथी ज उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा लेश्या पदनो चतुर्थ उद्देशक समाप्त

पञ्चमो उद्देसो ।

५४. कइ णं भंते ! लेस्साओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेसा, जाव सु-

पांचमो उद्देशक

५४ हे भगवन् ! केटली लेश्याओ कही छे ? हे गौतम ! छ लेश्याओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या.

५४ चोथो उद्देशक कह्यो, हवे पांचमा उद्देशकनो प्रारंभ थाय छे तेनु आ प्रथम सूत्र छे 'कइ णं भंते ! लेस्साओ पन्नत्ताओ' ? 'हे भगवन् ! केटली लेश्याओ कही छे'–इत्यादि चतुर्थ उद्देशकनी पेठे यावत् वैडूर्यमणिना दृष्टांत सुधी कहेवु अने तेनी व्याख्या पूर्वनी पेठे यथी करवी पूर्वे कहेला आ सूत्रनु पुन कथन आगळना सूत्रना सबन्धने माटे छे तेज सूत्र कहे छे—'से नूणं भंते' ! हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्या नील लेश्याने पामीने वारंवार तेरूपे परिणमती नथी–इत्यादि अहीं तिर्यंच अने मनुष्य सबन्धी सूत्र हमणा कह्यु अने आ सूत्र देव अने नैरयिक सबधी जाणवु कारण के देव अने नारको पूर्वभवना छेल्ला अन्तर्मुहूर्तथी आरंभी पर

क्कलेसा । से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावन्नत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफास-

हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तद्रूपपणे-तेना स्वरूपे, तेना वर्णपणे, तेना गन्धपणे, तेना रसपणे अने तेना

भावना प्रथम अन्तर्मुहूर्त सुधी अवस्थितलेश्यावाळा होय छे. तेथी एओने कृष्णादि लेश्याद्रव्योनो परस्पर संबन्ध होवा छतां पण परिणम्य-परिणामकभाव घटतो नथी, तेथी यथार्थ परिज्ञान थवा माटे प्रश्न करे छे—'से नूणं भंते' ! इत्यादि. से शब्द अथशब्दना अर्थमां छे अने अथशब्द प्रश्न अर्थमां छे. हे भगवन् ! नूनं निश्चित-अवश्य कृष्णलेश्याद्रव्यो नीललेश्या द्रव्योने प्राप्त करीने, अहीं प्राप्तिनो अर्थ समीप मात्र छे, परन्तु परिणम्य-परिणामकभाववडे परस्पर संबन्धरूप अर्थ नथी. 'तद्रूपतया'-तद्रूपपणे-नीललेश्याना स्वभावपणे.एनी ज व्याख्या करे छे—'तद्वर्णतया' तद्वर्णपणे-नीललेश्याना वर्णपणे; 'तद्गन्धतया' तद्गन्धपणे-नीललेश्याना गन्धपणे, 'तद्रसतया' तद्रसपणे-नीललेश्याना रसपणे अने 'तत्स्पर्शतया' तत्स्पर्शपणे-नीललेश्याना स्पर्शपणे वारंवार नथी परिणमती ? भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा' ! हे गौतम ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्यापणे परिणमती नथी. (प्र०)—जो कृष्णलेश्या तद्रूपपणे-अन्य लेश्यापणे न परिणमे तो सातमी नरकपृथिवीमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति शी रीते थाय ? कारण के सम्यक्त्व तेजोलेश्यादि शुभलेश्यानो परिणाम होय त्यारे थाय छे, अने सातमी नरकपृथिवीमां कृष्णलेश्या छे.तेथी 'भावपरावत्तीए पुण सुरनेरइयाणं पि छल्लेसा' । भावनी परावृत्ति थवाथी देव अने नैरयिकोने पण छ ए लेश्याओ होय छे आ वाक्य शी रीते घटे ? कारण के अन्य लेश्याद्रव्यना संबन्धथी तद्रूपपणे परिणामनो असंभव होवाथी भावनी परावृत्ति नहि थइ शके, माटे ते संबन्धे प्रश्न अने उत्तरसूत्र कहे छे—'से केणट्ठेणं भंते' !-हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो-इत्यादि. तेमां प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तरसूत्र आ छे—'आगारभावमायाए वा से सिया' इत्यादि. आकारभावमात्र-छायामात्र वडे होय. अहिं मात्र शब्द आकारभाव सिवायना बीजा परिणामनो निषेध करवा माटे छे. 'से' ते कृष्णलेश्या नीललेश्यारूपे छायामात्रवडे होय छे. अथवा 'पलिभागमायाए वा से सिया' प्रतिभाग-प्रतिबिंब मात्रवडे नीललेश्यारूपे होय छे. जेम आरीसा वगेरेमां पडेलुं प्रतिबिंब प्रतिबिंबने योग्य वस्तुना विशिष्ट आकाररूपे थाय छे. अहीं पण मात्र शब्द प्रतिबिंब

त्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमति? इत्तो आढत्तं जहा चउत्थओ उद्देसओ तहा भाणियव्वं जाव वेरुलियमणिदिट्ठंतोत्ति।

स्पर्शपणे वारंवार परिणमे ? हे गौतम ! अहींथी आरंभी जेम चोथो उद्देशक कह्यो, तेम वैडूर्यमणिना दृष्टांत सुधी कहेवु.

सिवायना बीजा परिणामनो निषेध करवा माटे छे तेम कृष्णलेश्या प्रतिबिंबमात्रवडे नीललेश्यारूपे थाय छे पण वास्तविक रीते तो ते कृष्णलेश्या ज छे, नीललेश्या नथी कारण के ते पोताना स्वरूपनो त्याग करती नथी आदर्श वगेरे जपाकुसुम वगेरेना सन्निधानथी तेना प्रतिबिंबमात्रने धारण करता आदर्शादि नथी एम नथी, पण आदर्शादि ज छे, ए प्रमाणे लेश्या संबन्धे विचार करवो केवल ते कृष्णलेश्या पोताना स्वरूपमां रहीने 'अवष्वष्कते, उत्ष्वष्कते'-तेना आकारभावमात्रने धारण करवाथी के तेना प्रतिबिंबमात्रने धारण करवाथी उत्सर्पण करे छे-अन्य लेश्याने प्राप्त थाय छे. कृष्णलेश्याथी नीललेश्या विशुद्ध छे, तेथी तेना आकारभावने के तेना प्रतिबिंबमात्रने धारण करती कदाच विशुद्ध थाय छे माटे ते 'उत्सर्पण करे छे-प्राप्त थाय छे' एम कहुं छे उपसंहार वाक्य कहे छे-'से एएणट्ठेणं' ए कारणथी एम कहुं छुं—इत्यादि सुगम छे ए प्रमाणे कापोतलेश्याने प्राप्त करी नीललेश्याना, तेजोलेश्याने आश्रयी कापोतलेश्याना, पद्मलेश्याने आश्रयी तेजोलेश्याना अने शुक्ललेश्याने आश्रयी पद्मलेश्याना सूत्रोनो विचार करवो हवे पद्मलेश्याने आश्रयी शुक्ललेश्या संबन्धे सूत्र कहे छे—'से नूणं भंते! सुक्कलेसा पम्हलेसं पप्प'-हे भगवन्! शुक्ललेश्या पद्मलेश्याने पामीने तद्रूपपणे न परिणमे ? इत्यादि ए सूत्रनो पूर्वनी पेठे विचार करवो परन्तु शुक्ललेश्यानी अपेक्षाए पद्मलेश्या हीनपरिणामवाळी छे, तेथी शुक्ललेश्या पद्मलेश्याना आकारभाव के प्रतिबिंब मात्रने धारण करती कदाच अविशुद्ध थाय छे माटे 'अवष्वष्कते' प्राप्त थाय छे-एम कहेवाय छे ए प्रमाणे तेजस्, कापोत, नील अने कृष्णलेश्या विषयक पण सूत्रो विचारवा तेथी पद्मलेश्याने आश्रयी तेजस्, कापोत, नील अने कृष्णलेश्या विषयक सूत्रो, तेजोलेश्याने आश्रयी कापोत, नील अने कृष्णलेश्या विषयक सूत्रो, कापोतलेश्याने आश्रयी नील अने कृष्णलेश्या संबन्धे सूत्रो अने नीललेश्याने आश्रयी कृष्णलेश्या विषयक सूत्र जाणवा आ सूत्रो पुस्तकोमां साक्षात्

५५. से नूणं भंते ! कण्हलेसा नीललेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव णो ताफासत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ ? हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए, णो तावन्नत्ताए, णो तागंधत्ताए, णो तारसत्ताए, णो ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमति। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा से सिया, पलिभागभावमायाए वा से सिया। कण्हलेस्सा णं सा, णो खलु नीललेसा, तत्थ गया ओसक्कइ उस्सक्कइ वा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-'कण्हलेसा नीललेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति'। से नूणं

५५. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तेना स्वरूपपणे, यावत् तेना स्पर्शपणे वारंवार परिणमती नथी ? हा गौतम ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तेना स्वरूपपणे, तेना वर्णपणे, तेना गन्धपणे तेना रसपणे, अने तेना स्पर्शपणे वारंवार परिणमती नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! ते तेना आकारभाव-छाया मात्र वडे छे, तेना प्रतिभाग-प्रतिबिंब मात्र वडे ते नीललेश्या छे. परन्तु ते कृष्णलेश्या नीललेश्या रूपे नथी. कृष्णलेश्या त्यां स्वस्वरूपमां रहेली [नीललेश्याने] प्राप्त थाय छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी.'

देखातां नथी, पण केवळ अर्थथी जाणवां कारण के ते प्रमाणे मूलटीकाकारे व्याख्यान कर्युं छे. ए प्रमाणे जो के देव अने नारकोने अवस्थित लेश्याद्रव्य छे, तोपण ते ते ग्रहण करातां बीजी लेश्याद्रव्यना संबन्धथी ते पण तेना आकारभावमात्रने धारण करे छे माटे भावनी परावृत्ति थवाथी छए लेश्या घटे छे, तेथी सातमी नरक पृथिवीमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे तेमां कंइपण दोष नथी.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा लेश्यापदनो पंचम उद्देशक समाप्त.

भंते ! नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुचइ—'नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति' ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा सिता, पलिभागभावमायाए वा सिता। नीललेस्सा णं सा, णो खलु सा काउलेसा तत्थगया ओसक्कइ उस्सक्कति वा, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ—'नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति'। एवं काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसं पप्प, पम्हलेसा सुक्कलेसं पप्प। से नूणं भंते! सुक्कलेसा पम्हलेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव परिणमति ? हंता गोयमा ! सुक्कलेसा तं चेव। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचति—'सुक्कलेसा जाव णो परिणमति' ? गोयमा !

हे भगवन्! अवश्य नीललेश्या कापोतलेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी ? हे गौतम! अवश्य नीललेश्या कापोतलेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी. हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहो छो के 'नीललेश्या कापोतलेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी' ? हे गौतम ! ते नीललेश्या ते कापोतलेश्याना आकारभाव-छाया मात्र धडे होय, अथवा तेना प्रतिबिंबभाव मात्र धडे होय छे. ते नीललेश्या छे, पण कापोतलेश्या नथी. ते स्वस्वरूपमां रहेली नीललेश्या [कापोतलेश्याने] प्राप्त थाय छे. ए हेतुथी एम कहुं छुं के 'नीललेश्या कापोतलेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी.' ए प्रमाणे कापोतलेश्या तेजोलेश्याने पामीने, तेजोलेश्या पद्मलेश्याने पामीने अने पद्मलेश्या शुक्ललेश्याने पामीने [तद्रूपपणे वारंवार परिणमती नथी.] हे भगवन्! अवश्य शुक्ललेश्या पद्मलेश्याने पामीने तद्रूपपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी ? हा गौतम !

आगारभावमायाए वा जाव सुक्कलेस्सा णं सा, णो खलु सा पम्हलेसा, तत्थ गया ओसक्कइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—'जाव णो परिणमइ'।

पण्णवणाए भगवईए सत्तरसमे लेसापदे पंचमुद्देसो समत्तो।

शुक्ललेश्या वारंवार परिणमती नथी. हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'शुक्ललेश्या यावत् परिणमती नथी'? हे गौतम! ते शुक्ललेश्या पद्मलेश्याना आकारभावमात्र वडे होय छे. यावत् ते शुक्ललेश्या छे, पण पद्मलेश्या नथी. शुक्ललेश्या पोताना स्वरूपमां रहेली [पद्मलेश्याने] प्राप्त थाय छे. ते कारणथी हे गौतम! हुं एम कहुं छुं के 'यावत् परिणमती नथी.'

सत्तरमा लेश्यापदमां पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्ठो उद्देसो।

५६. कति णं भंते ! लेसा पन्नता ? गोयमा ! छ लेसा पन्नत्ता, तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्कलेसा। मणुस्साणं भंते ! कइ लेसा पन्नत्ता ? गोयमा ! छ लेस्साओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेसा, जाव सुक्कलेसा। मणुस्सी णं भंते !

छट्ठो उद्देशक

५६. हे भगवन्! केटली लेश्याओ कही छे? हे गौतम! छ लेश्याओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या. हे भगवन्! मनुष्योने केटली लेश्याओ कही छे? हे गौतम! छ लेश्याओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या.

५६–५७. ए प्रमाणे पांचमो उद्देशक कह्यो, हवे छट्ठो उद्देशक कहेवाय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे—'कइ णं भंते! लेस्साओ

पुच्छा। गोयमा! छल्लेस्साओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा जाव सुक्का। कम्मभूमयमणुस्साण भंते! कइ लेसाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा, जाव सुक्का। एवं कम्मभूमयमणुस्सीणवि। भरहेरवयमणुस्साणं भंते! कति लेसाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! छल्लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा, जाव सुक्का। एवं मणुस्सीणवि। पुव्वविदेहे अवरविदेहे कम्मभूमयमणुस्साणं कति लेस्साओ? गो०! छल्लेसाओ। तंजहा—कण्हा जाव सुक्का। एवं मणुस्सीण वि। अकम्मभूमयमणुस्साणं पुच्छा। गोयमा! चत्तारि लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा, जाव तेउलेसा, एवं अकम्मभूमगमणुस्सीणवि, एवं अंतरदीवगमणुस्साणं, मणुस्सीणवि। एवं हेमवयएरन्नवयअकम्मभूमयमणुस्साणं मणूस्सीण य कइ लेसाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! चत्तारि, तंजहा—कण्हा, जाव तेउलेसा। हरि

हे भगवन्! मानुषी स्त्रीने केटली लेश्याओ होय छे? हे गौतम! छ लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. हे भगवन्! कर्मभूमिना मनुष्योने केटली लेश्याओ होय छे? हे गौतम! छ लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. ए प्रमाणे कर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रीने पण जाणवुं. हे भगवन्! भरत अने ऐरावत क्षेत्रना मनुष्योने केटली लेश्याओ होय छे? हे गौतम! छ लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्ण यावत् शुक्ल. ए प्रमाणे मनुष्यस्त्रीने पण कहेवुं. पूर्व अने पश्चिम महाविदेहना कर्मभूमिना मनुष्योने केटली लेश्या होय? हे गौतम! छए लेश्या होय. ए प्रमाणे मनुष्य स्त्री ने पण कहेवुं. अकर्मभूमिना मनुष्य संबंधे पृच्छा. हे गौतम! चार लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्ण यावत् तेजोलेश्या. ए प्रमाणे अकर्मभूमिनी मनुष्यस्त्रीने पण कहेवुं. एम

पन्नत्ताओ? हे भगवन्! केटली लेश्याओ कही छे? इत्यादि सूत्र उद्देशकनी समाप्ति पर्यन्त सुगम छे परन्तु उत्पन्न थतो जीव बीजा

वासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साणं मणुस्सीण य पुच्छा। गोयमा ! चत्तारि, तंजहा—कण्हा, जाव तेउलेसा। देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमयमणुस्सा एवं चेव, एतेसिं चेव मणुस्सीणं एवं चेव, धायइसंडपुरिमद्धेवि एवं चेव, पच्छिमद्धेवि, एवं पुक्खरदीवेवि भाणियव्वं।

६७. कण्हलेसे णं भंते ! मणुस्से कण्हलेसं गब्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा। कण्हलेसे मणुस्से नीललेसं गब्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, जाव सुक्कलेसं गब्भं जणेज्जा। नीललेसे मणुस्से कण्हलेसं गब्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, एवं नीललेसे मणुस्से जाव सुक्कलेसं गब्भं

अन्तर्द्वीपना मनुष्यो अने मानुषीने पण कहेवुं. हैमवत अने हैरण्यवत अकर्मभूमिना मनुष्योने तथा मनुष्यस्त्रीने केटली लेश्याओ होय छे ? हे गौतम ! चार लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे–कृष्ण, यावत् तेजोलेश्या. हरिवर्ष अने रम्यक अकर्मभूमिना मनुष्यो अने मानुषी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! चार लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे–कृष्ण, यावत् तेजोलेश्या. देवकुरु अने उत्तरकुरु अकर्मभूमिना मनुष्यो एमज जाणवा. एओनी मनुष्य स्त्रीने पण एमज समजवुं. ए प्रमाणे धातकिखंडना पूर्वार्द्धमां अने पश्चिमार्धमां पण जाणवुं. एम पुष्करवर द्वीपमां पण कहेवुं.

५७. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य शुं कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! अवश्य उत्पन्न करे. हे भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाळो मनुष्य नीललेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! अवश्य उत्पन्न करे. यावत् शुक्ल-

---

जन्ममां. लेश्याद्रव्यो लइने उत्पन्न थाय छे, ते लेश्याद्रव्यो कोइने कोइ कोइ प्रकारना होय छे. कृष्णलेश्याना परिणामवाळो पिता छतां

जणेज्जा, एवं काउलेसेणं छप्पि आलावगा भाणियव्वा। तेउलेसाणवि पम्हलेसाण वि सुक्कलेसाणवि,एवं छत्तीसं आलावगा भाणियव्वा। कण्हलेसा इत्थिया कण्हलेसं गब्भ जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा। एवं एतेवि छत्तीसं आलावगा भाणियव्वा। कण्हलेसेणं भंते ! मणुस्से कण्हलेसाए इत्थियाते कण्हलेसं गब्भ जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, एवं एते छत्तीस आलावगा। कम्मभूमगकण्हलेसे णं भंते ! मणुस्से कण्हलेसाए इत्थियाए कण्हलेसं गब्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, एवं एते छत्तीसं आलावगा। अकम्मभूमयकण्हलेसे मणुस्से अकम्मभूमयकण्हलेसाए इत्थियाए अकम्मभूमयकण्हलेस गब्भ जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा,

---

लेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे नीललेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे. ए प्रमाणे नीललेश्यावाळो मनुष्य यावत् शुक्ललेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे. एम कापोतलेश्यावाळानी साथे छ ए आलापको कहेवा एम तेजोलेश्यावाळा, पद्मलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळाने पण कहेवु. एम छत्रीश आलापको कहेवा. कृष्णलेश्यावाळी स्त्री कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे. ए प्रमाणे आ छत्रीश आलापको कहेवा. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळी स्त्रीमा कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे एम ए छत्रीश आलापको कहेवा. हे भगवन् ! कर्मभूमिनो कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळी स्त्रीमां कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! अवश्य उत्पन्न करे अकर्मभूमिनो कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य अकर्मभूमिनी कृष्णलेश्यावाळी स्त्रीमां अकर्मभूमिना कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम !

नवरं चउसु लेसासु सोलस आलावगा, एवं अंतरदीवगाणवि ।

इति पन्नवणाए भगवईए सत्तरसमं लेस्सापदं समत्तं ॥

उत्पन्न करे. परन्तु अहीं चार लेश्याओना सोळ आलापको कहेवा. ए प्रमाणे अन्तर्द्वीपना मनुष्योने पण जाणवुं.

प्रज्ञापना भगवतीमां सत्तरमुं लेश्यापद समाप्त.

पुत्रने विचित्र लेश्यानो संभव छे. ए प्रमाणे बाकीनी लेश्याना परिणामवाळाने पण जाणवुं.

श्रीमदाचार्य मलगिरिविरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा पदनो छठ्ठो उद्देशक समाप्त.

अट्ठारसमं पय ।

जीवं गइंदियं काए जोए वेए कसायलेसा य । सम्मत्तणाणदंसणे संजयें उवओगे आहारे ॥ १ ॥
भासगपरित्त पज्जत्त सुहुम सन्नी भवऽत्थि चरिमे य । एतेसिं तु पदाणं कायठिई होइ णायव्वा ॥ २ ॥

अढारमुं कायस्थिति पद.

१ जीव, २ गति, ३ इन्द्रिय, ४ काय, ५ योग, ६ वेद, ७ कषाय, ८ लेश्या, ९ सम्यक्त्व, १० ज्ञान, ११ दर्शन, १२ संयत, १३ उपयोग, १४ आहार, १५ भाषक, १६ परित्त, १७ पर्याप्त, १८ सूक्ष्म, १९ संज्ञी, २० भवसिद्धिक, २१ अस्तिकाय अने २२ चरम ए बावीश पदोनी कायस्थिति जाणवा योग्य छे.

ए प्रमाणे सत्तरमुं पद कह्युं, हवे अढारमा पदनो प्रारंभ थाय छे तेनो आ संबन्ध छे-अहीं पूर्वना पदमां लेश्यानो परिणाम कह्यो, हवे परिणामना समानपणाथी कायस्थितिपरिणाम कहे छे तेमां अधिकार-विषय प्रतिपादक आ बे गाथाओ छे—'जीवगइंदियकाए' इत्यादि १ प्रथम जीवपदने उद्देशी कायस्थिति कहेवानी छे ते पछी अनुक्रमे २ गतिपद, त्यार पछी ३ इन्द्रियपद, ते पछी ४ कायपद, त्यार बाद ५ योगपद, ते पछी ६ वेदपद, ते पछी ७ कषायपद, त्यारबाद ८ लेश्यापद, ते पछी ९ सम्यक्त्वपद, ते पछी १० ज्ञानपद, ते पछी ११ दर्शनपद, त्यार बाद १२ संयतपद, ते पछी १३ उपयोगपद, त्यार बाद १४ आहारपद, ते पछी १५ परित्तपद, ते पछी १६ भाषकपद, त्यारबाद १७ पर्याप्त पद, त्यारबाद १८ सूक्ष्मपद, ते पछी १९ संज्ञीपद, ते पछी २० भवसिद्धिकपद, त्यारबाद २१ अस्तिकाय अने २२ चरमपद-ए बावीश पदोनी कायस्थिति जाणवा योग्य छे जे प्रमाणे ते जाणवा योग्य छे ते प्रमाणे उद्देशना क्रम प्रमाणे निर्देश करवामां आवशे कायस्थितिनो शब्दार्थ शो छे? कायशब्द अहीं पर्यायना अर्थमां ग्रहण करवो, ते पर्याय काय-शरीरना

१. जीवे णं भंते ! जीवेत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं । दारं १ ।

२. नेरइयाणं भंते ! नेरइएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं

---

१. हे भगवन् ! जीव 'जीव' ए स्वरूपे कालने आश्रयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सर्व काळ होय. १ द्वार.

२. हे भगवन् ! नैरयिक 'नैरयिक' ए रूपे काळने आश्रयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य दस हजार वरस अने उत्कृष्ट तेत्रीश

जेवो होवाथी उपमानथी काय कहेवाय छे. ते बे प्रकारे छे-सामान्यरूप अने विशेषरूप, तेमां विशेषण रहित जीवत्व स्वरूप पर्याय ते सामान्यरूप काय अने नैरयिकत्वादि रूप पर्याय ते विशेषरूप काय. ते कायनी स्थिति-ते रूपे रहेवुं ते कायस्थिति. तात्पर्य ए छे के सामान्यरूप अने विशेषरूप पर्याय वडे विवक्षित जीवनुं निरंतरपणे रहेवुं ते कायस्थिति. तेथी प्रथम सामान्यरूप पर्याय वडे विवक्षित जीवनुं निरन्तर रहेवुं तेनो विचार करे छे-'जीवेणं भंते'—इत्यादि. हे भगवन् ! अहीं जीवनपर्याय सहित होय ते जीव कहेवाय छे, तेथी प्रश्न करे छे के जीव 'जीव' ए रूपे एटले जीवनपर्याय विशिष्टपणे 'कालतः' काळने आश्रयी 'कियच्चिरं' केटला काळ सुधी होय ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! 'सव्वद्धा'-सर्वदा-सर्वकाळ पर्यन्त होय. केवी रीते होय ? अहीं प्राणोने धारण करवा ए जीवन कहेवाय छे. प्राणो बे प्रकारना छे-द्रव्यप्राणो अने भावप्राणो. तेमां पांच इन्द्रियो, मन, वचन अने कायबल ए त्रण बल, उच्छ्वास-निःश्वास अने आयुष कर्मना अनुभव करवारूप द्रव्य प्राणो कहेवाय छे अने ज्ञानादि-ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य वगेरे भावप्राणो छे. तेमां संसारी जीवोने आयुषकर्मना अनुभवरूप प्राणनुं धारण करवुं हमेशां अवस्थित छे. कारणके संसारी जीवोनी एवी कोइ अवस्था नथी के जेमां आयुषकर्मनो अनुभव न होय. मुक्त जीवोने ज्ञानादिरूप भावप्राणने धारण करवुं अवस्थित छे. कारण के मुक्तोने पण ज्ञानादिरूप प्राणो छे, जे भावप्राणो वडे मुक्त जीव पण 'जीवे छे' एम कहेवाय छे. ते ज्ञानादि प्राणो मुक्त जीवोने शाश्वत होय छे. तेथी संसारी अवस्थामां अने मुक्तावस्थामां बधे जीवन छे माटे जीवनपर्याय सर्व काळभावी छे.

सागरोवमाइं। तिरिक्खजोणिए णं भंते! तिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अनंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पुग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखिज्जइभागे। तिरिक्खजोणिणी णं भंते! तिरिक्खजोणिणित्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तम-

---

सागरोपम सुधी होय. हे भगवन्! तिर्यंचयोनिक 'तिर्यंचयोनिक' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अनन्त काळ सुधी होय. अनन्त उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी पर्यन्त काळथी होय अने क्षेत्रथी अनन्त लोक–अनन्त लोकना आकाश प्रदेश प्रमाण होय. तथा आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण असंख्याता पुद्गलपरावर्त पर्यन्त होय. हे भगवन्! तिर्यंचयोनिक स्त्री 'तिर्यंच स्त्री, ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक त्रण पल्योपम सुधी होय. ए

---

२. हवे नैरयिकत्वादि पर्याय वडे विवक्षित तेज जीवनु ते नैरयिकत्वादि पर्यायो वडे केटला काळ सुधी निरन्तर अवस्थान होय तेनो विचार करे छे–'नेरइए णं भंते'–हे भगवन्! नैरयिक 'नैरयिक' ए रूपे केटला काळ सुधी होय–इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु नैरयिको तेवा प्रकारना स्वभावथी पोताना भवथी च्यवी तुरतज फरी नैरयिकपणे उत्पन्न थता नथी तेथी तेनु जे भवस्थितिनु परिमाण छे तेज कायस्थितिनु पण परिमाण घटे छे माटे उपर कह्या प्रमाणे जघन्यथी दश हजार वरसनी अने उत्कर्षथी तेत्रीस सागरोपमनी कायस्थिति छे 'तिरिक्खजोणिए णं भंते'–हे भगवन्! तिर्यंचयोनिक तिर्यंचपणे केटला काळ सुधी होय–इत्यादि देवो ज्यारे देव, मनुष्य के नैरयिक तिर्यंचोमा उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्त रहीने पुनः पोतानी गतिमा के बीजी गतिमां जइ उत्पन्न

ब्भहियाइं । एवं मणुस्सेवि, मणुस्सीवि एवं चेव । देवेणं भंते ! देवेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहेव नेरइए । देवी णं भंते ! देविति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ? जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पणवन्नं पलिओवमाइं । सिद्धेणं भंते ! सिद्धेत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए । नेरइए णं भंते ! नेरइयअपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, एवं जाव देवी अपज्जत्तिया । नेरइयपज्जत्तए णं भंते ! नेरइयपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं

प्रमाणे मनुष्य संबंधे जाणवुं. मनुष्य स्त्री संबंधे पण एमज समजवुं. हे भगवन् ! देवें 'देव' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जेम नैरयिक संबंधे कह्युं तेम कहेवुं. हे भगवन् देवी "देवी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट पंचावन पल्योपम सुधी होय. हे भगवन् ! सिद्ध 'सिद्ध' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सादि अनन्त काळ होय. हे भगवन् ! नैरयिकें 'नैरयिक अपर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काळ होय. ए प्रमाणे यावत् अपर्याप्त देवी सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक पर्याप्त 'नैरयिक पर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी

थाय त्यारे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण कायस्थिति अने उत्कृष्ट अनन्त काळ सुधी होय छे. ते अनन्त काळनी प्ररूपणा काळथी अने क्षेत्रथी एम बे प्रकारनी छे. तेमां काळथी अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी छे. उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीनुं प्रमाण नन्दिसूत्रनी टीकाथी जाणी लेवुं. कारण के त्यां सविस्तर कहेलुं छे. क्षेत्रथी अनन्त लोक प्रमाण छे. तात्पर्य ए छे के अनन्त लोकाकाशमां प्रतिसमय एक एक प्रदेशनो अपहार करतां एटले असत्कल्पनाथी एक एक आकाशप्रदेश लेतां जेटला काळे खाली थाय तेटलो अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी तिर्यंच तिर्यंचपणे रहे छे. एज काळना परिमाणने पुद्गलपरावर्तनी संख्या वडे निरू-

अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तिरिक्खजोणियपज्जत्तए णं भंते ! तिरिक्ख-

होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम सुधी होय. हे भगवन्!

पण करे छे—पुद्‌गलपरावर्तनी गणना वडे 'असंख्याता पुद्गलपरावर्त काळ होय छे' 'पुद्गलपरावर्तनुं स्वरूप पण

१ पुद्‌गलोनुं परमाणुओनुं परावर्त—औदारिकादि शरीररूपे के विवक्षित एक शरीर रूपे परिणमन जेटला काळे थाय ते पुद्‌गलपरावर्त कहेवाय छे आ तो व्युत्पत्तिमात्र छे, परन्तु तेना वाच्यार्थ तो अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप काळनुं प्रमाण छे तेथी क्षेत्रपुद्‌गलपरावर्तादिमां पुद्‌गलोनुं परावर्त-परिणमन नहि होवा छतां तेनुं प्रवृत्तिनिमित्त—वाच्यार्थ अनन्त उत्सर्पिणीअवसर्पिणी रूप काळ होवाथी तमां प्रवर्ततो पुद्‌गलपरावर्त शब्द अविरुद्ध छे ते पुद्‌गल परावर्तना चार प्रकार छे—द्रव्य पुद्‌गलपरावर्त, क्षेत्र पुद्‌गलपरावर्त, काळ पुद्‌गलपरावर्त अने भाव पुद्‌गलपरावर्त. ते प्रत्येकना बबे प्रकार छे—बादर अने सूक्ष्म तमां प्रथम सूक्ष्म अने बादर द्रव्य पुद्‌गल परावर्तनुं स्वरूप कहे छे—आ संसारमां परिभ्रमण करतो एक जीव संसारवर्ती बधा परमाणुओने जेटला काळे औदारिकादि शरीररूपे ग्रहण करी मूके तेटला काळ बादर द्रव्यपुद्‌गल परावर्त कहेवाय छे तात्पर्य ए छे के एक जीव जेटला काळमां जगद्वर्ती सर्व परमाणुओने यथासंभव औदारिक, वैक्रिय, तैजस, कार्मण, भाषा, श्वासोच्छ्वास के मन रूपे ग्रहण करीने त्याग करे तेटला काळने बादर द्रव्य पुद्‌गलपरावर्त कहे छे. अने जेटला काळे औदा-रिकादि कोईपण एक शरीररूपे जगतमां रहेला सर्व परमाणुओने ग्रहण करीने मूके तेटला काळने सूक्ष्म द्रव्यपुद्‌गल परावर्त कहे छे. (आ संबंधे नवीन शतकना टीकाकार देवेन्द्रसूरिए औदारिकादि सात वर्गणामांथी कोई पण एक वर्गणारूपे सर्व पुद्‌गलोने ग्रहण करवानुं कह्युं छे) आ सूक्ष्म द्रव्य पुद्‌गलपरावर्तमां विवक्षित एक शरीर सिवाय अन्य शरीररूपे पुद्‌गलो ग्रहण करीने त्याग करे ते गणातां नथी, परन्तु केटलोएक काळ गया पछी पुन तेज शरीरे रूपे परिणाम पामे त्यारे गणाय छे हवे बादर अने सूक्ष्म क्षेत्र पुद्‌गलपरावर्त कहे छे—एक जीव जेटला काळे लोकाकाशना सर्व प्रदेशो अनुक्रमे के अनुक्रम सिवाय मरण वडे स्पर्श करे तेटलो काळ बादर क्षेत्र पुद्‌गलपरावर्त कहेवाय छे अने एक जीव जेटला काळे लोकाकाशना सर्व प्रदेशो अनुक्रमे मरण वडे स्पर्श करे तेटला काळने सूक्ष्म क्षेत्र पुद्‌गलपरावर्त कहेवामां आवे छे. यद्यपि जीवनी जघन्य अवगाहना पण असंख्याता प्रदेशरूप छे, तो पण विवक्षित लोकाकाशना कोई भागमां मरणने प्राप्त

थाय त्यारे एक आकाश प्रदेशनी विवक्षा कराय छे, ते पछी बीजा प्रदेशोमां मरण पामे तेनी गणना थती नथी, परन्तु अनन्त काळ गया पछी पूर्वना प्रदेशनी अनन्तर–पासे रहेला प्रदेशमां मृत्यु थाय त्यारे तेनी गणना थाय छे, आ प्रमाणे अनुक्रमे सर्व लोकाकाशना प्रदेशो मरण वडे स्पर्श करता जेटलो काळ थाय ते सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गलपरावर्त. एक जीवने काळचक्र—उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना सर्व समयो अनुक्रमे के अनुक्रम सिवाय मरण वडे स्पर्श करता जेटलो काळ लागे ते बादर काळ पुद्गलपरावर्त अने पहेलो समय, बीजो समय, त्रीजो समय एम अनुक्रमे मरण वडे काळचक्रना सर्व समयोने स्पर्श करता जेटलो काळ थाय ते सूक्ष्म काळ पुद्गलपरावर्त. जेमके आ उत्सर्पिणीना प्रथम समये कोई जीव मृत्यु पाम्यो, त्यार पछी समय न्यून वीश कोडाकोडी सागरोपम व्यतीत थया पछी फरी वार तेज उत्सर्पिणीना बीजा समये मरण पामे त्यारे बीजो समय मरण वडे स्पर्श करायेलो कहेवाय, ते सिवाय बाकीना समयो मरण वडे स्पर्श कराया छतां गणाता नथी, एटले ते उत्सर्पिणीना बीजा समये मरण न पामतां ते सिवाय अन्य समयोमां मरण पामे ते पण न ग्रहण कराय, परन्तु अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी गया पछी पण उत्सर्पिणीना बीजा समयेज मरण पामे त्यारे ते समय गणाय. एम अनुक्रमे मरण वडे बधाय उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयो स्पर्श करता जेटलो काळ थाय ते सूक्ष्म काळ पुद्गलपरावर्त कहेवाय छे. अनुभागबन्धना कषायोदयरूप असंख्याता लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण असंख्याता अध्यवसाय स्थानको छे. ते बधा अध्यवसाय स्थानकोमां जेटला काळे एक जीव क्रम वडे के क्रम सिवाय वर्ततो मरण पामे तेटला काळने बादर भाव-पुद्गलपरावर्त कहे छे. अने ते बधा अध्यवसाय स्थानोमां अनुक्रमे मरण पामता जेटलो काळ लागे ते सूक्ष्म भावपुद्गलपरावर्त कहेवाय छे. तात्पर्य ए छे के कोई प्राणी सौथी जघन्य कषायोदयरूप अध्यवसायस्थाने मरण पामे, त्यार पछी ते प्राणी अनन्त काळ गया पछी पण ते पहेलाना बीजा अध्यवसायस्थाने मरण पामे ते गणाय, ते सिवायना बीजा अध्यवसायस्थाने अनन्त वार मरण पामे ते न गणाय, त्यार पछी त्रीजा अध्यवसायस्थाने मरण पामे एम क्रमपूर्वक मरण पामतां बधा अध्यवसाय स्थानोने स्पर्श करतां जेटलो काळ थाय ते सूक्ष्म भाव पुद्गल परावर्त कहेवाय छे. अहीं बादर पुद्गलपरावर्तनी प्ररूपणा सूक्ष्म पुद्गलपरावर्तनुं स्वरूप सुख-पूर्वक समजाववा माटे छे, परन्तु आगममां कोईपण स्थळे तेनुं प्रयोजन बताव्युं नथी. अहीं चारे पुद्गलपरावर्तना परमार्थथी कंइपण विशेषता नथी, (कारण के पुद्गलपरावर्तनो लक्ष्यार्थ अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप नियत काळ छे,) तो पण जीवाभिगमादि सूत्रमां बहुधा क्षेत्रपुद्गलपरावर्तनुं ग्रहण करवामां आव्युं छे. कारण के क्षेत्रने आश्रयी मार्गणामां तेनुं ग्रहण छे. ते आ प्रमाणे—"जे सादि सपर्यवसित–सांत मिथ्यादृष्टि छे, ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी अने उत्कृष्ट अनन्त

जोणियपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतो-

तिर्यंचयोनिक पर्याप्त 'तिर्यंचयोनिक पर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अन्तर्मु-

संग्रहनी टीकामां सविस्तर कह्यु छे त्यांथी जाणी लेवु अहीं ग्रन्थ वधी जवाना भयथी कहेता नथी असंख्याता पण केटला पुद्गलपरावर्तों छे ? आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे, एटले आवलिकाना असंख्यातमा भागना जेटला समयो थाय तेटला प्रमाण असंख्याता पुद्गलपरावर्तों छे आ कायस्थितिनु परिमाण वनस्पतिनी अपेक्षाए समजवु, पण बाकीना तिर्यंचनी अपेक्षाए न समजवु कारण के वनस्पति सिवाय बाकीना तिर्यंचोने एटली कायस्थितिनो संभव नथी 'तिरिक्खजोणिणी णं भंते' !–हे भगवन् ! तिर्यंच स्त्री तिर्यंचस्त्रीपणे केटला काळ सुधी होय–इत्यादि अहीं अने पछीना सूत्रमां जघन्य अन्तर्मुहूर्तनो विचार पूर्वे कहेल अन्तर्मुहूर्तनी माफक पोताने अनुसारे स्पष्ट करवो उत्कृष्ट पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक त्रण पल्योपम छे केवी रीते छे ? आ प्रमाणे छे–अहीं संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्योने उत्कर्षथी पण आठ भवनी कायस्थिति छे कारण के "नरतिरियाण सत्त-ट्ठ भवा"–मनुष्य अने तिर्यंचोने सात आठ भवनी कायस्थिति छे–एवु शास्त्र वचन छे तेमां उत्कृष्ट कायस्थितिनो विचार होवाथी आठे भवो यथासंभव उत्कृष्ट स्थितिवाळा ग्रहण करवा, असंख्याता वरसना आयुषवाळो मरीने अवश्य देवलोकमां उत्पन्न थाय छे, पण तिर्यंचमां उत्पन्न थतो नथी माटे पूर्वकोटीना आयुषवाळा सात भवो अने छेल्लो आठमो भव देवकुरु वगेरेनो जाणवो एम पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक त्रण पल्योपम थाय छे 'एवं मणुस्से वि, मणुस्सी वि'–जेम तिर्यंचस्त्रीने जे प्रमाणे कह्यु छे ते प्रमाणे मनुष्य अने मानुषी स्त्री संबन्धे कहेवु तात्पर्य ए छे के–मनुष्यसूत्रमां अने मानुषीना सूत्रमा जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक त्रण पल्यो

काळ, काळथी अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पर्यन्त अने क्षेत्रथी कंईक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त पर्यन्त होय छे." तेथी अहीं पण क्षेत्रपुद्गलपरावर्त ग्रहण करवुं जुओ पंचसंग्रह गाथा ३८–४१ नी टीका

मुहुत्तूणाइं । एवं तिरिक्खजोणिणिपज्जत्तियावि, एवं मणुस्सेवि, मणुस्सीवि एवं चेव। देवपज्जत्तए जहा नेरइयपज्जत्तए। देवीपज्जत्तिया णं भंते! देवीपज्जत्तियत्ति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं दस वाससह-

हूर्त न्यून त्रण पल्योपम सुधी होय. ए प्रमाणे पर्याप्त तिर्यंचस्त्री संबंधे पण जाणवुं. मनुष्य अने मानुषी संबंधे पण एमज समजवुं. जेम पर्याप्त नैरयिकने कह्युं तेम पर्याप्त देवने जाणवुं. हे भगवन्! पर्याप्त देवी 'पर्याप्त देवी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम!

पमनी कायस्थिति कहेवी. सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे'-मणुस्से णं भंते! मणुस्स त्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं। मणुस्सी णं भंते! मणुस्सित्ति कालओ केवच्चिरं होइ'—इत्यादि. हे भगवन्! मनुष्य 'मनुष्य' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक त्रण पल्योपम होय. हे भगवन्! मानुषी स्त्री 'मानुषी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक त्रण पल्योपम होय. देव सूत्रमां 'जहेव नेरइए'-जेम नैरयिक संबन्धे पूर्वे कह्युं तेम देवसंबन्धे पण कहेवुं. देवने पण जघन्यथी दस हजार वरस अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी कायस्थिति कहेवी. कारण के देवो पोताना भवथी च्यवीने पुनः तरतज देवपणे उत्पन्न थता नथी. 'न देवो देवेसु उववज्जइ'—देव देवमां उत्पन्न थता नथी-एवुं शास्त्रवचन छे. तेथी देवोनी पण जे भवस्थितिनुं परिमाण छे तेज कायस्थितिनुं पण छे. देवीसूत्रमां उत्कृष्ट पंचावन पल्योपमनी कायस्थिति छे, कारण के देवीओनी उत्कृष्ट भवस्थिति पण एटलीज छे. आ कथन ईशान देवीनी अपेक्षाए समजवुं. ए सिवाय बीजे देवीनी एटली स्थितिनो संभव नथी. सिद्धसूत्रमां सादि अनन्त कायस्थिति छे, कारण के सिद्धत्व-पर्यायना क्षयनो संभव नथी. सिद्धपणाथी दूर करवाने रागादि समर्थ छे, अने ते भगवान् सिद्धने नथी, केमके रागादिना निमित्तभूत कर्मपरमाणुओनो अभाव छे अने तेना अभावनुं कारण तेनो मूळथी नाश कर्यो छे.

हवे एटला नैरयिकादिनो पर्याप्त अने अपर्याप्त विशेषणद्वारा विचार करे छे—'नेरइए णं भंते'! इत्यादि. हे भगवन्! अपर्याप्त-

स्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । दार २।

जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दस हजार वर्ष अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून पंचावन पल्योपम सुधी होय. द्वार २.

अपर्याप्तपणाना पर्यायसहित नैरयिक काळने आश्रयी निरंतर केटला काळ सुधी होय ? भगवान् उत्तर आपे छे-'हे गौतम' इत्यादि अहीं अपर्याप्तावस्था जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण छे त्यार पछी नैरयिकोने अवश्य पर्याप्तावस्था प्राप्त थाय छे ते माटे कह्यु छे के 'जहन्नेण वि अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्त'-जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त छे अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त छे ए प्रमाणे—नैरयिकोने कह्या प्रमाणे अपर्याप्ता तिर्यंचथी आरंभी अपर्याप्त देवीसूत्र सुधी कहेवु तेमां तिर्यंचो अने मनुष्यो जो के अपर्याप्ता ज मरीने वारंवार अपर्याप्तपणे उत्पन्न थाय छे तो पण तेओनी अपर्याप्तावस्था निरंतर वधारेमां वधारे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण ज होय छे ते लब्धि आगळ कहेवामां आवशे के 'अपज्जत्तए णं भंते ! 'अपज्जत्तए'त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त'।-हे भगवन् ! अपर्याप्त 'अपर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त होय देव अने देवीना सूत्रमां अन्तर्मुहूर्तनो विचार नैरयिकनी पेठे करवो 'नेरइयपज्जत्तए णं भंते' ! इत्यादि हे भगवन् ! पर्याप्त नैरयिक पर्याप्त नैरयिकपणे निरंतर काळने आश्रयी केटला काळ सुधी होय ? भगवान् ! उत्तर आपे छे-हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त न्यून दशहजार वरस सुधी होय, कारण के प्रथमनु अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्तावस्थामां गयेलु छे अने आज कारणथी उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम सुधी होय तिर्यंचसूत्रमां जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तनो विचार पूर्वनी पेठे जाणवो अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त न्यून त्रण पल्योपम जाणवा आ उत्कृष्ट आयुष्यवाळा देवकुरु आदि क्षेत्रमां उत्पन्न थनारा तिर्यंचोने आश्रयी जाणवु ते सिवाय बीजाने एटला काळपर्यन्त पर्याप्तावस्था निरंतर होती नथी अहीं पण प्रथम अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्तावस्थामां गयेलु होवाथी अन्तर्मुहूर्त न्यून समजवु ए प्रमाणे तिर्यंचणी, मनुष्य अने मानुषीसूत्र संबन्धे पण जाणवु देव अने देवीना सूत्रमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी कायस्थितिनु परिमाण पूर्वे कहेलु अपर्याप्तावस्थाना अन्तर्मुहूर्त हीन जाणवु गतिद्वार समाप्त

३. सइंदिए णं भंते! सइंदिएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा! सइंदिए दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए। एगिंदिए णं भंते! एगिंदिएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो। बेइंदिए णं भंते! बेइंदिएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ?

३. हे भगवन्! सेन्द्रिय (इन्द्रिय सहित) जीव 'सेन्द्रिय' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! सेन्द्रिय बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. हे भगवन्! एकेन्द्रिय 'एकेन्द्रिय' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काल—वनस्पति काळ सुधी होय. हे भगवन्! बेइन्द्रिय 'बेइन्द्रिय' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय?

३. 'सइंदिए णं भंते'! इत्यादि. इन्द्रिय सहित होय ते सेन्द्रिय. इन्द्रियो बे प्रकारनी छे—द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय. भावेन्द्रियना पण बे प्रकार छे—लब्धीन्द्रिय अने उपयोगेन्द्रिय. तेमां लब्धिरूप इन्द्रिय लेवी, कारण के ते विग्रहगतिमां पण होय छे अने इन्द्रियपर्याप्तिने पण होय छे. तेथी उत्तरसूत्र घटी शके छे, नहि तो ते न घटी शके. उत्तरसूत्र कहे छे—'हे गौतम'! इत्यादि. अहीं जे संसारी छे ते अवश्य सेन्द्रिय होय छे. अने संसार अनादि छे, माटे सेन्द्रिय अनादि छे. तेमां पण जे कोइ पण काळे सिद्ध नहि थाय ते अनादि अनन्त छे, कारण के तेने सेन्द्रियपणाना पर्यायनो कदापि अभाव थतो नथी. जे सिद्ध थशे तेनी अपेक्षाए अनादि सान्त छे, कारण के मुक्ति अवस्थामां सेन्द्रियपणाना पर्यायनो अभाव थाय छे. एकेन्द्रिय सूत्रमां जे कह्युं छे के 'उक्कोसेणं अणंतं कालं'—उत्कृष्ट अनन्त काळ छे, ते अनन्तकाळनुं विशेषपणे निरूपण करे छे—'वणस्सइकालो'—जेटलो वनस्पतिनो काळ होय छे, जे आगळ कहेवामां आवशे तेटला काळ सुधी एकेन्द्रियपणे रहे. कारण के वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय छे, माटे एकेन्द्रिय पदमां तेनुं पण ग्रहण थाय छे. ते वनस्पतिकाळ आ प्रमाणे छे—काळथी अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, क्षेत्रथी अनन्त लोक, अथवा असंख्याता पुद्गल-

गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । एवं तेइंदियचउरिंदिएवि । पंचिंदिए णं भंते ! पंचिंदिएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं साइरेगं । अणिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अपज्जवसिए । सइंदियअपज्जत्तएणं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो-

हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी संख्यातो काळ होय. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय संबंधे जाणवु. हे भगवन्! पंचेन्द्रिय 'पंचेन्द्रिय' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कांइक अधिक हजार सागरोपम सुधी होय. अनिन्द्रिय संबंधे पृच्छा. हे गौतम! सादि अनन्त काळ होय. हे भगवन् ! सेन्द्रिय अपर्याप्ता सेन्द्रिय अपर्याप्ता रूपे काळने आश्रयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. ए प्रमाणे पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता सुधी

परावर्त जाणवा' अने ते असंख्याता पुद्गलपरावर्तो आवलिकाना असंख्यातमा भाग प्रमाण छे. बेइन्द्रियसूत्रमां संख्यातो काळ एटले संख्याता हजार वरसो जाणवा. कारण के 'विगलिंदियाण य वाससहस्सा संखिज्जा'-विकलेन्द्रियोने संख्याता हजार वरसो होय छे' एवुं आगमनुं वचन छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय संबंधे सूत्र कहेवु. त्यां पण जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी संख्यातो काळ कहेवो ए भावार्थ छे. अने संख्यातो काळ संख्याता हजार वरस रूप जाणवो. पंचेन्द्रियसूत्रमां उत्कर्षथी कांइक अधिक हजार सागरोपम प्रमाण छे अने ते नारक, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य अने देवभवमां भ्रमण करवा वडे जाणवो, तेथी अधिक काळ होतो नथी, कारण के एटलोज काळ केवलज्ञानीए जाणेलो छे. अनिन्द्रिय एटले द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय रहित, ते सिद्ध छे. अने सिद्ध सादि अनन्त काळ पर्यन्त छे, तेथी 'साइए अपज्जवसिए'-सादि अनन्त काळ कह्यो छे. 'सइंदियअपज्जत्तए णं'-इत्यादि. अहीं अपर्याप्ता लब्धि अने करणनी अपेक्षाए जाणवा. कारण के बन्ने प्रकारे अपर्याप्त पर्याय जघन्यथी के उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त प्रमाण छे. ए

मुहुत्तं । एवं जाव पंचिदियअपज्जत्तए । सइंदियपज्जत्तए णं भंते ! सइंदियपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं । एगिंदियपज्जत्तए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं । बेइंदियपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जवासाइं । ते दियपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं

जाणवुं. हे भगवन्! सेन्द्रिय पर्याप्त 'सेन्द्रिय पर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कांइक अधिक शतपृथक्त्व (बसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! पर्याप्त एकेन्द्रिय संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता हजार वरसो सुधी होय. बेइन्द्रिय पर्याप्ता संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट सङ्ख्याता वरसो सुधी होय. तेइन्द्रिय पर्याप्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी

प्रमाणे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सुधी कहेवुं. अने ते सुगम होवाथी स्वयं विचारवुं. अहीं अनिन्द्रिय संबन्धे न कहेवुं. कारण के ते पर्याप्त अने अपर्याप्त रूप विशेषण रहित छे. 'सइंदियपज्जत्तए णं भंते'! इत्यादि. अहीं पर्याप्त लब्धिनी अपेक्षाए जाणवो अने ते पर्याप्तपणुं विग्रह गतिमां पण करण अपर्याप्ताने पण संभवे छे, तेथी 'उत्कर्षथी कंइक अधिक बसोथी नवसो सागरोपम सुधीनो काळ होय छे' ए उत्तर घटे छे. अन्यथा करणपर्याप्तपणानो काळ उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त न्यून तेत्रीश सागरोपम प्रमाण होवाथी पूर्वोक्त उत्तर घटी शकतो नथी. ए प्रमाणे उत्तर सूत्रमां पर्याप्तपणुं लब्धिनी अपेक्षाए जाणवुं. एकेन्द्रिय पर्याप्तसूत्रमां संख्याता हजार वरस जाणवा, कारण के एकेन्द्रिय पृथिवीकायनी उत्कर्षथी बावीश हजार वरसनी भवस्थिति छे, अप्कायनी सात हजार वर्ष, वायुकायनी त्रण हजार वर्ष अने वनस्पतिकायनी दस हजार वरसनी छे. तेथी केटलाएक निरन्तर पर्याप्त भवोनी संकलना घटे संख्याता हजार वरसो घटे

संखेज्जाइं राइंदियाइं । चउरिंदियपज्जत्तए णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा। पंचिंदियपज्जत्तए णं भंते ! पंचिंदियपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं ।

४. सकाइए णं भंते ! सकाइएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणा-

सङ्ख्याता दिवसो होय. हे भगवन्! चउरिन्द्रिय पर्याप्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता मास पर्यन्त होय. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय पर्याप्त 'पंचेन्द्रिय पर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी शतपृथक्त्व (बसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय. द्वार ३.

४. हे भगवन् ! सकायिक (सशरीरी) जीव 'सकायिक' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सकायिक जीव बे प्रकारना

छे बेइन्द्रिय पर्याप्त सूत्रमां सख्याता वरसो होय छे, कारण के बेइन्द्रियनु उत्कर्षथी भवस्थितिनु परिमाण बार वरस छे, पण सर्वे भवोमां उत्कृष्ट स्थितिनो संभव नथी, तेथी केटलाएक निरंतर पर्याप्तना भवोनी सकलना वडे पण सख्याता वरसोज होय छे, पण सख्याता सेंकडो के सख्याता हजार वरसो होता नथी तेइन्द्रिय पर्याप्तना सूत्रमा सख्याता दिवसो छे, कारण के तेनी भवस्थिति उत्कर्षथी पण ओगण पचास दिवस प्रमाण होवाथी केटलाक निरंतर पर्याप्तना भवोनी सकलना वडे सख्याता दिवसो ज थाय छे चउरिन्द्रियपर्याप्तना सूत्रमां सख्याता मास छे, कारण के तेओनी भवस्थिति उत्कर्षथी छ मास प्रमाण होवाथी केटलाएक निरंतर पर्याप्तना भवना काळनी सकलना करता छता पण सख्याता महीनाओ ज थाय छे पचेन्द्रियसूत्र सुगम छे ३ इन्द्रियद्वार समाप्त

४ हवे कायद्वार कहे छे—'हेभगवन्! सकायिक' इत्यादि कायवडे सहित होय ते सकाय अहीं आर्ष होवाथी स्वार्थमा एक

इए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवाससमब्भहियाइं । अकाइए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अकाइए सादिए अपज्जवसिए । सकाइयअपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, एवं जाव तसकाइयअपज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जह-

छे. ते आ प्रमाणे—अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. अने तेमां जे अनादि सान्त छे,तेनी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कर्षथी संख्याता वर्ष अधिक बे हजार सागरोपमनी कायस्थिति छे. हे भगवन् ! अकायिक (शरीर रहित) संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अकायिक सादि अनन्त छे. सकायिक अपर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त छे. ए प्रमाणे त्रसकायिक अपर्याप्ता सुधी जाणवुं, स-

प्रत्यय थयो छे, तेथी सकायिक थाय छे. काय-शरीर, तेना औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस अने कार्मणना भेदथी पांच प्रकार छे. तेमां अहीं तैजस अथवा कार्मण शरीर समजवुं, कारण के ते संसार पर्यन्त निरंतर होय छे. जो एम न मानीए तो विग्रहगतिमां वर्तता अने शरीर पर्याप्ति वडे अपर्याप्ताने यावत् शरीरनो असंभव होवाथी तेओने अकायिक कहेवाय. अने जो एम थाय तो उत्तर सूत्रमां कहेला तेना बे प्रकार न घटी शके. हवे उत्तर सूत्र कहे छे—'सकाइए दुविहे पन्नत्ते' 'सकायिक बे प्रकारना छे'—इत्यादि. तेमां जे संसारनो पार नहि पामे, अन्त नहि करे ते अनादि अनन्त, कारण के तेनी काय-तेजस-कार्मणशरीर निरंतर होवाथी तेनो कदि व्यवच्छेद नहि थाय. जे मोक्षने प्राप्त करशे ते अनादि सान्त, कारण के मोक्ष अवस्थामां तेना शरीरनो सर्वथा परित्याग थशे. पृथिवी, अप्, तेजस्, वायु अने वनस्पति सूत्रो सुगम छे, कारण के बीजे स्थळे पण तेनो अर्थ प्रसिद्ध छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

असंखोसप्पिणिओसप्पिणीओ एगिंदियाण उ चउण्हं । ता चेव उ अणंता वणस्सइए उ बोद्धव्वा ॥

न्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं । पुढविकाइए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा ।

कायिक पर्याप्त संबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कइक अधिक शतपृथक्त्व (बसोथी नवसो) सागरोपम समजवा. पृथिवीकायिक संबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट असंख्यातो काळ, काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी, अने क्षेत्रथी असंख्याता लोक जाणवा ए प्रमाणे अप्कायिक, तेजस्कायिक अने वायुकायिक पण समजवा. वन-

पृथिवीकायिकादि चारे एकेन्द्रियोनी असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी कायस्थिति छे अने वनस्पतिनी अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी कायस्थिति जाणवी

(प्र०)—जो वनस्पतिनी कायस्थिति असंख्याता पुद्गलपरावर्त छे, तो सिद्धान्तमा जे कहेवाय छे के-'मरुदेवानो जीव अनादिकाळ पर्यन्त वनस्पतिरूपे हतो ते केम घटी शके ? अथवा वनस्पतिनुं अनादिपणुं पण शी रीते होइ शके ? कारण के वनस्पतिपणानो काळ प्रतिनियत प्रमाण होवाथी अनादिपणानी साथे तेनो विरोध छे ते आ प्रमाणे—असंख्याता पुद्गलपरावर्तो तेओनी कायस्थितिनुं प्रमाण छे तेथी पछी काळ गया पछी अवश्य बधा वनस्पतिना जीवो पोतानी कायनुं परावर्तन करे, जेम देव वगेरे पोतपोताना स्थितिकाळने अन्ते देवादि कायनुं परावर्तन करे छे ए सम्बन्धे कह्युं छे के—

जइ पुग्गलपरियट्टा संखाईया वणस्सईकाओ । तो अप्पत्तवणस्सइणमणाइयत्तमहेऊओ ॥
न य मरुदेवाजीवो नाकज्जो वणस्सई आसी । जमसंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा तस्स ठवणाए ॥
कालेणेवइएण जम्हा कुव्वंति कायपरावट्टं । सव्वे वि वणस्सइणो ठिइकालंते जह सुराई ॥ [विशेषणवती गा ४६-४८.]

एवं आउतेउवाउकाइयावि । वणस्सइकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणिओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पुग्गलपरियट्टा, ते णं पुग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो । पुढविकाइए पज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं

स्पतिकायिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनंत काळ, काळथी अनन्त उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी अने क्षेत्रथी अनन्त लोक, असंख्याता पुद्गलपरावर्त अने ते आवलिकाना असंख्यातमा भागे समजवा. पृथिवीकायिक पर्याप्ता संबंधे पृच्छा.

जो असंख्याता पुद्गलपरावर्तो वनस्पतिनो काळ छे, तो अत्यन्त–अनादि वनस्पतिओनुं अनादिपणुं निर्हेतुक छे. एटले तेना अनादिपणामां कांइपण हेतु नथी. मरुदेवानो जीव जीवनपर्यन्त वनस्पति हतो एम घटतुं नथी. कारण के असंख्याता पुद्गलपरावर्त काळ त्यां तेनी स्थिति छे. तेथी एटला काळे बधा वनस्पति जीवो देव वगेरेनी पेठे पोतानी कायनुं परावर्तन करे. वळी वनस्पतिनुं निर्लेप–तद्दन खाली थवानुं आगममां निषेध्युं छे तेनो पण अत्यारे प्रसंग थशे. केवी रीते थशे ? अहीं वनस्पतिथी प्रतिसमय असंख्याता जीवो उद्वर्ते छे, अने वनस्पतिनुं कायस्थितिनुं परिमाण असंख्याता पुद्गलपरावर्तो छे, तेथी असंख्याता पुद्गलपरावर्तोना जेटला समयो थाय ते वडे एक समये नीकळेला जीवोने गुणीए अने जेटला थाय तेटलुं परिमाण वनस्पति जीवोनुं छे. अने तेथी तेओनुं प्रतिनियत परिमाण होवाथी तेनुं निर्लेपन (तद्दन खाली थवुं) सिद्ध थाय छे. वळी प्रतिनियत परिमाण होवाथी जता काळे बधा भव्योनी सिद्धिनो प्रसंग प्राप्त थाय छे. अने तेम थतां मोक्षमार्ग बंध पडवानो प्रसंग उपस्थित थाय छे, कारण के सर्व भव्यो सिद्धिने प्राप्त थया पछी बीजानुं सिद्धिगमन नहि थाय. ए संबन्धे कह्युं छे के—

कायट्ठिइकालेणं तेसिमसंखेज्जयावहारेणं । निल्लेवणमावन्नं सिद्धी वि य सव्वभव्वाणं ॥

पइसमयमसंखेज्जा जेणुव्वट्टंति तो तदभत्था । कायट्ठिईए समया वणस्सईणं च परिमाणं ॥ [विशेष० गा. ४९–५०]

सखेज्जाइं यासससहस्साइं, एवं आऊवि। तेउकाइए पज्जत्तए पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जाइं राइंदियाइं। वाउकाइयपज्जत्तए णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वास-

हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी संख्याता हजार वरसो जाणवा. ए प्रमाणे अप्कायिक पण जाणवा. तेजस्कायिक सबधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी संख्याता दिवसो होय छे. वायुकायिक पर्याप्ता सबधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी संख्याता हजार वर्षो होय छे. वनस्पतिकायिक पर्याप्ता सबधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्त-

कायस्थितिना काळ वडे तेओमा असख्याताने अपहार करता निर्लेपपणु अने सर्व भव्योनी सिद्धि प्राप्त थाय छे कारण के प्रतिसमय असंख्याता नीकळे छे तेथी तेनाथी कायस्थितिना समयोवडे गुणीए एटलु वनस्पति जीवोनु परिमाण छे परन्तु एम नथी, कारण के वनस्पतिओनु अनादिपणु, तेनु खाली न थवु, सर्व भव्योनी सिद्धिनो निषेध अने मोक्षमार्गनु निरन्तरपणु ते ते स्थळे सिद्धान्तमां कहेलु छे (उ०)—अहीं बे प्रकारना जीवो छे—साव्यवहारिक अने असाव्यवहारिक तेमा जेओ निगोदावस्थाथी नीकळी पृथिवीकायि कादिमा उत्पन्न थाय छे ते लोकोमा दृष्टिपथमा आवेला पृथिवीकायिकादि व्यवहारने प्राप्त थाय छे माटे तेओ साव्यवहारिक अथवा व्यवहार राशिना कहेवाय छे जो के तेओ फरीथी पण निगोदावस्थाने प्राप्त थाय छे तो पण तेओ व्यवहारमां पडेला होवाथी साव्यवहारिक ज कहेवाय छे जेओ अनादि काळथी आरंभी निगोदावस्थाने प्राप्त थयेला छे, तेओ व्यवहारमार्गमा नहि आवेला होवाथी असाव्यवहारिक कहेवाय छे एम शाथी जाणी शकाय के 'साव्यवहारिक अने असाव्यवहारिक बे प्रकारना जीवो छे? युक्तिथी जाणी शकाय छे कारण के प्रत्युत्पन्न (वर्तमानकाळे विद्यमान) वनस्पतिना जीवोनु पण निर्लेपन (शून्यपणु) आगममा निषेध्यु छे, तो पछी बधी वनस्पतिओना निर्लेपननी तो शी वात करवी? तेमज बधा भव्यो पण निर्लेप थता नथी जो असाव्यवहा- रिक राशिमा रहेला अत्यन्त-अनादि वनस्पति जीवो न होय तो ते केम घटी शके? तेथी जाणी शकाय छे के—असाव्यवहारिक राशि पण

सहस्साइं । वणस्सइकाइयपज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं । तसकाइयपज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं । दारं ४ ॥

मुहूर्त अने उत्कर्षथी संख्याता हजार वर्षो होय छे. त्रसकायिक पर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कंइक अधिक बसोथी नवसो सागरोपम सुधी होय छे. (द्वार ४).

छे, के जेमां रहेला वनस्पतिना जीवो अनादि छे. वळी आ गाथा पण गुरुपरंपराथी आवेली सिद्धान्तमां प्रसिद्ध छे—

अत्थि अणंता जीवा जेहिं न पत्तो तसाइपरिणामो । ते वि अणंताणंता निगोयवासं अणुवसंति ॥

अनन्ता जीवो छे के जेओए त्रसादिपणुं प्राप्त कर्युं नथी. ते पण अनन्तानन्त जीवो निगोदवासमां रहे छे. ते माटे आ हेतुथी पण असांव्यवहारिकराशि सिद्ध थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

"न य पच्चुप्पन्नवणस्सईणं निल्लेवणं न भव्वाणं । जुत्तं होइ न तं जइ अच्चन्तवणस्सई नत्थि ॥

एवं अणाइवणस्सईणं अत्थित्तमत्थओ सिद्धं । भणइ य इमावि गाहा गुरुवएसाऽऽगया समये" ॥ (वि० ५०-५१) 'अत्थि अणंता जीवा'० इत्यादि. जो अत्यन्त वनस्पति न होय तो प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) वनस्पति जीवो अने भव्योनुं निर्लेपन (अभाव, खाली थवुं) युक्त नथी एम नथी. अर्थात् युक्तिसिद्ध छे. ए प्रमाणे अनादि वनस्पतिकायनुं अस्तित्व अर्थात् सिद्ध थाय छे. गुरुना उपदेशथी आ पण गाथा सिद्धान्तमां आवेली छे. तेथी आ सूत्र सांव्यवहारिक जीवोने आश्रयी जाणवुं, पण असांव्यवहारिक जीवोनी अपेक्षाए न समजवुं. कारण के आ सूत्र विशेष विषयक, छे पण सामान्य विषयक नथी. आ स्वमतिकल्पित नथी. कारण के ए संबन्धे पूज्यपाद जिनभद्र गणिक्षमाश्रमण कहे छे—"तह कायठिईकालादओ विसेसे पडुच्च किर जीवे । नाणाईवणस्सइणो जे संववहारबाहिरिया" ॥ (विशेषण गा० ५१)

तेमज कायस्थितिनो काळ वगेरे विशेष जीवोने आश्रयी कह्युं छे. परन्तु सांव्यवहारराशिथी बहारना अनादि वनस्पतिने आश्रयी

५. सुहुमे णं भंते! सुहुमेत्ति कालतो केवचिरं होति? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा। सुहुमपुढविकाइते सुहुमआउकाइते, सुहुमतेउकाइते, सुहुमवाउकाइते, सुहुमवणप्फइकाइते सुहुमनिगोदेवि जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखिज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीतो कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा। सुहुमे णं भंते! अपज्जत्तएत्ति

---

५. हे भगवन्! सूक्ष्मकायिक 'सूक्ष्म' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी असंख्याती काळ होय. काळने आश्रयी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी अने क्षेत्रने आश्रयी असंख्याता लोक होय. सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक, सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अने सूक्ष्म निगोद पण जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्क-

---

कायु नथी अहीं आदि शब्दथी सर्व जीवोए अनन्तवार श्रुतनो स्पर्श कर्यो छे-इत्यादि जे आ प्रज्ञापना सूत्रमां कहेवामां आवशे अने पूर्वे कह्युं छे तेनुं ग्रहण कर्युं. तेथी कशो दोष नथी. त्रसकायनुं सूत्र स्पष्ट छे. हवे ए पर्याप्त अने अपर्याप्त विशेषण सहित त्रसकायिकादिनो विचार करे छे—'तसकाइयअपज्जत्तए णं भंते'! -हे भगवन्! त्रसकायिक अपर्याप्त ए काळने आश्रयी क्यां सुधी होय-इत्यादि परन्तु तेजःकायसूत्रमां उत्कर्षथी कायस्थिति संख्याता रात्रि-दिवसनी होय छे, कारण के तेजःकायनी उत्कर्षथी पण भवस्थिति त्रण रात्रि-दिवसनी छे, तेथी निरंतर केटलाएक पर्याप्ताना भवना काळनी गणना करतां छतां पण संख्याता दिवसो ज थाय छे, पण सेंकडो वरसो के हजारो वरसो थता नथी.

५. हवे कायद्वारनी अंदर समावेश थतो होवाथी सूक्ष्मकायिकादि जीवोनुं निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—'सुहुमे णं भंते'-इत्यादि. हे भगवन्! सूक्ष्मकायिक 'सूक्ष्म' इति—सूक्ष्मत्व पर्यायसहित निरंतर काळनी अपेक्षाए क्यां सुधी होय?

पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पुढविकाइयआउकाइयतेउकाइयवाउकाइयवणप्फइकाइयाण य एवं चेव, पज्जत्तियाणवि एवं चेव । बादरे णं भंते ! बादरेत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीतो कालओ, खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं । बादरपुढविकाइए णं भंते ! पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीतो । एवं बादरआउक्काइएवि बादरतेउकाइएवि, बादरवाउकाइए वि । बादरवणप्फइकाइते

र्षथी असङ्ख्यातो काळ होय छे. काळने आश्रयी असङ्ख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी सुधी अने क्षेत्रथी असङ्ख्याता लोक प्रमाण होय छे. हे भगवन् ! सूक्ष्म अपर्याप्त 'सूक्ष्म अपर्याप्त' ए रूपे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय. [अपर्याप्त सूक्ष्म] पृथिवीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय संबंधे पण एमज समजवुं. पर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकायिकादिने पण एम ज कहेवुं. हे भगवन् ! बादर जीव 'बादर' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी असङ्ख्यातो काळ, काळने आश्रयी असङ्ख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी अने क्षेत्रथी अंगुलनो असङ्ख्यातमो भाग होय. हे भगवन् ! बादर पृथिवीकायिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम पर्यन्त होय. ए प्रमाणे

भगवान् ! उत्तर आपे छे-'गोयमा ! जहन्नेणं'-हे गौतम ! जघन्यथी इत्यादि. आ पण सूत्र सांव्यवहारिक जीवो संबन्धे जाणवुं. अन्यथा उत्कर्षथी 'असंख्यातो काळ होय'-ए उत्तर कह्यो छे ते घटी शके नहि. कारण के असंव्यवहारराशिमां रहेला सूक्ष्म निगोद जीवोनुं अनादिपणुं पूर्वे सिद्ध कर्युं छे. 'खेत्तओ असंखेज्जा लोगा'-क्षेत्रथी असंख्याता लोक प्रमाण होय. एटले असंख्याता लोकाकाशने विषे

बादर० पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइए णं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीतो। निगोदे णं भंते! निगोएत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्ततो अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टा। बादरनिगोदे णं भंते! बादरनिगोदेत्ति पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीतो। बादरतसकाइए णं

बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक अने बादर वायुकायिक संबधे जाणवुं. बादर वनस्पतिकायिक 'बादर वनस्पतिकायिक' रूपे इत्यादि पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी असंख्यातो काळ, यावत् क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण काळ जाणवो हे भगवन्! प्रत्येकशरीरबादर वनस्पतिकायिक संबधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम सुधी होय. हे भगवन्! निगोद 'निगोद' ए रूपे केटला काळ सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काल—अनन्त उत्सर्पिणी—अवसर्पिणी काळथी, तथा क्षेत्रथी अढी पुद्गलपरावर्त सुधी होय. हे भगवन्! बादर निगोद 'बादर

प्रतिसमय एक एक प्रदेशने ग्रहण करता जेटली उत्सर्पिणी—अवसर्पिणी थाय तेटली असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाण होय छे सूक्ष्म वनस्पतिकाय सूत्र पण पूर्वोक्त युक्तिथी सांव्यवहारिक जीव संबन्धे जाणवु तथा पर्याप्त अने अपर्याप्त सामान्यतः अने पृथिवी कायिकादि विशेषण सहित सूक्ष्म जीवो निरन्तर होय तो जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त काळ पर्यन्त होय, पण ते पछी न होय ते माटे ते विषयना सूत्र समुदायमां पण जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त कह्यु छे बादर सामान्य सूत्रमा असंख्यातो काळ कह्यो छे तेनी विशेषता जणावे छे—'असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी सुधी होय छे' आ काळने आश्रयी परिमाण कह्युं हवे क्षेत्रने आश्रयी

भंते ! बादरतसकाइएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। एतेसिं चेव अपज्जत्तगा सव्वेवि जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। बादरपज्जत्तए णं भंते ! बादरपज्जत्तएत्ति पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं। बादरपुढविकाइयपज्जत्तए णं भंते ! बादर० पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखिज्जाइं वाससहस्साइं। एवं आउकाइएवि। तेउकाइयपज्जत्तए णं भंते ! तेउकाइयपज्जत्तएत्ति पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखिज्जाइं राइंदियाइं। वाउकाइयवणस्सइकाइयपत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइते पुच्छा। गो-

---

निगोद' रूपे इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! बादर त्रसकायिक बादर त्रसकायिक रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता वर्ष अधिक बे हजार सागरोपम सुधी होय. एओना ज अपर्याप्ता बधा जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. हे भगवन् ! बादर पर्याप्त 'बादर पर्याप्त' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कंइक अधिक बसोथी नवसो सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! बादर पृथिवीकायिक पर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता

परिमाण बतावे छे—'अंगुलस्स असंखेज्जइमागो' अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय छे. एटले अंगुलना असंख्यातमा भागे जेटला आकाश प्रदेशो होय, तेमांथी प्रतिसमय एक एक प्रदेशने ग्रहण करतां जेटली असंख्याती उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी थाय तेटली होय छे. (प्र०)—अंगुलनो असंख्यातमो भागमात्र छतां तेमांथी प्रतिसमय एक एक प्रदेश ग्रहण करवामां आवे तो शी रीते असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी थाय ? (उ०)—क्षेत्रनुं सूक्ष्मपणु होवाथी थाय छे. कह्युं छे के—"सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं"।

यमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं। निगोयपज्जत्ते बादरनिगोदपज्जत्तए पुच्छा। गोयमा ! दोण्हवि जहन्नेणं अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं। बादरतसकाइयपज्जत्तए णं भंते ! बादरतसकाइयपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं। दार ४।

५. सजोगी णं भंते ! सजोगित्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा! सजोगी दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणा-

---

हजार वरस सुधी होय ए प्रमाणे अप्कायिक संबंधे पण जाणवुं. हे भगवन् ! तेजस्कायिक पर्याप्त 'तेजस्कायिक पर्याप्त' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता रात्रिदिवस सुधी होय. वायुकायिक, वनस्पति अने प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता हजार वरसो सुधी होय निगोद पर्याप्त अने बादर निगोद पर्याप्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! बन्नेने जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. हे भगवन् ! बादर त्रसकायिक पर्याप्त 'बादर त्रसकायिक पर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कंइक अधिक बसोथी नवसो सागरोपम सुधी होय. ४ द्वार.

५. हे भगवन् ! सयोगी—योगसहित 'सयोगी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सयोगी बे प्रकारना छे. ते आ

–सूक्ष्म काळ छे अने तेथी क्षेत्र वधारे सूक्ष्म छे आ सूत्र बादर वनस्पतिकायनी अपेक्षाए समजवुं कारण के ते सिवाय अन्य बादरनी पटला काळनी स्थितिनो असम्भव छे बाकीना बधा सूत्रो द्वारनी समाप्ति सुधी सुगम छे ४ कायद्वार समाप्त

दीए वा अपज्जवसिते, अणादीए वा सपज्जवसिते । मणजोगी णं भंते! मणजोगित्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं वइजोगीवि। कायजोगी णं भंते! काययोगि० ?गोयमा !

प्रमाणे-अनादि अपर्यवसित (अनन्त) अने अनादि सपर्यवसित (सान्त). हे भगवन्! मनयोगी-मनयोगवाळो 'मनयोगी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. ए प्रमाणे वचनयोगवाळो पण जाणवो. हे भगवन् !

६. हवे योगद्वार कहे छे-'सयोगी णं भंते'! इत्यादि. योग-मन, वचन अने कायानो व्यापार, ते जेओने छे ते योगी—व्यापारवाळा मन, वचन अने काय कहेवाय छे. ते वडे सहित होय ते सयोगी-मन, वचन अने काययोग युक्त आत्मा केटला काळ सुधी होय ? अहीं उत्तर आपे छे-'सयोगी दुविहे पन्नत्ते' इत्यादि. सयोगी बे प्रकारना छे. अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. जेओ कदि मोक्षे जवाना नथी ते हमेशां अवश्य कोइ पण योग वडे सयोगी छे, माटे अनादि अनन्त छे. जेओ मोक्षे जशे ते अनादि सान्त छे. कारण के मुक्तिपर्यायनो प्रादुर्भाव थतां योग पर्यायनो सर्वथा अभाव थाय छे. मनोयोगवाळा सूत्रमां जघन्यथी एक समय होय छे. ज्यारे कोइक जीव औदारिक काययोग वडे प्रथम समये मनने योग्य पुद्गलो ग्रहण करी, बीजा समये मनपणे परिणमावीने मूके अने त्रीजा समये बंध पडे के मरे त्यारे एक समय मनयोगवाळो होय छे. कारण के प्रथम ग्रहण समये औदारिक योगवाळो होय छे, बीजा समये मनोयोगवावाळो होय छे अने त्रीजा समये बंध पडे छे के मृत्यु पामे छे. उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे. कारण के मनने योग्य पुद्गलोने निरंतर ग्रहण करतो अने मूकतो अन्तर्मुहूर्त पछी अवश्य तेवा प्रकारना जीवना स्वभावथीज बंध पडे छे. त्यार पछी फरीथी ग्रहण करे छे अने मूके छे, परन्तु वच्चे सूक्ष्मकाळ होवाथी कदाचित् तेनुं संवेदन थतुं नथी, तेथी उत्कर्षथी पण मनोयोगी अनन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे- 'एवं वइयोगीवि' ए प्रमाणे-मनयोगवाळानी पेठे वचनयोगवाळो पण कहेवो. ते आ प्रमाणे-वइयोगी णं भंते! वइजोगित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तमिति"। हे भगवन् ! वचनयोगवाळो

जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वणप्फइकालो। अजोगी णं भंते! अजोगित्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! सादीए अपज्जवसिते। दारं ५।

कायायोगी 'काययोगी' रूपेकाळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी वनस्पतिकाळ पर्यन्त होय. हे भगवन्! अयोगी 'अयोगी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! सादि अनन्त काळ सुधी होय. ५ द्वार.

'वचनयोगी' ए रूपे काळथी क्या सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त होय तेमां जे प्रथम समये काययोग वडे भाषायोग्य द्रव्य ग्रहण करे छे ते बीजे समये तेने भाषापणे परिणमावीने मूके छे अने पछी त्रीजा समये वध पडे छे अथवा मरे छे माटे एक समय वचनयोगवाळो होय छे आ संबन्धे मूळटीकाकार कहे छे-"पढमसमये काययोगेणं गहियाण भासा दव्वाण बिइयसमये वइजोगेण निसग्गं काऊण उवरमतस्स था एग समओ लब्भइ" इति-प्रथम समये काययोग वडे ग्रहण करेला भाषाद्रव्योने बीजा समये वचन योग वडे मूकीने वध पडनार के मरनारने एक समय वचन योग होय छे, अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी भाषाद्रव्योने निरंतर ग्रहण करतो अने मूकतो पछी वध पडे छे, कारण के तेवो जीवनो स्वभाव छे, माटे उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे काययोगी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त होय छे अहीं बेइन्द्रियादिने वचनयोग पण होय छे अने संज्ञी पचेन्द्रियने मनोयोग पण होय छे तेथी ज्यारे वचनयोग के मनयोग होय छे त्यारे काययोगनुं प्रधानपणुं नथी, कारण के ते बन्ने योगो सादि सान्त छे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी काययोगी होय छे, अने उत्कर्षथी वनस्पतिकाळ पर्यन्त होय छे ते पूर्वे कह्यु छे, कारण के वनस्पतिकायमां केवळ काययोग होय छे, वचनयोग के मनोयोग होतो नथी तेथी बाकीना योगनो असंभव होवाथी तेनी कायस्थिति पर्यन्त निरन्तर काययोग होय छे अयोगी-योगरहित सिद्ध छे, अने ते सादि अनन्त छे माटे अयोगीने सादि अनन्त काळ कहेलो छे ६ योगद्वार.

७. सवेदए णं भंते ! सवेदएत्ति कालओ केवच्चिरं होति? गोयमा ! सवेदए तिविधे पन्नत्ते, तंजहा—अणादीए वा अपज्जवसिते, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीतो कालतो, खेत्ततो अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। इत्थिवेदे णं भंते ! इत्थिवेदेत्ति कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहन्ने-

७. हे भगवन् ! सवेदी 'सवेदी' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सवेदक त्रण प्रकारना छे-१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, अने ३ सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे तें जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काळ-अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी सुधी काळथी होय छे. क्षेत्रथी कंइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त पर्यन्त होय छे. हे भगवन् ! स्त्रीवेदी 'स्त्रीवेदी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! १ एक आदेश-प्रकारथी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एकसो दस पल्योपम. २ बीजा

७. योगद्वार समाप्त थयुं, हवे वेदद्वार कहे छे—'सवेदए णं भंते' ! वेद सहित होय ते सवेद. ते त्रण प्रकारे छे-१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, ३ अने सादि सान्त. तेमां जे उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणिने कदि नहि प्राप्त करे ते अनादि अनन्त, कारण के कदि पण तेना वेदना उदयनो विच्छेद थवानो नथी. जे उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणिने प्राप्त करशे ते अनादि सान्त. कारण के उपश्रेणि के क्षपकश्रेणिनी प्राप्तिमां वेदोदयनो [1]विच्छेद थाय छे. जे उपशमश्रेणि प्राप्त करी त्यां वेदना उदय रहित थइने पुनः उपशमश्रेणिथी पडतो वेदना उदयवाळो थाय छे ते सादि सान्त. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे. ते आ प्रमाणे-अहीं ज्यारे कोइ पण उपशमश्रेणिनें प्राप्त करी त्रणे प्रकारना वेदने उपशमावी वेदोदयरहित थइने पुनः श्रेणिथी पडतो सवेदपणुं प्राप्त करी जलदी उपशमश्रेणि

१. उपशमश्रेणिमां के क्षपकश्रेणिमां नवमा गुणस्थानकना संख्याता भाग गया पछी वेदना उदयनो विच्छेद थाय छे.

णं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसतं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं १, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं २, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं एगं समय, उक्कोसेणं चउदस पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियाइं ३, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं एगं समय, उक्कोसे-

---

एक आदेशथी जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी पूर्वकोटी पृथक्त्व वर्ष अधिक अढार पल्योपम. ३ त्रीजा एक आदेशथी जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक चौद पल्योपम. ४ चोथा एक आदेशथी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी

अने कार्मग्रन्थिक आचार्योना अभिप्रायथी क्षपकश्रेणि प्राप्त थाय अने प्राप्त थइ अन्तर्मुहूर्तमा वेदनो उपशम करे के क्षय करे त्यारे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी वेदसहित होय छे अने उत्कर्षथी अपार्ध—कइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त काल सुधी होय छे कारण के उपशमश्रेणिथी पडेलो वधारेमां वधारे एटला काळ सुधी संसारमां रखडे छे माटे उत्कृष्टथी सादि सान्त सवेदीने उपर कहेला काळनु प्रमाण घटे छे

स्त्री वेदना विषयमां पांच आदेशो छे ते अनुक्रमे जणावे छे-'एगेणं आदेसेणं' इत्यादि तेमा पहेले जघन्यथी समय मात्रनो विचार आ प्रमाणे छे-कोइक स्त्री उपशमश्रेणिमा त्रण वेदनो उपशम करी वेदरहित थइने ते श्रेणिथी पडती स्त्रीवेदनो उदय एक समय अनुभवी बीजे समये काळ करी देवोमा उत्पन्न थाय त्या तेने पुरुषपणु प्राप्त थाय, पण स्त्रीपणु न होय, तेथी ए प्रमाणे जघन्यथी समयमात्र स्त्रीवेद होय छे उत्कृष्ट विचारमा प्रथमादेशनी भावना आ प्रमाणे छे-कोइ जीव पूर्वकोटी आयुष्यवाळी मनुष्य स्त्री के तिर्यंच स्त्रीमा पांच छ भवो अनुभवी ईशान कल्पमा पचावन पल्योपमनी उत्कृष्ट स्थितिवाळी अपरिगृहीता देवीपणे उत्पन्न थाय अने पोताना आयुष्यनो क्षय थवाथी त्यांथी मरण पामी फरीथी पूर्वकोटी आयुष्यवाळी मनुष्य स्त्रीमां के तिर्यंच स्त्रीमां स्त्रीपणे उत्पन्न थाय, फरीथी बीजीवार ईशान देवलोकमां पचावन पल्योपमना उत्कृष्ट आयुष्यवाळी अपरिगृहीता देवीमां देवीपणे उत्पन्न थाय, त्यार पछी

णं पलिओवमसतं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ४, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पलितोवमपुहुत्तं पुव्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ५ । पुरिसवेदे णं भंते ! पुरिसवेदेत्ति० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सा-

पृथक्त्व अधिक सो पल्योपम, ५ अने पांचमा एक आदेशथी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक पल्योपमपृथक्त्व होय. हे भगवन् ! पुरुपवेदी 'पुरुपवेदी' ए रूपे केटला काळ सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कंइक

स्त्रीवेद सिवाय बीजो वेद पामे. ए प्रमाणे पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एकसो दस पल्योपम थाय. अहीं अन्य शंका करे छे के "जो देवकुरु, उत्तरकुरु वगेरेमां त्रण पल्योपमना आयुपवाळी स्त्रीओमां स्त्रीपणे उत्पन्न थाय तो स्त्री वेदनी तेथी अधिक स्थिति पण संभवे तो एटली ज स्थिति केम कही ? (उ०)—ते अयुक्त छे, कारण के अभिप्रायनुं ज्ञान नथी, ते आ प्रमाणे—देवीथी च्यवीने असंख्यात वरसना आयुपवाळी स्त्रीमां उत्पन्न थती नथी. कारण के देवयोनिथी च्यवेलाने असंख्यात वरसना आयुपवाळामां उत्पत्तिनो निषेध करेलो छे. वळी असंख्यात वरसनी आयुपवाळी स्त्री उत्कृष्ट स्थितिवाळी देवीओमां उत्पन्न थती नथी. जेथी मूळ टीककारे कह्युं छे के " जत्तो असंखेज्जवासाउया उक्कोसठिइं न पावंति" इति—जे हेतुथी असंख्यात वरसना आयुपवाळी स्त्री देवोमां उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त करती नथी. माटे उपर कहेली ज उत्कृष्ट स्थिति स्त्रीवेदनी होय छे. बीजा आदेशवादी आ प्रमाणे कहे छे-पूर्वकोटीना आयुपवाळी मनुष्यस्त्री के तिर्यंचस्त्रीमां पांच छ भवो करीने पूर्वे कह्या प्रमाणे ईशान देवलोकमां बे वार उत्कृष्ट स्थितिवाळी देवीमां उत्पन्न थती अवश्य परिगृहीता देवीओमां ज उत्पन्न थाय, पण अपरिगृहीता देवीओमां न उत्पन्न थाय. तेथी तेना मते स्त्रीवेदनी उत्कृष्ट स्थिति पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक अढार पल्योपमनी होय. त्रीजा आदेशवादी आ प्रमाणे कहे छे—सौधर्म देवलोकमां सात पल्योपमना उत्कृष्ट आयुपवाळी परिगृहीता देवीमां बे वार उत्पन्न थाय तेथी तेना मते पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक चौद पल्योपमनी स्त्रीवेदनी स्थिति होय छे. चोथा आदेशवादीना मते-सौधर्म देवलोकमां पचास पल्योपमना उत्कृष्ट आयुपवाळी अपरिगृहीता देवीमां

गरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं । नपुंसगवेए णं भंते ! नपुंसगवेदेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । अवेदए णं भंते ! अवेदएत्ति पुच्छा । गोयमा ! अवेदे दुविधे पन्नत्ते, तंजहा–सादीए वा

अधिक शतपृथक्त्व सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! नपुंसकवेदी 'नपुंसकवेदी' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाळ पर्यन्त होय. हे भगवन् ! अवेदक (वेदरहित) 'अवेदक' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अवेदक

पण पूर्वे कह्या प्रमाणे बे वार देवीपणे उत्पन्न थाय तेथी तेना मते पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक सो पल्योपमनी स्थिति थाय छे पांचमा आदेशवादी आ प्रमाणे कहे छे—अनेक भवमा भ्रमण करता थके स्त्रीवेदनी उत्कृष्ट स्थितिनो विचार करीए तो पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक पल्योपमपृथक्त्वनी स्थिति होय, पण अधिक न होय, ते आ प्रमाणे-पूर्वकोटी वर्षना आयुषवाळी मनुषी के तिर्यंच स्त्रीमां सात भवो करीने आठमा भवे देवकुरु वगेरेमां त्रण पल्योपमवाळी स्त्रीमा स्त्रीपणे उत्पन्न थाय, त्यांथी मरीने सौधर्म देवलोकमां जघन्य स्थितिवाळी देवीमां देवीपणे उत्पन्न थाय अने त्यार पछी ते अवश्य बीजो वेद पामे आ पांच आदेशमांना कोइ पण आदेशना यथार्थपणानो निर्णय अतिशय ज्ञानी के सर्वोत्कृष्ट श्रुतलब्धि संपन्न पुरुषो करी शके अने तेवो भगवान् आर्य श्याम सूरिना समयमां नहोता, केवळ ते काळनी अपेक्षाए जे तेमनाथी पूर्वाचार्यो हता अने तेओए ते काळमा विद्यमान ग्रन्थोनो पूर्वापर विचार करी पोतानी मति प्रमाणे स्त्रीवेदनी स्थितिनी प्ररूपणा करी हती ते बधा पण प्रवचनना ज्ञाता आचार्योना मतोनो आर्य श्यामसूरिए निर्देश कर्यो छे ते प्रावचनिक सूरिओ पण पोताना मतथी सूत्रनो पाठ करता गौतमना प्रश्न अने भगवानना उत्तररूपे कहेता हता तेथी ते प्रमाणे ज सूत्रनी रचना करता आर्यश्यामाचार्ये गौतमने उद्देशी ए प्रमाणे कह्यु छे जो एम न होय तो गौतमनो निर्देश करीने कहेनार भगवंतने विशे संशय पूर्वक कथन घटी शके नहि, कारण के भगवान् सर्व प्रकारना संशयथी रहित छे

पुरुषवेद सूत्रमां जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति छे ज्यारे कोइ जीव अन्य वेदवाळा जीवोथी नीकळी पुरुषवेदमा उत्पन्न थइ

अपज्जवसिए साइए वा सपज्जवसिते । तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिते से जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । दारं ६ ।

बे प्रकारना छे–सादि अनन्त अने सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. (द्वार ६)

त्यां अन्तमुहूर्त पर्यन्त पोतानुं सर्वायुप पुरुं करी बीजी गतिमां अन्य वेदवाळामां उत्पन्न थाय, त्यारे पुरुपवेदनी अन्तर्मुहूर्त जघन्य स्थिति घटे छे. उत्कृष्ट स्थिति तो स्पष्ट छे. नपुंसकवेद सूत्रमां जघन्यथी एक समय स्त्रीवेदनी पेठे जाणवो. उत्कर्षथी वनस्पतिनो काळ समजवो अने ते पूर्वे कह्यो छे. आ सूत्र सांव्यवहारिक जीवोने आश्रयी ज्यारे विचार करीए त्यारे घटी शके छे. ज्यारे असांव्यवहारिक जीवोने आश्रयी विचार करीए त्यारे बे प्रकारनो नपुंसकवेदनो काळ छे. केटलाएकने आश्रयी अनादि अनन्त काळ छे, के जेओ कदि पण सांव्यवहारिक राशिमां आवशे नहि, पण जेओ असांव्यवहारिक राशिथी नीकळी सांव्यवहारिक राशिमां आवशे एवा केटला एक जीवोने आश्रयी अनादि सान्त काळ जाणवो. (प्र०)–शुं असांव्यवहारिक राशिथी पण नीकळी सांव्यवहारिक राशिमां आवे छे, जेथी आवी प्ररूपणा करो छो? (उ०)—आवे छे, ए शी रीते जाणी शकाय? पूर्वाचार्यना उपदेशथी जाणी शकाय छे. ए संबन्धे दुःषम काळ रूपी अंधकारमां निमग्न थयेला जिनप्रवचनना प्रदीप समान भगवान् जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण कहे छे—

"सिज्झंति जत्तिया किर इह संववहारजीवरासीओ । एंति अणाइवणस्सइरासीओ तत्तिया तम्मि" ॥ (विशेषण० गा. ६०)

"जेटला व्यवहारराशिथी सिद्ध थाय छे तेटला अनादि वनस्पतिराशिथी आ संव्यवहार राशिमां आवे छे." वेदरहित जीव बे प्रकारना छे–सादि अनन्त अने सादि सान्त. तेमां जे क्षपकश्रेणि प्राप्त करी वेदरहित थाय ते सादि सान्त छे, कारण क्षपकश्रेणिथी नीचे पडवानुं होतुं नथी. पण जे उपशमश्रेणिने प्राप्त थई वेदोदयरहित थाय छे ते सादि सान्त छे अने ते जघन्यथी एक समय पर्यन्त होय छे. केवी रीते एक समय सुधी छे? ज्यारे एक समय वेदना उदय रहित थइने बीजे समये मरण पामे त्यारे ते मरण समये देवोमां उत्पन्न

प्रज्ञापना सानुवाद ॥११५९॥

८. सकसाई णं भंते ! सकसायित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकसाती तिविधे पन्नत्ते, तंजहा—अणादीए वा अपज्जवसिते, अणादीए वा सपज्जवसिते, सादीए वा सपज्जवसिते, जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं । कोहकसाई णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त, एवं जाव माणमायाकसाती। लोभकसाई ण भंते ! लोभकसाइत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अकसाई

८. हे भगवन् सकषायी (कषाय सहित) 'सकषायी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सकषायी त्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे–१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, अने ३ सादि सान्त. ते यावत् कंइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त सुधी होय छे. हे भगवन् ! क्रोधकषायी–इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. ए प्रमाणे मानकषायी अने मायाक-

थाय अने त्यां पुरुषवेदना उदय वडे वेदसहित होय छे माटे जघन्यथी एक समय अवेदक होय छे उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त छे, कारण के त्यार पछी अवश्य श्रेणिथी पडता वेदनो उदय होय छे वेदद्वार समाप्त.

८. वेदद्वार कह्यु, हवे कषायद्वार कहे छे–तेमां आ प्रथम सूत्र छे–'सकसाई णं भंते' ! इत्यादि सह–विद्यमान छे कषाय जेओने ते सकषाय—जीवना परिणाम विशेष, तेवा परिणाम जेओने छे ते सकषायी—कषायसहित परिणामवाळा जीवो. आ बधु सूत्र पण सवेद सूत्रनी पेठे सामान्यपणे विचारवु कारण के ते समान पाठवाळा घडे कहेलु छे 'कोहकसाई ण भंते' ! इत्यादि क्रोधकषायी जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे कारण के क्रोधकषायनो उपयोग जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त प्रमाण छे कारण के तेवा प्रकारनो जीवस्वभाव छे आ प्रमाणे सूत्र पण क्रोधादिना विशिष्ट उपयोगनी अपेक्षाए छे लोभकषायी जघन्यथी एक समय पर्यन्त होय छे ज्यारे कोइ उपशमक–उपशमावनार उपशमश्रेणिना अन्ते उपशान्त वीतराग थइने श्रेणिथी

१८ काय-स्थिति पद. ॥११५९॥

णं भंते ! अकसायित्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! अकसाथी दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—सादीए वा अपज्जवसिते, सादीए वा सपज्जवसिते । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिते से जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । दारं ७ ।

९. सलेसे णं भंते ! सलेसेत्ति पुच्छा । गोयमा ! सलेसे दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—अणादीए वा अपज्जवसिते,

---

पायी जाणवा. हे भगवन् ! लोभकषायी 'लोभकषायी' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय, अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. हे भगवन् ! अकषायी (कषाय रहित) 'अकषायी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अकषायी बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—सादि अनन्त अने सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. (द्वार ७)

९. हे भगवन् ! सलेश्य (लेश्या सहित) 'सलेश्य' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सलेश्य बे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—

पडतो लोभना अणुओने प्रथम समये वेदतो काळ करीने देवलोकमां उत्पन्न थाय अने त्यां उत्पन्न थतो क्रोधकषायी, मानकषायी के मायाकषायी होय त्यारे एक समय पर्यन्त लोभकषायी होय छे. जो एम छे तो क्रोधादिनो पण काळ एक समय केम न होय ? तेवा प्रकारना जीवस्वभावथी न होय. ते आ प्रमाणे-श्रेणिथी पडतो मायाना अणुओने वेदवाना प्रथम समये, मानना अणुओना वेदवाना प्रथम समये क्रोधना अणुओना वेदवाना प्रथम समये जो काळ करे अने काळ करीने देवलोकमां उत्पन्न थाय तो पण तेवा प्रकारना स्वभावथी जे कषायोदय वडे काळ कर्यो हतो ते कषायोदयने त्यां पण प्राप्त थई अन्तर्मुहूर्त सुधी वेदे. अने ए आ सूत्रना प्रामाण्यथी जणाय छे, माटे क्रोधादिने विषे अनेक समयो होय छे. अकषाय सूत्र अवेद सूत्रनी जेम जाणवुं. कषायद्वार समाप्त थयुं.

९. हवे लेश्याद्वार कहे छे—तेमां आ प्रथम सूत्र छे-'सलेसे णं भंते ! इत्यादि. सलेश्य—लेश्यासहित. ते बे प्रकारना छे-१ अनादि अनन्त

अणादीए वा सपज्जवसिते । कण्हलेसे णं भंते ! कण्हलेसेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । नीललेसे णं भंते ! नीललेसेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमासंखिज्जइभागमब्भहियाइं । काउलेसे णं

अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो 'कृष्णलेश्यावाळो' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीस सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! नीललेश्यावाळो 'नीललेश्यावाळो' ए रूपे केटला काळ सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक दस सागरोपम सुधी

अने अनादि सान्त तेमां जे कदि पण संसारनो अन्त करवानो नथी ते अनादि अनन्त अने जे संसारनो पार पामशे ते अनादि सान्त 'कण्हलेसे णं भंते' इत्यादि हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो काळने आश्रयी क्यां सुधी होय ? इत्यादि अहीं तिर्यंच अने मनुष्योनी लेश्याद्रव्यो अन्तर्मुहूर्तथी आरंभी पर भवना प्रथम अन्तर्मुहूर्त सुधी रहेला होय छे. तेथी अहीं जघन्य अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति तिर्यंच अने मनुष्यनी अपेक्षाए अने उत्कृष्ट स्थिति देव अने नारकनी अपेक्षाए जाणवी ते विविध प्रकारनी होवाथी अहीं तेनो विचार करवामां आवे छे—तेमां जे अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे ते सातमी नरकपृथिवीनी अपेक्षाए जाणवी कारण के तेमां रहेला नैरयिको कृष्णलेश्यावाळा छे अने तेओनी उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी छे जे पूर्व भवनुं छेल्लुं अने परभवनुं पहेलुं एम बे अन्तर्मुहूर्त छे, ते बन्नेने पण एक अन्तर्मुहूर्त कहेवामां आव्युं छे, कारण के अन्तर्मुहूर्तना असंख्याता भेदो छे ए प्रमाणे बीजे स्थळे पण कहेवामां आव्युं छे—"मुहुत्तद्धं तु जहन्ना तित्तीसं सागरा मुहुत्तहिया । उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा कण्हलेसाए" ॥ कृष्णलेश्यानी अन्तर्मुहूर्त जघन्य स्थिति अने मुहूर्ताधिक-अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी. अहीं

पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलितोवमासंखिज्जतिभागमब्भहियाइं। तेउलेसे णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलितोवमासंखिज्जतिभागमब्भहियाइं। पम्हलेसे णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहि-

होय. कापोतलेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक त्रण सागरोपम सुधी होय. तेजोलेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक बे सागरोपम सुधी होय. पद्मलेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक दस सागरोपम सुधी

'मुहुत्तहिया' अन्तर्मुहूर्ताधिक एवी चूर्णिकारे व्याख्या करी छे. नीललेश्या सूत्रमां जे पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक दस सागरोपमनी स्थिति कही छे ते पांचमी नरकपृथिवीनी अपेक्षाए समजवी. कारण के त्यां प्रथम प्रस्तरमां नीललेश्या होय छे, कारण के 'पंचमीए मीसा' पांचमी नरक पृथिवीमां मिश्र-कृष्ण अने नीललेश्या होय छे. एवुं कथन छे. अने तेना पहेला प्रस्तट-पाथडामां उत्कृष्ट स्थिति पटली ज छे. जे पूर्वभवनुं चरम अने परभवनुं आद्य अन्तर्मुहूर्त अधिक छे ते पल्योपमना असंख्यातमा भागमां अन्तर्गत छे माटे तेनी जुदी विवक्षा करी नथी. ए प्रमाणे पछीना सूत्रमां पण जाणवुं. कापोतलेश्या सूत्रमां पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक त्रण सागरोपमनी स्थिति त्रीजी नरकपृथिवीनी अपेक्षाए समजवी. कारण के त्रीजी नरकपृथिवीना पण प्रथम प्रस्तटमां कापोतलेश्या होय छे. कारण के 'तईयाए मीसिया' त्रीजी नरकमां मिश्र-कापोत अने नीललेश्या होय छे एवुं कथन छे. अने तेमां पटलीज उत्कृष्ट स्थितिनो संभव छे. तेजोलेश्यासूत्रमां पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक बे सागरोपमनी स्थिति कही छे ते ईशान देवलोकना देवोनी अपेक्षाए जाणवी, कारण के तेओ तेजोलेश्यवाळा छे अने उत्कर्षथी पटली स्थितिवाळा छे. पद्मलेश्यासूत्रमां अन्तर्मुहूर्त अधिक दस सागरोपमनी स्थिति छे

याइं । सुक्कलेसे णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । अलेसे णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते । दार ८ ।

१०. सम्मदिट्ठी णं भंते ! सम्मदिट्ठित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—

होय. शुक्ललेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपम सुधी होय. लेश्यारहित संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ होय. ९ द्वार.

१०. हे भगवन् ! सम्यग्दृष्टि 'सम्यग्दृष्टि' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—

ते प्रथलोकनी अपेक्षाए समजवी कारण के त्यां देवोनी उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपमनी छे अने पद्मलेश्या छे जे पूर्व भव अने पर भवना बे अन्तर्मुहूर्त छे तेने एक अन्तर्मुहूर्तनी विवक्षा करी अन्तर्मुहूर्त अधिक कह्यु छे शुक्ललेश्यासूत्रमां अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे ते अनुत्तर देवनी अपेक्षाए जाणवी कारण के तेओनी उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपम प्रमाण छे अने अन्तर्मुहूर्त अधिकपणानो विचार पूर्वनी पेठे जाणवो लेश्यारहित अयोगी केवली अने सिद्ध छे, तेथी ते अवस्थामां पण लेश्यारहितपणानो प्रतिषेध नथी माटे सादि अनन्त छे ८ लेश्याद्वार समाप्त

१० हवे सम्यक्त्वद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे 'सम्मदिट्ठी णं भंते' ! इत्यादि सम्यक्-यथार्थ, अविपरित दृष्टि-जिन प्रणीत वस्तुतत्त्वनो बोध जेओने छे ते सम्यग्दृष्टि. ते अन्तरकरणना काळने विषे थवावाळा औपशमिक सम्यक्त्व, सास्वादन सम्यक्त्व, विशुद्ध दर्शनमोहनीयपुंजना उदयथी उत्पन्न थयेला क्षायोपशमिक सम्यक्त्व अथवा संपूर्ण दर्शन मोहनीयना क्षयथी उत्पन्न थयेला क्षायिक सम्यक्त्ववडे सहित होय छे, ते सम्यग्दृष्टि केटला काळ सुधी होय' ? उत्तर-सम्यग्दृष्टि बे-प्रकारे छे ते आ प्रमाणे-

सादीए वा अपज्जवसिते, सादीए वा सपज्जवसिते। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिते से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं साइरेगाइं । मिच्छादिट्ठी णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! मिच्छादिट्ठी तिविधे प-

सादि अनन्त अने सादि सान्त छे. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कांइक अधिक छासठ सागरोपम सुधी होय छे. हे भगवन् ! मिथ्यादृष्टि संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! मिथ्यादृष्टि त्रण प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे–१ अनादि अनन्त, २ अनादि

१ सादि अनन्त अने २ सादि सान्त. तेमां सादि अनन्त ज्यारे क्षायिक सम्यक्त्व उत्पन्न थाय छे त्यारे जाणवो. कारण के क्षायिक सम्यक्त्वनो नाश थतो नथी. जे सादि सान्त छे ते क्षायोपशमिक सम्यक्त्वनी अपेक्षाए जाणवो. तेमां जे सादि सान्त सम्यग्दृष्टि छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे, कारण के त्यार पछी तेने मिथ्यात्वने विषे जवानो संभव छे. उत्कृष्ट कंइक अधिक छासठ सागरोपम सुधी छे. तेमां जो विजयादि चार अनुत्तर देवोमां बे वार सम्यक्त्व सहित उत्कृष्ट स्थितिवाळो देव उत्पन्न थाय, अथवा त्रणवार अच्युत देवलोकमां उत्पन्न थाय तो देवभवो वडे ज छासठ सागरोपम परिपूर्ण थाय छे. अने जे सम्यक्त्वसहित मनुष्यना भवो छे ते वडे अधिक होय छे तेथी अधिक कह्युं छे. ए संबन्धे कह्युं छे के "दो वारे विजयाइसु गयस्स तिन्नच्चुए अहव ताइं । अइरेगं नरभवियं"—बे वार विजयादिमां अने त्रण वार अच्युतमां गयेलाने (छासठ सागरोपम) काळ थाय छे अने तेथी अधिक मनुष्यना भवो जाणवा. 'मिच्छादिट्ठीणं भंते' ! इत्यादि. जेम धतुरो खानार पुरुषने धोळी वस्तुमां पीळी वस्तुनो बोध थाय छे तेम मिथ्या–विपरीत, दृष्टि—जीवादि वस्तुतत्त्वनो बोध जेने छे ते मिथ्यादृष्टि. (प्र०)—कोइ मिथ्यादृष्टि पण भक्ष्यने भक्ष्यरूपे अने पेयने (पीवा लायकने) पेय तरीके, मनुष्यने मनुष्य तरीके अने पशुने पशु तरीके जाणे छे, तो ते मिथ्यादृष्टि केम कहेवाय ? (उ०)—सर्वज्ञ तीर्थंकरमां श्रद्धा नहि होवाथी ते मिथ्यादृष्टि कहेवाय छे. अहीं अरिहंत भगवन्ते कहेला संपूर्ण प्रवचनना अर्थनी रुचि करवा छतां जो तेमांना एक अक्षरनी पण श्रद्धा न करे तो पण ए मिथ्यादृष्टि ज कहेवाय छे. कारण के सर्वज्ञ तीर्थंकरमां तेने श्रद्धा–विश्वास

न्नत्ते, तंजहा—अणाइए अपज्जवसिए वा, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिते से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ का-

सान्त, अने ३ सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काळ. अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळथी अने क्षेत्रथी कइक न्यून अर्धपुद्गलपरावर्त सुधी होय छे. सम्यग्मिथ्यादृष्टि संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त

नथी ए संबन्धे कह्यु छे के "सूत्रमां कहेला एक अक्षरनी पण अरुचि करवाथी मिथ्यादृष्टि थाय छे, कारण के तेने जिनेश्वरे कहेलु सूत्र प्रमाण नथी" तो पछी अरिहंत भगवंते कहेला यथार्थ जीवाजीवादि वस्तुतत्त्वना बोधरहित आत्मा मिथ्यादृष्टि होय तेमां शुं कहेवु? (प्र०)—संपूर्ण प्रवचनना अर्थनी रुचि करवाथी, अने तेमांना कोइ अर्थनी रुचि नहि करवाथी आ न्यायथी ते सम्यग्मिथ्यादृष्टि ज योग्य छे? तो मिथ्यादृष्टि केम कहेवाय? (उ०)—ते बरोबर नथी, कारण के वस्तुतत्त्वनु अज्ञान छे नहीं तो ज्यारे जिने कहेली होवाथी सकल वस्तुतत्त्वनी सम्यक् श्रद्धा करे त्यारे आ सम्यग्दृष्टि छे, अने ज्यारे एक पण वस्तुमां के तेना पर्यायमां बुद्धिनी मन्दता वगेरे कारणथी एकान्त सम्यक् ज्ञान के मिथ्याज्ञानना अभावथी सम्यक् श्रद्धा करतो नथी, तेम एकान्तथी अश्रद्धा पण करतो नथी त्यारे सम्यग्मिथ्यादृष्टि कहेवाय छे ए संबन्धे शतकनी बृहच्चूर्णिमां कह्युं छे—"जहा नालिकेरदीववासिस्स खुहाइयस्स वि एत्थ समागयस्स ओयणाइए अणेगविहे ढोइए, तस्स आहारस्स उवरिं न रुई न य निंदा, जेण सो ओयणाइयमाहारो न य कयावि दिट्ठो नावि सुओ, एव सम्मामिच्छद्दिट्ठिस्स वि जीवाइपयत्थाण उवरि न य रुई नावि निंदा" इति। क्षुधाथी पीडित थया छता पण अहीं आवेला नालिकेर द्वीपवासी मनुष्यने तेनी पासे मूकेला ओदनादि अनेक प्रकारना आहारना उपर रुचि के अरुचि न होय, कारण के ते ओदनादि आहार तेणे कदि पण दीठो के सांभळ्यो नथी ए प्रमाणे सम्यग्मिथ्यादृष्टिने पण जीवादि पदार्थना उपर

लतो, खेत्ततो अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। सम्मामिच्छादिट्ठी णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं। दारं ९।

११. णाणी णं भंते! णाणित्ति कालओ केवचिरं होइ? गोयमा! णाणी दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—सातीते वा

अने उत्कृष्ट पण अन्तर्मुहूर्त होय छे.

११. हे भगवन्! ज्ञानी 'ज्ञानी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! ज्ञानी बे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—सादि

रुचि के अरुचि न होय. ज्यारे एक पण वस्तु के पर्यायमां एकान्तथी विरुद्ध मान्यतावाळो होय त्यारे पण ते मिथ्यादृष्टि छे एम कहेवामां कांइ पण दोष नथी. ते मिथ्यादृष्टि त्रण प्रकारना छे—अनादि अनन्त, अनादि सान्त अने सादि सान्त. तेमां जे कोइ काळे पण सम्यक्त्व पामवानो नथी ते अनादिअनन्त, जे पामशे ते अनादि सान्त. अने जे सम्यक्त्व पामी फरीथी पण मिथ्यात्व पामशे ते सादि सान्त. ते जघन्यथी अन्तमुहूर्त सुधी होय छे, कारण के त्यार पछी कोइने फरीथी सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. उत्कृष्ट अनन्त काळ सुधी होय छे. तेनी काळथी अने क्षेत्रथी बन्ने प्रकारे प्ररूपणा करे छे-काळथी अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी होय छे अने क्षेत्रथी कंइक न्यून अर्धपुद्गलपरावर्त छे. अहीं 'क्षेत्रथी' एम कह्युं छे माटे क्षेत्रपुद्गलपरावर्त ग्रहण करवुं. पण द्रव्यपुद्गलपरावर्तादि न समजवा, एम पूर्वे अने पछी पण जाणी लेवुं. 'सम्मामिच्छादिट्ठीणं' इत्यादि. सम्यग्-यथार्थ अने मिथ्या-विपरीत दृष्टि जेनी छे ते सम्यग्मिथ्यादृष्टि. ते जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे, त्यार पछी स्वभावथीज तेवा परिणामनो नाश थाय छे. ९ सम्यक्त्वद्वार समाप्त.

११. हवे ज्ञानद्वार कहे छे—तेमां आ प्रथम सूत्र छे-'नाणी णं भंते'! इत्यादि. जेनामां ज्ञान छे ते ज्ञानी कहेवाय छे. ते बे प्रकारे छे—सादि सान्त अने सादि अनन्त. तेमां केवलज्ञानननी अपेक्षाए सादि अनन्त छे, कारण के ते प्राप्त थया पछी जतुं नथी, अने बाकीना ज्ञानननी अपेक्षाए सादि सान्त छे, कारण के बाकीना ज्ञानो अमुक काळ सुधीज होय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी

अपज्ञवसिते, साइए वा सपज्ञवसिते। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिते से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं साइरेगाइं। आभिनिबोहियणाणी णं पुच्छा। गोयमा! एवं चेव, एवं सुयणाणीवि, ओहिनाणीवि एवं चेव, नवरं जहण्णेणं एगं समयं। मणपज्जवणाणी णं भंते! मणपज्जवणाणित्ति कालतो केवच्चिर

अनन्त अने सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कांइक अधिक छासठ सागरोपम सुधी होय छे. आभिनिबोधिक ज्ञानी सबधे पृच्छा. हे गौतम! एम ज जाणवुं. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी सबधे जाणवुं. अवधिज्ञानी सबंधे पण एमज समजवुं. परन्तु ते जघन्यथी एक समय छे. हे भगवन्! मनःपर्यवज्ञानी 'मनःपर्यवज्ञानी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे

होय छे, कारण के त्यार पछी मिथ्यात्वनी प्राप्ति थये ज्ञानना परिणामनो नाश थाय छे उत्कृष्ट कांइक अधिक छासठ सागरोपम होय छे अने ते सम्यग्दृष्टिनी पेठे जाणवो, कारण के सम्यग्दृष्टिने ज ज्ञानीपणुं होय छे आभिनिबोधिक ज्ञान सूत्रमां 'एवं चेव' ति-एमज जाणवुं, जेम सामान्यथी सादि सान्त ज्ञानी जघन्यथी अने उत्कर्षथी कह्यो छे तेम आभिनिबोधिकज्ञानी पण कहेवो, ते आ प्रमाणे-'जहन्नेण अन्तोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठी सागरोवमाइं सातिरेगाइं'-जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कांइक अधिक छासठ सागरोपम जाणवो एम श्रुतज्ञानी पण जाणवो, अवधिज्ञानी सबन्धे पण एमज समजवुं परन्तु ते जघन्यथी एक समय छे अवधिज्ञान एक समय शी रीते होय? अहीं अवधिज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य के देव सम्यक्त्व प्राप्त करे अने तेने सम्यक्त्वप्राप्ति समयेज सम्यक्त्व होवाथी विभंगज्ञान अवधिज्ञान रूपे थाय छे, अने ते ज्यारे देवना च्यवन वडे अने बीजाने मरण वडे के बीजी रीते पछीना समये पडे छे त्यारे अवधिज्ञाननो एक समय होय छे उत्कर्षथी कांइक अधिक छासठ सागरोपम होय छे अने ते अप्रतिपतित अवधिज्ञानसहित बे वार विजयादिमां जवा वडे अथवा त्रण वार अच्युत देवलोकमां जवा वडे जाणवो 'मनःपर्यवज्ञानी जघन्यथी एक

होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी । केवलणाणी णं पुच्छा । गोयमा ! सातिए अपज्जवसिते । अण्णाणी मतिअण्णाणी सुतअण्णाणी पुच्छा । गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी तिविधे पन्नत्ते, तंजहा–अणाइए वा अपज्जवासिए, अणादीए वा सपज्जवसिते, सादीए वा सपज्जवसिते । तत्थ

गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्ट कंइक न्यून क्रोड पूर्व वर्ष सुधी होय छे. केवलज्ञानी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ पर्यन्त होय छे. अज्ञानी, मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अज्ञानी, मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी त्रण प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–अनादि अनन्त, अनादि सान्त अने सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त

समय सुधी होय छे. अप्रमत्त गुणस्थानमां वर्तमान अने मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करी बीजे समये काळ करता मनःपर्यवज्ञानी संयतने एक समय जाणवो. उत्कृष्ट कंइक न्यून पूर्वकोटि वरस होय छे, कारण के त्यार पछी संयम नहि होवाथी मनःपर्यवज्ञाननो पण अभाव थाय छे. केवलज्ञानी सादि अनन्त काळ होय छे, कारण के तेने त्यांथी पडवानुं नथी. अज्ञानी त्रण प्रकारे छे—अनादि अनन्त, अनादि सान्त अने सादि सान्त. तेमां जेने कोइ पण काळे (सम्यक्त्व प्राप्तिद्वारा) ज्ञाननो परिणाम थवानो नथी ते अनादि अनन्त, जेने ज्ञाननी प्राप्ति थशे ते अनादि सान्त, अने जे ज्ञान प्राप्त करी फरीथी मिथ्यात्वनी प्राप्ति वडे अज्ञानीपणुं पामशे ते सादि सान्त. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे, कारण के त्यार पछी सम्यक्त्व पामवा वडे अज्ञान परिणामनो नाश थाय छे. उत्कर्षथी अनन्त काळ छे–इत्यादि बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. त्यार पछी अवश्य सम्यक्त्वनी प्राप्ति थवाथी अज्ञान नष्ट थाय छे. ए प्रमाणे त्रणे प्रकारना मतिअज्ञानी अने श्रुताज्ञानी जाणवा. विभंगज्ञानी जघन्यथी एक समय होय छे. केवी रीते होय ? सम्यग्दृष्टि होवाथी अवधिज्ञानी कोइ तिर्यंच पंचेन्द्रिय, मनुष्य के देव मिथ्यात्वने प्राप्त थाय अने मिथ्यात्वनी प्राप्ति समये मिथ्यात्वना प्रभावथी अवधिज्ञान

णं जे से सादीए सपज्जवसिते से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूण। विभंगणाणी णं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाते पुव्वकोडीते अब्भहिताइं। दारं १०।

१२. चक्खुदंसणी णं भंते! पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसहस्सं सातिरेगं।

अने उत्कर्षथी अनन्त काळ-अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळथी होय छे अने क्षेत्रथी कंइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त सुधी होय छे. हे भगवन्! विभंगज्ञानी 'विभंगज्ञानी' ए रूपे क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट कइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष अधिक तेत्रीश सागरोपम सुधी होय छे. (द्वार १०)

१२ हे भगवन्! चक्षुदर्शनी 'चक्षुदर्शनी' ए रूपे क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कंइक

विभंगज्ञान रूपे थाय छे, कारण के "आद्यत्रयमज्ञानमपि भवति मिथ्यात्वसंयुक्तम्"—आदिना त्रण ज्ञान मिथ्यात्व सहित अज्ञान रूपे थाय छे-एवु शास्त्रनु वचन छे ते पछीना समये देवना च्यवन थडे अने अन्यने मरण थडे के बीजी रीते ते विभंगज्ञान पडे छे तेथी विभंगज्ञाननो काळ एक समय होय छे उत्कर्षथी कइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष अधिक तेत्रीश सागरोपम प्रमाण होय छे ते आ प्रमाणे-ज्यारे कोइ मिथ्यादृष्टि तिर्यच पंचेन्द्रिय के मनुष्य पूर्वकोटी वर्षना आयुष्यवाळो होय अने ते केटलाक वर्ष गया पछी विभंगज्ञानी थाय अने अप्रतित विभंगज्ञानसहित ज ऋजु गति वडे सातमी नरक पृथ्वीमा तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो नारक थाय त्यारे पूर्वोक्त उत्कृष्ट काळनुं प्रमाण होय छे त्यार पछी सम्यक्त्वनी प्राप्ति द्वारा अवधिज्ञान थवाथी के सर्वथा नाश थवाथी विभंग ज्ञान जाय छे ज्ञानद्वार समाप्त

अचक्खुदंसणी णं भंते ! अचक्खुदंसणित्ति कालओ० ? गोयमा ! अचक्खुदंसणी दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणादीए वा अपज्जवसिते, अणादीए वा सपज्जवसिए । ओहिदंसणी णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्को-

---

अधिक हजार सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! अक्षुदर्शनी 'अचक्षुदर्शनी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अचक्षुदर्शनी बे प्रकारे छे ते आ प्रमाणे—अनादि अनन्त, अने अनादि सान्त. अवधिदर्शनी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय

---

१२. हवे दर्शनद्वार कहे छे—तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'चक्खुदंसणी णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! चक्षुदर्शनी क्यां सुधी होय? अहीं तेइन्द्रियादि जीव चउरिन्द्रियादिमां उत्पन्न थइ अने त्यां अन्तर्मुहूर्त रहीने फरीथी पण तेइन्द्रियादिमां उत्पन्न थाय त्यारे चक्षुदर्शनी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. अने 'उत्कर्षथी कंइक अधिक हजार सागरोपम सुधी होय'. अने ते चउरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने नैरयिकादिना भवभ्रमण वडे जाणवुं. अचक्षुदर्शनी अनादि अनन्त छे केजे कदि पण मोक्षने प्राप्त करवानो नथी. जे मोक्षने प्राप्त करशे ते अनादि सान्त. तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय के मनुष्य तेवा प्रकारना अध्यवसायथी अवधिदर्शन उत्पन्न करीने पछीना समये जो काळ करे तो अवधिदर्शन पडे त्यारे अवधिदर्शनी एक समय सुधी होय. उत्कर्षथी अवधिदर्शनी कांइक अधिक एकसो बत्रीश सागरोपम पर्यन्त होय. केवी रीते होय ? अहीं विभंगज्ञानी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के मनुष्य अप्रतित विभंगज्ञान सहित ज ऋजुगति वडे सातमी नरक पृथिवीमां तेत्रीश सागरोपमना आयुषवाळो नैरयिक थाय. अने ते नजीक मरण होय त्यारे सम्यक्त्व पामी तेथी भ्रष्ट थइ पुनः अप्रतित विभंगज्ञान वडे पूर्वकोटी आयुषवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय अने त्यां परिपूर्ण पोतानुं आयुष पाळीने फरी अप्रतित विभंगज्ञान सहित ज सातमी नरक पृथिवीमां तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो नैरयिक थाय, त्यां पण मरणना नजीक समये सम्यक्त्व पामीने तेनो त्याग करे तेथी फरीथी पण विभंग ज्ञानसहित ज पूर्वकोटी आयुषवाळा तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय त्यारे ए प्रमाणे एक छासठ सागरोपम थया, अने बधे तिर्यंचमां उत्पन्न थतो ऋजु गति वडे उपजे छे. कारण के विग्रह-वक्र गति

सेणं दो छावट्ठीओ सागरोवमाणं साइरेगाओ। केवलदंसणी णं पुच्छा। गोयमा! सातीए अपज्जवसिते। दार ११।

अने उत्कृष्ट कंइक अधिक बे वार छासठ (एकसो बत्रीश) सागरोपम सुधी होय. केवलदर्शनी 'केवलदर्शनी' ए रूपे क्यां सुधी होय? हे गौतम! सादि अनन्त होय (द्वार ११)

पछे तिर्यंच अने मनुष्यमां उत्पन्न थनारने विभंग ज्ञाननो निषेध कर्यो छे ते माटे कहेले के—"विभंगनाणी पचेंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा आहारगा, णो अणाहारगा" इति—विभंग ज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो आहारक होय छे, पण अनाहारक होता नथी' अने विग्रहगतिमां तो अनाहारक होय छे माटे वक्र गतिमा विभंग ज्ञान होतु नथी (प्र०)—आ माटे वच्चे सम्यक्त्वनु प्रतिपादन करो छो? (उ०)—अहीं विभंग ज्ञाननी स्थिति उत्कर्षथी पण कंइक न्यून पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपमनी छे, अने ते प्रमाणे पूर्वे कह्यु छे के "विभंगनाणी जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं" इति। विभंगज्ञानी जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्ट कांइक न्यून पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम सुधी होय छे तेथी पछला काल सुधी निरंतर विभंग ज्ञान नहि रहेतु होवाथी वच्चे सम्यक्त्व प्राप्त करे छे त्यार पछी अपतित विभंगज्ञान सहित ज मनुष्यपणु पामी संयमने पाळी बे वार विजयादिमां उत्पन्न थाय त्यारे बीजा छासठ सागरोपम सम्यग्दृष्टिने होय छे ए प्रमाणे अवधिदर्शननो काळ बे छासठ-एकसो बत्रीश सागरोपम छे (प्र०)—विभंग ज्ञाननी अवस्थामां अवधिदर्शननो कर्मप्रकृति वगेरे ग्रन्थोमां निषेध कर्यो छे तो विभंगज्ञानना सद्भावमां अवधिदर्शन केम होय? (उ०)—एम मानवामां दोष नथी, कारण के सूत्रमां विभंग अवस्थामां पण अवधिदर्शन प्रतिपादन करेलु छे ते आ प्रमाणे—आ सूत्रनो अभिप्राय छे के विशेष विषयक विभंग ज्ञान अने सामान्य विषयक अवधिदर्शन होय छे जेम सम्यग्दृष्टिने विशेष विषयक अवधिज्ञान अने सामान्य विषयक अवधिदर्शन होय छे केवळ विभंगज्ञानीने पण अवधिदर्शन होय छे, ते अनाकारमात्र-सामान्यमात्र विषयक होवाथी अवधिज्ञानीना अवधिदर्शन जेवु छे, माटे ते पण अवधिदर्शन कहेवाय छे पण

विभंगदर्शन कहेवातुं नथी. मूलटीकाकार ए विचार संबंधे कहे छे–"दंसणं च विभंगोहीणं जत्तो तुल्लमेव अतो दो छावट्ठीओ साइरेगाओ" इति। जेथी दर्शन विभंग अने अवधिज्ञानने तुल्य छे माटे कांईक अधिक बे छासठ सागरोपम काळ थाय छे". तेथी अमे पण विभंगज्ञानमां अवधि दर्शननो विचार कर्यो छे. कार्मग्रन्थिको कहे छे के यद्यपि साकार अने अनाकार रूप विशेषता होवाथी विभंगज्ञान अने अवधिदर्शन जुदुं छे, तो पण विभंगज्ञान वडे यथार्थ निश्चय थतो नथी, कारण के ते मिथ्यात्वरूप छे, तेम अवधिदर्शन वडे सम्यग्-निर्णय थतो नथी, कारण के ते अनाकारमात्र छे माटे विभंगज्ञानथी अवधिदर्शनती जुदी विवक्षा करवानुं कंइपण प्रयोजन नथी. तेना अभिप्रायथी विभंग अवस्थामां अवधिदर्शन होतुं नथी. आ स्वमतिकल्पित नथी, पूर्वाचार्योए पण एवा प्रकारना मतविभागनी व्यवस्था करी छे. विशेषणवतीमां पूज्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे कह्युं छे के—

"सुत्ते विभंगस्स वि परूवियं ओहिदंसणं बहुसो । कीस पुणो पडिसिद्धं कम्मपगडीपगरणम्मि ॥

विभंगेवि दरिसणं सामन्नविसेसविसयओ सुत्ते । तंचऽविसिट्ठमणागारमेत्तताऽवहिविभंगाणं ॥

कम्मपगडीमयं पुण सागारेयरविसेसभावेवि । न विभंगनाणदंसणविसेसणमणिच्छयत्तणओ ॥" (विशेषण. गा. १०४–१०६)

सूत्रमां विभंगने पण अवधिदर्शन बहुवार जणाव्युं छे, तो कर्मप्रकृति प्रकरणमां शा माटे तेनो निषेध कर्यो छे? सूत्रमां सामान्य अने विशेषरूप विषयवडे विभंगने पण दर्शन होय छे अने ते दर्शन अनाकारमात्र होवाथी अवधि अने विभंगने अवधिदर्शन अविशिष्ट (विशेषता सिवाय) होय छे. कर्मप्रकृतिनो मत आ छे के साकार अने अनाकारनी विशेषता छतां पण अनिश्चयपणाथी विभंगज्ञान अने दर्शननी विशेषता नथी. बीजा आचार्यो व्याख्या करे छे के-सातमी नरकपृथिवीना निवासी नारकोनी कल्पना करवानुं शुं प्रयोजन छे? सामान्य रीते नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देव भवमां पर्यटन करता अवधिज्ञान अने विभंगज्ञान एटला काळ सुधी होय छे. त्यार पछी मोक्ष प्राप्त थाय छे. केवळदर्शनीनुं सूत्र केवलज्ञानीना सूत्रनी पेठे विचारवुं. दर्शनद्वार समाप्त.

१३. सजए णं भंते ! संजतेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं । असं-
जते णं भंते ! असजएत्ति पुच्छा । गोयमा ! असजते तिविधे पन्नत्ते, तंजहा—अणादिए वा अपज्जवसिते, अणा-
ए वा सपज्जवसिते, सातीए वा सपज्जवसिते । तत्थ णं जे से सातीए सपज्जवसिते से जहन्नेण अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्ततो अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ।

१३. हे भगवन् ! सयत 'सयत' ए रूपे काळने आश्रयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट कंइक
न्यून पूर्वकोटी वर्ष पर्यन्त होय. हे भगवन् ! असयत 'असंयत' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! असयत त्रण प्रकारना छे. ते
आ प्रमाणे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, अने ३ सादि सान्त. तेमा जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने
उत्कृष्ट अनन्त काळ—अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळथी अने क्षेत्रथी कइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त काळ सुधी होय. सयतासंयत

१३ हवे सयतद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'सजए ण भंते' ! इत्यादि कोइ चारित्रना परिणाम समयेज काळ करे
तेथी सयतने सयतपणु जघन्यथी एक समय होय छे असयत त्रण प्रकारे छे—अनादि अनन्त, अनादि सान्त अने सादि सान्त तेमा जे
सयमने कोइ पण काळे पामवानो नथी ते अनादि अनन्त, जे सयमने प्राप्त करशे ते अनादि सान्त, जे सयमने प्राप्त करी
तेथी भ्रष्ट थाय ते सादि सान्त ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे कारण के अन्तर्मुहूर्त पछी कोइने सयमनी प्राप्ति थाय छे
उत्कर्षथी अनन्तकाळ-इत्यादि बधु पूर्वनी पेठे जाणवु त्यार बाद अवश्य सयमनी प्राप्ति थाय छे सयतासयत-देशविरतिवाळो, ते
जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त होय छे, कारण के देशविरतिनी प्राप्तिनो उपयोग जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे देशविरतिना द्विविध
-त्रिविध-बे प्रकारे, त्रण प्रकारे-इत्यादि घणा भागा थाय छे, माटे तेनी प्राप्तिमा जघन्यथी पण अन्तर्मुहूर्त लागे छे सर्व विरति तो

संजतासंजते णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं । नोसंजते–नोअसंजते–नोसंजतासंजते णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते । दारं १२ ।

१४. सागारोवओगोवउत्ते णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अणागारोवउत्तेवि एवं चेव । दारं १३ ।

१५. आहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! आहारए दुविधे पन्नत्ते, तंजहा–छउमत्थआहारए य केवलिआहा-

(देशविरति) क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कंइक न्यून क्रोड पूर्व वर्ष सुधी होय. नोसंयत–नोअसंयत–नोसंयतासंयत (सिद्ध) क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सादि अनन्त काळ सुधी होय. (द्वार १२)

१४. हे भगवन् ! साकार उपयोगवाळो क्यां सुधी होय ए प्रश्न. हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. अनाकार उपयोगवाळा संबंधे पण एमज जाणवुं. (द्वार १३)

१५. हे भगवन् ! आहारक 'आहारक ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! आहारक बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–छद्मस्थ आहा-

सर्वं सावद्यनो हुं त्याग करुं छुं–इत्यादि रूप छे माटे तेनी प्राप्तिनो उपयोग एक समयनो पण होय छे, माटे पूर्वे संयतनो काळ एक समय कह्यो छे. परन्तु जे संयत नथी, असंयत नथी अने संयतासंयत पण नथी ते सिद्ध छे. अने ते सादि अनन्त छे. संयतद्वार समाप्त.

१४. हवे उपयोगद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे–'सागारोवउत्ते णं भंते' ! इत्यादि. अहीं संसारीने साकार अने अनाकार उपयोग होय छे अने ते जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे, तेथी बन्ने सूत्रोमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तनो उपयोग कह्यो छे. केवलीने जे एक समयनो उपयोग कह्यो छे ते अहीं विवक्षित नथी. उपयोगद्वार समाप्त.

रए य। छउमत्थाहारए णं भंते! छउमत्थाहारएत्ति कालओ केवचिरं होति? गोयमा! जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं दुसमयऊणं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं-असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीतो कालतो, खेत्ततो अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। केवलिआहारए णं भंते! केवलिआहारएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं। अणाहारए णं भंते! अणाहारएत्ति कालओ केवच्चिरं होइ? गोयमा! अणाहारए दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-छउमत्थअणाहारए य केवलिअणाहारए य। छउमत्थअ-

रक अने केवली आहारक. हे भगवन्! छद्मस्थ आहारक 'छद्मस्थ आहारक' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी बे समय न्यून क्षुल्लक भव (बसो छप्पन आवलिका) सुधी अने उत्कृष्ट असंख्याती काळ एटले काळथी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अने क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण काळ सुधी होय छे. हे भगवन्! केवली आहारक 'केवली आहारक' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कंइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष सुधी होय. हे भगवन्! अनाहारक 'अनाहारक' ए रूपे क्यां सुधी होय? हे गौतम! अनाहारक बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-छद्मस्थ अनाहारक अने केवली अनाहारक. हे भगवन्! छद्मस्थ अनाहारक क्यां सुधी होय? हे गौतम! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट बे समय सुधी होय. हे भगवन्! केवली

१५. हवे आहारकद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे-'आहारए णं भंते'!—हे भगवन्! आहारक केटला काळसुधी होय-इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु 'जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं दुसमऊणं' इति—जघन्यथी बे समय न्यून क्षुल्लक भव सुधी होय छे, अहीं यद्यपि चार समयनी अने पांच समयनी विग्रहगति होय छे ए संबन्धे कह्युं छे के—

णाहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं दो समया। केवलिअणाहारए णं भंते ! केवलि० ? गोयमा ! केवलिअणाहारए दुविधे पन्नत्ते, तंजहा–सिद्धकेवलिअणाहारए य भवत्थकेवलिअणाहारए य। सिद्धकेवलिअणाहारए णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए । भवत्थकेवलिअणाहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! भवत्थकेवलिअणाहारए दुविधे पन्नत्ते,तंजहा–सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए य अजोगिभवत्थकेवलि-

---

अनाहारक 'केवली अनाहारक' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! केवली अनाहारक बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–सिद्ध केवली अनाहारक अने भवस्थ केवली अनाहारक. सिद्ध केवली अनाहारक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ होय. हे भगवन् ! भवस्थ केवली अनाहारक क्यां सुधी होय ? हे गौतम! भवस्थ केवली अनाहारक बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे–सयोगी भवस्थ केवली अनाहारक अने अयोगी भवस्थ केवली अनाहारक. हे भगवन् ! सयोगी भवस्थ केवली अनाहारक क्यां सुधी होय ? हे गौतम !

"उजुया य एगवंका दुहतोवंका गती विणिदिट्ठा । जुज्जइ तिचउवंकावि नाम चउपंचसमयाओ ॥"

ऋजु गति, एक समयनी वक्रगति अने बे समयनी वक्रगति कहेली छे. तथा त्रण चार समयनी वक्रगति अने चार, पांच समयनी पण वक्रगति घटी शके छे. तो पण बहुधा बे समयनी के त्रण समयनी वक्रगति होय छे, पण चार, पांच समयनी वक्रगति होती नथी माटे तेनी विवक्षा करी नथी. तेमां उत्कर्षथी त्रण समयनी वक्रगतिमां आदिना बे समय अनाहारक होय छे. तेथी आहारकपणाना विचारमां बे समय न्यून क्षुल्लकभवनुं ग्रहण कर्युं छे. ऋजुगति अने एक समयनी वक्रगतिनी विवक्षा करी नथी, केम के अहीं सौथी जघन्यनो विचार छे. 'उत्कर्षथी असंख्यातो काळ छे'–इत्यादि बधुं सुगम छे, परन्तु एटला काळ पछी अवश्य

अणाहारए य । सजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तिण्णि समया । अजोगिभवत्थकेवलिअणाहारए ण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । दारं १४ ।

जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय त्रण समय सुधी होय. अयोगी भवस्थ केवली अनाहारक सबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट सिवाय अन्तर्मुहूर्त सुधी होय (द्वार १४)

विग्रहगति थाय छे अने तेमां अनाहारकपणु होय छे माटे 'अनन्त काळ' न कह्यो केवलीसूत्र सुगम छे. छद्मस्थ अनाहारक सूत्रमां 'उक्कोसेण दो समया' उत्कृष्ट बे समयो त्रण समयनी विग्रहगतिने आश्रयी कह्या छे चार समयनी अने पांच समयनी विग्रहगतिनी विवक्षा करी नथी-ए हमणाज कह्यु. सयोगी भवस्थ केवली अनाहारक सूत्रमां आठ समयना केवली समुद्घातनो त्रीजो, चोथो अने पांचमो-ए त्रण समयो अनाहारक होय छे कह्यु छे के—

"दण्डं प्रथमे समये कपाटमथ चोत्तरे तथा समये । मन्थानमथ तृतीये लोकव्यापी चतुर्थे तु ॥
संहरति पञ्चमे त्वन्तराणि मन्थानमथ तथा षष्ठे । सप्तमके तु कपाटं संहरति ततोऽष्टमे दण्डम् ॥
औदारिकप्रयोक्ता प्रथमाष्टमसमययोरसाविष्टः । मिश्रौदारिकयोक्ता सप्तमषष्ठद्वितीयेषु ॥
कार्मणशरीरयोगी चतुर्थके पञ्चमे तृतीये च । समयत्रयेऽपि तस्मिन् भवत्यनाहारको नियमात्" ॥

प्रथम समये दण्ड, बीजा समये कपाट, त्रीजा समये मथान अने चोथे समये लोकव्यापी थाय छे पांचमा समये आंतरायोनो संहार करे छे, छट्ठा समये मथान संहरे छे, सातमे समये कपाट अने त्यार पछी आठमा समये दण्ड संहरे छे प्रथम अने आठमा समयमा औदारिककाययोगी होय छे सातमा, छट्ठा अने बीजा समयमा औदारिकमिश्रयोगवाळो अने चोथा, पांचमा अने त्रीजा ए त्रण समयमां कार्मणकाययोगी होय छे अने ते वखते अवश्य अनाहारक होय छे आहारद्वार समाप्त

१६. भासए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अभासए णं पुच्छा । गोयमा ! अभासए तिविधे पन्नत्ते, तंजहा–अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए वा अपज्जवसिए । तत्थ णं जे से साइए वा सपज्जवसिते से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणप्फइकालो । दारं १५ ।

१७. परित्तए णं पुच्छा । गोयमा ! परित्ते दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—कायपरित्ते य संसारपरित्ते य । कायपरित्ते

---

१६. भाषक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. अभाषक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अभाषक त्रण प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त अने ३ सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाळ सुधी होय छे. (द्वार १५)

१७. परित्त (प्रत्येक) संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! परित्त बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—कायपरित्त अने संसारपरित्त. कायपरित्त संबंधे

---

१६. हवे भाषकद्वार कहे छे—'भासए णं भंते' ! इत्यादि. भाषक-बोलनार जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी वचनयोगीनी पेठे जाणवो. अभाषक त्रण प्रकारे छे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त अने ३ सादि सान्त. तेमां जे कोइ पण समये भाषकपणुं पामशे नहि ते अनादि अनन्त. जे पामशे ते अनादि सान्त. अने जे भाषक थइने फरीथी पण अभाषक थाय ते सादि सान्त. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे. कारण के बोलीने थोडी वार रहीने फरीथी पण भाषकपणुं जणाय छे. अथवा भाषक-बोलनार बेइन्द्रियादि एकेन्द्रियादि अभाषक जीवोमां उत्पन्न थइने अने त्यां अन्तर्मुहूर्तनुं आयुष पुरुं करी फरीथी पण ज्यारे बेइन्द्रियादिपणे उपजे छे त्यारे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी अभाषक होय छे. अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाळ सुधी होय छे अने ते पूर्वे कह्यो छे. माटे अहीं बतावता नथी. भाषकद्वार समाप्त.

णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुढविकालो-असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीतो । ससारपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण अणंत-कालं जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्टं देसूणं । अपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा! अपरित्ते दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-कायअपरित्ते य ससारअपरित्ते य । काय-अपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । ससारअपरित्तेणं पुच्छा । गोय-

---

पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीरूप असंख्याता पृथिवीकाल सुधी होय. ससारपरित्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनन्त काळ, यावत् कंइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त सुधी होय. अपरित्त संबंधे पृच्छा.हे गौतम ! अपरित्त बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-कायअपरित्त अने संसारअपरित्त. कायअपरित्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाळ पर्यन्त होय. ससारअपरित्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ससारअपरित्त बे प्रकारे

---

१७. हवे परित्तद्वार कहे छे-परित्त बे प्रकारे छे-कायपरित्त अने संसारपरित्त तेमां जेने परित्त-परिमित काय-शरीर छे ते कायपरित्त-प्रत्येकशरीरी अने जेणे सम्यक्त्वादि वडे परित्त-परिमित संसार कर्यो छे ते ससारपरित्त कायपरित्त जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे अने ते ज्यारे कोइ जीव निगोदथी नीकळी प्रत्येक शरीरवाळामां उत्पन्न थइने अने त्यां अन्तर्मुहूर्त रहीने फरीथी पण निगोदमा उत्पन्न थाय त्यारे होय छे उत्कर्षथी असंख्यातो काळ होय छे अने ते असंख्यातो काळ पृथिवीकाल-जेटलो पृथिवीकायिकनो कायस्थितिनो काळ छे तेटलो जाणवो तेनु काळने आश्रयी निरूपण करे छे-'ते असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी रूप छे' संसारपरित्त जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे, त्यार पछी ते अन्तकृत् केवली थइने मुक्तिने प्राप्त थाय छे उत्कृष्ट अनन्त काळपर्यंत होय छे तेनु ज निरूपण करे छे-'अणताओ' इत्यादि अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप अनन्त काळ होय छे-इत्यादि पूर्वनी पेठे

मा ! संसारअपरित्ते दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिते। नोपरित्ते नोअपरित्ते णं पुच्छा। गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते ॥ दारं १६ ॥

१८. पज्जत्तए णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं। अपज्जत्तए णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए णं पुच्छा। गोयमा ! सादीए

छे. ते आ प्रमाणे—अनादि सान्त अने अनादि अनन्त. नोपरित्त—नोअपरित्त संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ पर्यन्त होय. (द्वार १६)

१८. पर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट कंइक न्यून शतपृथक्त्व (बसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय. अपर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. नोपर्याप्ता—नोअपर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम !

जाणवुं. त्यार पछी ते अवश्य मोक्षने प्राप्त थाय छे. कायअपरित्त अनन्तकायिक जाणवो. अने जेणे सम्यक्त्वादि वडे परिमित संसार कर्यो नथी ते संसारापरित्त समजवो. कायअपरित्त जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे अने ते ज्यारे कोइ जीव प्रत्येक शरीरोथी नीकळी निगोदमां उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्त रहीने फरीथी प्रत्येकशरीरीमां उत्पन्न थाय त्यारे जाणवो. उत्कर्षथी वनस्पतिकाळ जाणवो अने ते पूर्वे बतावेलो छे. त्यार पछी अवश्य त्यांथी नीकळे छे. संसारअपरित्त बे प्रकारे छे—अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. तेमां जे कोइ काळे पण संसारथी मुक्त नहि थाय ते अनादि अनन्त, अने जे संसारनो अन्त करशे ते अनादि सान्त. नोपरित्त—नोअपरित्त सिद्ध छे अने ते आदि अनन्त काळ सुधी होय छे.

१८. पर्याप्तद्वारमां पर्याप्तो जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे. त्यार पछी अपर्याप्तपणुं पामे छे. उत्कर्षथी कांइक अधिक वसोथी

अपज्जवसिए ॥ दार १७ ॥

१९ सुहुमे णं भंते ! सुहुमेत्ति पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुढविकालो। बादरे णं पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं–जाव खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं। नोसुहुमनोबादरे णं पुच्छा। गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते। दारं १८।

२०. सण्णी णं भंते ! पुच्छा। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं। असण्णी

सादि अनन्त काळ होय. (द्वार १७)

१९. हे भगवन् ! सूक्ष्म 'सूक्ष्म' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पृथिवीकाळ पर्यन्त होय. बादर संबंधे पृच्छा हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट असंख्याता काळ पर्यन्त यावत् क्षेत्रथी अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण होय. नोसूक्ष्म–नोबादर संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ सुधी होय. (द्वार १८)

२०. हे भगवन् ! संज्ञी 'संज्ञी' ए रूपे केटला काळ सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी कंइक अधिक शत-

---

नवसो सागरोपम सुधी होय छे एटला काळ सुधी लब्धिपर्याप्तनी स्थितिनो संभव छे अपर्याप्त जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे त्यार पछी पर्याप्त लब्धिनी प्राप्ति थाय छे नोपर्याप्त–नोअपर्याप्त सिद्ध छे अने ते सादि अनन्त छे, कारण के सिद्धत्वनो नाश थतो नथी

१९ सूक्ष्मद्वार विषे सूक्ष्मसूत्रमां उत्कर्षथी पृथिवीकाळ–एटले जेटलो पृथिवीकायिकनी कायस्थितिनो काळ छे तेटलो जाणवो बादरसूत्र सुगम छे, अने ए बन्ने सूत्रनो विचार पूर्वे करेलो छे नोसूक्ष्म–नोबादर सिद्ध छे तेथी ते सादि अनन्त छे

णं पुच्छा। गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो। नोसण्णीनोअसण्णीणं पुच्छा। गोयमा! सादीए अपज्जवसिते। दारं २०।

२१. भवसिद्धिए णं पुच्छा। गोयमा! अणादीए सपज्जवसिते। अभवसिद्धिए णं पुच्छा। गोयमा! अणादीए अपज्जवसिते। नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए णं पुच्छा। गोयमा! सादीए अपज्जवसिते। दारं २१।

पृथक्त्व (वसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय. असंज्ञी संबंधे पृच्छा. हे गौतम! जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट वनस्पति काळ सुधी होय. नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी संबंधे पृच्छा. हे गौतम! सादि अनन्त काळ सुधी होय. (द्वार १९)

२१. भवसिद्धिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम! अनादि सान्त होय. अभवसिद्धिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम! अनादि अनन्त काळ पर्यन्त होय. नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम! सादि अनन्त काळ सुधी होय. (द्वार २०)

---

२०. संज्ञीद्वारने विषे संज्ञीसूत्रमां जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त छे. अने ते ज्यारे कोइ जीव असंज्ञीथी नीकळी संज्ञीमां उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्तनुं आयुष भोगवी फरीथी असंज्ञीमां उत्पन्न थाय त्यारे होय छे. उत्कृष्ट काळ सुगम छे. असंज्ञी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे. ते आ प्रमाणे—ज्यारे कोइ जीव संज्ञीथी नीकळी असंज्ञीमां उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्त रहीने फरीथी संज्ञीमां आवे त्यारे होय छे. उत्कर्षथी वनस्पतिकाळ समजवो, कारण के असंज्ञीना ग्रहणथी वनस्पतिकायनुं पण ग्रहण थाय छे. नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी सिद्ध छे अने ते सादि अनन्त छे.

२१. भवसिद्धिकद्वारने विषे भवमां जेओने सिद्धि छे ते भवसिद्धिक-भव्य. ते अनादि सान्त छे. अन्यथा भव्यपणानो अभाव थाय. तेथी अन्य अभवसिद्धिक-अभव्य जाणवो. ते अनादि अनन्त छे. अन्यथा अभव्यपणानो अभाव थाय. नोभव्य-नोअभव्य सिद्ध छे

२२ धम्मत्थिकाए णं पुच्छा । गोयमा ! सव्वद्धं, एवं जाव अद्धासमए । दार २२ ।

२३. चरिमे णं पुच्छा । गोयमा ! अणादीए सपज्जवसिते । अचरिमे णं पुच्छा । गोयमा ! अचरिमे दुविधे पन्नत्ते, तंजहा— अणादीए वा अपज्जवसिते, सादीते वा अपज्जवसिते । दार २३ ।

पण्णवणाए भगवईए अट्ठारसमं कायट्ठितिनामपयं समत्तं ।

---

२२. धर्मास्तिकाय संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सर्व काळ होय. ए प्रमाणे अद्धासमय सुधी जाणवुं. (द्वार २१)

२३. चरम संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अनादि सान्त होय. अचरम संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अचरम बे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे- अनादि अनन्त अने सादि अनन्त होय. (द्वार २२)

प्रज्ञापना भगवतीमां अढारमुं कायस्थिति पद समाप्त

अने ते नियमे अनन्त छे

२२. धर्मे अस्तिकायो सर्व काळने विषे होय छे, अद्धासमय पण प्रवाहनी अपेक्षाए सर्वकालस्थायी छे माटे कहयुं छे के 'एव जाव अद्धासमए'-ए प्रमाणे अद्धासमय सुधी जाणवुं

२३. जेनो चरम भव थशे ते अपेक्षाथी चरम-भव्य कहेवाय छे, तेनाथी विपरीत अचरम-अभव्य कहेवाय छे कारण के तेने चरम-छेल्लो भव नथी अने ते सिवाय बीजा सिद्ध छे, कारण के तेने पण चरमपणुं नथी तेमां चरम अनादि सान्त छे, अन्यथा चरमपणुं नहि घटे अचरम बे प्रकारे छे—अनादि अनन्त अने सादि अनन्त तेमां अनादि अनन्त अभव्य छे अने सादि अनन्त सिद्ध छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां अढारमुं कायस्थिति पद समाप्त.

एगूणवीसइमं सम्मत्तं पदं ।

१. जीवा णं भंते ! किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! जीवा सम्मदिट्ठीवि, मिच्छादिट्ठीवि, सम्मामिच्छादिट्ठीवि । एवं नेरइयावि । असुरकुमारावि एवं चेव जाव थणियकुमारा । पुढवीकाइया णं पुच्छा । गोयमा ! पुढवीकाइया णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी, एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! बेइंदिया सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी । एवं जाव चउरिंदिया ।

ओगणीशमुं सम्यक्त्वपद.

१. हे भगवन् ! जीवो शुं सम्यग्दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि छे के सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे ? हे गौतम ! जीवो सम्यग्दृष्टि पण छे, मिथ्यादृष्टि पण छे अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि पण छे. ए प्रमाणे नैरयिको पण जाणवा. असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो एम ज जाणवा. पृथिवीकायिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! पृथिवीकायिको सम्यग्दृष्टि नथी, मिथ्यादृष्टि छे, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नथी. ए प्रमाणे वन-

---

१. ए प्रमाणे अढारमा पदनी व्याख्या करी, हवे ओगणीशमा पदनो प्रारंभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे-अहीं पूर्वना पदमां कायस्थिति कही, अहीं कयी कायस्थितिमां सम्यग्दृष्टि आदि भेद वडे केटला प्रकारना जीवो होय ? ते विचाराय छे. तेमां आ सूत्र छे—'जीवा णं भंते ! किं सम्मदिट्ठी-हे भगवन् ! जीवो सम्यग्दृष्टि छे' इत्यादि पदनी समाप्ति सुधी सुगम छे, परन्तु सास्वादन सम्यक्त्वसहित पण सूत्रना अभिप्रायथी पृथिव्यादिमां उत्पन्न थतो नथी, कारण के 'उभयाभावो पुढवाइएसु' पृथिव्यादिमां-उभयनो सम्यक्त्व अने सम्यक्त्वसहित जीवनी उत्पत्तिनो अभाव छे-एवुं शास्त्र वचन छे. बेइन्द्रियादिमां सास्वादन सम्यक्त्व सहित उत्पन्न थाय

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा वाणमंतरजोइसियवेमाणिया य सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि य सम्मामिच्छादिट्ठीवि । सिद्धा णं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा सम्मदिट्ठी, णो मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी ।

पन्नवणाए भगवईए एगूणविसइमं सम्मत्तपदं समत्तं ॥ १९ ॥

स्पतिकायिको सुधी समजवु. बेइन्द्रियो संबधे पृच्छा. हे गौतम ! बेइन्द्रियो सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टि होय छे पण सम्यग्मिथ्यादृष्टि नथी होता. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो, मनुष्यो, व्यंतर, ज्योतिषिको अने वैमानिको सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि पण होय छे. सिद्धो संबधे पृच्छा. हे गौतम ! सिद्धो सम्यग्दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि नथी अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि पण नथी.

प्रज्ञापना भगवतीमां ओगणीसमु सम्यक्त्व पद समाप्त

छे, माटे पृथिव्यादिमां सम्यग्दृष्टिनो निषेध कर्यो छे अने बेइन्द्रियादि सम्यग्दृष्टि कहेला छे सम्यग्मिथ्यादृष्टिनो परिणाम तेवा प्रकारना स्वभावथी संज्ञी पंचेन्द्रियोने होय छे, बाकीनाने होतो नथी माटे एकेन्द्रिय अने बेइन्द्रियादि बन्नेमे सम्यग्मिथ्यादृष्टिनो निषेध कर्यो छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां ओगणीसमु सम्यक्त्व पद समाप्त

वीसइमं अंतकिरियापदं ।

नेरइय अंतकिरिया अणन्तरं एगसमय उव्वट्टा । तित्थगरचक्किबलवासुदेवमंडलियरयणा य ॥ दारगाहा ।

वीशमुं अन्तक्रिया पद.

१ नैरयिक–नैरयिकादि संबंधे अन्तक्रिया, २ अनन्तर–अनन्तर अने परंपर आवेलानी अन्तक्रिया, ३ एक समयनी अन्तक्रिया, ४ उद्वृत्त–च्यवीने क्यां जाय ? अने ६ क्यांथी नीकळी तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव मांडलिक अने रत्न–सेनापति वगेरे थाय ? ए संबंधे आ द्वार गाथा कहेवामां आवी छे.

ओगणीशमा पदनी व्याख्या करी, हवे वीशमा पदनो आरंभ कराय छे. एनो आ संबंध छे—पूर्वना पदमां सम्यक्त्वनो परिणाम कह्यो, अहीं परिणामना समानपणाथी गतिनो परिणाम विशेष अन्तक्रिया कहेवाय छे. तेमां प्रारंभमां अधिकारप्रतिपादक आ द्वारगाथा कहे छे—'नेरइय अंतकिरिया'–इत्यादि. प्रथम अधिकारमां नैरयिक वडे उपलक्षित–सूचित चोवीश दंडकोमां अन्तक्रियानो विचार करवानो छे, त्यार पछी अनन्तर–पोतपोताना नैरयिकादि भवथी पछीना मनुष्यभवमां आवेला अन्तक्रिया करे के परंपरा आवेला अन्तक्रिया करे ? ए प्रमाणे अन्तरनो विचार करवानो छे. त्यार पछी नैरयिकादि भवोथी तुरत आवेला एक समयमां केटला अन्तक्रिया करे ? ए विचार करवानो छे, ४ उद्वृत्त–नैरयिकादि भवोथी नीकळेला कइ योनिमां उत्पन्न थाय–ए कहेवानुं छे. तथा ज्यांथी नीकळी तीर्थंकरो, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, मांडलिक राजाओ अने चक्रवर्तीना सेनापति वगेरे रत्नो थाय ते अनुक्रमे कहेवानां छे. ए प्रमाणे द्वारगाथानो संक्षेपार्थ कह्यो. अने सविस्तर अर्थ सूत्रकार ज कहेशे.

१. जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगतिए णो करेज्जा । एवं नेरइए जाव वेमाणिए । नेरइए णं भंते ! नेरइएसु अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइया णं भंते ! असुरकुमारेसु अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणिएसु । नवरं मणूसेसु अंतकिरियं करेज्जत्ति पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगतिए करेज्जा, अत्थेगतिए णो करेज्जा । एवं असुरकुमारा जाव वेमाणिए। एवमेव चउवीसं २ दण्डगा भवन्ति ।

१, हे भगवन् ! जीव अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोइ करे अने कोइ न करे. ए प्रमाणे नैरयिकथी आरंभी वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ–यथार्थ नथी. हे भगवन् ! नैरयिको असुरकुमारोमां आवी अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमा जाणवुं. परन्तु मनुष्योमां आवी अन्तक्रिया करे ? ए प्रश्न करवो. हे गौतम ! कोइ अन्तक्रिया करे अने कोइ न करे. ए प्रमाणे असुरकुमारोने यावत् वैमानिकमां कहेवुं. एम चोवीश चोवीश वार दंडको थाय छे.

१–२. तेमां प्रथम अन्तक्रियाने कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे–'जीवे णं भंते !' इत्यादि अन्त–अवसान, नाश, अहीं प्रसंगथी कर्मनो नाश जाणवो, तेनु क्रिया–करवु कर्मनो नाश करवो ते अन्तक्रिया अन्य आगममा अन्तक्रियाशब्द मोक्ष अर्थमां रूढ–प्रसिद्ध छे कारण के "कृत्स्नकर्मक्षयाद् मोक्ष" (तत्त्वार्थ अ० सू०) एवु शास्त्रवचन छे हे भगवन् ! जीव अन्तक्रिया करे ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! 'अस्त्येकको य: कुर्यात्–कोइ जीव छे जे करे, 'अस्त्येकको यो न कुर्यात्—कोइ जीव छे जे करतो नथी. अर्थात्

२. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरागया अंतकिरियं करेंति, परंपरागया अंतकिरियं करेंति ? गोयमा ! अणंतरागयावि अंतकिरियं करेंति, परंपरागया वि अंतकिरियं करेंति । एवं रयणप्पभापुढविनेरइयावि जाव पंकप्पभापुढवीनेरइया । धूमप्पभापुढवीनेरइया णं पुच्छा । गोयमा ! णो अणंतरागया अंतकिरियं पकरेंति, परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति, एवं जाव अहेसत्तमापुढवीनेरइया। असुरकुमारा जाव थणियकुमारा पुढवीआउवणस्सइका-

२. हे भगवन् ! नैरयिको अनन्तर—तरत पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया करे के परंपराए आवेला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! अनन्तर—पछीना भवमां आवेला पण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिको यावत् पंकप्रभाना नैरयिको अन्तक्रिया करे. धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अनन्तर—तुरत पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया न करे, पण परंपराए आवेला अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे नीचेनी सातमी पृथिवीना

कोइ करे छे अने कोइ करतो नथी. तात्पर्य ए छे के जे तथाविध भव्यत्वना परिपाक थवाथी मनुष्य भव वगेरे पूर्ण सामग्री पामीने अने ते सामग्रीना सामर्थ्यथी उत्पन्न थयेल अतिप्रबळ वीर्योल्लास वडे क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थइ केवळ ज्ञान पामी अघाती कर्मोनो पण क्षय करे छे ते अन्तक्रिया करे, बीजा तेथी विपरीत होवाथी न करे. ए प्रमाणे नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी वैमानिक सुधी विचारवुं. सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे-नेरइए णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा' इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिक अन्तक्रिया करे? हे गौतम ! कोइ करे अने कोइ न करे वगेरे. हवे नैरयिकोमां वर्तता अन्तक्रिया करे के न करे? ए संबंधे प्रश्न करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'नेरइए णं भंते-इत्यादि. भगवान् आ उत्तर कहे छे-हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ—युक्तियुक्त नथी. कारण के अहीं सर्व कर्मनो क्षय प्रकर्षने प्राप्त थयेला सम्यग्दर्शन, ज्ञान अने चारित्रना

इया य अणन्तरागयावि अंतकिरियं पकरेंति, परंपरागयावि अंतकिरियं पकरेंति। तेउवाउबेइंदियतेइंदियचउरिंदिया णो अणंतरागया अंतकिरियं पकरेंति, परंपरागया अंतकिरियं पकरेंति। सेसा अणंतरागयावि अंतकिरियंपकरेंति, परंपरागयावि अंतकिरियं पकरेंति।

नैरयिको सुधी जाणवु. असुरकुमारो यावत् स्तनित कुमारो, पृथिवीकायिको, अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको तुरत पछीना भवमा आवेला पण अन्तक्रिया करे अने परंपराथी आवेला पण अन्तक्रिया करे. तेजस्काय, वायुकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया न करे, पण परंपराए आवेला अन्तक्रिया करे. बाकीना जीवो पछीना भवमां आवेला पण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे.

समुदायथी थाय छे. परन्तु नैरयिकावस्थामां तेवा प्रकारना भवस्वभावथी चारित्रनो परिणाम होतो नथी ए प्रमाणे असुरकुमारथी मांडी वैमानिक सुधीमां प्रतिषेध करवो परन्तु मनुष्योमां आवेलो कोइ अन्तक्रिया करे के जेने चारित्रादिनी सामग्री परिपूर्ण प्राप्त थइ होय अने जे तेनाथी रहित होय ते न करे. ए प्रमाणे असुरकुमारथी मांडी वैमानिक सुधीना प्रत्येक नैरयिकादि चोवीश दण्डकना अनुक्रमथी कहेवा ए प्रमाणे ए चोवीश वार चोवीश दण्डको थाय छे हवे ए नैरयिकादि पोतपोताना भव पछीना मनुष्यभवमां आवी अन्तक्रिया करे के तिर्यंचादिना भवोना अन्तर पडे परंपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे—ए निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—नेरइया णं भंते! इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे भगवान् उत्तर आपे छे-'हे गौतम! तुरत पछीना भवमां आवीने पण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवीने पण अन्तक्रिया करे तेमां रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा अने पंकप्रभाथी तुरत आवीने पण करे अने परंपराए आवीने पण करे. अने धूमप्रभापृथिवीथी तेवा प्रकारना भवस्वभावथी परंपराए आवेला ज अन्तक्रिया करे पण

३. अणंतरागया नेरइया एगसमये केवइया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगो वा दो वा तिन्नि
वा, उक्कोसेणं दस । रयणप्पभापुढवीनेरइयावि एवं चेव, जाव वालुयप्पभापुढवीनेरइया । अणंतरागया णं भंते !
पंकपभापुढवीनेरइया एगसमयेणं केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा,

३. नरयिको तुरत पछीना भवमां आवेला एक समयमां केटला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्य
एक बे अने त्रण अने उत्कर्षथी दस अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे रत्नप्रभा पृथिवीना नरयिको यावत् वालुकाप्रभाना
नैरयिको पण जाणवा. हे भगवन् ! पंकप्रभापृथिवीना नरयिको तुरत पछीना भवमां आवी एक समये केटला अन्तक्रिया करे ? हे

विशेषने प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार सात सूत्रो कहे छे—'ए प्रमाणे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको पण जाणवा' इत्यादि
सूत्र सुगम छे. असुरकुमारथी मांडी स्तनितकुमार सुधीना भवनपति देवो, पृथिवी, पाणी अने वनस्पति तुरत-पछीना भवमां आवीने
पण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवीने पण अन्तक्रिया करे. एम्ने प्रकारे आवेला तेओने अन्तक्रिया करवामां कांइपण विरोध नथी.
कारण के केवलीभगवाने तेवा प्रकारे जाण्युं छे. तेजस्काय, वायु, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय परंपराए आवेला ज अन्तक्रिया
करे छे, पण पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया करता नथी. तेमां तेजस्काय अने वायुकायने पछीना भवमां मनुष्यपणुंज प्राप्त थतुं
नथी. अने बेइन्द्रियादिकने प्राप्त थवा छतां तेवा प्रकारना भवस्वभावथी अन्तक्रिया थती नथी. बाकीना तिर्यंच पचेन्द्रियथी मांडी
वैमानिक सुधीना जीवो तुरत आवेला अने परंपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे छे.

३. 'नैरयिकादि भवोथी अनन्तर-व्यवधान सिवाय पछीना भवमां आवेला केटला अन्तक्रिया करे, ए प्रकारे त्रीजुं द्वार कहे छे—
'अनन्तरागया णं भंते' इत्यादि. नैरयिक भवथी अनन्तर-वच्चे कोइ पण भवना अन्तर सिवाय मनुष्यभवमां आवेला एक समये केटला

उक्कोसेणं चत्तारि । अणन्तरागया णं भंते ! असुरकुमारा एगसमये केवतिया अंतकिरियं पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं दस । अणंतरागया ण भंते असुरकुमारीओ एगसमये केवइया अंतकिरिय पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेण पंच । एवं जहा असुरकुमारा सदेवीया तहा जाव थणियकुमारा। अणंतरागया ण भंते! पुढविकाइया एगसमये केवइया अंतकिरियं पकरेंति? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं चत्तारि । एव आउकाइयावि चत्तारि, वणस्सइकाइया छच्च,पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दस, तिरिक्खजोणिणीओ दस, मणुस्सा दस, मणुस्सीओ वीस, वाणमंतरा दस,

---

गौतम ! जघन्यथी एक, बे अने त्रण अने उत्कर्षथी चार अन्तक्रिया करे. हे भगवन् ! असुरकुमारो तुरत पछीना भवमां आवी एक समये केटला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे अने त्रण अने उत्कर्षथी दस अन्तक्रिया करे. हे भगवन्! असुरकुमारीओ तुरत पछीना भवमां आवी एक समये केटली अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्य एक, बे अने त्रण अने उत्कर्षथी पांच अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे जेम देवीसहित असुरकुमारो कह्या तेम यावत् स्तनितकुमारो जाणवा. हे भगवन्! पृथिवीकायिको पछीना भवमा आवी एक समये केटला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्य एक, बे अने त्रण अने उत्कर्षथी चार अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे अप्कायिको पण चार, वनस्पतिकायिको छ, पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको दस, तिर्यंचस्त्रीओ दस, मनुष्यो दस, मनुष्यस्त्रीओ वीश,

---

मोक्षे जाय ? अहीं 'नैरयिको' ए पूर्व भवना पर्यायनो व्यवहार ते देवादि पूर्वभवना पर्यायनी प्रतिपत्ति-बोधना निषेधने माटे छे ए प्रमाणे पछीना सूत्रमा पण ते ते पूर्वभवना पर्यायना व्यवहारनुं प्रयोजन समजवु बाकी बधु स्पष्ट छे

वाणमंतरीओ पंच, जोइसिया दस, जोइसिणीओ वीसं, वेमाणिआ अट्ठसयं वेमाणिणीओ वीसं ।

४. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता असुरकुमारेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । एवं निरंतरं जाव चउरिंदिएसु पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टिता

व्यन्तरो दस, व्यंतरीओ पांच, ज्योतिषिको दस, ज्योतिषिक स्त्रीओ वीश, वैमानिको एकसो आठ अने वैमानिक स्त्रीओ वीश अन्तक्रिया करे.

४. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे निरंतर यावत् चउरिन्द्रियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना

४-५. 'नेरइए णं भंते' ! इत्यादि सूत्र सुगम छे. परन्तु 'केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए' केवलज्ञानीए उपदेशेला श्रुतधर्म अने चारित्ररूप धर्मने श्रवणरूपे प्राप्त करे एटले तेनुं श्रवण करे ? अहीं 'श्रवणता' श्रवणशब्दनो भाव-प्रवृत्तिनिमित्त श्रवण ज समजवुं. "भावे त्वतलौ" ए सूत्रमां ते शब्दस्वरूपनो भाव-प्रवृत्तिनिमित्त एवुं पण व्याख्यान करेलुं छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'अत्थगतिए' इत्यादि. कोइ श्रवण करे अने कोइ श्रवण न करे. पुनः प्रश्न करे छे-हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे 'से णं केवलिं बोहिं बुज्झेज्जा' इति. ते केवली ए कहेला बोधिने जाणे ? अहीं बोधि एटले धर्मनी प्राप्ति, तेना कारणभूत जे शब्दरचना, ते पण कारणमां कार्यनो उपचार करवाथी बोधि कहेवाय छे. तेने केवलज्ञानीए साक्षात् अथवा परंपराए उपदेश करेलो होवाथी केवलज्ञानी संबन्धी कहेवाय

पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । जे णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा से णं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए णो लभेज्जा । जे णं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलिं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए णो बुज्झेज्जा । जे णं भंते ! केवलिं बोहिं बुज्झेज्जा, से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? गोयमा ! सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा । जे णं भंते !

भवमां पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! जे नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेश करेला धर्मने श्रवणरूपे प्राप्त करे-सांभळे ? हे गौतम ! कोइ प्राप्त करे अने कोइ न प्राप्त करे-एटले कोइ सांभळे अने कोइ न साभळे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने श्रवण रूपे प्राप्त करे ते केवलीए कहेला बोधि-धर्मने जाणे ? हे गौतम ! कोइ जाणे अने कोइ न जाणे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे ते तेनी श्रद्धा करे, प्रतीति करे, अने रुचि करे ? हे गौतम ! ते श्रद्धा करे प्रतीति करे अने रुचि

छे अर्थात् केवलज्ञानीए उपदेशेल बोधि-धर्मने श्रवण करनार केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने समजे एटले तेनो अर्थ जाणे ? भगवान् उत्तर आपे छे-'अत्थेगतिए' इत्यादि कोइ जाणे अने कोइ न जाणे पुनः प्रश्न करे छे—हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए कहेला धर्मने अर्थथी जाणे ते अर्थथी 'श्रद्दधीत' तेनी श्रद्धा करे, 'प्रत्ययेत्' तेनी प्रतीति करे, 'रोचयेत्' रुचि करे—'हु ते करवा इच्छु छु' एवो विचार करे ? भगवान् उत्तर आपे छे—'अत्थेगइए' इत्यादि कोइ रुचि करे अने कोइ न करे पुनः प्रश्न करे छे के हे भगवन् ! जे

सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा से णं आभिणिबोहियनाणसुयणाणाइं उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! उप्पाडेज्जा । जे णं भंते ! आभिणिबोहियनाणसुयनाणाइं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा सीलं वा वयं वा गुणं वा वेरमणं वा पच्चक्खाणं वा पोसहोववासं वा पडिवज्जित्तए? गोयमा ! अत्थेगतिए संचाएज्जा, अत्थेगतिए णो संचाएज्जा । जे णं भंते ! संचाएज्जा सीलं वा जाव पोसहोववासं वा पडिवज्जित्तए से णं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा । जे णं भंते ! ओहिनाणं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा मुण्डे

करे. हे भगवन् ! जे श्रद्धा करे, प्रतीति करे, अने रुचि करे ते आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञान उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे आभिनिबोधिक ज्ञान अने श्रुतज्ञान उत्पन्न करे ते शील, व्रत, गुण, विरमण, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवास अंगीकार करवाने समर्थ थाय ? हे गौतम ! कोइ समर्थ थाय अने कोइ समर्थ न थाय. हे भगवन् ! जे शील यावत् पोषधोपवास अंगीकार करवाने समर्थ थाय ते अवधिज्ञान उत्पन्न करे ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न करे अने कोइ न उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे अवधिज्ञान उत्पन्न करे ते मुंड थइ अगारथी–गृहस्थावासथी अनगारपणुं–साधुपणुं अंगीकार करवाने समर्थ थाय ? हे गौतम ! ए

श्रद्धा करे, प्रतीति करे अने रुचि करे ते आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञान उत्पन्न करे ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! उत्पन्न करे. अहीं हन्त अनुमतिना अर्थमां छे. केवलज्ञानीए कहेला धर्मना श्रवण अने श्रद्धा करवाथी आभिनिबोधक अने श्रुतज्ञान अवश्य थाय छे. फरीथी प्रश्न करे छे—हे भगवन् ! जे आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञान उत्पन्न करे छे ते 'संचाएज्जा' शील–ब्रह्मचर्य, व्रत–द्रव्यादि संबन्धी विचित्र नियमो, गुण–भावनादिरूप उत्तर गुण, विरमण–अतीत काळना स्थूल प्राणातिपात वगेरे दोषोनी विरति–निवृत्ति,

भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।

५ नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता मणुस्सेसु उववज्जेज्जा? गोयमा! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा । जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु जाव–जे णं भंते! ओहिनाणं उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा मुण्डे भवित्ता आगा-

---

अर्थ समर्थ नथी.

५. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां मनुष्योमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. हे भगवन्! जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने श्रवण रूपे प्राप्त करे ? हे गौतम! जेम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो संबंधे कह्युं तेम कहेवुं यावत् 'जे अवधिज्ञानने उत्पन्न करे' ते मुंड–त्यागी थइने अगारवासथी अनगारीपणुं–साधुपणुं स्वीकारवाने समर्थ थाय ?

प्रत्याख्यान–अनागत–भविष्यकाळना स्थूल प्राणातिपातादि दोषोनो त्याग, पोष–धर्मनी पुष्टि करे ते पोषध–आठम वगेरे पर्व, तेमां उपवास करवो ते पोषधोपवास, तेने अंगीकार करवा समर्थ थाय ? भगवान् उत्तर आपे छे—'अत्थेगइए' इत्यादि कोइ समर्थ थाय अने कोइ न थाय अहीं तिर्यंचो अने मनुष्योने भवनिमित्तक अवधिज्ञान थतुं नथी, पण गुणथी थाय छे अने शीलव्रतादि गुणो तो आ पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने पण होय छे तो ते गुणोथी आने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय के न थाय ए प्रश्न करे छे, 'जेणं भंते ! इत्यादि जेने शील अने व्रतादि संबन्धे विशुद्ध परिणाम थवाथी अवधिज्ञानावरण कर्मनो क्षयोपशम थाय ते अवधिज्ञान उत्पन्न करे अने तेथी अन्य न उत्पन्न करे. अवधिज्ञान पछी मनःपर्यव ज्ञान जाणवुं मनःपर्यवज्ञान अनगारने होय छे, कारण के 'त संजयस्स सव्वपमायरहियस्स विविहरिद्धिमतो'—ते (मनःपर्यव ज्ञान) सर्व प्रमादरहित अने विविध ऋद्धियाळा संयतने होय छे–एवुं शास्त्रवचन

राओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थेगतिए संचाएज्जा, अत्थेगतिए णो संचाएज्जा । जे णं भंते ! संचाएज्जा मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए से णं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा। जे णं भंते! मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा से णं केवलनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा। जेणं भंते ! केवलनाणं उप्पाडेज्जा से णं सिज्झेज्जा

हे गौतम ! कोइ समर्थ थाय अने कोइ न थाय. हे भगवन् ! जे मुंड थइने अगारवासथी अनगारीपणुं स्वीकारवाने समर्थ थाय ते मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न करे अने कोइ न उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करे ते केवलज्ञान उत्पन्न करे ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न करे अने कोइ न उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञान उत्पन्न करे ते सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, मुक्त थाय अने सर्व दुःखनो अन्त करे ? हे गौतम ! सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखनो अन्त करे. हे भगवन् ! नैरयिक

छे. तेथी अनगारपणा संबन्धे प्रश्न करे छे—जे णं भंते ! इत्यादि. जे अवधिज्ञान उत्पन्न करे ते मुंड थइ अगारवासनो त्याग करी अनगारीपणुं ग्रहण करे ? अहीं मुंड बे प्रकारे छे—द्रव्यथी अने भावथी. तेमां केशादिने दूर करवा वडे द्रव्यथी मुंड अने सर्वसंगना त्याग करवाथी भावथी मुंड होय छे. तेमां अहीं तिर्यंचोने द्रव्यमुंडपणानो असंभव होवाथी भाव मुंडनुं ग्रहण करवुं. तेवा प्रकारनो भावमुंड थइने पोताना आश्रयरूप अगार-घरथी नीकळी, जेने द्रव्यथी अने भावथी अगार-घर नथी ते अनगार, तेवा अनगारपणाने स्वीकारवा समर्थ थाय ? भगवान् उत्तर आपे छे—आ अर्थ समर्थ नथी, कारण के तिर्यंचोने भवना स्वभावथी तेवा प्रकारना सर्वविरति परिणामनो संभव नथी. अने अनगारपणाना अभावमां मनःपर्यवज्ञाननो अभाव सिद्ध ज छे. जेम तिर्यंच पंचेन्द्रिय संबन्धे सूत्रनो समूह कह्यो तेम मनुष्य संबन्धे पण कहेवो. परन्तु मनुष्यमां सर्वभावनो संभव होवाथी मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान

बुज्झेज्जा मुच्चेज्जा सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ? गोयमा ! सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेज्जा । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे।

६. असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता असुरकुमारेसु उववज्जेजा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव थणियकुमारेसु । असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता पुढविकाइएसु

नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ए अर्थ समर्थ नथी.

६. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पछीना भवमां असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए

संबन्धी बे सूत्रो अधिक कहे छे 'जेण भंते ! तच्चापुढवी मुडे भवित्ता' इत्यादि सुगम छे परन्तु 'सिज्झेज्जा'-इत्यादि सिद्ध थाय एटले सर्वप्रकारना अणिमा सामर्थ्य वगेरेनी सिद्धियाळो थाय 'बुज्झेत'-बुद्ध थाय-समस्त लोकालोकना स्वरूपने जाणे 'मुच्येत' भवोपग्राही कर्मथी पण मुक्त थाय, तात्पर्य ए छे के दुःखोनो अन्त करे व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकमां प्रतिषेध करवो, कारण के नैरयिकने भवस्वभावथी नारक अने देवभवने योग्य आयुनो बन्धनो असंभव छे ए प्रमाणे नैरयिकोनो नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी विचार कर्यो

६ हवे असुरकुमारोनो नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी विचार करे छे—'असुरकुमारे णं भंते' ! इत्यादि सूत्र पूर्वनी पेठे जाणवु परन्तु तेओ पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिमां उत्पन्न थाय छे कारण के ईशान देवलोक सुधीना देवोनो तेओमां उत्पन्न थवामां

उववज्जेज्जा ? हन्ता गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा ! जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । एवं आउवणस्सइसुवि । असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तेउवाउवेइंदियतेइंदियचउरिंदिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । अवसेसेसु पंचसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियाइसु असुरकुमारेसु जहा नेरइओ, एवं जाव थणियकुमारा ।

७. पुढवीकाइए णं भंते ! पुढवीकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे

प्रमाणे यावद् स्तनितकुमारोमां कहेवुं. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पछीना भवमां पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय ? हा गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न न थाय. हे भगवन् ! जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे अप्काय अने वनस्पतिकायिक संबंधे जाणवुं. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पछीना भवमां तेजस्काय, वायुकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. बाकीना पंचेन्द्रिय तिर्यंचादि पांच दंडकमां जेम नैरयिक कह्यो तेम असुरकुमार कहेवो. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो कहेवा.

७. हे भगवन् ! पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ

विरोध नथी. तेओमां उत्पन्न थयेला केवलज्ञानीए कहेला धर्मनुं श्रवण न करे, कारण के तेओने श्रवणेन्द्रिय नथी. बाकी बधुं नैरयिकनी पेठे जाणवुं. जे प्रकारे असुरकुमार संबंधे कह्युं छे ते प्रकारे यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं.

समट्ठे। एवं असुरकुमारेसुवि, जाव थणियकुमारेसुवि। पुढविकाइए णं भंते! पुढवीकाइएहिंतो अणंतरं उव्व हित्ता पुढवीकाइएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा। जे णं भंते! उववज्जेज्जा से ण केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। एवं आउकाइआ-दिसु निरंतरं भाणियव्वं जाव चउरिंदिएसु। पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु जहा नेरइए। वाणमंतरजोइ-सियवेमाणिएसु पडिसेहो। एवं जहा पुढवीकाइओ भणिओ तहेव आउकाइओवि, जाव वणस्सइकाइओवि भाणियव्वो।

समर्थ नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारोमां यावत् स्तनितकुमारोमां पण जाणवु. हे भगवन्! पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकोथी नीकळी पछीना भवमां पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय? हे गौतम! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनु श्रवण करे? हे गौतम! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे अप्कायिकथी मांडी चउरिन्द्रिय सुधीमा निरन्तर कहेवु. पचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यमां जेम नैरयिक संबंधे कर्यु तेम कहेवु. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकमां प्रतिषेध करवो. ए प्रमाणे जेम पृथिवीकायिक कह्यो तेम अप्कायिक पण कहेवो. यावत् वनस्पतिकायिक पण कहेवो.

७-८ पृथिवीकायिकोनो नैरयिको अने देवोमां प्रतिषेध करवो पछी तेओ नैरयिको अने देवोमां उत्पन्न थता नथी, कारण के तेओने विशिष्ट-स्पष्ट चिन्तन रूप मनोद्रव्यनो असंभव होवाथी तीव्र संक्लेश अने विशुद्ध अध्यवसायनो अभाव छे बाकीना बधा स्थानोमां उत्पन्न थाय छे कारण के तेने योग्य अध्यवसायनो संभव छे तेमां पण तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योमां नैरयिकनी पेठे

८. तेउक्काइए णं भंते ! तेउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेसुवि, जाव थणियकुमारेसु । पुढवीकाइअआउतेउवाउवणबेइंदियतेइंदियचउरिंदिएसु अत्थेगतिए उववज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा । जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । तेउक्काइए णं भंते ! तेउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचिंदियतिरिक्ख-

---

८. हे भगवन् ! तेजस्कायिक तेजस्कायिकोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारोमां यावत् स्तनितकुमारोमां जाणवुं. पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने श्रवण वडे प्राप्त करे–अर्थात् धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! तेजस्कायिक तेजस्कायिकोथी नीकळी पछीना भवमां पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न न थाय.

कहेवुं. ए प्रमाणे अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको कहेवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिकोनो मनुष्योमां पण प्रतिषेध करवो. केमके तेओ पछीना भवमां मनुष्योमां उत्पन्न थता नथी. कारण के तेओने क्लिष्ट परिणाम होवाथी मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी अने मनुष्यायुपना बन्धनो असंभव छे. तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थयेला केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे, कारण के तेओने श्रवणेन्द्रिय होय छे, पण संक्लिष्ट परिणाम होवाथी केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने न जाणे.

जोणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा। से णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा। जे णं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलिं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। मणुस्सवाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु पुच्छा। गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। एवं जहेव तेउकाइए निरंतरं एवं वाउकाइएवि।

९. बेइंदिए णं भंते ! बेइंदिएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहा पुढवीकाइया। नवरं मणुस्सेसु जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा। एवं तेइंदिया चउरिंदियावि जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा।

जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए कहेला धर्मने श्रवण वडे प्राप्त करे–अर्थात् धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! कोइ श्रवण करे अने कोइ श्रवण न करे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे ते केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकमां उत्पत्ति संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. जेम तेजस्कायिक कह्यो तेम वायुकायिक पण निरंतर कहेवो

९. हे भगवन् ! बेइन्द्रिय बेइन्द्रियोथी नीकळी अनन्तर–पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जेम पृथिवीकायिको संबंधे कह्युं छे तेम कहेवुं. परन्तु मनुष्योमां उत्पन्न थाय अने यावत् मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करे. ए प्रमाणे तेइन्द्रियो अने

९. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो पृथिवीकायिकनी पेठे देव अने नैरयिक सिवाय बधाय स्थानोमां उत्पन्न थाय छे, पण पृथिवीकायिको मनुष्योमां आवी अन्तक्रिया पण करे छे अने तेओ तेवा प्रकारना भवस्वभावथी मनुष्यमां आवीने पण अन्तक्रिया करता

जे णं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा से णं केवलनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । पंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । से णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा । जे णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलिं बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए णो बुज्झेज्जा । जे णं भंते ! केवलिं बोहिं बुज्झेज्जा से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? हंता गोयमा ! जाव रोएज्जा । जे णं भंते ! सद्दहेज्जा ३ से णं आभिणिबोहियनाणसुयनाण-

---

चउरिन्द्रियो पण यावत् मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करे. जे मनःपर्यव ज्ञानने उत्पन्न करे ते केवलज्ञानने उत्पन्न करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न न थाय. जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए प्ररूपेला धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! कोइ श्रवण करे अने कोइ श्रवण न करे. जे केवली प्ररूपित धर्मनुं श्रवण करे ते केवलीए प्ररूपेला धर्मने जाणे ? हे गौतम ! कोइ जाणे अने कोइ न जाणे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञानी प्ररूपित धर्मने जाणे ते तेनी श्रद्धा करे, प्रतीति करे अने रुचि करे ? हा गौतम ! यावत् रुचि करे. हे भगवन् ! जे श्रद्धा करे प्रतीति करे अने रुचि करे ते आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान उत्पन्न

नथी, पण मनःपर्यवज्ञान तो उत्पन्न करे छे. तिर्यंच पंचेन्द्रियो अने मनुष्यो बधाय स्थानोमां उत्पन्न थाय छे. अने तेनी व्यक्तव्यता पाठ सिद्ध छे. व्यन्तर, ज्योतिषिको अने वैमानिको असुरकुमारनी पेठे जाणवा. चतुर्थ द्वार समाप्त.

ओहिनाणाइं उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! जाव उप्पाडेज्जा । जे णं भंते ! आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणाइ उप्पाडेज्जा से णं संचाएज्जा सीलं वा जाव पडिवज्जित्तए? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेसुवि, जाव थणियकुमारेसु । एगिंदियविगलिंदिएसु जहा पुढवीकाइए । पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु य जहा नेरइए । वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु जहा नेरइएसु उववज्जेज्जा पुच्छा भणिया, एवं मणुस्सेवि । वाणमंतरजोइसियवेमाणिए जहा असुरकुमारे ।

१०. रयणप्पभापुढवीनेरइए णं भंते ! रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ?

करे ? हा गौतम ! यावत् उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे आभिनिबोधिक ज्ञान श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान उत्पन्न करे ते शील–ब्रह्मचर्य व्रत यावत् स्वीकारवाने समर्थ थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारमां यावत् स्तनितकुमारमां कहेवुं. एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रियोमां पृथिवीकायिक कह्यो तेम कहेवो पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां अने मनुष्योमां नैरयिकनी पेठे जाणवुं. व्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिकोमां जेम नैरयिकोमां प्रश्न कर्यो तेम कहेवुं. ए प्रमाणे तिर्यंच पंचेन्द्रियनी पेठे मनुष्य संबंधे पण कहेवुं. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिक असुरकुमारनी पेठे कहेवा.

१० हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थंकरपणुं पामे ? हे

---

१० हवे तीर्थंकरपणाना वक्तव्यरूप एटले 'क्याथी नीकळी तीर्थंकरपणुं पामे' ए संबन्धे पांचमुं द्वार कहे छे—'रयणप्पभापुढवीनेरइए णं भंते' इत्यादि सूत्र सुगम छे परंतु जेणे तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म 'बद्धानि' सत्तर घडे भोगना समुदायनी पेठे प्रथम

गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा । से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—'अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा' ? गोयमा ! जस्स णं रयणप्पभापुढवीनेरइअस्स तित्थगरनामगोयाइं कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निधत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमन्नागयाइं उदिन्नाइं, णो उवसंताइं हवंति,से णं रयणप्पभापुढवीनेरइए रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा, जस्स णं रयणप्पभापुढवीनेरइयस्स तित्थगरनामगोयाइं णो बद्धाइं जाव णो उदिन्नाइं, उवसंताइं हवंति, से णं रयणप्पभापुढवीनेरइए

गौतम ! कोइ पामे अने कोइ न पामे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'कोइ पामे अने कोइ न पामे' ? हे गौतम ! जे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिके तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म बांध्युं छे, निधत्त कर्युं छे, कृत–निकाचित कर्युं छे, प्रस्थापित कर्युं छे, निविष्ट, अभिनिविष्ट, अभिसमन्वागत–उदयाभिमुख अने उदयमां आणेलुं छे, पण उपशान्त कर्युं नथी ते रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थंकरपणुं पामे छे. जे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिके तीर्थंकर नामगोत्र कर्म बांध्युं नथी, यावत् उदयमां आणेलुं नथी, उपशान्त थयेलुं छे, ते रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी नीकळी पछीना

मात्र बांधेलां होय, त्यारबाद अग्निमां तपाव्या पछी घण वडे टीपेला सोयना जथ्थानी पेठे 'स्पृष्टानि' स्पर्श्यां होय, 'निधत्तानि' निधत्तरूपे कर्यां होय-एटले उद्वर्तना अने अपवर्तना सिवाय बाकीना करणने अयोग्य कर्यां होय, 'कृतानि' निकाचित -सर्व करणने अयोग्य कर्यां होय, 'प्रस्थापितानि'-मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति नाम कर्मनी साथे उदयरूपे व्यवस्थित कर्यां होय, 'निविष्टानि'-तीव्र रसना उत्पादकपणे करेलां होय-तीव्र विपाकने आपवावाळां कर्यां होय,

रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं णो लभेज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुचइ–'अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए णो लभेज्जा'। एवं सक्करप्पभा जाव वालुयप्पभापुढवीनेरइएहिंतो तित्थगरत्तं लभेज्जा। पंकप्पभापुढवीनेरइए णं भंते ! पंकप्पभानेरइएहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा । धूमप्पभापुढवीनेरइए पुच्छा । गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सव्वविरइं पुण

भवमां तीर्थंकरपणु पामतो नथी. ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छु के कोइ तीर्थंकरपणु पामे अने कोइ न पामे. ए प्रमाणे शर्कराप्रभाथी यावत् वालुकाप्रभाना नैरयिकोथी नीकळी तीर्थंकरपणु पामे. पंकप्रभा पृथिवीथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थंकरपणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, पण अन्तक्रिया करे. धूमप्रभा पृथिवी संबंधे पृच्छा. एटले त्यांथी नीकळी तीर्थंकरपणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, परंतु ते सर्वविरति प्राप्त करे. तमःप्रभा पृथिवी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, परन्तु त्यांथी नीकळी

'अभिनिविष्टानि'–विशुद्ध, विशुद्धतर अध्यवसाय वडे अति तीव्र रसना उत्पादकपणे करेलां होय–अति तीव्र विपाकने आपनारा कर्या होय, 'अभिसमन्वागतानि'–उदयाभिमुख करेला होय, 'उदीर्णानि'–उदयमां आवेलां होय, विपाकोदयने प्राप्त करेलां होय, परंतु 'उपशान्तानि'–सर्वथा अभावने प्राप्त करेला न होय, अथवा निकाचितादि अवस्थानी अधिकता रहित करेला न होय, ते तीर्थङ्करपणु पामे बाकी बधु स्पष्ट छे ए प्रमाणे शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा संबन्धे पण बे सूत्रो कहेवा पङ्कप्रभा पृथिवीनो नैरयिक त्यांथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थङ्करपणु पामतो नथी, पण अन्तक्रिया करे छे धूमप्रभा पृथिवीनो नैरयिक अन्तक्रिया पण करतो नथी, पण सर्व विरति प्राप्त करे छे तमःप्रभा पृथिवीनो नैरयिक सर्व विरति पण पामतो नथी, परंतु देशविरति पामे छे अधःसप्तम पृथिवीनो नैरयिक ते देशविरतिने पण पामतो नथी, पण सम्यक्त्व पामे छे असुरकुमारथी मांडी वनस्पतिकायिक सुधीना जीवो त्यांथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थ-

लभेज्जा । तमप्पभापुढवी–पुच्छा । विरयाविरइं पुण लभेज्जा । अहेसत्तमपुढवी–पुच्छा । गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सम्मत्तं पुण लभेज्जा । असुरकुमारस्स पुच्छा । गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा । एवं निरंतरं जाव आउकाइए । तेउकाइए णं भंते ! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उववज्जेजा (तित्थगरत्तं लभेज्जा) ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाते । एवं वाउकाइएवि । वणस्सइकाइए णं पुच्छा । गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा । बेइंदियतेइंदियचउरिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! नो तिणट्ठे

देशविरति प्राप्त करे. अधः सप्तम पृथिवी–संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, परन्तु त्यांथी नीकळेलो सम्यक्त्व प्राप्त करे. असुरकुमार संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे निरन्तर यावत् अप्कायिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! तेजस्कायिक तेजस्कायिकोथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थङ्करपणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण केवलज्ञानीए कहेला धर्मनुं श्रवण करे. ए प्रमाणे वायुकायिक संबंधे जाणवुं. वनस्पतिकायिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, पण अन्तक्रिया करे. बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, अने चउरिन्द्रिय संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण मनःपर्यव ज्ञान

ङ्करपणुं पामता नथी, पण अन्तक्रिया करे छे. वसुदेव चरित्रमां नागकुमारथी पण नीकळी पछीना भवमां ऐरावत क्षेत्रने विशे आ अवसर्पिणीमां चोवीशमा तीर्थङ्कर थयेला बतावेल छे. तेथी अहीं तत्त्व केवलज्ञानी जाणे. तेजस्कायिक अने वायुकायिको नीकळी पछीना भवमां अन्तक्रिया पण करता नथी, कारण के तेओ पछीना भवमां मनुष्यमां उत्पन्न थता नथी. पण तिर्यञ्चमां उत्पन्न थाय छे अने केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे छे, पण जाणता नथी. ए वात पूर्वे कही छे. वनस्पतिकायिको नीकळी पछीना भवमां

समट्ठे, मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणूसवाणमंतरजोइसिए ण पुच्छा । गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा । सोहम्मगदेवे ण भंते !, अणंतरं चयं चइत्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए नो लभेज्जा, एवं जहा रयणप्पभापुढविनेरइए, एवं जाव सव्वट्ठसिद्धगदेवे।

११. रयणप्पभापुढविनेरइए णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता चक्कवट्टित्तं लभेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए नो लभेज्जा । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभापुढविनेरइयस्स तित्थग-

---

उत्पन्न करे. पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, व्यन्तर अने ज्योतिषिक सबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, पण अन्तक्रिया करे. हे भगवन् ! सौधर्म देव च्यवी पछीना भवमा तीर्थङ्करपणुं पामे ? हे गौतम ! कोइ पामे अने कोइ न पामे. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा नैरयिक सबंधे कह्यु तेम सर्वार्थसिद्ध देव सुधी कहेवु.

११. हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभाना नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां चक्रवर्तिपणुं पामे ? हे गौतम ! कोइ पामे अने कोइ न पामे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जेम रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना तीर्थङ्करपणा

तीर्थङ्करपणु पामता नथी पण अन्तक्रिया करे छे बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो पछीना भवमा अन्तक्रिया पण करता नथी, पण मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे छे तिर्यञ्च पचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर अने ज्योतिषिको नीकळी पछीना भवमा तीर्थङ्करपणु पामता नथी, पण अन्तक्रिया करे छे सोधर्मथी मांडी सर्वार्थ सिद्ध सुधीना देवो नैरयिकनी पेठे कहेवा तीर्थङ्करद्वार समाप्त

११ हवे त्यांथी नीकळी चक्रवर्तित्वादि—चक्रवर्ती वगेरे थाय ते संबन्धे द्वारो कहे छे—जेमा रत्नप्रभा नैरयिक, भवनपति,

रत्तं । सक्करप्पभानेरइए अणंतरं उव्वट्टित्ता चक्कवट्टित्तं लभेज्जा ? गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे । एवं जाव अधेसत्तमापुढविनेरइए । तिरियमणुएर्हिंतो पुच्छा । गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । भवणपतिवाणमंतरजोतिसियवेमाणिएर्हिंतो पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए नो लभेज्जा । एवं बलदेवत्तंपि, णवरं सक्करप्पभापुढविनेरइएवि लभेज्जा । एवं वासुदेवत्तं दोहिंतो पुढवीहिंतो वेमाणिएहिंतो य अणुत्तरोववाइयवज्जेहिंतो, सेसेसु नो तिणट्ठे समट्ठे । मंडलियत्तं अधेसत्तमातेउवाऊवज्जेहिंतो । सेणावइरयणत्तं गाहावइरयणत्तं वड्ढतिरयणत्तं पुरोहियरयणत्तं इत्थिरयणत्तं च एवं चेव, णवरं अणुत्तरोववाइयवज्जेहिंतो । आसरयणत्तं हत्थिरयणत्तं रयणप्पभाओ

संबंधे कह्युं छे तेम चक्रवर्तिपणा संबन्धे कहेवुं. हे भगवन् ! शर्कराप्रभानो नैरयिक नीकळी पछीना भवमां चक्रवर्तिपणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे नीचे सातमी पृथिवीना नैरयिक सुधी कहेवुं. तिर्यंच अने मनुष्य संबंधे पृच्छा. एटले त्यांथी नीकळी चक्रवर्तिपणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिक नीकळी चक्रवर्तिपणुं पामे ? हे गौतम ! कोइ पामे अने कोइ न पामे. ए प्रमाणे बलदेवपणुं पण जाणवुं. परन्तु एटली विशेषता छे के शर्कराप्रभानो नैरयिक पण बलदेवपणुं पामे. ए प्रमाणे वासुदेवपणुं बे पृथिवीथी अने अनुत्तरौपपातिक सिवायना वैमानिकोथी नीकळी प्राप्त करे, बाकीना स्थानोथी आवी न प्राप्त करे. मांडलिकपणुं नीचेनी सातमी नरकपृथिवी, तेजस्काय अने वायुकाय सिवायना बाकीना

व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोथी नीकळी चक्रवर्तीपणुं प्राप्त करे, पण बाकीना स्थानोथी नीकळी न पामे. बलदेव अने वासुदेवपणुं शर्कराप्रभाथी नीकळीने पण पामे. परंतु वासुदेवपणुं अनुत्तरौपपातिक सिवायना वैमानिकोथी नीकळी पामे. मांडलिकपणुं

णिरंतरं जाव सहस्सारो अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए नो लभेज्जा । चक्करयणत्तं छत्तरयणत्तं चम्मरयणत्तं दंडरयणत्तं असिरयणत्तं मणिरयणत्तं कागिणिरयणत्तं एतेसिणं असुरकुमारेहिंतो आरद्ध निरंतर जाव ईसाणाओ उववाओ, सेसेहिंतो नो तिणट्ठे समट्ठे ।

१२. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं, अविराहियसंजमाणं, विराहियसंजमाणं, अविराहियसंजमासंज-

स्थानोथी आवी प्राप्त करे. चक्रवर्तीना सेनापतिरत्न, गाथापतिरत्न, वर्धकिरत्न, पुरोहितरत्न अने स्त्रीरत्न संबंधे एमज समजवुं. परन्तु ते अनुत्तरौपपातिक सिवायना बाकीना स्थानोथी आवीने थाय. अश्वरत्नपणुं अने हस्तीरत्नपणुं रत्नप्रभाथी आरभी निरंतर सहस्रार सुधीना स्थानोथी आवी कोइ प्राप्त करे अने कोइ न प्राप्त करे. चक्ररत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, दंडरत्न, असिरत्न, मणिरत्न, अने काकणीरत्न एओनो असुरकुमारथी आरभी निरन्तर ईशान सुधीना स्थानोथी आवीने उपपात समजवो. बाकीना स्थानोथी 'ए अर्थ समर्थ नथी' एम प्रतिषेध करवो.

सातमी नरकपृथिवी, तेजस्काय अने वायु सिवायना बाकीना सर्व स्थानोथी आवी प्राप्त करे. सेनापतिरत्न, वर्धकिरत्न, पुरोहितरत्न अने स्त्रीरत्न सातमी नरकपृथिवी, तेजस्काय, वायु अने अनुत्तरौपपातिक देव सिवायना बाकीना स्थानोथी आवी थाय अश्वरत्न अने हस्तिरत्न रत्नप्रभाथी आरंभी निरंतर सहस्रार सुधीना स्थानोथी आवी थाय चक्ररत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, दण्डरत्न अने काकणिरत्न असुरकुमारथी आरंभी निरंतर ईशान देवलोक सुधीना स्थानोथी आवी थाय बधे विधि वाक्यमां 'अत्थिगइए लभेज्जा, अत्थेगइए नो लभेज्जा'-'कोइ पामे अने कोइ न पामे'-एम कहेवु अने निषेध करवामां 'णो इणट्ठे समट्ठे' ए अर्थ समर्थ नथी-एम कहेवु ए प्रमाणे बधा स्थले कहेवा

माणं, विराहियसंजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरगपरिव्वायगाणं, किव्विसियाणं, तिरिच्छियाणं, आजीवियाणं, आभिओगियाणं, सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाओ पण्णत्तो ? गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु, अविराहियसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे, विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु,

१२. हे भगवन् ! देवलोकमां उत्पन्न थता असंयत भव्य-देवलोकमां उत्पन्न थवाने योग्य द्रव्यदेवो, अविराधित संयमवाळा-जेमणे संयमनी विराधना करी नथी एवा, विराधित संयमवाळा-जेणे संयमनी विराधना करी छे एवा, अविराधित देशविरतिवाळा-जेणे देशविरतिनी विराधना करी नथी एवा, विराधित देशविरतिवाळा-जेणे देशविरतिनी विराधना करी छे एवा, असंज्ञी, तापसो, कांदर्पिको, चरक-परिव्राजको, किल्बिषिको, तिर्यंचो, आजीवको, आभियोगिको अने दर्शनभ्रष्ट थयेला-सम्यग्दर्शनरहित स्वलिंगीओमां कोनो क्यां उपपात कह्यो छे ? हे गौतम ! असंयत भव्य द्रव्यदेवोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कृष्ट उपरना ग्रैवेयकोमां

१२. हवे उपपात संबन्धे कांइक विशेष कहेवानुं छे ते सूत्रकार कहे छे—'अह भंते!' इत्यादि. 'अथ' शब्द प्रश्न अर्थमां छे. 'असंजयभवियदव्वदेवाणं' इति—असंयत-चारित्रना परिणाम रहित, भव्य-देवपणाने योग्य अने ए ज हेतुथी द्रव्यदेवो-एटले चारित्रना परिणामरहित, मिथ्यादृष्टि देवोमां उत्पन्न थवाने योग्य ते असंयत भव्य द्रव्यदेवो. तेमां केटलाएक आचार्यो कहे छे के-एओ अविरति सम्यग्दृष्टि ग्रहण करवा, कारण के तेओनी देवोमां उत्पत्ति थाय छे. ए संबन्धे आगममां कह्युं छे के—"अणुव्वयमहव्वएहिं य बालतवोऽकामनिज्जराए य । देवाउयं निबंधइ सम्मदिट्ठी य जो जीवो ॥" जे सम्यग्दृष्टि जीव छे ते अणुव्रत अने महाव्रत वडे तथा बाल तप अने अकामनिर्जरा वडे देवनुं आयुष बांधे छे.' ते अयुक्त

उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे, अविराहियसंजमासंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे, विराहियसंजमासंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोतिसिएसु, असन्नीणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं वाणमंतरेसु,(!)तावसाणं जहन्नेणं भवणवासीसु,उक्कोसेणं जोइसिएसु,कंदप्पियाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे, चरगपरिव्वायगाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे, किब्बिसि-

अविराधित संयमवाळानो जघन्यथी सौधर्म कल्पमा अने उत्कर्षथी सर्वार्थसिद्धमां, विराधित संयमवाळानो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी सौधर्म कल्पमां, अविराधित देशविरतिवाळानो जघन्यथी सौधर्म कल्पमां अने उत्कर्षथी अच्युत कल्पमा, विराधित देशविरतिवाळानो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी ज्योतिषिकोमा, असंज्ञीओनो जघन्यथी व्यन्तरोमां अने उत्कर्षथी भवनवासीमां, तापसोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी ज्योतिषिकोमां, कांदर्पिकोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी सौधर्म

छे, कारण के असंयतभव्यद्रव्य देवोनो उपपात उत्कर्षथी उपरना ग्रैवेयकमा इमणां कहेशे अने सम्यग्दृष्टि देशविरति होय तो पण एओनी त्यां उत्पत्ति थती नथी, कारण के देशविरति श्रावको पण अच्युत देवलोकथी उपर उपजता नथी च निह्नवो पण न समजया, कारण के तेओने अहीं जुदा कहेला छे माटे मिथ्यादृष्टि अभव्य 'के भव्य श्रमणना गुणने धारण करनार सर्व सामाचारी अने क्रिया युक्त द्रव्य लिंग-बाह्य वेषने धारण करनार असंयत भव्य द्रव्य देवो जाणवा तेओ पण केवळ क्रियाना प्रभावथी उपरना ग्रैवेयकमा उत्पन्न थाय छे वळी तेओ असंयत छे कारण के अनुष्ठान-क्रियानु पालन करवा छतां पण चारित्रना परिणाम शून्य छे,तेओनो। 'अविराहियसंजमाणं'-दीक्षाना समयथी आरंभी जेनो चारित्रपरिणाम अभग्न—अखण्डित छे एवाओनो, संज्वलन कषायना सामर्थ्यथी के प्रमत्त गुणस्थानकथी स्वल्प मायादि दोषनो संभव होवा छतां पण जेओए सर्वथा चारित्रनो घात

याणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं लंतए कप्पे, तिरिच्छियाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे, एवं आभिओगाणवि, सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु ।

कल्पमां, चरक-परिव्राजकोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी ब्रह्मदेवलोकमां, किल्बिषिकोनो जघन्यथी सौधर्म कल्पमां अने उत्कर्षथी लांतक कल्पमां, तिर्यंचोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी सहस्रार कल्पमां, आजीवकोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी अच्युत कल्पमां अने ए प्रमाणे आभियोगिकोनो पण जाणवो. दर्शनथी भ्रष्ट थयेला–सम्यग्दर्शन रहित सलिंगीओनो जघन्यथी भवनवासीओमां अने उत्कर्षथी उपरना ग्रैवेयकोमां उपपात कह्यो छे.

कर्यो नथी एवाओनो. तथा 'विराहियसंजमाणं'—विराधित संयमवाळा—विराधित–सर्वथा खंडित थयेला, पण प्रायश्चित्तना स्वीकार वडे फरीथी संयमनुं अनुसंधान जेओए कर्युं नथी एवाओनो, 'अविराधितसंजमासंजमाणं'–ग्रहण समयथी आरंभी जेओनो देशविरतिनो परिणाम अखंडित छे एवा श्रावकोनो, 'विराधितसंजमासंजमाणं'–विराधितदेशविरतिवाळा–विराधित–सर्वथा खंडित थयेलो पण प्रायश्चित वडे फरीथी नवीन नहि करायेलो संयमासंयम–देशविरति परिणाम जेओनो छे एवा. एटले देशविरतिनुं विराधन करनाराओनो, 'असंज्ञिनाम्' मनोलब्धि रहित अकाम निर्जरावाळाओनो, 'तावसाणं' खरी पडेला पांदडा वगेरेनो उपभोग करनारा बाल तपस्वीओनो, 'कंदप्पियाणं'–कांदर्पिको–कंदर्प–परिहास जेओने छे एटले परिहास करनारा, व्यवहारथी चारित्रवाळा छतां कंदर्प–हास्य, कौकुच्य शारीरिक कुचेष्टा करनारा कांदर्पिको जाणवा. ए संबन्धे कह्युं छे के—

कंदप्पे कुक्कुइए दवसीले यावि हासणकरे य। विम्हावितो य परं कंदप्पं भावणं कुणइ ॥ १ ॥

कन्दर्पकारक, कौकुच्य करनार, द्रुतशील—जल्दी करवाना स्वभाववाळो, हसावनार अने बीजाने विस्मय उत्पन्न करनार कन्दर्प-विषयक भावना करे छे हवे कन्दर्प संबन्धे कहे छे—

कहकहस्स हसणं कंदप्पो अणिहुया य संलावा । कंदप्पकहाकहणं कंदप्पुवएसससा य ॥

अट्ट अट्ट-उच्च स्वरे हसवुं, अनिभृत-गुर्वादिनी साथे निष्ठुर पणे तथा वक्रोक्तिथी स्वेच्छा पूर्वक संलाप—बोलवुं, कामकथा कहेवी, कन्दर्प-कामनो आ प्रमाणे करो-एम उपदेश आपवो अने कामनी प्रशंसा करवी ए कन्दर्पशब्द वाच्य छे कौकुच्य-भांडचेष्टा, ते बे प्रकारे छे-कायकौकुच्य अने वाक्कौकुच्य तेमां प्रथम कायकौकुच्य कहे छे—

भूनयणवयणदसणच्छएहिं करचरणकण्णमाईहिं । तं तं करेइ जह जह हसइ परो अत्तणा अहस ॥

भ्रुकुटी, नयन, वदन, ओष्ठ वडे तथा कर, चरण अने कर्णादि वडे ते ते चेष्टा करे के पोते नहि हसता छतां बीजो हसे हवे वाक्कौकुच्य कहे छे—

वाया कुक्कुइओ पुण तं जंपइ जेण हस्सए अन्नो । णाणाविहजीवरुए कुव्वइ मुहतूरए चेव ॥

वाक्कौकुच्यिक ते छे बोले के जेथी बीजो हसे अनेक प्रकारना प्राणीओना शब्द बोले छे अने मुखतूर्य-मुखवडे वादित्र करे हवे द्रुतशील अथवा द्रुतशील-जल्दी क्रिया करवाना स्वभाववाळानी व्याख्या करे छे—

भासइ दुयं दुयं गच्छए य दरिओव्व गो व्व सो सरए । सव्वदुयदुयकारी फुट्टइ व ठिओवि दप्पेणं ॥

जे(आवेशथी वगर विचार्ये) जल्दी जल्दी बोले, शरद् काळने विषे दृप्त-गर्विष्ठ बळदनी पेठे जल्दी जल्दी चाले छे. [विचार कर्या सिवाय] सर्व कार्य जल्दी जल्दी करे. स्थिर होय तो पण दर्प-अभिमान वडे स्फुटति-फाटी गयो होयनी शु थयो लागे हवे हास्य-हसावनार संबन्धे व्याख्या करे छे—

वेसवयणेहिं हासं जणयंतो अप्पणो परेसिं च । अह हासणो त्ति भन्नइ घयणोव्व छले नियच्छंतो ॥

'घयणो व्व' भांडनी पेठे बीजाना छल-वेष अने भाषा संबन्धे छिद्र जोतो वेष अने वचन वडे पोताने अने बीजाने हास्य उत्पन्न करनार हासन-हसावनार कहेवाय छे. बीजाने विस्मय उत्पन्न करवा संबंधे कहे छे—

सुरजालमाइएहिं तु विम्हयं कुणइ तव्विहजणस्स । तेसु न विम्हयइ सयं पहेलियकुहेडएहिं च ॥

सुरजाल-इन्द्रजालादि प्रमुख कुतूहल वडे तथा प्रहेलिका अने कुहेडक-आभाणक वगेरेथी तेवा प्रकारना ग्राम्य जनने विस्मय पमाडे छे अने स्वयं विस्मय पामतो नथी.

जो संजओवि एयासु अप्पसत्यासु भावणं कुणइ । सो तव्विहेसु गच्छइ सुरेसु भइओ चरणहीणो ॥

जे संयत छतां पण आ अप्रशस्त-संक्लिष्ट भावना भावे छे. 'वट्टइ कहिंचि' एवो पण अन्य स्थळे पाठ छे-तेथी आ अप्रशस्त भावनामां कथंचित्-भावनी मन्दताथी वर्ते छे ते (चारित्रना लेशथी) तेवा प्रकारना-कंदर्पादि प्रकारवाळा देवोमां उत्पन्न थाय छे, परन्तु जे 'चरणहीन'-चारित्र रहित छे ते भक्त-भजनाए-विकल्पे जाणवो एटले कदाचित् तेवा प्रकारना देवोमां उत्पन्न थाय छे अने कदाचित् नारक, तिर्यंच अने मनुष्यगतिमां उत्पन्न थाय छे.

'चरगपरिव्वायगा णं' ति-चरकपरिव्राजक—टोळा वडे भिक्षा मागी आजीविका चलावनार त्रिदंडी, अथवा चरक-कच्छ, लंगोटी पहेरनारा अने परिव्राजक-कपिलमुनिना शिष्यो, तेओनो; 'किब्बिसियाणं' ति. किल्बिष-पाप, ते जेओमां छे तेओ किल्बिषिको कहेवाय छे. ते चारित्रवाळा छतां ज्ञानादिनो अवर्णवाद बोलनारा होय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

नाणस्स केवलीणं धम्मायरियाण सव्वसाहूणं । माई अवन्नवाई किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥

श्रुतज्ञान, केवलज्ञानी, धर्माचार्य-धर्मोपदेशक, अने सर्व साधुओनो, बीजे स्थळे 'संघसाहूणं' एवो पण पाठ मळे छे, तेथी चतुर्विध संघ अने साधुओनो अवर्णवाद बोलनार किल्बिषिक भावना करे छे. अवर्ण-निन्दा, खोटा दोषो प्रगट करवा. तेमा प्रथम श्रुतज्ञानना

अवर्णवादनु वर्णन करे छे—

काया वया य ते च्चिय ते चेव पमायअप्पमाया य। मोक्खाहिगारियाणं जोइसजोणीहिं किं कज्ज ॥

तेज पृथिव्यादि कायो, प्राणातिपात विरमणादि व्रतो, तेज मद्यादि प्रमादो अने तेना विपक्षरूप अप्रमादो ते ते सूत्रमां वारंवार कहेवाय छे, बीजु विशेष काइ पण नथी माटे पुनरुक्त दोष छे वळी मोक्षना अधिकारीने सूर्यप्रज्ञप्ति-वगेरे ज्योतिःशास्त्रनु अने योनि-योनिप्राभृत वगेरे शास्त्रोनु शु काम छे? कारण के तेओ भवनु कारण छे केवलज्ञानीना अवर्णवाद संबन्धे कहे छे—

एगंतरमुप्पाए अण्णोण्णावरणया दुवेण्हपि। केवलदंसणणाणाणमेगकाले य एगत्तं ॥

केवलज्ञानीने केवलज्ञान अने केवलदर्शननो उपयोग एकान्तर-अनुक्रमे उत्पन्न थाय तो बन्ने उपयोगना पण बन्ने परस्पर आवरण रूप थाय छे एटले ज्ञानोपयोगनो प्रतिबन्धक दर्शनोपयोग थाय अने दर्शनोपयोगनो प्रतिबन्धक ज्ञानोपयोग थाय अने जो बन्ने उपयोग एक काळे होय तो बन्नेनो एकत्व-अभेद थाय धर्माचार्यना अवर्णवाद संबंधे कहे छे—

जच्चाईहिं अवन्नं विभासइ वट्टइ नयावि उववाए(यारे)। अहिओ छिद्दप्पेही पगासवाई अणणुकूलो ॥

जात्यादि वडे अवर्णवाद बोले, जेम के आ उत्तम जातिना नथी, लोकव्यवहारमां कुशल नथी, औचित्य जाणता नथी एम विविध रीते गुरुने कहे, गुरुना उपचार-विनयमां न वर्ते, अहितकारक, छिद्रप्रेक्षी-छिद्रोने जोनार, प्रकाशवादी-सर्वसमक्ष गुरुना अछता दोषो कहे, तथा सर्वदा अनुकूल न होय साधुओनो अवर्णवाद आ प्रमाणे बोले—

अविसहणातुरियगई अणाणुवत्ती य अवि गुरूणंपि। खणमेत्तपीइरोसा गिहिवच्छलगा य संचइया ॥

आ साधुओ असहनशील छे, कारण के तेओ एक बीजाने सहन करता नथी, तेथी एक बीजानी स्पर्धाथी देशान्तरमां भ्रमण करे छे, नहि तो एक स्थळे बधा भेगा मळीने केम न रहे? तथा अत्वरित गतिवाळा-हमेशा कपटथी लोकोने आकर्षित करवा माटे मन्दगतिए चाले छे गुरु-मोटाओने अनुसरता नथी, कारण के स्वभावथी निष्ठुर छे, वळी क्षणमात्रमां रुष्ट अने तुष्ट थाय छे गृही-

गृहस्थो उपर वात्सल्य-प्रेम राखनारा अने 'संचयिकाः' सर्व वस्तुओनो संचय करनारा छे. मायावी संबन्धे कहे छे.

गूहइ आयसभावं छायइ गुणे परस्स संते वि । चोरोव्व सव्वसंकी गूढायारो वितहभासी ॥

पोताना स्वभावने (दुष्ट स्वभावने) ढांके छे, अने बीजाना छता गुणोनुं आच्छादन करे छे, चोरनी पेठे सर्वनी शंका राखनार,

गूढ आचारवाळो अने वितथभाषी- असत्य बोलनार होय छे.

'तिरच्छियाणं' देशविरतीवाळा गाय, बळद वगेरे पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो, 'आजीवियाणं' आजीवक-पाखंड विशेष-मतविशेष, गोशा-

लकना मतने अनुसरनारा, अथवा आजीवन्ति-जेओ अविवेकथी लब्धि, पूजा, अने ख्याति इत्यादि वडे चारित्रादिनो आश्रय करे ते

आजीवको कहेवाय छे. तेओनोः 'आभियोगियाणं' आभियोगिको-अभियोग-विद्यामन्त्रादि वडे बीजाने वशीकरणादि करवुं. तेना बे

प्रकार छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

दुविहो खलु अभिओगो दव्वे भावे य होइ नायव्वो । दव्वंमि होंति जोगा विज्जा मंता य भावम्मि

द्रव्य अने भाव एम बे प्रकारनो अभियोग जाणवो. द्रव्य अभियोगमां औषधिना योग-प्रयोगो, अने भाव अभियोगमां विद्या

अने मन्त्रो जाणवा. ते अभियोग जेओने छे, अथवा अभियोग वडे व्यवहार करनारा आभियोगिको कहेवाय छे. तेओ व्यवहारथी

चारित्रवाळा छतां मन्त्रादिनो प्रयोग करनारा होय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

कोउयभूइकम्मे पसिणापसिणे निमित्तमाजीवी । इड्ढिरससायगरुओ अभिओगं भावणं कुणइ ॥

१ कौतुक, २ भूतिकर्म, ३ प्रश्नाप्रश्न, अने ४ निमित्तद्वारा आजीविका चलावनार, ५ ऋद्धि, रस अने साताना गौरव-अभिमानवाळो

ए पांच प्रकारे अभियोग भावना करे छे. कौतुक एटले सौभाग्यादिने माटे स्नान कराववुं, भूतिकर्म-ज्वरवाळा वगेरेने भस्म चोपडवी.

प्रश्नाप्रश्न-स्वप्नविद्या, एवा आभियोगिकोनो, 'सलिंगीणं' 'स्वलिंगी'—रजोहरणादि साधुना लिंगवाळा, तेओ केवा होय? 'दंसणवावन्नगाणं'

'दर्शनव्यापन्नकानाम्'-दर्शन-सम्यग्दर्शन व्यापन्न-भ्रष्ट थयुं छे जेओनुं एवा अर्थात् निह्नवोनो, वळी 'देवलोगेसु उववज्जमाणाणं' 'देवलो-

१३ कतिविहे णं भंते ! असण्णियाउए पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पन्नत्ते, तंजहा—नेरइयअसण्णियाउए, जाव देवअसण्णियाउए । असण्णी णं भंते ! जीवे किं नेरइयाउयं पकरेति, जाव देवाउयं पकरेति ? गोयमा ! नेरइयाउयं पकरेति, जाव देवाउयं पकरेति । नेरइयाउं पकरेमाणे जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ।

१३. हे भगवन् ! केटला प्रकारनु असंज्ञी आयुष कह्युं छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनु असंज्ञीआयुष कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—१ नैरयिक असंज्ञीआयुष, यावत् ४ देवअसंज्ञीआयुष. हे भगवन् ! असंज्ञी जीव शुं नैरयिकनुं आयुष बांधे ? यावत् देवनु आयुष बांधे ? हे गौतम ! नैरयिकनुं पण आयुष बांधे, यावत् देवनुं आयुष पण बांधे. नैरयिकनु आयुष बांधतो जघन्यथी दस हजार वरस अने

कर्मो उत्पन्न थया वाळा, आथी पण जणाय छे के देवपणाथी बीजे पण अध्यवसायने अनुसारे एओनी उत्पत्ति थाय छे

जेणे संयमनी विराधना करी छे एओनी जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कृष्टथी सौधर्म देवलोकमां उत्पत्ति थाय छे (प्र०)—अहीं कोइ प्रश्न करे छे के विराधितसंयमवाळानी सौधर्म कल्पमां उत्पत्ति थाय एम जे कह्यु ते केम घटे ? कारण के सुकुमालिकाना भवमां विराधित संयमवाळी द्रौपदीनी पण ईशान देवलोकमां उत्पत्ति थयेली समजाय छे (उ०)—एमां काइ पण दोष नथी, कारण के तेनी (द्रौपदीनी) संयमविराधना उत्तरगुणविषयक मात्र बकुशपणाने करनारी छे, पण मूलगुणनी विराधना नथी संयमनी घणी विराधना होय तो सौधर्म कल्पमां उत्पत्ति थाय जो संयमनी विराधना मात्र पण सौधर्मदेवलोकमां उत्पत्तिनुं कारण थाय तो उत्तरगुण वगेरेमां विराधना करनारा बकुशादिनी अच्युतादि देवलोकमां उत्पत्ति केम घटे ? कारण के तेओ पण कथंचित्-उत्तरगुणनी अपेक्षाए विराधक छे

१३ असंज्ञी देवोमा उत्पन्न थाय छे एम कहेवामा आव्यु छे अने ते देवोमा आयुष बांधे उपजे छे माटे असंज्ञीआयुषनु निरूपण करे छे—'कइविहे ण भंते' ! इत्यादि असंज्ञी छता परभवने योग्य आयुष बांधे ते असंज्ञी आयुष कहेवाय छे 'नेरइय असन्निआउय'

उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति ।[तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति,] तिरिक्खजोणियाउयं पकरे-
माणे जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलितोवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति । एवं मणुस्साउयंपि । देवाउयं जहा
नेरइयाउयं । एयस्स णं भंते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स जाव देवअसण्णिआउयस्स कतरे कतरेहिंतो अप्पा
वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणूसअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियअसण्णि-

उत्कृष्ट पल्योपमना असङ्ख्यातमा भागनुं आयुष बांधे. तिर्यंचनुं आयुष बांधतो जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा
भागनुं आयुष बांधे. ए प्रमाणे मनुष्यायुष संबंधे पण जाणवुं. देवायुष नैरयिकना आयुषनी पेठे जाणवुं. हे भगवन् ! ए नैरयिक
असंज्ञी आयुष, यावत् देवअसंज्ञी आयुषमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडुं देवअसंज्ञी

नैरयिकने योग्य असंज्ञीए बांधेलुं आयुष नैरयिक असंज्ञी आयुष कहेवाय छे. एम बीजा आयुष पण जाणवां. अहीं असंज्ञीआयुष
असंज्ञीअवस्थामां अनुभवातुं आयुष पण कहेवाय, परन्तु अहीं तेनो प्रसंग नथी, माटे असंज्ञीए करेलुं-बांधेलुं आयुष ते असंज्ञीआयुष-
एवा प्रकारना संबन्धविशेषने जणाववा माटे कहे छे—'असन्नीणं' इत्यादि. असंज्ञी आयुष बांधतो रत्नप्रभाना प्रथम प्रस्तटने आश्रयी
दस हजार वर्षनुं आयुष 'पकरेइ' बांधे छे. अने 'उत्कृष्ट पल्योपमनो असंख्यातमो भाग बांधे छे'. आ रत्नप्रभाना चोथा प्रतरमां मध्यम
स्थितिवाळा नारकने आश्रयी जाणवुं. प्रथम प्रस्तटमां जघन्य स्थिति दसहजार वरस, अने उत्कृष्ट नेवुं हजार, बीजा प्रतरमां जघन्य
स्थिति दस लाख अने उत्कृष्ट नेवुं लाख, पण त्रीजा प्रतरनी जघन्य स्थिति अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वरस, पण चोथा प्रतरमां जघन्य स्थिति
अने उत्कृष्ट सागरोपमनो दसमो भाग, तेथी अहीं पल्योपमनो असंख्यातमो भाग मध्यम स्थिति समजवी. तिर्यंच सूत्रमां पल्योपमनो
असंख्यातमो भाग युगलिक तिर्यंचोने आश्रयी जाणवो. 'एवं मणुआउयंपि' एम मनुष्यायुष पण जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट

आउए असंखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे ।

पण्णवणाए भगवईए वीसइमं अंतकिरियापदं समत्तं ॥ २० ॥

आयुष छे, तेथी मनुष्यअसंज्ञी आयुष असंख्यातगुण छे, तेथी तिर्यंच असंज्ञी आयुष असंख्यातगुण छे, अने तेथी नैरयिक असंज्ञी आयुष असंख्यातगुण छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां वीशमुं अन्तक्रियापद समाप्त

पल्योपमनो असंख्यातमो भाग समजवो अहिं पण पल्योपमनो असंख्यातमो भाग युगलिक मनुष्यने आश्रयी जाणवो देवायुष नैरयिकायुषनी पेठे जाणवु जेम नैरयिकासंज्ञीआयुष जघन्यथी दसहजार वरस अने उत्कर्षथी पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण कह्यु छे तेम देवासंज्ञीआयुष कहेवुं अहीं असंज्ञी आयुषनु अल्पबहुत्व कहेवामां आव्यु छे ते आयुषना टुंकापणा अने दीर्घपणाने आश्रयी समजवु

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां वीशमुं अन्तक्रियापद समाप्त

प्रज्ञापनासूत्र

द्वितीय खंड

समाप्त